कबीर की परम्परा के १८वीं शताब्दी के क्रान्तिदृष्टा
संतकवि मीता की दुर्लभ पाण्डुलिपियों पर आधारित

मीता ग्रन्थावली

सम्पादक

डॉ० चन्द्रिका प्रसाद दीक्षित 'ललित'

आचार्य, हिन्दी विभाग,

पं० जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, बाँदा

एवं निदेशक, चन्द्रदास साहित्य-शोध संस्थान



मीता ग्रंथावली

MITA GRANTHAVALI

(Complete Works of Mitadas)

Edited by
Dr. CHANDRIKA PRASAD DIXIT 'LALIT'

प्रथम संस्करण : १९८४

मूल्य : रुपये १००.००

प्रकाशक
चन्ददास साहित्य शोध-संस्थान
सिविल लाइन्स, बांदा (उ० प्र०)

मुद्रक
एकेडमी प्रेस
दारागंज, इलाहाबाद

आत्म विवृति

दो दशक पूर्व जिन दिनों प्राच्य साहित्य एवं संस्कृति के संरक्षण की दिशा में महापंडित राहुल सांकृत्यायन की प्रेरणा से मैं लगा हुआ था तथा १८वीं शताब्दी के एक अत्यन्त विशिष्ट महाकवि चंददास के हस्तलेखों पर अनुसंधान करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँच रहा था कि महाकवि चंददास पृथ्वीराज रासो के रचयिता चंद वरदायी से अभिन्न हैं, तथा उनका काल ११वीं शताब्दी न होकर १८वीं शताब्दी का है, चंददास की खोज से प्रभावित होकर कैप्टेन शूरवीर सिंह ने टेहरी (गढ़वाल) से मीता साहेब के दुर्लभ हस्तलेखों के अनुसंधान एवं मूल्यांकन के सम्बन्ध में मुझे कई पत्र लिखे।

संत मीता की दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ मीता सम्प्रदाय के अतिरिक्त अन्य लोगों के अध्ययन के लिए अत्यन्त दुर्गम और अप्राप्य थीं। साहित्य के अनुरागी एवं सुधी विद्वान गिरीशचंद्र श्रीवास्तव संत मीता पर खोज करने को तैयार हुए। मेरे साथ मीता की समाधिस्थली पुरवा (उन्नाव) की साहित्यिक यात्राएँ भी की। खेद है कि उन दिनों यह दुर्लभ साहित्य नहीं उपलब्ध हो सका। तबसे लगातार इस साहित्य से हिन्दी पाठकों को परिचित कराने के प्रयत्न में मैं लगा रहा। मेरा यह स्वप्न तब पूर्ण हुआ जब मीता साहित्य की पाण्डुलिपियों के संरक्षक मुन्शी ज्ञानसिंह जी ने इस साहित्य को मेरे लिये अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु एक लिखित पत्र द्वारा सहर्ष सौंप दिया, वस्तुतः उनका वह निर्णय साहित्य के इतिहास के लिये गौरवपूर्ण है।

चंददास साहित्य शोध संस्थान की 'प्राचीन दुर्लभ पाण्डुलिपियों के प्रकाशन' योजना के अन्तर्गत 'चंददास ग्रंथावली' का प्रकाशन किया जा चुका है, मीता ग्रन्थावली और १८वीं शताब्दी के एक अन्य रसिक संत लालदास कृत 'अवधविलास' का प्रकाशन इसी योजना के अन्तर्गत किया जा रहा है। लगभग दो हजार अलभ्य ग्रन्थ इस योजना की प्रतीक्षा में हैं।

'मीता ग्रंथावली' में संत मीता की समस्त दुर्लभ पाण्डुलिपियों का प्रामाणिक संकलन प्रकाशित किया जा रहा है। मीता साहेब की मूल प्रतियों से ही पाठ निर्धारण किया गया है। अचलमुराई, पितम्बर ओमर और मुन्शी ज्ञान सिंह द्वारा प्रतिलिपित प्रतियों को भी पाठालोचन में उपयोग किया गया है।

संत परम्परा का सूत्रपात विक्रम की १५वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में कबीर से माना जाता है, वस्तुतः संतों की परम्परा सृष्टि की भाँति आदिम और प्राचीन है। वैदिक काल में भी संतों ने पदों की रचनाएँ की हैं। हिन्दी साहित्य के आदि युग, अपभ्रंशकाल से होती हुई मध्यकाल तक यह धारा प्राणवान रही है। १८वीं शताब्दी की चंददास पदावली, मीता पदावली आदि खोजों से यह पता चलता है कि पदों का यह अविरल प्रवाह मध्यकाल में भी अमंद रहा है।

काव्यशास्त्र का इतिहास भले ही इस सत्य को अस्वीकार करे किन्तु मेरा विश्वास है कि सृष्टि के प्रारम्भ से करुणा ही रस निष्पत्ति और मानवीय मुक्ति का साधन रही है। क्रौंचवध की करुणा ने ही वाल्मीकि को आदि कवि का गौरव प्रदान किया है। वाल्मीकि के पूर्व भी कविता रची गयी होगी किन्तु करुणा की लोकमङ्गल धारा ही काव्य के रूप में प्रतिष्ठा पा सकी। संतों की सर्जना भी करुण है, जहाँ कहीं वे कुठार की भाँति कठोर हैं, वहाँ भी वे करुणा से ही द्रवित हैं। इसीलिये संतों की सृष्टि काव्य के लिये नहीं, करुणा के लिये है।

कविताई से भिन्न अनुभूतिजन्य सत्य का अभिव्यंजन करने वाले संतों की वाणी कविता के कल्पना लोक से पृथक् चैतन्य मानसिक सृष्टि का निर्माण करती रही है। लोक सामान्य की पीड़ा और विश्वजनीन संवेदना ही संतकाव्य की कसौटी हो सकती है। काव्य-शास्त्र की कसौटी संतों के कंचन-आचरण को कसने में असमर्थ है। शब्द की सामान्य शक्तियाँ लोकमंगल की उदात्त सृष्टि को अर्थग्रहण कराने में असमर्थ हो जाती हैं। छंदों की रागमयी वीणा आत्मानन्द की अभिव्यक्ति में स्खलित हो जाती है। कल्पनाओं की सुरम्य वीथियाँ अगम्य घाटियों के साधनात्मक रहस्यों को अदृश्य कर जाती हैं। संतों का वह 'रस विशेष' सामान्य काव्य की आस्वाद-प्रक्रिया से सर्वथा भिन्न है। कल्पना अथवा वाग्विलास लेकर कवि सामान्य श्रेणी से ऊपर नहीं उठ पाता। क्रान्ति की बातें लिखकर जीवन धर्म से पलायन करने वाला व्यक्ति सृष्टा नहीं हो सकता। और न ही वह क्रान्ति की संचेतना का अग्नि हस्ताक्षर हो सकता है। इसके विपरीत संत सत्य के तत्वों का उद्घाटन करता है, कर्म साधना करता है, साधना के रहस्यों को उन्मीलित करता है, अशिव के संहार के लिये आयुध धारण करता है। संत मीता एक ऐसे ही जुझारू क्रान्तिसृष्टा हैं जो क्रान्तिहीन काव्य की कदर्थना करते हैं—

'कविता और सुनार की मुक्ति न कबहूँ होय'

मुक्तिबोध, निर्भीक चेतना ही संत साहित्य की चारित्रिक विशेषताएँ रही हैं। संत का मूल आशय 'अंजलि' होता है। अंजलि में सम्पूर्ण जीवन की अखंडता का आत्मदर्शन करने वाले तत्वद्रष्टा ही 'संत' कहलाने के अधिकारी हैं। संत चंददास ने—

"जन्मजात सिरान तेरो।
अंजली को नीर जैसो होत अहनिश हान तेरो।
साँस छीजत पंथ आवन घटत घट पटवान तेरो।
उड़त ऊपर शीशहू पर काल प्रबल सचान तेरो।"

अंजलि में जीवन के छीजने के प्रतिरोध में एक सार्थक जिजीविषा की ओर संकेत किया है। महाकवि तुलसी ने 'अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोय,' से अंजलि में अखण्ड सुगंध के संकेत से संतों के प्रदेय का उत्सर्गमूलक चित्रांकन किया है। वस्तुतः यह अंजलि सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति व्यष्टि का निश्छल समर्पण है। अनुभविता और अनुभव की एकता ही नहीं, अनुभव के स्तर पर कोटि विशेष का आस्वाद संतों की वाणी का प्रत्यक्ष है।

१८वीं शताब्दी के संत मीता क्रान्तिद्रष्टा कबीर के एक नये अवतरण हैं। वे अन्य संतो की भाँति कबीर के अनुयायी नहीं हैं, वे कबीर के समानधर्मा हैं। कबीर को अपने मार्ग पर चलने का आवाहन करते हैं—

"मीता के मारग चलै कबीर सरीखा होय।
मीत कबीरा एकु हैं कहिवे के हैं दोय॥"

कबीर साहित्य के विशिष्ट विद्वान आचार्य प्रवर डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने संत मीता के वाणी-वचन को सुनकर आश्चर्य व्यक्त करते हुए ठीक ही कहा था—"मीता एक दूसरे कबीर ही नहीं हैं, वे तो कबीर के भी बाप हैं।"

क्रांतिधर्मिता में संत मीता कबीर से भी एक डग आगे दिखाई पड़ते हैं। उनकी वाणी विप्लवों और वात्याचक्रों में भी प्रकम्पित नहीं होती। साम्प्रदायिक रुढ़ियों के विभंजन में उनके हथौड़े कबीर से भी अधिक भंजनशील हैं। अनुभूति की तीव्रता और प्रेम की एकान्त निष्ठा में स्वकीय भावना की जैसी सघन अभिव्यक्ति मीता की वाणी में मिलती है, वह साधना और संस्कृति की पराकाष्ठा है। गूढ़ प्रेम भावों का स्फुरण जैसा मीता साहेब की वाणी में प्राप्त होता है, वैसा अन्य रहस्यवादी कवियों में नहीं। 'दुलहनी गावहु मंगलचार' की भाँति मीता की विरहणी भी यौवन रस में मदमाती, अक्षर अविनाशी से ब्याह रचाती है और प्रियतम के स्नेह से सिक्त होकर सौभाग्य चारुता को वरण करती है—

"सबै पियारी पिउ की पिया-पिया रटि होय।
जाको चाहै पीउना सोई सुहागिन होय॥"

मीता की एक अन्य विशिष्टता यह भी प्रतीत होती है कि वे वैदिक और पौराणिक परम्पराओं का विद्रोह करते हुए भी प्रेम की प्रगाढ़ता और दृढ़ रागानुगाभक्ति में स्वकीयत्व को वरण करके प्रियतम की सेज में विलास करने वाले अंतरंग साधकों में से हैं। इसी प्रकार वे पतंजलि के अष्टांगयोग एवं नाथ सिद्धों के हठयोग की कदर्थना करते हुए भी भर्तृहरि के तात्विक ज्ञान की अभिशंसा करते हैं। वे भक्ति एवं संत सम्प्रदायों के विखंडन को रोकने वाले मानवीय आस्था के समर्थ संत है—

'जैसा सब संसार रामचन्द्र वैसा रे'

तुलसी और सूर जैसे महान कवियों की कविता को सेमर के फूल की तरह निःसार और अर्थशून्य कहकर मीता ने एक चुनौती दी है, जो साहित्य चिंतकों के लिए एक प्रश्न चिह्न है—

"तुलसी सूरा की कविताई ज्यों सेमर को फूल
वास न आवै फल नहीं लागै सो तन का है शूल"

निश्चय ही संत मीता उतरी भारत की संत परम्परा के १८ वीं शताब्दी में अन्तर्वेद के फर्रुखाबाद (खजुहा) फतेहपुर से उद्भूत एक ऐसी क्रांतिज्वाला के रूप में प्रकट हुए हैं, जिससे हिन्दी की भ्रष्ट पद परम्परा को एक नयी तेजस्विता प्राप्त होगी।

कबीर ग्रंथावली की भाँति मीता ग्रंथावली का प्रकाशन हिन्दी के इतिहास को एक नया सांस्कृतिक आलोक प्रदान करेगा। इसी संकल्पना के साथ—

[illegible]

आभार

'मीता ग्रंथावली' के प्रकाशन में संत तुल्य मुंशी ज्ञानसिंह, दोस्तीनगर का विशेष आभार स्वीकार करता हूँ, जिनके अथक प्रयत्न से मीता की यह दुर्लभ वाणी देवनागरी लिपि में उपलब्ध हो सकी। इसके सम्पादन में साहित्य एवं संस्कृति के अधिकारी विद्वान अग्रज श्री गोविंद प्रसाद साँवल का परामर्श अत्यन्त मूल्यवान सिद्ध हुआ है। डॉ० नरेन्द्र कुमार शर्मा (गढ़वाल विश्वविद्यालय) ने संत मीता के सम्बन्ध में प्रचलित जनश्रुति से मुझे परिचित कराया, एतदर्थ उनके प्रति आभार स्वीकार करता हूँ। प्रकाशन व्यवस्था के लिए श्री संतोष दीक्षित, श्रीमती उर्मिला दीक्षित, श्री गोविंदशरण दास, पं० चन्द्रशेखर द्विवेदी प्रूफ संशोधन के लिए श्री वेदमणि त्रिपाठी एवं पं० रामप्रसाद शास्त्री, मुद्रण हेतु श्री सुरेन्द्रमणि त्रिपाठी का भी आभारी हूँ।

माननीय विश्वनाथ प्रताप सिंह, विदुषी बहन कपिला वात्स्यायन सलाहकार, सांस्कृतिक मंत्रालय, भारत सरकार, श्री एन० डी० गुप्त अवर सचिव, नयी दिल्ली, श्री भवानी शंकर शुक्ल निदेशक, सांस्कृतिक कार्य विभाग, लखनऊ, श्री त्रिभुवन नाथ पाण्डेय, डॉ० ओम प्रकाश श्रीवास्तव एवं श्री ए० वी० टंडन का विशेष आभारी हूँ जिन्होंने इस कार्य में विशेष सहयोग प्रदान किया।

पूज्य पितृवर पं० दीनदयाल दीक्षित के आशीर्वाद एवं श्रीमती शशिप्रभा दीक्षित के स्नेह सौजन्य के विना मेरे लिए कोई भी कार्य असम्भव है। वार्तिका से लेकर कविता तक और वर्तुल से लेकर गीत तक वात्सल्य मंडल के ये सप्तर्षि, जो मेरी पाण्डुलिपियों के बिखरे पन्नों को समेट कर मेरे लिए सुलभ करते हैं, इन्हें विस्मरण करना भी संभव नहीं।

लेखन कार्य में सहयोग के लिए अपने सुख के क्षणों को समर्पित करने वाले विद्यार्थियों में कु० मंजू मिश्रा, कु० सरिता मिश्रा, हरीकृष्ण गुप्त, महेश चन्द्र द्विवेदी और कु० आशा निगम का सहयोग भी अविस्मरणीय है।

डॉ० हरवंश लाल शर्मा, डॉ० विद्या निवास मिश्र, डॉ० जगदीश गुप्त, डॉ० भगीरथ मिश्र, डॉ० गोरखनाथ द्विवेदी डॉ० उदय भान सिंह, डॉ० विद्यावती चौहान, बाबू केदार नाथ अग्रवाल, पं० नर्वदेश्वर चतुर्वेदी, डॉ० मोहन अवस्थी; डॉ० किशोरी लाल गुप्त, डॉ० कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह, डॉ० अशोक त्रिपाठी, प्रो० धर्मेन्द्र 'नलिन,' राम शंकर मिश्र, आचार्य बाबू लाल गर्ग, पं० वासुदेव प्रसाद दीक्षित, ए० के० सहगल, गिरजा कांत त्रिपाठी 'गिरजेश' आनन्द सिनहा, दिनेश देवराज, कृष्ण मुरारी पहाड़िया, मार्कण्डेय सिंह, कृष्ण गोपाल गौतम, डॉ० राम गोपाल गुप्त, देव कुमार यादव, डॉ० विनय मोहन शर्मा, डॉ० उदय नारायन तिवारी, राष्ट्र कवि पं० सोहन लाल द्विवेदी के प्रति हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर विभिन्न प्रकार का सहयोग प्रदान किया है।

अनुशंसा

प्रियवर पाठक गण !

प्रस्तुत साहित्य श्री संत सतगुर मीतादास जी निवासी ग्राम फतुहाबाद (खजुहा) जनपद फतेहपुर बाद को ग्राम कस्वा पुरवा जनपद उन्नाव समय सम्वत् विक्रमी १७४७-१८२५ (सन् ई० १६६०-१७६८) के स्वयं के लिखे आध्यात्मिक मूल लेख (Orginal) लिपि कैथी का हिन्दी रूपान्तर है। मूल लेख जो कैथी लिपि में लिखा हुआ है ६ खण्डों में मेरे पास ग्राम दोस्ती नगर पो० थाना जनपद उन्नाव में सुरक्षित है जो मुझे अपने पूर्वजों से वरासत में मिला है। हमारे पूर्वज श्री मीता दास जी के अनुयायी थे। उनके निर्वाण काल के पश्चात सम्वत् १८२५ वि० में यह साहित्य ग्राम दोस्ती नगर में पहुँचा।

मेरी नाचीज समझ में यह सम्पूर्ण साहित्य हिन्दी जगत और निर्गुण अध्यात्म की अमूल्य और अद्वितीय निधि है जो कैथी लिपि में लिखी होने के कारण जनसाधारण के लिए अचर्चित रही है। बहुत ही कम व्यक्ति ऐसे हैं जो अपने पारिवारिक परम्परा में इस वाणी को सुनते चले आये हैं। कैथी लिपि अब पूर्णतया लुप्त हो चुकी है। अब कहीं भी इसको पढ़ने-पढ़ाने वाले नहीं हैं। मैं अपने युवाकाल सन् १६३० ई० से नित्य प्रति पढ़ने-लिखने के कारण भली भाँति लिख पढ़ लेता हूँ। मेरे लिए यह चिन्ता का विषय बना हुआ था कि किस प्रकार इस आध्यात्मिक अमूल्य निधि को लुप्त होने से बचाया जाय तथा जनसाधारण, हिन्दी जगत के विद्वानों और अध्यात्म-खोजियों की जानकारी में लाया जाय। इस सम्बन्ध में मैने कई एक निजी संस्थाओं (गीता प्रेस गोरखपुर, वेलवेडियर प्रेस इलाहाबाद तथा नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी) से सम्पर्क स्थापित किया लेकिन अपने मन्तव्य में अपने को असफल ही पाया।

जनहित की भावना से मैने इस कैथी लिपि में लिखे हुए साहित्य का हिन्दी रूपान्तर करना आरम्भ किया। हिन्दी रूपान्तर करते समय इसका विशेष ख्याल रक्खा गया है कि मूल लेख के उच्चारण-भाव तथा रूप में कोई अन्तर न आने पाये, ज्यों का त्यों हिन्दी रूप किया गया। इस कार्य को पूरा करने में मुझे लगभग दो वर्ष का समय लगा। मेरा केवल इतना ही साहस था कि उपरोक्त साहित्य की केवल एक प्रति ही हिन्दी रूपान्तर कर छोड़ूं। इसके आगे मेरी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि जनसाधारण की जानकारी के लिए मैं इसका प्रकाशन करा सकूं।

संयोग से इसी बीच मेरी, अध्यात्म के खोजी और अन्वेषी विद्वान डॉ० चन्द्रिका प्रसाद जी दीक्षित जो चन्ददास शोध संस्थान के निदेशक और जवाहर लाल डिग्री कालिज बांदा में हिन्दी के आचार्य हैं, से भेंट हो गई। उन्होने मेरी भावनाओं को भली-भाँति सुना-समझा और इस सम्पूर्ण साहित्य को ज्यों का त्यों प्रकाशन कराने में अपनी सहमति व्यक्त की, और मैंने सहर्ष स्वीकार कर अपने द्वारा किया गया हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत साहित्य डा० दीक्षित जी को समर्पित कर दिया। मुझे महान खुशी होगी यदि यह साहित्य ज्यों का त्यों प्रकाशित

होकर हिन्दी जगत के विद्वानों और अध्यात्म के खोजियों तथा जनसाधारण की जानकारी में आ सके ।

प्रिय पाठक गण ! यह सम्पूर्ण साहित्य जन वाणी (साधारण ग्रामीण बोल चाल) आम फहम सादा अलफाज में इस प्रकार व्यक्त है कि किसी भी उच्चकोटि के विद्वान, कम पढ़े या अपढ़ व्यक्ति को इसका भाव सुनने और समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी । सम्पूर्ण साहित्य में कहीं भी पांडित्य का समावेश नहीं है । जो भी व्यक्ति एक बार भी इसका आद्योपान्त अवलोकन कर पायेगा, वह अध्यात्म के सत्य मार्ग को विला इमदाद दीगरे स्वयं बाणी से ही स्वीकार करता जायगा । यह वाणी बहुत ही स्पष्ट-निर्भीक और गज की भाँति निशंक है । आशा है पाठक गण इसको आद्योपांत पढ़ने का कष्ट स्वीकार करेंगे ।

मुंशी ज्ञानसिंह
दोस्तीनगर,
उन्नाव (उ० प्र०)

भूमिका

कबीर जैसे क्रांतिदृष्टा एवं संत कवि की निर्गुणिया वाणी भारतीय जनजीवन में तात्विक एवं दार्शनिक जागरण का एक सांस्कृतिक आन्दोलन लेकर चली थी। किन्तु कालान्तर में कबीर पंथ के बिखराव एवं विखंडन तथा संत साधना के पंथ और अखाड़ों से वह क्रान्ति-धर्मिता क्षीण-काय होने लगी। कबीर के लगभग ३०० वर्ष बाद उसी क्षीणकाय चिंतन को संत मीता ने अपनी साधना की जैसी अजस्र धारा से अभिसिंचित किया है, दुर्भाग्य से उसकी जानकारी हिन्दी साहित्य को नहीं थी। संत एवं भक्ति साहित्य के नदीष्ण विद्वान गोविन्द प्रसाद सांवल का यह कथन निश्चय ही संत मीता के वर्चस्व को रेखांकित करने वाला है—

"अदर्शनं ययौ कालक्रमेण या
कबीरदासस्य प्रशक्त वाणी
निर्गुण्यसलिला सरस्वती समा
कवि मीतदासेन प्रकटी कृतासा।"

(कबीरदास की प्रशक्त वाणी कालक्रम से लुप्त हो गई थी। वह निर्गुण सलिल वाली सरस्वती के समान कवि मीतादास के द्वारा प्राकट्य को प्राप्त हुई।)

संत मीता रूढ़िग्रस्त सामाजिक चेतना की जड़ता को एक नया सांस्कृतिक स्पंद प्रदान करते हैं। उससे कबीर की मूलवर्ती धारा पुनः जीवंत हो उठती है। कबीर को पूर्ण रूपेण आत्मसात् करके एक नये कबीर की क्रान्ति अवतारणा के रूप में मीता का प्राकट्य इतिहास और लोक चेतना के लिए अत्यंत विशिष्ट है। कबीर की भाँति संत मीता भी क्रांति के लिए ललकारता है। आतंक और आडम्बर के शिविर में दावाग्नि छोड़ता है। कर्म के कुल्हाड़े से जड़ता के अरण्य को विदीर्ण करता है। कबीर की तरह प्रतिपक्ष को अपने प्रकर्षपूर्ण संधान से आहत करता है तथा दानवी शक्तियों को हताहत करता हुआ मानवी अस्तित्व की अखंडता के लिए एक सैनिक की तरह जूझता है।

मीता का यह कथन "मीता के मारग चलै कबीर सरीखा होय" सिद्ध करता है कि मीता कबीर को अपने पीछे चलने के लिए आह्वान करते हैं, उन्हें पीछे छोड़कर बढ़ जाने के लिए नहीं, उन्हें आगे ले चलने के लिए, उनके लूटे हुए ज्ञान को पुनः छुड़ा लेने के लिए। कबीर को पीछे रखकर आगे चलने का संकेत सिद्ध करता है कि मीता संघर्षों में स्वयं को आगे करते हैं और संत परम्परा के प्रति एक सच्ची कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। मीता कबीर की संत परम्परा को पुनर्जीवित करते है 'पुनर्नवा' की तरह तथा 'पुरविला' की तरह।

संत शब्द की व्युत्पत्ति की दो प्रविधियाँ प्रतीत होती हैं। प्रथम संत सन् का बहुवचन हैं। सन् शब्द की अस् भुवि (अस्=होना) धातु से बने हुए 'सत' का पुल्लिग रूप है जो 'शतृ' प्रत्यय लगाकर प्रस्तुत किया गया है जिसका अर्थ शुद्ध अस्तित्व का बोधक है। द्वितीय प्रविधि के सम्बन्ध में विचार करते हुए वैयाकरण आचार्य पं० दीनदयाल दीक्षित ने संत शब्द को "षण

संभक्तौ'—धातु से सन्-क्त होने पर स्वरान्त सन्त शब्द सिद्ध होना माना है। स्वरान्त सन्त शब्द का अर्थ भजन करने वाला भक्त होता है।" वस्तुतः यह व्युत्पत्ति वैदिक काल में प्रयुक्त संत और भक्त के अभेद भाव को व्यक्त करने में अधिक समर्थ है। संत शब्द का आशय 'अंजलि'[१] भी होता है। जिसका मूल भाव समष्टि हित के लिए व्यक्ति का सम्पूर्ण समर्पण होता है।

ऋग्वेद[२] में संत के स्थान पर सन्त्य शब्द का प्रयोग भूरिशः मिलता है। अथर्ववेद[३] में संतः तथा छान्दोग्योपनिषद् में सत् का निर्देश किया गया है। संत चंददास ने संत को हरि की श्रेणी में स्वीकार किया है। मीता के अनुसार संत 'सनीपी' होते हैं अर्थात् उन्हें ईश्वर का सामीप्य प्राप्त होता है।

संत और भक्त में तात्विक समानता के बावजूद प्रवृत्तिगत भिन्नता एवं शैलीगत विशिष्टता ने ही इन्हें दो प्रमुख धाराओं में वर्गीकृत करने का आधार प्रदान किया। वैदिक परम्परा के अनुसार संत और भक्त पृथक अस्तित्व वाले नहीं हैं। संत मीता ने भी संत और भक्त के अभेद को स्वीकार किया है।

संत धारा का मूल स्रोत वेदों में उपलब्ध है किन्तु उसका क्रमिक विकास गोरखनाथ से हुआ। कबीर ने निर्गुण संत धारा को व्यवस्थित किया। आलोचकों की यह धारणा कि "१८वीं शताब्दी में संत साहित्य निरर्थक रूढ़ियों और भाराक्रान्त पदावलियों का भूल भुलैया बनकर रह जाता है।"[४] वस्तुतः इस प्रकार की धारणा का आधार अनेक पंथों का प्रादुर्भाव एवं साधनागत क्षीणता को रखा होगा। किन्तु यह धारणा उचित नहीं प्रतीत होती क्योंकि उत्तर भारत में जहाँ एक ओर तुलसी, सूर केशव जैसे सगुण भक्त कवियों का प्रभाव जनव्यायी था वहीं दूसरी ओर कबीर की निर्गुण संत वाणी साखी और पदों के माध्यम से लोक जीवन में तम्बूरे की तान के साथ जीवन के तार-तार में शब्दायित हो रही थी। लोक जीवन में अनपढ़ एवं सामान्य जन को भाव मग्न करने की क्षमता आज भी कबीर आदि संतों की निर्गुणिया वाणी में जैसी पाई जाती है वैसी सगुण भक्तों में नहीं। कबीर के पदों और साखियों ने घुमक्कड़ फकीरों से लेकर अलाव और चौपालों में ठिठुरते हुए आम आदमी के बीच इतनी बड़ी मात्रा में प्रभाव छोड़ने का काम किया है कि हजारों की संख्या में पदों और साखियों की रचना की गई तथा उन पदों में 'कहैं कबीर सुनो भई संतों' की टेक देकर उन रचनाओं को कबीर की वाणियों में मिला दिया गया। शब्द का इतना बड़ा समुद्र और रचनात्मक क्षमता का इतना सघन विस्तार सगुण भक्तों की रचनाओं ने नहीं किया। ठेठ ग्रामीण अंचलों में अनपढ़ लोगों के बीच जहाँ सूर और तुलसी का प्रवेश नहीं हो पाता वहाँ कबीर के भजन ही रसविभोर करते हैं। निर्गुण साधना का ये उत्स अठारहवीं शताब्दी तक प्रभावपूर्ण रहा। कबीर की निर्गुण साधना की धारा कालान्तर में प्रच्छन्न भले हो गई हो किन्तु वह मृयमाण नहीं हुई। १७वीं शताब्दी के बाद संतों के अखाड़ों में एक

---

१. आप्टे, संस्कृत हिन्दी शब्द कोष

२. गार्हपत्येन् सन्त्य मृतुना यज्ञ नीरसि। देवान् देवयते यज।

(सूक्त १५, मंत्र १२) ऋग्वेद, प्रथम मंडल

३. पूर्णः कुम्भोषिकाल आहि तस्त वै पश्यामो बहुधा नु सन्तः।

अथर्ववेदः १६ सू० ५३ मंडल ३।

४. हिंदी साहित्य—डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ० १५६।

अनीप्सित संकीर्णता का घनत्व गहरा रहा था, जिसे १८वीं शताब्दी के क्रांतिदृष्टा संत चंददास और संत मीतादास जैसे चिंतकों के द्वारा पुनः उर्जस्वित किया गया।

संत मीता जहाँ एक ओर देश और काल की परिस्थितियों में संघर्ष करते हुए चलते हैं वहीं वे देशकाल की सीमा से मुक्त होकर चिरंतन सत्य का संधान करते हैं। उनकी वाणी परमार्थ परक एवं 'सुज्जन हिताय' होकर जन-जन हिताय का रूप ग्रहण करती है और इस दृष्टि से वे समूचे युग को क्रांतिचेतना से युक्त करते हैं। संत परम्परा में संत मीता की उपलब्धि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्ता के कारण सर्वभौम महत्त्व को वरण करती है!

कबीर रूप की परिधि से अरूप, सीमा से असीम, हद से बेहद्दी में प्रवेश कर जाते हैं और निरन्तर उसी बेहद्दी में वास करते हैं जहाँ पर बिना फूल के ही कमल फूलता है।

'हदै छाँड़ि बेहद गया, हुआ निरन्तर वास।
कवल जु फूल्या फूल बिन, को निरखै निज दास॥' क० ग्र०, पृ० १२

यह कमल शून्य या सहस्रसार चक्र है और ब्रह्माण्ड में व्याप्त महा आकाश है। मुनियों को अगम्य है। कबीर के ही शब्दों में—

"हद्द छांड़ि बेहद गया किया सुन्नि असनाना
मुनिजन महल न पावइँ तहाँ किया विश्राम॥" क० ग्र०, पृ० १३७

मीता साधना के क्षेत्र में कबीर के प्रतिनिधि होकर भी कबीर से दो चार डग आगे दिखायी पड़ते हैं। कबीर हद्द से अनहद्द में प्रवेश करते हैं। मीता भी हद्द और अनहद्द दोनों से परे पहुँच जाते हैं—

"कहँ मीता सुनो सुज्जन इहाँ नहीं रहना।
हद बेहद त्याग दूनों निकरि मरदाना॥" मी० ग्र०, पृ० १७०

कबीर ने शून्य और अनहद में अपना डेरा डाल रखा है। किन्तु मीता शून्य और अनहद को भी भ्रम की संज्ञा प्रदान करते हैं—

"भरम खोजे सुन्नि काया भरमु की ठाना।
भरम अजपा सुनै अनहद मरम न जाना॥" मी० ग्र०, पृ० १७०

मीता ने जहाँ एक ओर कबीर पन्थ का कोना-कोना छाना है वहीं दूसरी ओर कबीर पंथ के भ्रम के गढ़ को भी तोड़ने का काम किया है। मीता ने जहाँ एक ओर कबीर को 'टकसाली' कवि कह कर उसकी थाप दी है और उसके दरबारी होने की साख दी है, वहीं दूसरी ओर आवश्यकता पड़ने पर वे कबीर को अपनी 'चटसार' में पढ़ाने के लिये तैयार दिखाई पड़ते हैं—

"गुरु मिले बेनी राम तो मंगल गावऊँ।
कबीरा नानक कोटि तिन्है समझावऊँ॥"

सामान्यतया मीता की वाणी के अनुशीलन से कबीर का अद्भुत साम्य देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि वे १८वीं शताब्दी के दूसरे कबीर हैं अथवा वे कबीर के ही एक नये अवतरण हैं। इसकी पुष्टि भी मीता करते हैं।

(अ) 'कबीर खोजा शरीर का मीत बखानी सोय'

(ब) 'मीत कबीरा एकु हैं कहिबो के हैं दोय।'

किन्तु मीता साहित्य के गहरे अनुशीलन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे कबीर के मार्ग पर चलने वाले नहीं अपने मार्ग पर कबीर को चलने का संकेत करने वाले हैं—

'मीता के मारग चले कबीर सरीखा होय'

इतना ही नहीं अनेक पदों में यह ध्वनि निकलती है कि मीता ने अपने मत को आला, निनारा, गुरु, अगम तथा निजमता की संज्ञा दी है ।

(अ) **मीता का मत** आला (ब) मीता मता निनारा (स) ले **निजमता** हमारा (द) **मीता का मत** गरु है । इन पंक्तियों का व्यंग्यार्थ यह भी निकलता है कि मीता कबीर, दादू, नानक से भिन्न अपने तत्व ज्ञान का अभिज्ञान कराना चाहते हैं । 'आला', 'निजमता', 'गुरू', 'मीता मता' आदि शब्दों का प्रयोग मीता ने न तो अनजाने ही किया है और न शब्दों के प्रवाह में बल्कि जागरूक होकर अपने सिद्धान्तों की गुरुता तथा आलापन स्थापित करने के विश्वास में, भले ही उन्हे इसके लिये कबीर, दादू, नानक के प्रतिपादित मार्ग से अलग एक नया मार्ग स्थापित करना पड़े । ऐसा प्रतीत होता है कि कबीर पंथ के सारे अंगों को आत्मसात करके मीता ने न केवल कबीर दर्शन को परिपूर्णता प्रदान की है, बल्कि यह कहना भी अतिशयोक्ति पूर्ण ही होगा कि यदि कबीर का सम्पूर्ण साहित्य समय के प्रलय प्रवाह में लुप्तप्राय हो जाय तो भी उसके विकल्प में मीता की वाणी कबीर की क्रान्ति चेतना को विस्तार प्रदान करती रहेगी ।

मीता कबीर के निर्गुण दर्शन के सबसे बड़े प्रसारक सन्त लगते हैं किन्तु निर्गुण दर्शन के क्षेत्र में मीता प्रत्येक स्थान पर कबीर से अपना मतैक्य नहीं रखते । मीता कबीर से इस सीमा तक प्रतिबद्ध नहीं हैं कि वे तात्विक निरूपण में उनसे नितान्त बंधे हों ।

मीता ने कबीर दर्शन के पुष्ट संस्कार प्राप्त किये थे तथा पंथ का सूक्ष्म निरीक्षण इस सीमा तक किया था कि जहाँ कहीं आवश्यकता हो, वे स्वतन्त्रता पूर्वक अपनी अस्वीकृति व्यक्त कर सकें ।

मीता की साधना भी कबीर की साधना प्रक्रिया से जहाँ कहीं भिन्न दिखाई पड़ती है । वहीं वे कबीर को अतिक्रान्त भी करते हैं तथा सन्त साधना को निर्गुण पंथ तक सीमित न करके उसे हद्द और अनहद्द, निर्गुण और सगुण दोनों से परे ले चलने में एक नई क्रान्ति का सूत्रपात करते हैं । कबीर योग में भोग का समीकरण नहीं करते । मीता योग और भोग के समन्वय से सन्त मत को एक व्यावहारिक जीवनादर्श प्रदान करते हैं । मीता के अनुसार योग साधना के लिए भोग का परित्याग करना आवश्यक होता है किन्तु योग के सध जाने पर भोग का विस्तार और विस्तृत हो जाता है । मन के केन्द्रित हो जाने पर समस्त जगत का रूप दृश्य, ऐन्द्रिक व्यापार सभी कुछ साधक को आनन्द और विलास प्रदान करता है । उसकी साधना को स्खलित नहीं करता । मीता के ही शब्दों में—

"तीन सौ साठ किया तप ऐसा जाते मिले गोपाला ।
अब जोगी होय भोग करत हैं मीता का मत आला ।।"

मीता पूरे संवत्सर यानी ३६० दिन अहर्निश तप करते हैं। उनका यह तप काल-चक्र के खंडो में विभक्त नहीं हो पाता और तभी वह योगी के रूप में समस्त विश्व को ही अपने विलास और आनन्द की वस्तु के रूप में प्राप्त कर लेते हैं। इतना ही नहीं मीता ने इसे और भी स्पष्ट किया है—

'नारी कुछ दिन त्यागिये जब लग सधै न जोग।
नारी जो मन की मिलै पाछे करिये भोग ॥'

इन पंक्तियों का आशय स्पष्ट है कि योग साधना के पूर्वार्द्ध में नारी का परित्याग आवश्यक होता है किन्तु योग साधना की सिद्धि के पश्चात् मन की नारी के साथ भोग करना चाहिये। मन की नारी से मीता का आशय यह है कि मन की प्रवृत्तियाँ अनुकूल हो जायें अर्थात् सम्पूर्ण प्रकृति ही मन का उपभोग्य बन जाय। मन की नारी सुषुम्ना नाडी की संकेतक है। मीता का यह मत कबीर से अभिन्न होते हुए भी गोरखनाथ के अधिक समीप है।

अब 'जोगी होय भोग करत हैं मीता का मत आला' से यह ध्वनि निकलती है कि वे अपने आला मत का सम्बन्ध जोगियों से जोड़ते हैं और अपने को 'जोगी' कहते हैं। जोगी योग में भोग और भोग में योग की साधना करते हैं। 'गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह' के अनुसार अवधूत द्वैताद्वैत विवर्जित योग में भोग और भोग में योग की साधना करने वाला योगीश्वर सिद्ध पुरुष हैं। वह कहीं भोगी, कहीं त्यागी होता है। उसके वाक्य-वाक्य में वेद, पद-पद में तीर्थ, दृष्टि-दृष्टि में कैवल्य बसते हैं। वह एक हाथ में योग और दूसरे में भोग को धारण करते हुए दोनों से अलिप्त रहता है—

"क्वचिद्योगी क्वचित्त्यागी क्वचिन्नग्नः पिशाचवत्
क्वचिद्राजा क्वचाचारी सोऽवधूतो विधीयते ।"

\+ + +

वचने वचने वेदास्तीर्थानि च पदे पदे
दृष्टौ दृष्टौ च कैवल्यं सोऽवधूतः श्रियेऽस्तु नः ।
एक हस्ते धृतस्त्यागो योगश्चैक करे स्वयम्
अलिप्तस्त्याग योगाभ्यां सोऽवधूतः श्रियेस्तु नः ॥

—गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह, पृ० १० और ११

मीता की यह योग-भोग की समन्वित साधना भर्तृहरि और गोरखनाथ की साधना से मिलती है। 'गोरख वानी' में वज्रोली आदि मुद्राओं की साधना को 'भोग-योग' की साधना कहा गया है—

बजरी करता अमरी राषै अमरी करता बाई
भोग करंता जो व्यंद राषै ते गोरख का गुरु भाई।

—गोरख वानी पृ. ४६

'योग-भोग' की साधना में वीर्य, वायु, मन दृढ़ रहे तो हँसने खेलने और रास-रंग से कोई हानि नहीं होती। चित्त की दृढ़ता (अभंगता) ही मुख्य है—

हसिवा षेलिवा रहिवा संग । काम क्रोध न करिवा संग ।
ससिवा षेलिवा गाइया गीत । दिठ करि राषि आपनी चीत ।।

—गोरख वानी, पृ० ३-४

'योग-भोग' की साधना वाला साधक वीर होता है, वह सहज के अखाड़े में अभंग मन के साथ डटा रहता है, उसके सामने नौ लाख पतुरिया नाचती रहती है, फिर भी ऐसे साधक का मन नहीं विचलित होता—

नौ लष पातुरि आगै नाचै पीछै सहज अषाड़ा ।
ऐसे मन लै जोगी खेलै तब अन्तरि बसै भंडरा ।।

गोरखनाथ ने जिस भंडार को भरने की बात कही है, मीता भी उसी भंडार को भरते हैं ध्यान के तार से ।

विकारों के मध्य भी मन विकृत नहीं होता । योग साधना के दृढ़ हो जाने पर नारी का भोग भी उसे विदेह कोटि में रखता है । भर्तृहरि जैसे योगी के तत्वज्ञान की अभिशंसा भी इसी ओर संकेत करती हैं ।

मीता योगियों की औघड़ परंपरा से जुड़े हुए हैं, 'नाथ' से नहीं । मीता के नाम के साथ 'दास' जुड़ा है, नाथ नहीं । 'दास' औघड़ (फक्कड़) जोगियों के साथ जुड़ता है । उन्होंने गोरखनाथ, भर्तृहरि, गोपीचंद आदि के प्रति अपरिमित श्रद्धा व्यक्त की है । कबीर, दादू, नानक को टकसाली मानते हुए भी उनके पंथ को भ्रामक एवं उनके नाम पर प्रचलित साहित्य की प्रामाणिकता को अस्वीकार किया है, किन्तु गोरख, भर्तृहरि के तत्व ज्ञान की अभिशंसा की है—

अ—कबीर, दादू, नानक इनका ना पतियाव

ब—भर्तृहरि कही सो मान लो तत्त्व ज्ञान का सार

स—गोरख ब्रह्म अगिनि उद्‌गारी

स्पष्ट है कि मीता न तो कबीर का अनुधावन करते हैं, न ही सन्त परम्परा के संस्कारों की सर्वथा उपेक्षा करते हैं । सीम और निस्सीम दोनों के पार मीता का यह प्रवेश योग और भोग के बीच विदेह की भाव भूमि मात्र सैद्धान्तिक अतिक्रमण ही नहीं है, साधना और दर्शन के क्षेत्र में एक विशिष्ट प्रकार के अनुसन्धान का विषय है ।

मीता अपने को कबीर ही मानते हैं और उसके आगे जाकर यह भी कहते हैं कि एक बार मैं कबीर के रूप में काशी में कह चुका हूँ, दूसरी बार अब मीता के रूप में तथा तीसरी बार प्रलय के पूर्व फिर प्रगट हूँगा—

"एक दायं कासी कहा दूसर अब आय,
आगे फिर हम अइबे हो जब लगि नहिं अगिलाय ।"

उक्त पंक्तियों से यह ध्वनित होता है कि वे कबीर से तादात्म्य स्थापित कर चुके थे तथा अपने को कबीर का ही प्राकट्य मानते थे ।

मीता को अपनी संतई में सम्पूर्ण विश्वास है । उनका विश्वास इस सीमा तक पुष्ट था कि

वह कबीर को न तो गुरु ही स्वीकार करते हैं और न अपने को पंथ का अनुयायी ही मानते हैं। सच तो ये है कि वे कबीर को पूर्णरूपेण आत्मसात करके भी अपने मत की बात करते हैं। मीता ने अपने मत को 'गुपुत मते' की बात कहा है। सूर ने भी 'ऊधो गुपुत मते की बात' कह कर साधना के गोप्य होने का संकेत किया है।

मीता कबीर की ही भाँति फक्कड़ फकीर हैं। अलमस्त, बावरे, इश्क हकीकी के संत हैं। मीता अपने को 'अगम का पंथी' तथा 'अगम का पहरुआ' बताते हैं—

'मीता पहरू अगम का ठगियन देइ बताय
साहन का जाहिर करै पाखंड देइ गिराय।'

सत्य और स्पष्ट भाषी होने के कारण मीता जग का बैरी लगने लगा—'साँच कहे मीता भा बैरी'।

मीता को अपने साहब से काम है जग से क्या लेना-देना। दुनिया के स्वार्थ सम्बन्धों में बँध कर वे सत्य से डिगने वाले नहीं। "मीता जग सों का परी साँचा हितू है राम।" **गीता के 'मामनुश्मर युद्ध्व च' का मंत्र उनका प्रेरक था।** मीता भी धनी का ध्यान करके अहर्निश लड़ने का संकल्प व्यक्त करते हैं—

'निसि दिन लरै धनी के ध्यान।'

कबीर की भाँति मीता भी घर जलाकर चौराहे पर निकले हैं—

'या तन गरद मरद कै डारौं
या फक्कड़ घर जारे का।'

शरीर का मोटा या दुबला हो जाना मीता के अनुसार अन्न पानी का फेर है। यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि शरीर कितना मोटा और दुबला है, महत्त्वपूर्ण तो यह है कि मीता भक्ति में मोटा हो रहा है—

'काया मोटी दूबरी अन्न पानी का फेर।
मीता मोटा भक्ति मा काया माटी ढेर॥'

निष्काम कर्म की निष्ठा तथा कृषि कर्म की सम्बद्धता संत मीता को समाधि के दर्जे में तन्मयता प्रदान करके भी परमार्थ की ओर उन्मुख करती है। वस्तुतः मीता ने परमार्थ के कारण ही वाणी—वचन कहे हैं—

'परमारथ के कारने साखी सब्द पसार।'

वस्तुतः मीता की यह परमार्थ साधना सारी मनुष्य जाति पर करुणा का एक विशेष शब्द-दान है। उनके इस दाय को नहीं भुलाया जा सकता।

शास्त्र का बोझ लादकर गधों का जीवन जीने वालों की दुर्गति से मीता परिचित हैं। पांडित्य के दम्भ से कविताई का चातुर्य लेकर राज दरबारों की विलास की वस्तु बनने वाली कविता के वाग्जाल का परिणाम भी वे पहचानते हैं। वे मानवीय अस्तित्व के पक्षधर और स्वातंत्र्य चेता अभय के गायक हैं। वे स्थितप्रज्ञ, जीवनमुक्त कोटि के परमार्थ चिन्तक हैं। कबीर

की भाँति वे भी टकसाली हैं। कबीर के ज्ञान को दानव ने लूट लिया पर मीता ने दानवी शक्तियों के विध्वंस के लिए अग्निबाण बनाये हैं, ये अग्निबाण (Fire Force) खरे सान के बनाये गये हैं। जिनके छूते ही दानव जल मरते हैं—

'दानव तुरत छुअत जरि मरते खरे सान के भारी'

वस्तुतः मीता कबीर की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली औजार लेकर युद्ध में अकेले ही धँस जाते हैं। अकेले ही रह जाते हैं किन्तु साहित्य के क्षेत्र में चौर कर्म करने वाले मीता के बाणों से सशंकित होते हैं। उनकी वाणी के लक्ष्य से चोरों में एक खटका व्याप्त हो जाता है। इतना ही नहीं बहुतों की दुकानें उठ जाती हैं और बहुत से छाती कूटते हुए दिखाई पड़ते हैं—

'चोरन के खटकत रहत जन मीता के बान।
छाती कूटैं सिर धुनैं खोई जात दुकान॥'

संत साहित्य के मर्मज्ञ आचार्य पं० परशुराम चतुर्वेदी ने कबीरपंथ के उत्तरवर्ती कवियों की परम्परा में कबीर जैसे व्यक्तित्व को न पाकर क्षोभ व्यक्त करते हुए कहा है, "परन्तु संयोग की बात है कि स्वयं उनके नाम पर प्रचलित कबीर पंथ के अनुयायियों तक में भी कदाचित कोई ऐसा महापुरुष नहीं हुआ जो उनके मौलिक और अनमोल क्रान्तिकारी विचारों को पूर्ण रूप से आत्मसात करके उन्हें एक बार फिर आगे ला सके।"१

यदि चतुर्वेदी जी को अपने जीवन काल में मीता के सम्पूर्ण साहित्य के अनुशीलन करने का सुयोग प्राप्त होता तो हमें पूरा विश्वास है कि इन पंक्तियों में अभिव्याप्त नैराश्य से बच जाते और उनके वाक्यांश में प्रयुक्त 'कदाचित' शब्द की सार्थकता संत मीता के साहित्य की उपलब्धि से सिद्ध हो जाती है।

मीता का काव्य कबीर के काव्य का केवल संस्करण ही नहीं है अपितु उनके काव्य में हमें एक अभिनव कबीर के दर्शन होते हैं और यह अभिनव कबीर-कबीर की भाँति खरा टकसाली सिक्का है।

मीता काव्य और साधना के विषय में नितान्त जागरूक थे। उन्होंने अपनी एक वैयक्तिक छाप कबीर पंथ से भिन्न प्रतिष्ठित की है। मीता ने सर्वथा एक नवीन मार्ग का प्रवर्तन किया है। वे कहते हैं कि कबीर का काव्य तो जाना जा सकता है अर्थात वह ज्ञेय है परन्तु उनकी स्वयं की वाणी अगाध है जिसका तत्त्व दर्शन गूढ़ एवं गम्भीर है। इस प्रकार वे अज्ञेय हैं—

"मीता-मता अगाध है जानन जोग कबीर"

एक अन्य स्थल में वे अपने से पूर्ववर्ती साखी और सब्द कहने वाले अनुयायियों की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि जहाँ तक विवेक का प्रश्न है, वह उनकी वाणी में ही प्राप्त हो सकता है, भले ही अनेक पंथियों ने साखी सबदी बड़ी मात्रा में की हों या विपुल परिमाण में की हो—

साखी सबदी बहु किए मीता कीन्ह निसाफ।

भले ही कबीर के निर्वचन, कबीर का तत्ववाद, कबीर की साधना पद्धति, किंबहुना कबीरवाद को ज्यों का त्यों मीता ने अपनी वाणी में समनुक्रान्त किया हो परन्तु एक पंथ प्रवर्तक

१. कबीर साहित्य चिन्तन—आचार्य पं० परशुराम चतुर्वेदी, पृ० १८६

के रूप मे (यद्यपि कबीर को पंथ का प्रवर्तन करना अभीष्ट नहीं था) कबीर का अपना स्थान सुरक्षित है। वे एक सच्चे संत स्रष्टा थे। उन्होंने अनेक धर्मों के कर्दम में अपनी साधना के जीवंत बीजों का वपन किया था और उनकी वाणी का जो सहस्रसार कमल प्रफुल्लित हुआ, उसकी अपनी अप्रतिम गंध है, उसकी छटा निराली है। भले ही उसी बीज से उत्पन्न मीता का साधना कमल उस आदि कमल से होड़ लेता प्रतीत हो।

जीवन वृत्त—संतों का जीवन वृत्त, उनका व्यक्तित्व उनके कृतित्व में ही मौन होकर मुखर होता है। व्यक्तित्व और कृतित्व की समानधर्मिता तथा आत्मश्लाघा की वृत्ति से परांङ्मुख होने के कारण संत काव्य में भारतीय संतों एवं भक्तों ने जीवनवृत्त एवं आत्मकथा के प्रति पाश्चात्य लेखकों जैसी मनोवृत्ति का परिचय नहीं दिया। वस्तुतः उनका आनुभूतिक सत्य ही तो उनका आत्म कथ्य है। लोक अभिशंसा एवं आत्म-अभिशंसा अहम्मूलक होने के कारण संतकाव्य में जिजीविषा का प्रमुख विषय नहीं बन सकी। जहाँ कहीं संतों की वाणी में आत्म-परिचय के कुछ सूत्र उनकी साधना के अंशभूत बनकर आ सके हैं, वे नितांत सहज एवं प्रामाणिकता के साक्ष्य प्रतीत होते हैं। संत मीता ने अपने पूर्ववर्ती एवं कबीर के परवर्ती संत साहित्य की प्रामाणिकता पर संदिग्धता प्रकट की है तथा कबीर के टकसाली संत साहित्य में उनके अनुयायियों द्वारा पद-भ्रष्टता का संकेत किया है। बहुत सम्भव है प्रामाणिकता के इसी संकट को पहचानकर संत मीता ने जीवन-वृत्त के प्रामाणिक सूत्रों को देकर साहित्य एवं साधना की अस्तित्व-धर्मिता को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया हो।

संत मीता के जीवन-वृत्त के प्रामाणिक आकलन के लिए अंतःसाक्ष्य एवं वहिर्साक्ष्य को आधार मानकर उनके जीवन वृत्त का अनुशीलन वस्तुपरक एवं वैज्ञानिक निष्ठा से युक्त होगा। अस्तु, हम अंतःसाक्ष्य के आधार पर उनके जीवन-वृत्त का आकलन करेंगे। अंतःसाक्ष्य के आधार पर उन्होंने अपनी जन्म-भूमि उत्तर-प्रदेश के फतेहपुर जिले के फतुहाबाद (खजुहा) को तथा अपने मूल पूर्वजों की भूमि इसी जनपद के कोराईं नामक ग्राम को बताया है।[१] उनकी जन्म भूमि खजुहा फतेहपुर जिले में बिंदकी और बकेवर के बीच स्थित है। यह प्राचीन ऐतिहासिक कस्बा है। मुगलकालीन इतिहास में खजुहा (फतुहाबाद) शाही शासन का एक महत्त्वपूर्ण स्थल रहा है। आज भी वहाँ पर औरंगजेबकालीन शाही फाटक, बारहदरी एवं अन्य ऐतिहासिक पुरावशेष पाये जाते हैं। बहुत सम्भव है कि ऐतिहासिक स्थल होने के कारण औद्योगिक-राजनीतिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र को ही निवास स्थान बनाया गया हो और इसीलिए कुराँई से उनका परिवार खजुहा (फतुहाबाद) में आकर बस गया हो। मीता ने अपने ग्रंथ में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है कि वे फतुहाबाद में दस्सन, (दोसर) बनिया[१] के घर प्रगटे। इस प्रकार उनकी जाति संबंधी मान्यता का किसी प्रकार का कोई विवाद नहीं है। उनके विभिन्न पदों के रूपकों से उनके जाति व्यवसाय आदि के चित्र मिल जाते हैं। मीता को अपनी जाति का कोई गर्व नहीं था। वैश्य-कुल को ओछी जाति[२] कहने के दो कारण प्रतीत होते हैं। प्रथम यह कि वे वैश्य कुल में उत्पन्न होकर पीछे अपनी जांति-पांति को तोड़कर संतों और भक्तों के कुल में आ जाते हैं। अस्तु, लौकिक जांति-पांति को ओछी कहकर व्यक्त करते हैं। एक दूसरा कारण यह भी प्रतीत

१. वतन कुराय। जलमु फतुहाबाद बकेउर बिंदकी के बीच। मी० ग्र०, ग्रंथ दूसर, ११२

२. जांति-पांति के ओछे मीता हरि भज भए पुनीता। मी० ग्र०

होता है कि औरंगजेब के शासनकाल में वैश्यों की सामाजिक मर्यादा बहुत ऊँची नहीं थी। मीता के पदों से यह भी ज्ञात होता है कि उन्होंने "पाँति-पंगति" (जाति-बंधन) का विरोध किया था जिसके परिणाम-स्वरूप उन्हें जातीय विरोध का भी सामना करना पड़ा। फतुहाबाद (खजुहा) में मीता ने अपने जीवन के लगभग ४८ वर्ष व्यतीत किये। यहीं पर उन्होंने अपने पदों तथा साखियों की रचना की। सम्बत् १७८५ में खजुहा छोड़कर उन्होंने उन्नाव जनपद के 'पुरवा' नामक कस्बे को अपनी साधना-स्थली के रूप में चुना। पुरवा, उन्नाव-हरदोई मार्ग पर स्थित उन्नाव जनपद का एक प्राचीन कस्बा है। इसे रंजीतपुर भी कहते हैं।

मीता ने अपने गुरु का नाम बेनीराम बताया है।

१. "गुरु पाए बेनीराम तो मंगल गावउँ" मी० ग्र० १४८/१३

२. "सदके बेनीराम के जिन किया निहाल" मी० ग्र० १८३/१२

बेनीराम साहब उत्तर भारत के प्रमुख संतों में से एक थे, जिन्होंने निर्गुण संत-साधना के प्रसार हेतु विभिन्न प्रान्तों में यात्राएँ भी की थीं। इन्होंने "भक्तावली"[१] नामक एक ग्रन्थ की रचना की थी। संत मीता के पदों से ऐसा प्रतीत होता है कि वे खजुहा में रहते हुए किन्हीं कारणों से उदासीन थे और संत मार्ग में आने के लिए उन्होंने विभिन्न स्थानों में सतगुरु की खोज भी की थी।

"देस देस में मैं फिरी मिला न संत सुजान।
कहि मीता ते बहु मिले कामी कुटिल नदान।" मी० ग्र० ५

वे इसी खोज में बाराबंकी के कोटवा के सतनामी सम्प्रदाय के जगजीवनदास के पास भी गये। किंतु उनके आडम्बर को पहचानकर उनसे अलग हो गये तथा उनकी भ्रष्ट साधना की खुलकर भर्त्सना की।[२] संयोग से उन्हें बेनीराम साहब मिले। मुंशी ज्ञान सिंह के अनुसार बेनीराम साहब कायस्थ परिवार के बरई छतुरुवा के निवासी थे, जो कानपुर जिले के अंतर्गत स्थित है। मीता के दीक्षा-गुरु यही बेनीराम साहब थे जिन्होंने उन्हें मार्ग दिखाया। बेनीराम कानपुर के बिठूर के किसी हिमांचल गिरि के शिष्य बताये जाते हैं। गिरि जोगियों की एक जाति होती है। खेद है इनके सम्बन्ध में अन्य जानकारी नहीं मिलती।

मीता ने अनेक पदों में गुरु के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है और उसे ईश्वर की मनोदेह के रूप में स्वीकार किया है। उसे 'धनी' कहा है। 'धनी' का परिचय पाकर ही मीता फकीर हो जाते हैं।[३] मीता के एक पद से पता चलता है कि सतगुरु उन्हें मार्ग प्रदान करके कहीं अन्यत्र चले गये थे और १२ वर्ष बाद लौटकर आए—

१. 'भक्तावली' नामक ग्रन्थ मीता-मत के अनुयायी ठा० मुंशी ज्ञानसिंह के पास सुरक्षित है।

२. (अ) जगजीवन, धृग जीवन माँग खात हैं भीख।
(ब) प्रथमै जब हम भयेन उदासा······मी० ग्र०, १४५

३. (अ) सतगुरु केवट संग ले अथहा देइ थहाह······मी० ग्र० १२
(ब) मीता पहुँचा अगमपुर सतगुरु दीन्हा।
(स) धनी मिला परिचय मिला मीता भए फकीर। मी० ग्र०१९.

"बौरी घर प्रीतम आए री नैना निरखि सिराए री।
बारह बरख रही मघु जोवति बड़े जतन ते पाए री ।। मी० ग्र० १४७."

श्रीमती शशिप्रभा दीक्षित का इस सम्बंध में कथन है कि सम्भवतः बेनीराम साहब मीता साहब को पंथ दिखाकर संत-साधना के प्रसार हेतु अन्य प्रान्तों में भ्रमण हेतु निकल गए हों और पुनः १२ वर्ष बाद लौटकर आए हों। मीता की विरहिणी १२ वर्ष तक जिस प्रियतम (सतगुरु) का मार्ग जोहती रहीं और प्रियतम को पाकर जिस आनन्द की अनुभूति हुई उसे 'बौरी' से व्यंजित किया गया है। मीता निश्चिंत होकर सो रहे थे उनके गुरु ने ही उन्हें जाग्रत किया।[1] मीता ने अपने गुरु को 'पूरे गुरु', 'गरुवे', 'पठंगा' गुरु की संज्ञा दी है और गुरु को पाकर अमरौती पाई हैं—

'अब न मरौं अमरौती पाई, गुरु से वैद मिले रे भाई।'

पारिवारिक जीवन—संत मीता ने अपने पदों में कनक, कामिनी की निन्दा की है। इसे क्षणिक बताया है। किन्तु निर्विवाद रूप से उनके पदों से यह प्रमाणित है कि वे 'गिरही' को ही संत तथा 'किरखी' के द्वारा निस्तार करने वाले को ही साधु स्वीकार करते हैं। उनके मतानुसार संतों को 'गिरही' होना आवश्यक है। गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए पद्म-पत्र की भाँति जीवन जीने का संकेत स्पष्ट है। यह आश्चर्य नहीं होगा कि उनके पारिवारिक जीवन के सूत्रों से उनके गार्हस्थिक जीवन को रेखांकित किया जाय। यद्यपि उनके पारिवारिक सदस्यों की कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती तथापि उनके पदों से यह अवश्य ध्वनित होता है कि वे पारिवारिक जीवन के बीच रहने वाले संत थे।

संत मीता ने एक पद में यह भी संकेत किया है कि वे 'धनिया' को पाकर ही 'धनी' गुरु को प्राप्त कर सके—

'धनिया मिल धनिया भये यामें धोक न होय'

पद की इस पंक्ति में धनिया शब्द में श्लेष है। जिसका आशय—(१) धनी से मिलकर धनी होना है अर्थात सतगुरु से मिलकर परमात्मा से भेंट करना है तथा (२) 'धनिया' पत्नी की सहायता से 'धनी' की खोज करना है। (३) धनिया के व्यवसाय को, जो वैश्यों का मुख्य व्यवसाय होता है, छोड़ कर धनिया अर्थात परम पुरुष का सौदा करना है।

उनके अन्य पदों में भी 'धनिया' शब्द का प्रयोग स्त्रीवाची है। एक अन्य साखी में वे धनिया (पत्नी) को सम्बोधित करते हुए ये कहते हैं कि अभी तक तो लौकिक सेज का सुख प्राप्त किया गया। यदि आध्यात्मिक सेज का सुख एक बार भी प्राप्त कर लिया जाय तो जीव को अमरौती प्राप्त हो जाय, उसका कभी मरना न हो—

"बानिनि बानि विचारो जो पिय केरि।
तौनो सेजरी सोओ मरौ न फेरि।।"

'बानिनि' से वैश्य जाति की स्त्री का ही संकेत है। आंचलिक भाषा में वैश्य कुल के पुरुष को 'बानी' और स्त्री को 'बानिनि' कहा जाता है। इस पद में 'बानिनि' कदाचित अपनी स्त्री के लिए ही संबोधन हो।

---

१. निभर भए सोवत ता मीता गुरु जगाय दिया मोहीं। मी० ग्र० ११६

इसी प्रकार एक अन्य साखी में उन्होंने इस बात का संकेत किया है कि मैंने अपने मन से विचार पूर्वक माया (सम्पत्ति) तथा नारी (भोग-विलास) को उतार दिया है अर्थात उसके प्रति उदासीनता का भाव ग्रहण किया है—

'माया नारि तौलि के मन ते दिया उतार।'

इस पद में 'माया-नारि' तथा 'मन' दोनों शब्द विचारणीय हैं। मन से उसी वस्तु को उतारा जाता है जिसमें उसका रंग चढ़ चुका हो। यदि मीता साहब की कोई पत्नी नहीं होती तो सम्भवतः मन से नारी के उतारने का कोई औचित्य नहीं होता। 'माया-नारि' में संत जीवन की भी अभिव्यक्ति है। मीता का वैराग्य और 'जोग' आला और निराला है। वे भोग में जोग करने वाले 'विदेह' प्रतीत होते हैं। एक साखी में इस प्रकार का संकेत है—

'नारी मन की जो मिलै तासों करिए भोग'

इसी प्रकार का संकेत एक दूसरी साखी में—

'नारी कछु दिन त्यागिये जौ लगि सधै न जोग,
जोग सधै साहिब मिलैं पाछै करिए भोग।'

इन पंक्तियों से व्यंजित होता है कि वे गार्हस्थिक संत थे। मीता के पिता कौन थे? इस सम्बन्ध में मीता ने अपने मूल ग्रन्थ में 'दस्सन दोसर' के घर प्रगट होने का उल्लेख किया है तथा उनकी देह छोड़ने की तिथि का भी उल्लेख किया है। पिता के देह छोड़ने के दो-तीन वर्ष के बाद ही वे खजुहा छोड़कर पुरवा में आ बसते हैं। ऐसा प्रतीत होता है 'दस्सन दोसर' ही उनके पिता होंगे। मीता की समाधि-स्थली से सम्बन्धित सरकारी कागजों में बन्दोबस्त के अनुसार मीता 'वल्द साहाबदीन बक्काल" लिखा हुआ है। यदि बन्दोबस्त को आधार मान लिया जाय तो उनके पिता साहाबदीन नामक बनिया होते हैं। ये उल्लेख सन् १८७३ ई० अथवा १६१३ ई० के आसपास का होने के कारण प्रामाणिक नहीं जान पड़ता और उनके मूल ग्रन्थों में उल्लिखित जानकारी (दस्सन दोसर) के विपरीत प्रतीत होता है। बहुत सम्भव है मीता के निर्वाण के बाद लोगों ने उनके पिता के नाम के स्थान पर 'साहाब दीन' लिखा दिया हो, जिसका अर्थ होता है "ईश्वर की सन्तान"।

मीता मत के अनुयायी ठा० ज्ञान सिंह कबीर की भाँति मीता को अयोनिज सृष्टि वाला बताते हैं। वस्तुतः इस विश्वास में श्रद्धा की अभिव्यक्ति अधिक है। इतना तो निश्चित है कि इनके माता-पिता थे। एक पद में उन्होंने इसका संकेत किया है—

'जौ लगि बात कहै पितु-माता तौ लगि छुटै न प्रेम विलासा।
राम रसायन जब मन माता मीता काम, क्रोध तब नासा॥'

ऐसा प्रतीत होता है कि मीता के माता और पिता भी वैष्णव होने के कारण अपने पुत्र को आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर करने के लिए प्रयत्नशील थे। किन्तु 'राम-रसायन' मिलने पर ही मीता का 'प्रेम-विलास' छूटता है। इस 'प्रेम-विलास' शब्द से भी यह ध्वनित होता है कि वे संत मत में आने के पूर्व गार्हस्थिक प्रेम-विलास में भी जीवन-यापन कर चुके हैं। यह प्रेम-विलास पत्नी-पुत्र, पिता-माता आदि का ही तो संकेत करता है।

मीता सन्तजीवन के लिये संन्यास की आवश्यकता पर बल नहीं देते और इस प्रकार संन्यास की परम्परागत मान्यता को ध्वस्त करके किरखी करने का संकेत करते हैं।

(अ) सन्त शाह गृह या भवे किरखी कैकै खाँय।

(ब) कह मीता बन का फिरै, बन मा बिरवै होय।

'किरखी' से आशय श्रमजीवी कार्यों से है। मीता का परिवारिक जीवन सम्पन्न था उनके पदों से ज्ञात होता है कि वे धन के अभाव में नहीं भटके। सत्गुरु की खोज में वे देश-विदेश भटकते रहे। उनके वैराग्य का कारण रोटी की खोज नहीं है। वे तत्कालीन साम्प्रदायिक झगड़ों, राजनीतिक उत्तराधिकार की लड़ाइयों तथा रक्तपात के वातावरण में टूटते हुये मूल्यों के प्रति चिन्ता व्यक्त करते हैं।[१]

बहुत सम्भव है कि खजुहा से पुरवा जाने का कारण खजुहा की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति ही रही हो। इतिहास में फतूहाबाद (खजुहा) भी औरंगजेब के उत्तराधिकार की लड़ाइयों का केन्द्र स्थल था। औरंगजेब और सुजा का भयंकर युद्ध मीता के निवास स्थान खजुहा में ही हुआ था। अशान्ति और रक्त-पात के इस राजनीतिक वातावरण में रहना सन्त के लिये अभीष्ट नहीं रहा होगा, बहुत सम्भव है मीता ने इन राजनीतिक घटनाओं का तत्कालीन परिस्थितियों में विरोध भी हो, जिससे उन्हें मुगल शासन का कोप भाजन बनना पड़ा हो। मीता ने एक स्थान में 'बदररिया' शब्द का प्रयोग किया है, जिसका आशय होता है एक स्थान से बदलना अथवा निष्कासन। रूढ़िगत साम्प्रदायिकता एवम् राजनीतिक विद्रूपताओं से मीता का संघर्ष करना स्वाभाविक है। विसंगतियों से लड़ने वाला व्यक्ति ही तो साधना के क्षेत्र में आध्यात्मिक सूरमॉ की भाँति लड़ने वाला सिद्ध होता है। मीता भी जीवन के बाह्य संघर्षों से लड़ते हुये आन्तरिक संघर्षों तक एक जुझारू दृष्टिकोण लेकर चलने वाले सन्त योद्धा थे।

काल निर्धारण

सन्त मीता का काल सम्वत १७४७ (१६९० ई०), से सम्वत १८२५ (१७६८ ई०) के बीच का अठारवीं शताब्दी का सिद्ध होता है। मीता के जन्मकाल का विवरण नहीं मिलता। उनके मूलग्रन्थों से यह प्रमाणित होता है कि सम्वत १७८० में जब वे ३२ वर्ष की आयु के थे तभी उनकी भेंट सतगुरु से हुई थी।[२] इससे उनका जन्म सम्वत् १७४७ प्रमाणित होता है। सम्वत १७९४ में मीता द्वारा फतूहाबाद (खजुहा) छोड़कर पुरवा (उन्नाव) में आकर बसने का उल्लेख भी मिलता है तथा उनके देह छोड़ने की तिथि सम्वत १८२५ मीता पंथ के अनुसार प्रामाणिक हैं। अन्तर्साक्ष्य से मीता के काल का निर्धारण किया जा सकता है। मीता ने अपने बचनों में समकालीन ऐतिहासिक राजाओं, सन्तों, कवियों तथा अपने पूर्ववर्ती ऐतिहासिक प्रसंगों के संकेत किये हैं, जो इस प्रकार हैं—

(अ) समकालीन राजाओं में बाबू बैरीसाल (डौडियाँ खेर), भगवन्त राय (असोथर फतेहपुर) छत्रसाल, एवम् मोहम्मदशाह (दिल्ली) का उल्लेख किया है। यह सभी ऐतिहासिक दृष्टि से अठारवीं शताब्दी के इतिहास के प्रख्यात व्यक्ति हैं जिससे मीता के काल निर्धारण में सुविधा

---

१. (अ) राजपाट के काजे मरते, ते हैं मूरख गँवार।

२. सतगुरु मिले सम्वत १७८० मॉ तब उमर रही बरष ३२ मीता की। (मीता के हस्तलिखित ग्रन्थ से उद्धृत)।

प्राप्त होती है। मीता ने एक साखी में अपने समकालीन दिल्ली नरेश मोहम्मदशाद की ओर संकेत करते हुये लिखा है—

'दिल दिल्ली के तख्त में बैठा सुख शाह।'

मीता का आशय यह है कि मैं दिल की दिल्ली में बैठा हुआ सुख का शाह हूँ, साथ ही दिल्ली तथा शाह शब्द श्लेष से ऐतिहासिक प्रसंग की ओर संकेत करते हैं। दिल्ली के तख्त में सुखपूर्वक जिस शाह के बैठने का संकेत मीता ने किया है, वह शाह मोहम्मद के लिये ही है। इतिहास में मोहम्मदशाह १७१९ ई० से १७४८ ई० तक लगभग ३० वर्ष तक सुखपूर्वक राज्य करता रहा। सुखपूर्वक राज्य करने से यह भी संकेत किया कि मोहम्मद शाह के पूर्व तथा औरंगजेब के परवर्ती बहादुरशाह (१७०७ से १७१२ ई०), जहाँदारशाह (१७१२ से १७१३ ई०), फरुखसियर (१७१३ से १७१९ ई०) अल्पकालिक रहे, जो सुख पूर्वक राज्य नहीं कर सके। मीता ने सम्वत १७८० से १७९० के बीच लिखे जाने वाले पदों में इस घटना का संकेत किया है, यह काल इतिहास[१] की दृष्टि से मोहम्मदशाह का ही सिद्ध होता हैं और इस प्रकार मीता का काल निर्धारण अठारवीं शताब्दी उचित प्रतीत होता है।

मीता ने अपने पदों में पन्ना के महाराज क्षत्रसाल को झन्ना नाम के किसी मुसलमान फकीर द्वारा कढ़ी खिलाने तथा उसमें मुर्गी के अंडों को मिला कर हिन्दुत्व को भ्रष्ट करने का संकेत किया है।[२] इतिहास में औरंगजेब के काल में हिन्दुओं को मुसलमान बनाने को प्रक्रिया बड़ी तेजी से चल रही थी। औरंगजेब के समकालीन क्षत्रसाल का होना तथा १७०७ ई० में औरंगजेब की मृत्यु के बाद भी क्षत्रसाल का होना इतिहास में प्रमाणित है।[३] औरंगजेब के निधन काल के समय मीता १७ वर्ष के थे जिससे प्रमाणित होता है कि मीता क्षत्रसाल के समकालीन थे। इस प्रकार मीता का काल अठारवीं शताब्दी पुष्ट होता है।

मीता ने अपने समकालीन जगजीवनदास का उल्लेख किया है। जगजीवनदास सतनामी सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सन्त हो चुके हैं, जो कोटवा, बाराबंकी में थे। सतनामी सम्प्रदाय के अनुसार जगजीवनदास का जन्म सम्वत १७२७ तथा मृत्यु सम्वत १८१८ मानी गई है। डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने इसी को प्रमाणिक स्वीकार किया है। क्रुक ने जगजीवनदास का जन्म काल सम्वत १७३९ माना है तथा आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल ने भी इसी को स्वीकार किया है। डॉ० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने जगजीवन का कार्यकाल सम्वत १८०७ बताया है। इस प्रकार कोटवा (बाराबंकी) निवासी सन्त जगजीवन का जन्म सम्वत १७२६ रहा हो अथवा सम्वत १७३९ किन्तु यह तो निर्विवाद है कि वे सम्वत १८१८ तक जीवित रहे। मीता का कार्यकाल सम्वत १७४७ से १८१५ का है इस प्रकार जगजीवन तथा मीता का समकालीन होना भलीभाँति प्रमाणित होता है। मीता ने अपने समकालीन जगजीवन दास की साधना को पाखंड पूर्ण बताया है तथा उसे उत्तर की ओर रहने वाला बताया है—

---

१. मुगल कालीन भारत, डॉ० आशीर्वादीलाल, पृ० ४३५

२. झन्ना पन्ना ठगु भये मुसलमान धरि मेखु। छत्रसाल का कढ़ी खपाई छल बलवाने देखु।
मुर्गी केरे अंवाडारे घोरि खवाबैं कढ़िया। हिन्दू तेरे तुरको करते ते मीता गुरु मढ़िया ॥
मी० ग्र०

३. 'महाराज छत्रसाल का देहावसान दिसम्बर ४, १७३१ ई० को ८१ वर्ष ७ माह में हुआ।
—महाराज छत्रसाल बुन्देला, डॉ० भगवानदास गुप्त, पृ० १३६

(अ) जगजीवन उत्तर में है सो पाखण्डी आय।
काट कूट कहता भया अनभय नाहीं पाय।

(ब) जग जीवन धृग जीवन माँग खात है भीख।
अपना परे नरक माँ औरन का करे सीख।

'जग जीवन' उत्तर में है कह कर मीता ने यह संकेत किया है कि कोटवा (बाराबंकी) पुरवा (उन्नाव) के ठीक उत्तर दिशा में है। इस प्रकार उत्तर से अपनी साधनास्थली एवं जगजीवन की सतनामी गद्दी कोटवा की भौगोलिक स्थिति से तथा 'उत्तर में है' में प्रयुक्त 'है' वर्तमान कालिक प्रयोग है जो उनके समकालीन होने का सूचक है। ऐतिहासिक तिथियों से भी उनका समकालीन होना पुष्ट है। इस प्रकार मीता का काल अठारवीं शताब्दी निर्विवाद एवं प्रामाणिक है।

'बेनी मलूक को समझावा'[1] नामक पद में मलूक के द्वारा बेनी से यह पूँछने पर कि आपने जन कल्याण हेतु बचनवाणी क्यों नही कहें? इस प्रश्न के उत्तर में बेनी ने मलूक को यह बताया कि मुझे मेरे गुरु ने ढ़ोल देने के लिए नहीं कहा। सम्वत् १७८० में जग को जीतने वाला आवेगा वह बिना हुकुम के कहे गये पदों को काटेगा तथा कबीर के लूटे हुए ज्ञान को छुड़ा लेगा इस प्रकार का संकेत किया गया है। सन्त मीता ने सम्वत् १७८० में ही अपने बचन वाणी कहे हैं तथा अपने को कबीर का अवतरण भी माना है और जग को जीतने वाला बताया है। इस प्रकार मीता के गुरु बेनीराम द्वारा संकेतिक काल भी मीता के काल निर्धारण में सहायक सिद्ध होता है। हाँ, एक असंगति अवश्य है कि 'बेनी मलूक को समझावा सम्वत् १७४६ माँ' अंकित है किन्तु मलूक दास सम्वत् १७४६ के पूर्व ही निधन को प्राप्त हो जाते हैं इससे ज्ञात होता है कि ये मलूक कड़े के प्रसिद्ध मलूकदास से भिन्न कोई अन्य मलूक होंगे। यदि इन्हें कड़े के मलूकदास होना ही मान लिया जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि किसी प्रतिलिपिकार के द्वारा अपनी ओर से 'मलूक को समझावा सम्वत् १७४६ बाद में जोड़ दिया गया होगा जिससे तिथि विषयक भ्रम उत्पन्न होता है किन्तु इससे मीता के काल निर्धारण में कोई अन्तर नहीं पड़ता। कड़े के मलूकदास बेनी राम के समकालीन सिद्ध होते हैं।

परिवार के अन्य सदस्यों के सम्बन्ध में अन्य प्रामाणिक विवरण अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका। किन्तु खजुहा और कुराई दोनों स्थानों से ऐसे सूत्रों का पता चलता है जिनसे अनुसंधान

---

१. पद बिवेक बेनी साहब कीन मलूक का समझावा सम्वत् १७४६ वि०
बानी अगमु हमारि है तुम सुनो मलूका ज्ञान हो।

× × ×

धनी हुकुम मोहि ना किया रे ताते ढ़ो लन दीन
सम्वत् सतरा सो असी आये एक होई जग का जीत हो
बिना हुकुम जिन पद किया रे ते सब डारी काट
पूरी अदल चलाइहै वा सो छपी न पूरी घाटि हो
लूटा ज्ञान कबीर का रे सोऊ लेय छड़ाँय
कहे बेनी अस होगा तूरि कथनी देई बहाय हो।

करने पर उनके पारिवारिक जीवन-वृत्त के कुछ प्रामाणिक सूत्र पकड़ में आ सकते हैं। मीता-मत के अनुयायियों के अनुसार 'लालमन' मीता के भतीजे थे। जिनकी समाधि पुरवा में ही मीता की समाधि स्थली के ठीक बगल में स्थित है।

मीता मत एवं परम्परा

मीता नें अपने को अगम का पन्थी बताया है तथा सन्तों को इसी पन्थ का समान-धर्मा स्वीकार किया है। उनके अनुसार अगम का पन्थ आभ्यन्तरिक पन्थ है, वह अर्न्तमुखी होता है, वहिर्मुखी नहीं। कबीर, दादू, नानक जैसे सन्तों ने साम्प्रदायिक पन्थों का प्रवर्तन नहीं किया, उनके नाम पर पन्थों का प्रचलन, सम्प्रदायों का संगठन एवम् मठों तथा गद्दियों का प्रचलन नितान्त आडम्बरपूर्ण एवं सन्त साधना का प्रतिगामी मार्ग है। क्रान्तिदृष्टा सन्त मीता भी जीवन पर्यन्त साम्प्रदायिक पंथों की भर्त्सना करते रहे, किन्तु उनके निर्वाण के पश्चात उनके अनुयायियों द्वारा मीता पन्थ के नाम पर एक गद्दी स्थापित की गई जिसमें साम्प्रदायिक गुरु को पीठासीन किया जाता है तथा संगतियों के द्वारा गुरु-दीक्षा भी ग्रहण की जाती है।

मीता ने अपने जीवन काल में जिन २५८ व्यक्तियों को दीक्षा प्रदान की थी। उनके नाम भी उन्होंने प्रामाणिकता के लिये लिखे हैं क्योंकि वे अपने पूर्ववर्ती कबीर, दादू, नानक पन्थ में प्रतिष्ट हो जाने वाले झूठे दम्भियों की भाँति अपने पन्थ में छद्मवेशियों को प्रवेश नहीं देना चाहते थे।[1] मीता की शिष्य परम्परा में प्रमुख रूप से बाबू बैरीसाल तत्कालीन राजा डोंडियाखेर (रायबरेली), सहजी खत्राणी फतूहाबाद (फतेहपुर), इन्दोबीबी अग्रवालिन (लखनऊ खास), पन्नो-बीबी ठाकुर पुरवा (उन्नाव), नान्हू लोध (सैय्यद अब्बासपुर), प्रजापति तिवारी, नरवल (कानपुर), बदन सिंह चौहान, दोस्ती नगर (उन्नाव), भगवन्तराय खीची (तत्कालीन असोथर-नरेश) आदि प्रमुख हैं। बैरीसाल महाराज एक अच्छे कवि और गुणज्ञ थे। बहुत दिनों तक मीता ने इन्हें अपने पंथ में दीक्षित नहीं किया, किन्तु कालान्तर में बाबू बैरीसाल की निष्ठा एवं भक्ति से प्रभावित होकर सन्त मीता ने उन्हें भी अंगीकार कर लिया था। इसका संकेत भी मीता ने अपनी वाणी में इस प्रकार किया है—

"परदा खोली रीझ कर राखी हती छपाय,
बाबू बैरीसाल जी रखिबे छतिया लाय।"

इस पद से ज्ञात होता है कि सन्त मीता ने अपने 'गुपुतमते' का परदा खोल दिया जो पहले किन्हीं कारणों से गोपनीय था। इतना ही नहीं उन्हें छाती से लगाने का संकेत भी किया है। इस पद में प्रयुक्त बैरीसाल नाम के पूर्व 'बाबू' और अन्त में 'जी' दोनों उनके राजपद के गौरव के अनुकूल हैं। साथ ही मीता द्वारा उनके प्रति व्यक्त किये गये स्नेह और समादर के भी सूचक हैं। मीता सम्प्रदाय के संगतियों की यह मान्यता कि बाबू बैरीसाल को छोड़कर अन्य शिष्यों को मीता

---

१. कबीर, दादू, नानक का ठगैय्यन भेखिन कहा कि हम उनके आहिन। उन भेखिन ठगैय्यन का लगे नहीं बैठन दीन। भेख तो उनके गुनगार थे। सन्त गिरही होते हैं सो मैं कहा कि ई ठग भेख मोरे सूने कहैं न कि हम मीता के आहिन। जे हम लिखें हैं ते सही हैं, जे कहे कि हम मीता के आहिन ते झूठ, लिखे संगती सही।

(मीता के हस्तलिखित ग्रन्थ दूसर से उद्धृत)

ने गति प्रदान की है, न्यायोचित नहीं प्रतीत होती। सन्त मीता ने एक अन्य पद में भी बैरीसाल को लक्ष्य करके इस ओर संकेत किया है—

'गीता का मत छाँड़ि कै मीता का मत लीन।'

इससे स्पष्ट है कि महाराज बैरीसाल ने अपने पूर्ववर्ती सिद्धान्तों को छोड़कर मीता का मत स्वीकार कर लिया था। मीता की समाधिस्थली का निर्माण भी इन्होंने ही कराया, समाधि के निर्माण में अपने हाथों से ईंट-गारा देने का काम किया, जिससे सिद्ध होता है कि मीता पन्थ में आकर सन्त मीता के निर्वाण काल तक इनकी अखंड आस्था मीता पन्थ में बनी रही। मीता की शिष्य परम्परा में जिन तीन महिला शिष्याओं के नाम मिलते हैं उनमें सहजी खत्राणी, सम्वत १७९० में खजुहा में ही मीता का शिष्यत्व स्वीकार करतीं हैं। इनकी देह छोड़ने की तिथि फाल्गुन बदी २, सम्वत् १७९३ है जिससे ज्ञात होता है कि ये अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में इस पन्थ में आईं तथा केवल तीन वर्ष ही संगति के रूप में प्राप्त किये। सहजी ने निर्गुन पदों की भी रचना की है, जिनकी उपलब्ध संख्या अल्प है। पदों से मीता के प्रति अनुराग और भक्ति का परिचय मिलता है। इनकी समाधि भी खजुहा में होना बतायी जाती है। मीता की शिष्य परम्परा में दीक्षा लेने वाली एक दूसरी महिला साधक पुरवा निवासी ठाकुर केशरी सिंह की पुत्री पन्नो है, इनकी भेंट सन्त मीता से पुरवा में ही हुई जहाँ वे सम्वत १७९५ में खजुहा छोड़कर पहुँचे थे। इन्होंने लगभग १६ वर्षों तक मीता की संगति में रहकर सम्वत् १८०८ में देह छोड़ी। इन्होंने भी मीता की निर्गुण परम्परा में कुछ पदों की रचना की है जिनसे गुरु के प्रति असीम निष्ठा का भाव व्यक्त होता है। इन्दो बीबी नाम की एक अन्य शिष्या जो लखनऊ की रहने वाली थी वह भी पुरवा में सम्वत् १८१० में ४७ वर्ष की आयु में सन्त मीता से दीक्षा ग्रहण की थी। इन्होंने निर्गुण पदों की रचनायें की हैं तथा अपने पदों में सन्त मीता के प्रति गुरु निष्ठा व अशरफ के प्रति भर्त्सना का भाव व्यक्त किया है। मीता पन्थ की किम्बदन्ती के अनुसार मीता पर तत्कालीन नबाब द्वारा चारित्रिक आरोप लगाये गये थे किन्तु यथार्थ स्थिति से परिचित होने के बाद नबाब द्वारा मीता को आरोप मुक्त करने तथा आत्मग्लानि से उसके द्वारा प्रायश्चित करने का वृत्तान्त आता है। मीता पन्थ में अशरफ को ठगी बताया जाता है। मीता तथा इन्दो के पदों से इस घटना के संकेत मिल जाते हैं—

(अ) इन्दो बेटी आओ न खोटी है संसारी।

(ब) हो मीता मोरी शहर भई बदनामियाँ।

५५ वर्ष की अवस्था में सम्वत् १८१८ में इन्दो ने देह छोड़ी। इनकी समाधि स्थली लखनऊ में गोमती के किनारे थी जो विगत वर्षों गोमती के प्रवाह में काल कवलित हो गयी।

मीता के एक अन्य शिष्य असोथर नरेश भगवन्तराय बताये जाते हैं। मीता ने एक पद में 'जब भावन्ता घर आवैगा, तब विषय विकार मिटावेगा' लिखकर भगवन्ता (भावन्ता) की ओर संकेत किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि राजकीय कार्यों में व्यस्त होने के कारण महाराज भगवन्तराय को संत मीता की संगति में आने का पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाया जिसकी ओर मीता ने लक्ष्य भी किया है। मीता ने जिन प्रमुख संगतियों की देह छोड़ने का विवरण दिया है

---

१. मीता पंथी कौशल किशोर तिवारी ने सहजी की समाधि की सूचना दी है।

२. मुंशी ज्ञान सिंह ने इन्दो की समाधि की सूचना दी है।

उनमें दयालदास, सहजी, '[1] भगवंतराय एवं दस्सन के नाम प्राप्त होते हैं। मीता द्वारा लिखी गई 'भगवंत राय' की मृत्यु-तिथि इतिहास से भी पुष्ट है।[2] अस्तु 'भगवंत राय खींची' अखोथर (फतेहपुर) नरेश ही हैं। मीता के एक प्रमुख शिष्य प्रजापति तिवारी नरवल के थे जिनके यहाँ मीता के कतिपय हस्त लेख सुरक्षित बताये जाते हैं इन्हीं के यहाँ मीता साहब की ढोलक, तम्बूरा व खड़ाऊँ रखी हुई हैं जो सम्प्रति पं० जगतनारायण तिवारी (पूती महाराज) के पास, सुरक्षित हैं। संत मीता ने दोस्ती नगर निवासी अपने शिष्य बदन सिंह चौहान को अपना कार्य भार सौंपकर ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी सम्वत् १८२५ में देह को छोड़ दिया तथा पुरवा में ही इनकी समाधि बनी हुई है। यह समाधि उन्नाव से पुरवा- मौरावां जाने वाली सड़क में पुरवा के प्रवेश के पूर्व ही सड़क के दाई ओर लगभग १२ विस्वा भूमि में बनी हुई है। समाधि की बाई ओर लालमन की समाधि है, लालमन का नाम मीता की संगतियों मे पाया जाता है तथा उन्हें मीता साहब का भतीजा बताया गया है। समाधि से मिली हुई एक ईदगाह भी है तथा मीता की समाधि स्थली में बाबू बैरीसाल द्वारा निर्मित एक प्राचीन कुंआ भी बना हुआ है। मीता के शिष्यों में हिन्दू-मुसलमान दोनों थे। नियामतउल्ला बहेलिया (पचुड्डा) का नाम भी सूची में मिलता है। मीता की समाधि स्थली में प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी निर्वाणतिथि और कार्तिक पूर्णिमा को मीता मेला लगता है, जिसमें विभिन्न जनपदों के मीता पंथ के अनुयायी एकत्र होते हैं तथा संत मीता के वाणीवचनों का पठन-पाठन किया जाता है संत मीता के प्रमुख शिष्यों की परम्परा का वृत्त का संकेत पृ० १८ पर देखें।

प्रामाणिक साहित्य—मीता साहेब ने एक साखी में इस प्रकार का उल्लेख किया है कि उन्होंने प्रचुर परिमाण में साहित्य की रचना नहीं की थी और जो कुछ लिखा है, वह सार है—

'साखी पद बहु ना किये जो कीन्हा सो सारु
मीता केरे सब्द का कोइ बिरला करी विचार।' मी० ग्र० २०

मीता साहित्य की प्रामाणिकता और पाठ निर्धारण आदि के सम्बन्ध में मीता ग्रन्थावली का प्रकाशन और सम्पादन ही सर्वप्रथम महत्त्वपूर्ण कार्य है। 'मीता ग्रन्थावली 'का प्रथम बार सम्पादन करके चंददास साहित्य शोध संस्थान बाँदा से प्रकाशित किया जा सका। इस ग्रन्थ के संपादन में मूल प्रतिलिपि (कैथीलिपि) अचल मुराई, पितम्बर ओमर तथा ठा० मुंशी ज्ञानसिंह द्वारा प्रतिलिपित प्रतिलिपियों के आधार पर मैंने पाठालोचन का कार्य किया है।

प्रतियों का परिचय इस प्रकार है—

मूल प्रति कैथी लिपि में है। मूल प्रति से अचल मुराई एवं पितम्बर ओमर की प्रतिलिपि प्रतियों के पाठ में कोई विशेष अन्तर नहीं है। मूल कैथी से प्रतिलिपित करते समय प्रतिलिपिकारों ने पाठ को ग्रहण करने में जहाँ कहीं चूक की है, उसका कारण कैथी लिपि में मात्राओं का व्यवस्थित न होना है। मूल प्रति के उपलब्ध होने के कारण 'मीता ग्रन्थावली' में मूल पाठ को प्रामाणिक रूप से स्वीकार किया गया है। मीता ग्रन्थावली का पाठ कहीं भी सन्दिग्ध अथवा आप्रमाणिक नहीं है। पाठ निर्धारण में पाठान्तरों का उपयोग

---

१. दयाल दास का देह छाँडब कुंवार सुदी तेरस सम्वत् १७६२। सहजी के देह का छाँड़ब फाल्गुन बदी दोज सम्वत् १७८३। भगवन्त राय के देह का छाँड़ब कार्तिक सुदी नवमी सम्वत् १७६२। दस्सन के देह का छाँड़ब ज्येष्ठ सुदी अष्टमी सम्वत् १७८६। 'बरवै दोहा निरगुन गुपित' हस्तलिखित ग्रन्थ की पुष्पिका से उद्धृत)

२. भगवंत राय खींचो की मृत्यु कार्तिक शुक्ल पक्ष मंगलवार सं० १७६२ में हुयी। 'भगवंतराय खींची और उसके मंडल क कवि' डॉ० महेन्द्र प्रताप सिंह, पृ० ६२

परम्परा मीता दास

नाम	उदय स्थान	समय	आयु	देह छोड़ने का समय	स्थान जहाँ देह छोड़ी	स्थान जहाँ देह धरी गई
मीता दास	फतुहाबाद	सं० १७४७ विक्रमी	७८	सम्वत् १८२५वि०	कटरा	कटरा समाधि
बदन सिंह (बदन)	दोस्ती नगर	सं० १७७५ ,,	८५	सं० १८६०	दोस्ती नगर	दोस्ती नगर समाधि
रामदीन सिंह	,,	सं० १८३१ ,,	४५	सं० १८७६	,,	,,
पहलवान सिंह (पहली)	,,	सं० १८४४ ,,	७०	सं० १९१४	,,	,,
इन्द्रजीत सिंह	,,	सं० १९०४ ,,	६८	सं० १९७२	,,	,,
कामता प्रसाद	गुटैहा कानपुरा	सं० १९१९ ,,	९४	सं० २०१३	गुटैहा कानपुरा	हिन्दू खेड़ा मजरा थाना जनपद उन्नाव

किया गया है। पाठान्तरों को परिशिष्ट में दे दिया गया है। मीता साहेब के अब तक के उपलब्ध सम्पूर्ण साहित्य को 'मीता-ग्रन्थावली' में ले लिया गया है।

संत मीता के मूल ग्रन्थ कैथी लिपि में उपलब्ध हैं। यह सम्पूर्ण साहित्य मुंशी ठा० ज्ञानसिंह, दोस्तीनगर, उन्नाव के पास सुरक्षित है। ये प्रतियाँ मुंशी ज्ञानसिंह को बदनसिंह द्वारा प्राप्त हुई थीं जो उनके पूर्वज तथा मीता साहब के उत्तराधिकारी थे। इस प्रकार यह सम्पूर्ण साहित्य प्रामाणिक है क्योंकि इसका प्राप्ति स्रोत सीधे संत मीतासे जुड़ा हुआ है। संत मीता ने बदनसिंह को ही कार्य भार सौंप कर निर्वाण लिया था। बदनसिंह की चौथी पीढ़ी में मुंशी ज्ञानसिंह आते हैं। मुंशी जी मीता परम्परा के प्रमुख संगती हैं।

मीता का सम्पूर्ण साहित्य सम्वत् १७८० से १७६० के बीच का लिखा हुआ उपलब्ध होता है।[1] मूल ग्रन्थ के आदि में 'सतगुरु सहाय' पद बोले सम्वत् 'सिरोनामा,' रागों का नाम, संक्षिप्त सूची तिथि आदि दी गई है। इस साहित्य के तीन खण्ड ऐसे हैं जिसमें प्रथम खण्ड के प्रारम्भ के तीन पृष्ठ नहीं हैं। प्रथम खण्ड ४" × ३" के आकार में एक छोटे गुटके के रूप में प्राप्त है। इसमें बारह-मासी शैली में साधना के सोपानों का क्रमिक वर्णन किया गया है। प्रारम्भ के कटे हुए पत्रों को अन्य प्रतिलिपित प्रतियों की सहायता से मुंशी ज्ञानसिंह जी द्वारा पूर्ण किया गया है। गुटके में कुल २६ दोहे हैं।

एक दूसरे ग्रन्थ में जिसे 'ग्रन्थ दूसर' के रूप में जाना जाता है। ऊपर के पाँच पृष्ठ फटे हुए हैं, बीच के पत्रों का सिलसिला टूट गया है। गुरुद्वारे की प्रतियों के आधार पर इस खंडित प्रति को पूरा किया गया है। इस प्रति का कागज जीर्ण शीर्ण मटमैला तथा कहीं कहीं किनारे के अक्षर भी कट गये हैं। ये प्रति ७" × ६" के आकार में काली स्याही से कैथी लिपि में लिखी गई हैं। इसमें लगभग पौने २०० दोहे दिए गए हैं।

तीसरे ग्रन्थ के प्रारम्भ के ३४ पृष्ठ फट गये हैं। यह प्रति ८" × १०" के आकार में जीर्ण कागज पर उपलब्ध है। उपलब्ध प्रति के प्रथम पृष्ठ पर पद "साँचा राम नाम भजु भाई" होने के कारण इस ग्रन्थ को "साँचा राम नाम" के नाम से जाना जाता है। इसमें लगभग २०० पद उपलब्ध होते हैं।

मीता साहित्य की प्रतिलिपित प्रतियों में अचल मुराई द्वारा प्रतिलिपित प्रति (सं० १६१२) महत्त्वपूर्ण है। यह प्रति मूल कैथी लिपि से प्रतिलिपित है।[2] इस प्रति में वर्ण तो कैथी लिपि के हैं किन्तु मात्राएँ देवनागरी लिपि जैसी प्रयुक्त हैं। प्रारंभ और पुष्पिका से भी प्रमाणिक है।

एक दूसरी प्रतिलिपि पीताम्बर ओमर द्वारा की गई है। जिसका प्रतिलिपि काल सम्वत् (सं० १६१४) है।

मीता के सम्पूर्ण साहित्य की लगभग ३५ प्रतियाँ मुन्शी ठा० ज्ञानसिंह द्वारा की गई हैं। सन् १८३० से अब तक वे इस कार्य को करते रहे हैं। इन प्रतिलिपित प्रतियों को संत मीता पंथ के अनुयायियों तथा विभिन्न जनपदों के सत्संगियों को पठन-पाठन हेतु प्रदान कर दिया गया है।

मीता के उपलब्ध साहित्य में एक वैद्यक की पुस्तक गद्य रूप में ६" × ६" के आकार में प्राचीन हस्तनिर्मित कागज पर, काली स्याही से लिखी हुई उपलब्ध होती है। जिसमें लगभग ६० पृष्ठ हैं। इसमें विभिन्न प्रकार की रासायनिक औषधियों का विवरण प्राप्त होता है।

---

१. संवत सतरासै नब्बे १७६० तब साखी पद बोले। (मीतादास के मूल हस्तलेख से उद्धृत)

२. वसरवती मीता से उतारा।

३. संपूरन सुभयस्तु मिती कुआरवदी ८ संवत १६१२ दसषन अचल मुराई के। सबका जै श्री राम राम।

मीता साहित्य से सम्बद्ध कुछ फटे हुए पन्ने भी मीता साहब के अनुयायियों के यहाँ उपलब्ध होते हैं। सम्भवत. यह किन्हीं खंडों के फटे हुए अंश होंगे।

मीता के साहित्य की कतिपय प्राचीन पांडुलिपियों के नरवल के पूती महाराज के यहाँ प्राप्त होने की चर्चा मीता पंथ के अनुयायियों में सुनने को मिलती है। मैंने इस किंवदन्ती का परीक्षण भी किया है। वस्तुतः मीता के एक शिष्य प्रजापति तिवारी (जिन्हें परजापति से जाना जाता है) के यहाँ उपलब्ध थी, जो मीता के समकालीन थे।

मीता का सम्पूर्ण साहित्य उनके शिष्यों के यहाँ सुरक्षित रहने तथा अनुयायियों की कट्टरता के कारण मिलावट से दूर रहा। इसीलिए उनकी वाणी में न तो मिलावट है और न ही प्रक्षिप्त अंशों की सम्भावना है। अन्य किसी भी प्राचीन संत कवि की रचनाओं में पाठ की इतनी समानता नहीं मिलती। ऐसा प्रतीत होता है कि मीता साहित्य मीता पंथ में सुरक्षित रहने तथा मुन्शी ठा० ज्ञानसिंह द्वारा सतर्कता व सावधानी से अब तक सुरक्षित रखने के कारण प्रामाणिक रूप में उपलब्ध हो सका।

कबीर की भाँति मीता साहित्य के जनव्यापी होने की सम्भावना है क्योंकि यह जनवाणी में लिखा गया है। अप्रकाशित रहने के कारण अभी तक इस साहित्य का प्रसार जन जीवन और साहित्य के क्षेत्र में नहीं हो सका। मीता साहब के अनुयायी इन्हें मन्त्रों की तरह गोपनीय रखना चाहते थे। केवल उनके सम्प्रदाय के अनुयायी, जिनकी संख्या अल्प है, उनके उपयोग में ही यह साहित्य आता रहा। मीता साहब की समाधि पर वर्ष में दो बार इस साहित्य का पठन-पाठन होता रहा। इस अवसर पर संगतियों द्वारा उनका साहित्य मौखिक रूप में भी सुनाया जाता रहा। कुछ ऐसे पद भी सुनने को मिलते रहे जो उनकी पोथियों में नहीं पाए जाते। डॉ० नरेन्द्र कुमार शर्मा, गढ़वाल विश्वविद्यालय ने संत मीता के सम्बन्ध में एक प्रचलित जनश्रुति[1] से भी मुझे परिचित कराया है जिससे ज्ञात होता है कि मीता का साहित्य मौखिक वाचन की परम्परा के कारण उनके समय से ही उत्तरी भारत के विभिन्न अंचलों में फैल गया था। इधर लगभग ३० वर्षों से इस दुर्लभ साहित्य का पाठ मुन्शी ज्ञानसिंह द्वारा समाधि के मेलों में नियमित रूप से किया जा रहा है। वे भली-भाँति कैथी लिपि पढ़-लिख लेते हैं।

साहित्यिक क्षेत्र में संत मीता साहब की चर्चा करने वाले विद्वानों में कैप्टन शूरबीर सिंह तथा आचार्य परशुराम चतुर्वेदी प्रमुख हैं। मुन्शी ज्ञान सिंह द्वारा दी गई सूचनाओं के आधार पर कैप्टन शूरवीर सिंह ने संत मीता से सम्बन्धित एक-दो परिचयात्मक लेख प्रकाशित किये हैं और उन्हीं के आधार पर आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने 'उत्तरी भारत की संत परम्परा' नामक ग्रन्थ में मीता साहब का सामान्य परिचय प्रकाशित किया है।

'कबीर ग्रन्थावली' की परम्परा में 'मीता ग्रन्थावली' का प्रस्तुत प्रकाशन मीता साहित्य के मूल्यांकन का एक ऐतिहासिक प्रयत्न है। इसके पाठ निर्धारण एवं सम्पादन में मीता पंथ के प्रमुख अनुयायी एवं उनके साहित्य के विशेषज्ञ ठा० मुन्शी ज्ञान सिंह तथा संत एवं भक्ति साहित्य के नदीष्ण विद्वान गोविन्द प्रसाद सांवल जी का योगदान महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

संत मीता साहब के समग्र साहित्य को एक साथ उपलब्ध कराने में मीता पंथ के अनन्य अनुयायी ठा० मुन्शी ज्ञान सिंह का योगदान न होता तो इसे साहित्यिक विद्वानों एवं हिन्दी भाषा-भाषियों के समक्ष रखने में हम अब भी सफल न होते। मीता पंथ के अनुयायियों की बंदिश की

---

१. गढ़वाल के एक मुसलमान फकीर निम्नलिखित पंक्ति को प्रायः दोहराते रहते हैं " साइँ जी हम मीता कब सुनिहै गीता"

परवाह न करके उन्होंने ही साम्प्रदायिक रुढ़ियों को तोड़कर जनहित के लिए संत मीता साहब की वचन-वाणी को प्रकाशित करने की अनुमति हमें प्रदान की। इसके लिए शताब्दियों तक उनके साधु कार्य की सराहना की जायगी तथा हिन्दी साहित्य ऋणी रहेगा। उनके ही सम्बल पर मैं लगभग दो दशक से इस दुर्लभ साहित्य के प्रकाशन एवं मूल्यांकन की चिन्ता को एक यथार्थ रूप दे सका। यदि ये साहित्य मीता साहब के जीवन काल तथा उनके पीछे तत्काल प्रकाश में आ गया होता तो निश्चय ही कबीर की भाँति इस साहित्य का प्रसार लोकव्यापी होता। 'मीता ग्रन्थावली' में प्रकाशित साखी, बरवै, पद सभी मीता की मूल एवं प्रामाणिक वाणी के रूप में संकलित हैं। किसी भी पंथ की कट्टरता जहाँ एक ओर साहित्य के प्रसार में बाधक होती है वहीं दूसरी ओर यह कट्टरता पंथ के अभिरक्षण में सहायक सिद्ध होती है। किसी पंथ की कट्टरता ही पंथ की मौलिकता को सुरक्षित रखती है। मीता की वाणी के मूल पाठ की सुरक्षा में भी मीता पंथ की कट्टरता एवं कैथी लिपि की दुरूहता ही सहायक सिद्ध हुई है।

दार्शनिक चिन्तन—मीता के अनुसार ये संसार दुःख सागर है और सुख बूंदक है। सुखों का अस्तित्व चुल्लू में समा जाने वाला है। दुःखों का अपार संसार दुस्तर है। मीता के अनुसार—

'चुरुवक सुख संसार में पाछे दुःख की खान।'

दुःखों से छुटकारा दिलाना ही मीता के दर्शन का मुख्य विषय है। अज्ञान ही अविद्या है। मीता ने इसे 'कुमिता' कहा है। यही दुःख का कारण है। ज्ञान ही 'सुमिता' है। 'सुमिता' ही सज्जनों को जीवन मुक्त करती है। तत्त्व ज्ञान ही जीवन मुक्त करने, "आवागमन मिटाई" तथा "गरभु बासु" मिटाई का साधन है।

वैदिक भक्ति निर्गुण और सगुण की धाराओं में विभक्त न होकर अभेद साधना को लेकर चलने वाली थी। किन्तु कालान्तर में सगुण और निर्गुण की धाराएँ पृथक् पहचान लेकर लोक जीवन में प्रविष्ट हुईं। वस्तुतः इन दोनों में कोई तात्विक अन्तर नहीं है। केवल शैलीगत भेद ही मुख्य है। सगुण जहाँ सविशेष साकार सोपाधि है अर्थात् गुणयुक्त भक्ति है वहीं निर्गुण निर्विशेष गुण के कारण गुण की व्याप्ति से पृथक् नहीं है। संत मीता ने सगुण और निर्गुण से परे अपरम्पार (अपरम ब्रह्म) की साधना की है। उनके अनुसार निर्गुण राम हैं और सगुण संत हैं। संत ईश्वर की ही देह है। इस प्रकार मीता का ब्रह्म परम निर्गुण है जो सगुण और निर्गुण को अपनी परिधि में समेट कर भी इन दोनों से परे है।

मीता एकेश्वरवाद का समर्थन करते हैं। उनके एकेश्वरवाद में हिन्दुओं का राम और मुसलमानों का अल्लाह राम-रहीम होकर एक हो जाता है, जहाँ निर्गुण और सगुण का कोई विरोध नहीं है। निर्गुण संत धारा में सगुण का निषेध इसलिए नहीं है क्योंकि मीता सगुण के रूप में सतगुरु को स्वीकार करते हैं। सम्पूर्ण आराधना ही सतगुरु को समर्पित हो जाती है और वही साधना के प्रेमा भक्ति सोपान से प्रियतम की सेज तक ले चलने में समर्थ होती है।

मीता का ब्रह्म सर्वव्याप्त होकर भी सब से न्यारा है—

"भजि लीन्हा अलख अपारा है
है सब माँ औ न्यारा है
रूप रेख रंग नाहीं जाके
सो हमरा करतारा है।"

निर्गुण और सगुण दोनों में रह कर भी हद्द और अनहद्द से आगे है। मीता की पूर्ण दृष्टि ने जिस पूर्ण को पहचाना है वह अनभय कथा का विषय है अर्थात् अनुभूति का विषय है, गूँगे का गुड़ है। सैनों के बैन से ही संकेतार्थ में साक्षात्कार का विषय बनता है। मीता का यह आदि पुरुष पुस्तकीय विद्या से परे है। पांडित्य से दूर है, अनुभूति से सहज है।

मीता का अल्लाह आलम में निवास करता है जिसकी भेंट से काल की चिन्ता मिट जाती है—

'आलम रहिया अल्लाह पाया मेटी जम की संसा।'

मीता का अल्लाह अलख है। वह अलख निरन्जन देव नहीं है। उनका गोविन्द 'बिन्दु' में बसा है। उनका वृन्दावन 'बिंदक' में समाया है। उनका राम रमैया है। उनका रब्ब परवरदिगार है। वही मीता का भगवान है। वह समस्त दृश्यमान पदार्थों से विलक्षण है। सबसे न्यारा है। भेख और भीख से दूर है। डिम्भी और भेखियों से परे है। वह त्रैलोक्य का विलक्षण परम तत्त्व है।

कबीर का राम दाशरथि राम से भिन्न है। मीता ने तो एक कदम आगे बढ़कर पहली बार यह कहने का साहस किया है कि रामचन्द्र तो एक साधारण मनुष्य है। मीता रामचंद्र को संसारी व्यक्तियों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देते हैं--

"जैसा सब संसार रामचन्द्र वैसा रे"

इतने से भी संतुष्ट न होकर मीता ने रामचन्द्र को 'मायावी' तक कह डाला और उन्हें रावण की कोटि में लाकर खड़ा कर दिया—

"रावण रामचन्द्र दोनों माया मूरख जानत नाहीं"

रामायण, महाभारत और कृष्ण चरित्र के पौराणिक पात्रों को तथा अवतारवाद की मान्यता को मीता ने अस्वीकृति ही नहीं प्रदान की बल्कि पारम्परिक सगुण भक्ति के मूलोच्छेदन हेतु पौराणिक अवतारवाद को निरस्त करने का बीड़ा भी उठा लिया है। उनके अनुसार नन्द कन्हैया गीता का संत कृष्ण न होकर मात्र लीला विहारी गुंडा है।

(अ) कान्हा गुंडा नन्द ग्वाल का।

(ब) नन्द कन्हैया मरम न जानै गीता केरी बानी।

मीता के ब्रह्म निरूपण को देखकर सगुण भक्तों का अवतारवाद कोसों दूर से हाथ जोड़ता है। मीता के अनुसार पौराणिक और अवतारी ईश्वर जन्म-मृत्यु के बन्धन से मुक्त नहीं है। आवागमन में बंधा हुआ व्यक्ति ईश्वर कैसे हो सकता है?

"रामचन्द्र देही तजी तेई मथुरा भे कान्ह, गरभु बास छूटा नहीं ई नहीं संत समान।"

तर्क के आधार पर अवतारवाद का ये खण्डन सगुण भक्तों को भले ही स्वीकार न हो पर मीता का कुल्हाड़ा इस जड़ता को भंजन किये बिना तो नहीं रह सकता। इतना ही नहीं राम-कृष्ण के सगुणोपासक कवि तुलसी और सूर भी मीता के बाणों से नहीं बचते—

"तुलसी सूर की कविताई ज्यों सेमर को फूल।
वास न आवै फल न लागै सो तन का है सूल ॥"

मीता तुलसी और सूर के प्रशंसक पाठकों और भावुकों को भी भोंदू वर्ग में रखकर अपना व्यंग बाण चलाने में नहीं चूकते। भले ही उनके बाणों से सगुण भक्ति धारा की कोई भी लहर प्रकम्पित न हो पाती हो—

'तुलसी सूरा की कविताई भोंदुवन को हितकारी।
सुज्जन हैं ते नालिस करिहैं मीता कही पुकारी।'

सगुण शाखा के वरेण्य महाकवि तुलसी और सूर को मीता द्वारा मूल्यांकन के न्यायालय में लेकर खड़ा कर देना तथा सुज्जनों द्वारा उन पर मौलिक व सारपूर्ण न होने का दावा ठोंकना सर्वथा चिन्त्य है। इसे मीता की कट्टर निर्गुणधर्मिता का परिणाम समझा जाये अथवा वैष्णवी साधना के मूलोच्छेदन का एक प्रणवद्ध प्रयत्न माना जाय। अच्छा हो कि यह निर्णय जनता की अदालत को सौंप दिया जाय।

निर्वाण साधना के बुद्ध भी मीता के लक्ष्य भेदन में बिंधे हुए दिखाई पड़ रहे हैं। मीता के अनुसार बुद्ध को निर्वाण नहीं प्राप्त हुआ। उनके समानान्तर सदना कसाई को निर्वाण प्राप्त हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि मीता ने ये बात चेतना की सुषुप्ति के धरातल पर नहीं लिखी बल्कि सम्पूर्ण संचेतना में सतर्कता के साथ लिखी है। एक ओर सदना जो कसाई और हिंसक है, दूसरी ओर बुद्ध जो लोक व्यापार को छोड़कर अहिंसा और करुणा के लिए समर्पित हैं। कसाई को निर्वाण मिलना और बुद्ध जैसे अहिंसक को निर्वाण पद से वंचित कर देना मीता के ही बस बूते की बात हो सकती है। बुद्ध के निर्वाण दीप के आलोक से भारतीय संस्कृति को जो नवोन्मेष, विस्तार प्राप्त हुआ है, उसे हवा में उड़ा देना इतना आसान तो नहीं है, फिर भी आखिर ऐसा क्यों ? मीता की सदना कसाई से कौन-सी सगाई थी ? ऐसा प्रतीत होता है कि संत मीता गिरही को ही संत मानते हैं और 'किरखी' उद्यम को ही जीवन धर्म मानते हैं। सदना गिरही था तथा उसकी 'किरखी' कसाई का ही पेशा था। किन्तु बुद्ध गिरही नहीं थे। गोपा को छोड़कर सन्यास के लिए निकले तथा किरखी को छोड़कर अर्थात् उद्यम को छोड़कर वैचारिक साधना के लिए भटके। सम्भवत: इसीलिए अहिंसक बुद्ध मीता के अनुसार नहीं तर पाए। इसके विपरीत हिंसक सदना कसाई तर गया। मीता के अनुसार ईश्वर अवतार नहीं लेता है अत: बुद्ध को अवतार कैसे माना जा सकता है। सदना जैसे क्रूरकर्मी को मुक्त तथा मुक्त बुद्ध को बन्धन युक्त मानते हैं। इसके पीछे अवतारवाद के खण्डन एवं बौद्धों के वज्र सत्य रूप बुद्ध के द्वारा अवतार वाद को न मानने की नैर्णायक कसौटी ही हो सकती है।

मीता की ये मान्यताएँ पौराणिक अवतारवाद के मूलोच्छोदन के कारण भले ही हिन्दू पुराणशास्त्र के सर्वथा विपरीत हों, बौद्ध दर्शन की प्रतिगामी हों, किन्तु मीता के निर्गुणिया सिद्धांतों की कट्टरता की सूचक हैं।

मीता के अनुसार सृष्टि आदि पुरुष की इच्छा का परिणाम है।

'इच्छा ते सब करै खलक वह ऐसा रे।'

इच्छा का अर्थ होता है 'वृद्धि' अनिच्छा का अर्थ होता है 'नाश'। ईश्वर की इच्छा से ही सृष्टि और अनिच्छा से विनाश होता है। सप्त लोक उस आदि पुरुष की सप्त इच्छाओं के ही परिणाम हैं। सप्त सुरति से ही सकल उत्पत्ति हुई है। आदि पुरुष की

इच्छा ने सीप में मोती की भाँति स्वरूप की रचना की है। इच्छा के अनुसार सृष्टि का क्रम इस प्रकार है। प्रथम मुख इच्छा से 'बुंद', दूसरी नेत्र इच्छा से 'सुकृत अंड', तृतीय श्रवण इच्छा से 'अवगति बानी', चौथी स्वास इच्छा से स्वांस (प्राण वायु) पांचवीं इच्छा से सत्य प्रसन। शेष दो इच्छायें गोपित रखी गयी। गुपित इच्छाओं में छठी इच्छा 'करनी' 'बुंद' एवं सातवीं इच्छा सर्व गुनशील बुंद है। इसी सातवीं इच्छा से 'अकुरा' का निर्माण हुआ। इस प्रकार आदि पुरुष की सात इच्छाओं से सृष्टि का मूल निर्माण हुआ। जिससे सोलह सहस्र जीवों की रचना हुई। संत मीता ने 'सोरह सहस सहेलियाँ', से इसी ओर संकेत किया है। आठवीं इच्छा से काल की उत्पत्ति संत साहित्य में स्वीकृत है। काल की उत्पत्ति अंकुर की इच्छा और अक्षर की अनिच्छा का परिणाम है। काल की रचना का प्रयोजन जग को निरंकुश होने से बचाना है तथा जीव को सुमिरन की ओर लगाना है। पुरुष की इच्छा में दया का अंश है और अनिच्छा में निर्दयता का भाव है। संत मीता ने अपने वचनों में जहाँ कहीं 'दाया धर्म' रखने का उल्लेख किया है वह सामान्य दया के अर्थ में न होकर ईश्वर की इच्छा सृष्टि में दाया धर्म को धारण करने से है। संतों के वचन न मानने वालों को ही काल खाता है। वैसे तो मीता ने काल को जग का राजा कहा है तथा इसके त्रास को दुःखद बताया है। काल जगत में वैसे ही, समाया रहता है जैसे तिल में तेल। जगत भर में यह दरेरा देकर चलता रहता है।

सृष्टि रचना के संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि अक्षर पुरुष ने चार अंशों से चार 'दीपों' (द्वीपों) की रचना की है। प्रथम अंश से परमजा जिससे सम्पूर्ण बीज पृथवी में प्राप्त हुए दूसरे अंश से आदिली सृष्टि का निर्माण किया गया। सम्भवतः आदिली सृष्टि न्याय विधान के लिए कही गयी है। तीसरे अंश से कर्म का निर्माण किया गया। जिसने पृथवी का भार ग्रहण किया। चतुर्थ अंश से पाप पुण्य के लेखा के लिए धर्मराय की रचना की गई। निरंजन की सृष्टि एक विशेष प्रकार के केलि अंड से मानी गई हैं। निरंजन से ही त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) की उत्पत्ति हुई। निरंजन के संबन्ध में संत साहित्य में कोई स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं रखा जा सका। कबीर पंथ के शास्त्रीय विचार के टीकाकार श्री विचारदास ने निरंजन का अर्थ 'यम' किया है। आचार्य डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर साहित्य को आधार मानकर निरंजन को 'यम' से भिन्न 'ब्रह्म' की कोटि में स्वीकार किया है तथा उसे शैतान न मानने की वकालत की है। निरंजन को आदि पुरुष के वृक्ष की एक डाल कहा गया है।[१], संत मीता ने भी निरंजन शब्दका प्रयोग किया है और उसे साधना पथ में बाधक बताया है। किन्तु उसके प्रकाश एवं दिक काल व्यापी प्रसार का भी संकेत किया है। एक सीमा के बाद यह निरंजन साधक को काल से अनभय करता है। किन्तु दुर्जनों को यह काल रूप में त्रास भी प्रदान करता है। निरंजन न तो शैतान है न ईश्वर। वह त्रिकुटि में बसने वाला काल है, वस्तुतः वह त्रिदेवों का जनक है। मीता के अनुसार—

"आदि जोति औ, देव निरंजन पार ब्रह्म एकु आहीं।
ई तो डारु मूल अविनाशी तीनिउ साखा आहीं।"

1. (अ) आदि पुरुष एक वृक्ष है निरंजन डारा हो—बीजक शब्द १४४
   (ब) मैं सिरजों मैं मारों मैं जारों मैं खाँव,
   जल थल में मैं रमि रहौं मोर निरंजन नाँव। —रमैनी २१वीं साखी
   (स) तिसरो कौलि निरंजन राई, तीन पुरी मा सृष्टि निरमाई।
   सर्वांग सागर, (हस्तलिपि च० शो० सं० प्रति पृ० २४) कबीर धर्मदास की गोष्ठी

लोक में चार वेद और चार वाणी ही सृष्टि के समस्त शब्द व्यापार का आश्रय बन सकी हैं। किन्तु संतों ने एक पाँचवें वेद की मान्यता को स्वीकार किया है और यह पंचम वेद समर्थ गुरु के प्रामाणिक वचन हैं। इसी पंचम वाणी के अन्तर्गत 'सबद' को स्वीकार किया जाना चाहिए। इस 'शब्द' की पहचान या सहदानी 'सुरति' है। यह पंचम वाणी 'सबद' अगम और अपार है। यही संतों का अगम पंथ है। सबद वाणी के अन्तर्गत कोटि बानी, टकसारी बानी, मूल बानी और सह तेजी बानी आती है। इसी वाणी से काल भी कम्पित होता है। काल को जीत कर ही साधक जग को जीत लेता है। मीता ने इसी ओर संकेत करते हुए लिखा है "मीता जीता जगत में अथवा "काल हमारा का करै।"

परम समर्थ के मुख से सत्य को धारण करके सुरति जन्म लेती है। संत साहित्य में सुरति का प्रयोग प्रायः किया जाता है, और इसे रति भाव का विशिष्ट रूप माना जाता है। वस्तुतः सुरति से आशय सत्य पुरुष के प्रति सर्वांग समर्पण से है। सुरति से ही अंकुर उत्पन्न होता है। सुरति-साधना का एक विशेष पारिभाषिक शब्द प्रतीत होता है। यह सुरति चार प्रकार की होती है। इसका उद्भव क्रम इस प्रकार है। समर्थ के मुख से सहज सुरति, अंग से क्षमा सुरति, श्रवण से मूल सुरत्ति, श्वास से सोहंग सुरति का जन्म होता है। सुरति ध्यान की सम्पूर्ण एकाग्रता की ध्यान-ज्ञान की एकाग्र वृत्ति है। संत मीता ने सुरति साधना का नटनी के तमाशे के माध्यम से जैसा सांद्र बिम्ब प्रस्तुत किया है वह उनकी साधना की आनुभूतिक वस्तु है। नटनी तमाशा करते समय बरत (खम्भे और उसमें बँधी हुई रस्सियाँ) पर अपनी सुरति (ध्यान) को केन्द्रित कर देती है। उसके कौशल को देखकर लोग हँसते हैं पर उसकी सुरति नहीं टूटती। हरि के दास ऐसे ही होते हैं।

"जैसे सुरति बरत पर बाँधे नटनी करै तमासा।
लोग हसैं बाकी सुरति न टूटै ऐसे हरि कै दासा॥"

आदि पुरुष अक्षर ने ही अवगति का विस्तार किया। जिस अवगति के लिए सूर जैसे कवि "अबगति गति कछु कहत न आवै" कहकर उसे अनिवर्चनीय बताते हैं। वस्तुतः यह अवगति ज्ञान की ही गति है। आदि पुरुष ने ही अनभै ज्ञान का विस्तार किया है। अनभै को आचार्य पं० परशुराम चतुर्वेदी ने अनुभूति माना है तथा अभय से भिन्न बताया है। वस्तुतः 'अनभै' धारणा संत दर्शन के मनोनुकूल है। मैं 'अनभै' को अनभै ज्ञान मानता हूँ जिसके अन्तर्गत अनभै करनी, अनभै बानी, अनभै चाल एवं अनभै रहनी आते हैं। इस प्रकार अनभै संतो का पारिभाषिक एवं सैद्धांतिक शब्द है। इस अनभै ज्ञान का विस्तार अक्षर के विस्तार के द्वारा होता है।[१] संत मीता ने अनभै का प्रयोग 'अभय' (काल चक्र से मुक्त) के परिप्रेक्ष्य में स्वीकार किया है।

संत मीता ने "चौथा तजि आगे चलै ऐसा पंथ हमारा" कहकर संख्या के संकेत से चौथे को पार कर पाँचवें में चलने का साधनात्मक संकेत किया है। यह संकेत शब्द सृष्टि से पार जाकर प्रेम शब्द लोक में प्रवेश करने के लिए कहा गया है। यही प्रेम शब्द का लोक ही मीता का पंथ है। इस प्रेम शब्द को लेकर ही विवेकशील साधक अपने को लोक में समाहित कर देता है। दीप से दीप का प्रकाश उस आदि ज्योति में विलीन हो जाता है जहाँ आदि पुरुष का निर्मल

१. अब अक्षर को कहौं बिचारा, अक्षर कीन्हा अवगति विस्तारा।
जीव सृष्टि तिन कीन पसारा, अनभै ज्ञान तिन कीन बिस्थारा।
अनभै करनी अनभै बानी, अनभै चालि है अनभै रहनी।
सर्वांग सागर, (हस्त० चं० सो० सं० प्रति)

प्रकाश उजियारा करता है। चार को छोड़कर पाँचवें में प्रवेश करने का आशय यह है कि साधक को सत्य शब्द, क्षमा शब्द, धीर शब्द, और सुमति शब्द से आगे चलना है। इन चारों शब्दों से ही लोक की रचना हुई है। पाँचवीं रचना प्रेम सब्द की हंस श्रेणी के साधकों के लिए है।[1] संत मीता ने इसे प्रेम विरोग, 'विरह विरोग' की संज्ञा दी है। इसकी अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में मीता की वाणी में प्राप्त होती है।

मीता जिस सत्य का संदेसिया है, वह सत्य आठवीं सुरति में सुकृत का सत्य है। वह सत्य सहज अंकुरों के उपदेश के लिए है। मीता ने सुज्जनों के उपदेश के लिए ही शब्द का सार कहा है—

"सुज्जन के उपदेश को कीन्हों सब्दा सार।"

मीता की वाणी सत्य की अनुभूति के रूप में सुज्जनों तथा अंकुरों के लिए साधना की प्रेरक है। वह दुर्मति के लिए जलाने वाली अग्नि धर्मी तथा विध्वंसक भी है।

मीता अलेख पुरुष से भेंट करते हैं। "भेंटा पुरुष अलेख" के संकेत से सिद्ध होता है कि वे काल के बंधनों से मुक्त हैं। समर्थ को पहचान कर मीता उसके नेत्रों से नेत्र मिलाते हैं। "नैन सो नैन मिले" में इसी साक्षात्कार की अनुभूति की अभिव्यंजना है। मीता लोक संसारी से निडर हैं। "हमरा का करिहैं संसारी" की टंकार साधना की तेजस्विता का ही परिणाम है। खोज खोज कर ही इस साधना के अगम पंथ पर साधक को चलना है। तभी काया के सारे भंडारों से परिचित होना होगा। साधक को झरझर द्वीप को पार करना होगा। 'झरझरी' संत साधना का एक ऐसा पड़ाव है जहाँ काल का गर्जन होता है। इस द्वीप में शून्य का अनन्त विस्तार है। चतुर्दिक उजियारा ही उजियारा है। काल इस झरझरी द्वीप में गर्जन कर रहा है। इस द्वीप में वही प्रवेश कर सकते हैं। जिन्होंने जग को जीत लिया हो तथा जिनका योग जागृत हो गया हो। मीता ने इस ओर संकेत किया है।

(अ) मीता जागा जोग

(ब) मीता जीता जगत सो मे काटि चला जमु जाल।

योगी साधक झरझरी द्वीप में पहुँचकर सीधे काल से टक्कर लेता है तथा अपने आने का प्रयोजन बताता है कि समर्थ जीव को मुक्ति देना चाहते हैं और तुम्हारे अर्थात् काल के बन्धन को तोड़ना चाहते हैं। काल के जीतने पर ही ज्ञानी को सुख मिलता है क्योंकि इसी झरझरी द्वीप में कमल उलट कर आता है। साधक अमृत का पान करता है। अमरौती खाता है। मीता ने 'झरझर' कहकर इसी ओर संकेत किया है। मीता शब्द के रथ पर चढ़ कर समर्थ के लोक की यात्रा पूरी करते हैं। समरथ गुरु ही उनकी बाँहें पकड़े हुए उन्हें अगम पंथ पर ले चलने का काम करते हैं।

सांख्य मत के अनुसार ही मीता भी पंचतत्त्वों (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) तथा पंच तत्त्वों की पंच तन्मात्राओं (शब्द तन्मात्रा, स्पर्श तन्मात्रा, रूप तन्मात्रा, रस

---

१. चारि सबद को लोक बनाये, पंचों स्वरूप लै हंस समाये
सत्य सबद की भूमि बनाई, छिमा सबद धीर निरमाई।
धीरज सबद सु छत्र उजियारा, सुमति सबद सो वदना कीन्हा।
प्रेम सबद लै हंस निरमाई, आप सबद लै लोक रहाये।

सर्वांग सागर, (हस्त चं० सो० सं० प्रति)

तन्मात्रा, गंध तन्मात्रा) को बाँधने का संकेत किया है। 'पाँच पचीसों को जो बाँधे ताको कहिए ज्ञानी'' । इन्हीं पचीस तत्त्वों से सारी सृष्टि बनी है। पाँच पचीसों को बाँधने से संत मीता का आशय सम्पूर्ण सृष्टि को बाँधने से है और यही वह स्थिति है जिससे संत जग को जीत लेता है। 'मीता जीता जगत को' कहकर इसी ओर संकेत किया है।

मीता के अनुसार ''गरभु बास' ही नरक है और गरभु बास से मुक्ति अर्थात् जन्म-कर्म के बंधनों से मुक्त होना ही संत गति को प्राप्त होना है। पाप पुण्य खेती से ही हानि-लाभ होता है। कर्म के फलस्वरूप ही ऊँची-नीची योनियाँ प्राप्त होती हैं। मीता कर्मफल के आधार पर ही दूसरे जन्म की ऊँचाई और नीचाई की व्यवस्था को मानते हैं। मीता के अनुसार कबीर की आत्मा ने ही मीता के रूप में नवीन शरीर ग्रहण कर लिया तथा प्रलय के पूर्व एक बार पुनः नया संस्करण लेकर प्रगटेंगे। इससे स्पष्ट है कि संत कोटि की आत्माएँ भी कला के माध्यम से प्रगट होती हैं। 'गरभु बास' से होकर उनका जन्म नहीं होता। 'कला धरै हम आय' से मीता ने कला धारण करने का संकेत किया है। जिसका आशय यह है कि कला की वृतियाँ स्वतन्त्र होती हैं और 'गरभु बास' में बंधन होता है। इस प्रकार संत जब-जब प्रगट होना चाहते हैं, अपनी इच्छा से देह धारण करते हैं। उन पर देह धारण करने का कोई बंधन नहीं होता जबकि सामान्य जीवों पर कर्म का ये बंधन वासना के रूप में शेष रहता है। यही है 'गरभु बास' से मुक्ति।

संतों की सेवा को ही मीता मुक्ति का द्वार मानते हैं—

'संत संगति है मुक्ति दुआरा जो सेवै सो पारा रे' ॥

भक्ति किससे की जाय? सेवा का मूर्त आधार तथा अवलम्ब कौन बने? प्रेम किसके लिए समर्पित हो? आत्मा को समुन्नत बनाने वाला प्रेरक कौन है? इन सब प्रश्नों के उत्तर के रूप में मीता सत्गुरु को ही परमात्मा का सगुण रूप मानते हैं। उनके अनुसार परमात्मा के सगुण रूप सत्गुरु की सेवा करने का आशय ही ईश्वर की सेवा है। मीता गुरु के प्रति सर्वतोभावेन समर्पण लेकर गरुवे गुरु की आराधना करते हैं।

अनन्यता ही भक्ति का मूल है। राम की अनन्यता ही मीता की भक्ति का मूल है। अन्य देवों की आशा वृक्ष की छाया की भाँति क्षणिक है—

''सीस देइ फिर राम दुहाई
और देव की आस न राखौ और वृक्ष की छाईं।''

प्रलय के बाद भी अभिनाशी शेष रहता है। मीता का ब्रह्म 'अभिनाशी' है, अभिनाशी की त्ति भी अविनाशी है। ब्रह्म और संत की अविनश्वरता का संकेत किया गया है—

''भक्ति न बिनसै ब्रह्म न बिनसै
और बिनस सब जाई
कालु त्रास सबहू के ऊपर
रहिगे संत बचाई।''

भक्ति के मर्म को पहचानने वाले अन्तःसाधक सत्य को अंगीकार करते हैं। भक्ति के म पर ठगिया छाप तिलक झमकाता फिरता है—

"भगति मरम ना पावै ठगिया
छाप तिलक झमकावै
झूठै कै संग उठि कै धावै
साँच मनै ना भावै।"

प्रेम भक्ति की विकलता में मन मछली की भाँति बेचैन होता है। प्रेम की पीड़ा और उसकी चोट कचोटती है—

"भयी सो गति मीन की ज्यों जलै
बिन कल ना परै
कहौं कासो चोट भारी
लागि है सोइ जानिहै।"

भक्त अभय होता है। भेदी ही भक्ति के मर्म को जानता है, अनभेदी वनतुलसी और कपूर की गन्ध भी नहीं जानता, हीरा की पारिख तो दूर रहो ?

करिर कपूर कुछौ ना जानै
हीरा कैसे परखै।

मीता ने विद्या माया और अविद्या माया के स्वीकृत वर्गीकरण के स्थान पर कुमिता और सुमिता नामक दो प्रकार की माया का उल्लेख किया है। सुमिता सदगुरु के द्वारा प्राप्त होती है तथा हरि पुरुष से संयोग कराती है। कुमिता संसार की तरफ उन्मुख करती है। माया के इसी रूप कुमिता को मीता ने गर्हित कहा है। सुमिता संतो की रानी है और कुमिता विषय वारि—

(अ) जहाँ ह्वै सुमिता की रानी सो संतन कै मानी

(ब) सुमिता तपै कुमति न लावै सो जोगी जगजीत कहावै

माया को मीता ने परपंचिनि कहा है तथा कंचन और कामिनी उसके दो रूप बताये हैं—

(अ) या माया परपंचनिया

(ब) इक माया दुइ रूप बनाये इक कंचन इक कामिनिया

ममता और माया जीव की बैरिन हैं। उसे अधोगामी वृत्तियों की ओर ले जाने वाली हैं यह तो अपनी चितवन से ही मारती है। इससे भला कौन सी मिताई ?

(अ) ममता बैरी जीव की या नरकै लै जाय

(ब) तू माया चितवति मारत है तोसों कौन मिताई री।

कुमिता की ठकुराई को मीता ने यम का बंधन या काल का बंधन स्वीकार किया है—

"जहँ कुमिता की ठकुराई तेहि जम ते कौन छड़ाई।"

इतना ही नहीं कुमिता प्रवृत्ति के आधार पर मीता ने एक नया वर्ण विभाजन कर दिया है। कुमिता वृत्ति वालों को शूद्र तथा सुमिता वृत्ति वालों को विप्र कहा है—

"या करनी का आय विचारा, जहाँ कुमति सो सूद्र गँवारा।

जहँ जहँ सुमिता सो विप्र विचारा।"

कुमिता में अस्मिता, राग द्वेष, अभिनिवेश आदि क्लेश होते हैं। मीता ने इसे निरन्तर बढ़ने वाली विषय-वल्लरी, विखु-बेलि कहा है।

मीता उस विद्या को विद्या ही नहीं मानते जो वासनाओं से मुक्ति न प्रदान करे। जो कर्म बंधन (आवा-जाई) से छुटकारा न दिला दे। उनके अनुसार वही विद्या श्रेष्ठ है जो मन को जीतने का साधन बने। इसी ओर संकेत करते हुए उन्होंने लिखा है—

"मीता विद्या ना पढ़ी पढ़ा मूल चटसार
मन जीते पण्डित भया उतरा भय जल पार।"

ज्ञान की कुल्हाड़ी से वे माया के वन को काटते छांटते हैं। मनमानी ढ़ंग से नहीं, समझ बूझ कर।

(अ) ज्ञान कुल्हाड़ी लीनीं

(ब) समुझ-समुझ बन काटन लागा।

ज्ञान की अग्नि से संचित कर्मों को जलाकर ही मीता परलोक चिंता के क्षेत्र में 'गरभु वास' से निवारण तथा कुम्भी नर्क से, अधोगति से बचने का उल्लेख करते हैं।

मीता गीता को ही अपना बीजक तथा कबीर के बीजक को ही अपना गीता मानते हैं। संत परम्परा में कूटवाणी को सूक्ष्म ऋग्वेद, टकसाली वाणी को सूक्ष्म यजुर्वेद, मूक ज्ञान वाणी को सूक्ष्म सामवेद तथा बीजक वाणी को सूक्ष्म अथर्व वेद के रूप में मान्यता प्राप्त है।

मीता गीता की भांति ही निष्काम कर्म दर्शन की स्वीकृति प्रदान करते हैं किन्तु वे कर्म को सांस्कारिक भ्रम तथा करनी को संतों का अभीष्ट कर्म मानते हैं। मीता बार-बार कथनी को छोड़कर करनी पर बल देते हैं। "कथै बदै" के स्थान पर करनी और रहनी ही उनका जीवनादर्श है। संतो की यह करनी त्रैलोक्य से न्यारी होती है। सतगुरु के मिलने पर इस करनी का विचार होता है। यह करनी निराधार होती हैं। करनी के अंतर्गत—काया-करनी, मन-करनी है। काया-करनी के अंतर्गत सार का चौका, चरनामृत, संत प्रसाद, संत सेवा तथा अनभै (काल के भय से मुक्त रहना) तथा मन करनी के अंतर्गत पारस करनी, व स्वाति स्नेह करनी आती है। पारस स्पर्श से लौह कंचन का रूप ग्रहण कर लेता है तथा स्वाति स्नेह करनी का आशय स्वाति के स्नेह के समान देह में बिन्दु को उलट कर पीने से है। यही संतों की करनी है, जिससे वे सत्य पुरुष का साक्षात्कार करते हैं। इस करनी के अंतर्गत लोक वेद कुल योग सभी विस्मृत हो जाते हैं। इसी करनी के संतों के वचनों से मानवीय अस्तित्व की सुरक्षा होती है तथा मानव जीवन को जीवन मुक्ति प्राप्त होती है। मीता इसी करनी के धनी हैं। कबीर पंथ के अतिरिक्त मीता के समय तक सिख पंथ, मलूकदासी, दादूपंथी, सतनामी, लालदासी, बाबालाली, नारायणी पंथ, प्रणामी व धामी आदि पंथ प्रचलित हो चुके थे। निर्गुण संतों में किसी में ज्ञान-तत्त्व का, किसी में योगियों के साधना तत्त्व का, किसी में सूफियों के प्रेमतत्त्व का प्राधान्य था। सगुणवादी धारा के अंतर्गत तुलसी, सूर की रामोपासना, कृष्णोपासना भी लोक जीवन में फैल चुकी थी। अपनी पूर्ववर्ती संत एवं भक्तों की परम्पराओं में व्याप्त रूढ़ियों को तोड़कर एक नये मार्ग का निर्माण करना

मीता को अभीष्ट था, किन्तु एक ऐसा पंथ जो साम्प्रदायिक सीमाओं से सर्वथा मुक्त हो। मीता ने इसे 'अगम पंथ' कहा है—और इसे संतों का पंथ कहा है—यही कारण है कि वे पूर्ववर्ती नाथ, सिद्ध, सूर, तुलसी, बौद्ध आदि सभी पंथों को भ्रामक मानते हैं। यहाँ तक कि कबीर, दादू, नानक पंथियों को भी कड़ी फटकार बताते हैं और संतसाधना का अगमपंथ प्रशस्त करते हैं। सगुण भक्ति के पंथों के साथ निर्गुण संत पंथों की भी आलोचना करते हैं तथा भारतीय संत साधना को जन-साधारण तक पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। उनका यह योगदान संत साधना के इतिहास में अचर्चित रहा, वैसे उनका विशिष्ट स्थान निर्भ्रान्त है।

मीता सूर, तुलसी के मार्ग को स्वीकृति नहीं प्रदान करते, यहाँ तक कि वे कबीर, दादू, नानक के मार्ग को भी प्रामाणिक नहीं मानते। वे किसी भी लकीर के फकीर नहीं हैं। वे सबसे निनारे (न्यारे) हैं। इसी अर्थ में वे सबसे विशिष्ट भी हैं।

मीता की चिन्तन धारा से परिचित होना आवश्यक है, संत कवि के योगदान को समझने के लिये, साथ ही संतकाव्य धारा में उनके विशिष्ट योगदान के अध्ययन के लिये। उनकी चिन्तन धारा कबीर की अपेक्षा अधिक बलवती, प्रांजल एवं व्यापक है।

मीता अन्तर्मुखी शोध के द्वारा सत्य की यथार्थता का संदेश देते हैं। कामदहन से वे आत्म-बोध के गहरे स्तरों का भेदन करते हैं। विषयों में लिप्त चेतना आत्म-बोधका अनुभव नहीं करती। चित्त निरोध के बाद सम्पूर्ण प्रकृति ही साधक का उपभोग्य विषय बन जाती है। नारी (प्रकृति) का भोग भी साधना में बाधक नहीं बन पाता।

मीता ने योग की विभिन्न प्रणालियों को समन्वित किया है, ध्यान अथवा भावना को कुण्डली-योग से अनुबंधित किया है। मीता ज्ञान मार्गी नहीं हैं। वे ज्ञान की सीमा को पहचानते हैं। ज्ञान से ध्यान की ओर बढ़ते हैं—

'ज्ञान छाँड़ि करु ध्यान का पावै पद निर्वान।
ज्यों गनती लाखन गनीं बिनु धन का परमान।'

वे 'मूलद्वार' को संभालने का संकेत करते हैं। यह संकेत 'कुण्डली योग' का है। ज्ञानार्णव तंत्र के अनुसार—

'मूलाधारे मूलविद्यां विद्युत्कोटि समप्रभाम्।
सूर्य कोटि प्रतीकाशां चन्द्रकोटि द्रवां प्रिये।'' —ज्ञानार्णव तंत्र

घेरण्डसंहिता के अनुसार—''मूलाधार आत्मशक्तिः कुण्डली पर देवता।
शयिता भुजगाकारा सार्धत्रिवलयाचिता॥'' (तृ० उपदेश ४४)

'कुण्डलनी' शब्द की व्याख्या ''कुण्डले अस्या स्तः इति कुण्डलिनी' की जाती है। 'कुण्डले' शब्द 'कुण्डल' के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है।

''मूल डोरि मनु लाइयाँ बन्द धरनि माँ दीन
त्रकुटी तर वर भेटिया मीता भा लै लीन।''

मूल के शोधन से ही कमल विकसित होता है। चक्रो का भेदन होता है। संत मीता के अनुसार—

'कंवल बिगसै मूल सोधे जीत पाँचों नारि
राम या विधि पाइहै नल करम कागद फारि।'

मीता के अनुसार द्वादश कवल चक्र में जीव का निवास है। और अष्ट कंमल चक्र में ब्रह्म का विलास है। इन दोनों का एकाकार ही जीव ब्रह्म का एकाकार है—

"द्वादस कँवल जीव का बासा
अष्ट कँवल दल ब्रह्म विलासा
जीव ब्रह्म का एकुइ करई
कहि मीता सो प्रानी तरई।"

मूल बन्ध भी मुद्रा बन्ध के अन्तंगत साधना के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण रहा है। मीता भी मूल बन्ध को संभालने का संकेत करते हैं। किन्तु वे मुद्रा बन्ध को अपनी साधना का लक्ष्य नहीं मानते यदि मुद्रा बन्ध मात्र बाह्याचार की वस्तु हो जाय।

मूल द्वार की साधना ही जोग जुगति का प्रथम सोपान है—'वैशाषै बसि मूल दुआरा जोग जुगति का पंथ संभारा।' चन्ददासकृत शिव सारंगाध्यावली (पृ० ३२) में मूल बन्ध साधना का वर्णन इस प्रकार है—

"मूल द्वार संभार कर वाम चरण धरि धीर
दक्षिण चरन सो राखिये इन्द्रिय विकट शरीर।"

साधना के अर्न्तगत ५ तत्त्वों और २५ लिप्साओं को जीतने का बार-बार संकेत किया है—

'पाँच पचीसों को जो बाँधे
ताको कहिये ज्ञानी।'

पाँच से पंच ज्ञानेन्द्रियों (आँख, कान, नाक, रसना, त्वक) और पचीस लिप्सायें (पाँच तत्वों से मिश्रित २५ मानसिक और शारीरिक विकार आकाश से काम, क्रोध, लोभ. मोह, भय, (५) अग्नि से क्षुधा, तृषा आलस्य निद्रा मैथुन (५) वायु से चलन, बलन, धावन, पसारन, संकोचन, (५) जल से लार, खून, पसीना, मूत्र और लिंग (५) पृथ्वी से हाड़, मांस, त्वचा, नाड़ी रोम (५)=२५ लिप्सायें। मीता ने २५ लिप्साओं के नाम भिन्न प्रकार से बताये हैं।

संख्यात्मक शैली में मीता ने इन्हीं पंच तत्त्वों को वशवर्ती बनाने का संकेत किया है। तन का शोधन मीता की साधना का आवश्यक अंग है—

'अलख जगाउ जगाउ बहुरिया
तन सोधे सबु कारज सरिया।'

मन ही साधना का अमूर्त साधन है—

'मनु कर जोगिया मनु सन्यासी
मनु कर भक्त मनुइ बैरागी
मनु कर संतहि मनहिं फकीरा
करु मन ही का कंथ गुरु पीरा।'

मन में लय होना ही भगवान का नैकट्य प्राप्त करना है—

'कहि मीता जो मनहि समाना
तिनके निकट ह्वै भगवाना।'

मन की मौन साधना ही निर्वाण प्राप्ति का विषय है—

'मनु का मौनी जो करै पावै पद निरबान।'
प्रेम प्रीति पागा रहै संसै नहि लावै।

'जोग जुगति' के लिये योगी को 'गिरही' होना आवश्यक है। काम दल को मार कर ही संत टकसारी होता है—

'वा जोगी है टकसारी
जिन लिया कामदल मारी
वा भेखु न कबहूँ धारी
गिरही माँ दोउ कुलतारी।'

इड़ा और पिंगला ही दो कुण्डल हैं। बाईं ओर बहने वाली नाड़ी 'इडा' और दाईं ओर बहने वाली 'पिंगला' कही जाती है। इडा-पिंगला के मध्य में प्रवाहित होने वाली नाड़ी 'सुषुम्ना' हैं, यही कुण्डलिनी-शक्ति का मार्ग है।

मीता ने दशम द्वार के खोलने का साधनात्मक संकेत किया है। दशम् द्वार से मीता का आशय गगन गुफा में उस छिद्र से है जिससे महारस टपक कर तालु तक आता है। इसी छिद्र को दशम् द्वार के नाम से जाना जाता है। जायसी ने भी 'नव पौरी पर दसम् दुवारा' से इसी प्रकार का संकेत किया है। शरीर में बाहर की ओर खुलने वाले नौ द्वार हैं। गगन गुफा का छिद्र इन नौ द्वारों के अतिरिक्त है। इसी से दसम् द्वार कहा जाता है। खेचरी मुद्रा में जिह्वा के नीचे वाली पतली झिल्ली को कुसवट आदि की सहायता से काट कर जिह्वा को लम्बी बना लेते हैं फिर उसे उलट कर तालु में स्थित दसम् द्वार में लगा कर ऊपर से टपकने वाले रस को कंठ में स्थित विशुद्धाख्य चक्र तक ले जाते हैं। इस प्रकार वह नाभि में स्थित सूर्य में जा कर सूखने से बच जाता है तथा काल का अवरोधक होता है।

मीता ने भी इस दसम् द्वार में अमृत पीने की बात कही है। बौद्ध तन्त्रों में इसे वैरोचन कहा है—

'दस शी दुआरे दिलो कपाट्
एव चढ़ि लाम् मोसे योग्वार।

सिक्खों के आदि ग्रन्थ (पृ० ६७४) के अनुसार—'दसम् दुआरा अगम अपारा परम पुरुष की घाटी।' गोरक्ष विजय १३६ में लिखा है—

'भेदिया दसमी द्वार खाल जोर भर।

कश्मीर से प्रकाशित 'अमरौघ शासन' (पृ० ११) में लिखा है—

एकं मुख रन्ध्रं राजदन्तान्तरे
एतदेव शंखिनी मुखं दशम् द्वारं इदुच्यते।

घट में ही रसायन है, काया नगर ही पुर पट्टन है—

'काया नगर हवै पुर पट्टन तहाँ बसै आपु निनारी'

इसे मीता ने अगमपुरा, भी कहा है—और इसमें अभिनाशी का वास बताया है—

'अगमपुरा अभिनासिया तहँ अनभै वासु।'

'पुर पट्टन डेरा किया' कह कर मीता ने इसे अपना वास स्थान बताया है। 'पुरपट्टन' शून्य बस्ती का ही दूसरा नाम है, यहाँ सत्य का परिवार रहता है। काल जाल से यह प्रदेश मुक्त रहता है।

सरहपाद ने चित्त को सम्बोधन करके कहा है, ऐ मेरे चित्त वहाँ चल कर विश्राम करो जहाँ सूर्य और चन्द्र की गति नहीं, जहाँ मन और पवन भी संचरित नहीं होते, जहाँ आदि-अंत नहीं है, जहाँ जन्म-मरण नहीं है, जो महासुख है, जो सहजावस्था है—

"जाहि मन पवन न संचरइ रवि शशि नाह प्रवेश
तहि वट चित्त विस्राम करु सरहें कहिअ उवेश
आइ न अन्त न मज्झ णउणउ भवणउ जित्वाण
एहु सो परम महासुख णउ वर णउ अप्वाण।"

संत मीता ने सहज-सहज में ही उस गढ़ के ऊपर चढ़ने का आध्यात्मिक संकेत किया है—

"सहजे सहज चढ़ौ गढ़ ऊपर जहँ पानी नहिं पवना
धूप न छाँह दिवस नहिं रजनी नहीं भानु नहि चंदा
परम जोति तहँ है परगासा ताहि मिलै सो बंदा।"

अमर लोक का पट्टा पाने वाले मीता एक बूंद रामरस के लिये प्राणों का सट्टा (बाजी) लगाने को तैयार हैं।

सरहपा[1] आदि सिद्धों ने तीर्थों का खंडन करते हुये दैहिक महत्ता का प्रतिपादन किया है। उनके अनुसार देह में प्रयाग-वाराणसी, सूर्य-चन्द्र तथा पीठ विद्यमान हैं। देह जैसा तीर्थ और सुख का स्थान अन्यत्र नहीं है। संत मीता ने भी सरहपा आदि सिद्धों की भाँति देह में ही तत्त्व दर्शन की स्थापना की है।

---

१. एत्तु से सुरसरि जमुना सत्तु से गंगासारु।
एत्तु पाग वणारसी एत्तु से चन्द दिवारु॥
खेत्तु पीठ उपपीठ एत्तु में भमइ परिट्ठओदओ।
देहा सरिसा तिथ्थ में सह अण्ण ण दिट्ठदओ॥

दोहा कोष, ४७-४८ सं० डॉ० पी० सी० बागची

काया साधना की महत्ता सहजिया, नाथ और सिद्ध सभी साधना पंथों में स्वीकार की गयी है। संत मीता ने योग साधना के अन्तर्गत मनः शारीरिक क्रियाओं को समाविष्ट किया है। उन्होंने काया शोधन और मनः साधना दोनों को समान रूप से अपनी साधना का विषय बनाया है।

मीता ब्राह्मण, याज्ञिक, त्रिदण्डी, जटाधारी, दिगम्बर, मौनी, गोरखपंथी, कबीर पंथी सभी को लक्ष्य बनाते है। तीर्थाटन, पूजा-अर्चा, दान-व्रत, शास्त्रपठन को मुक्ति का प्रतिगामी मानते है—

(अ) 'शिव-शक्ती का करता भोदूँ आनौ राम हिये।'

संत मीता ने साधना के अन्तर्गत जिन विशेष अवस्थाओं का निर्देश किया है वह ध्यान सुरति, सतगुरु सेवा, बाराहमासा करनी, सहज सुख, पाँच पचीसो का जीतना, कामदहन, दसम द्वार आदि से सम्बन्धित साधनाएँ हैं।

'सहज' सतगुरु की सेवा से प्राप्त होता है। सहजावस्था में चित्त प्रीतम में इस प्रकार लीन हो जाता है जैसे समुद्र में नमक के कण घुल कर एकाकार हो गये हैं—

'लोनु किरच घुरि जाय नीर माँ
कहु को भिन्न करइया।'

मीता नाथ योगियों की मुद्रा, छापा, कुंडल, सेली को व्यर्थ समझते हैं, बौद्ध तांत्रिकों की तंत्र साधना के मिथ्यात्व को पहचानते हैं शैवों एवं शाक्तों के शिव-शक्ति की बहिर्मुखी साधना के जप, होम, पूजा-पाठ का खण्डन करते हैं। अघोराचार और योगाचार के आडम्बरों का विच्छेदन करते हैं। कबीर, दादू, नानक पंथियों की साधनाओं के मर्म को ढहाते हैं। योग-साधना के नाम पर विकृत हठ योग की क्रियाओं के दुष्परिणामों का उद्घोष करते हैं। निम्नगामी क्रियाओं की भ्रामकता का विस्फोट करते हैं। निर्वाण के इस महाभारत के वे एकाकी योद्धा हैं। साम्प्रदायिक गढ़ों को तोड़ने में मीता कबीर के परवर्ती होकर भी उनके अग्रगामी लगते हैं।

मीता के दर्शन में जहाँ कहीं मतभेद दिखाई पड़ता है उसका कारण उनकी न्याय दृष्टि है। वे कबीर को 'टकसाली' मानते हैं, पर कबीर पंथ की विकृतियों की खुलकर आलोचना करते हैं वे पौराणिक अवतारवादों की मान्यता को निरस्त करते हैं, किन्तु स्वयं को कबीर का अवतरण मानते हैं। वेद, पुराण, भागवत, गीता, कुरान की सत्यता को स्वीकार करते हैं, किन्तु लोक में प्रचलित ज्ञान को वेद कितेब की गम्म को ललकारते हैं। शास्त्र ज्ञान के दंभ को चुनौती देते हैं। मीता के संत काव्य में इस प्रकार का अन्तर्विरोध पाया जाता है। उसका मूल कारण यह है कि मीता किसी सम्प्रदाय के खूंटे से नहीं बँधे हैं। वे निंदा और स्तुति से ऊपर उठकर सत्य का सन्धान करने वाले हैं। गुणों को स्वीकार करते हैं, दोषों का परिहार करते हैं। एक ही वस्तु की गुणवत्ता उन्हें प्रभावित करती है, उसकी विषाक्तता इनमें विरक्ति उत्पन्न करती है।

मीता का संता मता अगम और अपार है, उसकी प्रकृति अन्तर्मुखी होकर भी अपरिमित है—

'संत मता है अगम अपारा
कोटिन माँ कोइ पाई।'

संत साधना का रहस्य जंगलों-जंगलों में भटकने में नहीं, ग्रेह में ही तत्त्व ज्ञान और विरह वियोग से प्राप्त किया जा सकता है—

'घर ही माँ हरि मिलै रे बौरे
बन का जाय गँवारा रे।'

सत्य का शोध और सत्यानुभूति ही आनन्द की मांगलिक उपलब्धि है। सत्य ही साधना का सारभूत तत्व है— सत्य नाम ही संत मीता का अभीष्ट है।

तुलसी ने 'कामिहि नारि पियार जिमि लोभिहिं जिमि प्रिय दाम तिमि रघुनाथ निरंतरहि प्रिय लागहु मोहिं राम' से 'राम' की चाहना को व्यक्त किया है। तुलसी के समानान्तर संत मीता ने 'सत्य नाम' की अभ्यर्थना की है—

'तिरिया चाहै रूप का कामी चाहै काम
लोभी चाहै दाम का हम चाहैं सत नाम।'

मीता 'अपनी करनी पार उतरनी' के सिद्धान्त को मानने वाले हैं। वे निज नाम का भजन करके रघुवीर को भेंटने वाले हैं। नाम भजन और संत करनी के बिना पीपा और कबीरा ही क्या करेंगे—

'का पीपा का करै कबीरा
भजु निजु नाम मिलै रघुवीरा।'

आनन्द की सलिला में प्रविष्ट हो कर अवगाहन करने से पाप-पुण्य की सीमाएँ टूट जाती हैं। धूप और छाया अदृश्य हो जाती है, सुख और दुख की सीमाएँ असीम आनन्द की सरणि में अस्तित्व विहीन हो जाती हैं। कैसा अदभुत और असीम आनन्द है ?—

''आनन्द की सलिला बहै तहँ पैठि नहाई
पाप पुन्नि तहवाँ नहीं नहिं धूप न छाईं।''

महाभारत में विहंगम और मीन के अपदमार्ग का उल्लेख मिलता है।[१] कबीर ने मुक्ति के लिये विहंगम और मीन मार्ग को चुना है। मीता ने मुक्ति के मार्ग के रूप में पिपीलिका, विहंगम और मीन मार्ग को चुना है।

पिपीलिका का अर्थ है—चींटी। चींटी धीरे-धीरे क्रम से चलती है। वह न कूद सकती है और न उड़ सकती है, साधना के मार्ग में भी एक क्रम (सिलसिला) होता है। क्रमिक मार्ग ही पिपीलिका मार्ग कहलाता है।

विहंगम अर्थात् पक्षी अपने गन्तव्य स्थान को उड़कर पहुँचता है। उसके गमन का कोई पद-चिह्न शेष नहीं रहता है तथा उसे सद्यः मुक्ति प्राप्त होती है। मीन जलधारा के विपरीत चलती है।

साधना का मार्ग जगत के विपरीत होने से उलटा मार्ग है।

१. शकुन्तानामिवाकाशे मत्स्यानामिवचोदके।
पदां यथा न दृश्यते तथा ज्ञान विदां गतिः॥

—शान्ति पर्व—१८१/१२

मीता ने 'करनी' को मात्र वैचारिक चिन्तन की वस्तु नहीं माना है। उन्होंने करनी के अन्तर्गत मन को जीत कर काल की जंजीर काटने का पुरुषार्थ स्वीकार किया है करनी ही साधक को पूर्णता प्रदान करती है तथा गोविन्द से भेंट कराती है। करनी के सम्बन्ध में मीता कहते हैं—

(अ) करनी करनी जगु करै करनी नाही ख्याल।
कहि मीता मनु बसि करै सो काटै जम जाल ।।

(ब) कहि मीता करनी है सोय जाते गोबिन्द मिलिहै लोय।

(स) कहि मीता करनी बिना होत नहीं कोइ पूरा।

(द) कथनी बदनी जगु करै करनी विरला कोय।

सुरति और निरति शब्दों का प्रयोग तांत्रिक सिद्धों की साधना में मिलता है, इसका अर्थ है—मैथुन के समय का आनन्द। सुरति शब्द स्मृति का विकसित रूप प्रतीत होता है। इसका अर्थ है 'सुतराम् रति' अर्थात् अच्छी प्रकार से रति। 'निरति शब्द का अर्थ है 'नितराम् रति' अर्थात् पूर्णरूपेण रति।

सुरति और निरति के संबन्ध में संत मीता का चिन्तन इस प्रकार है—

(अ) सुरति डिढानी गगन में निरति किया उजियार।
सुई सुमेर समोइया मीता उतरा पार।

(ब) सुरति निरति ऐसी चढ़ी, चढ़ी जाति ज्यो चंग
अमर लोक मीता मये लगा राम सो रंग।

उनमन को ही उन्मनी अथवा उन्मना कहा गया है। नाथ पंथ में इसे 'मन मारना' कहा गया है। मन को मारने का अर्थ है उसको निश्छल बना कर उच्चतर चेतना में लय कर देना उन्मनी दिव्य चेतना है। इससे मन को तृप्ति मिलती है तथा उन्मनी ध्यान की स्थिति में साधक अर्न्तमुखी हो जाता है।

मीता ने उन्मनी ध्यान की स्थिति में केवल 'सखी-सखी सों सैनु' कह कर इस अवस्था को बैनु की अवस्था न मान कर सैनु की अवस्था माना है, मीता के अनुसार—

(अ) लगी उन्मुनी मन छका जागा निर्गुण जोग।

(ब) मीत उन्मुनी लगि रही सखी-सखी सों सैनु।

(स) जोग जुगुति छाँड़यी रहै उन्मुनी ध्यान।

सन्त मीता के दार्शनिक सिद्धान्तों के अनुशीलन के लिये उनके पूर्ववर्ती गोरखनाथ और कबीर की साधना पद्धतियों पर दृष्टिपात करना उपयोगी सिद्ध होगा। गोरखनाथ के हठयोग और कबीर के सहजयोग का प्रतिबिम्ब मीता के दर्शन में परिलक्षित होता है। गोरखनाथ के हठयोग में सूर्य और चन्द्र ही परवर्ती साहित्य में इड़ा और पिङ्गला नारियों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं, हठयोग की साधना प्राण-निरोध की साधना है। ये प्राण साधना कायिक साधना से अभिन्न है।

मीता ने इसे कायिक साधना स्वीकार किया है—

"कबीर खोजा शरीर का, मीत बखाना सोय'

मीता यह स्वीकार करते हैं कि कबीर ने कायिक साधना के रहस्यों की खोज की है तथा उन्हीं खोजों पर आधारित सत्यों को मैंने बखान किया है। मीता जहाँ एक ओर घट में ही ईश्वर का वास बताते हैं वहीं यह भी संकेत करते हैं कि घट के भीतर 'ठौर' को पहचानना ही मुख्य है। ठौर से मीता का आशय देह के भीतर उन चक्रों के पहचानने से है जो साधना के सोपान के रूप में आवश्यक हैं सन्त साधना में ज्ञान के प्रकार भेदों में 'तुचा ज्ञान' (शरीर की बनावट) की जानकारी को महत्त्वपूर्ण कहा गया है। मीता ने—'मूल बन्ध संभारि के' से 'मूलाधार चक्र' की ओर संकेत किया है। 'योगिराज रामरूप[1] जी के शब्दों में 'गुदा के ऊपरी भाग को दृढ़ता से संकुचित रखना ही मूल बन्ध है।'

सन्त मीता ने नाम के द्वारा मुक्ति को सुलभ बताया है। वे निर्वाण के लिए आवागमन चक्र से छूटना आवश्यक मानते हैं। मुक्ति की मान्यता की दृष्टि से निर्गुण संत कवि सगुण भक्तों से भिन्न प्रतीत होते हैं। भक्ति के क्षेत्र में मोक्ष की कल्पना की गई है। यहाँ तो इष्ट के सामीप्य को ही चरम लक्ष्य माना गया है। संतों ने जीवन मुक्ति के लिए निज नाम साधना पर बल दिया है। संत मीता के अनुसार दादू और कबीर क्या करेंगे ? यदि साधक स्वयं ही नाम साधना को न अंगीकार करे।

'का दादू का करै कबीरा,
भज निज नाम मिलै रघुबीरा।'

संतों की मुक्ति धारणा का प्रेरक स्रोत वेदान्त दर्शन, उपनिषद साहित्य, बौद्धों को शून्यवाद तथा सिद्ध नाथ पंथियों की मुक्ति विषयक विचारधारा प्रतीत होती है। संतों की निर्गुण साधना में भारतीय धर्म एवं दर्शन की धाराएँ इस प्रकार आ कर मिलती हैं कि वे अपनी अलग पहचान को भी खो देती हैं।

संत भक्त, दास और जन का पार्थक्य मीता को स्वीकार नहीं है। 'सोई संत भक्त सोई दासा जो झुंडै मिलि जाई।'

प्रेम बिरह एवं भाव भगति

मीता के विरह में प्रेम की अनुभूति का विस्तार है। वहाँ सगुण सुन्दरी ने निर्गुण वर को वरण किया है "सरगुन की हम सुन्दरी, निरगुन वर कीन" सगुण का सम्पूर्ण सौंदर्य निर्गुण का उपभोग्य है। सगुण के भेदन से ही निर्गुण वर की प्राप्ति मीता ने की है।

प्रिय मिलन के लिए प्रियतम की सौभाग्य चारुता ही उसे सुहागिनी बनाती है। सहज प्रेम को छोड़कर कृत्रिम शृंगार उस अभेद की उपलब्धि में बाधक बनते हैं। आभूषण और आरोपित शृंगार किस काम के ? मीता ने इसी बात का संकेत करते हुए लिखा है।

"का भा कजर लगाए हमरी सास'

---

१. कुण्डलनी योग, रामरूप, हस्त० च० शो० सं० प्रति०। यह प्रति योगनिष्ठ, समाधिलीन ठा० रामरूप सिंह, वसिला के पुत्र कवि ठा० महेन्द्र सिंह से प्राप्त हुयी थी।

मीता के श्रृंगार में भी सुरति है किन्तु वह श्रृंगारी सुरति और विपरीत रति से सर्वथा भिन्न है। वहाँ भी हेला है। किन्तु वह रीति विदग्ध कवियों का श्रृंगारी हाव मात्र नहीं है बल्कि वह हेलाहाव तो आकाश की ओर ऊर्ध्वगमन करने वाला है। वहाँ भी संयोग में संकरे मार्ग में प्रिय से भेट का प्रसंग है किन्तु उसमें रति की वासना की पंकिलता नहीं है। बल्कि सम्पूर्ण एवं एकाग्र समर्पण की विवशता है। वहाँ भी कजरारे नेत्रों के संवारने का प्रसंग है। किन्तु रीति कालीन श्रृंगार विलास से सर्वथा भिन्न है। मीता का श्रृंगार श्रृंगारिक परम्परा में पुष्ट होकर भी अपने प्रयोजन में रति से परे भक्तिपरक है।

प्रेम प्रसंगों के अन्तर्गत मीता ने भी मानिनी से मान छोड़ने तथा प्रिय की ओर अभिमुख होने व दूती से पत्र प्रेषण छोड़कर स्वयं अपनी विरह-पीड़ा का संदेश कहने का प्रसंग दिया है। किन्तु रीतिकालीन श्रृंगारिक परम्पराओं को मान प्रसंग एवं दूती कार्य व पत्र प्रेषण आदि की शास्त्रीय परम्परा की झलक देते हुए भी मीता अपने कथ्य में सर्वथा भिन्न भाव भूमि लेकर यहाँ संत कवि का आशय मान छोड़कर अर्थात् अभिमान छोड़कर रूप गर्व तोड़कर प्रिय की ओर आते हैं। जिस प्रेयसी के अभिमुख करने का प्रसंग है वह और कोई नहीं साधना की विरहिणी है। वही सर्गुण की सुन्दरी है। वही मीता की सुज्जन सहेली है।

रीति के छींटे मीता के काव्य में भी दिखाई पड़ते हैं। किन्तु उनका रंग अपना है। कथन का ढंग भले ही कहीं-कहीं रीति कवियों की स्मृति को ताजी करता हो। रीतिकालीन कवियों ने "औरे मन ह्वै गयो "जैसी भेदकातिशयोक्ति की व्यंजनाएँ करके मन की बदली हुई अवस्थाओं को रेखांकित किया है। मीता में भी इस प्रकार के प्रयोग पाये जाते हैं। किन्तु वे प्रसंग भेद के कारण भिन्न मानसिक वातावरण के चित्र देने में सक्षम हैं। उदाहरण के लिए "ससुरे से ह्वैं आयन हो, मन और ह्वै जाये" यहाँ संत कवि ने यह संकेत किया है कि जीवात्मा प्रियतम के देश से अनुभूतियाँ लेकर जब लौटती है तो मायके का आकर्षण कम हो जाता है तथा अपनी पूर्ववर्ती मानसिक स्थिति से भिन्न प्रेमिल अनुभूतियों का संसार सामने होता है। इसी मानसिक विभिन्नता को मीता ने "मन औरे होय जाय" जैसे अलंकृत प्रयोग से अभिव्यंजना दी है।

मीता के विरह में प्रतीक्षा और अभिसार दोनों के चित्र उच्चकोटि की श्रृंगारिक भावना के साथ व्यक्त हुए हैं, जिनमें अध्यात्म का सार है। पढ़ने में भले ही वे श्रृंगारी प्रतीत हों किन्तु उनका श्रृंगार देहगत न होकर आत्मगत है। एक ऐसा ही प्रसंग "चुन-चुन कलियाँ सेज बिछाउँ हूँ नैना करौं बिलौना" में देखी जा सकती है। प्रिय के लिए चुन-चुन कर फूलों को लाना तथा उन्हें सेज में बिछाना जहाँ एक ओर कोमल स्वप्नों की सृष्टि करता हुआ अभिसार का भाव-चित्र प्रस्तुत करता है वहीं "नैनन करों बिलौना" से अपलक प्रतीक्षा एवं फटे हुए नेत्रों से प्रिय पथ को हेरने का जो सादृश्य प्रस्तुत किया है वह मौलिक एवं बेजोड़ है। नेत्रों के बिलौना करने का आशय यह है कि इन नेत्रों को कपास के बीज, जिसे "बिनौला" कहा जाता है और इसी बिनौला को वर्ण विपर्यय से लोक भाषा में 'बिलौना' कहा है, के साधर्म से कहा गया है। कपास का बिनौला आँख की बनावट से बिल्कुल मिलता-जुलता है। कपास के पकने पर यह बिनौला फट जाता है और उसमें रुई के रेशे लिपटे रहते हैं। उसका आकार आँख जैसा होता है तथा काला बीज आँख की पुतलियों जैसा दिखाई पड़ता है। संत कवि ने अपलक आँखों तथा फटे-फटे नेत्रों की व्यंजना के लिए कपास की खेती वाले खेतिहर जीवन से बिनौले का सादृश्य लेकर जिस बिम्ब को

गढ़ा है वह पीड़ा की गहरी अनुभूति को व्यक्त करने में कितना सक्षम सिद्ध हुआ है, इसे तो शब्द के पारदर्शी ही जान सकेंगे।

'जन्त्र मन्त्र जोगिया न जानै विरहिन मीत जगाय गयो।'[१] मीता के गुरु ने न तो कोई जन्त्र-मन्त्र सिखाया और न ही किसी प्रकार की कृत्रिम साधना। वह तो मीता के भीतर एक सोयी हुयी विरहिणी को जगाकर चला गया, वही विरहिणी जो जायसी की नागमती का विरह वेदना बन कर व्यथित करता रहा। मीरा का वैद्य संवलियाँ तो उसकी पीड़ा को पहचानने वाला था पर मीता का वैद्य तो व्यर्थ ही नाड़ी टोहता रहता है, वह घाव की मर्म विदारक पीड़ा को भला कैसे पहचान पायेगा?

विरह की तीव्रता में पीड़ा का सघन हो जाना स्वाभाविक ही है।

हरद वरन भई देहिया निस दिन जागि।

मीता के विरह वर्णन में प्रेम भक्ति का जैसा विकास हुआ है उसमें प्रगाढ़ अनन्यता अथवा विरह की भाव सबल दशायें सभी कुछ प्रेम प्रवण हृदय की अनुभूतियों के रूप में अभिव्यक्त हुईं हैं। विरहिणी वही है जिसको वियोग ने बावरी बना रखा है। एक ओर क्षण-प्रतिक्षण में आँखों की तरलता और दूसरी ओर आँचल पट का खिसक जाना। साधना का रहस्य बताते हुए मीता ने प्रिय वियोग को ही आधार माना है। उनके अनुसार—

'कुन्जी कुरिल ज्ञान सो पाई'

कुंजी क्रौंच पक्षी की प्रिया है, कुरिल कुररी पक्षी है। ये प्रिय वियोग में चीखते हैं। प्रिय के वियोग में पक्षी की यह दशा हो जाती है तो उस जीव का क्या हाल होगा जो अपने प्रिय से वियुक्त है। मीता ने मर्म वेदना को ही साधन का रहस्य माना है। तुलसी ने 'बिलपत अति कुररी की नांई' से वियोग की मार्मिकता का संकेत किया है। यह पक्षी साहित्य में विरह भावना की अभिव्यञ्जना का प्रतीक रहा है। 'ढोला मारु रा दूहा' में इसका वर्णन इस प्रकार है—

राति जु सारस कुरलिया गुंजि रहे सब ताल
जिण की जोडी विछणी तिणका कवण हवाल

संत कबीर ने भी इसे विरह भावों का प्रतीक माना है

अम्बर कुंजा कुरलियाँ-गरज भरे सब ताल
जिन ते गोविन्द बीछुड़े तिनको कौन हवाल

मीता ने भी कुंजी कुरिल से चक्रवाकी और कुररी को विरह भावों का प्रतीक माना है। चक्रवाकी रात्रि में चक्रवाक से वियुक्त रहती है, प्रातः काल होते ही अपने प्रिय से मिल जाती है। मीता ने इसी पक्षी से मर्म वेदना के पाने का, ज्ञान पाने का संकेत किया है। यही विरह विरोग ही मीता की साधना का मर्म है।

अंश अंशी से वियुक्त हो कर व्याकुल होता है। अपने कुल में मिलने के लिए इसी विरह वेदना में मीता की साधक विरहिणी भी सूख-सूख कर टटेर की तरह (ज्वार के सूखे डंठल) डटेर की तरह हो गयी है—

"झुर-झुर भइन टटेरवा उनके सोग
नारी टोबै वैदा मिलै न रोग।"

डटेर के सूख जाने में रस विहीन जीवन की शुष्कता का संकेत किया गया है। प्रिय का स्नेह रस न पाकर रस के सम्पूर्ण स्रोत ही सूख गये। रसत्व ही तो प्रेम साधना का मर्म है। इस रस को 'नन्दुलि' नहीं जानती है, वह तो सामान्य शृंगारी प्रकृति की है। वह टिकुली बिन्दी तथा कजरा सँवारने में ही जीवन की सार्थकता मानती है, पर जीवन की सार्थकता तो प्रिय का सामीप्य और सेजरी का रस है।

मीता की विरहिणी औघट घाट की ओर जाना चाहती है, इसकी बाट एक नाऊ और दो बारी रोक लेते हैं, ये साधना के अन्तराय हैं जो पंथ के बाधक है। औघट घाट बड़ा विकट मार्ग है। घट के भीतर ही इस औघट को खोजना और औघट के भीतर घाट को खोजना और भी कठिन है। गुरु के निर्देशन से इसे जाना जा सकता है। मीता ने इसी गुरु तत्व को सुमिता सखी के रूप में चित्रित किया है।

प्रेम विरह की इस भाव दशा का चित्रण मीता के शब्दों में—

"प्रीतम रंग विरोग बात्ररी छिन-छिन अंसुवा आये
नैन सों नैन लगे जब नागर आँचल देत चलाये।"

जायसी[1] की नागमती पक्षियों से अपने विरह का दुखड़ा रोती है। मीता की विरहिणी निपंख है। वह किससे अपने दुखड़ा को रोकर सुनाये—

'मैं निपंच्छ कोइ पंच्छी नाही केहि दुख रोइ सुनाऊँ।'

ओस से यह घइले (मिट्टी के बर्तन) नहीं भरेंगे, सरोवर में जाकर ही इनकी प्यास बुझेगी—

"ओसन भरैं न घैलन, बिनु सर पाय।"

प्रेम की प्यास ही इस मिट्टी के तन की सम्पूर्णता है और वह प्यास चरन सरोवर में ही बुझ पाती है। कबीर भी—'चकई री चल चरन सरोवर जहाँ न प्रेम वियोग' कह कर प्रेम की भाव भूमि में समर्पण करना चाहते हैं। मीता एक परदेशिन नारि की भाँति रैनबसेरा करना चाहती है। परदेशिन और फिर नारि कैसी अद्भुत दीनता है—

"आज की रैन बसन दे, अरे हम परदेशिन नारि।"

यौवन जाते हुए देर नहीं लगती, अँजुरी की जल की तरह जीवन बूँद-बूँद कर चुकता जा रहा है ऐसा समय बार-बार नहीं आयेगा। 'भली बैस तरुनुपवा की री, जो सेजरी अगुवान।' कहकर मीता ने अपनी तरुणा कहकर की सराहना की है जो प्रियतम की सेज की ओर अग्रमान हुई।

प्रेम की मूल्यवत्ता को, प्राणों की चन्दनीगंध को कोई सखी ही जानती है। गंवारि भिल्ल प्रिया (भिल्लनी) तो चंदन को चूल्हे में जला देती है—

---

१. जेहि पंच्छी के नियर होइ करइ बिरह की बात
सोइ पंच्छी जाइ जरि तरिवर होइ नियात।
पदमावत, जायसी, हस्त०, प्रति० च०शो० स०

"सखी सखी की गति जाने अरी जानै नहीं गंवारि ।
जैसे चन्दन भिल्लनी चूल्हे देत जराय ।"

प्रेम की कस्तूरी गंध को प्राणों की सीमाओं में बन्दी बनाना कठिन है । प्रेम की परिमलवास अग-जग में फैल जाती है—

"कौने कोने गंध छपावै, छपै न वाकी वासा ।"

मीता ने प्रेम और भक्ति को इत्र बताया है, फूलों के सार को ही इत्र कहते हैं । प्रेम भी तो जीवन का सार है । इस इत्र को कहीं भी छिपा दो पर उसकी गंध नहीं छिपती ।

"घर-घर होय चबाव रैन दिन प्रीति न दुरै दुराये ।"

स्नेह का समुद्र अत्यन्त गम्भीर है, उसमें डोंगे पार नहीं जा सकेंगे । मितवा का जहाज (भक्ति-यान) ही तीर तक ले जायेगा—

"डोंगवा जाय न पारै समुद्र गहीर
चढ़ु जहाज मितवा के लइहैं तीर ।"

प्रेम की यह सगाई किसी ब्राह्मण के द्वारा जोड़ दी गई है—

धन्य धन्य वा बंभनवा अरी जिन मिल जुरा सनेह
पिव पावा आनन्द भा अरी पीछे होय सो होय ।

नाथ और सिद्ध साहित्य में ब्राह्मण को सखी तथा 'महामुद्रा' की संज्ञा प्रदान की गई है । संत मीता का संकेत भी ब्राह्मण से सखी की ओर है । यह ब्राह्मण महामुद्रा के अर्थ में ही अपना साधमात्मक संकेत छिपाये हुए है । इसी प्रकार खसम को साधना के क्षेत्र में सहजा अवस्था (शून्यावस्था) कहा गया है । मीता की विरहणी भी लाज छोड़कर खसम से सुरंग चूनरी पहनने की विनती करती है—

"विनती करब खसम तन कछु नहिं लाज,
माँगब सुरंग चुनरिया पहिरब आज ।"

रस की भाव भूमि में प्रविष्ठ होने के लिए कुलकानि, लोकमर्यादायें हट जाती हैं । मीता का मितवा प्राणों में घनीभूत हो कर एकाकार हो जाता है । शून्य की सेज पर मन तरसता है—

शून्य सेज मन तरसै अरे मितवा मिले न आय ।

भोक्ता और भोक्तार की एकान्तिक भाव-भूमि ही प्रेम की अनन्यता है । प्रेम की यह गली कितनी संकुल है—

"चले जात मोरे मितवा अरे मिलगै सांकर खोर
ऐसे तो जुरिल सनेहुवा अरी कैसे डरिहैं तोर ।"

मीता का प्रेम उन्हे भाव भगति तक ले चलता है । वह कान्ता भाव परक मधुर भाव साधना का ही परिपाक करता है । व्यक्ति विशेष के प्रेम को साधना की ऊँचाई तक ले चलने का प्रयत्न दिखाई पड़ता है किन्तु यह प्रेम साधना मदन दहन से प्राप्त होती है, मादन भाव से नहीं ।

'भाव भगति जाने नहीं' कहकर संत मीता ने जिस भाव भगति की चर्चा की है उसके अन्तर्गत ध्यान, वर्णविहित भावना का परिहार, दीनता एवं प्रेम-वियोग का होना आवश्यक है ।

'बहुत कठिन है भक्ति दुहेली' कहकर मीता ने एक ओर भक्ति को कठिन बताया है, दूसरी ओर इसी भक्ति पदार्थ को जीतने का भी संकेत किया है--

"हारी भाई भक्ति पदारथ तब पाई सो जीता।"

मीता ने भक्ति को पदार्थ और रसायन कहा है। यह रसायन जीवन को ही बदल देता है किन्तु बिना युद्ध के न तो कोई शूर वीर हो सकता है और न ही कथनी से भक्ति का मर्म जाना जा सकता है—

"बिना जुज्झि नहिं होइ सूरमा, गल्लन भक्ति न जानी"

मीता ने भक्ति को खाँड़े की धार कहा है। मीता की भक्ति प्रेमाभक्ति पर बल देती है। वह भाव-भक्ति को स्वीकार करती है किन्तु उसकी भाव-भूमि वैष्णवीं कवियों से भिन्न है।

मीता की भक्ति में गुरु के प्रति शरणागति है परन्तु जगत के प्रति पुरुषार्थ की कर्मयोगी चेतना। मीता ने यह भक्ति आत्मोद्धार के लिए मात्र नहीं की, उन्होंने यह उत्सर्ग सम्पूर्ण देशकाल को कृतार्थ करने के लिए किया है—

"अब कलजुग मा भक्ति पसारा
सतगुरु तरिहैं बाँह गही।"

मीता का राम-नाम रणखम्भ की भाँति है, जिसके नीचे जीवन का सम्पूर्ण महाभारत लड़ा जाना है।

"राम नाम रणखम्भवा तेहि तर भारत होय।"

महाभारत के इस अंतर्मुखी संग्राम में मीता एक योद्धा की भाँति प्रविष्ठ हो जाते हैं और युद्ध में सर्वथा एकाकी रह जाते हैं। साधना का यह सर्वोच्च बिन्दु है जो रवीन्द्र के 'एकला चलो रे' की भाँति पौरुषेय संदेश देता है।

सामाजिक चिन्तन—हिन्दू मुस्लिम धर्मों की साम्प्रदायिक कट्टरता एवं उनमें विकृतियों को लक्ष्य करके मीता ने दोनों धर्मों की सांस्कृतिक इकाइयों के समान आधारभूत सिद्धांतों को अपने तत्त्व दर्शन का विषय बनाया है। दोनों धर्मों के भीतर समान रूप से व्याप्त करुणा, अहिंसा, प्रेम एवं मानवीय आस्थाओं के प्रति सात्विक श्रद्धा व्यक्त की है। किन्तु दोनों धर्मों के भीतर व्याप्त रूढ़ियों, आडम्बरों एवं वाह्याचारों की भर्त्सना की है। हिन्दू, मुस्लिम ऐक्य विधायक के रूप में मीता कबीर की भाँति युग-स्रष्टा संत सिद्ध होते हैं।

तत्त्व चिंतन के साथ सामाजिक मूल्यों के प्रति मीता की दृष्टि समष्टिवादी है। सामाजिक जीवन को समुन्नत बनाने में मीता का योगदान महत्त्वपूर्ण है। वे संत जीवन के साथ ही उत्पादक शक्तियों तथा श्रमजीवी मूल्यों के प्रति अपनी पक्षधरता व्यक्त करते हैं।

मीता ने धार्मिक क्षेत्र के अन्तर्विरोधों का पर्दाफाश किया है तथा प्रतिगामी विचारों को सामाजिक हित के लिए अनुपयोगी समझकर उनकी भर्त्सना की है।

हिन्दू और मुस्लिम दोनों कट्टर विरोधी संस्कृतियों को लक्ष्य करके मीता ने कबीर की भाँति जिन रूढ़ियों का भंजन किया है उनके पीछे सामाजिक प्रतिबद्धता ही नहीं, एक उदार मानवीय संस्कृति का निर्माण भी रहा है। वर्ण व्यवस्था के क्षेत्र में मीता ने साम्प्रदायिक कट्टरता

से हटकर एक नया मानक तैयार किया है। वर्ण व्यवस्था के वैदिक सिद्धांत को आधार मानकर कुलीनता को कर्म से सम्बद्ध किया है। रुढ़िगत जातीय उच्चाभिमान पर मीता ने जो वज्राघात किया है वह किसी प्रतिक्रिया का परिणाम नहीं है बल्कि मानवीय अखण्डता को भंजित करने वाली वर्ण व्यवस्था को हेय मानने के पीछे मीता न तो संकीर्ण हैं, और न ही जातीय मनोग्रन्थियों से पीड़ित हैं। उन्होंने कुल की पांति-पंक्ति को तोड़कर स्वयं एक संघर्ष का वातावरण तैयार किया। जीवन की इस विसंगति को उन्होंने पहिचाना। ब्राह्मण और शूद्र के निरूपण में सारी परम्पराओं को अतिक्रान्त करके प्रवृत्तियों के आधार पर एक नया वर्गीकरण किया है। उनके अनुसार कुमिता प्रवृत्ति वाले व्यक्ति शूद्र हैं तथा सुमिता प्रवृत्ति वाले व्यक्ति ब्रह्म में समाये हुए ब्राह्मण हैं। इस प्रकार का विवेचन सर्वथा मौलिक एवं क्रान्तिकारी है। जाति पांति के सम्बन्ध में मीता का दृष्टिकोण अत्यधिक आधुनिक तथा वैज्ञानिक बन पड़ा है। वस्तुत: वे वैदिक कालीन जाति पांति में भरोसा करने वाले थे तथा जो स्खलन इस विचारधारा में समय तथा भारत में विदेशियों के होने वाले आक्रमणों से हुआ, उसके मीता विरोधी थे। अत: वह ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य तथा शूद्र को परम्परागत रूप में जन्म से बनी जाति के रूप में नहीं मानते तथा इसी पद्धति को मानने वालों के विचारों का खण्डन करते हैं, उन्हें फटकारते हैं तथा समझाते हैं। वह स्वयं जातियों की व्याख्या करते हैं और चारों जातियों का वास्तविक अर्थ बतलाते हैं।

मीता के अनुसार—

'जीव जन्तु पर दाया राखै क्षत्री तौनु कहावै।
ब्राह्मण सो जो ब्रह्मै मिलिया गरभु वास ना आवै॥

श्रुति संकेत 'ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति' का समर्थन मीता भी करते हैं—

ब्रह्म मिलै सोइ ब्रह्मन कहावै

× × × ×

कहि मीता ते हि ब्राह्मण कहिये गरभु बासु न आवै॥

मीता छुआछूत के तो किसी भी रूप में पक्षधर नहीं हैं।

'बासन छुअैं न दीजिये ई सब आय कसाई।
पूजा केरी का चली सुनि ले सब्दा आई॥

छुआछूत के साथ ही साथ छापा, तिलक, माला, मूर्तिपूजा, तीर्थयात्रा, वेद कुरान पठन-पाठन आदि वाह्याडम्बरों की भर्त्सना तथा इस माध्यम से जनता को सन्मार्ग दिखाना कबीर की ही भाँति मीता की सामाजिक मान्यताओं का मूल उद्देश्य था।

पाखण्डियों के प्रति व्यंग करते हुए मीता कहते हैं—

छापा तिलक बनाइके कहित भये हम दास
धोखे धोखे तनु गया भया नरक मा बास। मी० ग्र० पृ० ३

वे मूर्तिपूजकों के प्रति नाराजगी व्यक्त करते हैं और मूर्तिपूजकों को शाप देते हैं—

जो पाहन का पूजइ सो पाहन होय जाय। मी० ग्र० पृ० २

ईश्वर के दरबार में सार मत ही सार्थक है। सरल हृदयों के लिए उस अगम अगोचर के दरवाजे हर समय खुले हैं—

जहाँ बेद की गमि नहिं तहाँ पढ़ा मतसार
खुले केंवारा अगम के जिव का किया उधार। मी० ग्र० पृ० १०

संत मीता वस्तुतः वेद और कुरान के नाम के विरोधी नहीं हैं। वे विरोधी हैं उस पाखण्ड के जो कि वेद कुरान पढ़ने वाले व्यक्ति धर्मान्ध जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं। यदि वेद कुरान के उपदेशों को ग्रहण किया जाय तो कुछ भी बुरा नहीं है। किन्तु बुराई हैं मात्र दिखावे के लिये पढ़ने में—

साँचे वेद कुरान किताबें बिना अमल का बांचै मी० ग्र० पृ० ४

तीर्थयात्रा से कुछ नहीं होता, वास्तविक ईश्वर की पहचान जीवन के कटु यथार्थों का सामना करने की हिम्मत रखने में हैं। भक्त मीता तीर्थयात्रियों को राम के शीतल चरणों में शरणागत होने का उपदेश देते हैं—

तीरथु नहीं छड़ाइहैं जमु राजा की त्रास
कहि मीता भजु राम का सीतल चरन निवास। मी० ग्र० पृ० ५

किन्तु मीता का उद्देश्य मात्र उपदेश देना न था। जो उपदेश उन्होंने दिया उसकी उन्होंने पहले स्वयं अनुभूति की। तथ्य की तथ्यता और आडम्बर की व्यर्थता को पहले उन्होंने स्वयं समझा, उसका अनुसरण किया तत्पश्चात् समाज के सामने अपना आदर्श रखकर उपदेश दिया। वे कहते हैं—

कंठी माला तोरि के मीता दिया चलाय
सतगुरू सेये हरि मिलै धोखा दिया गिराय। मी० ग्र० पृ० ३

सती प्रथा का विरोध करते हुए मीता ने इसे आत्म हत्या की संज्ञा दी है—

'मिरतुक संघ जरै जे नारी
आतम हत्या तिन सिर धारी।'

उड़ीसा के जगन्नाथ धाम की प्रतिमा को चंदन की पुतली कहकर एवं 'मंगलं मरणं काशी' (शंकराचार्य) की काशी मुक्तिदायी को 'नर्कवासी' कहकर तीर्थाटन का खंडन किया है—

अ— 'मुरुख चलै उड़ीसै आवै हाँसी हो
चन्दन केरि पुतरिया देखिन आखिन हो।'

ब— काशी करिहो काह नरक के बासी हो।

स— 'गया मथुरा औ काशी देखी
पाहन की रासी देखी।'
'मठु माँ पाहनु मूरति देखी तीरथ पानी झेलै'

द— तीरथ बरत नहीं कोइ तरई।

पोथी खंडन

(अ) मुसलमान तो पढ़ै कुराना हिन्दू वेद पुराना
कोइ बकरी कोइ गाय पछारै या कैसा है ज्ञाना।

(ब) 'काह पढ़े भा वेद कुराना
जो अपना मन हाथु न आना ।'

स) 'वेद कुरान दोउ गोहिरावै कहि मीता कस जीव सतावै ।'

राम और खुदाय की एकता —

'रामु राम सोइ रामु है सिरजनहार खुदाय
कहि मीता दोउ एकु हैं जनि कोइ जाय भुलाय ।'
पंडित पाहन पूजई मुल्ला पूजै मसीदी'

एकेश्वरवाद की स्थापना में जातिवर्ण की निरर्थकता भी व्यंजित हो गयी है—

(अ) पाँच तत्त्व के सकल सरीरा तामो एकुइ ब्रह्म समाई
ना कोउ ऊँचा ना कोउ नीचा ऊँच भये जिन भक्ति डिढ़ाई ।''

(ब) 'बरन दूसरा है नहीं पंडित करौ बिचार ।
पाँच तत्त्व ते तनु भये तेहि माँ सिरजनहार ।।''

काव्य चिंतन

शब्द पिण्ड से ब्रह्माण्ड पर्यन्त व्याप्त है ।[१] सृष्टि के अणु-परमाणु में जो कुछ भी चैतन्य है, वह वाक्तत्व है । आत्म द्रष्टा संतों ने वाणी के इस विमर्श को ही सृष्टि का मूल कहा है । वाणी के निराकार और असंख्य प्रकारों को, उसकी चरमावस्था को तुरीयपद वाले संत जन ही जानते हैं । छान्दोग्योपनिषद (१।१—२) में बताया गया है कि वाक्तत्व ही पुरुष में सार तत्त्व है और उसके तारतम्य का रहस्य केवल ब्रह्मवेत्ता ही जान सकते हैं । संत मीता के अनुसार जो व्यक्ति करतार को भेंट चुके हों, उनके शब्द ही सार्थक हैं—

'मीता साखी सो सही जिन्है मिला करतार ।।

संत मीता ने दैवी प्रेरणा को काव्य का प्रेरक स्वीकार किया है । उनके अनुसार संत हुकुमी होते हैं और उन्हें वचन वाणी कहने का ईश्वरीय आदेश होता है । मीता को यह हुकुम मिला हुआ है और वे बिना हुकुम की वाणी को काटने के लिये कृत संकल्प हैं

'बिना हुकुम के जे कही ते सब डारी काट ।'

काव्यशास्त्र के आद्याचार्य प्लेटो की भाँति मीता भी काव्य सर्जना के दैवी प्रेरणा के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं । तत्त्व वोध के लिये अन्तः करण में सत्य का संचार होना आवश्यक है । सत्य ही संदेश संत काव्य का अभीष्ट है । प्लेटो की भाँति मीता भी सत्य को मौलिक एवं काव्य को उसकी अनुकृति, प्रतिच्छाया मानते हैं । काव्य सत्य का मौलिक संकेतक न होकर द्वितीय तथा तृतीय संकेतक होता है । संतों ने काव्य को सत्य से दूर होने के कारण उसे साधना का विषय नहीं बनाया, वह अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र है ।

---

१ अ. वाग्वै ब्रह्मच सु ब्रह्मच । (ऐतरेयोपनिषद् ६।३)
ब. वाग्ब्रह्म । (गोपथ, पृ० २।१०)
स. वाग्वैब्रह्म (जैमिनीयोपनिषद् २।८।६)

काव्य के दो प्रमुख रूपों में कल्पना प्रधान (पांडित्यपूर्ण काव्य) एवं सन्त काव्य (साखी, सबद आदि) रखे जा सकते हैं। सन्त मीता ने प्रथम प्रकार के काव्य को विगर्हित किया है तथा सन्त काव्य को सारपूर्ण बताया है। आध्यात्मिक मूल्यों से रहित काव्य की कदर्थना करते हुए राजदरबारी कवियों, गुनी, भाँड को 'बादर की छाया' कहकर अल्पकालिक परिणाम व ला बताया है—

(अ) "करता चतुराई कविताई राजन की बड़ाई धावति ज्यों स्वानु एकु कौरा के काज रे
गुनी भाँड़ और कविताई ई तीनिउ है भाई मंगन की बड़ाई ज्यों बादर की छाँह रे।"

(ब) सन्त शब्द का सो लखै जो पहुँचा दरबार

(स) सन्त सब्द ज्यों चन्दा

(द) पंडिताई कवि चातुरी सरी न एकौ काम

कबीर साहित्य को मीता ने प्रक्षिप्त बताया है[1] तथा उनके गुरू का नाम बालगोबिन्द कहा है।[2] वस्तुतः रामानन्द कबीर के गुरू नहीं थे इसका प्रमाण मुझे कबीर पन्थ के एक प्राचीन ग्रन्थ में भी मिल गया है।[3] कबीर की वाणी में जहाँ कहीं 'गोविन्द' शब्द का प्रयोग किया गया है वहाँ 'श्लेष' से उनके गुरू का ही सूचक है।[4] मीता के अनुसार कबीर के ज्ञान को दानवों ने लूट लिया है इसीलिये कबीर निपूते रह गये। उनकी परम्परा पुत्रविहीन हो गई।[5] धर्मदास के बाद कबीर का कोई सुयोग्य उत्तराधिकारी नहीं हुआ।[6] मीता ने अपने को दूसरा कबीर कहा है तथा अपनी वाणी को प्रक्षिप्त होने से बचाने के लिये उसे प्रामाणिक रखने का संकेत किया है।[7] इस प्रकार मीता के सन्त काव्य का प्रयोजन अशिव का संहार तथा सुज्जनों का कल्याण बताया गया है। मीता की वाणी सत्य का संधान करने वाली है। वे न तो चमत्कृति को काव्य का लक्ष्य बनाते हैं और न काव्य चातुर्य को अपना अभीष्ट मानते हैं।

---

१. कबीर, दादू, नानक जग का जान न जाय। मी० ग्र०

२. बालगोविन्द गुरू कबीर के मीरा रानी सरना। मी० ग्र०

३. कहन सुनन को गुरु कियो तुमको रामानन्द। सर्वांग सागर, हस्त०, च० शो० सं० प्रति।

४. गुरुगोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाँय। क० ग्र०

५. और भली कै गया जुलाहा, एक ठाँव वा सूता,
किया जखीरा लै गया दानव, ताते भया निपूता। मी० ग्र०

६. जब बाधों माँ सन्त थे, कबीर औ धरमदास,
ताही घर ठगवा बसैं, परखैं मीता दास। मी० ग्र०

७. ताते मीता बाणु बनाये खरे सानु के भारी
दानव छुवत तुरत जरि मरतै, सुज्जन का हितकारी। मी० ग्र०

"सबद हमारा सो लखै, जिनके प्रेम बिरोग
कहि मीता कवि चातुरी, नरक परैंगें लोग।"

उनकी वाणी दुर्बोध नहीं है किन्तु सुबोध होकर भी वह रहस्य बोध के कारण सुज्जनों तथा खोजियों के लिये प्रकट होकर भी गोप्य है। अभिव्यंजना के सोपानों में वह सरल एवं सुललित है किन्तु व्यंग्यार्थ में वह 'वेद कितेब की गम्म', से भी परे हैं।

काव्य शास्त्र मीता का न तो प्रयोजन है और नहीं कविता उनकी साधना की प्राथमिक आवश्यकता है। सच तो यह है कि उनके जीवन में विरह इतने गहरे समा गया है कि उस विरह के उच्छ्वासों को ही व्यक्त करने में सहज रूप में कविता का जन्म हो जाता है। संत मीता के लिये भी काव्य रचना एक विवशता है।

मीता का काव्य बिम्ब विधान की ऊँचाई के कारण अन्य संत काव्यों की तुलना में सहज संवेद्य एवं जीवंत प्रतीत होता है। जो उनमें सच्चे अर्थों में कवि होने की क्षमता को उजागर करता है।

सन्तों की अनुभूतियाँ वैयक्तिक तथा रहस्यमय होती हैं। इस रहस्य की अभिव्यक्ति के लिये भी काव्य की आवश्यकता होती है जबकि काव्य शास्त्र से उनका कोई लेना-देना नहीं। रहस्य के भावों को विरहिणी नायिका के माध्यम से ही अभिव्यक्ति दी गयी है। कोमलतम स्वप्नों की अभिव्यक्ति के लिये, रहस्यमय अनुभूतियों की गूंगी अभिव्यञ्जनाओं के लिये, कविता को माध्यम बनाना, सन्त काव्य की एक दूसरी अनिवार्य विवशता कहा जा सकता है।

मौलिकता के विपरीत भावों के अपहरण को मीता चौर्य कर्म की संज्ञा प्रदान करते हुये उसे निंद्य मानते हैं—

'करनी और करै तू गावै सब्द न जाय विचारा
जैसे चोरा पर घर मूसै भाउ रहा वाते न्यारा।'

चोर दूसरे के घर को मूस कर खाता है और वस्तु का भाव उसकी अनुभूति का विषय नहीं बनता, वैसे ही कृतित्व से शून्य चौर्य कर्म करने वाले शब्द में निहित सत्य और विचार को नहीं पहचान पाते। भाव की मौलिक सम्पदा ही अनुभूति कि वस्तु है और वैचारिक अनुभूति ही मौलिक कृतित्व की वस्तु है।

कवि के उपमान इतने मौलिक हैं कि वे श्रेष्ठ कविता की पहचान देते चलते हैं। बिम्ब विधान में वे तार्किक सत्यों एवं साधनात्मक प्रवृत्तियों को ऐंद्रिक अनुभूतियों के बिम्बों से व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए गन्ध की अनुभूति सूँघी गयी वस्तु के वर्णन से ही हो सकती है। लहसुन और कपूर की गन्ध दो पृथक् घ्राण बिम्ब जाग्रत करती हैं। दोनों विरोधी गन्ध के घ्राण बिम्ब बनाते हैं।

"लहसुन खाएँ कपूर बतावें"

कितनी सादगी से रोजमर्रा के जीवन में खाने-पीने की वस्तुओं को सादृश्य में चुनकर विभिन्न प्रकार की रुचियों के व्यक्तियों के वास्तविक आस्वादन को छिपाकर मिथ्यात्व का कैसा

अद्‌भुत शब्द-विधान किया गया है। कुमिता प्रवृत्ति वाले व्यक्ति सुमिता वृत्ति की गंध को कैसे पहचानेगें ? वे तो लहसुन में ही कपूर की गंध की घोषणा करेंगे। यह घोषणा भले ही सत्य के विपरीत हो, पर ऐसे लोगों को सत्य से क्या लेना-देना ? उन्हें तो अपनी श्रेष्ठता दिखानी है। अपने दुर्गुणों को ही हठात् गुणवत्ता प्रदान करना है। भले ही श्रेष्ठता की गंध उनके प्राण में पूरी तरह समाई हो।

अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देने के लिए ही मीता सादृश्य को खोजते हैं। उपमान विधान करते हैं। रूपकों को गढ़ते हैं। कूट पदों में, उलटवासियों में व्यंग्यार्थ के लिए विरोधाभास, असंगति, बक्रोक्ति को सहज अभिव्यक्ति का साधन बनाते हैं। अन्यथा अलंकार-शास्त्र से उनकी अनहद साधना को क्या लेना-देना। अलंकार यदि उनके काव्य के अभिप्रेत होते तो बेचारे केशव प्रेत क्यों हो जाते ? मीता ने केशव को भूत कवि कहा है—"बै कविताई कान्ह की केशव कवि भा भूत" भूत से मीता का प्रयोजन मुक्ति न मिलने से है। वैसे आचार्यों ने अलंकार प्रधान जटिल कविता को पिशाच (भूत) श्रेणी में स्वीकार किया है। मीता कल्पना के आधार पर लिखी गई कविता को मुक्ति की प्रतिगामी मानते हैं। इसीलिए मीता के अनुसार कविता और सुनार की मुक्ति नहीं होती।

"कविता और सुनार की मुक्ति न कबहूँ होय"

कविता में सत्य को छोड़कर कल्पना और भावना का मेल-जोल एक प्रकार की मिलावट है। इसी प्रकार सुनार भी कंचन को शुद्ध कंचन नहीं रहने देता, उसमें अन्य धातुओं को मिलाकर व्यवसायिक बुद्धि से कार्य करता है, भला उसे कैसे मुक्ति मिलती ? वस्तुत: मीता का ये काव्य चिंतन कविता की मुक्ति का चिन्तन हैं। विशुद्ध कविता वही है जो संतो की वाणी के रूप में लिखी गई है। राजाश्रयी वृत्ति की पांडित्यपूर्ण और शास्त्रीय कविता मीता की दृष्टि में निकृष्ट कोटि का काव्य है और ऐसे कवि जुगनू की भाँति हैं, जिनका स्वयं का कोई प्रकाश नहीं है। प्रकाश का आरोप मात्र है। वह प्रकाश अन्धकार को विदीर्ण नहीं करता। अन्धकार को विदीर्ण करने का काम तो चन्द्रमा के द्वारा होता है। मीता ने इसे "संत शब्द ज्यों चंदा," कहकर अभिव्यंजित किया है। इस प्रकार मीता का काव्य चिंतन उनकी साधना के अभिप्रेत को सक्षम अभिव्यक्ति देता है। मीता के काव्य रूपों में साखी, उलटवासी, बरवै, पद आदि प्रमुख हैं।

साखी

साखी शब्द संस्कृत के साक्ष्य से उद्‌भूत माना जाता है जिसका अर्थ होता है—आँखों देखा। साखी के उद्‌भव के सम्बन्ध में मेरी मौलिक स्थापनायें इस प्रकार हैं—

(अ) साखी शब्द की व्युत्पत्ति शाखा शब्द से हो सकती है। अगम पंथ की शाखा होती है। बिना शाखा पात के संत नहीं होते। संत मीता के अनुसार—'संत ते हैं जिनकी साखा पात होत है।' शाखा पात का अर्थ यह है कि संत संत की शाखा के रूप में ही विकसित होता है तथा संतों की शाखा के द्वारा कहे गये वचनों को कदाचित साखी कहा गया होगा।

(ब) साखी शब्द की व्युत्पत्ति सखिन् शब्द से भी हो सकती है। सखिन का अर्थ होता है साथ-साथ रहने वाली तथा समान भाव से कथन करने वाली। सखी के द्वारा ही ईश्वर का मिलन संभव है।

(१) सत्य कहहु पदमावती सखी परी सब खोज ।
पद्मावत (मूल और संजीवनी टीका;
डा० वासुदेव शरण पृ० ३८८, ३८९)

(२) बोली सबद सहेली कान लाग गहि माथ
गोरख नाथ ठाढ़ भा उड़ तै चेला नाथ
(गोरख वाणी, पृ० ३५४)

साधना के क्षेत्र में तुलसी भी चतुर या सुजान सखी का होना आवश्यक मानते हैं। संत मीता के अनुसार—

(अ) 'सखी सखी की गति जानै,

(ब) मीता तो गावै सखिन के भेवा भेदु कहावै भेदिया,

(स) 'मीता सैन सुजान सखी की, सखी होय सो जानै''

(द) 'मीता साखी सो सही जिन्हें मिला करतार'

इस प्रकार बहुत सम्भव है, 'साखी' शब्द इसी सखी से निर्गमित हुआ हो क्योंकि साधना के लिये जिस अंतरगता की आवश्यकता होती है उसमें सख्य या सखी कोटि का साधक ही मर्म भेदन जानता है।

(३) साखी शब्द पावस ऋतु में गाये जाने वाले साखी नामक लोक गीत से निर्गत हो सकता है। सावन में पावस ऋतु के आने पर सखियों द्वारा हिंडोले झूलते समय लोक शैली में साखियाँ गाई जाती हैं। इन साखियों में रस और सेजरी, प्रेम और विरह जैसी मार्मिक अनुभूतिओं को समवेत स्वर में सखियों के द्वारा गाया जाता है। इन्हे लोक जीवन में साखी कहा जाता है। अपने कथन के प्रमाण में मैं सन्त मीता साहब की एक पंक्ति रख रहा हूँ—

"बिन पिय कौन सिंगार सखी री; बिन बरखा की साखी।"

अर्थात् बरसात के बिना साखी गाने का क्या प्रयोजन। रस वृष्टि के बिना साखी का क्या औचित्य। इस पद से यह स्पष्ट ध्वनित होता है कि साखी पावस ऋतु में गाये जाने वाले लोक गीत की एक विधा विशेष है।

(४) साखी की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में आचार्य पं० दीन दयाल दीक्षित का यह मत भी उल्लेखनीय है कि साखी शब्द सख्य से निर्गत हुआ है तथा इन साखियों का सूत्रपात श्री मद् भागवत से प्राप्त होता है। सख्य भाव की साधना श्रीमद्भागवत की उपासना की एक मुख्य प्रविधि है, जिसका आशय है, ईश्वर में समान भाव से स्थित होकर कहा गया आनुभूतिक सत्य। संत मीता के अनुसार—

'संत की महिमा संतुइ जानै, हरि जिव महिमा गाई।
न पतिआई गीता गाई सुखदेव साखि बताई।''

आचार्य प्रवर ने अपने मत की स्थापना में मीता साहब की 'सुखदेव साखि बताई' को अर्थात् भागवत के सुकदेव द्वारा साखियों का चलन प्रारम्भ हुआ—भी प्रमाण के रूप में रखा है।

साखियाँ प्रायः निर्गुण पन्थ की उपलब्धि मानी जाती हैं। यदि भागवत को उनका मूल उद्‌गम मान लिया जाय तो साखियों का सम्बन्ध सख्य से होने के कारण प्रेमाभक्ति के अधिक निकट बैठता है, जो उचित प्रतीत होता है, मीता के ही अनुसार—

(अ) 'ब्रह्म भेद ना पाइया जौ ना हरि के दास
कही सही तिनकी ह्वै जो रहते हैं पास।

(ब) मीता साखी सो सही जिन्हे मिला करतार।

मीता ने पदों को ही सबद (शब्द) संज्ञा प्रदान की है। कबीर के पूर्ववर्ती अथवा समसामयिक कवियों में से बौद्ध-सिद्धों की गेय रचनाओं को 'चर्यापद' नाम दिया गया है। जयदेव, विद्यापति, गोरखनाथ, नामदेव, रैदास, तुलसी, सूर, कबीर, चंददास सभी ने गेय पदों को 'पद' की संज्ञा दी है। मीता ने भी विविधि रागों के अन्तर्गत पदों की रचनाएँ की हैं। पदों के लिए मीता ने शब्द का भी प्रयोग किया है।

मीता की विरोधमयी वाणी में 'आग लगे दह भीतर जरै अकाश' से आकाश के जलने तथा दह के भीतर आग लगने की उलटवासी का प्रयोग पाया जाता है। दह के भीतर आकाश का अर्थ है कमल रूपी वेश्म के भीतर सूक्ष्म आकाश। यह आकाश, सूक्ष्म हृदय के भीतर का आकाश है। इस आकाश के जलने का अर्थ है सूक्ष्म आकाश का नष्ट होना। छान्दोग्योपनिषद् में दहर विद्या का उल्लेख पाया जाता है तथा शरीर को ब्रह्मपुर कहा गया है। शरीर में एक ऐसा वेश्म (निलय) है जो कि सूक्ष्म दह कहा जाता है। दहर को ही मीता ने दह कहा है। दह से मीता का आशय हृदय कुण्ड से है। इस हृदय कुण्ड में ब्रह्माग्नि के प्रज्वलित होने से आकाश (सूक्ष्म आकाश) के जलने का संकेत किया गया है। वस्तुतः हृदयस्थ अन्तर्रात्मा में अग्नि प्रज्ज्वलन से ही सूक्ष्म ब्रह्म की उपासना सम्भव है। आकाश के नष्ट होने का संकेत चन्ददास ने भी 'अमर न रहत अकाश, देख उर ज्ञान दीप रच' कह कर व्यक्त किया है। मीता ने इसी उपासना की ओर अपना लक्ष्य व्यक्त किया है।

उलटवासी—उलटवासी शब्द की उत्पत्ति उल्टावंशी, उल्टावास, उल्टबाँ सी आदि बताई गई हैं, जो भ्रामक प्रतीत होती है। उलटवासियों को सिद्धो ने सन्ध्याचर्चा, नाथों ने उल्टी. चर्चा तथा कबीर ने उलटवासी कहा है। मीता ने 'उलटि बूझै सो सन्त' कहकर इसे 'उलटि' भी कहा है।

उलटवासी, शब्द को मैं उलट स्वाँस से निर्गत हुआ मानता हूँ। निर्गुण साधना में प्राणायाम तथा योगिक क्रियाओं के अन्तर्गत स्वाँस को उलटा चढ़ाना पड़ता है। योगिक क्रियाओं को लक्ष्य करके ही उलटवासियाँ लिखी गयी होगी। 'उलट स्वाँस' का 'ऊलट वास' होना नितान्त स्वाभाविक है। प्रथम 'उलट' के संयुक्त अक्षर उच्चारण सौकर्य से 'ल' होकर उलट के रूप में तथा स्वाँस' का संयुक्ताक्षर 'स' का ह्रास होने से 'वास' बचता है। इस प्रकार 'उलट वास' शब्द ही उलटवासी का मूल स्रोत प्रतीत होता है। सन्तों ने उलटवासियों में योगिक एवं साधनात्मक अनुभूतियों को ही अभिव्यक्ति दी है।

प्रतीक चेतना की परतों को चीरते हुये जीवन के आधार भूत सत्य के निकट ले जाते हैं। चाक्षुष बिम्ब मूर्तन से अमूर्तन की ओर चलने वाली मानसिक प्रक्रिया के सहचारी बन जाते हैं।

तथा काव्यात्मक अभिव्यक्ति अर्थों को रसोन्मीलित करती है। उदाहरण के लिये एक उलटवासी देखें —

'बिना शीश का मिरग चरै फुलवाइयाँ।'

अभिधेयार्थ में असंगति के द्वारा कैसा अद्भुत संकेत है। शीश वाला मृग फुलवाई को चरे तो असंगति नहीं है, किन्तु बिना शीशवाला मृग फुलवाई को कैसे चरेगा ? प्रतीक के द्वारा कवि यह कहना चाहता है कि शीश उतार देने पर अर्थात् अहंकार शून्य होने पर इन्द्रियों की उत्फुल्ल फुलवारी (दृश्य जगत का समस्त-सौन्दर्य) आस्वाद्य का विषय हो सकता है। 'चरै' शब्द कितनी सटीक व्यंजना देता है। गति अर्थ में चर धातु गमन, भक्षण, आस्वाद्य आदि भावों को मूर्तित करता है। इसी प्रकार की एक दूसरी उलटवासी का गुणात्मक आनन्द लें। पनिहारिन लेजुरी के बिना पानी के लिये जाती है, कुवाँ दूर है, मुख में धूल पड़ने की ही सम्भावना है——

लेझूरी नहीं चली पनियै अरी कुंअना है बड़ी दूर।
पनिया हाँथ न आइहैं अरी मुख माँ परिहैं धूर॥

प्रतीक के द्वारा सुरति के प्रत्यंगमुखी होने पर कुंडलिनी का जागरण होता है और वह कुंडलिनी षट चक्रों का भेदन करती हुयी सहस्रसार तक पहुँचती है जो कि मस्तिष्क के ऊपर स्थिति है। वहाँ पर वह अमृत रस का पान करती है। मस्तिष्क एक औंधे कुँवे के समान है। इसका संकेत उक्त वरवै में कवि ने जिस संकेत शक्ति के साथ किया है, वह साधना के सत्य को रसास्वाद का विषय बनाती है। रस्सी के बिना पानी भरने का उपक्रम वर्णित है, किन्तु इसका व्यंग्य है सुरति के बिना सहस्रसार का अमृत न पी पाना। इसी प्रकार का एक दूसरा साधनात्मक मनो जगत का चित्र देखें——

''मिल ले सखिन का नागरि अरी कुँअना भरि ले पानी।
लेझुरी ले औ गगरी अरी ससुरे की पहचानी।''

पनघट पर जाने वाली पनिहारिन अपनी रस्सी और गगरी दोनों को पहिचानती है। लेजुरी सुरति है और घट प्राण कोष है, कुँआ सहस्रसार चक्र है और पनिहारिन जीवात्मा है। ससुराल की पहचान से कवि का आशय यह है कि यह पनिहारिन कुँआरी नहीं है, सुहागिन है। प्रिय के सामीप्य का लाभ प्राप्त कर चुकी है। इस प्रकार अटपटी तथा विचित्र प्रतीत होने वाली वाणी में असीम को सीमा में बाँधने का प्रयत्न परिलक्षित होता है। एक अन्य उलटवासी कबीर परम्परा के प्रतीकार्थों को लेकर लिखी गई है—

''सखी एक देखा अजब तमाशा, अगम पंथ जब ताका।
बिन बादर बहु दामिन दमकै, बिन बरषा सर बाढ़ा॥
बरति अगिन पर साखा बाढ़ो, बिन बारी फल त्यागा।
चाखनहारा बिनु शिर देखा, चरन कमल अभिलाषा॥
धरती बरखै अम्मर भीजै, मछरी चढ़ै अकाशा।
उमड़ा ससा सिंघु का मारा मूस बिलारी त्रासा॥
वेद कितेब नहीं यह लिखिहैं या अनभै परगासा।
मीता दीख परम पद पाया होय संतन का दासा॥

उलटवासियों में रीतिकालीन (युगीन) चित्रों का समावेश मौलिक है—

"वकुला बैठा पान चबाता चील्ह लीन्हे पिकदानी।"

मीता ने रहीम की परम्परा में 'वरवै की भी रचना की है। उनके वरवै रीति की श्रृंगारिक परंपरा को भक्ति के विलास तक ले चलने वाले हैं। उच्चकोटि की अध्यात्मिक चेतना लौकिक श्रृंगार के माध्यम से रस की अपूर्व सृष्टि करती है।

'रेखता' की रचना इसी काल में प्रारम्भ हुयी। इस दृष्टि से उनके द्वारा रेखता का प्रयोग इस काव्य रूप के विकास में ऐतिहासिक महत्व का है।

अभिव्यंजना कौशल

अभिव्यक्ति कौशल से मीता कबीर के भावों को भिन्न रूपों में प्रस्तुत करते हैं। जबकि अर्थ और प्रभाव में वे कबीर के ही संस्करण प्रतीत होते हैं। कबीर के भाव सादृश्य को अपने मौलिक अभिव्यक्ति कौशल से भिन्न शब्द चित्रों में प्रस्तुत करते हैं तथा अनेक स्थानों पर कबीर के भावों को अपनी शैली के माध्यम से विस्तार प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए कबीर प्रेम का आदर्श जौहर करने वाली सती तथा सूरमा के त्याग से प्रदान करते हैं। किन्तु मीता इसी भाव को विस्तार देते हुए कहते हैं कि सती के जौहर में जो दाहकता है वह एक क्षण की पीड़ा है। किन्तु विरह की दाहकता सम्पूर्ण जीवन भर, पल-पल विरही को जलाती है। सती के जौहर से प्रेम का जौहर कहीं अधिक मूल्यवान है क्योंकि विरह के सातत्य में पीड़ा का घनत्व तथा भावों का उत्कर्ष अधिक सान्द्र होता है। सती आग में प्रवेश करके कुछ ही क्षणों में प्राणों का उत्सर्ग कर देती है किन्तु विरही आग के समुन्दर में तैर कर पार जाता है।

बिम्ब-विधान

बिम्ब रचना के क्षेत्र में मीता ने दिक् और काल के अनन्त व्यापारों तथा यौवन के अनस्थिर एवं काल के गतिमान व परिवर्तनशील सत्य को रेखांकित किया है। यौवन की अनिस्थिरता को ऋतु के परिवर्धमान चित्रों से व्यक्त किया है।

'सावन देस रे हरियरा अरी जेठवै धूरि उड़ाय।
ऐसे जोवन थिर नहीं अरी ले प्रीतम अंग लाय॥'

सावन की हरियाली और जेठ की उड़ती हुयी धूल लोक जीवन में दृश्य का व्यापार बनती है, इसी परिचित सत्य को दर्शन के उपयोग के लिए चुना गया है।

इसी प्रकार एक दूसरा बिम्ब मदन को जला कर यौवन की कसावट का बिम्ब है।

'जागति जागति कसि गये अरे जोवन मदन जराय।
अंगिया के बंध टूटे अरि मितवा छतिया लाय'

उक्त वर्णन में जग-जग कर काम को नष्ट करने एवं लज्जा के बंधनों को तोड़ कर मिताई करने का भाव बिम्ब विधान के कारण ही सजीव हो उठा है। 'कसि गये' एवं 'बंध टूटे' ऐसे क्रियात्मक चित्र हैं, जिनसे सम्पूर्ण प्रेम का व्यापार मूर्तिमन्त हो उठता है। अमूर्त भावों के लिये मूर्त प्रसंगों का सादृश्य भी बिम्ब के निर्माण में उपकरण का कार्य करते हैं। विष वल्लरियों के लिये ननदिया कहना इसी प्रकर का उदाहरण है--

'विखु की वेलि ननदिया काजर देय ।

अलंकार मीता का काव्यादर्श नहीं है किन्तु उनके काव्य में प्रयुक्त श्लेष को देख कर यह कहा जा सकता है कि श्लिष्ट प्रयोगों के प्रति मीता सतर्क हैं। ऐसे प्रयोग कूट पदों, उलट वासियों के अतिरिक्त साखियों में भी पाये जाते हैं। एक इसी प्रकार का प्रयोग दृष्टव्य है—

'लूटत मोहि बाधिनी नैन चलाय
मितवा चितै चरन हरि रहा बचाय ।'

उक्त साखी में 'बाधिनी' और 'हरि' श्लेष पद है बाघिनी बाध की पत्नी तथा व्याघात डालने वाली माया के रूप में तथा हरि ईश्वर व सिंह के रूप में श्लिष्ट पद है। रूपकों का ठाठ देखना हो तो मीता के रूपक जिनमें सुरति साधना तथा युद्ध के रूपक दिये गये हैं, वे अपनी ओजस्विता के लिये अलग पहचान बनाते हैं। धोबी, जुलाहे, वारी, नाउन, काछिनी आदि के माध्यम से अनेक रूपकों की रचना में सफलता प्राप्त हुयी है। तात्विक साधना का एक रूपक देखे—

अब मै तत्तु मते बौराना काह करौं लै ग्याना
यह ततु केरी कीन मटुकिया जोगु जुगुति दधि आना ।
धीरज खम्भ किया जब निहचल कै पाँचों का डाँड़ा ।
तीनि गुनन की किइ कठिनियाँ रवि ससि मथि ततु आना ।
करै पचीसों सेवा ठाढ़े जब मनु सो मनु माना ।
गरजै गगन होय कौतोहल संतन का वरदाना ।
छाड़ी छाछु मिला जब माखनु भा अलमस्त दिवाना ।
कहि मीता कोइ आदि सनीपी या रसु पियत अघाना ।

ओज पूर्ण बिम्बों को प्रभाव पूर्ण बनाने में मीता कबीर की अपेक्षा अधिक सफल प्रतीत होते हैं। कविता के क्षेत्र में यदि कथन के प्रभाव को ही निकष बनाया जाय तो शास्त्रीय कवियों की अपेक्षा मीता अधिक प्रभावी कवि प्रतीत होते हैं। शास्त्रीय कविता एक सीमित वर्ग के पाठकों के लिये हितकारी होती है किन्तु सन्तों की यह जन वाणी किसी विशेष वर्ग तक सीमित न रहकर जन-सामान्य के लिये ग्राह्य बन जाती है। सन्त मीता का काव्य भी जन काव्य की सम्भावनाओं से युक्त है।

अभिसार की पारम्परिक शैली में एक प्रेमिका का प्रिय से मिलन जिस रूपक के द्वारा व्यक्त किया गया है, उसमें रीति काल की एक मानिनी नायिका की मुद्रा भी है, तथा दूती प्रसंग भी। विरहिणी और विरही के प्रेम सन्देश की परम्परागत शैली के माध्यम से सम्पूर्ण समर्पण की भाव भूमि को जिस भाषा एवं भाव सम्पदा के साथ व्यक्त किया गया है, उसमें एक रससिद्ध कवि की आत्मा का उल्लास मुखरित होता है।

''पिया विन जोबनि जात ति[illegible]रो'

मीता के काव्य में बिम्ब विधान की एक प्रमुख विशेषता सजीवता एवं ग्राम्यता है। सम्पूर्ण चित्र आंचलिकता से युक्त होने के कारण सीधे चाक्षुष बिम्ब की रचना में सफल सिद्ध होता है।

'काल कठिन तब मारन लगिहै
पौली जैसे सागा'

काल के द्वारा मानव को ग्रास बनाने की इतनी सटीक व्यञ्जना पौली जैसे सागा से की गयी है। साग को पौलने की क्रिया एक पूरा आंचलिक बिम्ब जाग्रत करती है। इसी मूर्त बिम्ब से अमूर्त काल का बोध कराया गया है। इसी प्रकार का एक दूसरा दार्शनिक बिम्ब भी अपनी सजीवता में प्रभावकारी सिद्ध होता है।

जैसे चूहा धरै बिलारी
वाका कुतर थुकर के खाई

प्रस्तुत बिम्ब की सार्थकता मृत्युमार्जा द्वारा चूहे को कुतर-कुतर कर खाने के चाक्षुष बिम्ब पर आधारित है। इसी प्रकार कुमिता वृत्ति वाले व्यक्तियों के लिये विवेक अत्यन्त कठिन होता है इसका बोध सामान्य खाद्य वस्तुओं से प्रकट किया गया है।

'लहसुन खाँय कपूर बताई
ऐसे के निकटे न जाई'

टेसू का फूल किंशुक (सुये) के आकार का होता है। देखनेवालो का यह भ्रम होता है कि क्या यह शुक (शुवा) है—कि शुकः (क्या यह शुक है ?) संभवतः शुक के आकार का होने के कारण ही टेसू का नाम किंशुक पड़ा होगा।

सांसारिक आशक्ति प्रेम के बिना सारहीन होती है। सार्थक जीवन के विपरीत जीने का एक दृश्य बिम्ब शुक (किंशुक) के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

'सेमर सुअना सेइ उड़ाना
छिउले बैठ गयऊ
कहि मीता पाछे पछिताना
ऐसे जगत भयउ'।

सुए के द्वारा सेमर के पेड़ को छोड़ कर छिउल में बैठना और बाद में निःसार समझ कर प्रायश्चित करना, दार्शनिक महत्त्व का प्रसंग है। बहुत सम्भव है छिउल का रंग किंसुक से मिलता हो तथा शुक के छिउल में बैठने के कारण ही इसे किंशुक कहा जाता हो

वे काव्य के प्रभाव को विशिष्ट एवं सजीव चित्रों से उत्कर्ष प्रदान करते हैं। विरह की पीत वैवर्ण्य दशा को सूखे हुये टटेर (ज्वार के सूखे डंठल) के आंचलिक बिम्ब से व्यक्त करते हैं व्यवसाय के चित्रों से जीवन के हानि लाभ को व्यक्त किया गया है। इस प्रकार लोक जीवन के आंचलिक बिम्बों से काव्य को विस्तार प्रदान करते हैं तथा कथ्य को उत्कर्ष देते हैं।

भाषा की आंचलिकता और बिम्बविधायिनी शक्ति चित्र को प्रभाव पूर्ण बनाती है। आंचलिक क्रियाओं से बिम्ब मौलिक बन पड़ता है—

तीन पाँच का कुटना होय
पतरी गाँठत दिनु डारै खोय
चालै चलनी ठपकै सूप
छिलरा बसै ननद का पूत।

मुहावरे तथा लोकोक्तियों ने अभिव्यंजना को पैनापन प्रदान किया है। ये मुहावरे परम्परा एवं नवीन क्षेत्रों से ग्रहीत किये गये हैं। जो इस प्रकार हैं

(अ) चलनी दुहि दूधै चहै (चलनी में दूध दुहाना)

(ब) कान कटैहों (कान कटाना)

(स) चूल्हे लाई दे (चूल्हें में झोंकना)

(द) कागदु केरी नाउ चढ़े हैं (कागज की नाव पर चढ़ना)

(य) पाथर बोझि बनाई।

छन्द—छन्द और कवित्व मीता के काव्य का अभीष्ट नहीं है। 'का कवित्त किये छन्दा' से इसी उदासीनता का संकेत किया गया है। किन्तु उनके संत काव्य में जिन छन्दों का प्रयोग किया गया है, उनमें दोहा, (१३, ११) सार (१६, १२), ताटंक (१६, १४), चौपाई (१६), अरिल्ल (१६ अन्त में भगण) बीर या आल्हा (१६, १५) दिग्पाल (१६, १२) आदि की प्रमुखता है। भोजपुरी के छन्द लोकशैली के प्रभाव को व्यक्त करते हैं।

छंदों की रचना में ध्वानि तथा पाद पूरण के लिए तुंकात से भिन्न शब्दों का प्रयोग किया गया है। छंदों में इस प्रकार की विषमता का कारण काव्य में तुकांत के विकल्प में विचार की स्पष्टता को लाना ही रहा है।

पदों में सवैया और कवित्त का प्रयोग १८वीं शताब्दी में चंददास के पदों में पाया जाता है। इस परम्परा का निर्वाह संत मीता ने भी किया है, उन्होंने 'पद' शैली के अन्तर्गत सवैया और कवित्त का प्रयोग करके अपने समकालीन काव्य-शिल्प के प्रति सतर्कता का परिचय दिया है, साथ ही पद परंपरा को छंद की दृष्टि से विकास भी प्रदान किया है।

भाषा

मीता की जन्मभूमि फतूहाबाद (खजुहा) तथा उनकी पैतृक भूमि कुराँई (कोराईं) दोनों फतेहपुर जनपद के अंतंगत स्थित हैं और भाषा की दृष्टि से ये अवधी के अंतंगत आते हैं। बुंदेल खंड की भाषा तो अवधी है ही इधर फतेहपुर और बाँदा तक अवधी चली गई है।[1] शुक्ल जी ने फतेहपुर जनपद को अवधी क्षेत्र के अंतंगत रखा है। मीता ने अपने को पूरबिया कहा है। पूरबिया आदि-पुरुष के समीपी होने के साथ-साथ पूर्वी भाषा के प्रयोग की ओर संकेत करता है। उन्होंने भी कबीर की भाँति अपनी बोली को पूर्वी कहा है। वस्तुतः मीता पूर्वी अवधी की आँचलिक बोली की शब्दावली को प्रयुक्त करते हैं।

मीता के साहित्य में पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों अवधी के रूप मिलते हैं। ब्रज, भोजपुरी, पंजाबी, राजस्थानी आदि के शब्द संत परम्परा से प्राप्त हुए प्रतीत होते हैं। मीता की शब्दावली को कबीर के भाषा एवं शैली तत्वों ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। गोरखनाथ, भर्तृहरि, जायसी सूर, दादू, नानक, जनगोपाल, चंद आदि संतों के भाषा विषयक तत्त्वों की प्रतिच्छाया मिलती है। किंतु मीता ने इसे फतेहपुर की आंचलिक बोली के संस्कारों से युक्त करके इस प्रकार प्रस्तुत

१. आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल—प्रतिनिधि निबंध, पृष्ठ ६५

किया है कि वह विभिन्न भाषा संस्कारों को लेकर भी—अंतर्वेदी[1] का एक स्वतंत्र मानक प्रस्तुत करती है।

कबीर की भाषा में जो सधुक्कड़ी प्रभाव पड़ा वह एक सीमा तक मीता की भाषा में भी प्राप्त होता है। मीता का काव्य अवधी भाषा में लिखा गया है परन्तु उनकी अवधी में तुलसी और रहीम जैसा संस्कारित रूप नहीं प्राप्त होता। मीता की अवधी आँचलिक प्रभाव से युक्त है। मीता भाव और भाषा दोनों दृष्टि से कबीर के साहित्य से अनुप्राणित थे और उनका अनुगमन इस क्षेत्र में सफलता के साथ किया है। तुकान्त की असमानता, पद भंग, न्यून पदत्व, अधिक पदत्व के प्रयोग मीता के काव्य में यत्र-तत्र बिखरे पड़े है, जिनका कारण मीता की काव्य विषयक उदासीनता प्रतीत होती है।

मीता की भाषा अपनी भावाभिव्यक्ति में अत्यन्त समर्थ है। कबीर की भाषा अनेक हाथों में पड़ कर एवं आंचलिकता के प्रभाव से अपना मूल स्वरूप खो चुकी है परन्तु मीता की भाषा अपने मूल रूप में प्राप्त होती है।

विचार के क्षेत्र में स्पष्टता मीता की काव्य भाषा का शीर्षस्थ गुण है। तर्कों को प्रस्तुत करने में विचारों की स्पष्टता है। उनकी भाषा की सामर्थ्य उनके पैनापन को स्पष्ट करती हैं। उनके दृष्टान्त एवं उदाहरण उनके आशय को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। उनके आकाट्य तर्क उनके सिद्धान्तों की भली-भाँति पैरवी करते हैं।

शब्दों का प्रयोग सतर्क होकर इस प्रकार किया गया है कि शब्दों में निहित क्रियाओं से चित्र मुखर हो जाते है।

शब्द-संरचना

मीता की शब्द संरचना में संज्ञा के व्युत्पन्न, अव्युत्पन्न दोनों रूप पाये जाते हैं। शब्द व्यक्त और अव्यक्त, ध्वन्यात्मक और वर्णनात्मक सभी प्रकार के हैं। संज्ञा शब्दों के अन्तर्गत अकरान्त, आकरान्त, इकारान्त, उकारान्त आदि पाये जाते हैं। संज्ञा शब्दों के कारकीय रूप विभक्तियों एवं परसर्ग द्वारा निष्पन्न हुए हैं।

उनकी अधिकांश शब्दावली अवधो के आंचलिक प्रयोगों से युक्त है किन्तु उसमें संस्कृत के तदभव रूप, अरबी फारसी के प्रचलित रूप, राजस्थानी, पंजाबी, भोजपुरी के शब्द विभिन्न परम्पराओं से प्राप्त हुए हैं।

प्रचलित अरबी, फारसी के तद्भव रूप भी पाये जाते हैं—मुरसिद (मुरशिद), मासूक (माशूक); अदबु (अदब) हुरमुद (हुरमत) उजुक (रिज़क) कुफ़ुर (कुफ़्र) जेरि (जेर)।

अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग अत्यन्त सतर्कता के साथ किया गया जान पड़ता है।

---

१. अंतर्वेदी को अवधी से पृथक भाषा के रूप में मान्यता दी जा सकती है। अंतर्वेदी की भाषा प्रकृति के सम्बन्ध में फतेहपुर से प्रकाशित होने वाले 'अन्तर्वेद' में डा० शिव गोपाल मिश्र तथा ओम् प्रकाश रावत के लेख तथा 'समवाय' (सं०—डा० ओम् प्रकाश अवस्थी) में प्रकाशित अखिलेश चन्द्र शुक्ल का लेख द्रष्टव्य है।

उदाहरण के लिए एक पद में निगराँ, शब्द का प्रयोग जो चौकसी (निगरानी) अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, सन्दर्भ को सजीव बनाता है तथा अर्थ में उत्कर्ष प्रदान करता है।

पंजाबी शब्दों के प्रयोग भी सटीक हैं। इन शब्दों में गल्ल, बल्ल, रिल्स, माटीदा आदि हैं। शब्द प्रयोग की सार्थकता देखें—'माटीदा महल' मिट्टी में मिल जाने वाले शरीर के लिए 'माटीदा महल' अर्थ, ध्वनि, रस के गुणों से गुँजित हैं और अभिव्यक्ति की सहजता को सुरक्षित रखता है तथा जन भाषा के चलन में प्रान्तीय शब्दावली 'माटीदा' घुल मिल कर एकाकार हो जाती है—पंजाबी कारक 'दा' का प्रयोग भी सुचिंतित है।

ध्वनि-गुण—ध्वनि गुण की दृष्टि से मीता का काव्य बलाघात को महत्त्व देने वाली भाषाओं की भाँति स्वराघात प्रधान है। मीता द्वारा प्रयुक्त शब्दों व पदों में ध्वनि अर्थात् स्वर-व्यंजन सम्बन्धी निम्नलिखित विशेषतायें दृष्टव्य हैं—

स्वर—

औ—ओ यौवन—जोवन

अ—इ अभ्यन्तर—अभिअन्तर

घोषीकरण के कुछ विशिष्ट उदाहरण मीता के काव्य में मिलते हैं,

अनेक—अनेग, चातक—चातग

ह्स्वीकरण के उदाहरण निम्नलिखित हैं—अपूर्व—अपूरब, काया—कया। संयुक्त रेफ के रूपान्तरण भी मीता के काव्य में मिलते हैं—धर्म—ध्रम्म, मर्यादा—म्रजाद।

विशिष्ट व्यंजनविकार इस प्रकार है—

य का र,—वियोग (विरोग)

मीता काव्य में 'वियोग' की 'विरोग' वर्तनी पायी जाती है। 'विरोग' शब्द में वि-उपसर्ग है और 'रोग' में 'योग' की य श्रुति का 'र' में विलय हुआ है, जो चिंत्य है।

द्वित्व व्यंजन वाले प्रयोग मीता के काव्य में मिलते हैं उदाहरण के लिए—सुज्जन, दुज्जन। 'सुज्जन' और 'दुज्जन' सन्धि काल के 'सज्जण' और 'दुज्जण' के रूपों को सुरक्षित रखने वाले प्रयोग है। ढोला-मारूरा दूहा, में इन शब्दों का मूल रूप द्रष्टव्य है।

ऋ का रि में परिवर्तन भी मीता में पाया जाता है। कुछ अन्य ध्वनि परिवर्तन इस प्रकार है—

व्यंजन—श,ष, स के लिये स का प्रयोग। ऋ-रि गृही > गिरही, तृष्णा > टिसुना, कृषि > किरखी। जन्म > जनम > जलम, यौवन > योवन > जोवन > आदि। य—ज जोग (योग), जुगति (युक्ति) निर्वाण > निरवान, लकड़ी > नकरी, फिक्र > फिकिर जिक्र > जिकिर, इन्साफ > निसाफ, किताब > कितेब, खुशहाल > खुशाल, गुनहगार > गुनागार, नमाज > नेवाज, कलाम > कलमा अंकुश > आंगुस, प्रियतम > प्रीतम, अलक्ष > अलख।

कारक विचार

कर्ता—ने,

कर्म—(को) ऐ, क (का), कहँ, कहुँ, कौं, कों

करण— (से,द्वारा) से, ते, लाह, लए, लगि

सम्प्रदान – (को, के लिए) (का) की, के, लिए

अपादान – (से), ते, से, सुतो, तों

सम्बन्ध—(का, की, के) र, क्यार, क्या का, केरा, केरी, केरे, के, की, माँझ

अधिकरण—(में, पर) मैं (माँ) पर (पै) महँ, मँहि

संबोधन—ओ, हो, रे, री

जहाँ तक लिंग-प्रयोग का संबन्ध है, मीता की भाषा में लिंग विभाजन की व्यवस्था शब्द और अर्थ के अनुसार नहीं पायी जाती।

एक वचन से वहुबचन बनाने के लिए 'अन', 'इन' प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है—जैसे विरला–बिरलन, ठगी–ठग अन, ठगियन, गुडिया–गुडियन। बहुवचन के लिए सर्व के किसी रूप को भी जोड़कर प्रयोग मिलते हैं। सबै, सब, के प्रयोग मीता की रचनाओं में प्राप्त होते हैं। ते शब्द वैसे भी बहुवचन है किन्तु अधिक स्पष्टता के लिए उसके साथ 'सब' शब्द को भी जोड़ दिया गया है।

'काटि कूट साखी करै ते सब डारी काट।'

बहुत्व का बोध कराने के लिए बहु, बहुते, लोग, जन आदि समूहवाचक शब्दों का प्रयोग किया गया है।

मीता के काव्य में प्राप्त सर्वनामों का विवरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार है :

व्यक्तिवाचक सर्वनाम—

उत्तम पुरुष—मैं, मो, मोहिं, मेरी, मोरी, हमें, हम, हमरे, हमार, हमैं आपु आदि।

मध्यम पुरुष—तू, तुम, तै, तोहि, तोर, तोसों, तुझ, तेरो, तेरे, तेरी, तिहारे, तिहारी, तुम्हार आदि।

अन्य पुरुष—ताहि, तेहि, वै, उँई, ते, तिन, तिनके, तिनको, तिन्है, अवरे,

प्रश्नवाचक सर्वनाम—?

को, कौ, किस, का, काहि, कवन, कउन, काकौ, किनहिं, किनैं, किऊँ आदि।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम—

कोइ, कोय, काहू, काउर

निजवाचक सर्वनाम—

आप, अपनो, आपुनौ, अपुना, अपुनो आदि

आदरवाचक सर्वनाम—

आपु, रावरे, राउरो, जू, जि, जी आदि

सम्बन्ध वाचक सर्वनाम—

जो, जौ, जाको, जेहि, ज्यों, जासु, जिहि, जे-जे, जिनके, जिनको, सो, तासु, तासों, तिहि, तिनको, तिनै, तिन्है, ता, जे, यहु, हह आदि

सार्वनामिक विशेषण—

ऐसा, ऐसो, वैसा, वैसो, जैसा, जैसो, कैसा, कैसो, एतो, सरि, सम, सौं, सा, समान, बरोबर आदि

परस्पर वाचक सर्वनाम—आपुस

सर्वनामों में अवधी के पूरबी एवं पच्छिमी दोनों रूप पाये जाते हैं—पूरबी के ई, ऊ, से, तौन, ते, जे, जौन, को, कौन आदि रूप प्राप्त होते हैं, साथ ही पच्छिमी अवधी के सो, जो, कौन, वह आदि भी पाये जाते हैं। मीता ने पच्छिमी अवधी 'केर' का प्रयोग संबध कारक में किया है, किन्तु उसमें 'कै', 'कर' आदि रूप भी मिलते हैं। और का प्रयोग पूर्वी अवधी जैसा 'अउर', अउरे हुआ है, पच्छिमी हिन्दी के 'अपर, की भाँति नहीं।

क्रिया प्रयोग—

वर्तमान काल का बोध कराने के लिए मीतादास ने क्रिया की धातुओं में औ, औं, ऐ, ऐं, ई, त आदि प्रत्यय जोड़े हैं, जैसे पूजौ, चलै भरै, संवारै, सुधारैं, मानई, राजत,

भविष्यत काल का बोध कराने के लिए मीतादास ने ऐहैं, इवे, इहैं, इहौं, यहैं, ऊँ, ई आदि-प्रत्ययों का प्रयोग किया है, जैसे—अैहैं, गैहैं, टारउँ, नेवारऊँ, जइबे

पूर्वकालिक कृदंत बनाने के लिए भी उन्होंने कई तरह के प्रत्ययों का प्रयोग किया है। कहीं तो सीधे सीधे क्रिया को धातु में ही रखकर काम चलाया है, जैसे देखि—(देखकर) कहीं धातु में आय, ह, ऐ प्रत्यय जोड़ा गया है—यथा लिवाय, त्यागि, लै आदि।

पूर्णभूत की व्यंजना उन्होंने यउ, आई, हया, एउ, न्हीं, आये, ये आदि प्रत्ययों के माध्यम से की है, यथा—धायउ, आयउ, त्यागिया, जागिया, चले, चीन्हौं, लीहौं। क्रिया का आज्ञार्थकरूप बनाने के लिए जै, वउ, औ, ओ आदि विभिन्न प्रत्ययों का प्रयोग मीता द्वारा हुआ है। कीजै, लीजै, तजौ, मानों, हटकु, जागु, पहिर, चेति, पागु, छाँड,

आज्ञार्थक का बोध कराने के लिए कहीं-कहीं शुद्ध धातु ही रख दी गयी हैं यथा—सुन

इच्छार्थक बोध कराने वाला प्रत्यय ओऊँ, हैं यथा—बढ़ाऊँ, पाऊँ।

पूर्वी अवधी की क्रियाएँ जिनके अंत में 'ब' प्रयुक्त होता है, मीता में अधिकांश रूप में पायी जाती है—जैसे—आउब, जाब, करब, हँसब इत्यादि

'हो' धातु का भूतकालिक रूप ब्रज में 'हुतो, 'हतो' हो जाता है। मीता ने इसका प्रयोग हते, हतो, हुतो रूपों में किया है। भूतकालिक क्रियाओं में रह्यौं, जात्यों, गई, हती जैसे प्रयोग भी प्राप्त होते हैं।

जइबे अपने पिय संग परा सुदाँव

अवधी की आंचलिकता को भोजपुरी क्रियाओं ने एक विशिष्ट माधुर्य प्रदान किया है।

भाषा में भोजपुरी का प्रभाव भी परिलक्षित होता है किन्तु ऐसे पद अत्यल्प हैं—

रामु की दया हमै चहिला बन्धु जगत रिसेला

हमरा का करिला।
कबिरा का साथी भैला नमवा की टेकि रखिला
मिरवा का विषवा अंचै गइला
विरधा कपाली ऐला जसवा भगत गइला
धनि धनि हरि हरि होय रहिला।
मितवा सरन अइला सकल कलेस गइला
पनवा निछावरि करिला।''

उपर्युक्त पद में चहिला, रिसैला, करिला, भइला, रखिला, ऐसा, गइला, रहिग सभी भोजपुरी की क्रियाएँ हैं। विभिन्न बोलियों की शब्दावली संतों के काव्य को लोक जीवन के निकट लाने में सहायक सिद्ध होती रही हैं।

मीता ने अपने पूर्ववर्ती संत काव्य की शैलियों को अपनाते हुए लोक शैलियों को समनुक्रांत किया हैं। उनके पदों में जोगियों के लोक शैली में गाये जाने वाली टेकें भी मिलती हैं—

'निर्मल नाथ अल्लाह का मन भजिले प्यारे' गीत का टेक जोगिया शैली की धुन लिए हुए हैं।

अन्य लोक शैलियों में हिन्डोलना, बारहमासी, भँवरगीत, वसंत, सावन, लटका, कहरा, मंगल, खेलाति, दिनरी, बंगला, आरती, रेखता, मलार, कवित, गारी, धमारि, फागु, ठुमरी आदि प्रमुख हैं।

उनके पद विभिन्न राग-रागनियों में पाये जाते है। कुछ प्रमुख रागों के नामोल्लेख भी मीता साहब ने किया है। धनाश्री, विलावली, आसावरी, प्रभाती, भैरों, विहगर. धमारि आदि।

'ठुमरी तो गावै ठिवानी' लिखकर मीता ने यह संकेत किया है कि ठुमरी को ठेकों पर गाना चाहिये। इससे मीता के लोक संगीत की जानकारी भी पुष्ट होती है। उनके द्वारा लोक जीवन में फैली हुयी विभिन्न शैलियों को काव्य रूपों में स्वीकार किया जाना जहाँ एक ओर उनके द्वारा जन साहित्य को सम्बद्धित करने का प्रयत्न प्रतीत होता है, वहीं दूसरी ओर काव्य रूपों के विकास की चिंता भी व्यक्त करता है। शिल्प की प्रोन्नति की दृष्टि से संत काव्य में उन्हें विशिष्ट महत्व दिया जा सकता है।

सत्य को काव्य की सीमा में समेटना कठिन होता है। अन्तराल की उमड़ती धाराओं को छन्दों के तटों से बाँधना सम्भव नहीं होता अन्तर्भावना के द्रव्य को मनीषा निष्यन्दित नहीं कर पाती। भाषा और छन्द सन्तों की अटपटी वाणी को अभिव्यक्ति देने में प्रतिस्पर्धा करते हुए भी पिछड जाते हैं किन्तु उनकी वाणी धार्मिक और मानसिक जनक्रान्ति के आन्दोलन की सामर्थ्य से युक्त होने के कारण प्रसुप्त चेतना को दीप्त करती है। तम्बूरे की तान को जीवन का संगीत विकल करता है। वाणी को बार-बार आत्मसात करने के लिये प्राण व्याकुल हो उठते हैं।

मीता का काव्य सरलतम शब्दों में जीवन का सम्पूर्ण राग-विराग, जीवनोल्लास, रहस्य, अनुभूति, निगूढ़ सत्य से जीवन को ज्वलित एवम् अनुभवों से कृतार्थ करता है। प्रस्तुत से

अप्रस्तुत तत्वों की ओर ले चलने वाली मीरा की पदावली रूढ़ियों के शिला खंडों से टकराती हुयी चेतना के महासिन्धु में पर्यवसित होती है। उनकी वाणी में अर्थ का आलोक सार्वभौम सत्य का साक्ष्य प्रस्तुत करता है। वह काव्य और कल्पना के सामान्य क्षितिज का स्वप्न ही बनकर नहीं खो जाता—

ना कविया हम पंडिता चाकर हवैं हजूरी

मीता को समझना हो तो कबीर चाहिये, कबीर को समझना हो तो मीता चाहिये। 'मीता के मारग चले कबीर सरीखा होय,' का उद्घोष मात्र दर्पोक्ति नहीं है, साधना का ज्वलन्त सत्य है। क्रान्ति द्रष्टा ही तो क्रान्ति द्रष्टा को पहचान सकेगा। शीश कटाने वाला ही तो शीश विहूना की पीड़ा का सहधर्मी हो सकेगा। कबीर ओर मीता दोनों आत्म-द्रष्टा, क्रान्ति सृष्टा सन्त कवि हैं। दोनों ने परमात्मा से प्रीति की भाँवरे रचाई हैं। दोनों ने प्रेम के सार और पीड़ा के गहरे समुद्र को आत्ममंथन का विषय बनाया है। दोनों ही मानवीय अस्तित्व के लिये संघर्षरत रहे हैं। दोनों ही शूरमा, फक्कड़ और फकीर हैं, फिर भला मीता को कबीर के अतिरिक्त कौन पहचानेगा ? तभी तो मीता को विवश होकर यह कहना पड़ा— 'मीत-कबीरा एकु हैं कहिबे को हैं दोय'।

पलाशपत्र के आरक्त होने का आधार विरह की विदग्धता ही है। प्रिय के विरह में दग्ध होकर ही अनुराग की अरुणिम आभा फूटती है—

'ज्यों पलाश काला रंग कीन्है, पाछू लाली आई।'

मुक्ति स्वातन्त्र के प्रचेता मीता को न कोई चिन्ता है, न कोई स्वप्न। वे जगने में आनन्द का उत्सव मनाना चाहते हैं। चैतन्य में आनन्द मंगल का गायन करते हैं—

'आनन्द मंगल गाओ मोरी सजनी,
भा परभात बीत गई रजनी।'

रात्रि का घना अन्धकार नष्ट हो गया है, भोर की अरुणिम आभा विकीर्ण हो रही है। क्रान्ति के विजय का यह महोत्सव कैसा अद्भुत उल्लास लेकर आया है। मीता अपनी वाणी की गीता का अमृत प्रदान कर भले ही नश्वर देह से प्रयाण कर गये हों किन्तु अहंकार के नष्ट होने के बाद ज्ञान का जो मरण होता है, वही अमृतत्व की सृष्टि करता है—'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः' गीता का सत्य ही मीता का आत्मतत्व है। 'न हन्यते हन्य-माने शरीरे' ही मीता का प्रेरक मन्त्र है। मीता के क्रान्ति का आलोक दीप विराट की महाज्योति में अन्तर्लीन होकर महाप्रकाश का चिदंश हो जाता है। ज्योति से ज्योति की यह तदाकारता निर्वाण के इस आलोक दीप को सतत प्रकाशमान करती रहेगी—

"कुम्भ नीर मिला ज्यों सागर, को तारै को बोरई।
जोति सो जोति मिली जब आली को जारै को बारई।
कहि मीता जो मरै ज्ञान तै को मारै फिर मारई।"

———

संत मीता साहेब के मूल हस्तलेख (दोहावली) का एक पृष्ठ।

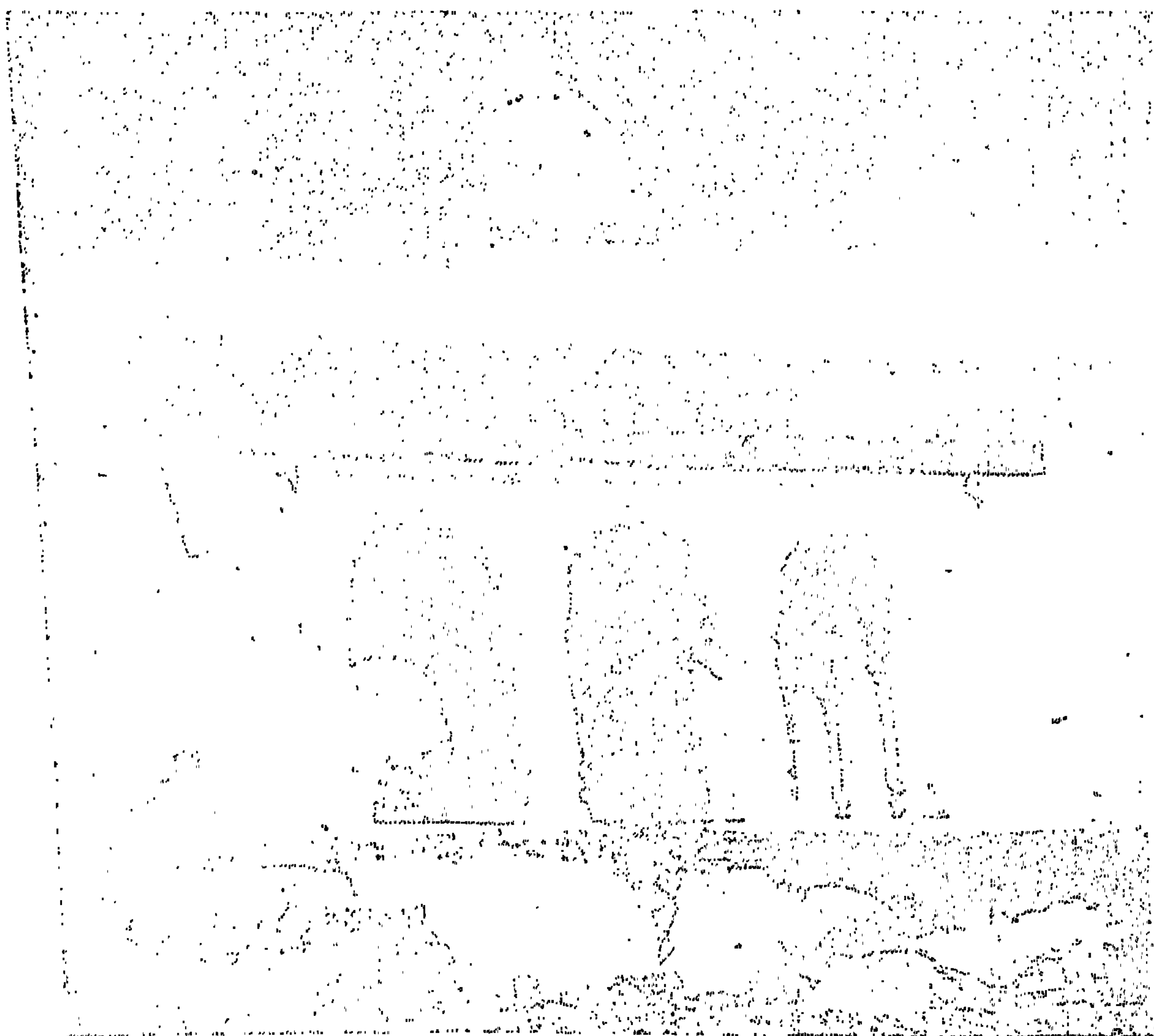
संत मीता साहेब के मूल हस्तलेख (सं० १९६०) का एक पृष्ठ।

संत मीता साहेब के ग्रंथ की पितंबर ओमर द्वारा प्रतिलिपित सं० १६१४ की प्रति का एक पृष्ठ ।

संत मीता साहेब के ग्रन्थ की अचल मुराई द्वारा प्रतिलिपित प्रति का एक पृष्ठ ।



डौंडियाखेर के तत्कालीन राजा एवं संत मीता साहेब के शिष्य, बाबू बंरीशाल द्वारा निर्मित पुरवा (उन्नाव) स्थित संत मीता साहेब की समाधिस्थली।



संत मीता साहेब की समाधिस्थली का पृष्ठ भाग।

साखी

बिनु करनी की कथनी बिनु गांसी ज्यों तीर । दूनो उर मां ना गड़ै कहि मीता सुन बीर ॥
ऊटक नाटक बहु किये मिलै न पिऊ का भेदु । झूठा झूठे मां फँसा करै करेजे छेदु ॥
दुनिया मां स्याबसि भई पिया के नाहीं ठौरू । ब्याहु भया ना बावरे का बाँधे भा मौरू ॥
यहाँ स्याबसी वहाँ छिया है कीन्हा कौन विचार । पिऊ बातें पूछै नहीं झूठ परा सिंगार ॥
हीरा परखै जौहरी और न जानै कोय । बंदा का बन्दा लखै जो वहि सरबरी होय ॥
जैसे नारि सराय की नहीं ठिकाना ठौर । ग्वों करनी बिनु कथनी बिनु पांवन ज्यों दौर ॥
स्याबसि स्याबसि खुसी मे जमु की फाँसि न टूटी । कौड़ी का धाये फिरै पूँजी गै सबु लूटी ॥
लेझुरी हाथु न आइया असुर पियासा जाए । संतन का चीन्हा नहीं फिर फिर गोता खाए ॥
डिम्भी से ग्वों बोलना ज्वों घसिलावे कीच । सुज्जन का परमोधिये ना राखी कुछु बीच ॥
पारिख आई हाथु में चोरु साहु लखि लीन । अब मीता भटकै नहीं मत पाया है दीन ॥
दरपन अन्ध दिखाइया दरस न देखा जाये । ग्वों भोंदू सो ज्ञान है सब्द अविरथा जाये ॥
विस्ती धूरि छपावई संतन उठवै धूरि । मीता पारिख यही है दूनौ की गति बीर ॥
हलुके का मीता तजे गरुआ लेइ उठाऐ । पूरो का पूरा करै लै अमरापुर जाऐ ॥
साखी सब्दी मीत की कीन्हा बड़ा विवेखु । बिनु तौली बहु कहि गये तिनते बाढ़ा धोखु ॥
निरगुन बानी तौनि है जहाँ न गुन व्यौहार । जैसे नकरी सारु में काचु रहै सो ख्वारु ॥
संगति कीजे संत की जिनका गृह मां बास । भेखु ठगैइया विमुख हैं बैइठु न इनके पास ॥
जो तू चाहै रामु का रागु द्वेष दोऊ त्यागु । मीता जगु सो का परी मारगु अपने लागु ॥
फूँस फांस मा छाय रहे हैं आगि लगे जरि जाई । अजर अमर घर मीता पाया विनसि न कबहूँ जाई ॥
पंडित नरकै लै चला मुक्ति सुनाय सुनाय । साँचु कहे मीता भा बैरी जानै हमरी बलाय ।
चाँद सुरज दोऊ ऐकु भे पंडित कहो विचार । जो ना सब्द विचारिहै तेहिका नरक दुआर ॥
माया मूसै पंडिता औ नरकै लै जाय । भेदु ना जानै भक्ति का अधिक देइ भरमाय ॥
पोथी थोथी डारि दे लेउ भक्ति का भाव । याते रामै पाइये झूठा और उपाव ॥
बकुला मीनै ध्यावई पंडित ध्यावै दामु । सुज्जन ध्यावै संत का जाते पावै रामु ॥
मनु मैला तनु ऊजरा जगु बहु बका फिरन्त । मीता हंसा को लखै जिनकी गति है संत ॥
पंडित नरकै लै चला मुक्ति सुनाय सुनाय । कथा बतावै दामु हित रामु मिला ना जाय ॥
काहू की नारी हरी कोऊ जूझा जाय । सो कहि भोन्दू का भए रामै देउ बताय ॥
करीं कमान चढ़ाइया मारे पाँच पठान । मीता बाजी जीतिया बाजे तबल निसान ॥
आसिक सो आसिक भया तब मिल गया मसूका । मीता तिन पर वारिया माफ़ कीई सबु चूका ॥
चोरन कै खरकत रहैं जन मीता के बान । छाती कूटैं सिर धुनैं खोई जाति दुकान ॥
मीता पहरू अगम का ठगिअन देइ बताय । साहन का जाहिर करै पाखंड देइ गिराय ॥
मीता पहरा देति हैं चोर लगावै गारी । चोर वैरु कै का करैं हरि जिऊ हैं रखिवारी ॥
लोक परा जमु धार मां कौनु निवेरै आय । संतन का चीन्है नहीं मीता देइ छड़ाय ॥
तीन देऊ सुर मुनि नल लूटे जमु कांड़े धरि कांड़ी । जो मीता संतन लखै होइ न कबहूँ भांड़ी ॥

आगि लगी दह भीतरि जरै अकास । कहै मीता जो भेद बतावै सो सतगुर हम दास ॥
आगि लगी भीतरि जरा तूलै आंचु न लागी । सकल कुटुम की नासि भै मीत पुरुष के भागी ॥
जो पाहन का पूजई सो पाहन होय जाय । घनु घसि कुल्हरा को करै जानै मीत बलाय ॥
काटि कूटि साखी करै जगै देइ भरमाय । तिनते हरिजिव दूरि हैं निहचै नरकै जाय ॥
जियत परम पदु पावई तिनका पदु ले गाई । काटि कूटि कै गाइहै तोहूं मैलु होइ जाई ॥
अवरे का परमोधई आपु नरक मां जाय । तिनका गुरू न कीजिये अच्छा जलमु नसाय ॥
भौ ते पार लगावई सो गुरू कै लै भाई । जिन्हैं मिलै हरि पाइये आवागवन मिटाई ॥
जमु द्वारे तोरे गुरू परे तोहि को लेइ छड़ाय । कहि मीता गुरू तौन करु जमु ते लेइ छड़ाय ॥
सांचे गुरु पर तन धन वारों बार बार बलिहारी । झूठे गुरु की बेटी चोदों मीता कही विचारी ॥
सांचा गुरु तिनका कहों जिन मोरी तपनि निवारी । हरि पाये दुख नासि भै मीत भये टकसारी ॥
झूठे गुर धोती लई दिया कान मां फूंकि । भाव भक्ति जानै नहीं करति गया तू चूकि ॥
जो कीन्हा ता छांड़ि दे कैले संत सुजान । जमु वाधा न लागई भौ जल उतरै प्रान ॥
दुनिया नरकै जाति है हटका रहै न कोय । मीता कहि बैरी भया सब्द न बूझै लोय ॥
चाल अटपटी देख कै दुनिया करै चवाऊ । मीता गुर मारग चला कुल का यहै सुभाऊ ॥
मीता जीता जगत में काटि चला जमु जालु । आवागमन मिटाइयां सतगुर भये दयालु ॥
बिन पूंजी के साह कहावैं बिनु दीदार फकीरा । कहि मीता पूरी न परिहै फजीहति होई तगीरा ॥
नारी नाहीं नाहरी माया विखु की बेलि । जो याके रंग राचिहै देई नरक माँ ठेलि ॥
माया खोटी जानि कै दई भरथरी डारि । रामै मिलि रामुइ भये मेटी जमु की रारि ॥
सोरह सहस सहेलियां तुरी अठारह लाख । ते सुलतानी छाड़ि कै भोंटा पुरुष अल्याख ॥
जौ लगि माया नारि की नल कै बड़ी पियास । तौ लगि हरि का ना मिलै कहते मीता दास ॥
कनक कामनी जगु ठगा बाचे संत सुजान । लिप्त होय ना मन धरैं जानै जग्नन हार ॥
गलिन गलिन गोरस फिरै मदिरा घरहि बिकाय । झूठा प्यारा जगतु मां सांचे को पतिआय ॥
बिना ज्ञान माया बड़ी बिना रामु बड़ी नारि । मीता रामै पाइआं याते परी विचारि ॥
चुरुअक सुख संसार में पाछे दुख की खानि । रामु विना जमु रारि है अन्त परैगी जानि ॥
माया नारी तौलु कै मन ते दिया उतारि । मीता बानी जौतिया ओछी जाति हमारि ॥
विखई लोभी क्रोधिया तिनका जगु परमानु । कहि मीता हरि दास की हँसी करै नादान ॥
मीत पुकारै जागै तब बूझै अंस हमार । तेहि तारैं भै काढ़ि कै मिलै देइ करतार ॥
जे आये ते मरि गये हमहू छिन मां जाय । याकै घाटा ले गये याकै नफा अगाय ॥
कान सुनी की जे कहैं ते नहिं आय विवेखी । मीता मुंह सों सो कही जो आखिन सो देखी ॥
सहसा कर्मी सोइ है विनु दीखे जो भाखै । अैसी संगत नरक है रहते मनु ना राखै ॥
नल तनु बहु दूलभ है सो जनि डारौ खोय । भजु रामै जमु ते बचै जुगन जुगन सुख होय ॥
वुंदक सुख धन नारि का दुख सागर है कालु । ताते भजि ले राम का छूटि जाय जमु जालु ॥
या माया मादकु हवै पाऐ ते वौराय । मेरू चढ़ै ना सूझई रामै कौन डराय ॥
नरकै डारा जेहि चहै कै अभिमानी देई । मीत गरीबी हरि मिलै हमरी अर्जी सोई ॥
एकु संगति नलु तरै एकु नरक लै जाय । मीता दूनों जो लखै सो रामै मिल जाय ॥
गुरू सोइ भै तारई जमु ते लेइ छड़ाई । तिन पर तनु धनु वारिये सेवा करु चितलाई ॥
जब काली नलु काटई मीठ करू हो जाय । करुऐ का मीठा कहै ईहैं बिखै सुभाय॥

अंधा खोटा कर गहै चोखा देइ चलाय । ताको अगुआ जो करै जीव नरक का जाय ।।
संगति कीन्ही संत की दुक्ख दंद भे दूरि । हरि हीरा हिरदय बसै मिली सजीवन मूरि ।।
विखै बादी की संगति भजन भंग हो जाय । मीता तिनका त्यागई कबहुँ निकट ना जाय ।।
राम नाम फीके लगै जहाँ पापु बढ़ि जाय । मीता तिनका जानिये ई जिउ नरकी आय ।।
हा हा बिन्ती हम करी पकरी पांय बनाय । तब मीता रामै मिले सतगुरु का सिर नाय ।।
ब्याहु बिना क्वाँरी कहै रामु मिले बिनु निगुरा । छापा तिलकु बनाय कै हुआ चहति है सिगुरा ।।
छापा तिलक बनाय कै कहति भये हम दास । धोखे धोखें तनु गया भया नरक मां बास ।।
कंठी माला तोरि कै मीता दिया चलाय । सतगुर सेये हरि मिले धोखा दिया गिराय ।।
जैसे जल पुरयन रहै अैसे गृह हरि दास । लिप्त नहीं न्यारे रहैं का राखे भा पास ।।
धरती मन मन विहसई नल कहते या मोरि । केतक हम मां पचि मुऐ धरि धरि लाखु करोरि ।।
काहे नल भऐ बावरे कै ले रामु सनेहु । नाहित जमु धरि खाइहै परा रहै धनु ग्रेहु ।।
लोक वड़ाई पायकै बूड़ि जाति संसार । मीत गरीबी हरि मिले उतरि गऐ भै पार ।।
तबै बड़ाई कहाँ रही मुये भे सूकर स्वान । कहि मीता जेहि हरि मिले तिनकी जुग जुग सान ।।
नारी केते नल भछे तोहों खाये जाय । चेति अभागी राम भजु जमु ते देइ छड़ाय ।।
धन दारा सुत में परे दगा होति है तोरि । राम बिसारे दुख बड़ा डारी कालु मिरोरि ।।
रहु दारा सुत मात में हरि सो करौ सनेहु । जाते सबु बंनि आवई ना तजु अपना ग्रेहु ।।
गांड़ि खोल बन का गये बन मा लागि दंवारि । चौरासी ते ना बचे ना छूटी जमु रारि ।।
हरिजन घरही मां भये बन का जाय बलाय । बनु डाढ़े घर का मरै फिर उइ नहीं समाय ।।
गृह छाड़े गुरु ना मिलै जे हरि देइ मिलाइ । खोजी सेवक होए रहै बनत बनत बन जाय ।।
मूधे साधे हरि मिले चतुर नरक का जाय । ईहैं दोऊ विसहना जैसे का तस आय ।।
चुतरा नरकै जाति है कै मनसूवा भारी । दीन गरीबी हरि मिलै मीता बातु विचारी ।।
दाता दानी जमु भछै बचै सो कारन कौन । कहु मीता सुनु पंडिता पढ़ै बाचिहो कौन ।।
बिनु करनी की कथनी बिना प्राण ज्यों देह । मीता तिनके मुखन मां अन्त परैगी खेह ।।
बाजीगर सबु रचा पेखना आपुई रहा निनारा । सो बाजीगर कोऊ ना चीन्हा भरम भूलि संसारा ।।
सतगुर कृष्ण किया जिन गीता उनकी मति थी भारी । उई तारैं अवरामु मिलावै मीता कहीविचारी ।।
उइ थे हमरे हम हैं उनके जानति नहीं संसारी । उइ तो खेल खेलि गये सांचा अब हमरी है बारी ।।
संत कृष्ण जिनका है गीता, सांची कहै सुनौ जग मीता ।
जिन इन्द्री औ मनु का जीता, तिनही सो कर सांची प्रीता ।।
जिन इन्द्री औ मनु का जीता, सोई भरा और सबु रीता ।
कहि मीता का पढ़ि भा गीता हरि ना मिले जलमु सबु बीता ।।
छाप तिलक गले मालरी पाहन पूजै लोय । कुंआरी गुड़ियन खेलै व्याही न खेलै कोय ।।
कान्हा गुंडा नन्द ग्वाल का वृज मां कीन्ही खुआरी । कामी कुटिल हता मनु मैला वोरि गया संसारी ।।
दानौ एक हरी पर नारी रावन बड़ा खुआरी । दूसर दानौ रामचन्द देखा सेन बहुत जिन मारी ।।
मार तूर साहेवु के नाहीं उइ पालें संसारी । उनकी इच्छा ते सबु होता ना धरते अवतारी ।।
इन्द्रिन स्वाद परा बड़ा टूटा, कामी कान्हा धरि धरि लूटा ।
कोटिन करम करै जो संता, कहि मीता तिनका नहि टूटा ।।
ब्याही का वरु हरि मिले छूटि गई जमु जाल । पाखंड काम ना आइहै छाप तिलक गरे माल ।।

भक्त सोई भै ते तरै गरभु बासु ना होय । छापु तिलकु हरि ना मिलै भक्ति न खेड़वा होय ॥
जुवां साफ मनु मैलु है तिनते हरि है दूरि । झूठी तिनकी अरजि है सदा परै मुख धूरि ॥
सांचे पिऊ का हलि मिले झूठे भये खुआर । कथनी कै कै पचि मुए सूझा ना करतार ॥
बहुत मिले बहु मिलैंगे साहेबु हाल हजूर । पाखंडी ते दूरि है पाई ना नल कूर ॥
चाहो तारो चाहो बोरो राम नामु धुनि लागी । मीता के परतीत बँधी है भूला जगत अभागी ॥
सुज्जन हित वट का विया दिन दिन करै उमाह । कुज्जन हित खर शब्द ज्यों घटत घटत घटि जाह ॥
आलम रहिया अल्लाह पाया मेटी जम की संसा । कहि मीता क्यों बदररिया तू कहाँ किया फिरवासा ॥
साँचे बेद कुरान किताबें बिना अमल का बाँचै । कहि मीता तबु पढ़नो भूलै जब साहेब सो राँचै ॥
खाँय सगौती पंथु बतावै ई सरकारी चोरा । कहि मीता सुज्जन सुनि लीजे ई जैहै तर वोरा ॥
नानक तो गुरमुख हते त्यागा मछरी मांस । मांस मछरिया खाति है तिनका नरकै बास ॥
रामु ध्यान तन पीयरा सूखि टटेरवा होय । राम मिले आनन्द भये पाछे लाली होय ॥
गुरमुख तो सतगुर करै निगुरा करै वैपार । अपना बूड़े नरक मां सिख्य सुनावै पार ॥
जाका गुर चौरासी बासी चेला कैसे छूटी । कहि मीता दूनों हैं अन्धे कलुआ फिर फिर लूटी ॥
सुनियो सखी सुजान माया हित जोवन गये । पिऊ ते घरही माहिं सीस देई क्यों ना लिये ॥
जाहिर माया का तजै अन्तर तजि रहु लोय । राम मिले निरभै भये मीता भगता सोय ॥
जाहिर माया का तजै अन्तरगत ना छूटी । दुनिया डिम्भ दिखाइ कर पर माया ली लूटी ॥
किरखी कबहु न छाडिये या संतन कै रीति । कहि मीता हरि प्रीति कै ते जैहै जगु जीति ॥
भाव भक्ति जाने नहीं दुनिया ठगि ठगि खाय । कहि मीता सुन पंडित भेखी महिखा करी लदाय ॥
भीख माँगि अबु खाति हो पाछे लेखा होय । खर करिहै लादे तव फिरिहो चारौ ना धरि देई ॥
छाने लाखन कोटि भेखिन मा सब ठगु बसे । ले मीता मति मोरि गृहवासी मनका कसै ॥
जो व्यापी सो मैं कही सुज्जन सुनौ संदेस । सतगुर सेऐ पाइये कहि मीता पिऊ देस ॥
निन्दा तो अन्धे करै हरिजन भाखै सांचु । सोने को सोना कहैं कहैं काँच को काँचु ॥
इन भेखिन जगु मूसिया औ दीन्हा भरमाय । सबै चले हैं नरक का औरे लीन्हे जाय ॥
मीता का सतगुर मिले परखा चोर औ साहु । जमु की फाँसी काटिया मेटी तन की दाहु ॥
खटिया मां खटकीरा बाढ़े दुनिया बाढ़ी भेखु । साहेबु के गिरही रहैं कहि मीता तेहि देखु ॥
सोई गुन है भेखु का सोई खटिया वाले । कोई रक्त पिये कोई माया मूसै एकै ते एकु आले ॥
भेखु संघु साहेब ना मिलिहै समुझो समझन वाले । माया मूसि भाँड़ु कै डरिहै छुटिहै लरिका वाले ॥
भाड़ु भये दुनिया में जेते भेखु बनावैं तेई । कहि मीता दाना ना धरिहै मानौ जगु के लोई ॥
भेखिन के संघु भरम भूलिहै येऊ भुलाने भाई । कहि मीता ई भगति न जाने दुनिया ठगि ठगि खाई ॥
मीता पंथी अगम का जेहि चलि पाया पीउ । बाहेर पंथु न संत का समुझि नरक के जीउ ॥
पंथु हवै सत साहेब केरा चले मिले भे संता । ते संता नहिं भेखु धारिया भेखु धरैं ते कुत्ता ॥
नरक पंथु का भेखु चला है दुनिया ठगि-ठगि खाय । रामु भगति जानै नहीं कथनी गये भुलाय ॥
बरत पिया का छाड़िकै करै आन की आस । सो नारी विस्वा भई नरकै होइहै बास ॥
पतीबरत गहु राम का नलु का दूरि बहाऊ । कोटिन नल तू भोगवइ झूठ आई विस्वाऊ ॥
मांस मछरिया करैं अहारा ते हवैं करम चंडाला । इनबमन्हन का दीन्हे दानु तिनका नरकै बुराहिवाला ॥
ससुरे की जानै नहीं मैके बहुत सयान । मानुख तन ऐसे गया बिनु पिया की पहिचान ॥

कथनी बदनी बहु करै पिय सो नहीं सनेहु । कौड़ी गांठिन है नहीं बातन लाखै लेहु ॥
हिरस करै हैवान पिया का घरु हाँसी नहीं । सीस देई सो लेई मीता बन्दा सो सही ॥
कथनी बदनी गढ़ि कै सिख्य बतावै साखी । कहि मीता जियतै मरै सोई प्रेम रस चाखी ॥
देस-देस मैं फिरी मिला ना सन्त सुजान । कहि मीता ते बहु मिले कामी कुटिल नदान ॥
एक बरन वहु कहि गये ते अन्धे कै जानु । कहि मीता तू पंडिता दिष्टिवंत की मानु ॥
तीरथ-तीरथ का करो होइहो जल की मीन । जारु परे दुख पाईहो कहि मीता हरि चीन्ह ॥
तीरथु नहीं छड़ाइहैं जमु राजा की त्रास । कहि मीता भजु राम का सीतल चरन निवास ॥
मुसलमान सो मूसै पाँचु करै पचीसों अपने हाथु । तिनका नहीं गरभु में बास सांई सो नहीं छूटै साथु ॥
काटै बकरी काटै गाय मुर्गी अंडा सूधा खाय । ते दोजख का सहजे जाँय काह भये जो कहे खुदाय ॥
चौदा पुर जरि जाइहै मिटिहै सबु संसार । रहिहैं मीता दास सबु की रहिहैं करतार ॥
मुये मुक्ति जे कहति हैं ते सबु होइ खुआर । कहि मीता जियतै मिले दरस भये करतार ॥
जीयत मुक्ती पाई नहीं करै मुए की आसा । तिनका नरक नितौ नित होइहै करिहै कालु तमासा ॥
करै अभागी गीला चीन्है ना मोरी बानी । मीता भै ते पार उतारै देइ अमर रजधानी ॥
अगुआ भेखु बूड़ि लै दुनिया मीता केहि समुझाई । सांचु कहे ते बैरु करति हैं झूठे जगु पतिआई ॥
माटी केरे महल मा पूरन ब्रह्म समाना । मीता पूछै पंडिता दूजा केही जाना ॥
भेखन के संघु भरमु है भक्ती भेखु ते दूरि । गिरहिन का हरि मिले हैं तहाँ हवै मति पूरि ॥
कै कविताई कान्ह की केशो कवि भा भूत । सोइ जुगुल तुमका लिखी कहि मीता सुन धूत ॥
संतन की हाँसी करै पाखंड पूजै जाय । तिनका निहचै नरक है जमु का धक्का खाय ॥
नर तन पूँजो गई हाथु ते हारि चले सबु बाजी । राम भगति का छांड़ि कै पाहन से भे राजी ॥
साँची बात मनै ना आवै करै झूठ विस्वासा । बादु करै कुछु मरम न जानै होई नरक मा बासा ॥
हरिजन भेखै ना धरै भीखु माँगि ना खाय । मिले रहैं करतार का ग्रह का छाड़ि ना जाय ॥
ब्रह्म मिले भै ते तरे संत कहावैं सोई । कहि मीता राजा सुनो भक्ती भेखु ना होई ॥
तू लोहा गुरु पारस मैं तू तिनके बीच । दीन बिना ना धोइ हैं मन की कांदों कीच ॥
बरन अठारा लिये जाति हैं जहाँ नहीं है थाही । कहि मीता करु दीन गरीबी सतगुर पकरै बांही ॥
काम क्रोध का पहिरे चोलना नाचे जुग-जुग मांही । कहि मीता करू दीन गरीबी सतगुर पकरै बांही ॥
सतगुर भै ते पार उतारै जो पकरै उइ बांही । परम दीनता उनका पावै अभिमानी का नांही ॥
सतगुर तौन कहावई जौन मिलावै रामु । भै ते पार उतारई सुफल होई सब कामु ॥
ज्ञानी का उपदेस देइ हम मूरुख सो चुप रहना । कुत्ते का हउ उबटन करिये खर का दरिये दाना ॥
जहाँ दीन गरीबी दाया सोई कहिये ज्ञानी । कहि मीता सोइ अंस हमारा उनहीं सो मनु मानी ॥
पोथी थोथी सुन कै बादै सो नाही है ज्ञानी । कहि मीता जो होइ विवेकी पदु देवे निरबानी ॥
सुज्जन अंस हमार है तिन्हैं उतारैं पार । मूरुख सो सौदा नहीं वा पहुँचा दरबार ॥
राम भजन कै लाहा पाया जुग-जुग राज हमारी । निन्दा किये आसुरी होइहै भा मीता टकसारी ॥
परम पुरुख तो मूल है निरंजन ताकी डार । तिरदेवा साखा भये पत्र भये संसार ॥
हीरा तहाँ परसिये जहाँ जौहरी होय । कहि मीता तहँ बाँधिये जहाँ आंधरे होय ॥
हारा चाहै जीत का जीता मन हारी । कहि मीता सुनु साधवा पूरा करै न रारी ॥
मीता आतम दरस ते सदा रहै मन धीर । काम क्रोध की लहरि निवारी मुरसिद पाया पीर ॥

कहै मीता जगु बूड़ि जाति है कहा कोऊ ना मानै । राम भगति का छाड़ि कै पाहन पूजब ठानै ॥
सीस देइ हरि पाइये देइ सकै ना कोय । गल्लै रिल्ले बहु करै लरै सो सूरा होय ॥
लोभी ते ना हरि पाइये सुज्जन सुनौ संदेसु । जिनते गोबिन्द पाइये तहाँ न पाखंड भेखु ॥
हलुका नल पावै नहीं सतगुर का मत सार । कहि मीता सत धीरजी सो जन उतरै पार ॥
काम क्रोध माता रहै कथनी कथै अपार । कहि मीता हांसी नहीं साहेबु का दरबार ॥
पूरा गुर पाया नहीं कथनी कथै अपार । बूड़े पाहन नाव चढ़ि कौन उतारै पार ॥
अन्धे का अन्धा मिला बूड़ि गये तर बोर । लोभी गुरू लालची चेला खोटे दूनो ओर ॥
ऊपर बानी सीतली भीतर उठई दाह । लोभ मोह गुँजा करै करै तरन की चाह ॥
मीता साँचु पुकारई, सब्द न बूझै कोय । देखो या जगु आंधरा ऊपर त्यागै सोय ॥
लोक बड़ाई का चहै औ चाहै मन लीन । कबहु हाथु ना आइहै बिना गरीबी दीन ॥
जाहिर होय बताइये गुपिता या ब्यौहार । कहि मीता सोइ जानिहै जो पहुँची दरबार ॥
बिना हुकुम पावै नहीं देनहार इलाही । कहि मीता खोजे का हुइहै जौनि लिखी है नाही ॥
साहेबु हँसी मसखरी जाना हाथु कहाँ ते आई । कहि मीता गरुआ नल पावै जहां नहीं चतुराई ॥
वासन ढेवुआ चार का दुइ लख कहाँ समाए । कहि मीता सुनु साधवा कै डारा बौराऐ ॥
जबै मिली जन राम का भगत कहावै सोय । कंठी माला पहिरि कै भूले हैं जगु लोय ॥
पहिरे मोती सीप का फुर मोती ठहरावै । परखि जौहरी लीन्हा तिनते काह छपावै ॥
कंचन काई ना लगै संत न दागी होय । मीता कही बिचारि कै बुरा न मानेउ कोय ॥
काया बिरध न होय बादशाह जे दुनी के । तीन ताप गे खोइ कहि मीता मत लीन के ॥
साँचु कहे जगु रूठई झूठ भाखि ना जाय । मीता तासे चुप करै जा घटु बूझि ना आय ॥
बूढ़ जोगी वैदु रोगी सूर पीठी घाउ । रसाइनी भिक्षा करै चारिउ झूठि बहाऊ ॥
नारी पर नारी चढ़ै बारे कहां ते होय । ऐसे पाखंड भेखु संघु रामु ना पावै कोय ॥
करम कांड की ब्रह्मा जानी अनभै कीना पाई । कहि मीता अनभय की बानी संतन देखि बताई ॥
झगरा करै का बावरे हरि गति अगम अपार । मुरसिद सेए पाइये कथनी बदनी खुआर ॥
जो काहू की हंसी करै कोइ हंसी ताहू कै होई । सांचा साहेबु न्याउ करति है गरभ ना राखै कोई ॥
विश्वकर्मा जब धाम रचा दुर्योधन देखन आये । तालु देइ भल हंसी द्रोपदी तब हरि पापु लगाये ॥
तौने पापु चीर गा खैंचा; पुन्नि सहाई आये । दुर्वाशा का बस्तर दीन्हा कान्हा नहीं बढ़ाये ॥
कान्हा केरी गोपी लूटी तब न जाय छड़ाये । ना वा टेरि सुनी द्रोपदि की ना वा धावा आये ॥
संत कहैं सोई है साँची देखी तौनि बताई । औरे की परतीति न मानेउ मीता सांचु सुनाई ॥
लिखने वाले लिख गये बहु थाह विरले कोई पाई। कहि मीता हम सोई बखानी जो साहेबु फुरमाई ॥
रामु पुरुष तो आदि है तहां गमी ना शादी । लंका गमी रामचन्द देखी कीई अयोध्या शादी ॥
कान्हा का तो गुड़िया मारा ख्वाहिन्द काको मारै । कहि मीता भजु सत्य पुरुष का जो दूनो कुल तारै ॥
जोरु जुलम रावण बड़ कीन्हा ताही केरि बिचारा । रामचन्द का आड़ देइ कै माया कीन्ह संघारा ॥
रामचन्द्र अभिमान किया बहु धनुष तूरि जब डारा। करता देखि सका ना फूला बन का तबै निसारा ॥
दशरथ के मन ऐसी आई जौनि रची करतारा । बन का पठै जानकी खोई गरभ दूरि सब डारा ॥
करता करै नियाउ रे भाई जानै नहीं गंवारा । परम पुरुष के जौन सनीपी तिनका ही निस्तारा ॥
नरसिंधु रूप माया धरा साहेबु आज्ञा कीन्ह । हरनाकुश का उदर विदारा पह्लादै रक्षा कीन्ह ॥

रामु न मारा रावणै ना उन सीता ब्याही । रामचन्द रावण दोनों माया मूरुख जानति नांही ।।
परम पुरुष नहिं कंसै मारा ना रुकमिनी ब्याही । कान्हा कंसा दोनों माया लरबु भिरबु गुन आही ।।
बावन होय कै माया जाँची अज्ञा कीन गुसांई । गये रसातल दानु देइ बलि मारे गरभ बड़ाई ।।
एकु माया है इच्छाचारी एकु माया नर-नारी । एकु माया है दौलति दुनिया साहेबु की गतिन्यारी ।।
माया दूध पिया नामा का माया पाहन लाई । या हो भक्ति नहीं रे साधू रामु मिले तब पाई ।।
वाहन नाहीं दूध पिया पाहन ना चलि आइयां । साँचु ते परतीत राखी माया रामु पठाइयाँ ।।
पीपा कूदा सिन्धु मा माया मिलिगै आइयां । रचा कंचन धाम तबहीं रामु न वा भै आंईया ।
कहै माया जाउ पीपा राम कबीरा पाईयां । करो सेवा ताहि की तुम हो आनन्द बधाइयां ।।
सोई संत कहावई जो ब्रह्म मां मिलि जाइयाँ । दुःख तबहि मिटिहै साधू आवागमन मिटाइयां ।।
भेखिन संघु जगु पचि मुआ संत लखै ना कोय । ते संता गृह मा रहैं जे तारत हैं लोय ।।
कसबु करैं ते बहुत हैं दरबारी कोई एक । कहाँ कांकर कहाँ हीरा कहाँ साहु कहाँ चोरु ।।
जहां राखि ना मिले कबीरा मस्तक रहे मुड़ाये । कंठी माला छापु न दीन्हा सहजे रामै पाये ।।
नामा औ रैदास दोउ जन पाहन पूजि भुलाये । दास कबीरा दाया कीन्हा हरिका जाय मिलाये ।।
पाहनु पूजि दोऊ पछिताने जबु पीछे हरि पाये । भै सागर में बूड़ि जाति थे कबीरा पार लगाये।।
कौन तीरथ कै गनिका आई सतगुर रामु मिलाये । पोथी-थोथी कुछौ न सुनिया मूरुख फिरै भुलाये ।।
मूल गहे ते पार भे सठु बूड़े गहि डार । मीता केहि समुझावई अन्धा सबु संसार ।।
पिया का मारगु कठिन है हँसी खेलु ना आय । तनु दहै मन बसी करै सो मीता मिलि जाय ।।
आगि लगी कसमो जरी जी का किया उबार । मीता आवनु मिटाइयां भूला है संसार ।।
कामी क्रोधी कुटिल ते तिनते हैं हरि दूरि । माला पहिरो बीस तुम मुँह मां परिहै धूरि ।।
माला तेरा काठु का घोरि दिई भुंइ माटी । कहि मीता ज्यों लिये पराधी जीव बधै की टाटी ।।
मिलि ले पिया का ऐ सखी करम-भरम दे डारि । औसर बीता जाति है फिर दूलभ है ससुरारि ।।
माया केरी हाटि में है दिना चार सुख भारी । कहि मीता मिलु पीउ का जुग-जुग राजि तुम्हारी ।।
अगम पुरा की बाटि मां ठहरैगा कोई बीर । पाँच मारि मन बसि करै तोरै कालु जंजीर ।।
परम पुरुष का जे मिले ते हैं संत सुजान । कहिं मीता जे ना मिले तिनका झूठा ज्ञान ।।
मन का हाथै नहिं किया कथनी कथ्थै ओज । कहि मीता ते जानिबे चौरासी के लोग ।।
ना कुछु सूझा ना कुछ बूझा कथनी कथै अपारा । कहि मीता ते नरक परैंगे संघु लिये अहंकारा ।।
डिंभु पसारे जगत में लाये बड़ी दुकान । साहेबु सो परचै नहीं जमु के हाथु बिकान ।।
डिंभु पसारे जगत मां महिपति आवैं जाँय । तिनते साहब दूरि है माया पावैं खांय ।।
नैना सो नैना मिले खुलिगे बज्र केंवार । सेजरी पाई पीऊ की लखा मीत करतार ।।
आगि लगी दह भीतर जरै अकास । मछरी चढ़ी अकास में देखै मीता दास ।।
रावण रामचन्द कान्हड़ा ई को तेरे आंय । कहि मीता भजु सत्ति पुरुष का जाते नरक न जांय।।
कान्हा काली नाथिया कंसै डारा मारि । तौनि कथा कहि का भये ना छूटी जमु रारि ।।
जैसे खोटे दाम का तायै खरा ना होय । ऐसे जगु के बाम्हना पूजे पुन्नि न होय ।।
ब्राह्मण केरे कुल नहीं-नहीं जाति नहिं पाँति । ब्रह्म मिले ब्राह्मण भये अभिनाशी की जाति ।।
देखो जगु के ब्राह्मणा मांस-मछरिया खांय । अपना जाते नरक का औरे मुक्ति सुनाय ।।
कहो कसैया का करै जाते कहो कसाई । सोई जीऊ का बधै सोइ वाही का भाई ।।

बासन छुऐ न दीजिये ई सबु आंय कसाई । पूजा केरी का चली सुनिले सब्दा आई ॥
जब जावा तब शूद्र था करमन ने द्रूज होय । बेदु पढ़े ते विप्र भा ब्राह्मण केहि विधि होय ॥
ब्रह्म मिलै सोइ ब्राह्मणा कौनी कुक्षा होय । कहि मीता मतिहीन जगु ब्राह्मण लखै न कोय ॥
ई तो आंही दुवे तिवारी ई ब्राह्मण ना होंय । ब्राह्मण केरे धोखे धोखे इनकै पूजा होय ॥
जे ब्राह्मण का हरि जिऊ थापा ते ब्राह्मण ई नांई । ई तो आंही पांडे चौबे धोखे जगु ठगि खांई ॥
जगु मा ब्राह्मण ऐकु दुई तिनका लखै न कोय । उइ फिर गरभ ना आंवई कौनी कुक्षा होय ॥
इनका पूजे नरक अति जानति नाहीं कोय । कहि मीता जो पूजिहै सो हरि का द्रोही होय ॥
निन्दा कीन्हे नरकु है हम तो कहा विचारि । जो झूठी कै जानिहै तिनसो जम सो रारि ॥
ब्राह्मण का हम पूजिया ब्रह्मै दिया मिलाय । सबु जगु धोखे हारिया मीता जीता जाय ॥
निन्दा कबहु न कीजिये निन्दक नरकै जाय । जन मीता सांची कहैं सांचे हरि मिलि जाय ॥
लगे प्रेम के बान नैना अकटक हो रहे । जानै जाननहार मीता दुख कासो कहे ॥
लोक लाज मरजादा छाड़ी छाड़े विखै विकारा । धरा रामु का नाम निरन्तर मीता उतरे पारा ॥
बैकुंठ हमारी दासी खसम हमारे राम । दुलहनि हो तहाँ पहुचिया जहाँ हवै निज धाम ॥
सुल्तानी औ भरथरी गोरख गोपीचन्द । इनकी बानी निर्मली ज्यों तारन में चन्द ॥
तखरी पाई अरस की तौलैं संत सुजान । मीता बानी अगम की तबु कीन्हा है छानु ॥
मीता भया पहरुआ हरि का ऊंचे चढ़ि गोहिरावै । झूठ सांचु की खबरि सुनावै सुज्जन का अपनावैं ॥
जिनका करता मने किया है तू बानी ना बोलै । तिनकी बानी कतल होयगी मीता परदा खोलै ॥
तबु बांधो में संत थे कबीर औ धर्मदास । तेही घर अब ठगु रहै परखै मीता दास ॥
धजा नारियर झूठ है झूठ पान परवान । मीत मिलावै रामु का पद देते निरवान ॥
नानक दादू संत थे किरखी कै कै खांय । भेखन के मुंह कोयला लावैं इनका ना पतिआय ॥
झन्ना पन्ना ठगु भये मुसलमान धरि भेखु । छत्रसाल का कढ़ी खवाई छल बल वाके देखु ॥
मुर्गी केरे अंडवा डारैं घोरि खवावैं कढ़िया । हिन्दू तेरे तुरको करते ते मीता गुर मढ़िआ ॥
राम भरोसे रामु बल और नहीं बलु मेरे । जाति पांति के वोछे मीता भये राम के चेरे ॥
जोगी होय जगु जीतिया चली दुनी सबु हारि । ब्रह्म मिले ब्रह्मइ भये मीता कही विचारि ॥
पुरुख मिले पुरखुई भये भक्ति बिना थे नारि । मीता सतगुर चीन्हे छूटी जमु की रारि ॥
मीता सबु कोइ कहति है राम गरीब निवाज । जो न गरीबी पावते ता बिगरत सबु काजु ॥
कबिरा नानिक सूरा तुलसो इनकी थाप न मानै । भरथरी कही सो मानिले तत्तु ग्यान तबु जानै ॥
तेई शूद्र जे मांस खाते ब्राह्मण मांस न खावै । कहि मीता सोइ ब्राह्मण कहिये गरभ बासु ना आवै ॥
गुरु सोई जो हरी मिलावै गरभु बास ना आवै । कनफुकवा की धीका फारैं दाम लेइ भरमावै ॥
निरख परखु कै गुरु का करियै जो हरि देइ मिलाई । कनफुकवा की धीका फारैं माला देइ बताई ॥
सुज्जन का गोहिरावा ढगिया डहकि न जाय । कहै मीता गुरु कीन्हो जो रामै देइ मिलाय ॥
संतन की हांसी करै करै भेखु की सेव । कहि मीता ते नरक में करिहैं लेवा देव ॥
एक नरक माता की कुक्षा एक तिहारे पास । कैसे कै तर जैहो कैसे होइहो दास ॥
सतगुर देइ छड़ाई जे रहते हरि पास । कहि मीता ते गिरही भेखु नरक का बास ॥
ऊँचे ऊँचे महल बनाये साहब का ना जाना । आखिर रोज करोगे कैसा जब जगु मोंगरा ताना ॥
जीव जंत पर दाया राखै क्षत्री तौनु कहावै । ब्राह्मण सो जो ब्रह्म मिलिया गरभु बासु ना आवै ॥

घर नारी का भोगवा मांस मछरिया खाय । ई साधू की मुगुल हैं कहि मीता देउ बताय ॥
तीन घर चोरी भई भेखिन कीन्ही आय । कबीर दादू नानिक जगु का जानि न जाय ॥
जो तीनिऊ के ज्ञान का मानि लेइ अतिवार । सो सतगुर सो विमुख है मीता किया विचार ॥
जो भेखन की सेवा करिहै तिनका नरक निदार । कहि मीता सतगुरगिरही माजेहि मिल उतरै पार ॥
जिनकी नीकी नारी भोगवै तिनही के घर खांय । ऐसे भेखु हरामी अन्धे तेहि पतिआंय ॥
मीता भये पहरुवा हरि का सोवत देइ जगाय । जो भेखन पतिआइहैं निहचै नरकै जाय ॥
रहनी ना रहै मसखरा कथनी कथै अपार । कहि मीता ई कबहुं न तरिहैं दिनु दिनु होइखुआर॥
मैं मैं करते जलमु निधाना भक्ति भाव गा दूरि । कहि मीता इनकी कथनी में मुँह मा परिहै धूरि ॥
नैनन बीच निरंजना सब का डारी खाय । कहि मीता ते बाचिहैं जेहि करता केरि सहाय ॥
आदि जोति माया ह्वै हर्ता कर्ता और । कहि मीता जे जानिहैं ते माथे की मौर ॥
नरक सरग की सुधि नहीं परी पेट की आय । भेखु धरी धर जगु का मूसा नरकै चले बजाय ॥
जाति पांत के वोछे मीता हरि भजि भये पुनीता । जारों या जगु कीकुलनाई रुधिर पियत दिन बीता ॥
जाति के ऊँचे पांति के गरुये मांस मछरिया खावै । कहि मीता को शूद्र कहावै है कोऊ समुझावै ॥
अजाति हरि भज तरे नीचे ते भये ऊँच । ऊँचे ते नीचे होइगे मछरिन केरे बीच ॥
मीता कीइ बुराई जगु मां भली न एकौ कीन । ते सबु सतगुर कीरी भये भक्ती लै लीन ॥
मोर मुकट घटही ह्वै घटहि ह्वै बनवारि । घटहि ह्वै मनमोहन मथुरा कान्ह खुआर ॥
रामचन्द राजा भये तिनहू जपिया राम । गुर वशिष्ठ का तिन किया तू भूला केहि काम ॥
रामचन्द कान्हा कोटिन भे राम पुरुष हैं एकु । सो घटु ही मा रमि रहा तेही का ही देखु ॥
रमिता राम विसारि है कालु करी महिमानी । सो सतगुर मिलि पाइये अमर मिलै रजधानी ॥
जे घटु कुमिता बसि रही तिनसो काह विसाय । मीता तहँ परमोधई जेहि घटु कुमति न आय ॥
अलख अलख बहुतै कहै अलखै लखै न कोय । जो मीता अलखै लखै तौ आवागवन न होय ॥
ज्ञानी ज्ञानी सबु कहै जानी बिरला कोय । मीता रामै जानई जानी कहिये सोय ॥
भगत सराहे का भए जो नहीं चाहै पीऊ । कहि मीता भोन्दू सुनो नरक परैगा जीऊ ॥
बूड़े सो बहि जान दे जानै हमरी बलाय । सुज्जन पार उतारिबे अपनी नाव चढ़ाय ॥
सुज्जन की बहिया धरै खेइ लगावै पार । मीता तो केवट भये बूढ़ि जाति संसार ॥
अरझावै ते बहुत पियारे निरुआरे ते बैरी । मीता ताते चुप करै होइ दे मेरी तेरी ॥
निरुआरे का हम भये अरझावै संसार । ताको मीता का करै जा घटु मलिन विकार ॥
मैं दासन का दास हों सब्दी कही विवेखी । सुज्जन तो भटकै नहीं वाहि परै कुछु दीखी ॥
जिनका हरि दरसा नहीं अथवा नहीं विवेख । तेई विमुख कै जानिये मीता अलखै देख ॥
गिरही दीन गरीब जे पहुँचे दरबार । भेखु धरे बहु फिरति हैं कहि मीता ते खुआर ॥
दुनी नरक का जाति है जहँ नहिं आय विवेखु । मीता दुनिया दूरि कै साहेबु अपना देखु ॥
द्वादस कवल जीव का बासा, अष्ट कवल दल ब्रह्म विलासा ।
जीव ब्रह्म का ऐकुई करई, कहि मीता सो प्रानी तरई ॥
चित गुपित लेखा करै चूकि न तनकौ जाय । तिन्ते काह छपाइहो जे घटु मांझ रहाय ॥
राम कहे ते का भये भीतर गुंजे पापु । हरि का खेड़वा कै गना करते पूजा जाप ॥
नन्द महल मीता गये जसमति कीन निहाल । मोहन का गोहना किया छूटि गया जमु जाल ॥

काहे पलक न लागई काहे ते भई लाल । काहे ते जोबन कसे कहु सखी तौन हवाल ॥
पलक न लागै पीउ लखि ये ही ते भइ लाल । मदन जारि जोबन कसे या सखी मोरि हवाल ॥
काहे ते ज्ञानी भये बिनु पढ़े बेदु पुरान । तन ताई काहे गई काहे तरिया प्रान ॥
जहां बेदु की गमि नहीं तहा पढ़ा मत सार । खुले केंवारा अगम के जिव का किया उधार ॥
देखो जगु के ज्ञानी बूड़ जात बिनु पानी । जो हमरी कही न मानी ताकी कालु करी महिमानी ॥
नरकु कुंड मां बांधे जैहो हुये संतन के चोरा । दारू मांस खाय भे ज्ञानी अचेत भये कुल बोरा ॥
बोली बोलइ न जानो ढोलना कौन करी निस्तारा । बुडि गये सगरे अभिमानी पकरि पकरि जमु मारा ॥
तीन सै साठ किया तपु अैसा जाते मिले गोपाला । अब जोगी होय भोग करतिहैं मीता का मत आला ॥
छापा तिलकु बनाय कै जगु मां करै ठगहाई । कहि मीता हरि अन्तरजामी नरकै बांधि पठाई ॥
रामचन्द औ नन्द कन्हैआ ई नाहीं करतारा । राम बिसारि नलै सठु ध्यावै परिहै नरकु दुआरा॥
तिमुर जाति रबि दरस ते कुमति जाति गुर ज्ञानु । सील जाति सनमान बिनु भक्ति जात अभिमान ॥
दीन गरीबी है भली सतगुर करै सहाय । जो मीता सांचो धरै सांचा मिलै बजाय ॥
अनभै उपजे सबु लखा ज्ञान गुष्टि बहुताय । एकै साधे पिउ मिले बहु साधे बहि जाय ॥
कपटु चातुरी छाड़ि दे ले मीता का ज्ञानु । अवल छड़ाऊ काल का पदु देहौं निरबानु ॥
साखी पद बहु कै गये हरिजन अगम अपार । मीता का मत गरू है जानी जाननहार ॥
भरम भुलाना साधवा कविताई मनु लाय । मरम न पाया पीउ का क्रोध कहां ते जाय ॥
मीता मता अगाधि है जानै ना नल कूर । भेदु बिना पिउ ना मिलै गल्लन होय न पूर ॥
बड़ा बड़ाई ना तजै वोछा ही इतराय । भानु तपै तिहु लोक मां बारू जारै पांय ॥
भक्ति करै कोई सूरिवां तनु धनु लज्जा खोय । काम क्रोध का जबै कै नगर पहूँचै सोय ॥
भेखु संघु जिन नल किया हो गइ जुबा खुआर । तिनका सतगुर ना मिलै मीता किया विचार ॥
पांच पचीसों की लहरि जो बांधै सो ज्ञानी । मनु दरिया तबु हाथै आवै भेटै अंतरयामी ॥
कथनी कै कै जलमु गंवाये हरि की भगति न जानी । नाऊ सचेति अचेति बहुत है कै गल्ले भे ज्ञानी ॥
भाखों सीढ़ी अगम की छाडि देऊ बिस्थार । कहि मीता सुन साधुवा कथनी करी खुआर ॥
तीनिऊ पन ऐसे गये हरि की भगति न पाई । गुपित मते का खोजु न कीन्हा कथनी परे भुलाई॥
किये कपटु चतुराइयां रहे मैलु लपिटाय । संतन का चीन्हा नहीं भै मां गोता खांय ॥
पिया का मरमु न पाईयां नाऊं धरा सचेतु । मैं तोहि पूछौ साधवा कैसा होय अचेतु ॥
ठहरैगा कोई बीर संगति मीतादास की । जिनका अकुंरा पूरि लोक लाज तजि जगत की ॥
ना कविता हम पंडिता चाकर हवै हजूरी । अचेत मीत का ना लखै लिये कपटु की छूरी ॥
मीता पंडित अगम पुरा का कहै तहां की बानी । अचेत भुलाना कपटु मां तिनका परै न जानी ॥
पांच पचीसों की लहरि जो बांधै सो ध्यानी । कहि मीता कथनी का होइहैं जो इतनी ना जानी ॥

दोहा पाखंड अंग पर

पार ब्रह्म नैनन लखे सब देवन के देउ । मीता पारस पाइंया करै ना पाहन सेउ ॥
मीता भै के पार का पंडित बसई वार । मूल छाड़ि डारै धरै ते बूड़ै मंझिधार ॥
चौदापुर भै सागर बसै ते दुखिया लोग । मीता पहुँचा अगमपुर सतगुर दीन्हा जोग ॥
मारे गरभ गुमान के पंडित अैंढ़े जांय । मरम न जानै भक्ति का भै मां गोता खांय ॥
दामु दिये असतुति करै बिनु पाये करैं निन्द्रा । कहि मीता तेहि नलौ न गिनिये मानौ कुत्तीपुत्रा ॥
बहुत दिना अन्तर रह्यो काम क्रोध के बीच । मीता कलिहिनि नारि सो पुरुष न जोरै डीठ ॥
सांचे के हरि निकट हैं झूठे ढिगै न जाय । कोटि करै चतुराइ हरि ते काह छपाय ॥

अज्ञानी निन्दा करै हरिजन करते नाहिं । पाखंड भरमु न राखई संतन केरि सुभाय ।।
जिउ बधिया औ निन्दकी तिनके एकु सुभाय । जिनके हरि का डरु नहीं ते नर नरकै जाय ।।
छापा माला भर्म है पाखंडिन का जार । जैसे टाटी हरी देइ कै बधिक लेति जिव मार ।।
सांचे तेते हरि मिले निन्दक नरकै जाय । जन मीता सांची कहै धोखा कुछौ न आय ।।
जन मीता पारिख भये झूँठा ना पतिआय । सांचा गांठी बांधई राखै छतिया लाय ।।
रामचन्द के गुनन ते बड़े रहै बहु बीन । कहि मीता मिलु जोति का जिन सबु रचना कीन ।।
कामी क्रोधी कूर ते रामु रहति हैं दूरि । कहि मीता सठु का कथै बिनु करनी मुख धूरि ।।
सतगुर बिनु रामै चहै परिहै मुख मां छार । कहि मीता ते नरकु हैं जे सतगुरु ते च्वार ।।
गरभु न कीजे मानवा मिलै दीनता राम । कहि मीता नल तन भला जो ध्यावै तू नाम ।।
मीता हरि सो जो बनै का जगु करै रिसाय । राम चरन डिढ़ि कै धरै सब संसै मिटि जाय ।।
मीता दुनिया बावरी जानै नहीं मरमु । खसम छाड़ि औरे धरै छूटै नहीं भरमु ।।
कुमति छाड़ि नल बावरे कथे बदे का होय । खोटे दामन देइ कै हीरा चाहै लोय ।।
जगत सराहे का भये जो ना रामु रिझाय । बिस्वा पिउ जानै नहीं बिखई फिर फिर जाय ।।
कहि मीता नल चेति ले बहुरि न ऐसा दांय । जीव काल बसि परा है हरि भजि लेउ छड़ाय ।।
मीता तत्तु विचारिया बूसी दीन्ही डारि । बूसी गुन जिउ नरक के लेते गोदि पसारि ।।
खुसी राम का जिन किया ते नर नरक न जाय । नरक सकल जगु परा है कोइ न सकै छड़ाय ।।
साकठु सबै कहावई जिन्हें मिले नहीं रामु । कान फुकाये का भये सरी न एकौ कामु ।।
हरी हीरा हिरदय बसै का खोजै बड़ि दूरि । कहि मीता सतगुर बिना मुख मां परिहै धूरि ।।
पंडित विद्या का पढ़ै पढ़िले सांचा नामु । नहितौ नरकै जाइगा परी कालु सो कामु ।।
पढ़बु गुनबु चतुराइयाँ उद्यिमु का सिख लीन । तनु धनु लज्जा खोइ कै बिरला होय लै लीन ।।
पढ़ि गुन बूड़े पंडिता विद्या के अभिमानु । सिरजनहार विसारिया लेति फिरति हैं दानु ।।
बूड़े बड़ाई पंडिता दूसरि बरन न कोय । कहि मीता जे हरि भजै ते जन ऊँचे होय ।।
कहि मीता हरिदास की सरि नहिं पहुँचै कोय । ब्रह्मा तिन्है न पांवई पंडित पढ़ि का होय ।।
छहौं भेखु पाखण्ड हैं इन मां सन्त न होय । संत भये ते गृह भये मीता छानै लोय ।।
गृह ते उतरे मूड़ मुड़ाये नाउ धरा बैरागी । कहि मीता जिन पाँचों मारे ते गिरही बैरागी ।।
लाखन पोथी बांधिया बंधे न पांच पचीस । कहि मीता हरि ना मिले मानुख तन गा खीस ।।
साखी सब्दी बहु भई ग्रंथ भे कोटि हजार । कहि मीता पढ़ि का भये बिनु गुरु होय न पार ।।
साखी सब्दी ते कर जे पहुँचे दरबार । काटि कूटि कै जे करै कहि मीता ते खुआर ।।
आवा जाही करति हैं बिनु गुरु के उपदेस । मीता जीता नामु लै बाजी ले गया पेस ।।
कालु हमारा का करै हम साहेबु के लोगु । जीता चौदा लोक का जागा मीता जोगु ।।
देहि दगावै द्वारिका पसुआ मूर्ख नदान । कहि मीता सतगुर बिना साकठु फिरति भुलान ।।
देहि दगाई द्वारिका गोड़न परिगे फलुका । मूड़ मुड़ाये भांडु हो आये मन तैसे का तैसा ।।
गल्लन भूला भौदूँआ खोजु किया ना जाय । मीता पारस पाइया पाहन पूजै बलाय ।।
कथनी कथे न पाइहो राम न खेड़वा होय । कहि मीता लरु पांच सो सहजे मिलई सोय ।।
आतम रामा सबु हवै दरसी विरला कोय । मीता आतम दरस बिनु जलमु अकारथु होय ।।
हरि जन आये जगतु मां सुज्जन मन आनन्द । पांखडी संसै परै करत रहै फरफंद ।।

पार पार सठु करति हैं सूझै वार न पार । नदी नहीं नैया नहीं कंह तन जैहौ पार ॥
सतगुर केवट संघु ले अथाह देइ थहाय । कहि मीता सहजे तरै या विधि पारै जाय ॥
पंडित विद्या इल्म है हरि की भक्ति न होइ । कहि मीता हरि क्यों मिलैं सोई बतावो मोहि ॥
अहंकारी का ना मिलै हरि मिलै गरीबन धाय । मीता नन्हा होय रहा सहजे पहुँचा जाय ॥
एकु फांसी ते फंसा सकल माया का जार । कहि मीता हरि ध्याओ हो भै सागर पार ॥
पाँचों इन्द्री बीस कै राखै तिन्है मिलै अभिनासी । गरभु बास कबहूँ ना आवै टूटि जाय जमु फांसी ॥
जहाँ आपु तहाँ मैं नहीं जहँ मैं तहँ नहिं आपु । दाया सा नहिं धर्म है आंहू सा नहिं पापु ॥
कोटि भानु जहाँ ऊगवैं तिन्है छपावै कौन । कहि मीता ते आंधरे संत न चीन्है तौन ॥
दीन दास नेरे हवैं जिनका मत है दीन । कहि मीता का भये नये जो काहुई दुख दीन ॥
रप्पी गप्पी बहु मिले दूलभ सांचे लोगु । कहि मीता सांचे बिना बनै न हरि सो जोग्गु ।
मीता कहै विवेखु करु हरि लेऊ बुस डारि । अरध उरध सौदा करो कुलै न आवै गारि ॥
आसा टिसुना कठिन है खांड़े बिरला कोय । मीता मनु हरि सो लगै दागु न लागै कोय ॥
पूरा पदु तब पावई जब पूरा गुरु होय । कहि मीता एक भागि बिनु खोजि किये का होव ॥
छाप तिलक पाखंड के मीता निकट न जाय । हरि का बाना सांचु है सांचे मिलई धाय ॥
गये द्वारिका का भये पसुआ मूर्ख नदानु । वा तो साहेबु संत मां बिनु गुरु परै न जानु ॥
नाकि गये भै सिंधु ते बहुरि न आवनु होय । ते मीता जगु बहु नहीं लाखु हजार न होय ॥
हलुके से सौदा नहीं गरुआ होय हमार । मीता का पारिख हवै कसे कसौटी सार ॥
सीस देइ सो पावई संतन का मत सार । मीता पूरब जानि कै तिन्है उतारै पार ॥
चोत घनेरी जे सहै सो जन होय हमार । ठहरैगा कोइ सूरिवां तिन्है उतारै पार ॥
गांसी मारी सारु की गड़ी न पाहन मांहि । कहि मीता सुज्जन हिये उठै कराहि कराहि ॥
हमरी बोली का लखै करम मलीना प्रानी । कहि मीता जो चीन्है तिन्है देबु रजधानी ॥
रामु भजन कै बाजी जीती भरमु की लागा टूटी । कहि मीता लूटे मुक्ताहल भेखन परिहै टूटी ॥
बरन अठारा का करै ब्रह्म सकल घटु माहिं । घर के भेदी संत हैं पंडित जानति नाहि ॥
बरन अठारा का करै ब्रह्म सकल घटु माहें । घर के भेदी संत हैं पंडित जानति नाहे ॥
बरन दूसरा है नहीं पंडित करौ विचार । पाँच तत्त्व ते तनु भये तेहि मां सिरजनहार ॥
ब्रह्म भेदु न पाइयां जाने हरि के दास । कही सही तिनकी हवै जे रहते हैं पास ॥
करम हिन्डोले जगु परा पापु पुन्नि दोउ डोरि । माया खड़े झुलावई सुर न सके या छोरि ॥
विनसि जायगी देहियाँ कामु न आवै चामु । आगी मां जरि जायगी तब को धरिहै नामु ॥
ममिता बैरिन जीव की या नरकै लै जाय । बैरी के पहिरे रहै को पारै लै जाये ॥
मींउ पुछारी बोलई मींउ भगति ना होई । काम क्रोध का मारई सो जन निर्मल होई ॥
लिये मोट सिर पापु की करै तरै का आसा । खिचरी सेतुआ देइ कै मनु आया विसवासा ।
जौ लगि मन हिरसै करै तौ लगि ध्यानु न होय । सतगुर मारगु कठिन है का जानै जगु लोय ॥
हरि दासन सो बैरु मानई पाखंडिन का भौरा । मुक्ती की आशा करत हैं नरकौ नाहीं ठौरा ॥
अन्न खांडि बहुते रहै बहुते जागैं राति । कहि मीना सतगुर बिना ज्यों धनुही बिनु तांति ॥
बिना जुगुति का जोगिया बांधा जमपुर जाय । हंसे अज्ञा करे खाति है आगू झखे बलाय ॥
सांचु कहे ते बैरु करति है पाखंडी जगु लोई । मीता भरमु न राखई दुरमति डारै खोई ॥
मुर्दा चुरै रसोई भीतर करै अचार-विचारा । कहि मीता ई परपंच देखौ पांड़े के व्यौहारा ॥

मूल हाथु आया नहीं काह फुकाये कानु । सपना सा मन्तर कहै रामु परा ना जानु ।।
अंगा पच्छी छाड़ि दे करु विवेकु मन मांहि । सतगुर भेदी हाथु लै साहेबु हैं तोहि मांहि ।।
रामचन्द ते बड़े ते गुन गरवाई बेनु । लंका कोनु गिराइयां घर बैठे राजा बेनु ।।
रामचन्द तेहि लंका का सैना जोरी जाय । बहुत लरे बहुतै मरे तबु गढु टूटा जाय ।।
कहु दुइ मां अबु को बड़ा रामचन्द की बेन । तेरी तो गति मति गई परै न आपा चीन्ह ।।
नल भूला सुन गुनन का विसरि गया घटु राम । रामचन्द कहँ पाइहो जबु परी कालु सो काम ।।
रामचन्द ते बड़ा है कालु धीग लगवार । वाते तबुही बाचिहो जबु पइहौ सिरजनहार ।।
हरिजन सबहि ते बड़े इनते बड़ा न कोय । जहँ तीनिउ की गमि नहीं संत मिलावैं सोय ।।
जो ना सब्दा मानिहै ताको नरका नादु । मीता तौली कहति है अन्धा करई बादु ।।
गनिका सतगुर का मिली रीझि उतारा पार । सुआ पढ़ाये हरि मिलै ता बहुत पढ़ै संसार ।।
संत साहु गृह मा भये किरखी कै-कै खाँय । कहि मीता छा भेखु का सतगुर ना पतिआंय ।।
भेखु भरम मां जो परै अधकी जाय भुलाय । कहि मीता परतीत करु हरिजन गिरही माह ।।
पंडित बूड़े भै जलु विद्या के अभिमान । अनपढ़ खोजी-खोजि कै कोई जन उतरै पार ।।
छारू लगाई देहि मां जटा रखाये सीसु । कहि मीता ई जोगिया मांगि खांय का भीखु ।।
पँडित बादै चौहटा समुझि परै कुछु नाहिं । कहि मीता एकु संत संगति बिनु बूड़ति हैं भै मांहि ।।
पंडित विद्या सो पढ़ो जाते नरक न जाय । गरभ बासु बड़ा नरक है छूटति नहीं अन्हाय ।।
मीता विद्या ना पढ़ी पढ़ा मूल चटसार । मन जीते पंडित भया उतरा भै जल पार ।।
पंखी सबु मां बैठई सबही के संगु खाय । पंडित किरया कहँ रही कहु मोसो समुझाय ।।
जहाँ जाय तहाँ भरमु पसारा कैसे कै जगु छूटै । कहि मीता पंडित रोजगारी जलमु खोय धन मूसै ।।
तीरथ बरत तरै ना कोई ना सुनि बेदु पुरान । कहि मीता एकु संत संगति बिनु जमुपुर होइ पयान ।।
तीनि लोक मां आगी लागी तबु कैसे कढ़ियो लोई । अबहि निकरि जाय सो उबरा नहितो बहुदुख होई ।।
तीन लोक के जो हैं भीतर तिनका नहीं उबारा । चौथे जाय सो जाय मवासे कोई न पूछनहारा ।।
संत संघु बिनु पार न होइ हो मूले मूर्ख गंवारा । कहि मीता अभिमानी बुड़ि हैं जिन सिर गरुआ भारा ।।
मीता साखी कहै तौलि कै डारै भरम उधारी । राहजनी भेखिन बहु कीन्हीं तब या कही विचारी ।।
गल्लन गढु ना टूटई कथनी मिलै न रामु । कहि मीता मनु जीति ले सरै सकलविधि कामु ।।
बोरनवाले साढ़ी पावैं तारन वाले लब्दा । कहि मीता अन्धा ना चीन्हैं संतन केरा सब्दा ।।
बहु गाया बहु नाचिया लखा न सब्दा सार । सूने घरू ज्यों पाहुना कौन करै मनुहार ।।
:जिन्हें मिले हरि पाइये सत संगति है सोय । कहि मीता तजु भेखु का इनमां संत न होय ।।
कहि मीता संतन की निन्दा आगे ते चलि आई । संतई नाम जगु है देनहारा ताते उठै रिसाई ।।
नरक पंथु मां भीर बड़ी है खाली कबहुं न होई । कहि मीता संतन के मारगु देखा बिरला कोई ।।
माया ऐसी नागिनी देखति लहरी देय । मीता वा काटे चढ़े झारे नीकी होय ।।
मीता जो मंतुर मिलै गुर गरवरिया सार । तेहि का नागिन का करै होय न काहे हजार ।।
पाखंडिन मिलि मूंड़ मुंड़ाया दुनिया ठगि जगि खाई । कहि मीता इन मालुपुआ हित कंठी मालचलाई ।।
अस्तुति निन्दा जे करैं ते भै सागर जीउ । जन मीता सांची कहैं पारिख मिलियां पीउ ।।
पाजी पापी मसखरा तजै न मलिन बिकार । कथनी कै कै चहति है भै सागर भा पार ।।
मनु का मौनी जो करै पावै पद निरबान । साकठु मुँह का मूंदि कै चाहति है हो जान ।।

दया छिमा आई नहीं मुँह मौनी का होय । ज्यों बाजीगर पेखना फिरति हँसावति लोय ।।
खर का का अन्हवावई स्वानू चन्दनु अंग । साकठु का उपदेसिये जाकी मति है भंग ।।
कहि मीता जबु मनु छकै धंधा कुछु न सुहाय । दारू पी घूमे कहा अल्ला मिला न आय ।।
पंडित मारि बोकरिया खाई करै मुक्ती की आसा । कहि मीता नरकै को जैहै देखो जगत तमासा ।।
मुल्ला पढ़े कुरान का पंडित भाखै बेदु । पीर गुरू बिन ना मिलै वा घर केरा भेदु ।।
चाम हाड़ की पूतरी काह रहा लै लाय । कहि मीता मिलु जोति का तोहू जोति होय जाय ।।
काटि कूटि साखी करै ते कुटनी के पूत । मीता सांचु पुकारई नरक परगे धूत ।।
मीता मैं पारिख भया संत सब्द लखि लेउ । काटि कूटि साखी करै तिन मुख करिखा देउ ।।
साखी सब्दी तबु कीई जबु भई रामु रजाय । कहि मीता पदु निन्दहै सो निहचै नरकै जाय ।।
माया मोह की फांसी काटी तोरी लाजु जंजीर । धनी मिला परचै भई मीता भये फकीर ।।
कान फुक़न्ता औरि है अगम ज्ञान गुरु और । जिन्है मिले हरि पाइये कहि मीता गुरु तौन ।।
विद्या केवल पंडित भाखै सुनि सुनि भाखै ज्ञानी । कहि मीता अस कोउना भाखै जातै मति ठहरानी ।।
धूरि उड़ाये ना छपै रवि ससि का उजियार । मीता हरिजन ना छपैं जे पहुँचे दरबार ।।
भै सागर के जिअन सो मीता बकै बलाय । हंसा का हंसा मिलै तब सुख जाना जाय ।।
परदा हती सो खुलि गई मीत रहा लै लाय । हंसा कतहुँ न देखिये बकि बकि मरै बलाय ।।
मीता पाँचों सो लरा अरध उरध के बीच । प्रेम पियाला पीजिया पदम झलक्का सीस ।।
हंसा बोलै हंस सो सुनौ मीत चितु लाय । बगुला की संगति किये मन मलीन होय जाय ।।
ऊपर बक्का ऊजरा भीतर निपट मलीन । ताते मीता त्यागिये करम कसाई चीन्ह ।।
बार-बार मीता कहै सुनु पापी मोरि बात । सांचु बिना हरि ना मिलै हो सांचेन के साथ ।।
पाजी पापी मसखरा काह कथै बैराग । कहि मीता सठु मानिले भगति न हांसी ख्याल ।।
दिनरी गावै ढ़ाढ़िया सिर देवै ते सूर । कहि मीता सिर दीन्ह नहिं नरक परै रन कूर ।।
थीरे ते कांदों करै ते नल मलिन बेकार । मीता कबहूँ न बैठई हरि विमुखन के द्वार ।।
मीता कागु उड़ावई नगरी कीका होय । ठहरैंगा कोइ सूरिवां तनु धनु लज्जा खोय ।।
कुत्ता भूखै नगर के मीता काटि न खाये । ज्ञान लवेदा मारई दूरै दूरि भगाये ।।
मीता करै ज्ञान का तोरा बदी दिलै ना लावै । बदी करैं बेपीर कसाई बांधे जमुपुर जावै ।।
पापी ध्यानु न पावई जगु दिखलावै ढढुं । कहि मीता हितुरीतु सखीकी लखै न साथी संघु ।।
नाहक भोंदू दिस्टी लगावै, भेदु बिना कुछु हाथु न आवै ।
सतगुर साहु भरा घर भारी, चूका है फिर चला मिखधारी ।।
मीता निन्दा ना करै निन्दक का मुंह कारा । जे सब्दा ना मानिहै तिनका नरकु दुआरा ।।
मीता करै विवेकु सब्द का लोगु बतावै निन्दा । ते सबु नरकै जाइहै जे करिहै ठगु विद्या ।।
निन्दक मारे जांयगे साहेबु के दरबार । मीता करै विवेखु सब्द का बूझै नहीं गंवार ।।
मीता हरि दरवार का सब्दा कहै विचार । सब्दु हमारा चीन्हिहै सो जन उतरै पार ।।
सुज्जन के उपदेस का सब्दा कीन्हा सार । मीता सब्दु ना मानि है ते सठु होइ खुआर ।।
साखी सब्दी बहु भई मीता कीन्ह निसाफ । की बूझा दास कबीर जी बूझा दास कमाल ।।
मीता भरमु न राखिया पर स्वारथ के काजु । जे सब्दा ना मानिहै तिनका जमु की गाजु ।।
संत न पंथु चलावई झूठी कहै लबार । मीता सांचु पुकारई सब संतन एकु विचार ।।
भेखु बनावै पाखंडी भेखु मिलै हरि नाहिं । मीता गिरही हरिजना बूझा दिल ही माहिं ।।

पूँजी राखे सब चलैं हवैं जगत की रीति । राम नाम पूंजी करै ते जैहैं जगु जीति ॥
जन मीता सांची कहै झूठा नरकै जाय । सांची जे झूठी करै तिनकी मां का धरै कसाय ॥
हंसा कागन मा परा निसु दिन रहै उदास । मीता मन के भावते हैं विरले हरिदास ॥
सांचु पुकारे डरु नहीं निन्दक नरक दुआर । मीता के डरु राम का साखी कहै विचार ॥
सांचा जन रामै मिला निन्दक नरकै जाय । मीता जहां विवेकु नहिं अन्त तेई पछिताय ॥
मीता पइले पार का बहुरि न आवै वार । बानि हमारी सो लखै जिन्है मिला करतार ॥
या जगु तक्षक तुल्ल है एकु एकु डसि जाय । कहि मीता गुरु का करै जो ना सिख ठहराय ॥
कोटि भानु जो ऊगवै अन्धे सूझि न जाय । बहु विधि मीत बुझावई मुरखै बूझि न जाय ॥
पाखंडी का गुरु कहै पाहन का कहै देऊ । राम विसारे संतन निन्दै अन्ध न जानै भेऊ ॥
सब्दु विवेखी जे नहीं तिनका नरकु दुआर । मीता सब्दु विचारिया उतरा पैले पार ॥
कागा वादै हंस सो तुम नहि हमरी जोरि । हम गोतिन लाखन हवैं को करिहै अस सोर ॥
सांचु दीनता जहँ हवैं तुरत मिलै तेहि राम । सांची सांची जगु कहै अन्तर कौने काम ॥
जमपुर तेई जाइहै जहँ नहि हवैं बिवेखु । जन मीता सांची कहै अन्धे परै न देखु ॥
कामी कुटिल लबार का सांची नहीं सुहाय । जो मीता सांची धरै गरभ बास ना जाय ॥
जिनका सांची लखि परै जगु लागै तेहि फीक । मीता मीठी भगति है और नहीं अस मीठ ॥
संत संगति चीन्हैं नहीं करै मुक्ती की आसा । कहि मीता बहियां बिना को पहुचा हरि पासा ॥
मीता जीता जगत मा अन्धा करई निन्दा । पिउ पाया मनु माना दरिया मिलि गया बुंदा ॥
बिखहर अमी पिआइया तजै न आपन बिख्ख । जो मूरख परमोधिये तऊ न लेवे सिख्ख ॥
जौं बाजीगर पेखना यौं झूठे का प्रेम । ना हरि मिले न मनु बधा ताके प्रेम न नेम ॥
बिना भेदु का ज्ञानिया ज्यों मरकट की दौरु । यहां ते कूदि वहां गये नहीं ठिकाना ठौरु ॥
भाग्य बड़े संगति मिलै जो मन रहै डिढ़ाये । कहि मीता सो ऊधरै का जगु करै रिसाये ॥
मीता मता विचारिआ देखा रूप अनूप । संत संगति मीठी लगी जगु है कालु सरूप ॥
कुत्ता होय मैं फूकिया काम क्रोध पर मीत । ना आवैं ना टिक सकैं मारे पांचो भूत ॥
भक्ति सूर का खेतु है धरि कै चहै सो लेय । कूरा नाहीं टिक सकै दोछु गुरू का देय ॥
या जगु तक्षक तुल्य है एकु एकु डसि जाय । संत संगति मैं सो टिकै जा पर राम रजाय ॥
संत लोग जहं जहं भये तिन्है निन्दै जगु लोय । कहि मीता जे बन्दई तिन्हें परम गति होय ॥
मुक्ति संत के हाथु है धंसि कै चहै सो लेय । तनु धनु मनु वारे करै मीता मति गुरु देय ॥
हम साहेब के लोग हैं जगु निन्दे का होय । राई घटै न तिलु बढ़ै मीता का मत सोय ॥
बोझु न पौआ लै चलै सीस मनन का देय । कहि मीता गज भार का गदहा कैसे लेय ॥
मनु हस्ती मा चढ़ति है करम न टट्टू देय । नरक परै की विधि करै मुक्ती कहां ते होय ॥
मुक्ति संत के संघु मा सीस देइ सो लेय । कूरा सीस न दै सकै नांउ भक्ति का लेय ॥
कागा कंचन हगि भरा कंचन भया न खोटि । हरिजन कै विस्मै नहीं जो निन्दै नौ कोटि ॥
काया मोटी दूबरी अन्न पानी का फेर । मीता मोटा भक्ति मां काया माटी ढेर ॥
हीरा काया भीतर संगत करै सो लेय । कहि मीता बनु के फिरे बनु मां बिरछै होय ॥
मथुरादारी दूरि करु नित उठि खोज सरीर । जन मीता ह्यां पाइया सिरजन हारा बीर ॥
अग्गा पच्छी छाड़ि दे कै लै सब्द विवेखु । कान फुकाये का भये करु संगति हरि देखु ॥

मीता ऐसे मरु जो फिर जिअै बहुरि न मरना होय । आखिर मरना होयगा अंत कालु दुख देय ।।
ज्ञानु छाड़ि करु ध्यान का पावै पद निर्वान । ज्यों गनती लाखन गनीं बिनु धन का परमान ।।
निरगुन कथनी का कथै गहिले निरगुन नाम । सिरजनहारा भेटि ले पद पावै निरवान ।।
बिरहु ना उपजा अंग मां हरि सो लगा न चित्तु । कहि मीता कथि का भये सरग पतालै नित्त ।।
कथनी बदनी का करै भौंदू मूरुख नित्य । अपना गुरुमुख भे नहीं औरे का करै सिख्य ।।
चहै बड़ाई जगतु में ते नलु बड़े न होय । मीत दीनता जो करै हरि समान सो होय ।।
ब्रह्मा विसनु महेस से मारे फांसी डारि । कालु फांसि सुर मुनि परे संत गये निरुआरि ।।
कठिन कसौटी राम की ठहरै बिरला कोय । कूरा कपटी लोभिया इनते भक्ति न होय ।।
भक्ति करै बिनु सीस का तन धन लज्जा खोय । सतगुर का घरु कठिन है पैठै बिरला कोय ।।
अन्न बाँधि रन का चले आई घरु की सुद्धि । उलटि पराने गाँव का उपजी माया बुद्धि ।।
मीता का संसय गया खोजे आपु सरीर । मनु पाया पीतम मिले सतपुर भई जगीर ।।
अभिमानी सबु बूडिहै नरक बुलबुला देय । कहि मीता कोइ दीन जन गुरु मिल रामै लेय ।।
पंडित पोथी डारि दे भजि ले नौका नाम । सो सतगुर सो पाइये का पाखंड सो काम ।।
सुनि पोथी कहँ जाइहो मूरुखु निपट नदान । कालु गाल मां का कथै छूटै का मत आन ।।
पोथी सुनि सुन विरध मे मनु न लगा बैरागु । ज्यों पाहन पर रंग धरा भीतर परा न दागु ।।
पोथी सुनि ग्यानी भये मन बाढ़ा अभिमान । कहि मीता हरि भक्ति बिनु होइहैं नरकु निदान ।।
पोथी सुनि ज्ञानी भये मन बाढ़ा अभिमान । कहि मीता हरि भक्ति बिनु होइहैं नरकु निदान ।।
सुतगुर का चीन्हा नहीं करै तरै की आसा । ते सबु नरकै जाइगे लीन्हे आसो पासा ।।
संत पुकारै ना सुनै नरकै दोरे जांय । कहि मीता जगु आंधरा हित की कहे रिसाय ।।
विखै विकार न छूटई कथै मूढ़ बैरागु । आप मुसावै चोर से औरे का कहै जागु ।।
कुटिल कुबुद्धी आपना करै तरै की आसा । तिनका सतगुर ना मिलै कुमिता जिनके पासा ।।
सुमिता सुरति सभांरि ले ना करु जगु सो हेतु । अन्तर परई भजन में हमैं भया है चेतु ।
लोक लाज छूटै नहीं सतगुर सेवै जाय । कहि मीता ते का नचै जे घुँघुट टरति डेराय ।।
लागी इस्क खुमारिया छूटि गई तब लाज । मीता दिल का खोजिया बाहर परई गाज ।।
मनु जीते जगु जीतिये जो इन्द्री बसि होय । कहि मीता तेहि दास का आवागवन न होय ।।
मीता सांची कहति है मानि लेउ परतीत । जो या मारगु चित धरै सोऊ जाय जगु जीत ।।
हाथी घोरै ना जीते ना दौलति ना राजु । मीता इन्द्री जीतिआ सरे सकल विधि काजु ।।
भाग्य लिखा सो पाइये टारन वाला कौन । जिनका पिछला आकुंरा मिलै धनी का तौन ।।
किये गरीबी दीनता संतन का सिरु दीन । ताते मीता पार भा चरन कंवल लौ लीन ।।
हरी तो हाल हजूर हैं बिनु सतगुर हैं दूरि । जुगुति भेद ते पाइये कहि मीता अस मूरि ।।
बिछुरे ते हम आदि ते बहुत दिना रहे दूरि । सतगुर की दाया भई मिलिया सोई मूरि ।।
मनु ऐकुई सो फसि रहा कोई नारि कोई दाम । दूजा कहवाँ पाइऐ जौन मिलावै राम ।।
तनु धनु दारा राम पर लागे रामु गोहारि । बूड़ति मीत बचाइया कठिन हती भै बारि ।।
राज पाटु सबु राम का रामै का सबु आय । कहि मीता रामै मिले तिनका कालु न खाय ।।
हाहा हाहा कै मुये खोजा ना हरि नामु । कहि मीता तिनके घरै मानौ भूत मसान ।।
गई बड़ाई नरक मां हो संतन सो दीन । भजि ले सांचे नामु का ना माया में भीन ।।

कोटि कुबुद्धी जो मिलै संत न छाड़ै रीति । सार अकिल इनकी ह्वै जग बारु की भीति ।।
कामिनि काली नागिनी डसिया सकल जहान । मीता दाउँ बचाइ कै लीन्हा पद निरवान ।।
मीता काह दिखावई बाजीगर नहिं भांडु । सतगुर सब्द विचारिया छूटि गया जमु डांडु ।।
जो तू चाहै राम का सुमिता धरौ संभारि । बिनु सुमिता हरि ना मिलै मीता कही विचारि ।।
चलनी दुहि दूधै चहैं कुमति लिये चहै राम । कलहिनि नारि कुलच्छनी का करै पिआ तन मान ।।
सुज्जन हरि का पावई सबै अंग जे पूरे । छिमा दीनता सील ते दाया ते भरि पूरे ।।
तहँ मीता का बासु है काल जाल जहँ नांहि । जगु पापी फन्दे परा उठै कराहि-कराहि ।।
जो देखा सो भाखिया मीता हरि का दास । भूला जगु अन्धा ह्वै ना मानै विश्वास ।।
अमी अभागा ना पिये विखु का झगरै जाय । मीता तिनसो का कहै जिनके बुरे सुभाय ।।
सत्य लोक ते आइंया भूलि गया जगु मांह । तहँ का बिछुरा तहँ गया जबु समुझा घटु मांह ।।
टूटी डोरी जिऊ निकसा तहाँ समाना जाय । जहँ आसा तहँ वासना सोइ देइ पहुचाय ।।
जैसी करनी करति है अन्त आस सोइ होय । खोटी कै चोखी चहै हाथु न लागै लोय ।।
बदी सदा करते रहे रामु कहे का होय । जो डरपा नहिं राम का राम रीझ क्यों होय ।।
अजामील बद ना हता हता पीछिला दास । तब सतगुर किरपा करी पहुंचा हरि के पास ।।
सधन कसाई कहन का रहै पुरातिम दास । सुरति चली जगु मां परा फिर पहुँचा हरि पास ।।
गनिका पापी ना हती पापी कहता तौन । सुरति डिगी ह्यां औतरी फिर पहुंची हरि भौन ।।
पापी ना हरि पावई मीता कहता सांचु । कोटि बार गावा करै कोटि बार करै नांचु ।।
विखै चहे औ हरि चहै कैसे हरि का होय । देहि बिसारै तब मिलै खेड़वा मीत न होय ।।
कहि मीता सिरु दै लरौ साहेबु के दरबार । जो मरमै या पाँच का पावै मुक्ता मार ।।
मीता आन न भावई रहै चरन का ध्यानु । अज्ञानी का डरति हैं ज्ञानवंत सो ज्ञानु ।।
मूरुख सो बादों नहीं ज्ञानी सो नहीं चुप्प । बार-बार समुझावऊं काटों अन्धा कुप्प ।।
चला जगत सब नरक का हंसि-हंसि दाबी देय । जो मीता सांची कहै उठि-उठि न्यारी होय ।।
गरभु वासु तो नरकु है तौन बचावै कौन । कबहुं क सूकर कूकर कबहुं क राजा भौन ।।
कोटि भांति मीता कहै मानति नाहीं कोय । फिर-फिर नरकै जांइगे तिनही का दुख होय ।।
जानोगे तब पूतरा जब परिहो जमु धार । सबै मसखरी भूलिहैं परिहै मुगरन मार ।।
जोगी जुगति न छाड़ई रहै उनमुनी ध्यानु । ते मीता का सपरै जिनका निरमल ज्ञानु ।।
काया पानी धोइया मनु जैहै कैसे धोय । कहि मीता मनु धोइले सहज परमपदु होय ।।
सहजे-सहजे हरि मिलै नहिं तपु कीन्हे दानु । संतन का सिरु नाइयां मीता तजु अभिमान ।।
अभिमानी का ना मिलै दीनानाथ दयालु । कहि मीता करु दीनता सहज कटै जमु जालु ।।
समुझि-समुझि सौदा कीई कीन्हा बड़ा बिवेखु । मीता का सतगुर मिले पाया पुरुष अलेखु ।।
जे घटु नहीं बिवेखु है तिन्है कालु धरि खाय । कहि मीता कथि का भये भगति न खेड़वा आय ।।
घटहीं मा हरि पाइये अनत नहीं औ ठौरु । जे अनतै बतलावई कालु करै तेहि कौरु ।।
घटहि बताये का भया जो खोजा ना ठौरु । कहि मीता जिन पाइंया ते माथे की मौरु ।।
गल्लै रिल्लै बहु करै छपै न झूठा सांचु । कहँ हीरा कहँ लाल री कहँ कंचन कहँ कांचु ।।
मूरुखु ते हम हारिया सांचा करई सीखी । भंग करति हैं भजन मैं मूरुख नैनु न दीखी ।।
गुरु गरुये पहिचानिया छूटे मलिन बेकार । जब मीता निरमल भये तब पाया करतार ।।

अंध कोठरिया ढूँढई मीता सुई हिरानी । कहु कैसे पहिचानिहै कोटिन दियना बारी ॥
हरिजन तहाँ बिलंमई सीतल जहाँ निवास । कहि मीता तहँ ना टिकै जहाँ क्रोध उपहास ॥
मीता हरि के दास की बार बार बलि जाय । जिन्हे मिले सुख ऊपजै जगु सो बकै बलाय ॥
दाता औरे पतिगिरिही बहुत ह्वै संसार । कहि मीता ऊइ बिरले हैं जे पहुँचे दरबार ॥
दाता दानी दोउ का करई कालु अहार । कालु जालु ते सो बचै जो भेंटै करतार ॥
कसे कसौटो सो टिकै जेहि जूझै का होय । कहि मीता सुनु साधवा तब संतन का होय ॥
अन्न बाँधि जनि भागऊ समों परा है नीक । एकु संगति दूजे नल तन अबु जनि जायो चूकि ॥
बहुत गई थोरी रही थोरिउ ना करु खीस । कहि मीता गुरु सेइकै भेंटि लेउ जगदीस ॥

दोहा गुर बिवेख

सतगुर सांचा सोई रामु दरस जिन संघु मिलै । कहि मीता तनु दुख खोय अमर लोक का लै चलै ॥
मदन जरै दीपक बरै गगन उठै घहराय । मीता कसमस मेटि कै मिला पुरुष का जाय ॥
मीता मन महरा भये नैना भये अमीर । छरीदार पलकैं भईं खड़ी रहैं हरि तीर ॥
मीता नैना ना नवो ना होय जाय अधीन । पारब्रम्ह पहिचानिया हो संतन सो दीन ॥
अबु जगु मोहि न सुहाय अगम अटारी मनु गयो । कहि मीता मत सार पाये ते मुक्ता भये ॥
बिना उसीला चाकरी सही कहां ते होय । कहि मीता सतगुर बिना रामदरस ना होय ॥
जन मीता बनु सींचिया बनु मां लागि दंवारि । करम जरे जिव ऊवरा साधो कहो विचार ॥
मीता पलकु न लागई मिले सजीवनि मूरि । पीतम छबि उमड़ी रहै का जगु जानै बीर ॥
लाली मुख पर छा रही जबु बसिया हरि नैनु । मीत उनमुनी लगि रही सखी सखी सों सैनु ॥
ब्रह्म अगनि उदगार कै पिया पियाला सार । मीता छूटा बन्दि ते घटु मा भा उजियार ॥
जग्य दानु तपु फांसि है तरना है कुछ और । कहि मीता गुरु सेइले जो चाहे वा ठौर ॥
कान फुकन्ता गुरु नहीं अगम ग्यानु गुर और । जिन्हे मिले हरि पाइये कहि मीता गुर तौन ॥
सतगुर भेखै ना धरैं कान फूकि नहिं देइ । कहि मीता गृह ना तजैं उइ मति गरुये होंय ॥
करनी बारामासु की जबु पूरा गुरु होय । अधिकी घटी बतावई ते सतगुर ना होय ॥
बारा मासे का भये नींद भूख का खांड़ि । कहि मीता सतगुर बिना का जागे दिनु राति ॥
भेदी गुरु विरले ह्वैं अनभेदी हैं कोटि । कहि मीता ते गुरु ह्वैं तीन तापु जहाँ टूटि ॥
फिकिर न व्यापै जुर नहि आवै जिनकै पूरि कमाई । कहि मीता उइ देहि छूटते चलैं निसान बजाई ॥
देहि छूटति जो होय कसाला तिनकी झूठ कमाई । कहि मीता जे हरि के प्यारे ते हसि चलैं बजाई ॥
सतगुर की बानी लखी सतगुर भये दयाल । उन दीन्हा सति नामु का तिन काटी जमु जालु ॥
मीता सीस न राखिये जो पूरा गुरु होय । तनु धनु काजु न आइहै उई अमरपुर देय ॥
काम क्रोध जे मारई ते मरदाने गाजी । मीता तिन पर वारिया जे साहेबु राखैं राजी ॥
गरभु बास का आवना छूटै सो मत सार । मीतै गरभ न आवना पहुँचा पैले पार ॥
गुरु की बानी जो लखै सो पूरा गुरु होय । कुंभ नीर सिंधै मिलै सोऊ सिंधु जलु होय ॥
जे मीता मन ऊजरे जगु ते रहै उदास । हिल मिलि सब सो बोलई मनु राखै हरि पास ॥
सुरति डिढ़ानी गगन में निरति किया उजियार । सुई सुमेर समोइया मीता उतरा पार ॥
मीता नन्हा होय रहा काम क्रोध का त्यागु । सतगुर की दाया भई भाग्य उठा जबु जागु ॥
मीता पाँचों सो लरा अरध उरध के बीच । प्रेम पिआला पीजिया पदम झलक्का सीस ॥
या तोरा गुरू ग्यान का पावै विरला कोय । कहि मीता मनु जीतई सो जगु जीता होय ॥

मीता खसमैं छाड़ि कै करति और की आस । तिनते हरि बहु दूरि हैं होई जमुपुर बास ।।
मीता तोरा जगु किया मनु के आये हाथ । पाखंड भरमु उधारिया सच्चा लीन्हा साथ ।।
मीता घर का जारिया मछरी गई अकास । जो या भेदु न जानई तेहि का जमुपुर बास ।।
संत दरस ते नासई जुगन जुगन के पापु । कहि मीता किरपा करै ता मेटि देइ तन तापु ।।
कै ले संगति संत की तुरत मिलावैं राम । व्यापी सो मीता कही पावै अनभै धाम ।।
माया मोह की फांसी काटी तोरी लाज जंजीर । धनी मिला परचै भई मीता भये फकीर ।।
जुगति बिना पहुँचै नहीं या है खेलु अपार । कहि मीता कथि ना मिलै साहेब का दरबार ।।
अरब दरब नहि कामु की नहिं हाथी नहिं घोर । कहि मीता हरि ध्याइ ले छाड़ि मोर अव तोर ।।
हरि विवोग जब व्यापई तबु ममिता मरि जाय । ममिता मारे मनु मिलै मनु हरि देइ मिलाय ।।
ममिता तोहि गहि मारिहों टूकि टूकि होय जाय । सतगुर की किरिया करों तेरी काह बिसाय ।।
तबु अमीर नैना भये जागि उठा जब जोग । माथु नवाया धनी का मिटे जनमु के सोग ।।
धूरि उड़ाये ना छपै रवि ससि का उजियार । मीता हरिजन ना छपै जे पहुँचे दरबार ।।
चकमुन्दर दोउ पांव दै मूंदै ससि उजियार । कहि मीता सुन निन्दक संत बसै भै पार ।।
संत दुराये ना दुरै निन्दा करैं हजार । हरि जन हरि की गोद मां ज्यों माता लिये तातु ।।
गरदु मरदु तेई फिरै जे हरि विरही लोग । लगी उनमुनी मन छका जागा निरगुन जोग ।।
नैन छके पिउ दरस ते मन भा रीझ निहाल । अब मीतै नहिं व्यापई माया केरा जाल ।।
सतगुर धोबी संघु ले मन उजला कै देय । काया धोये का भये जो मनु मैला होय ।।
मैलेन संघु मैला भया केहि विधि उजला होय । हरिजन मन के धोबिया मिलै सो निरमा होय ।।
सबु घटु रमिता रामु है खाली नाहीं कोय । अपने घटु हरि पाइये अनत न मिलई कोय ।।
सोई रामचन्द सोई तू है जनि भूलै रे भाई । ऊँचे नीचे करम कमाये तेहि कै तसि ठकुराई ।।
भै सागर ते पार करै हम जमु ते लेइ छड़ाई । कहि मीता जो हमका चीन्ही गरभ बासु ना जाई ।।
मीता मता अगाधि है जानन जोगु कबीर । सुर मुनि हमैं न पावई हरिजन हरि के तीर ।।
चित चंचल निहचल किया सतगुर का सिर नाय । मीता तहँ थाना किया जहाँ न सुर मुनि जाय ।।
प्रथमै छाड़ै जगु व्यौहारा, फिर खोजै तन ही मां सारा ।

पांच पचीसो जब बसि करई, कहि मीता कुछु नजरी परई ।।

बरख दिना लागै एक तारा, उलटै कंवल होय उजियारा ।

ऊपर खुलई बजर किवारा, कहि मीता देखै ततु सारा ।।

जो मन ठहरै खाड़े धारा, अकचित होय ता उतरै पारा ।

छूटि जाय तबु जमु का जारा, कहि मीता या संत विचारा ।।

येही का सबु ग्रंथ भे पद भे साखी सार । येही का गीता भया यह मत अगम अपार ।।
लोक दीप सबु नजरि तर याही के व्यौहार । तिनके ढिग ते ना टरै कहि मीता सिरजनहार ।।
दरस परस माता रहै धन्धा कुछ न सुहाय । येही ते सन्तोख है कहि मीता अस आय ।।
जे बानी का ना लखै हरिजन तहाँ न जाय । जौनै बन मरकट रहते हैं केहरि रहा न जाय ।।
हंसा कागन मां परा करई कौन विचार । चलो मात उड़ि देसवा जाइ मिली परिवार ।।
गीता बीजक आइ हमारा हरि धनु हमरी गांठी । या बैरागु जीति इन्द्रिन का भेखइ कैसे पैठी ।।
कृष्ण नामु संतन का कहिये गीता तिनकी बानी । नन्द सुता का वोट देइ कै जगु मां बात बखानी ।।

काम क्रोध बिखियन का त्यागबु शंका है या बानी । बिखै विकार कान्ह तौ माता सो गीता का जानी ।।
गीता है सतगुर की बानी समुझो नल तन प्रानी । नारद सुकदेव व्यास वोट दै जगु मां बात बखानी ।।
नन्द कन्हैआ मरमु न जानै गीता केरी बानी । तिनुका वोट पहारु देइ कै संतन बात बखानी ।।
संत मता ना कान्हा पाया या गोपिता है बानी । कहि मीता तेई जन तरिहै जो संतन का जानी ।।
जिन नैना ऊँचे भये कै राखे ते नीच । ते मीता जगु यों तजैं हंस तजै जैसे कीच ।।
संतन केरे सब्द का मीता लखै न कोय । तिनुका वोट पहारु है लखै सो हरिजन होय ।।
कनक कामनी मोह ते अरझि रहा संसार । गुरमुख का ना व्यापई मीता किया विचार ।।
लागी इस्क खुमारिया मरमु न जानै कोय । कहि मीता सोइ जानिहै जा तन व्यापी होय ।।
तीन लोक के ऊपर घाटु हवै तिरवेनी । मीता तहाँ नहाइया मेटी आवा-जानी ।।
लिये सजीवनि मूरि सतगुर ताके देन का । लै न सकै नल कूर लोभु करति है सीस का ।।
सीस देइ जो जाय ती सतगुर सौदा करै । सिख्य न सूरा होय तो सतगुर का करै ।।
तनु मनु गुरु पै वारिये तऊ न गुरु की जोरि । कहि मीता बड़ी भाग्य ते चितवंति हैं भरि कौरि ।।
हरि जन जीव न दूखवै अंस धनी का जानि । दाया सब ऊपर रहै ते सरवंगी जानि ।।
सबु संघु खाते जे फिरै तिन्है न हरि जन जानु । हरिजन गिरही होति हैं निहचै कै तू मानु ।।
जुगति से दूध जमाइया दोउ नैन मथानी कीन । मीता मथि माखन लिया बहु भुदंवन झगरा कीन ।।
अब मीता जीता भया सतगुरु के परतापु । मन पाया मन का भया मेटी तन की तापु ।।
अब मीता चरनन लगा का जगु करै रिसाय । सिंघु सरन निरभै भये कुत्ता भूकै जाय ।।
सतगुर कहै सो कीजिये हुकुम न दीजे जान । बात बिचारी काढ़िये सो सिष्य गुरू समान ।।
मेहर दया आई नहीं नांउ धरा गुरु पीर । मीता तिनका ना मिलै यहै चोट है बीर ।।
साखी पद बहु ना किये जो कीन्हा सो सारु । मीता केरे सब्द का कोइ बिरला करी बिचारु ।।
कच्चा सब्दु न बोलिया कच्चे भूलैं लोय । मीता निरगुन गुन बिना सब्द कहावै सोय ।।
छांछु तत्त्व दोउ खंवरि कै सब्द न बोली संत । मीता गोती सो कहै सब्द बोलिये तंत ।।
तत्तु सब्द सुज्जन तरै जो लागै उपदेस । कहि मीता गोती सुनौ बोली अपने देस ।।
हंसा पैले पार का वार बसति हैं कागु । अपनी बोली बोलिये खभँरि जांय ना कागु ।।
हंस कागु पहिचानिये बोली तेरे मीत । जो काया ढिग ना भई या पारिख की रीति ।।
हरिजन देखति चीन्हये रहै उनमुने नैन । की चीन्है लखि शब्द का मीता दूनों अैनि ।।
कहि मीता ते विरले है जिनके सब्द विवेखु । बिना बिवेखी मानुआ ते पसुआ कै लेखु ।।
सतगुर केरी आनि है मीता करै विवेखु । छांछु तत्त्व न्यारा करै अन्धे परै न देखु ।।
न्हाये खोरे का भये जो नहिं मनु साईंधि । लै गुलाब अन्हवाइये जाय न मीन बिसाईंधि ।।
जो जलु सलिता का मिलै सो सायर का मिलता । मीता जो संतन का मिलिहै सो जन होई मुक्ता ।।
मुक्ता तेई कहावई जियत मुक्त जे होते । मुये मुक्ति की आसा राखै ते नलु नरकै परते ।।
मीता के मारगु चलै कबीर सरीखा होय । भोंदू कथनी का करै मत राखा है गोय ।।
परदा खोलै सांचु सो जो जन होय हमार । मीता का मत अगम है का जानै संसार ।।
बिनु पहुँचे ना पावई संत शब्द का भेदु । उलटी पलटी सठु कहै मिलै न कबहूँ भेदु ।।
मीता कहै विचारि कै थाप हवै दरबार । जो सठु सब्दु ना मानिहै तिनका नरकु निदार ।।
संतन का ना व्यापई फिकिरि रोगु औ दोखु । मीता ते गिरही हवैं ई नाहीं है भेखु ।।

रोगु द्वेष जेहि व्यापई ते नहिं हरि के लोगु । संतन का ना व्यापई मीता रोगु न दोखु ॥
नल तन बीता जाति है क्यों ना करै पुकार । कहि मीता तब का करै जब आई जमुधार ॥
का करै ननदि रिसाइ पिआ सो जो बनै । मीता परी विचारि जागे ते सहजे जरै ॥
जा घटु नहीं बिवेखु है सो तन कौने काम । कहि मीता जहँ संत नहिं तहँ जमु आठौ जाम ॥
कोटि भानु छवि मैं लखी भूले हैं जगु लोय । जमु की तलब छड़ाइया आवागवन न होय ॥
विरहु न उपजा रामु का उठि उठि गावैं नित्त । माग्रा मुई न मन मुआ बँधा न हरि सो चित्त ॥
हिरस करै नल भगति का सीस दिया ना जाय । हाट चला बिन दाम का आया धक्का खाय ॥
अबके चूके मीता कही कतहूँ नाहीं ठौर । हरिपुर बड़ा मवास है सुख नाहीं अस और ॥
नल तन बहुत दूलम है देखा मीत विचारि । हरि मिलि बाजी जीत ले बहुरि न आवै हारि ॥
भक्ति बड़ा विश्राम है और नहीं अस सुक्ख । जो सत गुर किरपा करै नासि होय सबु दुःख ॥

सब संतन का मता विचारू सबुहु का

उपरैता औ कनफुका पग पीटा है सोय । कविता और सुनार की मुक्ति न कबहूँ होय ॥
कुम्हरा धिमरा भेखु छा तीरगार गति सोय । महतौ कस्सब चौधरी इनकी मुक्ति न होय ॥
चतुर चितेरा भाटरा बरिया ढीमर चिक्क । संत कहै ई ना तरैं इन्हैं न कीजे सिख्य ॥
सुज्जन फूल गुलाब का आस पास हैं कांटु । हरिजन लीन्हा चहति हैं आड़े पंडित भांटु ॥
सुज्जन पानी निर्मला बकुला गया मझाय । हंस पांउ ना बोरई मति छिटकी पर जाय ॥
जिनका पिछला आंकुरा तिनका देइ जगाय । आगे ते चलि आइयां संतन केर सुभाय ॥
कहि मीता जो चीन्हई पिउ का देउ मिलाय । देउ परम पद आदि का विनसि न कबहूं जाय ॥
खोलि देउ चमदिस्टि का देखो नैन पसारि । कोइ नहीं जगु आपना मात पिता सुत नारि ॥
सूकरि करै अतिर की पारिख मुर्गी मंडिले फाँदै । कहि मीता यह देखि तमासा हमकाअचिरिजलागै ॥
वकुला बैठे पोथी बांचै सुनै भैसिया ग्यानै । मूसर चारिउ कोने नाचै मीता विरला जानै ॥
मैठुक तो मिरदंग बजावै चूहा समुझै तानै । उटवा गावै गदहा नाचै कौआ सिन्नी मानै ॥
गुरू सरन मूरुख गये मांगा हाथु पसार । बिनु रीझे ना पावई मीता कहै विचार ॥
मूरुख सिरु ना दै सकै छलु कै चाहै लीन । कहि मीता गुरु भेदु का पावै दीन अधीन ॥
अभिमानी औ लोभिया चतुरा और लबार । कहि मीता ई ना तरै इनका नरक दुआर ॥
सतगुर हवै बिवेखिया मिला बिवेखी देई । मूरुख सो भागे फिरै सौदा कासों होई ॥
सुज्जन जन के लागई सतगुर केरे बान । हिये वेधि भै पार भा उपजा निर्मल ज्ञान ॥
दसवाँ द्वारा खोलिया भेंटा सिरजनहार । चौदा तजि आगे गये अस है पंथु हमार ॥
एक कवल मा ब्रह्म है एक कवल मा जीउ । मीता दोउ मिलावई सोइ होति है पीउ ॥
दया धरम जेहि घटु सबै तिन्है चहति है पीउ । कहि मीता जहँ ये नहीं तेई नरक के जीउ ॥
नर के हरि निकटे हवै और जियन ते दूरि । बिनु करनी रहनी बिना हाथु न लागै मूरि ॥
हरि तेरे निकटै बसै तू केहि ढूढ़ै जाय । कहि मीता सतगुर बिना मूरुख गोता खाय ॥
तेरे तन का कै रचा गरभु बास मा मीत । सोई तेरे पास है ना भरमावै चीत ॥
बिनु सतगुर हरि ना मिलै कोटि करै जो लोय । का भये घटही मा कहे जो ना दरसा होय ॥
आगी जरना सलिल है जोगु करब है गाढ़ि । ग्यान खरग लै गढ़ चढ़ा सतगुर दीन्ही बाढ़ि ॥
जो बीती सो बीती भाई अबहू चलो सँभारी । दया धर्म हिरदै बसै कबहुं न आवै हारी ॥

जौनि पीछला आंकुरी मीता देइ सन्देस । सोवत संत जगावई अपने का उपदेस ॥
दुनी कालु का पेखना डारति ह्वै विदारि । उपजत विनसत दुखु घना संतन कहा विचारि ॥
कूटि कुटा साखी करै कविता मुरुख लबार । मीता साखी सो सही जिन्है मिला करतार ॥
चतुरन का घर नरक मां सुज्जन के संघु राम । मीता समुझि विचारिया चढ़ि कै ऊँचे धाम ॥
तानि तूनि बहु गावई सब्द न बूझै कोय । या जुग अन्धा देखि कै मीता चुपका होय ॥
हरि के जन डिम्भी नहीं रहते ह्वैं सनीप । उइ तुरत मिलावैं धनी का देंइ ग्यान का दीप ॥
जन मीता परदेसिया तहँ का कहै संदेस । जहाँ न रवि ससि ऊगवै दूलम है वा देस ॥
जीव ब्रह्म का मिलि गया कालु करै अबु काह । भये मवासी दीन होय सतगुर पकरी बाह ॥
पाचों पर तुम करो सिकारा, जो मारो ता उतरो पारा ।
जन मीता या किया बिचारा, बहुरि ना आवै या संसारा ॥
उलटि गया मनु जगतु ते पहुँचा पी के पास । मीता मूल विचार ते होय संतन का दास ॥
जे खोजै ते सूरिवां जे बादें ते कूर । मीत गरीबी मा मिलै सतगुर का मत धीर ॥
रामु रमैया रमि रहा मीता सब घटु मांहि । खोजि मिलै सो ना मरै नहि तौ जमु धरि खाहिं ॥
बिनु करनी यों कथनी बिना प्राण ज्यों देहि । बिना खसम की नारि ज्यों कासों जोरै सनेहि ॥
बिना खसमु दुलहिन नहीं बिना दरस नहीं संत । कोटि भान जहँ ऊगवै मीता तहाँ बसंत ॥
जन मीता मत छाकिया अभै निसान बजाय । आवागमन मिटाइयां जोति मा जोति मिलाय ॥
मीता केवट पार का रहता हरि के पास । अमर लोक पहुचावई जो मानै विश्वास ॥
जो तू चाहै कुसल का होय रहु दीन गरीब । चला न जाय सुचाल सो फिर-फिर रमै नसीब ॥
काया सुन्दर बहु बनी मिली सुलच्छनि नारि । घर बाहर लक्ष्मी भरी बिना भक्ति खंभारि ॥
पापी पर धन का लरै मन सो लरा न जाय । मनु जीते जगु जीतिये सबै काजु सधि जाय ॥
पांच तत्व औ ब्रह्म ते नर-नारी दोउ कीन । संतन के दोउ एक से जे आतम लै लीन ॥
संतन से का बोलना हम उंइ एकै देहि । मूरुख सो चुपका रहै छुटै न राम सनेह ॥
मूरुख सो चुपका रहै सुज्जन सो हँसि बोल । संतो यहै बिचार है मीता सब्द अमोल ॥
गाढ़ि परे दइया कहइ पीछे कहई राम । बिना चिन्हारी पाछली आवै कौने काम ॥
सुख मा तत्ता थइया दुख मा दँआ हाय । दूनों में नल पातरा कैसे मता डिढाय ॥
सुख-दुख दोनों एक से तिन मन रामु डिढाय । लगा रहै सो ध्यान में मीता संत सुभाय ॥
सकल सुःख मन ना लगा रहै रामु सो चित्त । तिनके आगे रहति हैं जानि परा है मीत ॥
बिना चिन्हारी पाछली नलो न आवै कामु । गाढ़ि परे रामै कहै तब भूलै धन धामु ॥
तनु धनु मन वारे करै धरै रहै जे रामु । तिनके आगे रहति हैं सरै सकल विधि कामु ॥
सबै जोगु कुजोग हैं जो ना पावै रामु । मीता जुगति बिचार ते भये राम मिलि रामु ॥
धनिया मिलि धनिया भये यामें धोख न होय । कथनी बदनी सठु करै ते भै पार न होय ॥
धनी सनेहा तबु जुरै बानी पलट तब जाय । हंस कागु कैसे छपै मीता पारिख पाय ॥
नैन पलक ना लागई जब छबि डिढि होइ जाय । मुख ते लाली ना टरै मीता पी का पाय ॥
हंस कागु की बानि का मीता लेइ बिचारि । काह भये तनु ना मिला मनकी मिलन हमारि ॥
गुरु का शब्द विचारिया चीन्ह परे सबु लोय । मीता का सोई लखै जौन पूरविया होय ॥
पूरववाला लै तरै उत्तर दिसा न जाय । पच्छिम दिसा मवासि है जमु की काह बिसाय ॥

पुर पट्टन डेरा किया जहां झिलमिली जोति । अबु जगु ऐसे लागई ज्यों हीरा ढिग पोति ।।
पोत हाथु मा को छुअै हीरा मिला अमोल । ब्रह्म अगनि अन्तर जगी का लै करिये झोल ।।
सब्दा कहि समुझावई करैं न बादु विवाद । मीता तिनका मिल रहा जिन्है कहति हैं आदि ।।
कोटि भानु हों हैं नहीं है अैसा परगास । ऐसी छवि का साहना मीता तिनके पास ।।
नाटक चेटक ना करैं कहि मीता हरिदास । चीन्हे भै पार करै पहुचावैं पी पास ।।
अनग विघुन टरि जाय संत की संगति कीन्हे । कहि मीता सति मान और का परचै लीन्हे ।।
पूरन ब्रह्मै जो मिलै सो जन ब्राह्मण होय । नाहीं तौ सबु शूद्र हैं कौनी कुक्षा होय ।।
पिआ सो परचै ना भई कथनी कथै अनेग । कहि मीता जगु धूंधरो चीन्है न हरि के लोग ।।
कथनी दे नल छाड़ि करनी का करो विचार । उतरै भै जल पार परै न जमु की धार ।।
मुख ब्राह्मण कर छत्रिया पेटु बैश्य पगु शूद्र । ई अंग सबही नलन माँ को ब्राह्मण को शूद्र ।।
जीव ब्रह्म का जबु मिलै सो जन ब्राह्मण होय । कोछे ब्राह्मण झूठि है भूले हैं जगु लोय ।।
पांच तत्व ते सबु बना सबु मां ब्रह्म समान । कहा अठारह बीस हैं कहु मूरुख सोइ ग्यान ।।
करनी ते ब्राह्मण भये ते जन संतै आंय । नामा औ रैदास कबीरा संधना दिया गनाय ।।
जगु अन्धा का जानई को धो ब्राह्मण आंय । जाका हरि ब्राह्मण कहा सो तो नानक आंय ।।
भेदु भाव जानै नहीं मूरख लागै पांय । जेहि ब्राह्मण का हरि कहा सो तो पीपा आंय ।।
निन्दा पातक गरू है सांचु कहे डरु नाह । सांचे का झूठा करै सो निन्दक ठहराय ।।
दास कबीरा नानक नामा धरमदास औ दादू । इन संतन नहिं पंथु चलाया झूठे करई बादू ।।
कठिन फांसि है कालु की या निरुआरै कौन । पच्छ पच्छ मा जगु परा छुटै बिवेखी तौन ।।
तिनुका बोटै देइ कै संतन सब्दा कीन । हरि भेटै तिनका टरै कथ्थ सीख कै कीन ।।
संत सब्द का सो लखै जो पहुँचा दरबार । बिनु पहुँचे नहिं बूझई कथनी बदनी खुआर ।।
एक ब्रह्म के मिले बिना कथनी सब बेकारा । सब्द सनीपी बूझई का जानै संसारा ।।
डिठिआरा अगुआ करो जाते चीन्हो संत । संत मिले ते सबु बनै अबहू तबहू अन्त ।।
गुर का सब्द विचार न कबहूँ मन परै । झूठै करै विवाद कौनि विधि कै तरै ।।
खांडु की मक्खी सोय गरभ जो ना परै । जगु मा कीन्हे भोग काल का ना डरै ।।
राबु की माखी सोई जे ममिता मा भरी । मेरी मेरी कै गये प्राण बहुरि नरकै परी ।।
सतगुर बन्दी छोरि भाग्य ते पाइये । नहि तौ जमु की जालु परे दुख पाइये ।।
का अंजुली भर सुख जो दुख सागर भरा । सुख है राम समीप सोई मीता धरा ।।
भाग्य बड़े मिलै संत तौ जलमु बनाइये । अलख पुरुष का भेटि बहुरि ना आइये ।।
नल तन बहु दूलम पाई हरि ध्याइये । लख चौरासी धार परन ना पाइये ।।
ध्याय लेउ सोइ नाम कबीरा जेहि तरा । रैनि दिना जपु माल नजरि तो ना परा ।।
नाम कहावै सोय जपे रामै मिला । बिनु माला बिनु जीभ पुजै ना वा सिला ।।
तारनवाला कौन जो सतगुर ना मिला । भूले मूर्ख गंवारि पूजै मूरति सिला ।।
गुपित मते की बात कोई जन जानही । जिन्है मिले करतार सो काह बखानही ।।
कंठी माला का जपै जपि ले सांचा नाम । जाते साहेबु पाइये सदा होय विश्राम ।।
वा तौ नौका नाम है जेहि जपि उतरै पार । काठ माल मा चित दिया रहिगा नामु निनार ।।
साथी सोई मैं कहों साहेबु जिनके साथु । एकै साथी कपट के जमु लेई भले हाथु ।।

हीरा के ढिग कांचु है कांचु न हीरा होय । डिठियारे संघु आंधरे दिस्टि न पावै कोय ।।
तिली फूल एकै भई जो अस संघी होय । भोहि रही जब वासु मा ताते पदवी होय ।।
बनिजु किया हरि नाम का बेचा सतपुर माल । जगु हटिया मीता तजी हता बड़ा जंजाल ।।
साथी तो टटिया भये संत मिलन ना होय । कहि मीता संतन बिना तारि सकै नहिं कोय ।।
वादु करै ते वादिया जलमु अकारथु जाय । मीता करै बिवेखु का संतन का सिरु नाय ।।
बादि जलमु सबु जाति है बादै काह गँवारि । कहि मीता सतगुर बिना बूड़ा सब संसार ।।
संत संगति मा पाइये राम सजीवनि मूरि । मीता कहै बिचारि कै कथनी ते उइ दूरि ।।
कथनी टाटी दूरि करु बानी लेउ बिचार । कहि मीता हरि पाइये छूटि जाय जमु रारि ।।
साथी हवै कुसाथी सुज्जन लीजो जानि । भै सागर ते नल तरै मीता की पहिचानि ।।
मीता सेवक राम का रहता सदा हजूर । जो चीन्है सो ऊतरै कथनी कथै मजूर ।।
अरी जारि या रीति जगु अन्धा लखि रोइये । मीता होय रहा चुप मनु अपने का धोइये ।।
मीता सांचु पुकारई बानी न बूझै कोय । जो हमरे मारग चलै कबीर सरीखा होय ।।
मन दरपन का मांजु धनी तब लखि परै । पच्छिम तारी खोलु आप सा तोहि करै ।।
मन महरा ले खोजु नगर पहुँचावई । जीव लगै मनु साथु पूर पद पावई ।।
आजु मिलन की राति बिछोहा ना करै । लखि चौरासी धार बहै तू ना परै ।।
मिलु मीता का धाय परमगति जो चहै । हम दरबारी लोग निकट उनके रहै ।।
दरिया लहरि समान मिले हम यों रहैं । भिन्न न कबहूँ होय भई मीता कहैं ।।
भली लगी है घातु जो संतन चितु धरै । भै ते उतरै पार कालु मुख ना परै ।।
मूल डोरि मनु लाइयां बन्द धरनि मा दीन । त्रकुटी तर बर भेंटिया मीता भा लै लीन ।।
हमरा भेदु न पावई कोटि चतुर जो होय । ग्यानी सो अन्तर नहीं सरवसु अपना देय ।।
दाता तो सतगुर बड़ा और न दाता कोय । जे औरे दाता कहै ते सबु भूले लोय ।।
सोने रूपे कारने मुँड मुड़ावै साधी । कहि मीता जमु की सुधि बिसरी आय जाय जस आंधी ।।
आदि पुरुष नैनन लखा सबु देवन का देव । कहि मीता उइ अलख है बिरला पावै भेव ।।
कोटि भान छवि ना जुरै ते देवन के देउ । सो मीता पहिचानिया सतगुर केरी सेउ ।।
सोई करनी सार गरभ बासु ना आवई । कहि मीता भै धार सतगुर सरन बचावई ।।
हरि पाये जब ध्याये टूटि गई जमु फांसी । कहि मीता सतगुर मता जीती कठिन मवासी ।।
हरि सहाय ते सबु बनै हमते कुछौ न होय । कहि मीता जन दीन की दीनबन्धु सुधि लेय ।।
मीता नन्हा होति ही बड़ा बड़े मिल होय । नलु की काह विसाति है करता ते सबु होय ।।
मीता के मारग चलै कबीर सरीखा होय । रामु कबीरा एकु हैं कहिवे के हैं दोय ।।
झगरा करते और हैं झगरा ना हमते होय । मीत बसै अमरावती भूले हैं जगु लोय ।।
नैनु छके मनुआ छका छाके पांच पचीस । कहि मीता हरि दरसे बरन गये सबु खीस ।।
ऊपर भेखु बनावई भीतर विसराय । कहि मीता कैसे मिलै वैराग कमाय ।।
भीतर भेदी पुरबिया जिनका भाग्य सुभाग । सुज्जन सेये बरु मिले पाया परम सुहाग ।।
काम क्रोध जेहि व्यापई लूटि सोई जन जाय । माया छाया एकु सी मीता झकै बलाय ।।
बूंद बूंद मच्छी सुचै अधम झार दै लेय । कहि मीता यों सूम धन गाढ़ि परे ते देय ।।
माया भोगवैं संत जन मनु ना वा पै देय । मीता सहजे आवई सहजे-सहजे देय ।।
मीता घट ही की कहै बाहर कुछौ न दीख । सतगुर खोजो दीन होय सुज्जन काया सीख ।।

आजु घरी नीकी हवै पाई मानुख देही । कहि मीता गुरु सेइ ले करो राम सो नेही ॥
विद्या कुल कुछु बल नही बल है हरि का नाउ । झूठे बल का जे धरै तिनका ठौर न ठाउ ॥
मीता के मारग चलै कबीर सरीखा होय । मीत कबीरा एक हैं कहिबे के हैं दोय ॥
कबिरा खोजा सरीर का मीत बखाना सोय । जो हमरे मारग चलै कबीर सअरखा होय ॥
मीता मन का बसि किया जिन मन रचा जहान । लै मन तहँ पहुँचाइया जहाँ नहीं ससि भान ॥
पाचों मारे मनु मिलै मनुइ मिलावै राम । जगु मत जगु मा जीतिया नहीं गुनन सो काम ॥
राम नाम ते जीतिया नामु गुरू के पास । सो मीता लै पार भा लै बैठारा पास ॥
बहुतै साकठु गावई बहुतै करई जापु । कहि मीता ते अजर है जिनका मिलिया आपु ॥
पापी आसा करति हैं कहि मीता मन मांह । जानति हैं अन्धेर है हरि बूझति कुछ नांह ॥
अधम उधारन जे कहैं ते सब भौंदू आंय । जे घट मीत बिवेखु है तिन्है मिलै हरि आंय ॥
अधमन नरकै डारई निरमल लेइ बचाय । हरि है बड़े बिवेखिया मीत मिला तेहि जाय ॥
अजामील औ गनिका सधना अधम ना आये । रही कमाई पाछली तब हरि लीन्ह मिलाये ॥
अधम मसखरा बहुत है कहि मीता जगु माँह । अधम उधारन सुना है ताते नहीं डेराय ॥
जानति हैं अंधेर है हुँआ है बड़ा नियाव । तेहि बल मीता गाजई बारु न बांका जाय ॥
जो कुछ चौदा लोक मां सो सबु हमरा आय । रामु दया ते पाइंया अब को लेइ छंडाय ॥
संतन का चीन्हा नहीं करै तरन की आस । कहि मीता ते नरक मा सदा कालु के पास ॥
पढ़ि पोथी पंडित मरा परा नरक के द्वार । तारन वाले सतगुरू मीता किया विचार ॥
सतगुर दाया नल बड़ा डारु बरन मा धूरि । मीत भली है दीनता जाते पाई मूरि ॥
चला बड़ा हो नरक का अन्धा मूर्ख गवांर । बरन भेदु हुँआ है नहीं हिया कीन्ह विस्तार ॥
जहाँ न छानु सो देखिये तहां न धरिये पाउँ । जो मीता धोखे परै ता विलंम ना लाउ ॥
सब देसन नल एक से कहि घटु हवै विवेखु । मीता मनु तहँ दीजिये अवर पसू कै लेखु ॥
जे घटु मीत विवेखु है ते हीरा कै लेखु । औरे कांकर पाथरी चाम चीकना देखु ॥
मीता दुरमति देखि कै नल के निकट न जाय । तिनते करिया सांप भल नाहक काटि न खाय ॥
नल अबूझ नाहक करै डारै जलमु बेगारि । मीता तिनका बारिये जे पगु धरै संभारि ॥
पापु पुन्नि दूनौ करैं कहते हम नहिं कीन । ते भोदूं छूटा चहै पैहै जिन जसु कीन ॥
भडिहा पर घरु मूसई कहता मैं नहीं लीन । राजा सूरी देति है सुन साधू परवीन ॥
गीता साकठु का पढ़ै वा गति अगम अपार । बिनु सतगुर ना पावई मीता हरि दरबार ॥
गीता बीजक हमार है साकठु बाचत काअ । मीता हरि धनु पाइंया दीन्हा गुरू मिलाय ॥
बरन अठारह हुँआ नहीं जहँ सांचा दरबार । मीता हुँआ एकुइ हवै झूठी कथै लबार ॥
सतगुर की दाया भई देखा औघट घाटु । भेड़ धसन जगु बूड़िया पंडित पारी बाटु ॥
पंडित की बातें सुने साकठ मोहे जाँय । सिरजनहार न खोजई जमुपुर बांधे जायँ ॥
मीता ज्ञान जब ऊपजा दीन्हा भरमु उड़ाय । कानि न राखै जगतु की हरि पुर चला बजाय ॥
साकठु कथनी बहु करै जानै ना कुछु भेदु । कहि मीता झूठी सुने होत करेजे छेदु ॥
गुरमुख जगु मा एकु दुई साकठु सब संसार । कान फुकाये का भये बिन पहुँचे दरबार ॥
घर बन की आसा तजी चरन कंवल की आस । मीता रहत सनीप है जग ते भये उदास ॥
ज्ञानी गुनी सब पचि मुये पाया ना वा ठांऊ । तंह मीता का मन बसै कालु चलै नहि दाऊँ ॥

रूप रेख पिउ कै नहीं है छवि अगम अपार । कहि मीता जो लखि परै बहुरि न आवै वार ।।
रूप अनूप महबूब का काया धारी नाहि । तन सोधै सो पाइआ सतगुर देहि बताहि ।।
ते जन तो गिरही रहे जे पहुँचे दरबार । कहि मीता ग्रह का तजे रहनी होय खुआर ।।
कहि मीता हरि ग्रह मिले बन का जाय बलाय । किये तपस्या नरक है दिन दुइ राज्य कराय ।।
मीता नजरि न आवई तीनि लोक की राजि । साहेब पाया प्रेम ते भाग्य उठा है जागि ।।
राज पाट का जे मरै ते नल मूर्ख अज्ञान । जमु की तलव छड़ावई मीता तेइ सुजान ।।
मरन होय नहिं मीत का बसा अमरपुर जाय । सहजे-सहजे पहुँचिया संतन किया सहाय ।।
सतगुर सेवा कीजिये मीता तन धन खोय । उनसे सो धन पाइये खीस न कवहुं होय ।।
मीता रोवै दुनी का चला नरकु सबु जाय । सांच कहे ते मारई सो दुख कहा न जाय ।।
पर आतम पहिचानिया आतम निरमल कीन । मीता दोउ मिलाइया छूटि गये गुन तीन ।।
पर स्वारथ के काजु का साखी सब्द पसारे । कहि मीता सांचे का मीठा झूठै के मुख कारे ।।
साखी सब्दी करै बहुतेरे जानै ना कुछु भेव । कहि मीता सब्दा सोई सार जहाँ प्रगटे हरि देव ।।
काम क्रोध बैरी बड़े तिनका करिये नास । तबु मीता साहेबु मिलै होइ अमरपुर बास ।।
महिमा हरि के दास की नलै न जानी जाय । कहि मीता जो जानिहै सो अमरापुर जाय ।।
जाति पांति हमरे नहीं नहीं काम नहिं क्रोध । मीता मिलिया ब्रह्म का मन कीन्हा परमोध ।।
मीता आवै तेहि समुझावै समुझे होय हमार । भै सागर ते पार करै तेहि परै न जमु के जार ।।
मनु माया मा रमि रहा करै भगति की आसा । कहि मीता मदिरा पिये कहु आवै वास सुबासा ।।
दिल बिच माया त्यागिये ऊपरि छाड़ि न देइ । कहि मीता तेहि दास का सतगुर दाया होइ ।।
अवघट घाटी अगम की चढी कहां ते जाय । एकु सांकरि दूजे सिलसिली मीत बिरल ठहराय ।।
अन्न छांड़ि बहुतै रहै बहुते जागैं राति । कहि मीता सतगुर बिना ज्यों धनुही बिनु तांति ।।
बाना भोंदू का करै बाना काठु न होय । सुरति निरति बाना करै आवागवन न होय ।।
ग्यान गुलेला मैं लिया मारा कुमितै तानि । सुमिता राम मिलाइया का करिहों जगु कानि ।।
राज्य करै नल सुखन का सुख सपने ना आय । मीता सुख संतन दिया अंग के दुःख मिटाय ।।
जुगुति भेदु जानै नहीं ते हैं बड़े अभागे । कहि मीता का भेखु बनाये जो नहिं हरि रंग पागे ।।
हरि घट ही मा पाइये खोजन गे बड़ि दूरि । कहि मीता सतगुर बिना मुख मा परिगै धूरि ।।
दोहा मीता दास का मानि लेइ जो कोय । तेहि सत लोक पठावई आवागवन न होय ।।
सब्द हमारा सो लखै जिनके प्रेम विरोग । कहि मीता कवि चातुरी नरक परैगे लोग ।।
ज्यों मीता पारस मिले लोहा कंचन होय । यों नल का सतगुर मिले हरि भजि हरि सा होय ।।
मीत मितैया नामु की छूटि न हम सो जाय । जो छूटै ता तनु तजों जोति मा जोति समाय ।।
गोपी लूटी कान्ह की आड़ न आया कोय । तब अरजुन बल कहँ गया करता करै सो होय ।।
कहि मीता अनभै भये पाखंड नहीं छपाय । जैसे दीपक के जरे वस्तु नजरि परि जाय ।।
मीता या मन नन्हा करू चरनन रहै समाय । सकल मनोरथु पूजिहै आवागवन मिटाय ।।
रामचन्द औ नन्द कन्हैया ई मानुख के बेटा । जो इनका करता कै जानी तिनका जमु की चोटा ।।
धरनी मूलै बांधिया ततु का किया विचारु । ब्रह्म अगनि अन्तर जरी जी का किया उवारु ।।
मीता संतन का मिले नासे सकल कलेस । सबु जगु बूड़ति देखिया कासो कहों संदेस ।।
सबद गुरू का ना लखै कथनी कथै अपार । कहि मीता ते बूड़िहैं भै की मांझी धार ।।

जौ लगि इन्द्री बसि नहीं तौ लगि मिलै न राम । साकठ भेदु न जानई कथनी सरै न काम ।।
जन मीता हीरा लिया पंडित लीन्हा कांचु । तिनते बातें का करो कहाँ झूठ कहँ सांचु ।।
बनी बनाई बन रही जहां ह्वै मति धीर । मीता तिनका हरि मिलै जे जानै पर पीर ।।
पापी पद चीन्है नहीं जे हैं आनन्द कंद । कहि मीता ते नरक मां परिहै जमु के फंद ।।
गुरमुख गुरमुख जगु कहै गुरमुख बिरला कोय । कहि मीता गुरमुख सोई जो राम सनीपी होय ।।
कहि मीता मन खोजना भारी है मैदान । पांचौ मारै रन जीतै पद पावै निरवान ।।
लोभी कूरा ना टिकै सूरों के मैदानु । कहि मीता कोइ सीस दै करै रामु का ध्यानु ।।
जीव जबै कै डारिया नाउ धरा दरवेसु । कहि मीता दरबार में कैसे जैहै पेसु ।।
लोक बड़ाई जे चहैं तिनते हरि हैं दूरि । कहि मीता उइ दीन का हैं है नैनन भरिपूर ।।
बिना प्राण की देहि ज्यों यों बिनु करनी ज्ञानु । कहि मीता सोइ दास है जा घटु हरि का ध्यानु ।।
करनी करनी जगु करै करनी नाहीं ख्याल । कहि मीता मनु बसि करै सो काटे जमु जाल ।।
साखी पदु बहु ना कहे जो भाखा सो सार । मीता केरे सब्दु का करिहै संत विचार ।।
नौका निरगुन नामु है गहै सो पारै होय । कहि मीता निरगुन बिना बहा जाति सबु कोय ।।
बिनु दरसन जे दास कहावै करिहै काकी सेवा । कहि मीता पाहनु का पूजै तेहि बतलावै देवा ।।
साकठु कारी कामरी चढ़ै न पिउरा रंग । मीता निकट न जाइये परी भजन मा भंग ।।
हम साहेबु के दास हैं मीता हमरा नाउ । नाउ गांउ हमरे नहीं अमर लोक का जांउ ।।
कोटि कोटि हत्या कटै जो सतगुर मति देय । नारि भोगु गुन का करै जो साहेब का होय ।।
नारि धसावै नरक को जो नारी पतिआय । मीता नारी का करै जो सतगुर मिलि जाय ।।
राम चरन चीन्हे नहीं गाइ मरे बहु कूर । कहि मीता करनी बिना होति नाहिं कोइ पूर ।।
जोरि गांठि कै साखी कीन्ही जो नहिं पदै समान । कहि मीता ते आंय मसखरा इनका नहिं परमान ।।
डारु डारु चोरा फिरै पात पात फिरै कूर । मीता मूलै पाइया हरि के रहै हजूर ।।
नारी कोउ दिन त्यागिये जौ लगि सधै न जोगु । जोग सधे साहेबु मिलै पाछे करिये भोगु ।।
कहि मीता नारी त्यागै त्यागु गरभु का बासा । आवागवन कालु की फांसी ह्वै छिनो छिन सांसा ।।
मीता मत सतगुर दिया भया राम सो जोगु । नारी मन की जो मिलै तासो करिये भोगु ।।
मन कबहूँ न बसाइये नारी केरे पास । अन्तर डारी राम सो याते रह्यो उदास ।।
तन सोधन मन बोधन जो सीझै या काजु । मीता नजरि न आवई तीनि लोक की राजु ।।
साचु कहे जगु जरि मरै झूठी बहुत हिताय । सांचन की निन्दा करै पाखंडु पूजै जाय ।।
सुरति निरति ऐसी चढ़ी चढ़ी जाति ज्यों चंग । अमर लोक मीता गये लगा राम सो रंग ।।
दुलहिनि होय कै बैठु रही है ब्याहु भया है नाहीं । कहि मीता काके संघु सोइहौ कौनु पकरिहै बांही ।।
बाकी बानी अगम की मीता लखै न कोय । जो बानी का लखि परै आवागवन न होय ।।
चित उतरे चित ना चढ़ै कीन्हे कोटि उपाय । मीता या गति संत की जगु टूरै जुर जाय ।।
तोरि मसखरा फिर जुरै सुज्जन मिला ना जाय । मीता ज्यों मानिक फूटा केहि विधि जोरा जाय ।।
खांय सगौती पंथु बतावै ई साहेबु के चोरा । नरक कुंड ते ई ना निकरै मानि लेउ मत मोरा ।।
बानी बूझै संत की तरना नाहीं दूरि । पाँच पचीसों बसि किये मिलै सजीवनि मूरि ।।
हारी जीती जगतु भुलाना ताते पारु न पावै । मीता छूटा दीन गरीबी बहुरि न भ्रम जल आवै ।।
हरि कारन लोहा तजा पाई कंचन खानि । कांकर ते हीरा भये कीन्हा आपु समानि ।।

अगम अटारी मनु गया अबु जगु आवै कौन । अमर भये अबु ना मरौं मीता मारगु तौन ॥
संत चरन की रेनु की मीता के है आस । जिन सेये हरि पाइया भये अमरपुर बास ॥
पवन चढाय सुन्नि का खोजे या तो भक्ति नहीं है । सहजि सुन्नि मा मीता पहुँचा होयगा ब्रह्ममयी है ॥
तीनसो साठ किया तपु ऐसा जाते मिले गोपाला। अब जोगी होय भोगि करति हैं मीता का मत आला ॥
हीरा मँहगे मोल का रहा छारु लपिटाय । कांकर बांधै साल लै हीरा ना होय जाय ॥
यों सुज्जन माया बिना गरू सुभाय न जाय । कुज्जन घर मोती भरो सुज्जन ना होय जाय ॥
नैना तो सीतल भये लखि अनूप छवि राम । गरभु बासु ना आइबे पहुँचे अँसे धाम ॥
अकादसी अकटक लगी हरि चरनन सो प्रीति । मीता ग्यारसि ना रहा चला जगत ते जीति ॥
जो काशी कहि गया जुलहा सो तो है टकसारी । मीता ताकी थापु करति है वा पहुँचा दरबारी ॥
देखि-देखि सब कही जुलाहे सो तीनिउ ना पाई । मीता ताकी साखि देति है या ख्वाहिंद फरमाई ॥
गीता बेदो ना लिखी सो कह गया जुलाहा । तीनिउ देउ जहां नहिं पहुँचे तहां की थाही थाहा ॥
औरि भली कै गया जुलाहा एकु ठांय वा सूता । किया जखीरा ले गये दानौ ताते भया कपूता ॥
ताते मीता बाणु बनाये खरे सानु के भारी । दानौ छुअत तुरत जरि मरते सुज्जन का हितकारी ॥
मुक्ति मीत के हाथु तीरथु बपुरे ना करै । कै ले सब्द विचार जाते जिउ तेरा तरै ॥
गंडक सुत का करै भरोसा ता पाहन का आही । रामु बिसारि तरा सठु चाहै बुड़िहै भैसिंधु माही ॥
सूकर स्वान खरौ ते होइहैं जिन नहिं बान बिचारी। कहि मीता हम हरि के चाकर समुझो मूर्ख अनारी॥
छूटे मलिन विकार सुक्रित साबुन देयकर । मीता मन लिया धोय मिले जाय करतार का ॥
हम केवट भैसिन्ध के खेय लगावै पार । सो मीतै पहिचानिहै जहँ नहिं मलिन विकार॥
धनुक तोरि सीता का व्याहा भा अभिमान पसारा । ताही दोखु हरीगै सीता न्याउ करै करतारा ॥
आनि देउ का ध्यावन लागा विसारी सिरजनहारा । देखु लगाय रावनै मेटा अवरे के सिरु डारा ॥
रावण रामचन्द्र झगरा लगाया कीन्हा धनी तमासा । दूनो का ही हाथु लगाया पाछिल गांस निकासा ॥
छांड़ि नीद औ भूख पांच पचीसों वसि करै । कहि मीता अस जोग येही ते जिअरा तरै ॥
दासन के हम दासु हैं आहं दीन बहाय । मीता हरि सो मिलि रहा जगु सो बकै बलाय ॥
तोरा पाया ज्ञान का ताते दिया ढिढोर । काम क्रोध भौंदू करै जे हैं पूंजी बोर ॥
तोरा मेरा ज्ञान का हरि सों रहों अधीन । पाखंड मूंदि न राखऊँ यहै संत का चीन्ह ॥
आदि जोति वारू हवै परम पुरुष है पार । अगिलाई मा जरी वारू सबु हवैं मवासी पार ॥
जगते भगते बैरु है आगे ते चलि आई । संत बानी बूझै नहीं ताते नरकै जाई ॥
प्रीति बैरु तिनके नहीं जे पहुँचे दरबारा । राह राह हाथी चलै कुत्ता भूखै हजारा ॥
ते निन्दा का ना डरै जिनका मता अगाधि । कहि मीता सठु मानवा नित उठि करै उपाधि ॥
परम पुरुष का जो मिला ताही का है गीता । पंडित केरा कुछु नहीं सांचि कहति है मीता ॥
भै सागर मा आय परा ता बूड़ि जात ता मीता । सत्य नामु गुरु पूरे दीन्हा याही ते जगु जीता ॥
माटी ते सबु ऊपजा माटी जाय बिलाय । गहु घाटी सत नामु की जाते नरक न जाय ॥
तन का काह गुमान है का हीरा का लाल । कहि मीता हरि भक्ति विनु सबै हवैं कंगाल ॥
मरै तेहि मर जानि दे अबु न मरै जन मीता । राम सजीवनि सतगुर दीन्ही काह पढ़े भा गीता ॥
चना चावि हरि नामु लै दुख सुख दूरि बहाय । कहि मीता पिउ का मिले तोरै सबु कुछ आय ॥
बेदु पुरान पढ़े का पाये भगति न हाथै आई । कहि मीता चौरासी भारी तिनते कौन छड़ाई ॥

जग जीवन धंग जीवन सांचु न हृदय समायं । काटि कूटि साखी करै जगै देइ भरमाय ॥
तिनकी पलक न लागई जे पहुंचे दरबार । कहि मीता गति हंस की जानै काह लबार ॥
बिरध न होय सरीर, मुख लाली छाई रहै । उइ मीता मति धीर, भक्ति भाउ तहँ ही रहै ॥
कथे काह सठु होय, जो करनी नाहीं कोई ।
काहि मीता करनी है सोय, जाते गोविन्द मिलिहै लोय ॥
मूरुख सो नहिं बोलिये जहां नहीं है बूझि । सुज्जन का परमोधिये मीत परै तेहि सूझि ॥
साकठु का मनु कीचु ज्वों तहां न धरिये पांउ । मीता निरमल देखई तहां बतावै भाउ ॥
ज्ञानी का परमोधई अज्ञानी सो चूप । चलनी का मन ना छुअै मीता का मत सूप ॥
कथनी कथि दुनिया ठगि खाई हरि का रंग नहिं लागा ।
लोभ मोहु गुजें घटु भीतर परिहै नरक अभागा ॥
जैसे टाटी बधिक की छापा माला सोय । कंठी फांसी डारि कै खाया जगत निचोय ॥
सकठु देखि ना बोलिये चकरै रहिये मीत । भजन भंग परि जाति है तजिया पापी धूत ॥
सब्द बिवेखी मानवा तिनका मत है न्यारा । भोदूँ ते नहीं बोलना मीता चुप्प विचारा ॥
सब्द विवेखी पाइहैं हरि भक्तन के भेदु । मूरुख कबहुँ न पाइहै करै करेजे छेदु ॥
साहन के घर दिया वारि दैं चोरन सो ना बोलै । कहि मीता सुज्जन के आये रामु गठिरिया खोलै ॥
संत सभा का ना लखै जेहि घटु भारी पापु । अन्त काल ते रोइहै दैआ माई बापु ॥
सुज्जन मेरा खोजिया मैं सुज्जन का मीत । भै ते पार उतारिहौं होई जगु का जीत ॥
बड़ा बड़ाई ना तजै वोछा अैढ़ा जाय । तिनसो मीत न बोलिये जिनका बुरा सुभाय ॥

दोहा अरजी कै

अधम उधारक हरि नहीं मीता पापी नाउ । भली गरीबी सुधि लई अबु ना जमहि डराऊ ॥
कहै मीता हरि सो बनै का जगु करै रिसाय । दास कबीरा कारने साकर छोरी जाय ॥
जन मीता का बीनती जहँ जहँ हरिजन होय । चरन चितै ठाढ़ा रहों या औसर कब होय ॥

दोहा मुसलमानी पर उपदेश

जीव मारि कै करै अहारा, तिन पर चलिहै आरा ।
कहि मीता तेई हैं काफिर, जिन सिर भारी भारा ॥
चाहै तेहि अपना करै राखै तिसै हजूर । कहि मीता कैसे मिलै बिना गुरू औ पीर ॥
पीर सोई जो आनि मिलावै सिख्य सोई सिरु देय। कहि मीता ई दूनों भारी ई झूंड़न ना होय ॥
जेहि बन्दे के सांचु है अल्ला तहां हजूर । मेहरि बिना नहि पावई मेहरबान औ पीर ॥
साहेबु सब महलन बसै तू केहि करै हलाल । जेहि बन्दे तेहि मारई क्योंकर होय खुसहाल ॥
नेकी भिस्त बदी है दोजख तहकीक करो रे भाई । मुल्ला पांडे दोउ भुलाने जिउ पर छुरी चलाई ॥
दोजक में तेई परै जो काहुइ दुख देंई । कहि मीता दरगाह में भला तफाउस होई ॥
दोजक नरक बतावई हिन्दू मुसलमान । कहि मीता सोहा करते हैं परति नहीं कुछ जान ॥
मन मक्का का खोजु करु सहजै मिलै खुदाय । कहि मीता तजु बदी का अबु ना गोता खाय ॥
बकरी मारत दरद ना लागा नाउ धरा दरवेस । कहि मीता साहेबु है हक तहां न जैहै पेस ॥
काफिर तेई कहावई जे जिव जवै करावै । जेहि ध्यावै तेहि मारई भिस्त की आशा लावै ॥
हिन्दू मुसलमान का मजहम दोनों देखौ भाई । उन पटकी उन जिम्है कीन्हीं साहेबु क्यों सुख पाई ॥

दोजक नरक बतावते दोनों उठै रिसाये । कहि मीता तहाँ जाति हैं अपने पायन धाये ।।
उइ काफिर उइ कहैं मलेच्छा, जानि परै नहि है धौं कैसा ।
काफिर बदी बेदरद मलेच्छा, कहि मीता दूनौ उपदेसा ।।
मुलना पंडित दोऊ ते हरिजन का मत न्यारा । अल्ला अलख खुदाय ते मीता होय ते पारा ।।
हिन्दू मुसलमान दोऊ मां जे पहुँचे दरबार । कहि मीता ते एकु हैं मानि लेउ अतिबार ।।
रोटी टूका जुदा है ह्वै बन्दगी एकु । मीता तिनके कदम पर बारि बारि सिरु देतु ।।
मियां मेहर मन आनऊ ध्यावो असल खुदाय । कहि मीता दिल खोजि ले वा नहिं अनतै आय ।।
राम राम सोइ रामु है सिरजन हार खुदाय । कहि मीता दोउ एकु हैं जनि कोइ जाय भुलाय ।।
खाकै मा तनु मिलैगा खाकै का तनु आय । साहेबु सब घटु मा बसा और न दूजा आय ।।
काया महजती अजब है तहां बन्दगी कीजे । कहि मीता सहजे पिउ पावै दोजक भिस्त न लीजे ।।
दोजक भिस्ती त्यागि कै करौ निनारा ख्याल । कहि मीता पिउ चीन्हि ले और दोउ जंजाल ।।
जो तू नन्हा होय रहै मुरसिद का सिरु नाय । पांचो मारै जुगति ते अैनि मेहर होय जाय ।।
पांच मारि मनु धोइले पाक होय तब दीन । मैला कपरा चहत है बातन उजरा कीन ।।
साहेबु का घर तबु मिलै छाड़ि बदी जबु देय । भली बुरी सबु की सहै मुरसिद का सिरु देय ।।
मेहरि नजरि जबु आवई तिन्है नाउ है पीर । नाहक जिव जे मारई ते काफिर बे पीर ।।
पंडित गाल बजावई मुल्ला करै पुकार । मेहर दया आई नहीं कैसे उतरै पार ।।
पंडित पाहन पूजई मुल्ला पुजै मसीदी । जीते का मुर्दा किया उलटी काढ़ी लीदी ।।
ज्वाबु न आवै दोहूं का जब पूछैगा पीउ । घटु घटु अल्ला रामु है क्यों मारा तू जीउ ।
कहि मीता हुआ हक्क है साहेबु के दरबार । नाहक जिव क्यों मारिया बंदा की गुना गार ।।
जीउ जंत्र पर मेहर दया करु दुख ना काहू दीजे । कहि मीता गुरू पीर सेइकै साहेबु सो मिलि लीजे ।।
राजी करौ खुदाय का मेहरि नजरि मनु आनु । कहि मीता तेहि मिलति हैं जिनके मुरसिद ध्यानु ।।
मुरसिद तिनका नाउ है जे रहते दरबार । बांह पकरि बतलांवई अल्ला केरि दिदार ।।
दोहूं दीन से मुरसीद न्यारा, खाय न मुर्गी मारि ।
जीव जंत्र पर मेहरि नजरि है पिउ की लगी खुमारि ।।
दसवां द्वारा खोलिया देखा असिल खुदाय । चौदा तजि आगे गये फिरका दिया बताय ।।
दया मेहरि आई नहीं नाउ धरा गुरू पीर । मीता तिनका ना मिलै यहै चोट है बीर ।।

दोहा मुसलमानी में

हरू गरू चीन्हा नहीं काह कथै बहु ज्ञान । कांधु भरा ज्यों बैलवा बुसु तिनकी है खान ।।
सिन्धु ना तजै मरजादा संत जन हरू ना होंई । भली बुरी सहि लेंई क्रोध उइ काहुइ ना करई ।।
जिअतै मिरतुक जब भये तब भई रामु सहाय । बनते-बनते बन गई मीता जगु न सुहाय ।।
कंठी माला भरम है हम तौ कहा विचारि । जो झूठी कै मानिहै तासो जमु सो रारि ।।
माला तेरा काठु का घोरि दिई भुंइ माटी । जैसे बधिक जीव बधै का लिये कपट की टाटी ।।
किये हिमायत दुनी के हरी न आवैं हाथु । कहि मीता जहँ छानु है तिनके रहते साथु ।।
चारिउ बरन सूद्र हैं ब्राह्मण हरि का दास । मूरुख तो समुझै नहीं परा रहै जमु फांस ।।
संतन की हांसी करै पाखंड पूजै जाय । कहि मीता तेहि मनुख का नरकौ ठौरु न आय ।।
संत सभा तेई लखै जिनका धनी सहाय । मीता पूरे पापु ते हरिजन चीन्ह न जाय ।।
पियारे न्यारा ना करो न्यारा किया न होय । मीता ऐसे मिल गया नोनु पानी ज्यों लोय ।।

अभिमानी पचि-पचि मुये परे नरक मा जाय । जन मीता हरि पाइंया संतन का सिरु नाय ।।
गुनी आंबु लगावई स्वादु करति है कोय । बिनु करनी की कथनी बकते भौंदू लोय ।।
कथनी बदनी जगु करै करनी बिरला कोय । कहि मीता करनी बिना मरे मसखरा रोय ।।
पंडित पोथी बहु कही गहा न नौका नामु । बूड़ि गये तर बोर का परा रहा धनु धामु ।।
पढ़ना गुनना पोथिया ई उइले व्यौहार । मीता का अनभै भया जाते उतरा पार ।।
कागा ना पहिचानई हंसन केरी बानी । मीता हंसै हंस मिलि उपजै सुख की खानी ।।
जेहि कारन तीरथु करै जपु तपु संजम दानु । सो मीता निकटै मिले दूरि भये अभिमानु ।।
खोजु करैं ते सुज्जन बादु करैं ते कूर । मीता तत्तु बिचारिया पहुँचा जाय हजूर ।।
अर्जुन फांसे क्रोध मां कान्हा फांसे काम । तहां ज्ञानु कैसे रहै गीता है निःहकाम ।।
रामचन्द्र देही तजी तेइ मथुरा भये कान्ह । गरभ बासु छूटा नहीं ई नहीं संत समान ।।
नैनन सुरमा कै दिया कै कर्री करी कमानु । याको भेद बतावई कहि मीता सोइ जानु ।।
आगि लगाई इस्क की ताते सुरमा दीन । पिया पियाला मनु छका कर्री कमनिया कीन ।।
खूनी बादी एक सबु मीता ह्वै अकेल । जबु हाकिम लेखा करी को पहरी धौं जेल ।।
बवै बबूर दाखु फल चाहै कैसे हाथै आवै । कहि मीता हरि अन्तर जानी तिनते काह छपावै ।।
संत संत सबु एकु हैं मीता कहैं विचार । बारि मिले जलु एकु भा कोटिन आई धार ।।
बारी का बारी मिलै नाउ मिले का होय । आनि झूंड़ का ना मिलै कहि मीता नल दोय ।।
एकै नरकै जाति हैं एकु रामु मिलि जाय । ताते मीता दोय हैं जगु का समुझि न जाय ।।
प्रीति रामु सो राखिये चलिये चालु विचार । रामु मिलैं दुख बीसरै छूटै जमु की रारि ।।
पंडिताई कवि चातुरी सरी न एकौ काम । बिना भक्ति भगवान की तनु धनु कौने काम ।।
काह जगत के वैरु किये भा काह जगत की हांसी । मीता मिलिया रामु का टूटी जमु की फांसी ।।
पेटै का भेखै धरा हरी नामु ना जाना । मीता कहैं विचारि कै तू है स्वान समाना ।।
विद्या सवै अविद्या बिनु भेटे भगवान । मीता विद्या सो पढ़ी पदु पाया निरवान ।।
सतगुर की सरना तको काह पढ़े भा मीता । मानुख जलमु न खोवई जलमु जाति है बीता ।।
मनु लागा करतार सों छबि रहि नैन समाय । कटुक बचन मीता सहै जगु पर सहा ना जाय ।।
खोद खाद धरती सहै काटि कूटि बन राय । कटुक बचन हरिजन सहै जगु सो सहा न जाय ।।
मीता खुलि कै नाचा घटी नफा दी खोलि । सुज्जनं का अपना करैं मूरुख देते ठेलि ।।
बड़े बड़ाई पचि मुये छोटे उतरे पार । मीत बड़ाई तबु सही जब बाँह धरी करतार ।।
भली गरीबी मीत कहि जाते उतरे पार । होति बड़ाई जगत की जिअरा होति खुआर ।।
मनु लागा हरि चरन मा जगतु करति है हांसी । सतगुर की किरपा भई कटी कालु की फांसी ।।
जग्गी दानु तीरथ करै मूरुख भटकै जाय । करु सतगुर की सेवकी भै ते देइ छड़ाय ।।
जीव वध करै ते असुर हैं चले नरक का जाय । मीता जगु अन्धेर है बकि-बकि मरै बलाय ।।
नित उठि हत्या लागई करै तरै की आस । मीता इनते दूरि रहु बैठु न इनके पास ।।
मांसु मछरिया खाति हैं ते सबु एकै आय । भिन्न-भिन्न कहि का भये हैं तो एक सुभाय ।।
परम पुरुख अभिनासी मीता तिनका दास । मूल छाड़ि जो डारन ध्याई तिन्है नरक का बास ।।
मीत कहै सो मानिले जाते नरकु न जाय । रामचन्द कान्हा कोटिन भे करता एकै आय ।।
जीव जंत्र सबु नरक परतिहैं रटि चौबिस अवतारा । करता का विसराइ कै तरा चहैं भै पारा ।।

सुज्जन है सो अंस हमारा कै देवे भै पारा । मूरुख केरे निकट न जइवे वहि का कालु दुआरा ॥
साखी मीता दासु की सबु गीता का जीउ । मदन जारि मनु बसि करै पाये अपना पीउ ॥
दाता दानी दोउ जमु खाये जे बाचे ते कौन । कहि मीता सुनु पंडिता पढ़े ते भला है मौन ॥
विद्या सवै अविद्या बिनु भेंटे भगवान । मीता विद्या सो पढ़ी पुरुख मिला निरवान ॥
तेतिस तीन अठासिया औ चौबिस अवतार । कहि मीता सबु भरम है ख्वाहिंद है करतार ॥
तेतिस तीन अठासिया औ चौबिस अवतार । काल गाल मा सब परे बिन जाने करतार ॥
हम जोगी तेहि देस के तीनिउ की गमि नाय । अलख-अलख कै आये मीता अलखै गये समाय ॥
की हरि की हरि दासु हैं अन्धे अवर न कोय । जो औरे का जानिहै नरक बासु तेहि होय ॥
अँवरीक औ ध्रू पहलादा,सनक सनन्दन नारद ब्यासा ।
ई नहिं पहुँचे हरि के पासा ई हैं साधू, ई नहिं दासा ॥
सतजुग त्रेता द्वापर के सब परे कांटु की बारी । कलजुग मा हरिदासा होइहैं भै ते देइ उतारी ॥
पढ़ि विद्या पथरा भये लखा नहीं ततु ज्ञान । कहि मीता सुनु पंडिता नाहक करत गुमान ॥
वा विद्या सठु और है जाते कालु न खाय । जाति बड़ाई विद्या झूठी बिनु सुमिरे रघुराय ॥
गोरख भरथरी औ सुल्तानी तीनिउ पायानिर्वानी ।जन मीता या कीन बिनानी छाना ह्वै दूध पानी ॥
परस्वारथ दुनिया नहिं जानै जानै पराई हांसी । ताते फिर-फिर आवै-जावै परे रहे जमु फांसी ॥
तुलसी सूरा की कविताई ज्यों सेमर का फूल । वास न आवै फल ना लागै सो तन का है सूल ॥
तुलसी सूरा की कविताई भोदुंवन का हितकारी । सुज्जन हैं ते नालिसि करिहैं मीता क़ही विचारी ॥
मै जानों पिया दूरि हैं सतगुर दिया बताय। कोटि जलमु का पंथु था मीता अबही पहुँचा जाय ॥
परम पुरुख अभिनासी सोई करता आय । अउरे का जनि ध्यावै जैहै नरक समाय ॥
नरक परै का डरु नहीं माया बहुत हिताय । पढ़ि पाती जगत रिझावै ध्रक तोरी जलनी आय ॥
किरिया जपु तपु संजम डिम्भु पसारा आय । परमेसुर ते विमुख हुंई दुनियां ठगि-ठगि खांय ॥
जहां डिम्भ तहां हरि नहीं कोटिन करै उपाय। जहां भक्ति तहां डिम्भ नहीं मीत कहैं समुझाय ॥
ऊपर बका ऊजला भीतर निपट मलीन । मीन का छै करति है सोइ पंडित का चीन्ह ॥
मीता साखी पद कहै पापी उठै रिसाय । निहचै नरकै जायँगे गैर बिवेखी आय ॥
चलु मन तहां बिलमिइये जहां होय हरि दास । हरि दरसन अव जीउ तरिहै होइ अमरपुर बास ॥
पंडित की उजराई ज्यों बकुले का ध्यानु । उइ मीन का छै करै उइ माया के ज्ञानु ॥
सोइ पंडित सोइ बिनु पढा दूनौ नरकै जाय । कहि मीता सो विद्या जाते नरक न जाय ॥
हरि के दासा ब्राह्मणा जाति बरन कुल नाहिं । पसुआ भूले जनैउ ते जानति हैं कुछु नाहिं ॥
गोरख भरथरी औ सुल्तानी ई जन ब्राह्मण आंय । ब्रह्म मिले बिनु बभनु न होई सगरे सूद्रा आंय ॥
अभिमान चलै ले नरक का सुनिले पंडित आय । सधन कसाई तरि गया दीन गरीबी पाय ॥
जगत बड़ाई डारि दीन है मिली राम की सरना । भै सागर के जीव भुलाने जानति नाहीं तरना ॥
कहँ मराल कहँ बका वापुरो कहँ भौरा कहँ गुजवा । तौलु न जानै आपनी हिसकि करति है भखुआ ॥
मन का कपट न छूटा जगत कहाये दास । ठगा करो तुम जगत का कालु लगाये घातु ॥
भेखु बनाया ठगन का ठगा तोहि नल जाय । पर घर खाते फिरति हो बैला होइहो जाय ॥
छापु तिलक भोंदू कहै है भगति की बात निनारी। कंठी बांधि ठगैआ चलि भा तुमरी बटिया पारी ॥
जगत रिझावै का मरै रामु रिझाय न जाय । कहि मीता ते मानवा नरकै मांझि रहाय ॥

जनेउ पहिर कै चन्दन दीन्हा मछरी लीन्हा हाथु । कहि मीता ते बभनु कहावैं जगु लीन्हे है हाथु ॥
चिकवा जौन कसाई करता करौ तौनि तुम पांड़े । जगत पुजाये बहु दुख पइहौ होइहो जमपुर भांड़े ॥
बरन अठारा लिये फिरति है भेदै नाहीं जाना । मांस खाय ते डमर चमारा पापन सो मनु माना ॥
साँचा साहेबु ध्याइ ले भली कहति है मीत । कालु बान ना लागिहै छूटी तेरी सचीत ॥
साखी सब्दी बहु करैं देइ आपना भोग । हरि की गति जानी नहीं नरक परैं तेइ लोग ॥
कंठी माला बांधि कै करैं मुक्ति की आसा । नरक बास छूटा नहीं नाउ धराया दासा ॥
सतगुर केवट सेइ ले भला परा है दाँउ । मानुख देह न खोवसि कै लै भगति उपाय ॥
चतुराई चौचन्द करै तोहि नरक लै जाय । विद्या सबै अविद्या ले चरनन चितु लाय ॥
मीता कहै विचारि कै कुल का दूरि बहाउ । ऐकुइ बरन सकल घटु व्यापै चरन कवल चित लाउ ॥
जो मीता हरि सो बनै का जगु करै रिसाय । सिंघ सरन जंबूक डर हिरदय नहीं समाय ॥
कीरा ते मानुख किया मानुख ते किया साध । साधू ते हरि जन किया मीता संतन पास ॥
छोटे ते ते रिल मिले बड़े न पावैं जान । जन मीता छोटे भये निकट मिले भगवान ॥
का हिन्दू का मुसलमान, बिना बन्दगी दोउ खुआर ।
मेहरि दया बिन होय न पार करै कसैयन गुनैगार ॥
काम क्रोध संसै का तैगा छाड़े मलिन बेकारा । सतगुर की सरनागति आये मीता उतरे पारा ॥
संतन का पद काटि कै देति आपना भोग । अचल नरक में ते परैं कहि मीता ई लोग ॥
कहि मीता हरि निकट है दूरि नहीं उइ आँय । ना जानी केहि पापु ते तीरथ भटकै जाय ॥
जगु काटन की बारि है मीता कहै विचारि । गड़ते विलम न लागई चलियो चालु संभारि ॥
भागि बिना ना चीन्हई कहि मीता हरिदास । जो चीन्है ता जानई पहुँचै पिय के पास ॥
सुज्जन सुनौ सन्देस अबु जागा भाग्य तुमार । हम बसि हमरा खसम बस जीतेउ तो संसार ॥
जौहरियौं की हाटि मा अंधरा पहुँचा जाय । पारिख वासों है नहीं सौदा कौन कराय ॥
खेतु नसाबा खरतुआ सभा नसाई कूर । भक्ति नसाई लालची केसरि भरिगै धूरि ॥
ना रीझै तेहि नल हवै रीझे करै निहाल । पियहि मिलावै बाँह धरि काटि देय जम जाल ॥
सुज्जन सो मत भाखै मुरखै देइ छपाय । मीता पारिख हाथु है ठगु के हाथु न जाय ॥
परदा खोली रीझ पर राखी हती छपाय । बाबू बैरीसाल जी रखिवे छतिया लाय ॥
सुज्जन के हम गुरु हवैं हैं मूरुख के दास । तौल तार जानै नहीं का बैठे भा पास ॥

दोहे

दुराय परा मैदान मा मारे पाँच पठान । अमर लोक डंका दिया पुरुख मिला निरवान ॥
बकसनहारे प्रभु हवैं मैं अवगुन की खानि । बाँह मिली समरत्थ की कौनि जगत की कानि ॥
लोभी सीस न दै सके जीता चह मैदान । मीता गल्लै बहु करै जूझै बिरला ज्वान ॥
खड़े भये मैदान में कूरा चले भगाय । जे ठहरे ते जीतिगे अभै निसान बजाय ॥
अपने मन की करनी आवै अपने काम । जगु हीतू मीता नहीं साँचा हितू है राम ॥
काम क्रोध की गरदनि मारी लसगर लीन्हा लूटि । मीता सहज सहज गढ़ पाया तौन न कबहूँ छूटि ॥

राग हिन्डोलना

दूरि देस गौना भया को सखि कहै सन्देस । पिय तन जुरा सनेहुआ छूटा मैका देस ॥

नैनन डारेउ टोनवां सुरति दिखाय। मितवा तपनि बुझाइउ छतिया लाय ॥
झूलिन अगम हिन्डोलना पिया के साथु। रेसम डोर लगाये दूनो हाथु ॥
नाकि हिन्डोले मैं गई चढ़ी महल मां जाय। पहिरत सुरंग चुनरियां रिमिझिमि बरखै आय ॥
लीन्ही निनग चुनरिया पिय सो नेहु बढ़ाय। अब डर गवा ननदिया काह रिसाय ॥
सूखि टटेरवा मैं भई अरे हरद बरन भइ देहि। जो पीतम घर आवइ अरि सखि प्राण भेंटु तेहि देहि ॥
झगरा छाँड़ु ननदिया री अरी होति अव्यार। मितवा रचा हिन्डोलना रे अरि सखि जैबे पैले पार ॥
नाउ नहीं डोंगवा नहीं अरे दरिया भरा अथाह। पैले पार मोरे मितवा री अरि सखी कौन थहैये थाह ॥
तीनिउ ठगु जगु लगई रे अरे वोऊ चले ठगाय।
मितवा चीन्ह पुकारई अरि सखी तिनका ना पतियाउ ॥
पच्छिम दिसि एक घाटी रे अरे सहजे-सहजे जाय।
भरम भीति का करिहै री अरि सखी हंसिन का गुन लाय ॥
नउवा बरिया तीनिउ रे अरे चारि कहार। भरम की भीति उठाई रे अरी सखी कैसे पिउ पासै जाय ॥
झुलुवा झूल ननदिया री अरी संघु भतार। छिया-छिया तहँ होइहै री अरी भैंटु जहां ह्वै ससुरार ॥
काजलु बेन्दुली दीन्हो री अरी घिनहिनी नारि।
पिया तन नहीं चिन्हरिया री अरी तोहि तन लागी भारी गारि ॥
झूली रंग हिन्डोला री अरी मितवा साथु। तुम झूलौ चौवाहा री अरी कोतवलवा लाई हाथु ॥
कलहिनी नारि कुलच्छनी अरी कीन्हेऊ सोग।
पिया के रंग न राचेऊ अरी तू बहु अभागिनी जागु ॥
तीनिउ रसिया भोगवइ अरी कलहनी नारि। पतीवरतु कैसे पइहौ री अरी तू विस्वा अनग भतार ॥
वंझटी गावै सोहरा अरी पूत पराउ। तुम कैसे पैइहो री अरी भेंटु बर व्याहे का दाउँ ॥
दूरि देस गौना भया अरी को सखि कहै सन्देस।
पिआ तन जुरिल सनेहुआ री अरी सखी छूटा मैका देस ॥

हिन्डोलना

नैनन टोनवा डारेउ री अरी सुरति लगाय।
मितवा तपनि बुझावइ री अरी सखी छतियां हथुआ लाय ॥
काहे का पर घर राचेउ री अरि सखि राम बिसारि।
छिया-छिया तोरे कजरा री तू बोरउ दोउ कुल नारि ॥
लागै आगि कजरवा री अरी ननंद गँवारि। खसम बिना ध्रग जीवन अरि तू विस्वा अनग भतार ॥
हीरा ननद गँवायेउ री अरी लीन्हो काँचु। झूठे सो मनु लायेउ री अरि तुम त्यागि अभागिनि सांचु ॥
पानी ते पैदा किया अरि जिन या गातु। सदा सनेहिया सोई री तू उनही के रंग राचु ॥
कालु वान कर लीन्हे री अरी त्रकुटी पास। तहवां ते हम बाचेनि अरि सखि पहुचिनि पिआ के पास ॥
अबहूँ जागु ननदिया री अरी सोवसि काह। कालु लिये कर फांसी अरि बहु आवति उठैहै दाह ॥
जरई मदन विरहनी रे अरे पिआ परदेस। हरद बरन भै देहिया री अरी सखी मैले होइगे केस ॥
मितवा गौना हो गया बहुरि न अवना होय। ननदी पिया न चीन्हेऊ काजर ते का होय ॥

बरवै

मितवा पार उतरिगा वार भुलान। आवागवन नेवारा भरम भगान॥
काहेका गयउ बबुर बन भा पछिताउ। छाड़ी मीत सेजरिया परा कुदाँउ॥
हरद बरन भइ देहियां निस दिन जागि। मितवा चितै दृष्टि भर गाँसी लागि॥
मोतियन मांग सँवारे बिधवा नारि। पिया तन करै सनेहुआ उतरै पार॥
मितवा प्रीति पिया सो लागि हमार। अब काहेका अइबे या बिख वारि॥
मितवा कौन सनेहुआ होइ चवाउ। ननदी है मोरी बैरिन केहि बिधि जाँउ॥
भौजी हम परदेसिनि तुम्हरा गांउ। जैबे अपने पिया घर परा सुदाँउ॥
मितवा सुरति तुम्हारी रहिन लुभाय। घर अँगना नहि भावै जगु न सुहाय॥
पिया की ऊँच अटरिया केहि बिधि जाउँ। ननदी है मोरी बैरिन चढ़त डेराउँ॥
कगवा रे मोरे भइया उड़ि क्यों न जाउ। मितवा केर सन्देसवा तुरति ले आउ॥
लूटति मोहिं बाधिनी नैन चलाय। मितवा चितै चरन हरि रहा बचाय॥
बरति चढ़ति जैसे नटनी कौन सहाय। मितवा कठिन अगमपुर बिरला जाय॥
बिनु पिय कजर लजावै सुनि ले नारि। कै ले मीत सनेहुआ छूटै गारि॥
आगे जाउ न पनिया सिन्धु गम्हीर। मितवा पार उतारा मति के धीर॥
सुन्दरि नागरि सुलच्छनी हँसि हँसि देय। मितवा सबु सुख छाड़े तेहि मनु देय॥
विखु की बेल ननदिया काजर देय। मितवा निकट न आवै रसु को लेय॥
पीतम हैं परदेसवा नदिया बीचु। ननदी घाटु न जानै बूड़ै कीचु॥
भौजी हमै दुख भारी पिया बिरोग। चितवत मनु हरि लैगा अस भा जोग॥
घाउ लगा बिनु खांड़े लखै न कोय। बौखदि मीत मितैया जो ढ़िग होय॥
नारि पूज बर घर का भँवरी देय। बर जारा दुख है या भाँवरि देय॥
मितवा कीन्ह सनेहुआ ननद चुराय। कौरे लागी झांकै जानि न जाय॥
ननदी जोबन गँवायोउ ढिकुलिन रोय। कीन्हेउ न मीत सनेहुआ धों कस होय॥
ननदी रसु नहिं जान्यो गोल गँवारि। ननदोइया तन यारी मितवै गारि॥
तपनि बुझानी तन की पिया संघु जागि। ननदी तुम्हरे कजरा लागै आगि॥
कानि न रही जगत कै जबु रंग लागु। जैसे मीत सबुनवा खोवै दागु॥
नगर के लोगु चवाई करइं कीच। मितवा सो मन लागा परै न बीच॥
ननदी मीत तुम्हारा कलुआ कार। हम पाया सुख भारी तन धन वारि॥
मितवा संघु सुखु बिलसै नारि सुनारि। रसु कै खानि उघारै सेजरी पारि॥
बानिनि बानि बिचारै जो पिय केरि। तौनी सेजरी सोवै मरै न फेरि॥
पहिरे कांचु ननदिया कंचन डारि। ताते रूठे मितवा हती गँवारि॥
बरवै बरुहउ लागे पीतम साथु। छतिया तपनि बुझाइनि दीन्हेनि हाथु॥
मितवा नैन सनेहिया ते लखि लेय। पहिरे सुरंग चुनरिया हँसि हँसि देय॥

खोजै गवन ननदिया बिखई जीउ । बिनु बाभन के पूछै मिलै न पीउ ॥
गाजु परै वा देसवा ननद जहँ होय । पिय तन अन्तर डारै बहु दुख देय ॥
ननदी लागों पैंइया धिग धरि जाय । गौने के दिन चालत उठै रिसाय ॥
मितवा परी ठगोरी रहिन उदास । तनु भया सूखि टटेरवा पहुँचिन पास ॥
अँचर उड़त मोरे मितवा हियरा दीख । तब ते भे रस लोभी परइ न बीचु ॥
ननदी राची मैंके अपनी खोरि । मितवा तिन्है न चाहै जहाँ है मोरि ॥
भौजी बोलै बोलिया मितवै लाय । जैबै अपने ससुरवै डरै बलाय ॥
हमरा मरा भतरवा ननद भइ रांडु । जैबै अपने पिया घर जरिगा दांडु ॥
लोक लाज तब छूटी जब रंग लागि । मितवा कीन सनेहुआ सबु डर भागि ॥
पिया की गयेउँ अटरिया उतरि न जाय । मिला नोनु ज्यों पनिया गवा बिलाय ॥
डोंगवा जाय न पारै समुद गहीर । चढ़ु जिहाज मितवा के लैहै तीर ॥
समुद पार मोरे मितवा तहां को जाय । नउवा बरिया बूड़े थाह न पाय ॥
भौजी मिलन पिया का हँसी न होय । तनु धनु बारे पावो जो सचु होय ॥
दोउ कर ताल बजावो ननदि हमारि । पिया का मरम न पायो कलहिनि नारि ॥
बालमु ह्वैं लरिकवा मैं हों लांबि । जुरै न मीत सनेहुआ बिन बिधि नारि ॥
सुरति लगी मोरि पिया से जगु न सुहाय । तेहि पर दहै भौजिया गारी लाय ॥
जरी जाँउ दह भीतर कौन बिचार । कहु सखि याका भेदवा तू बरि नारि ॥
प्रेम प्रीति बढ़ायेउ छाड़ि न देउ । हँसै नगर के लोगवा ना सुधि लेउ ॥
तुम्हरे सखी बहुत हैं राख्यो मान । तेही भरोसे पीतम भरिन गुमान ॥
हमरे और न दूसरि तुम्हरी आस । गुन अवगुन ना हेरेउ राख्यो पास ॥
हमका कौन खाद है तुमरी आस । करिया केरि खिलौना जग का पास ॥
लाज सरम सब पीतम तुम्हरे हाथु । गाढ़े बहुत उबारेउ दीन्हेउ साथु ॥
सिंघु नारि कैसे तानै सियरा आंख । हमैं भरोसा भारी पिछली साखि ॥
बहुतेनि कै पति राख्यौ बहिया देय । पीतम जस है जागत कहि को देय ॥
सिंघ नारि हो पीतम कस अकुल्यान । जो धरी बाँह सियरवा देवे प्रान ॥
बिनती करत खसम तन कुछ नहिं लाजु । माँगबु सुरंग चुनरिया पहिरबु आजु ॥

बरवै निरगुन

ननदी कजर सँवारै दिन औ राति । पिया का मरम न पायेनि कहती बात ॥
चढ़ि न सकौं गढ़ ऊपर मितवा दूर । वासु भीजिगे नैना जोबन धूरि ॥
मितवा लखा नैन भरि मनु भा थीर । बातन ननद न पावो सुख की सीर ॥
मितवा मिला सकल निधि रस की खानि । करिये भोग सेजरिये तजि कुल कानि ।
मितवा नैन तुम्हारे गड़ि गड़ि जाँय । हूक उठै मोरी छतियै रहि ना जाय ॥
झुर झुर भइन टटेरवा उनके सोग । नारी टोवै बैदा मिलै न रोग ॥
आगि लगी जलु भीतरि सूखे ताल । चढ़ी चढ़ाऊ मछरी बिनु जल धार ॥
देस देस फिर आँयउ मितवा काज । ते पाये सखियन मां छांड़े लाज ॥
भौंरी भइन पिया तन काजर देय । चंचल जाति नउनियाँ हिचकी लेय ॥

ननदी केर कजरवा अनखन देय। पिउ ना मिलै सेजरिया एकै लेय ॥
बिन पिय केरि सेजरिया लगै उदास। का भये कजर सँवारे हमरी सासु ॥
हमरे सजन बिरहय्या ना पतियाव। अंगिया के बंदु खोलिहैं तिन्है डेराव ॥
कोयली बोले महल मँ कौन अकास। जो या विगत बतावै सो पिय पास ॥
पिऊ न दीख ननदिया होइगै राँडु। धाइ फिरै गलियन माँ जैसे साँडु ॥
ननदी प्रीत न छूटै कठिन सनेह। मितवा ऊपर वारा तन धन ग्रेह ॥
ननदी जागै मितवा सुख भे हानि। एक घरी फिर आयो गै है जानि ॥
जलम जलम कै बैरिन ननद हमारि। मितवा के पां लागत लावै गारि।
जाति हवै तरनुपवा बहुरि न होय। कै ले मीत सनेहुआ सब सुख होय ॥
बाढ़ी बहुत बड़ैया कजर लगाय। ओसन भरै न घइलन बिनु सर पाय ॥
नउनी जोबन गंवायेउ कजर लगाय। मितवा मरम न पायो पर घर जाय ॥
बिन मितवा के नेहुआ सुख सबु झूठ। का भये चटक मुन्दिरिया खाये मीठ ॥
मितवा सुघर सुनरिया हँसि हँसि देय। मानौ हनै कटरिया मनु हरि लेय ॥
गोड़िया जाति अकासै डोरी हाथु। ऐसे मन का राख्यो सखियो पास ॥
ननदी लागों पैइयाँ निकट न आउ। मितवा हवै सेजरिया कलह बचाउ ॥
पिय बिनु जलमु नसायउ कलहिनि नारि। तीन पाँच रंग राच्यौ बहुत भतार ॥
बालम है बहु दूबरि मैं हों मोटि। जोबन घरैं न जानै निपटै छोटि ॥
बाँह पकरि जनि छाड़ेउ नगर चबाउ। तुम्हरे बल हन मितवा पार लगाउ ॥
अथवत मीत जुँधइया हंस पयान। वहै समय तब जानौ ठीक निदान ॥
मितवा मिले सनेहिया तपनि बुझानि। पहिरी सुरंग चुनरिया सोरहौ ठानि ॥
बिरह बानु मोरे लागिल जिउ अकुलाय। मितवा देइ झकैया ननद रिसाय ॥
मितवा मिले अंगनवा ननद रिसाय। नजरि नजरि गै बेधि कही न जाय ॥
बरवै बरहों मासु रे तपु अस कीन। पिय हित तन पियरा भा तब जित लीन ॥
सुरति लगी मोरी पीतम जगु न सुहाय। मितवा मिले सेजरिया रहिन लोभाय ॥
जागिउँ रे मैं जागिउँ सेजरी माँझि। भोर होत पौ फाटत अइयउ साँझ ॥
ठनगन करै नउनिया अरि काजर सेन्दुर देय। पती न जानै रे अपना बहुतन का मनु देय ॥
ठनगन झूठ नउनिया री पिया बिनु कौन सिंगार। पति के छाड़े छिया भई री गारी लगि लगवार ॥
नाउनि चतुर सयानी रे ठगै गँवारियै जाय। सखी होय सो जानै री या दुख कहां समाय ॥
मन मन फुलै नउनिया रे ठगै गँवरियै जाय। मीउ मीउ दै बोलै रे करिया सहजे खाय ॥
नाउनिया निरघिनिया रे घर-घर परति दसाय। मीठ करै जहँ पावै रे चितु रही तहां लगाय ॥
नाउनिया के परपंचु रे लखै न भोंदुआ लोग। काजर दै दै मोहे रे करै भले-भले भोग ॥
मितवा आये सेजरिया अरी हम भइन गुन जोगु। करिबे अनन्द बधइया अरी भला लगा है जोगु ॥
मितवा हो तुम्हरे ही कारन मैं भइ हालु बिहाल। दरसन पाये अमर भई छूटा सब जंजाल ॥
चांदन उये सेजरिया अरी हम तजिबे संसार। देखि लीन्ह है नैहर अरी सदा रहति है रारि ॥
देखि लीन्ह जगु लोगवा अरी नितहि लगावैं गारी। कैसे कै छुटै मितइआ अरी जिनते जियनि हमारी ॥
आजु की रैन बसन दे अरी हम परदेसिनी नारि। जइबे अपने पिया घर अरि जहाँ हवै ससुरारि ॥
भौंरी दै भावन मिला अरी दूरि भई तनु तापु। सुनिले बहन कुंआरी अरी कौन तुम्हारी थापु ॥

कीन्हे है मीत मितइया अरी घर घर होत चबाउ । तजौ लाजु अंग लात्रउ अरे हंसे नगर सब जाय ।।
सहजे जुरी है मितइया अरे हसें जहां मैं जाऊँ । अन्तउ भई कलंकनी अरे निकरै का नहिं ठाऊँ ।।
कैले मीत मितैइया अरि औसर बीता जाय । जोबन गये का करिहो अरी रहिहो मन पछिताय ।।
सोचे ठाढ़ गँवरिया अरि बिनु मितवा पहिचानु । कलह कलह दिनु बीते अरी छाँड़ी सुख की खानु ।।
मोतियन मांग संवारै अरी रसिया मीत हमार । तिनहि के काज हंसउवा अरी काह करै संसार ।।
नैनन काजल दीन्हा अरी सेन्दुर भरिगै मांगु । ऐसी है मीत मितइया अरी जगु मा लागी दागु ।।
गावति मितवा घरै गे अरी हमहु गोहनबा लाय । बांह पकरि सुख दीन्हेनि अरि राखेनि छतिया लाय ।।
जुलुम करै देखो ननदिया री कै कै बहुत भतार । पिय तन नहीं चिन्हरिया री अरी जरै तोर सिंगार ।।
सुनुरी ननदभइ आँधरि अरी केहिका कीन्हौ सिंगार । पहिरे चुरिया बंगलिया अरी देख्यौ ना ससुरारि ।।
पलक न लगै पिया लखि अरि ऐसा उइँ व्यौहार । अबहूँ समुझि ननदियारी फिर जलम न मानुख त्वार ।।
सीस देइ हम कीन्ही अरी मीत मितैया जोरि । तिन तन कैसे कै छूटै अरी करौ चुगलिया मोरि ।।
झटके तोरे ननदिया अरी बांह मिरक गै मोरि । कैसे कै चढ़ौ अटरिया अरी मोहि आस पिया केरि ।।
लाजु गई डर छूटा अरी मीत मितइया कीन । हँसै नगर के लोगवा अरी मैं भइ कुल की हीन ।।
दिया भरोसा रे मितवा अरे काह करै जगु लोय । अब तो हाथु बिकानेनि होनी होय सो होय ।।
कैले मीत मितैया अरी छांड़ि लोक की लाज । दुख तोरे जै है जलुम कै अरी सुफल होय सब काज ।।
सासु कहै बहु सुनिले अरी बाहर धरौ न पांउँ । बाहर मा एकु ठगु लगै बसै अरी करिहै दाउँ उपाउ ।।
ननदी सँकर खटोलना अरी दुइ जन कहां समाय । पलंगा होय तो सुतिये अरी मितवा लेउ बुलाय ।।
ननदी तुम्हरी बतियन मुरुखु सुनै चितु लाय । मरम न जानै सेज का अरी नाहक काजर लाय ।।
मूरुखु संघु न करिये अरी सुख मा दुख होय जाय । मितवा तौ करिये सुजनवा अरी जासो मन पतिआय
अवसर बीता मलिनिया अरी गा तरनुपवा दूरि । अबु कैसे पिउ पैहो अरी जोबन भरिगै धूरि ।।
बिखु कस खायो मलिनिया अरी छाँड़ि सजीवनमूरि।अब दुख पइहौ लहरिन अरी मरौ बिसूरि बिसूरि ।।
सेजरिया सुखु पाये अरी मितवा छतिया लाय । कैसे रहै तहँ लज्जा अरी जेहि घट प्रीति रहाय ।।
एकु मियान दुइ खांडा अरि कहु सखि कहाँ समाय । जहाँ है मीत मितइया अरी लाज कहाँ रहि जाय ।।
तेलिनिया ततु काढ़ै अरी भैंसी पीना खाय । काढ़ौ पंडित पोथिया अरथै देउ बुझाय ।।
पंडित पोथी रे पढ़ि भये कितना रहि गया बेदु । पिया का मरमु न पायो अरे करौ करेजे छेदु ।।
पंडित पोथिया रे देखु मोरे पिउ केतिक दूरि । जो ना खबरि बतावहु अरी तोरे मुख झुकिहौं धूरि ।।
पोथिया तो बाँची अगम की अरी जेहि पिउ पाया राज ।
अमर भइन न रे मरिबे अरी अमर मिला सब साज ।।
बरिया तौ बारै मसलिया अरी औरै का उजियार । ऐसे पंडित बरिया तिनही का अँधियार ।।
एक नउवा दुइ बरिया अरी रोक रहे हैं बाटि । तहँवा मोहिं बताओ अरि जहँ है अवघटु घाट ।
दुइ बाटी एकु घाटी अरी दुइ परबत के बीच । सुई अग्र होय निकरौ अरी तहाँ न कांदो कीच ।।
कांदो कीच दहों दिस सुज्जन चलेउ बचाय । निरमल घाटी अगम की अरि चढ़ि कोइ बिरला जाय ।।
अगम-अगम बहु नल करै चढै सो ऐकुइ दोय । कठिन हबै रे भाई अरी या ना खेडवा होय ।।
ऐसे तौ मिलन पिया का अरि ज्यों सागर माँ बूँद । कहु को ननद निबेरिहैं अरि को बामन को सूद ।।
चले जात मोरे मितवा अरि मिलिहैं सांकरि खोरि । ऐसे तो जुरिल सनेहुआ अरी कैसे डरिहैं तोरि ।।
मैं बंदी पैंया लगों मितवा के बारम-बार । काह करै जगु हाँसी अरि बरिहौं अपने प्राण ।।
जरि बरि मैं कोयला भई अरेमीत मितैया काजु । देखि न सकै ननदिया अरी चुगलिन ऊपर गाजु ।।

धन्नि-धन्नि वा बभनवा अरी जिन मिलि जुरा सनेहु । पिउ पाया आनन्द भा अरी पीछे होय सोहोय ।।
भटंवा तौ तौलै कछिनिया अरि तीन पाव का सेर । बारी मा ना उपजै अरी जानौ पंडित फेर ।।
जीवन कौनु भरोसवा अरे कबै पवन कढि जाय । ताते रामै भजिलै अरी औसर बीता जाय ।।
गोरिया तो तोरे जोबनवा अरि जाति न लागै वार । कैले मीत मितैइया ऐसा समौ न बारम-बार ।।
बैठी दुकान बननिया अरी सबका राखै मान । हँसि-हँसि करै ठगैइया अरी खोवे चतुर के प्रान ।।
कौन उदासे मा लोगरी अरी उठि जैहै तब हादु । फिर को करी विसैहना अरी जैहौ कौनी बादु ।।
गौने चली बहुरिया अरी महर-महर अंग होय । परमल बासा पलटै अरि जानै बिरला कोय ।।
ठुमरी तो गावै गोरिया अरी मीत गोहनवा लाय । धावै चतुर चिकनिया अरी हाथु मींज पछिताय ।।
गोरिया तो पहिरे मुक्तवा अरे बारों कोटिन भानु । ना उइ सीपन जगत के अरि जनिहै संत सुजान ।।
चालु चलै गोरिया गज अरे हँसि-हँसि फिर मुसकाय । कहुँ धौ दिष्टि लगाये अरी नैनन काजर लाय ।।
सखी-सखी की गति जानै अरि जानै नहीं गँवारि । जैसे चन्दन भिल्लनी अरी चूल्हे देइ जराय ।।
हमरे तो घाउ कठिन है अरे बैदु लगावै काह । अँगुरिन थाह न पाइहौ अरी दरिया भरा अथाह ।।
सासु कहै बहु सुनिले अरी जगु कटवा व्यौहार । समुझि-समुझि पगु धारेउ अरे ऐसे है निस्तार ।।
बिखु की बोली जगत है अरी कहँ है बास हमार । बिखु तौंही निरबिखु होइ है अरी जो राखी करतार ।।
सावन देस रे हरियरा अरि जेठवै धूरि उडाय । ऐसे जोवन थिर नहीं अरि ले पीतम अंग लाय ।।
जागति- जागति कसि गये अरे जोबन मदन जराय । अंगिया के बन्दु टूटे अरे मितवा छतिया लाय ।।
चंचल-चपल बरनिया अरि मारै नैन चलाय । चतुरन के घर घालै अरि पतरी डुभवै जाय ।।
ननदी के चौवाहे अरि बहु आवैं बहु जाँय । एकु ना आवै मितवा अरे जाते हियरा जुड़ाय ।।
हटके ना रहैं नैनवां अरी मितवा सुरति लुभान । काहेका त्रासै ननदिया अरी वारा तिन पर प्रान ।।
प्रेम बान उर लगिया अरि घर अँगना न सुहाय । देखे मीत-मितैइया अरी ननदुलि जरि बरि जाय ।।
नैना तो भये लालची अरे मीत देखि ललचाय । ननदुलि देखति तापै अरि सुज्जन देखि जुड़ाय ।।
कठिन है मीत-मितैइया अरि तन-धन बारे होय ।
जौहर होय ता छिनु एकु अरि या छिनु-छिनु दुखु होय ।।
जुरिगै मीत मितैइया अरि तहँ मन गया समाय । लोनु किरच सागर परी अरी कैसे कै कढ़ि जाय ।।
पानन मड़वा रे छावा अरे तेहितर भया बिवाह । ना बरु मरै न हम मरै अरी ऐसा पाया नाह ।।
गुनाह लाइ पिउ छाड़ी अरि ननद हसति है काह ।
पहिरेउ चुरिया बगलिया अरि तोरा कजरा करै उमाह ।।
कैले मितवा रे राजी अरे तोरे दुःख दंद बहि जाय ।
जोबन जाये भेंटु करु अरी तोहि लेइहैं छतिया लाय ।।
ना बैसाखु हनावा अरि ना कातिक ना माहु । राज्य अमरपुर पाया अरि अमरै पाया नाहु ।।
नहातिन माहु कातिकवा अरी होतिउं जल की मीन ।
छाडिन जगत बटुलिया अरी भइन मीत लौ लीन ।।
केरा के ढिगु जैसे बेरिया अरी हानि छिनो छिनु होय । सुज्जन का अैसे मूरुखु अरी समौ न जानै कोय ।।
चुनरी पहिरिन मनु माना अरि परिगै मितवा डीठ । तिनही के संघु रहिबे अरि लागति हैं बहु मीठ ।।
ना चाहों सुनवा रुपवा अरि न चाहों चार पटोरे । चाहों मीत मितैइया अरी जिन्हें मिले सुख सारे ।।
सूखि टटेरवा मैं भई अरि हरद बरन भई देहु । लगन धराई बभनुवाँ अरि पिया सन जुरा सनेहु ।।
दूरि देस गौना भया अरि सात समुद के पार । कैसे कै भै जलु आवै अरि नैहर छूटि हमारि ।।

ना चलै डोंगुआ न नैया अरि ना कोउ कहै सन्देस ।
बातन ना कोउ पहुँचै अरि दूलम पिय का देस ।।
चलौ सखी मोरे देसवै अरी जहाँ ह्वै सजीवनि मूरि ।
मितवा सो जुरिहै सनेहुआ अरि सुख रहिहैं भरिपूरि ।।
अबु जनि होउँ बैलवा अरी धनु दारा के नेहु । राम सुमरि सब मिथ्या अरि तनहू होइहै खेहु ।।
सपने के सुख काजे अरी आगे बहु दुख होय । राम सुमिर सुख सोई अरी अनतै ना सुख होय ।।
राम राम सबु जगु कहै पाये गरुआ होय । भजन सोइ जिअतै मिलै अरी काहे का आवनु होय ।।
ऊँचे चढ़ि मोहिरावा अरि मितवा बहु भाँति । है जोखिम चलु पिय घर अरी आवत आधी राति ।।
जागि जागि मन रांचा अरि मितवा सेजरिया जाय ।
देखि न सकै ननदिया अरि कलहिनि कुटिल सुभाय ।।
लेझुरी नहीं चली पनियै अरी कुअंना है बड़ी दूरि । पनिया हाथु न अइहैं अरी मुख मां परिहै धूरि ।।
मिलि ले सखिन का नागरि अरि कुअंना भरि ले पानी ।
लेझुरी ले औ गगरी अरी ससुरे की पहिचानी ।।
अरे अरे पंथ के बटोहिया अरे हमका देहु बताय । जहाँ बलम अमरैया अरि लागों तुम्हरे पांय ।।
हरियर तालु मिरगवा अरे काहे का अनमन ठाड़ ।
थोरा चरै बहुत चितवै अरी पराधी का दुख गाढ़ ।।
मितवा की भेटु जोवनवा अरी ले मिल सुखु होय । सोनवा रुपवा दुइ दिना अरी संघु न लागी कोय ।।

ठुमरी बानी गुपित संत जानिहै

सुज्जन तो सौदा करै सखियन केरि दुकान । नजरि सों नजरि मिलावै अरि मोलवा तिनकै प्रान ।।
इतते आवै गँवरवा अरि इतते उत इत जाय । उठी हाठ पछितानी अरि हारि जुआं ज्यों जाय ।।
खेलै कुँआरी गुडियन अरि पूँछै सखियन सो बात ।
गौने जाओ ता जानौ अरी मैं तो कहति लजात ।।
गौने ते आई रे दोनों अरी चितै चितै मुसकाय । कोउ ना कहै दोऊ जानै अरि सेजरी केरि सुभाय ।।
हरि हरि कहते जलमु गा गया न मलिन बिकार । पूछे काह बताइहौ अरि धर्मराय के द्वार ।।
छेगरी बैइठी बर तरे अरे भेडही पलटी पाय । महरम हो जो जानी अरि जिनका राम सहाय ।।
तालू सूखा बलु बढ़ा अरे मछरी करै किलोल । जानै जाननहारा अरी या मत ह्वै दुहेल ।।
काजर लागा बिनु लाये अरि सखि कारन काह । नैन पलक ना लागै अरे लाली सबु अंग माह ।।
गरभ न करिये गोरिया अरि जोबन है महिमान । जाते बिलम न लागी अरी या निहचै कै मान ।।
चले जाति मोरे मितवा अरे गगरी सिर धरि दीन ।
बाँह पकरि हंसि दीन्हेनि अरि मन मेरा हरि लीन ।।
गोरिया तो माँग सँवारै अरि मितवा झकैइया देय । करती है नजरि मिलौना अरी हँसि सरबस लेय ।।
लेउ हरी हरी चुरिया मनहरवा ठाढ़ दुआर । पहिर बाँह भरि गोरिया अरी जुग जुग राज तुम्हार।।
गांठी कोठी रे बहु बनी पहिर सुनरवा देय । पदम झलक्कै रे भुंइ पर अरी चितै चितै सुख होय ।।
नाक पहिरि नकबेसरि अरि सेन्दुर दिया लिलार ।
इतना पहिर चली गोरिया अरि रूप दीन्ह करतार ।।
छाड़नि छाड़िये अरे जस जलु छाड़ै कगार । नेह न छाड़ी ऐ सठ कै कै अरि सुज्जन का व्यौहार।।
कै लै मीत मितइया अरि जो कहिये करतार । जगु का कौन भरोसवा अरे बिछुरति लगै न बार ।।
आये मितवा न जान्यौ अरी औसरि चूकी नारि । ननदी का डर मानेउ अरी देख्यो न घूंघुट टारि।।

फुलवन सेज बिछायउ अरी मितवा कढ़िगा पार । जीवन जलम सुफल भया अरी लागति लागी गारि ॥
पीजे तो राम अमीरसु अरी बिखु तजिये संसार । दीजे तो तन धन तिनका अरि जौन लगावै पार ॥
काम क्रोध दल मारिये अरी सुमिता करिये न्यारी । कुमिता केर गोहनुवा अरी जमु सो होइहै रारी ॥
जोबन जात न जान्येउ अरी केस भये सिर सेत । कालु जाल नचिकाना अरि चन्द गहै ज्यों केत ॥
राम बिसारे रे पापी अरे धोखे जलमु गँवाये । कोटि सूर ससि वारों अरी सो घटही मा आये ॥
दुलहिन कैसे कै हुइहौं अरी पिया न भाँवरि कीन । कैसे कै भगतिन हुइहौं अरी रामु दरस नहिं दीन ॥
अन्ध-अन्ध परमोधिया अरि कौन बतावै बाट । तीन चारि भे महुतिया अरी टटिया भे हैं खाट ॥
सास ननद घर बैरिन अरि कैसे कै जुरै सनेह । आये मितवा बहुरि गे अरी बैरी भा तन ग्रेह ॥
बेचों मीत मितैया अरी गहकी कोउ न लेय । मोल सीस मोरे मितवा अरी लोभी सीस न देय ॥
समुझि-समुझि पगु धरियो अरे जगु कटवा व्यौहार । कठिन ह्वै ह्यां रहना अरी नीकी है ससुरारि ॥
कानि तो छुटी नगर कै अरी तुम घर आवहु जाउ ।
ननदि ह्वै मोरि आँधरि अरी बोलत करी उपाउ ॥
भया भरोसा रे मितवा तुम जनि तजौ सनेहु । भई है सहर बदनमियाँ अरि सुधि काहे ना लेहु ॥
कैसे मिलै मोरे मितवा अरे पनिया भरति डेराउँ । ननदि ह्वै घर दारुनि अरे निगर ह्वै नहि ठाउँ ॥
सुन्न सेज मन तरसै अरे मितवा मिले न आय ।
चुरिया बँगलिया सेन्दुरवा अरि धरि-धरि हमका खाय ॥
सखी होय सो जानै अरी कुँआरी जानि न जाय । औसर बीता जोबना अरि मितवा ना नजिकाय ॥
दरपन लै मुख देखिया अरे नैनन काजल लाय । पलक न लागै पिया लखि या बिधि रैनु बिहाय ॥
लाली तो चढ़िया ललन लखि अरे पदम झलक्कै भाल ।
जोबन कसे सुख पावा अरी पहरो मोतिअन माल ॥
सबु दुख दंद बहाये अरे भै मितवा गरे माल । सासु ननद घर नांही अरी जियरा का जंजाल ॥
आये तो आये हो मितवा अरे लै चलु अपने साथु । लाज सरम औ जियना अरे ह्वै तुम्हारे हाथु ॥
पीपर तर बतिया भई अरे बर तरे जुरा सनेहु । ननदि झंकै सिर पीटै अरी ओरहन घर-घर देय ॥
जैसे भई उजयरिया अरी तैसै आवै मीत । सेजरिया सुख पाये अरे गाये अनवन गीत ॥
अरे-अरे मनुआ कुमति तजि अरे भजु-भजु हरि का नाम ।
तभी जीयना सही है सुफल होय सबु काम ॥
परम पुरुखु अभिनासी अरी और न दूजा कोय । चौबिस औ दस ऐसे अरे जैसे सबु जग लोय ॥
जबु हम हतेन अन्धरवा अरे चलति हते जग रीत ।
अब गुरु दीन्हें री अँखिया अरे गिरगै भै की भीति ॥
अखियां तो पाई इतनिया जे अब गनि ना जाय । दीख परा सब जाना अरे सुनि कहै बलाय ॥
ठुमरी तो गाबउँ ठिकानी अरे जहाँ बसै मोरे पीउ ।
तिन पर तन धन वारा अरि औ वारा हम जीउ ॥
कीन्है तो मीत मितइया अरे घर अँगना न सुहाय । राँध परोसी बैरी अरे मितवा सकै न आय ॥
गैया कौन दुहावै अरि भैंसी सो मनु लाय । घुंघुंचिल पहिरे भिल्लनी अरी मोती देइ चलाय ॥
कैलै मीत मितइया अरी तन दुख सबु मिटि जाय ।
गुड़यन सुड़ियन अरझी अरी रहिहै मन पछिताय ॥

ऐंसी चालु चलिये गोरिया अरी जानि न काहुइ जाय। नैंन बानु लै मारै अरी वार पार हो जाय ॥
पाँचों के परपंचवा अरि सबु जगु रहा भुलाय । है कोउ वीर सिपैहा अरी मारै धनुख चढ़ाय ॥
चुइ-चुइ परै टकोरवा अरे जिअरा लहरी देय। कहत न बनै ननदिया अरि को मितवा सुधि लेय॥
आंखि मूंद का कीन्हेउ री कहहु ननदिया बात। खोलु घुंघुट लखि मितवा री अरी सीतल होई गात ॥
जुरिगै मीत मितैइया री अरी नैंना देंय निबोर। छतिया लाये दुख मेटे अरी जागति होइगा भोर ॥
गोरिया तो निकरी बँबुर बन अरि कंटवा गड़ि-गड़ि जाय।
उतै प्रीति मितवा सो अरी दुइ दुख सहे न जाय ॥
नैंना तो भये पराधी अरि लेइ बटोहिया मार। गोरिया तुम्हरी चितवन अरि ज्यों खांड़े की धार ॥
मितवा प्रीति तुम्हारी अरे घर अंगना न सुहाय। चितवत टोनवा कीन्हो अबू दैहो बोलु निभाय ॥
पीतम के बल बैइठ रही है तिनही पकरी बाँहीं। सेजि सोइ मीता सुख पाया अइवे जइवे नाहीं ॥
जीवन कौन भरोसवा अरे कबै पवन कढ़ि जाय। ताते राम संभारिया अरी औसर बीता जाय ॥
विन्दुली मोरी हिरानी हो ननदी तोरे झकझोर। अरी ननद तू टरि जा री कहिये बात निहोर ॥
हटकु न करउ ननदिया हो लागों तुमरे पांय। तोरे हटके का होइहैं मनु रहा मीत समाय ॥
तू समरथ तेरी नैआ हो केवट देउ उतारि। खेइ लगावो तहवां हो जहाँ है सुरति हमारि ॥
खोरि चलत जीउ कम्पै हो अपनी खोरि लजाउँ। तुमरो दरस मेरा जीवन हो जगु मां नाही ठांउ ॥
नैंना टक टक लागे हो मितवा रहा मनु छाय। सास ननदिया त्रासै हो आली करिये कौन उपाय ॥
मैका लगै सुहावन हो जब लगि ससुरे ना जाय। ससुरे के हो आयेन हो मनु औरे हो जाय ॥

बारह्मासी

चैत चेति धागा मनु लागा करम भरमु का मारगु त्यागा।
हरा लाल रंगु सेति अपारा धागा लागे कम्पै तारा।
घरु बाहेर तब बैरी लागा तीनिउ तीर्थ किये इक घाटा।
कहि मीता तनु तूरन लागा मानु गुमान तबै सब भागा॥

बैसाखै बसि मूल दुआरा जोगु जुगुति का पंथु संभारा।
छिनु-छिनु धागा पलटन लागा या धागा का काढ़बु गाढ़ा।
सतगुर सेइ भक्ति चितु लाई दीन गरीबी रहा समाई।
कहि मीता या बूझि बिनानी बिना बूझि भूले नल प्रानी॥

जेठु जुगति घर जागन लागी काया सोधै बिरला प्रानी।
कुमति गई घरु सुमिता आई कुंजी-कुरिल ध्यानु ज्यों लाई।
नदी नाउ माँ खैंचि समाई चक्र सुदर्शन देखा जाई।
ससा भूनि सिंघु का खाई मीता या मति गुरु सो पाई॥

अखाड़ अरध मा डेरा लीन्हा गरजै गगन नींद भई छीना।
भूख मारि गहि पाँच पठाना अचिरिज घटु ही मांझु समाना।
परबत अचल होय निजु ज्ञाना बिना भेदु का कथै पुराना।
मीता सांचा पढ़ै पुराना हम न मरबु मरिहै बहु ज्ञाना॥

सावन सुरति सत्य पुर लागी कोटिन दामिनि दमकन लागी।
ब्रह्म अगनि घटु भीतरि लागी मदनु झरै झरि पूरी लागी।
छिन्नु भया तबु जोगु डिढ़ाना अब गुन आवे कौने काजा।
या विधि भजन करै बड़ भागी कहि मीता जमु चोट न लागी॥

भादों बरषै नैनु अपारा नवों दुआरे लगे किंवारा।
दसवाँ खोलि भई उजियारी जुरा मरन का कागदु फारी।
सो जन करै ज्ञान का तोरा पाखंडु भेखु जगतु का बोरा।
कहि मीता सोइ ज्ञान अपारा जाते होय गरभु ते न्यारा॥

कुंआर कमल दल फूलन लागा जीव ब्रह्म मां जाई समाना।
बरै अगिन जमु जार नसाना अमर लोक का किया पयाना।
या मत गहै सो संत सुजाना नाहक कथे काह बहु ग्याना।
कहि मीता जबु या मत ठाना निरमल भया हमारा ज्ञाना॥

कातिक अष्ट कवँल दल फूला बाजै अनहद कोटिन तूरा।
उठै रागु सुर सब्द अपारा छूटन लागे जगु व्यौहारा।

छहौं भेखु ते या मत न्यारा गिरही बिरला करै बिचारा।
जन मीता कहैं तत्तु बिचारा भै सागर ते उतरा पारा॥

अगहन अग्र अमी रसु चाखा पदम पत्र कीन्ही अभिलाखा।
काम-क्रोध तहँ कपटु न देखा तापु गई सबु गये अन्देसा।
मुकतन संघु मुक्ताहल देखा कपटु दुआर मरे छा भेखा।
जन मीता ऊँचे चढ़ि देखा भेखु अलेखी धोखा देखा॥

पूसै पारसु परसन लागा धजा उलटी गुरु गमि के काजा।
ब्रज्रसिला का खोलन लागा खुले सिला के भे सबु काजा।
उत्तिम मध्यिम चीन्हे काजा जब ते रैनि अकेले जागा।
कहि मीता मनु सो मनु माना हमसो जगु सो नाहिन काजा॥

माहु महातम पिउ का जाना सहज सुन्नि मां जाइ समाना।
साँचा देखि साँचु मनु माना झूठी संगति त्यागै दाना।
रागु-द्वेष तबु दूरि पराना मैं तू किया खलन मुख थाना।
कहि मीता जे दास सुजाना तिनका जगु निन्दै बिनु ग्याना॥

फागुन फूलि परम सुख बाढ़ा खेलिउँ धमारि पुरुष के साथा।
शील-सन्तोष रहै अबु साथा चरन कंवल आये निजु हाथा।
तिनका नहीं गरभु मां बासा जे खेले सतगुर के साथा।
बिषै विकार तबै सबु नासा मीता तन मां करै बिलासा॥

दोहा

यही खेलु सब संत भे, यही खेल की मूरि।
कहि मीता खेलति बनै, सोई संत भरि पूर॥

पदावली

पहिले चींटी होय रहै गुरु का सेवै जाय सतगुर भेदु बतावई सो है कठिनाय।
समुदै डोगँवा ना चलै कैसे पारै जाय सिंधु खार है तहवां रे मीनौ होइ जाय।
दूध दही औ सहतु रे षिउ तेलौ बारि तहां हम भइन बिहंगम हो गये छठयें पार।
सतयें हरि तन गारा हो सो कहि ना जाय परखि-परखि सौदा कीई तहाँ गएन अघाय।
अठयें आठों पाँखुरी कवलों बिगसाय भँवरा होय गुंजा करै कहूँ अनत न जाय।
नवयें नै त्रिकुटी तरे तहँ पहुँचेनि जाय पदम पत्र पर साहेबु रे मिलि तपनि बुझाय।
मीन-पपील-बिहंग का मत सुनिले आय तीनिउ करनी जबु करै ले मंगल गाय।
साखी सब्दी बहु करै बहुतै ध्यान कराय मीता बासा तहां किया जहां विरला जाय॥

लगन धरी गुरु जबते मोरी हमका लागा मोह अब को फाफसि कूटै हो माया मोरि न तोरि।
पांचों का परपंच तजि दिया दिया पचीसो मोरि अरध उरध भौंरी भई गगन उठा घन घोरि।
आये चारि कहरवा हो चितु लाये डोरि जाय उतारेनि तहवां हो जहां ससुररिया मोरि।
पिया सो हिलि मिलि लोजे हो जीवनि है थोरि मीता मंगल गावैं हो जगु सो मन तोरि॥

तब वा घर का पाईयां गुरु सेये जाय तनु धनु मनु बारै करै छिनु-छिनु बलि जाय।
चौमुख कोयला लागिया भरा तागु भंडार छठयें बधुआ छूटई फिर अरधै जाय।
रवि शशि सम तहवां किये चितु अनत न जाय सहजे सहजे चढ़ि चलो जैसे मकरी जाय।
पहुँचे मजिलिसी देखिया आवनु मिट जाय सोई मिल सोई भया अैसा पदु आय।
कोटि भानु शशि वारिये पिउ ऊपरि जाय का काल जोरु तहवां नहीं जेहि जगत डेराय।
कुछु गुपिता हम राखिया सो कहि न जाय पूरा हो सो जानिहै वा गठबंधन आय।
कूरे का कूरा मिला दीन्हा भरमाय मरम न जानै अगम का रहे तारी लाय।
लखि उजियारी सुन्नि की रहे बहुत भुलाय मीता बासा तहँ किया जहाँ बिरला जाय॥

अरे अरे मूर्ख गवांर पंथु का कहै पंथु खाड़े की धार चले सो पदु लहै।
सतगुर अगम अपार रहनि गाढ़े रहै या मत पावै सोय विवेखै जो गहै।
कोटिन माँ कोई संत झूंड़न भरे नहीं सिंघु न सबु बन होय तो लाखन को कही।
भीखु मांगि सठु खांय ठगैअन का कही संत न धरई भेखु मीता जानि कही॥

सतगुर करै सहाय तौ पदु सो हित होय जागे सखियन भागि तो गुन का को गहै।
बारि सुहागिलि सोइ पिया ढ़िग ही रहै गावै मंगलचार तपनि तन ना रहै।
का भये कजरा दिये खसम जो ना चहै पहिरि काचु का पोत गलिन माती रहै।
खसमु खुसी ना कीन्ह जलमु ध्रगहि रहै मीता किया विचारि विश्वासी का कहै॥

सुनु ससुरे की बतियां घूघुंट टाटी टारियां अैसे पिउ ना पैइहौ का कथै गवारियां।
नदिया बीच भयानकी डोंगवा नाहि जाय उइ तो पइले पार हैं कैसे मिलिहौ जाय।

करु केवट सो नेहरा तब थाहै पाये सहजे सहजे उतरई जमुना टटु जाये।
होय सुहागिलि बावरी मागैं सो पाये मीता खड़े पुकारई कोउ समुझति नाहे ।।

सतगुर भये दयाल कहो का मांगिये सो विधि देउ बताय जो जमु ते बांचिये।
अरथ-दारा-भगनी-सुत पिता साथु ना जाइहैं माया के परपंच भरमि मरि जाइहैं।
गुरु के चरन चितु लाय तौ मनु न डिगाइये गुरु देवन के देउ भागि ते पाइये।
देइ मुक्ति फल दान रामु दरसावई अजर अमर एक लोक तहां बैठावई।
शिव ब्रह्मादिक रूरे पार न पावई सो संतन के संघ सहजि मिलि जावई।
भरम की भीति उठाय सकल जग फांसिया नांघै कोई सुजान फांसी तिन काटियां।
का जिभ्या के स्वाद पुस्तका बांचियां एकु मूठी भर सुखु सागर दुख पाइयां।
सुज्जन का उपदेश तो मीता सुनाइयां हमें परी पहिचान तौ मंगल गाइयां ।।

गौरी गनेस महेस तेउ अवराधऊ मूल नाम गहि लीन तौ अगम विचारऊ।
पाँच सखिन का परपंचु तौ चितते टारेउ उठै गगन गहिराय सहज घर पाएउ।
जोति सो जोति मिलाय जीउ का तारेऊ सुफल भये सबु काम परमपदु पायऊ।
दुःख दन्द भये दूरि ता तपनि बुझायऊ कहै मीता गुरु ध्यान जबै मनु लायऊ ।।

दीन हो तजु तजु लोक बड़ाई येहि सरिहै कुछ नाहीं
जौ लगि मान गुमान रे बौरे तौ लगि हरि ना पाई।
पातसाह बहु उमरा सैय्यद राजा रंक बहुताई निहुरि चलै सो द्वारे पैइठै ठाड़े कहां समाई।
कौन कुलीन धना रैदासा जेहि लीन्हा अपनाई बाजपेई जमु द्वारे लूटे सधना लीन्ह बचाई।
भली भई जगु हांसी करई मीता काजे आई जगत बड़ाई जियरा कांपै बाढ़ै मोरि छुटाई ।।

दीन के दुरमति कबहुँ न होई तहँवां सांचु बसोई जैसे ऊपर तैसे भीतरि जगु जानै कै छोई।
सुनि सुनि नवैं बहुत सठु लागे भीतरि भरी भंगोई चित्ता चोरु-कमान नवति हैं नये बिघुन करै लोई।
काह भये मीऊ दै बोले येहि बिधि दीन न होई जैसे मोर मीउ दै बोलै बिखहर लीले सोई।
असल दीनता जब घटु आवै राम मिलाना होई कपटु दीनता रामु न पावै उनते काह छपोई।
संत होय सो तोरा बांधै न्याउ करै बहुताई पाखंड तूरैं सुज्जन तारै हुकुम धनी का होई।
तोरा करैं ग्यान का हरिजन कहा मानै जो कोई का साकठ के गल्ले मारे बकुला हंस न होई।
तोरा करै सिंघु सब बनु मां आडु न आवै कोई
सियार करै तौ बलु कहां पावै बिघुन छिनक मां होई।
सब्द हमारा पार उतारै चालु चलै जो कोई मीता सत्य पुकार करति है चीन्हे मुकता होई ।।

दीनता भाग्य बड़े ते होई धन्नि धन्नि घटु सोई। काह भया सबका सिर नाये भीतरि भरी भंगोई।
सुनि सुनि नवै बहुत सठु लागे सांचु बिना का होई जैसे मोर मीऊ दै बोलै बिखहर लीले लोई।
ऊपर पाखंडु भेखु बनाया हरि ते काह छपोई कालु जन्जाल जेल गरे डारी जगु ठगियन कै लोई।
सांचे सुज्जन का गुरु मिलिया तहां न दुविधा होई कहि मीता संतन ततु लीन्हा साकठु लीन्ही छोई ।।

भला भा जगु मांं हँसी कराई सुपथ पन्थु सतगुर बतलाया खोजि मिली रघुराई।
लोक बड़ाई मै बूड़त ता सतगुर लीन्ह बचाई जारौं बड़ाइ मैं नहिं चाहौं जेहि बूड़ी दुनियाई।

दीन भये ते पार उतरि गे बूड़ि गई कुलुनाई पाहन की अभिमान नाव है को चढ़ि पारै जाई।
छिया छिया का सो डर मानै जो जगु बीच रहाई कहि मीता हम हैं परदेसी अपने लोकै जाई ।।

रामु की सरनि मिली सुखदाई छाड़ी लोक बडाई जाति-पांति का मैं नहिं चाहों ना चाहों कुलनाई।
बहुत अजाती पार उतरिगे बूड़ि गये कुलुनाई रामु भक्ति बिन सबै सूद्र हैं का पंडित का नाई।
सधना नामा दास कबीरा कहां हती कुलनाई चेतु अचेतु भक्त हरि प्यारा जिन या सिस्टि बनाई।
पाहन की अभिमान नाव है को चढ़ि पारै जाई कहि मीता बिनु दीन गरीबी बूडि जाति कुलुनाई ।।

बेगि गहु चरन सरन रघुराई दीनदयाल कृपा के सागर जन की करै सहाई।
धना सैनि नामा रैदासा पीपा सेवा लाई जन कबीर किया आपु बरोबर तिनका भजु रे भाई।
गोरख भरथरी गोपी चन्दा सुल्तानी मति पाई लोक लाजु दुखु मीरा त्यागा मिली झुंड का जाई।
कहँ लगि गनौ दासु हरि के बहु हरि ही कीन्ह बड़ाई या सुनि मीता संतन सेये जमु की जालु छड़ाई ।।

रामु की भक्ति दुहेली भाई कोटिन मां कोइ पाई पाखंड किये हाथु नहिं आवै का भये पद दस गाई।
पाँच पचीसों जब बसि होंई सुई सुमेर समोई हेला मारि अकास चढ़ै जब तब वा पदवी पाई।
काटि कूटि साखी पदु करता पर धन चोर लै आई साहन मां वा चोरु कहावै चोरन माँझि बड़ाई।
बहुतै गंदा पचि पचि हारे कथनी कथि बहुताई कहै मीत एकु सांचु बिना सठु पूँजी चले गंवाई ।।

भक्ति सरि और नहीं कुछु आही सठू का जानि न जाई
भक्त न बिनसै ब्रह्म न बिनसै और बिनसि सबु जाई।
चौबिस तीन दसौं अवतारा बिनसै और उपजाई काल त्रास सबहू के ऊपर रहिगे संत बचाई।
संत की महिमा संत ही जानै हरि जिउ महिमा गाई ना पतियाई गीता खाई सुकदेव साखि बताई।
जाति पाँति कुछु हरि के नाहीं तीनिऊ बिचलाई सोई पुनीत कहै जन मीता जा घटु भक्ति बसाई ।।

भक्त कोई बिरला रे भाई तेहि कालु ना खाई मिले रमिता रामु जिनका गने ते जाई।
नाचे गाये माला फेरे कुमिता ना जाई कुमिता घटु मां हो रही सो नरक लै जाई।
तिलक छापा बाँधि कंठी भूलि ना जाई लेइ धोती कान फूँकै ठगै तोहि जाई।
मिलै सतगुर तरै सोई होय कुसलाई कहै मीता छानु कीन्हा दीन्ह गोहिराई ।।

सबै सूद्र जहाँ भक्ति न होई भक्त पुनीत कहा शुक सोई
नारद व्यास कहा है सोई पसुआ भूले जाति बड़ोई।
झुठ चलावै सांचु छपाई साकठु का कुछु समुझि न जाई।
सुज्जन इनका ना पतियाई इनके संघु नरक का जाई।
अपने मुँह करैं अपनी बड़ाई भगवत भक्ति हँसी कै पाई।
ब्रह्म मिलै सो बभनु कहाई सो धना रैदासा भाई।
किरखी बैश्य सूद्र सेवकाई दाया क्षत्री मूल बताई
ई गुन मीता जेहि घटु होंई ब्रह्म मिलै सो ब्राह्मण कहाई ।।

रामु की भक्ति जो नाघटु होई तौ जरिहै अगिलाई माया मोह इन्द्रिन का स्वारथ ई सबु मिथ्या आई।
सुखु चुरवा भरि दुख सायर ते बहु काहे रहे लुभाई नल देही उबरन की बारी सो जनि चलो गँवाई।

का भये राजा राउ कहाये का कीन्हे पतिसाही का भये इन्द्रदेव सुर मुनि भये जो न जीव मुक्ताई ।
तजि अभिमान बन्दगी कै ले संतन का सिरु नाई जुगन जुगन पतिसाही तेरी मीता बिनसि न जाई ।।

राम गति समुझि परै धौं कैसे सतगुर सेये अैसे माया मोह की टूटी फाँसी मिरतुक होय रहे जैसे ।
मूल गह्यो डारन का छाँड़ौ बाँधौ पाँच पचीसो सुरति निरति की लगी खुम्हारी पियो अमीरसु अैसो ।
भेंटि ले ब्रह्म ज्ञान ततु उपजै जगु लागै तब फीको सोई भक्त जो या मत पावै माला तेरा झूठो ।
कहि मीता पसुआ सठु भूले सांचु कहि चले रुठो जब जमु मोगरा आइ लगाई तब ही परिहै टूटो ।।

लगा रामु सो नेहा, रे बाबा बिसरा तन धन ग्रेहा बादु विवादु के निकट न जाते अपना मारगु जोहा ।
छूटे मलिन बिकार देहि के छूटे जगत सनेहा चरन कँवल चितु जाय डिढ़ाना छबि देखे मनु मोहा ।
जा तनु लगी सोई तन जानै काह पढ़े भा दोहा बिनु हरि दरस परस यों करनी बिना प्राण ज्यों देहा ।
सिखवै बहुत सीख नहिं लेता दामन की बहु चाहा
जन मीता तेहि का समुझावै बिखै बनिज जिन कीन्हा ।।

हरि हीरा न बिसारौ साधो नौका नामु संभारौ काम क्रोधदल मारि जोरि कर सतगुर सब्द बिचारौ ।
अब तौ दाँउ परा है पूरा नल तन पाय न हारौ माया मोह काल का फंदा जतन जतन निरुआरो ।
मनु कर माल सुरति कर कंठी प्रेम छापु उर धारो या बाना ते साहेबु रीझै पाखंडु मन ते टारौ ।
मन का भटका समुझति नाहीं जो कितना कहि हारौ कहि मीता अबु भै ना बूड़े अबकी जिउ का तारौ ।।

राम नाम जाके मनु आवै सो रमितै तुरतै मिलि जावै
जीभ रटे रामै ना पावै, गाइ बजाइ जगत मरि जावै ।
छापु तिलकु दै जगु भरमावै कंठी माल काम केहि आवै
झूठे धरै सांचु बिसरावै ताते पसुआ भ्रमि भ्रमि आवै ।
भगत कहे ते बहु सुख पावै भै सागर की राह चलावै
सांचु कहे ते बहु दुखु पावै अैसे नल का को समुझावै ।
फाँसि लिये कनफुकवा धावै कान फूंकि कै ठगि ठगि खावै
अन्धे सो अन्धा मनु लावै बूड़े दोउ मीता गोहिरावै ।।

एकु राम दूजा ना कोई एकु कहै जगु लोई रे ।
दूजा कहै सो दुइ का जावा करौ तफाउस कोई रे ।
जो भूला ताको नरक बासु है आगे बहु दुख होई रे
तब या घटा कहति ना उपजी जबु जमु लेखा लेई रे
लगरा झगरा बहुत सिखि लीन्हे सीख लीन्ह ना कोई रे
बादु करै कुछु मरमु न जानै जलमु पदारथु खोई रे ।
झूठि हिमायति कामु न आवै मतलबु एकु न होई रे कहै मीता मेरे श्री साहेबु ताकी बांह बसोई रे ।।

रामु रसु पिओ रे भाई उतरि ना कबहूँ जाई जोगु जुगति ते भाटी औटी चढ़ी बहुताई ।
गई तन की तापु तीनिऊ नैन छबि छाई कोटि शशि औ सूर वारौं देखि सुखदाई ।
अंस आपन जानि तारै दीन गोहिराई काटि कालु जंजीर तिनकी देइ ठकुराई ।
धन्नि संगति संत की जहाँ सबै बनि आई कहै मीता भक्ति मारगु बिरल कोइ पाई ।

धनि सतगुर जिन कीन सहाई सुमिता संघु भेटे रघुराई ।
दीन गरीबी जब उर आई तब सतगुर सो जुरी सगाई ।
हरि की रीझ भक्ति ते पाई हरि की रीझ दीन्ह गोहिराई ।
या विधि चलै सो हरि का पाई हरि का पाइ कालु ना खाई ।
धरनि धरै सो छूटि न जाई काह जगत की किये हँसाई ।
सत्य कहे सो मारा जाई झूठे की जगु करै बड़ाई ।
काह जगतु की हँसी बड़ाई हरि चाहैं ता सबु बनि आई ।
जन मीता या निहचै आई अमर भये अमरौती पाई ।।

सतगुर तनकी तपनि निवारी जरति हता मैं संसैं चेटक लीन्हा आइ उबारी ।
रागु-द्वेष है जमु का अवला अंत काल दुखु भारी·गरभु बास है नरक दुवारा छूटै सब्द बिचारी ।
अनभै भये सकल व्याधा ते प्रीति लगी अधिकारी जागा अंकुरा तब हरि पाया सुमिता भली संभारी ।
साँचु कहे ते कोऊ न मानै झूठी या संसारी बोरनवाले साढ़ी पावै तारनवाले गारी ।।

पापु पुन्नि का मचा हिन्डोला झूले सब नर नारी सुर मुनि तीनिउ देवा झूले संतन की गति न्यारी ।
करम करै करता नहिं चीन्हैं सहि फाँसी गरे डारी ज्यों मरकट मूठी के बाँधे परा जंजीरन चारी ।
अबहू चेति अबूझि बावरे ना करु मोह मया री नर तन पाय करै जनि मिथ्या अब तरने की बारी ।
कालु कमान चढ़ाय रहाहै ताते करु हुसियारी कहि मीता गहु बेगि चरन हरि बार न लावैं यहि बारी ।।

खुरसट पगु दै चन्द छपावै को मूरखु समझावै जाकी जोति जगत उजियारी तासो बैरु जनावै ।
पर सूधा आंगुर चारिक का अपन तौल ना पावै दसौ दिसा कैसे कै रोकै तासो अन्ध कहावै ।
चौदा लोक परे एक सुन्दरि तेहि सुकरि खिसियावै सिंधु सुता का लोखरी झपटै हांसी औ दुखु आवै ।
मनमैला संतन नहिं चीन्हैं परे नरक दुखु पावैकहि मीता जब मानिक मिलिया तबको कांचु मुलावै ।।

अब मैं तत्तु मते बौराना काह करौं लै ज्ञाना ।
यहि तन केरी कीन मटुकिया जोगु जुगुति दधि आना ।
धीरज खम्भ किया जब निहचल कै पाँचों का डाँडा ।
तीनि गुनन की कीई कढ़िनिया रवि-ससि मथि ततु आना ।
करै पचीसों सेवा ठाढ़े जब मनु सो मनु माना ।
गरजै गगन होय कौतोहल संतन का बरदाना ।
छाड़ी छाछु मिला जब माखनु भा अलमस्त दिवाना ।
कहि मीता कोइ आदि सनीपी या रसु पियत अघाना ।।

हरि हरवा गरै डारा रे पहिरन भला हमारा रे ।
चितवति नैन अरझिगे छबि मां को करि है अब न्यारा रे ।
हीरा मोती लाल जवाहर चाहै सब संसारा रे
हम दुखिया सुखिया भये हरि सों और लगै नहिं प्यारा रे ।
जैसे रंक अंन धन पाये येहू ते मोहिं प्यारा रे ।
फूला फिरों जबै भरि देखौ भया भरोसा भारा रे ।

दिल के जानी मन के माली मनुहीं मां मनुइ समाना रे।
कहि मीता अनभै की बानी जानैगा जाननहारा रे।।

सति नामु छाका रे करम कागदु फारि डारा अगम ताका रे।
जोगु जुगनी विचारि मनु गहि भरम- भागा रे संक तजि निरसंक खेला प्रेम पागा रे।
नींद भूख विसारि टिसुना रैनि जागा रे ब्रह्म अगिनि उदगारि लीन्ही अमी चाखा रे।
बरै जोति विशाल सुन्दर मूल द्वारा रे खोलि खिरकी गगन पहुँचा जीव तारा रे।
अस्ट दल के कवँल भीतरि मिला प्यारा रे कौन मेरे जाये आवै पिया प्यारा रे।
कहौं कैसे देखि अचिरिजु दुःख भारा रे जानिहै जेहि पीर व्यापी जगत न्यारा रे।
कालु का गहि किया चेरा सांचु भाखा रे जिन देउ-सुर-मुनी असुर डाड़े अजब बांका रे।
दास मीता खेलु पूरा जोगु जागा रे रावला मिल भया सांचा चोर भागा रे।।

अब मैं गुरु संघु लाहा पायो ताते विमल विमल जसु गायो।
परा हता माया के फन्दे छोरि लिया करि दायो।
हता अनाथु साथु कोइ ना था बिना बुलाये जगु आये
दीन उधारन प्रण प्रतिपालन बहिया बोल बसाये।
दाता रामु और सब भिक्षुक दूजा नजरि न आयो
आनि देउ कबहूँ ना जाचौं चरन कवँल चितु लायो।
जाकी कृपा जमु ते बांचे गरभु का बासु छड़ायो।
मुक्ति विचारी पांउ पर लोटै मूल हाथु जबु आयो।
जारों या जगु केरि बड़ाई हरी हितू बिसराये
अमी छाड़ि विखु सो लै लावैं अंत तेई दुख पावे।
कौन काम धन धाम पिता सुत है सपना या माया।
खाय धतूरा मनौं बौराना ततु ज्ञान नहिं आया।
बिना विवेकु बूड़ि दुनियाई या संतन गोहिराया।
सांचु कहे ता कोऊ न मानै झूठे जगु पतियाया।
ज्यों दुरभिक्ष रंक का अनधन पाय बहुत सुख पाया
कहि मीता यों धनी हमारा सुख नहिं जाति बताया।।

कैसे कै रंग लागे हमरी ननद निगोड़ी जागै कलहिनि कुटिल रहै निस बासर सुमिता देखे भागे।
देखति संघु चतुर नारिन के मोहि बड़ा डर लागै ऊँच अटरिया चढ़त सजन की हियरा थर-थर कांपै।
चाहै पिऊ तजै जगु लज्जा हिलि मिलि पिउ संघु जागै घूंघुट टारि अंक भरि लावै नैन आरती साजै।
मीता सैन सुजान सखी की सखी होय सो जानै निजु पीतम की खबरि न पाई नाहक कजरा साजै।।

समुझि कै जागु रे मन मेरे सोये दुख बहुतेरे। सोवत सोवत जमु धरि खाई चौरासी दै फेरे।
हय-हाथी-नीसान नगारे छूटति लगै न बेरा बुंदक सुख सपन के काजे हरि सो मोहरा फेरा।
देइ अभैपद दानि बड़े हैं निकटै हवैं हजूरा जो तू मानै तौ तू सानै तब होई वह तेरा।
मेरी-मेरी करते तनुभयाचोरा घुरति न लागी बेराकहै मीता बिनतीहै तोसोंहरि भजु बड़ानिहोरा।।

रेमनुआ भजिले अन्तरजानी छूटि जाय दुख खानी करै सिकार कालुजिव ऊपर तोहि परै ना जानी।
बानी बूझि संत संगति कै छाँड़ि देउ विखै बानी होय अनन्द सकल विधि मंगल हमैं परी है जानी।
सुर मुनि पीर औलिया ज्ञानी जमु खाये सब प्राणी बाचे तेई नामु जे पागे कह लगु कहों कहानी।
पातसाह बहु उमरा सैय्यद करै न तिनकी कानी अबहू चेतिसमौ भल पाया जनि बूड़ै बिनु पानी ।।

बाँधा सकल जहान ज़ंजीरन चौरासी दुख खानी कुसल परै जो निहचै आवै नाहित बात नसानी।
लोक बेदु कुलु की मरजादा ना करु तिनकी कानी कालै करिहै कानि काहु की जा दुख पइहै प्रानी।
दास कबीरा पीपा नामा इन कैसी मति ठानी उतरि गये भै सागर पारा दरिया लहरि समानी।
पाँच पचीसों मारि जेर करै तब कहिये निजज्ञानी कहि मीता करपारु पयाना नरक परै अभिमानी ।।

मियां मनु आया हाथु नहीं है का भया बैतु कहो है रोजा रहै नमाज गुजारै ई तौ दीदार नहीं है।
पाचौं मारै जीव उबारै तौ मक्का दिल ही है तनु बिसराये अल्ला पाये कलमा तबै सही है।
दोजक कौन-कौन कुफराना का भयेबैतु कही है दो जक बदी-बदी कुफराना बूझि न परति तोही है।
हरिदम है सब करै भीतर सो मारा तुसही है का भये किये बन्दगी तेरे जो वहु राजी नहीं है ।।

आखिर होय जुवाब देन का तेरा निसाफ होइहै ताते हो हुसियार रे भाई गाफिल होना बुरा है।
लकरी हरी नहिं तूरी मोहम्मद कब गइया मारा है डरते रहौ खुदा असल का तू का मनै धरा है।
गुरू पीर तिसही को कहिये जौन मिलावै पी है नेकी देइ बदी का छड़वै मिल रहिये तिनही है।
का हिन्दू का मुसलमान रचिया आदि सब ही है कहै मीता सोई सांचा बन्दा जिनते जुदा नहीं है ।।

मनुरे रामु बिना पछितइहै औसर कबहु न पइहै।
दूलम भाग्य देहि नल पाई हरि पद भजु दगा कबहु न खइहै।
आये सरन बहुत प्रतिपालै जमु की चोट बचइहै।
दानु अभै पद देइँ तुरत ही देखि परम सुखु पइहै।
सब देवन के देव दयानिधि तिन्है छाड़ि केहिं ध्यइहै।
और देव सब जमु की खाजी तिन्है ध्याये दुख पइहै।
रामचन्द कान्ह रचे जिन कोटिन अैसे साहेबु का कहँ पइहै।
कहि मीता भजि सत्य पुरुष का नाहित निहचै नरकै जइहै ।।

तजु मन मलिन बेकारा रे तन जुअना ना हारा रे बार-बार हाथै ना आवै ताते हो हुसियारा रे।
भजिले राम परम सुख होई छूटि जाय जम द्वारा रे जेहिं द्वारे त्रिदेवा बांधे अैसा नाम अधारा रे।
भजा कबीर भजा रैदासा भजन जगत ते न्यारा रे भजन सोई जोरामु मिलावै रटे काहोय गवारा रे।
कहि मीता सतगुर की सेवा पावै सिरजन हारा रेसोई पुकार करी सुज्जन सोंजो है अंस हमारा रे।।

गाउबु है उपदेस तौन जब लागई करु सतगुर की सेव तत्तु मत आनई।
करु इन्द्री मनु हाथ रैनि-दिन जागई सिरु दै चढ़ै अकास राम रंग राचई।
तब गावै सोइ साधु भक्ति जब जागई तरै संघु के लोग आपु तरि जावई।
जुरे बास-दस मूढ़ ता गाइ सुनावई गाये भक्ति जो होय भांडु तरि जावई ।।

भजन न गाउबु होय भजे मिलि जावई भूला सबु संसार कौन समुझावई।
छाप तिलक औ माल कामु ना आवई भूला साकठु आप औरे भरमावई।
भगतु कहे सुखी होइ भक्ति न पावई अंत काल जमु मारि नरक लै जावई।
मीता जीता जाय सांचु गोहिरावई डिम्भी तजै न डिम्भु बूड़ि मकु जावई ।।

मनु लागिया सुरति तुम्हारिया हों बन्दी गवारियां।
अरजि करौ कुछु करि न जानौ बिना अकल की नारियां।

जो पिया चाहो सुधि लेउ नजरि भरि चेरी करौं मैं वारियां।
मेहरवान साहेब हो मेरे जरते लेउ उबारियां।

बिनु दीदार जरै तन अैसे-जैसे लागि दवारियाँ।
सीतल होय दरस के पाये जो राखौ मनु हारियां।

अन्न न भावै नींद न आवै रैनि पलक ना लागिया।
मन के मानी दिल के जानी मीत भरोसा भारियां ।।

बहा नरक का जाति ता गुरु दीन्ह चिताई पार भये हरि नाम लै सुमिता घर आई।
मेरी मेरी करते जगु मुआ माया कामु न आई सब धन का धन राम है सो हमें हिताई।
गरभ बास तौ नरक है औ काह बताई बातौ छूटै भागि ते किरपा रघुराई।
तोरा बांधा ग्यान का सानंद लिखि पाई मीता मता अगाधि है सो धरा छपाई ।।

जबै दुहेला पाया आनन्द मंगल होय संसो सोगु न व्यापई सन्तोखो होय।
पंडित कहै सो सब करै मोहीं ना पतिआई जो मानै सो जानै हो पिउ देउ मिलाई।
प्रेम पियाला अमी का गुरु दिया पिलाई छकि-छकि झुकि-झुकि मैं फिरौं जगु नहिंन सुहाई।
आनन्द की सलिता बहै तहँ पैठि नहाई पापु पुन्नि तहवां नहीं नहीं धूप नहिं छांई ।।

पानी अन्हाये का भये मनु मैलु न जाई मन धोवे सो धोविया बिनु जलु फैलाई।
भूली दुनिया डिम्भ मां करमन रही छाई मरकट ज्यों मूठी बंधा को सकै छड़ाई।
ज्ञान कुल्हारी लै चला बन दिया धसाई राह चलाई अगमु की कुमिता बहि जाई।
रवि-ससि करै बीच मां संधि बांकी आय हंसा चढ़ि चला बकुला ना जाय ।।

ध्याउ निरन्तर रामु तोहूँ हो जावई मारगु दिल दरियाव पैठि तब पावई।
सतगुर कृपा होय मता तब पावई सिरु दै चढ़ै अकास राम मनु भावई।
गावइ विस्वा भांडु लोभ की तानई गाये भक्ति न होय बाद सठु ठानई।
जगु मां भक्त कहाय बहुत सुख मानई जमु की सुधि गई भूलि हंसी कै मानई ।।

पर धन दारा देखि बहुत मन मानई छाप तिलक की ओटु कोऊ ना जानई।
दूब पिये जे बांटि कामु तिन्है व्यापई घिउ मैदा जे खांय कौन रंग आनई।
लिया काम दल जीति तेहू पर तानई हारे नल का कौन भरोसा मानई।
कहै मीता हरिदास ता घर ना छाड़ई किरखी कै कै खांय न्योत ना मानई ।।

सखी एक देखा अजब तमासा अगम पंथु जब ताका बिन बादरबहु दामिनिदमकै बिन बरखा सरबाढ़ा।
बरति अगिन पर साखाबाढ़ी बिनुबारी फल लागाचाखन हाराबिनु सिर देखाचरन कवंलअभिलाखा ।
धरती बरखै अम्मर भीजै मछरी चढ़ै अकासा उमड़ा ससा सिन्धु का मारा मूस विलारी त्रासा।
बेद कितेव नहीं या लिखिहै अनभै परगासा मीता दीख परम पदु पाया हो संतन का दासा ।।

साधौ मुक्ति होय मन मारे जो चढ़ै खाड़े धारे जोहर ते या जोगु कठिन है जानै जानन हारे।
ज्ञान खरग लै धंसै महलका सीस देइ वहि द्वारे होय निरसंक लरै पाँचों सों अमल टरै नहि टारे ।
धीरज खंभ सुरति लै गाड़ै छिमा चोट लै मारै अमर लोक का सहजे पावै जब संतन सो हारै ।
छापा माल तिलक औ कंठी ई सबु चूल्हे डारै निरगुन आदि ब्रह्म तब भेंटै सतगुर सब्द विचारैं ।।

बेदु कितेब सुने ना पावै या तो मता जुदा रे पांउ परै हा हा कै थाकै पहुँचै अरजि हुआं रे ।
तीरथ बरत करै ते नाहीं जिनका समुझि परा रे हीरा छाड़ि कांचु का मुलवै मूरुख मानु कहा रे ।
छारु लगाये फिरई बन-बन भरम का जोगु धरा रे ज्यों कुरंग टिसुना का धावै धाये-धाये मरा रे।
ततु छाँड़ि भूसी का धावै माया भूलि परा रे कहि मीता को जगु समुझावै ताते मौन भला रे ।।

भक्ति मरमु ना पावै ठगिया छाप तिलक झमकावै झूठे के संघु उठिकै धावै सांचु मनै ना आवै ।
नरक परै संतन के द्रोही निकरै न कबहूँ पावैं संत रामु सो अन्तर नाहीं सुकदेव व्यास बतावै ।
नरक परै का अगुआ भे हैं संघी और बुलावै देखो सधुवा केरि डिठाई तनकौ नहीं डरावै ।
कहि मीता जब कालु गरेसी तिनके काह बिसावैं हाहा हाहा करने लागे हरि बिनु कौन बचावै ।।

गुरु बिन कैसे हरि पद सूझै जो सूझै ता बूझै कान फुकाये कह नल कीन्हे येहि बिधि रामु न रीझै ।
भके सनीप ग्यान ततु उपजै पढ़िगुन कुछौन सूझै बिनुअनभै अधिकार मूढनल काहेका गल्लन जूझै ।
कंठी माला भगति न होई अन्धे इनका पूजै छापु तिलक पाखंड भेखु है संतन का मत जूदै ।
नरक वास मां जीव परा है ताही ना कोई खोजै कहि मीता जगु भरमु भुलाना सांचि कहे जरि ऊठै ।।

साधौ गुरु बिनु सब्द न बूझै बिन बूझे को रीझै ज्यों अन्धे दरपन दिखलावै कैसे दरपन दीसै ।
कररि कपूर कुछौ ना जानै हीरा कैसे परखै जगु भोंदुआ मरमु न जानै अन्धे दिवसै मूसै ।
बिखुका खाय अमी गोहिरावै अमी स्वाद कैसे पावै रन मां पैठि न झांकै कबहूँ परकरनी कहि झमकै ।
कहि मीता भूसीका पीसौ भूसी मां का निकसै ततु ना छुअै अभागा भौन्दू छांछु काजु जिउ तरसै ।।

रामु सो परगट काह बखानै ये गति अन्तरकी जानै जीव जंत्र सब जलुथलु केरे तिनकाको प्रतिपालै ।
हिरदै सांचु जीभ फिर साँचै तेहि अपना कै जानै भीतर कपटु रचे का ऊपर जनि अमृत बिखु सानै ।
जैसे मोर मिऊ दै बोलै करिया बिखुहर लीलै अैसी नवनि दीनता तेरी जगु अन्धा का जानै ।
दीन भये ते भये सनीपी मीता तौनि बखानै गोरख भरथरि औ सुलतानी जिन अैसे मनु मानै ।।

सुज्जन बादी सो का बोले ताते भले अकेले जैसे कंदऐ के ढ़िगु ठाड़े कपरा होइहैं मैले ।
मन मलीन विमुखन ढ़िग बैठे परै न इनके मेले बिमुखन त्यागि सुमति का धरिये भजिये रामु दुहेले ।
जिनके पापु उमड़ि कै धावैं बोलैं बोलै जैसे सेले इनका देखे अैसे डरिये ज्यों बांमी के बेले ।
बिंनु टलाये बेलौ ना काटै इनते भली है बेले कहि मीता ई धाय डसति हैं चले नरक का पेले ।।

बिमुखन संघु बैठे भजन खतरा परै दावादारी छांडु रामु सो हित करै।
या जगु बिखु की बोले देखि तिनका डरै सुज्जन सो हितु जोरि बाँह तिनकी धरै।
केहरि तहाँ न जाँय जहाँ मरकट थरी अैसे हरि के दास बिमुख संघु ना करी।
मीता कहैं बिचारि सुरति लागी रहै चित ना कतहूँ जाय लगन अैसी करी॥

जोगी नगरी बसाओ नगरी मां बसि बहुरि न आवो।
का जानै जगु बा का भेऊ जो जानै सो जीतै दाँऊ।
पहिले सीस दक्षिणा देऊ रावल का अपना कै लेऊ।
वा रावल के गाँव न ठाँऊ बसै जहाँ कोटिन खाँऊ।
पाहन पूजै ना देवन जाँऊ ना तिरथन में पैठि अन्हाऊ।
अबकी बेरि खेलि यहु दाऊँ जो जीतै ता बलि बलि जाँऊ।
चाँद सूर एकै घर लाऊँ सुई के बीच सुमेर समाऊँ।
या बिधि जमु के फन्द छड़ावो जन मीता के तबु मन भावो॥

सीस देई फिरी रामु दुहाई और देव की आस न राखौं और बिरछ की छाही।
अजर अमर है साहेबु मेरा बिनसि न कबहूँ जाई जो बिनसै सो मानुख देही ना नल भरमु भुलाई।
नचना करै मिरग तिसुना का बिनु जल धावा जाई अैसे और देव की आसा हो सांची सरनाई।
कोटिन भये रामचन्द कान्हा साहेब दूजा नाहीं कहि मीता भजु सत्य पुरुष का असत्य गहे जमु खाई॥

जगु मां दीख बहुत चतुराई चंचल चपल परे जमु धारा निराधार तरि जाई।
भृंगी कीट चाप लीन्हा कै निर्बल लेति उठाई अैसे सतगुर जानि गरीबी तुरति लेति अपनाई।
भृंगी समान हवै उई सतगुर संत गये गोहिराई सोई चालु देख्यो रे भाई साधौ येहि माँ धोखा नाहीं।
कथे अनेगु एक ना बूझैं अन्धा अन्ध मिलाई कहि मीता जिन रहनि बिचारी तिनकी भई ठकुराई॥

जगु जीतै जगु माँ रहै करै मन ते न्यारा पाँचों इन्द्री बसि करै सो जोगी सारा।
मन जीते मन होय रहै दरगाह पियारा अमर भये जुग जुग जियै सब रंग हुसियारा।
जटा रखाये का भये का लाये छारा नाहक जलमु गवाईया खाते पर द्वारा।
नरक सरग की सुधि नहीं सठु फिरै जुझारा मीता दोऊ बतावई बूझौ संसारा॥

जगु निन्दै की दै गारी चलिये चालु सँभारिया
मरजी जानो पिया अपने की हमका डरु है भारिया।
रजुक मौत जिनके है हाथै जमु ते लेंइ उबारिया
मैं नहिं जानेउ और न जान्येउ उनकी लगन न्यारिया।
का भये घरी घरी के टेरे पिउना करै पियारिया
मैं तोहि चाहों तू नहिं चाहै केहि बिधि होइहैं यारियाँ।
जेहि पिउ चाहै सुहागिल सोई उमहि बहुत गबारियां
सखी सुजान पिऊ की प्यारी मीता तिन पर वारियाँ॥

साधौ भाई काहे ते मन पूरा काहे भये हजूरा काहे तेरे पलक न लागे काहे रचिगे बीरा।
सतगुर आय किया मन पूरा तेहि मिल भये हजूरा ताही ते रे पलक न लागै देखे रचिगे बीरा।
संत की चालु संत ही जानै का जानै नल कूरा कथनी बदनी बाजीगीरी माल न बाँधै मजूँरा।
भेदी भेदु मिले सुख उपजै होई कोई अगरा कहि मीता साकठु सो बोले कम्पै थर थर हियरा॥

गठरी खोली ज्ञान की सुज्जन का पाई मूरूख सो अैसे डरै जैसे गाय कसाई।
सीस लेंई सौदा करैं हरि देई मिलाई ठहरैगा कोई सुरवां सो हमका पाई।
पाखंडी ते दूरि हैं सांचे के भाई सो कोटिन मां एक दुइ जासो अन्तर नाहीं।
जैसे का तैसा मिला काहुइ जानि न जाई जहाँ छानु तहँ मीत हैं पारिख बतलाई॥

करु संत संगति कटिहैं जमु बेरी या माया नहिं तेरी
मेरी मेरी कै ना जलमु गवाँवै बिपदा आवति है घेरी।
केतक पतिसाह औ राजा होइगे धरती केहि केहि केरी
दाम़ दसक गाँठी मां आये ताके पूता भये चेरी।
रामु बिसारै जमु धरि मारै जे भजियां तिनकी खबरी
रामै मिले राम से होइगे बहुरि न कीन्हा जगु फेरी।
जो बीती सो बीत गई है अबहु भजु बनिहै तेरी
मीतै जानि परी सो गाई तरने की है अब वोसरी॥

मेरी डोरिया लगा दई गुरु सांचे ताही ते हम खुलि नाचे
बेद कितेबु छोई लखि छाड़े राम रसाइन पी माते।
तीन तेतीस अठासी नल तन जमु खाये काचे
पाके हमतौ सरन रामु की पाई येहि बिपुदा ते अब बांचे।
आतम दरस बिना सब आंधर जे दरसे ते मत सांचे
या संसार तत्वु का छांड़े बूसी केरे रंग रांचे।
सब्द ना लखै बादु कै ठानै माया कारन जगु जांचै
तिनसो भिन्न है जन मीता सुज्जन जन सो मत कहते॥

सतगुर मारा बानु दिलौं बिच बेधिया उठै कराहि कराहि डसा मानौ कालिया।
गंग जमुन के बीच करै मन केलियाँ बहै सुरसरी धार हनाई बेनियाँ।
खुलिगे बज्र केवारि ता दीपक बारियाँ पिया सो जुरिल सनेह तनो धन बारियाँ।
अरे अरे कागु लबार करै का बोलियाँ मीता भये सनीप तीन गुन छाड़ियाँ॥

झूला झूलते बाचा जपा जबु नाम निजु सांचा झका झकि ब्रह्म सो लाग। छका छबि देखि मन पागा।
गनीमों मारि गढ़ पाया धनी का नाम जसु गाया बिखै ते भया हो न्यारा मिला जब खसमु करतारा।
भेखु ते संत मत् न्यारा ठगैइयन बोरि जगु डारा कहि कहि बहुत मैं हारा ना बूझै सब्द गँवारा।
पूजि पाहन भये अन्धे किया सबु रीझ संसारा, कहै मीता सुनौ पंडित अबहु सठु खोजु करतारा॥

दीन हो सरन सरन कै आयो ताते मोहि अपनायो हों दुर्बल उइ दाता सुनिकै या लालच मन भायो।
ररिहा होयकै चहुँ दिसि डोला काहू ना अघवायो हरि हेरे तब कुछौ न खाली मनु मां थी सो पायो।

औगुन गने न जाँय किये जे रहत पापु छल छायो ते अवगुन सब करी हमारे गुलमा नाऊँ धरायो।
उइ स्वामी होय रक्षा करते जब मैं दास कहायो जन मीता का भया भरोसा गुरु पठंगा पायो ।।

मन समुझि देखि बिचारि बोरे झूठ यहु संसार रे हरि नामु नौका जो मिलै तौ तरति न.हीं बार रे।
नाम कीर्तन तौनु है जो रटै संसार रे ताही रटि रटि बूड़ि दुनिया जीव नरकै जाय रे।
नाम नौका देइ सतगुर चढ़ै सो आकास रे जीव मन तहां पैठि तरिया गये पैले पार रे।
नाम नैनन निरखि भेटा जहाँ पंथु अपार रे चले भेंटे अलख मीता काटि माया जारु रे ।।

झलक झलकै कोटि रबि ससि सूरज चन्दा तहाँ नहीं देखि छबि मैं भई बावरि जगत हांसी तब भई।
जेहि व्यापै सोई जानै कहन की गति कुछु नहीं अगम सीढ़ी पाउँ दीन्हा सीस दै तहँ चढ़ि गई।
पाँच सखियां संघु लीन्ही निरति कै तहँ मिलि गई कुंभ का जलु नाय सागर सुमति लै बाढ़ी भई।
मिटा आवा जान-सखियो कालु फाँसी कटि गई कहै मीता बाद तजु नल बिना करनी सुखु नहीं ।।

आनन्द मंगल गावो मोरी सजनी भा परभात बीत गई रजनी।
अजर निरन्तर फूली फुलवाई तहँ मनुआ मोरा है रखवारी।
मैं बारी पिया मोरे भौरे तुम्हरी गुंज मुझे लगै पियारी।
विरछु एक अमृत फल लागे चाखैगा कोई संत सुभागी।
कहै मीता गुंगे की सैना प्रेम अमल पागे दोऊ नैना ।।

नैना लागे हो मेरे अंगना नाभावै लाजि तजी करी मन भाये पीतम अंग लगावै।
कठिन लगन मन की है आली जेहि लागै सो पावै।
वो मोहि मांही मैं उन मांही है कोई भेद बतावै।
सासु ननद दुख देति छिनो छिन कल कबहूं ना पावै।
प्रेम पगे डर काहे का लागै चाहे सो कहि जावै।
जित रे जाउँ तित ठाढ़े देखों येही ते सुख पावै।
अंगिया के बन्द खोलि गये मितवा नित नित आनि जमावै ।।

ननदुली आवन वतावइरे हम अइबे नाय अगम घर पीतम मिले सखी मंगल गाय।
एकु पिया नारी घनी धौं केही रिझायें कलहिनि के ढिग ना रहैं बिरहिनि घर जाये।
काजर दै ठाढ़ी भई तोहि थिनु ना आये याहु भया ना बावरी कहो दुलहनि आये।
मीता सखी सुजान की गति औरै आय तू का जानसि गंवारनी चली आगे जाय ।।

ननदुली विखै डहारनी मोहि न सुहाति पिया कोरवा ना रही शंका शोक डहै दिनु राति।
नगर चबाई लोगवा रे कैसे होय निवाहु राखन हारा राखई जगु डारै धाऊ।
सब सुख ते सुखिया भई दुखु ऐकौ नहिं आये सासु ननद तब का करै जब रीझे नाहे।
यहु मंगल परमारथु स्वारथु नहिं आय मीता भेदै जानिहै तेहि कालु न खाय ।।

आनन्द मंगल गाइंया पाये पै नाह लगन निरंजन सोधिया मूलै लिखी पाति।
गंग जमुन बिच मड़वा हो भई पाचों हाथ करैं पचीसों सेवकी निसि बासर लागि।

अगम अटारी चढ़ गई पिया अपने पास सेजि परे सुख जानिया का कहिये बात।
ननदुली परे बिसूरैं हो सिर लीन्हे खादु मीता बहुरि ना आवई विखु की हादु ॥

बबुली बोली बोलिथा सिरु राख न जाय जो राखौं ता लाजऊ संतन संघु मांह।
आखिर मरना होइगा जमु चोटै खाय जियति मरै गुरु ज्ञान ते तौ कालु न खाय।
कागा बोली का करे तोहि बूझि न जाय बनी बनाई पाछली अब जागी आय।
पिया पियाला प्रेम का बिखु मोहि न सुहाय जन मीता छाका भला गुरु का सिर नाय ॥

जिवतै मृतुक जब भये तब भई राम सहाये। बनते बनते बनि गई मीता जगु ना सुहाये ॥

गौना भयो री अइबे जइबे ना हमरी।
चुनरी पहिरी रंगी मजीठी ताते उनते जुरि गई दीठी।
गुन अवगुन बभनै सबु दीख वहै बभन वै खसम कै दीन्ह।
काहें का राड़ौ करो चवाव हमरा पुरुष जानै हमरा सुभाव।
बिनु लागे जानै ना कोई मीता की चितवनि घायल होई ॥

सतगुर सरनि निवास हंसा झूमरि खेलेऊ हो ई संसारी लोगवा रे उनते रह्यो बचाये।
जैसे गगरी सिर धरी वैसे सुरति लगाऊ जस गगरी बिच जल बसै वैसे अलख अपार।
जलमु जलमु कै पुन्नि प्रगट भइ वैसा पाया साजु सतगुर की दाया भई गावै मीता दास ॥

मोर बदनी का मनुआ ना थिराये मानो मुख मा धूरि उड़ाये।
चुरिया-बगलिया-कजरा संवारै कोतवलवा कै छिनु-छिनु जाये।
धिगा पचासक साठक राखै अपने खसम के निकट ना जाय।
चालु कुचाल देखि डर लागै मैके मा वा रही समाय।
मैके स्याबसि स्याबसि होई छिआ छिया जब ससुरे जाय।
ननदी कै ननदी भौजी कीभौजी सासु की सासु भइया धरि जाय।
दीनो खोयसि दुनिया खोयसि मुँह का नकुवा चलौ गवाय।
भेदी मितवा गावै गितवा सखी होय सो लखै सुभाय ॥

पद—भँवर गीत

नामु धनु पूँजी हमरे आई सुनिले साधो भाई राम साहु तेहि माथु नवाया कीन्ही बड़ी सहाई।
टाँडा लादा अगम नगर का जहाँ न सुर मुनि जाई चोखा मालु बिकाना तहियां भै बनजी मन भाई।
सबु कोइ हँसे दिवाला निकसा हम तौ साही पाई हरि दरवाजे कोठी कीन्हा हुंडी अदल चलाई।
जगत साह जमु लूटति देखे मोहिं डर लागा भाई यहाँ कि सौदा मीता छाँड़ी छोई दूरि बहाई ॥

प्रथमै संतन सीस नवाऊँ दूजे रामनामु मनलाऊँ गौरीगनेस-महेश मनाऊँ रामचरन चितु डिढ़कै लाऊँ।
चित लाय अन्तर प्रीति लागी रैनि दिन पल ना परै गये विखै विकार टिसुना पापु जलमन के जरै।
निरखि मूरति गड़ा सूरति तब ते आन न भावई मिला मेरा जीव रामै जमु की चोट न खावई।
मिले पुरुख सुहाग पाये अवनि पगु तब ना परो प्रेम आये नेम भागा नींद भूखै परिहरो।
भई यों गति मीनकी ज्यों, जलैबिनु कल ना परो नैन भरि-भरि आसँ चलई सुमति ढिगते ना टरो।
कहौं कासों चोट भारी लागिहै सोइ जानिहै कोई भजै मीता दास बिरला भाग्य पूरे ठानिहै ॥

प्रेमप्रीति विचारि मनु धरिचरन कँवलजो पावई जनि करै दुरमति कूटि फाफस नाहक जलमुगंवावई ।
जेगये कोटिन जोरि हय गज महल नौमति बाजई छिनक सुखऔ स्वाद काजे सत्तिरामु न जानई ।
नल चेति गाफिल फिरै भूला राम बिनु पछितावई अन्त के उइं होय साथी गरभ बासु बचावई ।
कोटि-कोटि विघन टारै जो तू रामै जानई सेइ ले निज संत संगति जीति निसान बजावई ।
बाँधि पाँच पचीस चोरा अगम पंथै ध्यावई मुक्ति माला तत्त तिलकै प्रेम छापा पावई ।
काठु माला काह पहिरे माटी घोरि लगावई जगत मां सबु कहै भगता झूठे भगत कहावई ।
संत हो कै चले ठगिया मन विखियन का धावई राम के ते आंय चोरा गरभ बाँधि डरावई ।
दास मीता चरन ध्यावइ साँचु-साँचु पुकारई नरकु तेई जांय झूठे जो न रामै पावई ।।

प्रभू दीन के हित दौरि आवैं पलक ढ़िग सो ना टरै पैज जन की करै पूरी काह जगु तिनका करै ।
जहर दीन्हा घोरि मीरै पियाई राना कसि लिया हती कंचन बाचि उबरी खलन के मुख टरि परा ।
दुजन जन सो टेकु बाँधी पाहन गंगा मिच दिया काढ़ि लाई अजय माया दास की बोली दिया ।
पाहन कैसे आवै दुज का साँचु तो घट ना हता साँचु का प्रभु साँच कीन्हा झूठ का झूठा किया ।
नामा का धरि कैद कीन्हा बादशाह गाढ़े धरा हता साँचा पैज राखी समुझि मजलिस का परा ।
भेखिन मिलिकै कीन चुगली कबीरका गोगा किया पतिसाहसो फरियाद कीन्हीतबै उन जनका धरा ।
हुलाया हाथी मारना चाहा रामु तो रक्षा किया सिंघु रूप दिखाइयां हरि पाऊं आगे ना परा ।
बाँधि जंजीर बुराया गंगा बारु जन का ना झरा कहै दास मीता सेई सम्रथ कौन का पानी मरा ।।

भयौं मँगता राम जी का मँगताई ऐसी करों काम-क्रोध न उमड़ि धावै सोइ विधि साहेब करो ।
कुटिल कामी निपट मैला औगुन बहुतै हौं भरों जलमु-जलमु का चोर गुनही द्वार तुम्हरे हौं परों ।
अनत नाहीं ठौर कतहूँ समुझि तो नीके परो जहाँ जाऊँ तहाँ कालु घेरै जीव संसै मां परो ।
सुने बन्दी छोरि साहेब यही सब्दा डिढ़ धरो भयो आनन्द सकल मंगल जीव भव जल ते तरो ।
भाग्य जागी सरन पाई आनि देवा परिहरो सतगुरू के पाँव लागों काँचु ते पारसु करो ।
बूड़ना जगु देखिया तब साँचु कहते ना डरों हारी-जीती परा है नल जलमु मिथ्या तिन करो ।
पूजि पाखंड मुक्ति चाहैं कुमति तिनके अंग भरो कुटिल कुटिलै संघु जुरि गया सत्य पद पीछे परो ।
दास मीता भया अनभै अमरपुर डेरा करो काहू जगु के हाँसि कीन्हें खेलु तो पूरा परो ।।

भयो आनन्द सकल मंगल राम रूप लौभाइयो कहों कैसे देखि अचरिज मनै मन समझाइयो ।
उठति रंग-तरंग छिनु-छिनु कोटिन बीन बजाइयो नगर काया दरस पाया करम-भरम भजाइयो ।
राम रूप अगम सोभा कोटिन भानु लजाइयो देखई सो होय बौरी कोटिन मां कोइ पाइयो ।
बिना जलु ज्यों मीन तलफै दरस बिनु ऐसे भयो जानिहै जेहि पीर व्यापी मिले बिछुरबु ना भयो ।
भयो मस्त विलोकि मूरति जगत सुखसपना भयो जगत सुखका बिमुख लरई जिन्है हरि नाहीं चह्यो ।
दास सोई होय पूरा राम जेहि घर आइयो का भये दिनु राति गाये जो न रामै पाइयो ।
काम-क्रोध न उमड़ि धावै त्रिविधि ताप नसाइयो कुमति का दल नासि कीन्हा सहजे ध्यान लगाइयो ।
दास मीता कींति पाँचों जीवन जलमु बनाइयो मिटा आवागमन मेरा हरख हरिगुन गाइयो ।।

पद भवरगीत

राम रूप विशाल मूरति केहि बिधि देखन पाइयें कहो सखी विचारि मो सो जीवन जलमु बनाइये।
गुरन माथ नवाय प्रथमै सुज्जन संघु बसाइये दीन होय कै दया करिये रागु द्वेष मिटाइये।
जीति पांच परपंच मन गहि कुमिता तिमुर भगाइये सुमिता संघु विवेकु करिये रामु नामैं ध्याइये।
चितु लाय अन्तर प्रीति करिये रैनि दिनु लौ लाइये नींद भूख बिसारि टिसुना ज्ञान दीपकु पाइये।
उदय कीन्हें ज्ञान दीपकु चरन कंवल मन लाइये प्रान वारो रामु ऊपर बहुरि न येहि जगु आइये।
रूप साँचा अगम बाढ़ा कोटिन काम लजाइये कोटिन शशि औ सूर वारों कोटिन मां कोइ पाइये।
कहों कासों देखि अचिरिज प्रेम पारस पाइये कुंभ का जल मिला सागर कौन भिन्न कराइये।
रामु रूप बिलोकि मूरति नैनन पल ना पराइये दास मीता सरन आये करम भरम भगाइये॥

पदु

अपने जनकी लाजु धरिया असुरन के मुँह छार परी।
जन कबीर की संसै हरि छोरि जंजीरन लिया हरी।
जिन जिन मनमां चाह करी तिनके कारज गये सरी।
जहर कटोरा दिया भरी निरबिखु भई मीरा ऊबरी।
गइया मारि नामा ढिग धरी पातसाह या परचै करी।
जब गइया आगे भै ठाढ़ी नामा छूटे तेहि घरी।
रैदास दुजन सो टेक परी तू का पूजा सूद्र करी।
पूजा फेंकी गंग परी पाहन मूरति निकट परी।
होम करै दुज हाय करी तिनकी पूजा ना निकरी।
झूठे ते है दूरि हरी ताते पूजा झूठ परी।
माया का आज्ञा जो करी सैनि सरूप तिन लिया धरी।
राजा की अस सेउ करी सेनि भंडार तिन दिया भरी।
नल अवतार धरी कब हरी या तो उनकी इच्छा करी।
सो इच्छा सब गुन है भरी कौन अटक हरि देहि धरी।
मार तूर सब माया करी सिरजनहारा सिरजा करी।
कहि मीता दुनिया अन्धरी हरी बतावै देह धरी॥

गहो सरना, रामु का नामु ह्वै तरना।
जीभ कहे रामै का होय अरध नाम राखा है गोय।
इसनू बिसनू कै भूले लोय सिरजनहार न चीन्है कोय।
पुरुखु बिना जैसे बिलखै नारी चीन्है न सब्द अभागा हमारी।
सेवा संतन की है सार सेइहौ भेखु जलमु हो ख्वार।
सेवा कीन्हे मिलै सुहाग अपने पुरुखु संघु भोगो राजु।
अन्त काल को लगी गुहारि जब जमु मोगरा मारी तानि।
मूंदी कही लखै ना कोय मीता झगरा डारी तोरि॥

रहिगे आंखी मूंद खोली सठु ना गई मन माना धन कांचु धनी की सुधि गई।
कनफुकवा बौराया करम टाटी दई लखै कौन बिधि रामु कुमति बाढ़ी भई।
सबु जगु भरमु भुलाना खोलि कासो कही छापु तिलकु गरे माल सुमिरनी कर लई।
यहै भरोसा जानि दगा सबकी भई कहि मीता जमु धार अन्त ठाढ़ी भई।।

भजन बिनु जलमु अकारथ जाई नरक परी चतुराई तजै विखै पाचों का परपंचु रहै नामु लै लाई।
पोथी थोथी बिनु गांसी की या बिधि हाथु न आई बिनु सतसंघु सकल जगु बूड़ा ढ़िगु नौका बिसराई।
जिन जिन खोजा तिन तिन पाया तेई गये गोहिराई सांचे की कोऊ ना मानै झूठे सबु पतियाई।
कहि मीता हम समुझि पुकारा जोति मां जोति मिलाई। एक नामलै पार उतरिगे आवा गवन मिटाई।।

मनुआ काहै ते तू भूला राम बिना है सूला मारगु खोजि मिलो रघुपति का जे सबही के मूला।
चौबिस-दस इनहिन की माया ई नहिं संतन तूला, तीन देव जाको पार न पावैं अवगति करता लीला।
भिन्न भाव संतन सो नाहीं सकल गुनन के सीला, इनका मिलै सो तेहि का पावै जो पद परम दुहेला।
जहां नहिं छानु नहीं घटु दायानहीं प्रेम नहिं दीना, कहै मीता ते पशू समाना करै अस्तुती औ गीला।।

कै ले सत्य भक्ति रघुराई सो तो जमु का फंदु छडाई।
पांच पचीसों हाथै आवै सो जन मिलै निसान बजाई।
या मत गहै सो भगत कहाई भगु द्वारे जो बहुरि न आई।
कुसल ह्वै तेही घर भाई जलमु धरे ते नहिं कुसलाई।
भूली दुनिया डिंभु बढ़ाई असत गहे सति नामु न आई।
दाबी देइ नरक का जाई भक्त कहे ते बलि बलि जाई।
माटी घोरी कपरा लाई दरपन देखि गये बौराई।
बकु ना पाँति हंस की पाई मीता हंसै हंस मिलाई।।

जब लेखा देना होई तब संघु न लागी कोई।
का भये सात-पांच मिलि गाये या बिधि भगति न होई।
या ना होय जगत का ठगना प्रीति जोरु भल होई।
साहेब तो अन्तर की जानै तिनते काह छपोई।
कंठी माला छापु तिलकु दै या बिधि भक्ति न होई।
हरि का मिलै सो हरि का दासा बिन परचै का होई।
नैनन लखी नरायण मूरति तन की दुरमति खोई।
कहि मीता या भगति न खेलवा झुंड न तिनका होई।।

लागो एक तारा, मकर तार चढ़ु अैसे चलु ऊँट फारि ईंधन करु सारा।
आगे का मत ह्वै निनारा सुई अग्र है द्वारा निकरि जाय सौ उतरै पारा जमुके मुँह मां दै कै द्वारा।
कंठीमाला डारी तूरि, झूठी भक्तिपरै मुख धूरि भजिले साहबअलख अपार जिनकी माया सब संसार।
माया कहिये दस अवतार माया तीन देव नर नारि ई सबु नरकै आवै जाय मीता बचे रामुलै लाय।।

सधुआ कैले संगति ताकी जाकेसंघु मिलै अभिनासी बिन दीदार कौनके होइहो हो ओ नरककेबासी।
का भये कान फुकाये बावरे मालालीन्हा फांसी गाहकी बांधै तिलकु छापु दै दसौंधि धरो निकासी।
अपना बंधक सिख का कीन्हा गावैं औ करै हांसी अन्तकाल जमु आय पहूँचा चोरी सबै निकासी।
जगु के भगत रामु के चोरा छपी न झूठी सांची हँसि कै चलै रामुके दासा तुम सठु करि हौ कैसी॥

कैले सतगुर सेंव मन हा हा हमारे बहुरि न आवबु होय रामु सो होइ पियारे।
पापु पुन्नि दे डारि नहीं तौ जइहौ मारे, केवल नामु अधार बहुत जिन पार उतारे।
नामा औ रैदास कबीरा ई हैं तारे जगु सगरा कालु बली ते धरि धरि मारे।
रघुवंसी-यदुवंसी विपदा मां सबु डारे सुर गन्ध्रप त्रिदेव असुर मुनि सबै पछारे।
धनि धनि संत बिचार काल ते भये निनारे समृथ गुरु की बांह बिपति ते बहुत उबारे।
बिपति न तिनका होय राम जिनके रखवारे रामु धरै नहिं देहि बह्म उइँ ह्वै निनारे।
और रटे का सरै समुझि तू मुरख गँवारे अभिनासी पहिचान जाय जनि कालु दुआरे।
रामचन्द-कान्हा कोटि सेवकी करैं तुम्हारे मीता कहै विचारि भजु सिरजन हारे॥

हरिसो लागि रहा मन मेरा रे ताहीसो करी निहोरारे हाहा कैकै चेरीहोय रही आइ गई भली बेरा रे।
अन्तर जानी बड़े बिनानी खलक रचा जिन केरा रे देति अभै पदु बिलमु न लावैं भै तारे बहुतेरा रे।
असुर-देव मुनि नलकी देहीं ताको करौ निबेरा रे ई सब मंगता अलख पुरुखके तू मंगता केहिकेरा रे।
मीता बानी तौली काढ़ै मूरुखु करै अड़ेरा रे बिना बिवेखु बूड़ि सब भौन्दू बाद करै बहुतेरा रे॥

जानै कोइ हरि जी का प्राणी रे जा घटु प्रेम बिनानी रे।
बादुविबादु ते साहेब न्यारा या तौ अकथ कहानी रे।
जैसी कहै चलै फिर तैसी हरि अन्तर की जानी रे।
ताते कौन सयान चलो नल दुरमति बात नसानी रे।
करै निसाफ राम बड़े दाता काहुइ परै न जानी रे।
जानि परै सो उनका मानै तेहि करै उंइ रानी रे।
जिनका राम चन्द से ध्यावैं तिनहूँ ना गति जानी रे।
कहि मीता ते निकटै पाये नैनन सुरति समानी रे॥

जो तू हरि जी का चहै इत करौ भलाई ये ही ते उंइ रीझई तब सहजे पाई।
कपट ज्ञान ते ना मिलै तू रटि मरि जाई अन्तर जानी उंइ ह्वै तासो काह छपाई।
रहनि गहनि ना जानई का कथै किसाई डिभु बढ़ावै दुनी मां बूड़ै चतुराई।
सांचे सूचे पार भे भेटे सुखदाई मीता गुर मत पाइयां तब लगन लगाई॥

सावनु पिया आवनु लागि सन्देसु सोवति अतिरिज देखा।
छिन पल बीतै अवधि अवनु की कहिगे रावल भेदा।
तन की तपनि बुझाय गई तब जब सखि पीतम भेंटा।
कहि मीता या जोगिनि बिरहिन तजै जगत की आसा॥

ऐ साहेब चेरिक है हमरी तुम्हरे हाथै उचरी जो मैं चाहों तुम ना चाहौ मेरे चाहे काह सरी।
दोउ दिसि चाह होय तब बनई रटि भूली संसारी नारि पुरुख की यारी जैसे ना होई इकतारी।
चालु कुचालचलौं नितही उठि तेहिपर चहों दीदारी मेरी खोरि दोछु का तुमको न्याउकरो तुम भारी।
अदल करौ ता ना बरिआऊँ गुनही हवौं तुम्हारी मेहर करौ ता मीता छूटै खेइ लगावो पारी ॥

संत संधु भये दीदारी लगी खुम्हारी आवै लहरि डसी मानौ काली दरद भा भारी।
ग्रह नहिं चैनि चैनि नहिं बनु मां तजि संसारी लगी दंवारि मदन के जारे गई अंधियारी।
गये भै पार कटी जमु जार दुखु खाये सुखु उपजा भारी भये टकसारी।
भेदु बाँका तहाँ छाका कुमति गै मारी कहै मीता अगमु की गति बेदु ते न्यारी ॥

हरिजी का सुज्जन लागै प्यारा तू का रटै गवाँरा हरि जी कहैं कपट ज्ञान का निन्दक आइ हमारा।
करै बिवेखु सोई मोहिं प्यारा गाता साखी सारा एकु रटै तेहि नरकै डारै एकन पार उतारा।
न्याउ करैं कुन्याउ नहीं है साँचे का रखिवारा, झूठे नल ते दूरि भागई गाइ मरै संसारा।
कहि मीता साहेबु की बानी मोहि भरोसा भारा जैसी कहैं करैं उंइ तैसी सब्द टरै नहिं टारा ॥

गयेनु पिऊ के पासा भये तो उनके दासा धनी जाको ना चाहै ताकी झूठी आसा।
मिलै जाको करै किरपा धन्नि सो दासा नलन के रटे का भये भा नरक मां बासा।
ठगिया-ठगिया मिल चले सठु बाँधि के गाथा, गावैं-नाचैं माला फेरैं कपट रंगु राचा।
कहै मीता भक्ति मारग बहुत है बाँका कालु ऊपर करै चढ़नी खलकु जिन त्रासा ॥

दुहेला राम का कोई तेहि लखै न लोई लखै सोऊ होय वैसा सीस जो देई।
साँचु कहे ते जरि मरै ताते भक्ति को देई साँचे संता राम के झूठ हो खोई।
गरू नल सो करैं सौदा हलुक ना लेई हलुका मारगु ना टिकै तेहि दूरि कै देई।
कहै मीता भक्ति वाकी हँसी ना होई हँसी कै जो जानिहै तेहि काल दुख देई ॥

हम तौ सिरजनहारे जानै आनि मनै नहिं आनै कोटि सूर ससि छबि पर वारौं सो छबि कौन बखानै।
नहिं है रूप नहीं है रेखा वा तौ ब्रह्म निराला जिन देखा सौई पै जानै अन देखे को माना।
जे घर खोवे ते अब सिरजै पिछला अंकुरा जागा निरधनिया के गाठी धनु भया भाग्यमान पहिचाना।
मच्छ-कच्छ-बाराहा-नरसिंघ रामचन्द औ कान्हा परसुराम औ बावन दसौं हरिजन नलुकै जाना।
ऊँचे-नीचे करम कमाये सो तो सरगुन ठाना अवगति लीला है प्रभु केरी संत कोई पहिचाना।
माया के परपंच सकल जगु भूला मरमु न जाना ताते गरभु जाय औ आवै जमु सो झगरा ठाना।
ऊँचे चढ़ि सबु नजरि आया जगु की बातु न मानै चौदा ऊपर बास हमारा लोग काह पहिचानै।
सतगुरसरन परमसुख पाया बादविवादु न जानै कहि मीता जब अमी पान कियाकौन विखैकासानै ॥

सावन बरखै नैन हमारे पिउबियोगु अंसुआ चलै पियर भई मानौ भा पिंडरोगु सूखि टटेरवा मैं भई।
मदन दहै कस धरिये धीर सासु भई ज्यों पाहुनी निकरन गैल पाऊँ नहीं पिया सुधि काहे न लीजिये।
तुम बिछुरब दूजे ननदी साथु दुइ दुख कहाँ समाइये पतिया लिखों ता को ले जाये मन मन खड़े बिसूरऊँ।
निकरिजाय जिउ तादुखु जाये कीपीतम ढिग आइये मीता लगे बिरहके बानु बाहर के सबु हँसी करै ॥

रे सधुवा कहु कैसे घर जरिया, बिन घर जरे कुसल है नाहीं का माला लै करिया।
जब घर जरै तबै जिऊ उबरी या मत बिरलेन धरिया।
द्वादस कँवल उलटिहैं तब ही बिगसि होय उजियरिया।
अष्ट कँवल दल खुलिहैं तबहीं सुरति निरति जब लगिया।
परम हंस सों होई भौंरी तब मनु सो मनु मनिया।
उतरै पार वार नहिं आवै कालु न फेटी धरिया।
छारु परै तौनी करनी मां जो चौरासी परिया।
साकठु सो जो गरभै आवै सो गुरमुख जो तरिया।
जे तरिया ते जियतै तरिया मुये न कोई तरिया।
जलम-जलम कै मिटी कल्पना जबु समरथु गुरु पाये।
कहि मीता सतगुर से दाता कोइ न नजरी आये॥

रे सधुवा कहु कैसे घर जरिया बिनु घर जरे।
कुसल है नाहीं करम बन्ध कैसे टरिया।
तबहिं जीव का होय उवारा सत्य नामु जब धरिया।
नहितौ भरमि-भरमि मरि जैहौ चौरासी जिउ परिया।
जीव ब्रह्म कैसे कै मिलिहै केहि विधि अवन निबेरिया।
कहो मो सो समुझाय अबहु तू बाद किये कस तरिया।
हम ब्रह्म ज्ञानी हम तत्तु ध्यानी हमरी कंचन देहिया।
कहि मीता सोई संत सुजाना जिन पाये रघुरइया॥

रे साधौ जानैगा जाननहारा जिन-जिन तत्त्वु विचारा अन्धेका अन्धा परमोधा दोउ बूड़े मँझिधारा।
ज्ञानीका ज्ञानीमिले सुख उपजै तिनका मतहै न्यारा भौंदू नलका यों समुझाना ज्योंअग्नी घिउडारा।
कहने का मानुख की देही पसुहू ते अधिकाना सूकर-स्वान कीचु मां राजी निरमल जल नहिं प्यारा।
किलवा रकत पिये पय छाड़े ऐसा यहु संसारा कहि मीता इनसे को बोलै सुज्जन अंस हमारा॥

सांई के हक ह्वै दरबारा ताते हो हुसियारा दूब चरन ते हनी बोकरिया का कीन्हा जो मारा।
धरम राय जब पूछन लागी ताका करौ विचारा राजा रंक सिंघु औ चींटा एकुइ है वहि द्वारा।
पंडित पोथी बोल बगारे दे उपदेस सिकारी का राजा का परजा पायल लख आतम विस्थारी।
ना कोइ ऊँचा ना कोई नीचा गुनहैं न्यारी-न्यारी पापु-पुन्नि दोउ-ऊँचे-नीचे दररि सकल जगु डारी।
आतम पालै करता रीझैं मानि लेउ अतिवारा जो मारन की घाति लगावै तिनका नहिन उबारा।
जोनहि किया विवेकु दिलों मां का माला कर धारा दीनभये बिनु आपु न रीझैं संतन सबनपुकारा।
का बकरी का तीतुर जाया सोइ अपना है प्यारा याहै जानि रहै जो प्रानी कोइ नहिं बोरन हारा।
कहिमीता हम सत्यसब्द किया खीरनीर किया न्यारा जोमानै तिनका डरनाहीं सो जनहोय हमारा॥

बसंत

खेलति बसंत सखिन के संघु सखी सुलच्छनि करती रंग ।
जिन खेला ते भये बसंत पात झरे मन भये अपंगु ।
सतगुर पाया अगम अपार चरन कंवल चितु रचा हमार ।
रमिता राम रहे भरिपूर पाँच सखिन मिलि होउ हजूर ।
तजो बड़ाई छाँड़ौ लाज दाउँ परा अब चलौ संभारि ।
कालु बली ना करई दाँऊ हरि की सरन गहौ जो आनि ।
जन मीता खेले दास खेलत पाया हरि का साथु ।
समुझि देखि कहों बारम्बार जो चीन्है ता उतरै पार ।।

सावन

सावन रे बीरन करिहैं पयाना हरी घोरी चढ़ि आइहैं ।
छोटी मोटी डोलिया चारि कहारा हमैं चालि लै जाइहैं ।
ननदुली री बीरन बहुत रिसहिये कल ना छिनो भरि पाइये ।
आयेउ रे बिरन भली सुधि लीन्ही बाटि बहोरत मैं रही ।
देख्यों रे बीरन नैन सिराने झुड़वै आइ मिलाइयो ।
पहिरे रे बीरन सोरहों सिंगारा मां-बापु तहंवा दिये ।
जिओ रे बीरना कोटिन बरसै, राजु करो अमरावती ।
मीता तो गावैं सावन के भेदा बहनी बिरन मिलाइयां ।।

सावन गगनै चमकै बिजली रिमिझिमि बरषै मेंहु हिंडोलै ननदी ।
जाओ कागा मेरे बीरन आवै काहे करिहो सोर ।
झुलवा झूलै गांव बिटेवा गावैं भइयन के गीत ।
सुर-मुनि नल चहुँ जुग झूले माया की परतीत ।
गंग जमुन के बीच सुरसती नहाये गुरु एक दीख ।
पचरंग चुनरी पहिरी मजीठी लगी पिया की प्रीति ।
सखी सुजान संघु सुख उपजै गाये बिरह के गीत ।
सावन मीत मिले मन भावन होय महल मां सोर ।।

बोले ननदिया बड़े बड़े बोल हियरा फारि मन दुई करै ।
आगि लगै तोरे देसवै जाय हमैं बिरन लै जाइहैं ।
निसि दिन ठाढ़िउँ बिरन कै बाटि नैन पलक ना लागई ।
अन्न न भावै आवै नहीं नींद जागति रैनि भियावनी ।
ननद गड़े जैसे सेजरी कांट सुखु सेजरी कस पाइये ।
फूल की मारी रहे कपलाये धका दरारी को सहै ।
पिउ वियोग तन मदन दहै उतै ननद अंगड़ाई ।
मीता तो गावै सखिन के भेदा भेदु कहावै भेदिया ।।

गरजै गगन अखाड़ अवनि तपै चहुँ दिसि
दामिनि दमकन लागि बरखे गई तन तापु ।
सावन पहिरी सुरंग चुनरिया झूलिन सखिन के साथु
रिमि झिम बरखै चूनरि भीजै भीजि भीजि रंग लागु ।
अपने पिया सो कै गलबाँही करिबे प्रेम विलास
अमर महल मां सेज सवाँरे हँसि हँसि पूछबु बात ।
बिनु पिया कौन सिंगार सखी री बिनु बरखा कै साखि
कहि मीता कोइ सुजन बिरहनी ह्वै बिरह की आस ।।

सावनी परमारथ उलटि बूझै सो संत

सावन चुनरी दीनि करतार पच रंग रंगाइया
रूपै का खंभा सोने कै डोरी झूलै भागि सुहागिनी ।
चुनरी भीजी अंग लपिट्यानी रिमि झिमि बुन्दियन झरि लगी
बिजली चमकै हियरा थर थर होय मोर सोर बन मां करै ।
सुर-नर सबु हा हा खाये कौने पुन्नि धौं इन किये
गंवतो रे बीरन सावन मासु रानी राजा मति नागरी ।
कुंआरी करै मुहे मुंह चाहा भेदु न जाने बावरी
नैइहर मीत मितैइया छूटी दूरि देस गौना भयो री ।।

सावन आस भई बीरन कै कागु उड़ौना मयेरी मंगरे
अन्नु ना भावई नींद न आवई जागि जागि किया भोर ।
सूखि टटेरवा हरद जरद भई बवुली बोलै बोल
उझकी उझकी छिनु छिनु पंथु ताकों चितु ना लागै दूजी वोर ।
लीली घोरिल बीरन चढ़ि आये लीन्हे चारि कहार
ननदी का त्रास सासु का संसै छूटे सगरे सोग ।
लै चले बिरन कौन सुखु कइहै देखैं घर के लोग
मीता सावन गाइ सुनावै बहनि चली बीरा देस ।।

बाबा धोखे या जगु मारा गुरु सब्द न जाय बिचारा जिनकी बाँह मिलै सति रामा ते बिरले संसारा ।
लोभी फिरै दाम के काजे सिखवै सीख विचारा कंठी देइ दाम गहि लीन्है देखा गुरू तुम्हारा ।
बिनती करै सिख कर जोरे हम सिर घर का भारा कंठी बाँधि कौनि बिधि चलिये सो कहिदेउ बिचारा ।
दसौंध काढ़ि धरौ गुरु आगे या है बड़ा बिचारा तुम गिरहिन का कुछु डर नाहीं यहैभक्ति का द्वारा ।
अपना बिखै विकार न छाड़ै सिख क्यों तजै बेकारा पाथर नाव दोऊ चढ़ि बूड़े केहि बिधि उतरै पारा ।
या बिधि चलै भक्ति का लरई सूझै वार न पारा भौंदू भाव भक्ति ना जानै कथि बदि मरै गंवारा ।
सतगुर सत्ति परम गुरु पूरे जिनका सत्य बिचारा । उनका दीन गरीबी पावै उतरै भै जल पारा ।
मीता दास कहै सच बानी निन्दक का मुंह कारा पाखंडी का भरम न राखै ई संतन व्योहारा ।

भरमु तजु राम चन्द कौन कन्हाई, भजिले साँचा साई राम चन्द सोई तू कान्हा दूजा कौनु गनाई।
उपजै बिनसै सो नल प्राणी वा तौ साहेबु नाहीं दिल दरियाउ खोजि तब पावै नहि तौ हाथु न आई।
ब्रह्म अखण्ड बिनसि नहिं जाता देहि धरै वा नाहीं कहै मीता हम सत्य सब्द कियासतगुर केरि दुहाई॥

रे भाई हरि बिसराये बूड़ा का माया मा भूला, खोज गया रावण राजा का तू नहिं वाकी तूला।
गरभु बासु तो हवै हिंडोला जो आवा सो झूला डारु थांभि पारै ना जैइहौ पार होवे गहि मूला।
कटि गई डार मूल नहिं लागै समुझौ मूर्ख बिसूला जानै मोरि बलाय कहा बहु अन्त होइ तोहि सूला।
जाते गरभु बासु ना छाड़ै सो सगरी है भूला सहिंया हो मीता गोहिरावै दुनी करति है गीला॥

मनु रे बिन सतगुर को तारै और नहीं उपचारै दास कबीरा पीपा नामा सतगुर सबै पुकारै।
सुखदेउ बचन ब्यास मुख सोई यही हवै मत सारै बन्दी छोरै रामु मिलावै कलह कलपना टारै।
नेमु धरम किरिया तपु संजम जग्य दानु ना तारै, ई तो हैं उइले ब्यौहारा जैइहौ कैसे पारै।
ताते हो हुसियार रे भाई जनि जिउ जमु बसि डारै नर तन बार बार नापैइहौ येहि पूंजी जनि हारै।
तजि अभिमान मान करु दूरी निर्मल ग्यान संभारै रहु लौ लाय संत कीसंगत अउरन मनै विचारै।
भेटिले ब्रह्म ब्रह्म होइ जैइहै आवागवन निवारै कथनी बदनी दोउ बेकारा करनी दुःख बिदारै।
रूप रेखु साहेबु के नाहीं नहिं वहु काया धारै रूप अनूप हवै अति सुन्दर कोटि भानु ससि वारै।
काया नगर हवै पुर पट्टन तहाँ बसै आपु निनारे देखन हारे जगु बिसराये मीता तन धन वारे॥

हरि नामु सुधारस पीजे रे जाते जुग-जुग जीजे रे धरनि मूल बन्द दीजे रे तब घटहि रसायन कीजे रे।
पैठि पताल नाम तब निकसै तेहि चढ़ि सरबस लीजेरे रबि-ससिकेरामंदिर बेधाआगू बसकित कीजे रे।
सोई पार जो अलखै देखै जो अैसा मत कीजे रे। सो काहे का आवै जावै अटल भये रंग भीजे रे।
सीस उतारि धरै तब पावै जाको सतगुर रीझै रे कहि मीताअस नामु कहावै सुज्जन होय सो बूझै रे॥

कोई खेलै संत बंसत पाँचौं का धारै लिये प्रेम का पिचक्का रे काम-क्रोध भरि मारे।
मूल दुवारे माड़िया रे खोले पछिम केवार ब्रह्म झका झकि हो रही लखि शोभा अगम अपार।
जो यह खेलै प्रीति सो छूटि जाति जमु जाल भै सागर ते उतरै सोई भेटै सिरजनहार।
यहु फगुआ बड़ी भाग्य कारी का जानै संसार सुर मुनि पार न पाइयां तहाँ मीता खिजिमितगार॥

सतगुर सहाय मीता की बानी पदु बोले सम्वत १७६० मा
फतुहाबादी दस्सन दोसर बनिया तिनके ग्रह प्रगट भये
जादोराय नाम परम पुरुख का जदुबंसी नाउ कन्हैया का
रघुनाथ नाउ परम पुरुख का रघुबंसी नाउ रामचन्द का॥

बूड़ि जात जगु साचौ कासौ कहिल सन्देस सांची कोऊ न मानै हो झूठी सुनि सिख लेब।
आए न सुज्जन तारै हो हंस उबारन नांउ आवति गे बहु सहिया हो तेऊ गे भरमाय।
चीन्हौ चीन्हौ हमका हो नौका मोरे पास सुरति निरति ले खेवऊँ मानौ विस्वास।
तीन देउ ना पावई मोरे संघु विलास हमतो भइनि सुहागिनी छूटै नाहीं साथु।
आवति है अगिलइया हो कुछु करौ बिचारि चौंदा पुर जरि जइहैं हो कहँ रहन तुम्हार।
अगम पुरा अभिनासिया तहँ अनभै बासु माया मोह सब त्यागौ हो करु ह्वाँ की आसु।
एकु दाँय कासी कहा दूसरे अबु आय आगे फिर हम अइबे हो जौ लगि नहिं अगिलाय।
गरभ बासु ना आवइं कला धरैं हम आय जाति बरन ना हमरे हो माई बापु ना आँय।
जो बानी का चीन्हई तेहि तहाँ लै जाउँ जहाँ न कबहूँ बिनसै हो आनन्द मंगल गाय।
गिरही घर हम प्रगटई भेखु ढ़िगै ना जाय भेखु बचन जो मानिहै सो हमैं न पाय।
छल बल ते हम भागई हमें साँचु सुहाय। भेखु बिमुख हमते हवै कोऊ ना पतिआय।
मीता मंगल गावई पिउ प्यारा पाय जीवन जलमु सुफल भये सखी मिल ले आय।।

सुनिले नारि सुलच्छनी तजु कुमिता का संघु हिलि मिलि लेउ सखिन तन तब पइहौ कंथु।
आनि देव का ना ररै पिउ मारगु देखि सोई सुलच्छनी साहू रे जाकी सांची टेकु।
टेकु बावरी ना करै कै सौदा खोटि जोबन बीता जाति है फिर नहिं नहिं भेंटु।
हम सरगुन की सुन्दरी निरगुन बर कीन काया माया तहाँ नहीं गुन नहिं नहिं तीन।
अब निरगुन हम हूँ भई सबु काई छूटि जैसी की तैसी भई बाढ़ी निज प्रीति।
अगमपुरा की बानिनी इतना जसु कीन बाँह पकरि वा लै गई हम बिनती कीन।
घर घर हा हा हम किया अस कहु ना दीन वा बानिन पट रानिया वाकी सुरति अनूप।
मीता मंगल गावई मन हरि रँग भीन अबु न अवनि हम आँवई ऐसी सौदा कीन।।

मनु लागा हरि नामु सो मोहि जगु न सोहाये घर अँगना ना भावई तनु मनु रह्यो भोंहि।
बिन गौने की दुलहिनी हो एकु सुनिले बात काम क्रोध ना व्यापई भये पिया सो साथ।
कोटि कोटि व्याधा टरी छूटी जमु जाल अब तो पिउ हमरे भये हम पिउ की नारि।
सतगुर गौना कै दिया आवन ना होय ससुरे मां सुख बिलसन हो मैका गया धोय।
अमरलोक की रानियाँ ऐसा पाया राजु। ना बर मरै न हम मरै जुग जुग औहात।
सबै कहावै पीउ की पीउ सबके आँय जो कोरवा माँ लै परै तिनकी बलि जाँय।
काह भये काजर दिये बंगु का पुदिकाय जो लगि पिउ राजी नहीं तौ लगि ध्रग आय।
मीता मंगल गावई बिसान बजाय जीवन जलमु सुफल भये भाग्य जागी आय।।

कलयुग बीता आवति है जिये का दंदोर जरिहैं जीव अगिन बिनु माया मोरि न तोरि।
राजा प्रजा सब कही कानि न काहू केरि जीव जंत्र और सुर मुनी सब ऐकै डोरि।
चौदापुर होरी रची अमरापुर छोरि निकरो निकरो भाई रे सतगुर की खोरि।
सेवा कै हम बाचेन गुरु बन्दी छोरि आगे की अब लखि परी तब दिया ढिंढोर।
सांचु कहे निन्दा करै कुछु चूकि न मोरि देखो जगु बौरा भया मति लै गये चोर।
सावधान ताते रहौं फिर कहा बहोरि चलौमवासी देसवा नल मतिले मोरि भलकै जगै पुकारिया।
बहु भाँतिन केर तरने की बारी हवै नल देहि न फेर।
दाया ते बानी कही बानी लखु मोरि मीता पइंया लागई जहँ हरि सो डोरि॥

रंग लागा भ्रम भागा सुहेलरा बाजा हो आहो आनन्द उर न समाय सुफल भये काजा हो।
कुमति गई बड़ी बैरिन सुमिता आई हो अहो गावैं मंगल चार सखी जुरि आँई हो।
अछै बिरछ का बिरवा तौ अँगनई लावा हो अहो परमल बास गम्हीर दहों दिसि आवै हो।
तेहि तर खेलई होरिलवा तो बरखै मोती हो अहो सो लखि भा मनु थीर परम वा जोती हो।
कौन नेमु ब्रत संजमु तीरथु कीन्हेउ हो अहो कहो सखी समुझाय तो ई फलु पायौ हौ।
नहीं तिरथ कुछ बरत किया नहिं संजम हो अहो सेये गुरु जन लोग सत्य जे छाये हो।
सेवा भली बड़ेन की सुनौ नर नारी हो। मिथ्या कबहुँ न होय तौ समुझि विचारेउ हो।
मीता मंगल गावै गाइ सुनावै हो अहो या निरगुन का भेदु बिरल कोई पावै हो॥

अबु ना नैहर मनु लागै पिया पिया धुनि लागि, मूलै मड़वा छावा हो पाँच पचीसों बांधि।
अनगन बाजा बाजई हरद बरन भइ देहि, सूखि टटैरवा तब भई तजा ग्रेह का नेहु।
बरै अगिन अभि अन्तर जरि बरि भई खेह, दूरि देस गौना भया या बिधि जुरिल सनेह।
अब ना आइब जाइब हो कुछु नहिन सन्देह, कुंभ नीर सागर मिला कैसे न्यारा होय।
गाये बजाये न होवई बौरी पिया सो नेहु, सीस दिये ते होवई हँसी खेलु न होई।
पंडित मुलना पढ़ि थके मरम न पावैं कोय, जो पावै सो भावई पिया के मनु लोय।
भरम भुलाना या जगत तत्तु लखै ना कोय, भूसी मां खूसी भये काह कहे सुने होय।
मीता मंगल गावा लखी बिरला कोय, जो या मारग मां चली सोऊ अस होय॥

महरम मेरा यार दिलकी जानई, तू काहे ना हित करै बौरे वा मासूको पहिचानई।
और काहू सो मतलब नाहीं चाहे सो कहि जावई, पीतम मेरे मैं पीतम की दूजी नहीं चहाई।
कुंभ नीर ज्यों मिला सिंध मां कढ़ि कउनी बिधि जावई राजी किया राजु तबपाया बन्दा वारे जावई।
बिनुसिर दिये इश्क ना पावै महंगे मोलु बिकावई, कहै मीता लागी सो जानै और मरमु न जानई॥

आली दरद न जाना जाय काह बताऊं, बौरी सौ चहुँ दिसि का धाऊं रोग लिया तन खाय।
वैदा नारी मरमु न पावै मुलना थके बनाय, नाउत बरिया पचि पचि हारे करिये कौन उपाय।
महरम होय सो लखै पीर का मनु सो मनु मिलि जाय, अपनी अपनी सबैबतावैं अधिक देइ भरमाय।
रोइ कही तो कासो कहिये रोये दुख ना जाय, ताते मीता चुपकै रहिये दुनिया बुरी बलाय॥

सतगुर सब्दु हाथु नहिं आया पढ़ि पढ़ि पसुआ जलम गंवाया,
सो ऊँचा जिन हरि का ध्याया हरि का मिले परम पदु पाया।
जौ लगि सूपस जग्य नहिं आये तौ लगि कसना घन्ट बजाये,
सबन रिखिन का गरभ नवाया समुझा असुर बड़ा दास कहाया।
अम्बरीक का नेकु सताया चक्रसुदरसन जारन धाया,
सरन सरन कै मुनि तब धाया कोउ न राखि सका तेहि ठांया।
अपना गुनही तेहि बचाया तब बरनन का कहाँ छपाया,
अभिमानी का नरकु बसाया मीत गरीबी रामै पाया॥

सुनि ले हरिपदु की सेवकाई त्रिबिधि तापु जाते मिटि जाई,
अनग विघुन टरि जांय दास के जुगन जुगन तिनकी ठकुराई।
कोउ करै तीरथ, दानु, तप, जग्गी कोउ रटै रामचन्द कुँअर कन्हाई,
हम तो करी ताहि की सेवा जिन रचे रामचन्द कोटि कन्हाई।
मूल छाँड़ि जे डारन ध्यावै सो संसति मानौ बिस्वा जाई,
नरक बासु औ जमु की संसा तिनका या मजमानी आई।
वेदु कहैं वाके रूप न रेखा कहै कुरान बेचून रे भाई,
कहै मीता काया है माया अभिनाशी छवि वरनि न जाई॥

बहुत कठिन है भक्ति दुहेंली या नहिं हांसी खेलु रे, गाये नाचे ना मिलै याकी करनी अगम अपार रे।
पाहन पूजे ना मिलै रे ना वा तीर्थ अन्हाये बरत किये ना पाइये सठु नाहक करै उपाय रे।
छाप-तिलक औ माला रे यहौ भगति ना होय, कनफुकवा उद्दिम करै तेहि मरति बेरि दुख होयरे।
अन्धे का अन्धा मिला रे पंथु बतावै कौन, चढ़ि पाहन की नाउ री भै सागर बूड़े लोगु रे।
तिरिया चाहै रूप का रे कामी चाहै काम, लोभी चाहै दामु का हम चाहैं सति नामु रे।
ऐकै व्रत एकादसी रे मन चंचल करु थीर, मनु जीते हरि पाइये सो करिहै बिरला बीर रे।
सतगुर सेये पाइये रे प्रेम भक्ति का भेदु, अवना गवना मेंटई ऊँइ भेंटै पुरुष अलेखु रे।
मीता साँच पुकारई रे सब्दु न बूझै कोय, जो सब्दा पहिचानिहै तेहि जियत परम पद होय रे॥

प्रेम प्रेम का करता भाई प्रेम न गाये रोये होई
जोगु जुगति मां सुरति लगाई तब भया प्रेम मिले सुखदाई।
बिनु दरसे कंह प्रेम लगाई कहु साकठु मो सों समुझाई
कान्हा विखै की हाटि लगाई गोपी भोगई सो तुम गाई।
या तो विषय प्रेम नहिं लोई ऐसा प्रेम नरक घर होई
पाया प्रेम जिन्हों नल लोई सिरजन हार तुल्य सो होई।
सधन कबीरा मीरा बाई ई प्रेमी अस प्रेम कहाई
कहि मीता हम संतन ध्याई जहाँ प्रेम तोकी बलि बलि जाई॥

करि करि मेहर सबहु पर दाया जबै करै जिव कै फुरमाया
सो दरबेस अल्ला जिन पाया पर दुख देखि दुःख जिन पाया।
तिन दारू नहिं भांगै खाया पोश्ताहू का दूरि बहाया
जिन जिन अमल अल्लौ का पाया तिन तिन कपट अमल बिसराया।
गुदरी सेली पहिरि ठगैइया नाउ फकीर कसइया आया
बिसमिल्ला कै गर काटा तौ तौ बिसमिल्ला मिलिया।
पढ़ै बहुत बूझै कुछु नाहीं तिनका दोजक धरा धराया
कहि मीता औसाफ करैगा जौने साहब जगत बनाया॥

अैसी आठ सिद्धि हम पाई परम दीनता औ सेवकाई।
सील-संतोख-छिमा औ दाया राम भक्ति औ रामसहाई।
नौ निधि नौंऔं दुआरे जागे खिरकी खोली दोउ बनियाई।
बाहर निद्धि, सिद्धि माया की मरति बेरि ई कामु न आई।
सिद्ध साध भटके चारिउ जुग उपजत बिनसत जमु धरि खाई।
गुन की डोरि सकल जगु बांधा सोई संत जे गये छड़ाई।
सकल मनोरथ पूरे कीन्हें धनि सतगुर जिन जुगति बताई।
तीन गुनन ते अब भये न्यारे मीता आनन्द उर न समाई॥

हरि पाये पाई ठकुराई सो परलै माँ बिनसि न जाई।
बिनसै तीन-तैतिसौं जाई अठासी जो जगु द्वीप आही।
जो उबरी सो संत कहाई तिनकी सरि कोऊ ना भाई।
कोटिन रामचन्द मरे भुलाई कोटिन कान्ह कालु धरि खाई।
हवै भागवति तिनकी लोई जिनकी इन्द्री बसि माँ होई।
अर्जुन क्रोधी कान्हा बिखई हरि रसु तजा लीन्ह इन छोई।
कहि मीता संतन जो सेई तिनका जियत परम पद होई।
आनि देव रटि भूतुइ होई रामु सिवाय दूजा ना कोई॥

तेरे करम दोउ कुल बोरे का पढ़े बेदु पुराना रे।
बेदु कहै सो तू नहिं करता ताते नरकु निदाना रे।
बकरी भैंसा खड़े कटाओ कबै बेदु फुरमावै रे।
मांस खांय ज्यों स्वानु अघाना देखौ कुलीना आवा रे।
या जगु अन्धा तू का करई तोहि पूजन जो आवै रे।
कहौ कसइया बहु का कीन्हा काहे न भेदु बतावउ रे।
न्याउ करी तब करिहौ कैसा झूठा बरन बतावउ रे।
पाँच तत्व के सकल सरीरा जम मीता गोहिरावै रे॥

हरि सरन बिनु जमु धरि खाई छाडि देउ मन की चतुराई।
कंठी माला कैसे बचाई जब वा मोंगरा सिर पर लाई।
तीरथु बरत कथा चतुराई या सबु भरमु कामु ना आई।
जाते हरि दरसन ना पाई सो करनी सब भरमैं आही।
या जगु भूला काह बताई सांचु कहे ते जरि बरि जाई।
सुज्जन सुनौ सन्देस रे भाई सतगुर सो रहियो मन लाई।
सतगुर सो जिन रामु मिलाई सो सतगुर गिरही माँ पाई।
कनफुकवा के निकट न जाई कहि मीता वा जलमु नसाई ॥

तू का कथै अभागा, रे सधुवा भाग्य हमारा जागा।
चरन कंवल सो प्रीति लगाई निरखि निरखि मनु पागा।
छापु तिलक दै जगु भरमाया हरि का रंगु न लागा।
ऊपर उजला भीतरि मैला देहौ काह जुवाबा।
चित्रगुपित्र करी जब लेखा न्याउ करी धर्मराजा।
काल कठिन तब मारन लगिहै पौली जैसे सागा।
सोई भक्त जो होय सनीपी अवना गवना थाका।
अैसा होय ता मीता मानै पाखंड सो नहिं काजा ॥

पियै पाये मुरसिद भेदु बताये। अउर उदिम के निकट न जैइहौं करिहों मन का भाये।
टूटा का मधु दूरि बहाया जहाँ नफा नहि पाये नाम बनिज ता धनी का मिलिया धंनिया तबै कहाये।
तीरथु कै कै पसु बौराना भक्ति भेदु ना पाये अभिमानी ते रामु दूरि हैं तेही ते भरमाये।
किरपा करी सांचु के आये तिनका कंठ लगाये कहि मीता झूठे ते न्यारा झूठे दूरि बहाये ॥

जिनके कुमति सदा रहै छाई तिनसों काह विवेकु सुनाई।
लहसुन खांय कपूर बताई अैसे के निकटै न जाई।
सांचे दिल सो साहेब राजी दीन गरीब मिजे बहुताई।
झूठे खोजु करै बहुताई तिनके हाथु कबहुँ ना आई।
बिखु का बोइ अमी फल मांगे देखौ या जगु की बौराई।
चित्रगुपित्र बड़े लेख धारी तिन सो रहिये कौन छपाई।
कालु करी तिनकी महिमानी आई बर जब आई खुटाई।
कहि मीता तब कौन उबारी जाहिर होइहै तोरि खुटाई ॥

खेलाति निरगुन

मियां मनु लागा सेजरियां अंन न भावै नींद न आवै जागी दिनु रतियाँ।
जाहिर होय ता जाहिर कीजे ई वातिन बतियाँ।
हरद जरद तन भया टटेरा हूकि उठै छतियां।
प्रेम नगर की डगर कठिन है जानै जिन हू किया।
चितै चितै घायल कै डारा मरना तबै भया।
मच्छी तलफि मरै पानी बिनु ऐसा मोहु हुआ।
होय निरसंक मिला मीता का हंसी करै दुनिया ॥

अबु मैं पाया रामु सनीपी प्रीति भली तिनही की।
जाकी प्रीति कटी जमु बाधा जगु मां बाजी जीती।
आनि देव मोरि पूजै बलैइया उनहूँ का जमु लूटी।
हम तौ भये मवासी बासी सो पदवी ना छूटी।
पाखण्डी का अन्धा पूजै माया खइहै धूती।
सूकर स्वान कीच मां राजी चन्दन सो का प्रीती।
सदा मलीन पंथु का जलु ज्यों, यों साकठु की रीती।
कबहु न होइ थीर मनु तिनका जेहि मीता अनरीती॥

जगु सो बादै मोरि बलैइया सुज्जन के हित बात जनैइया।
कांदो ईंट डारि कै का गुन देहि भरै औ मन घिनुअइया।
अनबूझे जिव ह्वै कालु का बूझे अंस हमैं मिल जइया।
कालु का अंस हाथु ना छूअै काहे का बादु करै बहुतैइया।
छानु किये ते साहेब पाया सतगर चरन जबै मनु लइया।
या मैदान सिंधु सूरों का कूरा तहां नहीं ठहरैइया।
ताल तलइया हंस ना बैठइ बकुला के गुन ई हैं भइया।
कहि मीता जाके मान सरोवरि सो कस पैठै तालु तलइया॥

चलु मनु रे सतगुर चटसारा पढ़ु हरि नामु होय भै पारा।
पोथी थोथी भरम पसारा पढ़ि सुनि भूले मूर्ख गवाँरा।
राह चलावै भै सागर की रोकै भक्ति भेदु का द्वारा।
अैसे संघ कबहुँ ना बैठौ भजन भंग परि जैइहै पारा।
सो निगुरा जाका गरभ बासु है सो सगुरा जाका भा निरुआरा।
कान फुकाय कहां तन जइहो नहिं भेटा जिन सिरजन हारा।
ढोलु बजाय चला लै पंडित जमु दारुन जहँ जारु पसारा।
कहि मीता कोउ हटकि न मानै बोरनवाले का अतिवारा॥

का पीपा का करै कबीरा भजु निज नामु मिले रघुबीरा।
वोऊ पहुँचे हरि के तीरा तू तौ भया माया का कीरा।
पर करनी कथि कामु न आवै तू करनी कीन्हा नहिं बीरा।
जैसे रंकु लाख बतलावै कौड़ी नाहीं वाके तीरा।
पानी कहे प्यास ना जइहैं बिनु पिये साधो करौ बिचारा।
गल्ले रिल्ले छाँड़ि अबहु दे नाहित सेइहै जमु का द्वारा।
पाँच मारु होइहैं तत्र मुजरा ऐसी चालु चलै सो सिगुरा।
कहि मीता सोई गुरु मेरा बहुरि न करइ या जगु फेरा॥

सुज्जन सुनौ संदेस हमारा जमु दारुन जगु जारु पसारा।
जानि न परै अंध संसारा तजु माया तू करु निरुआरा।
सत्ति नामु ते फाँसी कटिहै येही ते मिलिहै करतारा।
सो तो नामु देई गुरु सांचे निरखि निरखि उतरै भै पारा।
जीभ रटो ना माला फेरो वा तौ नामु जगत ते न्यारा।
नहीं मंत्र नाहीं ओंकारा वा जानी कोउ जानन हारा।
बादी हाथु कबहुँ ना लागी पापन का जिनके सिर भारा।
कहि मीता कोइ सब्द पारखी है दुनिया मां अंस हमारा॥

भजु मन राम नाम सति सोई जाते जमु की फांसी कटोई।
होइहै काह रटे औ गाये जो इन्द्री मनु डिढ़ ना होई।
सत्य दीनता सतगुर सेवा रामु सनीपी सहजे होई।
सोइ ज्ञानी सोइ ध्यानी कहिये जाका आवागवन न होई।
तीरथु बरत टोइ सब देखे या विधि हरि पावै ना कोई।
अन्धे भटकि मरे चारिउ जुग सतगुर बिनु दरसन ना होई।
सांचु कहे ते वैर करति है झूठे का पूजै जगु लोई।
जे घटु छानु विवेकु नहीं है कहि मीता सो नरकी होई॥

मनु रे है तौ रामु नजीके तू काहे का भटकै अवधि वौडैसै मथुरा कासी कहो द्वारिका को ता।
तीरथ पाहन पानी देखा कहु ध्यावै तू केहिका ऐसी चालु थीर नाहीं है होइहै पानी न पंथु का।
करम करै करता ना चीन्है भटका मूढ़ जुगन का कथा बांचिकै पंडित बूड़े श्रोता चले सुनै का।
छाप-तिलकु गरे माला पहिरकै चाहत हवै तरै का कहिमीता खेलवाकै जानी मिगरी काल बलीका॥

हरि सों लागा रे मन मेरा बेदु करौं का तेरा सो विद्या मोहि सतगुर दीन्ही बहुरि न करिहों फेरा।
बेदु पुरान पढ़े के का गुन जो जी का जमु घेरा पांचों मारि पचीसों लूटी कालु भया तब चेरा।
ग्रंथ जोरि कै किया हजारन साहेब सों मुख फेरा विद्या बांची माया कारन नरक परी जिव तेरा।
ब्राह्मणसो जो ब्रह्मै मिलियाब्रह्मकहावै विप्रा कहिमीता तुम जनेउपहिरकै मांस खावोजैसे सिकरा॥

माया तू काहे का लावै लाई झूठी तोरि बड़ाई तेरा अंवल भांग कैसा छिनकै मां मिटि जाई।
हम तौ राम अवल के माते उतरि कबहु ना जाई जिन रे पिया ते जुग जुग जियै अटल भई ठकुराई।
जहाँ लोभ तिनकी तू रानी संतन की है चेरी काम चलाय लात गहि मारी क्या मेरी क्या तेरी।
तोहि लै लै जाय नरक का को जानै गति तेरी कहि मीता हम तोहिं पहिचाना सतगुर सेवा कै री॥

पैठि पतालै बांधिया लगी एक टक डोरी मकर तार काढ़न लगी गई मोरी तोरी॥
पांच पचीसों बसि भई भीतर बरी होरी अगनि जरत मन ना डिगै सतिया है सोरी।
अगम चढ़त धीरज धरा मकरी लै दौरी सत्य लोक या विधि मिला भई पिया सो भौरी।
अजर अमर बर पाइंया मोहू ना मरौं री करनी कै मीता कही सुनि लेउ सखी री।

उरधु मुख करैं पवन अहारा ते होइहैं विखहर औतारा
उलटा पवन चढावै लोई बाजीगर के बन्दर होंई ।
पट्टी लीले आंत पखारै ते होइहैं स्वानु औतारै
सुन्नि मडिल बहु तकैं गँवारा ते होइहैं चिल्हया अवतारा ।
बाजीगर के बकरा होई चौरासी आसन जे करई
जल साई होय जे नल रहई ते मीन होय फिर अवतरई ।
मिरतुक संघे देंई तन जारी ते चकोरनी होइहैं नारी
तेउ चकोर होय अवतारा पंच अगनी जे करैं अहारा ।
धरती मां लै डंड समाई तेऊ अजगर होइहैं आई
तेऊ अजगर होइहैं आई जेहु द्वारिका देहि दगाई ।
गया जुइन जे निकरै जाई तेऊ अजगर होइहैं आई
जटा राखि जे लावै छारा तिरथ-बरत ते होई लबारा ।
झूठा नाउ धरा बैरागी तिनका नरकु कबहुँ ना त्यागी
झूठा बभनु कहावैं लोई कुंभी नरक तिन्हऊ का होई ।
नाउ फकीर न भये फकीरा ते होइहैं बिस्टा के कीरा
कहि मीता मिलिहै करतारा तब होई भै ते निरुआरा ॥

आजु बसेरवा नियरे रे फिर होइहै दूरी पनिया पियासे पी ले रे कुमिता करु दूरी ।
जंगल जंगल का फिरै रे कुअना तोहि तीर वृन्दावन है बिन्दका तहवाँ है नीर ।
नउवा-बरिया-तीनिउ रे तिनते हैं दूरि हिलि मिलि लेउ सखिन तन तब मिलि है मूरि ।
सूखा परिहै जाहि दिन तब मरिहौ बिसूरि रोवा बेरी होइहै रे जमु डारी तूरि ।
चौदा पुर मां जो बसै सो जम की सीर । कुछु काटै कुछु ताकै रे ताते निकरौ बीर ।
पापी पापी ना कढ़ै बांधे कालु जंजीर सांचे तेते रिल मिले किरपा पिऊ केरि ।
चले नीच हो जे नला तिनका मन धीर सुख सागर जियरा परा गई तन की पीर ।
मीता मंगल गावई रे गुन त्यागे तीन अबु ना मरों मन माना रे सेवा गुर की कीन ॥

बाबा सोई हिन्दू सोई मुसलमान दूजा कहां ते आया आतस-आबु-खाक-पवना से पुतरा अजब बनाया ।
हुआ अल्ला अकबर जाको कहता सो येहि मांहि समाया सोई ओंकार रहिमाना सोई रामु कहाया ।
कोइ कहै अल्ला कोइ कहै रामा नाहक झगरा बढ़ाया जिन खोजा तिन ऐकै देखा गुरु-पीर सो पाया ।
दसरथ बेटा आदम देही तेहू राम का ध्याया गुरु पूरे बिन दरस न पाया ताते गोता खाया ।
एकु हवै दूजा कै जाना तिन नहिं साहेब पाया एकु हवै एकै का जाना सो बन्दा मन भाया ।
काया नारी ब्रह्म पुरुष है बेटा जीव कहाया उपजत बिनसत बहु दुख पावै येहि दुख साहेब ध्याया ।
नेकी-बदी लिखी नित जाती ताको छोरु छड़ाया सो-सो भया जगत ते न्यारा फिर जगु का समुझाया ।
जीव जंतु काहुइ न सतावै सो दरवेस कहावै कहि मीता ता सो पिऊ है राजी उन ससुरे सुख पाये ॥

अमर तेई कहावई आवागवन निवारा देहि छाड़ि ते जाति हैं आवागवनु निवारा।
बहुत दिना जी का भये किया कालु अहारा जमु का फंद छड़ावई तिनका मत सारा।
कोटिन राम चन्द मरि गये मरे कोटिन कान्हा कोटिन बिस्नू महेसुरा जेवऐ जमु द्वारा।
ब्रह्मा बेदु पसारिया भया गुन विस्थारा निरगुन ब्रह्म न चीन्ह्या धोखे जगु मारा।
सहियाँ भये पुकारऊ मानौ अतिवारा अभिनासी पहिचानि ले छूटै जमु द्वारा।
सो सब ही मां रमि रहा है सब ते न्यारा सतगुर सेये पाइये तजु और विचारा
पीपा नामा रैदासा इन तत्तु विचारा इनकी सरि केउ ना जुरै सठ मान गवांरा।
जबै पुरुख आपुई रहै कुछु नहिं विस्थारा जन मीता तब की कहै अनभै विस्थारा।।

परम पुरुख तब पाइंया जब तन धन वारा सतगुर सेवा सब बनी मानौ अतिवारा।
तेंतिस-तीन-अठासियाँ चौबिस अवतारा कालु फाँसि येऊ परे लै सब संसारा।
सम्रथ गुरु का सेइ ले करिहैं भै पारा कालो सीस नवावई सुनु मूढ़ गवांरा।
दुखी सेये दुख अधिक है सुखी रामु हमारा जन मीता अमर भये आवा गवनु निवारा।।

भजिले राम सजीवनि मूरी आखिर यहु तन मिलिहै धूरी
अबकी निकट फेरि है दूरी अउरी देहि मां मिली न मूरी।
तद्यपि माया है भर पूरी, हय-हाथी औ खलक हजूरी
या तो ख्वाबु चलै नहिं साथा जानि पारै आगे की बाटा।
मिटे लंकपति बिलम न लागा रामचन्द मरे अवध के राजा
कान्ह मुये लै छप्पन कोटि अटल संत भये हरि की ओटि।
सिरजनहारे सो लौ लाओ आनि देव का मनहिं न लाओ
सो सबु घटु मां रहा समाई मीता मिले परम गुरु ध्याई।।

अनग विधुन प्रभू जन के टारे दासन के उइहैं रखवारे
अदना देव ते काह सरै रे समरथ साहेबु रामु हमारे।
सेनि सरूप तुरत माया कै, हरि अज्ञा गै नृप के द्वारे
मरदन करतै राजा सुख पाया धनु दीन्हा लै सैनि पियारे।
नृपति राना लै काली का मीरा के गरे मांही डारे
सो काली पाहन कै डारा कब साहेबु धरिया अवतारे।
बांधि जँजीर गंग मां बोरा छोरि लिया औ पार उतारे
जन कबीर की संसो मेटी कब साहेब धरिया अवतारे।
रैदास भगत सो बाद विप्र कै राजा के लै गये दुआरे
पाहन काढ़ि गंग ते दीन्हा कब साहेब धरिया अवतारे।
नामा का पतिसाह कैद किया गइया मारी धरी दुआरे
सो गैइया उठि बोलन लागी कब साहेब धरिया अवतारे।
जिनकी इच्छा ते सब होता सो काहे धरिया अवतारे
रामचन्द कान्हा भये फजीहति गरभु नवावा सिरजनहारे।
संतन की सरि तीनिउ नाहीं रामचन्द कान्हा काह बिचारे
कहि मीता भजु सत्ति पुरुष का नहितौ परिहौ नरकु दुआरे।।

जाको खोजै सो तुस ही माही अनत हवै वा नाहीं हिन्दू पूजै पाहन पानी पूजै तुरक मसीदी।
कासो कहों दोउ हैं भूले कहे लरन का धावै अपने घर की खबरि न पाई औरे का समुझावै।
जियत जीव मुरदा कै डारैं तौन सबाबु बतावै कहो अजाबु कौन है भाई है कोऊ समुझावै।
माला तसबी फेरे न पइहौ मेहर-दया गहु पीरा कहि मीता सोइ होय फकीरा जाके पिऊ हजूरा ॥

अल्ला पाया दोस्त फकीरा जमु के झगरा कीरा काह भये कपरा रंगि पहिरे कहो बात सोइ बीरा।
सोई गुरु सोई है पीरा बदी कुफुर जिन तूरा छिन-छिन खून करै या मनुआ पहुँचा चहै हजूरा।
काह भये जगु भये बड़ाई खसम किया है दूरा छिया-छिया तेहि हवै बावरे नल-तन खोये हीरा
पिउ के घर की खबरि न पाई अैसे रहे भरि पूरा जहां इस्क तहां भेखु नहीं है मीता इस्क हजूरा ॥

रामु नाम भजु अन्तर ध्यानी छूटि जाय चौरासी खानी।
कन फुकवा सो परै न जानी वा तो नामु भिन्न निरवानी।
सतगुर कहिये परम बिनानी देइ नामु निज सुज्जन जानी।
सो कर जपै न माला आनी निरखि निरखि पाई रजधानी।
सो परलय मा बिनसि न जानी।
बिनसै चौदा सुर मुनि प्राणी।
बिनसी रवि-ससि परवत खानी।
विनसी धरती रही न निसानी।
द्वादसि कला धरै रवि आनी जरिहै जीव बिना हरि जानी।
तब कहवां तुम रहियो प्रानी हरि बिसराय माया लपिट्यानी।
गोरख-भरथरी औ सुल्तानी माया त्यागी या दुख जानी।
अबहू जागौ नल तन प्राणी बिनु जागे तोरी होइहै हानी।
जागे गोपीचन्द मीरा रानी जागे सधन-कबीरा ज्ञानी।
जागे सैनि धना-ध्रम बानी जागे पीपा रैदासा जानी।
जागे नामा-नरसीले धेनी जागे पोजा जागे बेनी।
जागे बहुत कहां लौ बखानी भागवान हम तिनका जानी।
सोवै अभागी विखैयन सानी आगे दुःख परै नहि जानी।
मीता पाया पदु निर वानी कै विवेकु किया सब्द बखानी ॥

भाई मैं काहे ते बौराना कहो सो बात सयाना करम भरम का दूरि बहाया अपना पिउ पहिचाना।
खसम बिसारि और का ध्यावै तिनका जमपुर जाना हेला मारि जाय सब नरकै देखौ इनके ज्ञाना।
बूड़ नि संघु बूडता ता मोहू गुरू सब्द मनु आना ताते कुसल परी जियै केरी छूटा गरभु बंधाना।
तीरथ बरत टोय सब देखे छोई ते सबु छाड़ा राम रसायन मीता पाई अटल भया तबु ज्ञाना ॥

उठि मिलु आय भलो सुख पइहै पिया की सेज तपन तन जैइहै।
हिलिमिल लेउ सखिन संघु प्यारी मन मजीठ जागे रंगि जैइहै।
करु गवना अवना ना होइहै जोवन भेंटु बलम बसि होइहै।
कहि मीता तू मानि बचन ले चूके ता पाछे पछितइहै ॥

नाउ पाथर चढ़ि भूलेहैं मूर्ख गँवारा तरने की आसा करै रे कैसे कै जैइहै पारा।
वार पार ना सूझई रे जगै सुनावै पार बूड़े दाबी देई कै रे तिनही का अतिवार।
खेत नसावा खरथुआ रे जलम नसावा कूर मारे लोभ बयार के हीरा भरि गयी धूरि।
या दुनिया दुखु दारुनी रे बाढ़ी बिखु की वेलि कहो हंसो का संघु रहै रे मानसरोवर छाड़ि।
सांचु कहै ते जरि मरै रे झूठी बहुत सुहाय नामु भक्ति का लेति हैं रे रहे दामु मनु लाय।
छापु तिलकु औ माला रे सिख का दिया बताय ताहि भरोसे वे रहे रे बांधे जमपुर जांय।
बहुत गई थोरी रही रे अबहूँ चेति लबार करु सतगुरु की सेवाकी रे जाते है निस्तार।
मीता धरा विवेकु का रे ताते पाया भेदु पापी सब्द ना मानई रे करत करेजे छेदु ॥

हरि हीरा हिरदे जिन पाया सो भक्ता फिर गरभु न आया।
सो सतगुर जिन रामु मिलाया तजु तेहि का जिन रामु न पाया।
अन्धे ठगु सो कान फुकाये माया देइ धरे दोऊ पाये।
धोखे गुरु संघु जलमु गँवाये हरि की भक्ति का मरम न पाये।
साकठु है गुरू नांऊ धराये आपु न बूझै और बुझाये।
माला तिलकु दै सिख्य बोराये बूड़े दोऊ दासु देखु आये।
सुज्जन के हित भरम ढहाये छानि करेउ गुरु जिन हरि पाये।
कै विवेकु मीता मत पाये झूंठ सांचु तब नजरी आये ॥

मैं रोगिया होय चहुँ दिसि धाया रामु वियोग रहा तन छाया
जहाँ जाँउ तिन भरम बताया डिम्भु देखि मैं फिर-फिर आया।
कोऊ राखि जटा कोउ छापा माला कोउ पढ़ै बेदु कुरान सयाना
कोउ कानन मा मुद्रा डारे कोउ जंगम होय फिरै दुआरे।
पाखंडु भेखु जगत जिऊ बोरे बूड़े आपु कहैं बहु तारे
तिन ठगियन के गये दुआरे उइ अन्धे हमते डिठियारे।
सतगुर वैद्य मिले घर वारे ताहि छिन्न गये रोगु हमारे
ताते मीता भे हुसियारे पापी भेखु नरक के द्वारे ॥

गुन अवगुन मोरे जानै रमइया जानै ना कुछु जगु के मनइया
पापु पुन्नि ई है दोउ भइया इनके बीच कालु धरि खइया।
सतगुर चरन जबै मनु लइया कटिगे पापु नाम सति धइया
पाया मैं राम सकल सुखु दैइया अबु न मरौं मोहि रामु दुहइया।
जुगन-जुगन के मैलु छड़इया धोबिया सुघर भागि ते पइया
खाये पिता खाय ली मइया एक छत राज काया गढ़ पइया।
बल वल ते हरि हाथु न अइया जहाँ साँचु तिनके संघु पइया
सुज्जन के हित मीत जनइया साकठु बूड़ै जानै बलइया ॥

करिहै रामु सोई तो होई जगु बपुरे की काह चलोई
हरनाकुश रावन से लोई मिटि गये कंस मरे दुख रोई ।
दीनन के हरि सदा सहाई तात वाउ कबहूँ ना लाई
जन कबीर का लिया बचाई नामा के हित गाय जियाई ।
सतयुग त्रेता-द्वापर माहीं कलजुग असुर बड़े दुख दाई
जाकी करिहै राम सहाई तब असुरन की कुछु न बिसाई ।
या सुनि मीता निहचै आई ताते शंका दूरि बहाई
भूकै कुत्ता जानै बलाई प्रेम भक्ति सतगुर सो पाई ॥

भक्ति न कीन्हा हरि ना पाये पढ़ि पुरान का पाये रे माया कारन विद्या बांची पापु पहार बढ़ाये रे ।
श्रोता बक्ता जमु धरि खाये पाछू नरक डराये रे सुनतेऔरि करै कुछु औरी छपिहैंन तौन छपाये रे ।
सांचु कहे ते बैरू करति है समुझै ना समुझाये रे कही बिचारि टारि को डरिहै हम घर भेदी आये रे ।
ब्रह्म मिले भये हम ब्राह्मण तब मीता गुन गाये रे सोई सूद्र जिन ब्रह्म न भेटा का भये जगत पुजाये रे ॥

अब भये वैदु मिले करतारा भैसागर ते भा निरुआरा
ताते चीन्हे भेखु लबारा मानि लेउ अतिवार हमारा ।
जो कोउ बूझी सब्द हमारा सो ना परिहैं नरकु दुआरा
पर स्वारथु का किया पुकारा सुज्जन के हित सब्द पसारा ।
जहाँ जहाँ है अंस हमारा ते सब करिबे भै ते पारा
साकटु ते कुछु नहिन हमारा दाबी देइ जाय जमु द्वारा ।
हम साहेब के साहब हमारा जन मीता सेवै दरबारा
भूकै दे स्वानु न जान हमारा उनही का नरक लिखा करतारा ॥

मियां जी बदी दिलै क्यौं लावै नेकी क्यों बिसरावै नेकी देइ मिलाय धनी का दोजक बदी दिखावै ।
गुरू पीर की सेवा कैले जीव जंत्र न सतावै गुरू पीर तिसही को कहिये जो पिय आइ मिलावै ।
जो कै गये सो अपनी कै गये जो तू करै सो पावै और कहों ता ना बनि आवै देखे ते पतियावै ।
बाँह पकरि लै जाय फरिस्ता कोउ आडु न आवै कहि मीता साहेब पनाह ते बारु न बाँका जावै ॥

है लोभी मोही अैसो, कुम्हरा का कुकुरा जैसो पोटेन माटी लखि धैइहै स्वामी का अंत न पइहै ।
कै छापु तिलक बहुताई कंठी माला सो लै लाई, बिसरि गई रघुराई तोहि जमु ते कौन बचाई ।
सब भेखु करै ठगिहाई सति साहेबु भेखु न पाई गिरही का रामु मिलाई परस्वारथु जो लपिट्याई ।
सतगुर हैं गिरही माही उइँ किरखी कै कै खाई सोइ आगे ते चलि आई जन मीता सत्य बताई ॥

भाग्य ते हरिचरनन चितुलागा लोभमोह तब भागा धनि सतगुर जिनराह बताई चंचलमनुआ थाका ।
भैसागर में बूड़िजात ता काढ़ि लिया दीनानाथा पार भयेअब वार न आऊ नहींनहीं है उस वासा ॥
कोउ पूजै पाहन कोउ पूजै गौरै साहब रहा निनारा साँचु कहे ते मारन धावैं केहू न सब्द विचारा ।
जबै करै जिव मेहर न आवै करै भिस्त की आसा कहि मीता दोनों हैं भूले का की कहिये बाता ॥

प्रेम झरि लागी लागी अब भई भागि सुभागी
मदन जरै दहों दिसि भया जगुमगु जबु जागी मैं जागी ।
देखि देखि पिउ मनु बौरा भया सेजु मिली सुखरासी
आउँ न जाउँ गये ससुरे के जो पागी सो पागी ।
पाँच पचीसो दायज दीन्हा तबते भई सुहागी
अबु न मरों गुरू मोहिं जियायो दुरमति भागी भागी ।
अब जगु लागै तूमरि करुअइ गृह बन रहै उदासी
मीता रंग लगा जब सत पदु है भई हांसी हांसी ।।

भक्ति बिना हरि हीरा न पावै दसों दिसा जो फिरि फिरि आवै
खोटु दाम लै चला ठगैइया आई जौहरी का बौरावै ।
साह सनीपी मन का महरा तिनते कछू न छपै छपावै
जाओ ठगैइया घर अपने का साहै भेद रामु बतलावै ।
साँचु धरै औ गहै गरीबी पर स्वारथ का जो जन धावै
तिनका हरि के दरसन होइहैं भेदिया भेदी खबरि सुनावै ।
पाखंड कै कै जगै रिझावै तिनका जमु नरकै लै जावै
कहि मीता हम दोऊ सुनाई जो जस करै सो तैसे पावै ।।

पर निन्दा का फिरै जुझारा पापु करत जुअना जिव हारा
इनका दूलम नल औतारा बिच्छू फनिग हों बारमबारा ।
परे नरक जइहैं तर बोरा जानि न परै गरभ का मारा
उजरी झंगिया चदंन लिलारा हँसि हँसि बातै कहै गँवारा ।
कहै बरन हम हवै अठारह आपई हो बैठे करतारा
चित्रगुपित्र लिखै अपकारा मरति बेर है न्याउ तुम्हारा ।
पाँच तत्व के सबै सरीरा जीव ब्रह्म सबही के तीरा
अब को पांडे अब को सुद्रा दूजा कौन हवै कहु कूरा ।
कौन बरन ता सधन कबीरा जिनका आइ मिले रघुबीरा
सो उत्तिम जो भक्ति गम्हीरा सोइ सूद्र जो विमुख सरीरा ।
उत्तिम कुल हम लखा तुम्हारा अजिया बधि कै किया अहारा
चिकवै तुम्हैं बीच कै डारा बातौ है परिवार तुम्हारा ।
ब्राह्मण सो जाके ब्रह्म विचारा ब्रह्म लीन भये तजे विकारा
गरभु बास तिनही निरुआरा उनका पूजे मिलै करतारा ।
बिनु विवेकु बूड़ा संसारा कैसे कै उतरै भै जल पारा
कहि मीता हम छानि पुकारा निन्दकु का मुंह होइहै कारा ।।

मानि ले आखिर होइहै लेखा गरभ गुमान काहे का भूला साहेबु घटु घटु देखा ।
राजा रंक पतिसाह ऊमरा जीव जंत्र ऐकु लेखा दावा घाई छूटि न जैइहै ताते करौ विवेका ।
बेदु कुरान दोऊ गोहिरावै फैलु करै किस बूता पहुँचे बन्दे तेऊ पुकारै नाहक खइहै गोता ।
अपनी काया पोखन काजे परजिव काहे लेता हक का डर क्यों बिसराया कहिमीता क्यों सूता ।।

हो मीता मोरी सहर भई बदनामियाँ लगन लगी छूटै ना कैसेउ लोन मिला ज्यों पानियाँ।
बिनु देखे मोहिं कल न परति है ननद करै उपहासियाँ कितै जाउँ करिये अबकैसी देउ तौन बतलाइयाँ।
अबकी बेरि निबाहिपार करोमेरी जीवनि तुम ताइयां ना उ चढ़ाइबीचु जनिछाड़ों हमेंठौरु कहुँनाहियाँ।
तुम हो साहेबु मैं हौं चेरा ताते अरजि सुनाइयाँ सदा लाज राखी सखियन की जन मीताजसु गाइयाँ ।।

सखी मोहिं मिलावो पिउ की तांई सेज सुनी सुखदाई।
चेरी होय करौगी सेवा तुम सरनागति आई।
भागि-सुभाग सुहाग भरी हो जानि परा जसु सुनि बहुताई।
अब की बेरि निवाहि पार करो तुम सो पिउ सो भलि बनि आई।
हों अतीम कोउ दूसर नांही जानति हो कुछ छपिहैं नाहीं।
पानी पड़ोहे का बहि लागा मिले सिन्ध तौ कढ़ता नाहीं।
अब तौ द्वार परै गुन गइहौं जाउ कहां कुछु सूझति नाहीं।
मीता अरज करत है ठाढ़े बल टूटा कुछु चारा नाहीं ।।

तगीरी कोई घरी मां आई का गाफिल फिरै भाई नौमति महल सपन से होइहैं जमुघर आगि लगाई।
चित्र गुपित्र बड़े लेखधारी तिनते काह छपाई मोगदर आंधी से आवैंगे तब को आय बचाई।
मद अन्धा काहे भूला है रामु भक्ति बिसराई अबहूँ चेति मूढ़ सठु बौरे हरि सुमिरो सुख दाई।
दौलति दुनी नारि सुत बन्धौ कोऊ काम न आई कहि मीता रावण से मिटिगे का तुम्हरी ठकुराई ।।

का करै कालु रिसाई राम सो जो हम प्रीति लगाई भयो भरोस बड़ा बलपायो जन की करै सहाई।
नामा-मीरा-दास कबीरा सैनि की साखि बताई ताते जिअरा डरपत नाहीं सतगुर केरि दुहाई।
गई बेकार सकल या तनकी सुमिता प्यारी आई सील सन्तोष छिमा औ दाया संतन सेये पाई।
मीता दास दीन हो छूटा जी की बन्दि छड़ाई भूली दुनी मरम ना जानै कहिये ढोल बजाई ।।

प्रभू तौ दीन सांचु के साथी पावै न क्रोधी पापी अजामील गनिका औ सधना ई पूरुब के बासी।
जपुतपु नेम करै बहुसंजम कोटि तिरथ कै आसी राम भक्ति बिनु पारन होइहो सुन कासीके बासी।
मेढ़क मीन रहै कासी में कहु कैसे तरि जासी झूठी सुनि सुनि जगत भुलाना सांचे की करै हांसी।
सुज्जन का उपदेस हमारा मूरुख का जमु फांसी मीता का है भेदु पियारा जाहि मिले अभिनासी ।।

मारगु बांका अगम का कोऊ पूरा जावै कूरे हाथु न आवई दहु दिसि फिर आवै।
रेचक कुंभक साधि कै कोउ पवन चढ़ावै कोउ अजपा मन लाय कै बहुतै भरमावै।
कोउ आंतन का धोवई कोउ मुद्रा लावै स्वांस चढ़ावै जिये का अजगर हो जावै
सो जन दास कहावई जो मनु गहि लावै सो मन मीता पाइकै आवागवन मिटावै ।।

उपजत बिनसत जुग गये कोऊ रहा ना भाई माया के परपंच माँ रहा जगतु भुलाई।
समुझो समुझो मानवा आवति अगिलाई सतगुर सेवो हरि मिलौ तब सबु कुसलाई।
ढीलु न कीजे बावरे नल देही पाई अैसा समौ बहुरि नाहीं गाफिल ना होई।
पीपा भली बिचारिया औ मीराबाई कहि मीता ते ना मरै जिन गुर मति पाई ।।

हो प्यारे मोरे रहोंगी चरन चितु लाईयां
किरपा करौ बसो नैनन बिच करिहों मन की भाइयां ।
जरों तुम्है बिन, पियरी भई तनु, देउ दरस दुखु जाइयां
पंथु निहारों पलक न लागै तुही तौहि रटि लाइयां ।
बूड़ति बांह धरो अब मेरी आई सरन तुम ताइयां
और आस बसुधा की नाहीं समरथ साहेबु ध्याइयां ।
वारा तन-धन प्राण प्रेम कै तबु पीतम घर आइयां
सुनौ सखी पिउ हंसी नहीं है कहि मीता बतलाइयां ।।

मूल मां जोगी किया मिलाना ज़ा का निरमल ज्ञाना ।
धूनी ध्यान फहम की फहुरी गुरू शब्द लपिट्याना ।
छार न लावै केस न राखै वा तौ परम सुजाना
गेरुआ बस्तर दूरि बहावै परम तत्तु पहिचाना ।
पांचो मारि पचीसो लूटी तीन गुनन नहिं साना ।
सो जोगी सति लोक पहूंचै मिटगा आवा जाना ।
गृह ना तजै भीखु ना मांगै दोउ दल मांझि डिढ़ाना ।
कहि मीता अस कोटिन मां कोइ तिनही सो मनु माना ।।

पीतम रंगु लागै तब जानै काह भये हरि जीभु बखाने ।
रहनी रहु तब उनमुनि मानै बादि किये साहेबु दुख मानै ।
रामु रहीम एक कै जानै गुरू पीर की सेवा ठानै ।
गुरू पीर सोई मन मानै जिनते अपना पिऊ पहिचानै ।
करै गरीबी गरभ न आनै सब ते आपु छोट कै जानै ।
लोभ मोह मनही ना आनै अैसा हो सांचे मघु लागै ।
पढ़े गुने निजु भरमु न जानै अर्थ बुझाय भरम सबु ठानै ।
अनभै भये ज्ञान ततु जानै कहि मीता गहु गहु सति नामै ।।

उइ साहेबु हम नल तन प्रानी तिनकी गति हम कैसे जानी ।
जानी ता जानी बिरलै जानी सतगुर सेइ मिली सुखु खानी ।
शिव-ब्रह्मा-विस्नू ना जानी फल नीचा इन ऊँची ठानी ।
गरभ गुमान मुये अभिमानी ताते मिले न अन्तर जानी ।
मुसलमान कहिये बड़े ज्ञानी जबै करै जिउ भिस्ती बखानी
कैसे होइहैं साहेब राजी धनि धनि मुलना धनि धनि काजी ।
हिन्दू पियै छानि कै पानी खांय बोकरिया बड़े बिनानी ।
मुक्ती भिस्ती का झगरै आनी कहि मीता या न्याउ को छानी ।।

आजु मेरे राम प्रीति कै आये जलमु जलमु के दुःख मिटाये।
अब सुखिया हम भयेन रे साधो बिन बस्तर बिनु अन्नो पाये।
सतगुर दीन दयाल सेइकै तब अपने दुख रोय सुनाये।
काल जाल उन तुरतै काटी तिनहीं भक्ति भेदु बतलाये।
छाप तिलकु दै जहं तहँ धावै भक्ति भेदु कतहूं ना पाये।
हरि का मिले पाखंड तबु चीन्हा कंठी माला तूरि बहाये।
चरन कवँल निजु बाना पाया अबु न मरौ गुरु मोहिं जिआये।
कहि मीता या भेखु भरमु है नाहक पसुआ फिरै भुलाये॥

•

प्रेम बिना नहि पिया का पावै पढ़ि-गुन कुछु कामु ना आवै।
पाचों के परपंच मिटावै बाँधि पचीसों मनु गहि लावै।
हालु खुसी कर बिलमु न लावै पिया पिया रटे पिया न पावै।
नेकी बदी नितै लिखि जावै पूछति बेरि जुवाब न आवै।
मेहर दया धरु सबु बनि आवै पाछू की तब माफु करावै।
सबु काया में आपु बसावै दरद होय सो आपुहि पावै।
जहां अवसाफ तेहि अपनावै अदली साहेबु अदल चलावै।
बेद कुरान दोऊ गोहिरावै कहि मीता कस जीव सतावै॥

हरिरंग लागा रे भाई तब कुमिता दूरि बहाई।
भई सुमिता सो मोरि सगाई सतगुर लगन धराई।
पांच सखी मिलि मंगल गावैं अनहद बजै बधाई।
करै निरति तब लगी पचीसों बेद पढ़ा मनु आई।
सुरति निरति लै भांवरि कीन्ही तब पिया सरनै आई।
चारि कहार चले लै डोलिया अब को नैहर आई।
रोवैं कुँआरी संघु साथु की दुःखु करै बहुताई।
कहि मीता या खेलु अगम है पहुँचै भेदा पाई॥

आजु एकु जनेउ होति है भाई पाचौं बांधि नचाई।
ततु का ताग प्रेम के लड्डू सुमिता न्यौति जिवाँई।
मन की तुचा खराऊँ सांची अंजन नैन दिवाई।
जामा पटुका पागु सूत बिनु रहनी बहुत रहाई।
सुसुम बेदु पढ़िहै मन पूरे अनहद बाज बजाई।
सखी पचीसों न्योते अइहैं काजु सुफल होय जाई।
नल रिखी ब्रह्मा भेदु न जानैं जो हम लगन धराई।
कहि मीता सो बभनु कहावै जो ब्रह्मै मिलि जाई॥

आजु एकु पुरुष मिलिगे बानी तिन सुमिता घर आनी।
गई कुमति सब चोर देहि ते रहिगा नाम निसानी।
होन झकेइया पिया सो लागी तब धना केसरि गारी।
धाय मिली तब लाजु न लागै मुख मोडेउ ना प्यारी।
लागी रहै खुम्हारी नैनन मजलिसि टरति न टारी।
बाजै नादु होय कौतोहल रंग भीजी मोरी सारी।
जासौ कहों सो झूठी मानै देति सबै हैं गारी।
कहि मीता सखी हारी मान रहु जान परी ससुरारी॥

हौं तो रब का तब का जब सुरज न तारा धरती मंडप ना हता ना समुद पहारा।
आदि जोति तब ना हती जिनते विस्थारा तीन देव तिनही रचे फिर सब संसारा।
बहुत झूंड़ हम आइया सो जगु ते न्यारा अब ताका है देस का जगु कौनु हमारा।
निरमल करनी जिन कीई जहं जहं औतारा तिनका तारन आइयां जिन मैलु न धारा।
पापी डारे नरक मा या खेलु हमारा हक नाहक का छानई सांचा दरबारा।
परम पुरुष इच्छा करै सो टरै न टारा जोरु किये सो ना मिलै मानौ अतिवारा।
बूड़े सब अभिमानिया भये दीन उधारा दीनन के साथै रहैं कथि मरे लबारा।
नल तन बहु दूलम है नहिं बारम्बारा कहि मीता चितु चेति ले मिलि ले करतारा॥

हरि यंही कहंवा तू धावै भ्रमि भ्रमि पसुआ जलमु गँवावै।
जे पहुँचे ते येही बतावैं सतगुर सेउ ते अलख लखावैं।
पाहन मूरति नलुई बनावै एक पाहन गंडक ते आवै।
सो पाहन जो पाहन ध्यावै बिन गुरु निगुरा मरमु न पावै।
दाबी दिये नरक का जावै चन्दन देइ बहुत सुखु पावै।
खांय सगौती बरन बतावै करम कसेइया ऐहइ कहावै।
इनका दानु जो देइ खवावै कुटुम सहित तर बोरै जावै।
जन मीता सांची गोहिरावै अलख लखै सो बभनु कहावै॥

बड़े बड़े राजा हो गये थिर रहा ना कोई रावन रामचन्द पांडवा येऊ गरद मिलोई।
मान मनी का छाड़ि दे सो तेरिउ होई भजिले सांचे नामु का जाते दरसन होई।
रामु सत्य सबु झूठ है बिनसी सबु कोई गाफिल होय न बावरे चूके दुखु होई।
मीता समुझि पुकारई बाजी जित लेई सतगुर की चटसार में आवागवन न होई॥

ऐसा खेलु है रब केरा तहां नहिं है ममिता मेरा जब तन धन सब विसरावै सो दरसन रब का पावै।
जो फैलु चाहे ओ रब का सो भूला जुगन जुगन का सो नाहीं पीर गुरू का वा बेटा बाजीगर का।
का उलटा पवन चढ़ाई कासो का कवँल उल्टाई का सुन्नि मडिल लै लाई अनहद सुनि काह भुलाई।
का भये मुद्रा लाई उरध मुख पवन चढ़ाई सो अजगर देही पाई जन मीत दीन्ह गोहिराई॥

सतगुरदीन्ह प्रेमका बाना तिनपर सीसकिया खुरबाना तब मूल पतालैबांधा रबिचन्दा कम्पै तरखा।
तब वीर माड़ै मैदाना बिन खाड़े कै घमसाना तिन मारे पांच पठाना तब मन ही सो मन माना।
जे घर मूसै चोरा ते पहिरा देते मेरा किया अमर लोक मां थाना तब खुसी किया रहमाना।
कहि मीता लोग दिवाना अब दुई मां कौन भुलाना दुनियाका अन्धा ज्ञाना ताते साहेबु ना पहिचाना ॥

है है राम सति एकु भाई तजु ममिता बहुताई
धनु दारा सुत कामु न अइहै जबु जमु मोगरा लाई।
हय-हाथी निसान नगारे जुरा कटकु बहु आई
अंत काल कुछु साथु न लागी जीऊ अकेला जाई।
आप पपैही जानु रे लोई अनत केहु ना जाई
राम निकट तू दूरि न जानै सतगुर देई लखाई।
काया है ता सगरी माया रामचन्द सोई कन्हाई
सोइ तोंहू सोइ सब संसारा अब ना भरम भुलाई ॥
करम-धरम है आवा गवना फिर-फिर कालु सताई
सतगुर सेऊ मिटै आवा गवना कालु फाँसी कटि जाई।
राम चन्द कान्ह परे जम फांसी तीन देव जमु खाई
सुर-मुनी पीर औलिया नर सब भोगि करै जमु राई।
बाचे बहुत सरन साहेबु की गनि कै काह बताई
हिन्दू मुसलमान का ख्वाहिद अगम पंथु चलि पाई।
जो छाना सो गाइ सुनावा राम सजीवनि पाई
संसै दूरि भइ कहि मीता सहजै होइ सो होई ॥

सांचु गहु चरन सरन हरि पाई सुनिले साधो भाई
निन्दक परे नरक के द्वारे हमतौ भक्ती डिढ़ाई।
दीन भये तब सतगुर पाया जिन या जुगुति बताई
पांचो मारि पचीसो लूटी फेरी रामु दुहाई।
तोरा मोरा ह्वै ज्ञान का चीन्हन वाले भै ना जाई
आप तरै औरेन का तारै जो रहि है डिढ़ प्रीति लगाई।
पापी कबहुँ न बानी विचारै तिनका जमु नरकै लै जाई
कहि मीता हम सो पद गावैं जाते आवा गवन न होई ॥

नारी मरमु ना जानै वैद है बेपीर दरद आनि उइ और बतावै वाखदि नांही तीर।
मुलना-जोगी-पंडित जिन्दा कहु ना लखी या पीर अपनी अपनी सवै बतावै मैं दुख सहो सरीर।
बैदन के ढ़िग पचि पचि मरना जारों गी ढ़िग बीर रोगी रोगी मिले दरद गा उत्तिम भया सरीर।
खान पियन के काजे बैदा लाये बड़ि बड़ि भीर कहि मीता कोई जानन हारा ख्याल किया सुखसीर ॥

कोऊ करै तीर्थ कोऊ कर दाना कोऊ तपु जोग वेद लपिट्याना
कोऊ कुल खोय फिरै गरभाना भेखु धरे मानौ भूत समाना।
कोऊ चढ़ावै उरध मुख पवना ते होइहै अजगर के छोना
रेचक कुंभक कोऊ करै ध्याना ते मरकट नल होई निदाना।
कोउ धोवै आंते ते होई स्वाना कोउ करै सुन्नि मडिल का ध्याना
ते भये चील्ह अकास उडाना सब्द मानु या निज परमाना।
कोइ जल सगई हो गरभाना मीन होई वोउ मरम न जाना
पट्टी लीले कोऊ नदाना तेऊ स्वानु भये परमाना।
धोती नेती कोऊ भुलाना ते भये रीछ मरमु ना जाना
कोउ कोउ काया कवल भुलाना तेऊ होइहै भूत निदाना।
काहू का अजपा मनु माना भूला भोंदू मरम न जाना
कोउ लै माला फेरन लागा लोगन रामु खिलौना जाना ।।
कोउ धरती मां जियत समाना तेऊ अजगर होय निदाना
एकु दगावै देह नदाना तेऊ अजगर होय निदाना।
एकै गया पखान (पत्थर) बखाना कहै जुइन बहु कढ़ै नदाना।
तेऊ अजगर होंय निदाना भूले पसुआ मरमु न जाना।
एकैं संघु जरी मुरदाना तेउ चकोरनी होय निदाना।
अगिन धूम लै पसु गरभाना तेऊ महिखा होय निदाना।
विधवा नारी जिन तप ठाना तेऊ विस्वा होय निदाना।
पुरुख न भोगवै जगु डर माना अऊरे जलमु बहुत मन माना ।।
अनत नहीं नल ह्वै ठिकाना राम भगति करु तजु अभिमाना।
जौ लगि पांचौं संघु भुलाना तौ लगि भक्ती न होय नदाना।
मन चंचल थिर ना केहु आना जो आनै सो संत सुजाना।
पाँच पचीस एकु घर आना अगम पंथु तब चित्त डिढ़ाना।
होय पपलि सतगुर का जाना मीन भये तब सिंधु समाना।
फिर विहंग होय अकास उड़ाना भेटा पिउ मिटा आवा जाना।
पाछे का कुछु आगू बखाना बुझिहै तेई राम जिन जाना।
कहि मीता अस हमरा ज्ञाना खीर (क्षीर) नीर का कीन्हा छाना ।।

आवा गवन मिटावई सो जगु ते न्यारा ते जन ग्रह ना छाड़ई जाकी मति सारा।
काह भये वन का गये ग्रह धन तजि डारा आवा गवन बंधान है बन भये खुआरा।
सुल्तानी औ भरथरी ग्रह यों तजि डारा भार बड़ा ता राज्य का गुर दीन विचारा।
तपु तीरथ तिन ना किया पहुचे दरबारा आवा गवन निवारिया सोई मीत पुकारा ।।

दरदा को जानै सुन लेऊ हमारे बीर जाहिर होय ता रोग बताऊं या अन्तर की पीर।
घर घूमो मानो आहि डसी उठऊँ बिसूरि बिसूरि कहो सखी कोऊ होय महरमी जैइयैं तिनके तीर।
देस देस मैं फिर आई कहुँ न भया मन थीर आनि दरदु उई आनि बतावै लाये बहुतै भीर।
पंडित-जोगी-मुलना भेखी जिनके बड़े बड़े सोर बहुतमिलेकोऊ मरम न जाना कहि मीतादुखमोरि ।।

का जानै नादान है इस्क का मता अपारा कही न जाय मशूका की छबि जिन देखा तेई जाना।
सीस उतारिधरैजबधर(धड़)तेतबवासो भईपहिचानु हिरसकिये का होई बावरे वारोंतनधनऔ प्राण।
एक टक चितै रही यार सो मन महरा भा गलतान तबते भई बावरी जैसे पलक न लागै ठानु।
घरु अगना बन कुछौ न भावै लागीलगनगयागुन ज्ञानकहिमीता सुनपंडितमुलनाकहुजातेभईपहिचान।।

आनि देव ना ध्यावई सति पति जपु भाई कोटिन रामचन्द हो गये कोटिन कुअर कन्हाई।
तीन देउ ना जानई जेहि संत मिलाई संत बरोबरि ना कोई उई भिन्न ना होई।
जोती सरूपी कालु है तासों बचे न कोई चौदा पुर जमुसीर है वा सबै भखोई।
परम पुरुख का जे मिले बाचे जन तेई तेतिस-तीन-अठासिया वाके बांधे लोई।।
भारी दुख है काल का का सोवै लोई नल तन बीता जाति हैं फिर कुछौ न होई।
बहुत गहिर चौरहिसिया तहां राखी लोई कवहु उसास न पाइहो जागो भला होई।
जहां का विछुरा तहां मिलै तब आवन न होई सो साहेब तो मां हवै तीरथु ना कोई।
सतगुर तेई कहावई अमर पदु देई कहि मीता जियतै मिलै गुरू चीन्हे लोई।

सांचे संता रामु के ते बिनसि न जांई देवा-दानों मुनी नला ई सबु बिनसाई।
तिनकी सरि कोई ना जुरै मानौ नल लोई करु संगति तू ताहि की सब कारजु होई।
कालु जालु मां सबु परे रहे संत बचोई सिंघु सरन का कै सकै जंबुक की राई।
कहि मीता ते धन्नि हैं जहाँ भक्ति डिढ़ाई कोटिन बैरी का करै जाकी राम सहाई।।

करु सतगुर की सेवकी होइहै भै पारा नेमु धरम का छाड़ि कै गहु तत्तु बिचारा।
एकु दिन ऐसा होइगा मिटी सूरज-तारा धरती मंडप ना रही मिटिहै संसारा।
ता दिन बहु दुख होयगा मानौ अतिबारा माया मोह न भूलई तू करु निरुआरा।
अबहूँ जमु दुख देति है जहाँ-जहाँ अवतारा मीता या दुख जानि कै आवागवन निवारा।।

सूर लरै मैदान मां कोई जूझन हारा कूरा तहां ठहरैं नहीं का कथै लबारा।
पांच पचीसो बांधि कै जब मन का धारा जूझ किया जमु आय कै तिनहू का मारा।
बांकी घाटी अगम की तहां का पगु धारा अलखि मिले अब ना मरों कीन्हा निरुआरा।
कहि मीता अस संत है सो जगु ते न्यारा ते घर बार न छाड़ई ठगु भेखु गवांरा।।

संतन नाही पंथुचलाया मानिबचनहमसत्यबतायागिरहीनामा गरहीकबीरागिरहीनानिकपीपा राया।
नासा कुलनासीघरमायाजोईमुई तबभेखुबनायासुज्जन नाहींकुलकाखोयाकुलटूटाहो सतगुर का सेया।
भेखु दीखतासबै ठगैइयाइनके संघुनरकजिउ जैइयामाया मूसै औभरमइयाइनकानापतियायउ भइया।
ते संता जे रामु मिलइया ते कबहूँ ना तिरथै जैइयां।
जन मीता जगु बहुरि न अैइया वोढ़ना रंगै हमारि बलैइया।।

गहु-गहु सांचे नाम का जाते दरसन होई पूरन ब्रह्म बिराजई सो है ढ़िग तोही।
जिन खोजा तिन पाइया जब रहनी होई खोजत बहुतै पचि मुये बिन गुर का होई।
राम सनीपी जे करै हैं सतगुर तेई पाखंड भेखु तहाँ नहीं सतपदु जे देई।
जाहे का तीरथ करै सो हौं नहिं कोई कहि मीता हम खोजिया मानौ नल लोई।।

दोहा

किये हिमायत दुनी के हरी न आवै हाथु।
कहि मीता जहां छानु है तिनके रहते साथु।

पद

जोगी परम सुजाना तिनका मता बिरल कोई जाना।
पोस्ता पिये न पिये भाँग ना करते उइ मदिरा पान।
छारु न लावै मुद्रा कान ना सिर जटा नहीं अभिमान।
मारै पाँच खेलै चौगान कर लीन्हे सतगुर का बान।
अलख लखै तेई भगवान कपरा गेरुआ भोंदुवा ज्ञान।
भेखु भरम धरि बूड़ि जहान गिरही पाया पद निरबान।
सो गिरही जाका निर्मल ज्ञानु झूठ सांचु का करै बिनान।
मीता के सोई परमान भेखु ठगैइया सगरे जानु॥

मन का धोउ धोये का काया मनु धोये हरि दरसन पाया।
कहु सधुआ तोहि कै भरमाया पाहन पानी पूजन धाया।
सुनि झूठेन की उठि उठि धाया सतगुर शब्द मनहिं नहिं आया।
हरि घट ही मां दूरि बताया तिनका कैसे होय मिलाया।
धनि सतगुर जिन मरम बताया बिनु सतगुर तब मोहु भुलाया।
अमर भये निहचल पदु पाया दीन भये गुरु पार लगाया।
जो व्यापी सो मीता गाया जमु का अवला दूरि बहाया।
तीन लोक जमु जोर जनाया चौथे जाय सो संत कहाया॥

खोलु कपाट दरस हरि होई हरि घटही मां दूरि न कोई।
ना हरि अवध-उडैसा लोई नहीं द्वारिका मथुरा लोई।
कोटि भानु छबि जुरै न लोई जहँ अस होय दरस गुन सोई।
पाहन जल तीरथ मां होई ऐसा दरस काह लखे लोई।
पसुअन संघु ना भरमु भुलाई हीरा जलमु अकारथ जाई।
सतगुर सरन गहो नल जाई उइ तो हरि का देइ मिलाई।
याते आवागवनु न होई आवागवन बड़ा दुख होई।
या दुख मरे बड़े-बड़े रोई या दुख तीरथ दानु न खोई।
तजु परपंच वेदु-विधि लोई करम भरम सगरे हैं छोई।
हरि रस पियो अमर पद होई जुगन-जुगन बिनसै ना सोई।
अभिनासी ना बिनसै लोई बिनसै काया सो नल होई।
रामचन्द-कान्हा कोटिन लोई परम पुरुख तो ऐकइ होई।
जो हरि छाड़ि और का ध्याई सो नल निहचै नरकै जाई।
गरभ बास तो नरकुइ आही अलख लखै तो ई मिटि जाई।
नल तन बार बार ना होई बिनु विवेकु सो जैहै खोई।
दीन भये मीता मति पाई पिछला अंकुरा जागा आई॥

हारेउ भाई भक्ति पथारथु तब पाई सो जीता।
जो इन्द्री जीता भागा भरम लागि हरि प्रीता।
जरा जाय जगु अपनी आंच चीन्है नहीं झूठ औ सांच।
का करिहै सठु बातन जीती नल तन पूंजी जैइहै टूटी।
छाँड़ि कुमति कुछु करौ विवेकु नाहित लगिहैं बड़े-बड़े दोखु।
भेख अलेख भक्ति ते दूरि अन्त काल मुख परिहै धूरि।
खर-महिखा बैला सोइ होई बिन किरखी जो खइहै कोई।
छिया-छिया है तिनकी मायें कहि मीता जहां सांचु न आये।।

मेरा मनु रहा रामु लै लाई आगि लगै चतुराई पाँचो चोरा डिढ़ कै बाँधै कलहु कलपना खोई।
रामु कहे रामै ना पइहौ हँसी खेलु ना होई जो कोइ टूटि मिलै सतगुर का राम पाइहै सोई।
बाजै जबै जुझाऊ बाजा कूर न ठहरै कोई जो सिर देइ सोइ है सूरा गल्लन सूर न होई।
काभये छापातिलक बनाये काभये माल फिराईकोटि तिरथकरुकोटिजग्ग करुयाविधिमुक्ति नहोई।
नौका नामु जगत ते न्यारा पावै बिरला कोई निरखि निरखि सो नगर पहूँचे ताहि मिलैं रघुराई।
ना कर जपो न माला फेरो जमु की तलब छड़ाई हरि के चरण सकल मंगल भे आवागवन मिटाई।
आनि देव की आसा राखै परम पुरुष बिसराई तेनल सदा नरक मा रहिहैं हुआंकी खबरि सुनाई।
रमिता राम सोई है रामु और ना दूजा कोई दूजा भरम कहै जन मीता भरमे अन्धे लोई।।

सुनु मूरुख नादाना तेरी मइया के अनग भतारा।
अपने पिया का जानेसि नांही बिस्वा जाये सो सुत आये।
बहुतै बापु कहै को पूत है कुटनी का माया धूत।
पान मिठाई हंसि हंसि खाये निकरै प्राण नरक का जाये।
माला फाँसी तिलकु तरवार केतने के घर घलिहो बाल।
होइहो बैलु लदी तब भार अबहु चेतो पैड़ापार।
जैसे मोर करति है मीउ लीले करिया सो तुम जीव।
कहि मीता अन्धा जगु लोई तुम्हरा छल बल लखै न कोई।।

सुनौ अभागो कुटिलो लोई संतन निन्द नरक निजु होई।
छापु तिला मालाका होई ठगि गया ठगिया कुमति गया देई।
ते कुमतिा को ई फल लोई जमु की जेल परे दुख होई।
नल की खाल पहिरु बिखु लोई फिर विखहर का विखहर होई।
कुटिल संघु ना कीन्हेउ भाई अब सुज्जन की बात जनाई।
संत चरन चितु रहेउ लगाई उइ तौ हरि का देइ मिलाई।
हरि के मिले परम पदु होई तिनका आवागवन न होई।
राम सनीपी भेखु न होई कहि मीता या मानेउ सोई।।

गुन तजि कै जो निरगुन होई जगु छोई कै जानी सोई।
गुन की आस करी जो लोई तिनका बासा दुख मां होई।
सतगुर बिना दरस ना होई दरस भये आवागवनु न होई।
गरभ वासु मां बहु दुख होई छिनु छिनु कालु ताड़ना देई।
थांभी सत्य झूठि तजि जोई सो संतन मां आय समोई।
संतन निन्द नरक निज होई तिनके अंग कुटिल सबु होई।
जो जस करी धनी तस देई चोर साह ना छपिहै दोई।
बादु किये साकठु का होई जेहि पिउ चही मीत मिली सोई ॥

छांड़ै रामु करै गुन आसा तिनका सदा नरक मां बासा।
हरि कहै जीभ कपटु मन रांचा कैसे कै मिलिहै साहेब सांचा।
राम संत रहै एकै पासा सोई भक्त जाके चरन निवासा।
बिन पहुँचे तू काको दासा सुनु सठ मूढ़ सांच हम भाखा।
जियत मुक्ति सोई जन मुक्ता मुये मुक्ति कैसे होइहै झूठा।
पापी न पहुँची हरि के पासा इनका करिहै कालु तरासा।
ज्यों बाजीगर करै तमासा अैसा तेरा माला छापा।
पाहन पूजि कहावै दासा देखौ अन्धे का बिस्वासा।
बिमुखन के बैठी ना साथा भजन भंग परि जैहै दासा।
चला जाय गज कुत्ता भूंसा कहो गज के काहे की संसा।
काम क्रोध का कीन्हा नासा छिमा सील तिनही के हाथा।
मीता किया अमरपुर बासा जाइ करै जगु कोटिन हांसा ॥

भाई रे काया में एकु हीरा दरसै ना फूटै ना टूटै
जाके मिले बहुरि नहिं अवना अन्धे का ना सूझै।
कोटि तीर्थ करु कोटि बरत करु नाम नहीं कुछ तूलै
कोटि जग्य करु कोटि दानु दै जमु बाधा ना छूटै।
उरे नहीं वा परे खोजु करु जो सूझै ता बूझै।
आवा गवन मिटै तब साधौ आन करै ता बूड़ै।
सतगुर भेदी भेदु बताये सो मारगु ना छूटै।
सांचु सांचु मीता गोहिरावै जगु रूठै की टूटै ॥

सतगुर तारन तरना रे साधो तुरत गही सोई चरना परम उदार बड़ेहैं दाता मोहि जानि या परना।
उनके मारगु जोखिम नाहीं कालु न फेटी धरना सो बाटी चलि गये कबीरा जात न काहू देखा।
कोने पैठि सुगंध लगावै छपी न वाकी बासा ऐसे दास राम रसु माता दहु दिसि भा परगासा।
तीरथ बरत सकल कै देखे कहुँ ना देखा तरना कहि मीता संतन की संगति छूटा आवागवना ॥

हरि पाये तब हरि कुछ सूझा, काम क्रोध मेरा तबही लूटा।
माटी घोरि लगावै धूता माला डारि जगत का मूसा।
गया काम ते बासन फूटा, अैसे भेखु ह्वै या कुत्ता।
भ्रमि भ्रमि खाया परिहैं टूटा होइहै बैलु लदी मन बीसा।
किये कलंक पांति ते छूटा मागैं भीखु दुखी का पूता।
बंधी गरे रस्सी औ खूटा खरी-भूसा तोरा होइहै कूता।
सुज्जन भा घरही मां मुक्ता मिलिगे राम भरम सब छूटा।
राम भजन ते बाढ़ा बूता निरसंसै होय मीता सूता॥

तजु निन्दा परनारि दीनता मन धरो दाया धरम विचारि सेव सतगुर करो।
तब पावै निजु भेदु राम छवि लखि परै बिन विवेकु जगु बूड़ि कथनी सठु का करै।
करै सो पावै लोय रामु हक्कै करै, करै नरक के कामु मुक्ती का झगरै।
संचै चित्र गुपित्र करनी तेरी लिख धरै कहि मीता तजु डिम्भु नरक मां ना परै॥

रे बाबा कठिन है पंथु दुहेला जानैगा राम रंगीला।
चरै रैनि दिन पलक न लागै तीन साठ का मेला।
जौहर होय ता करै छिनक मां या बांका है खेला।
नित ही जूझै नित ही मरना बिरल करै रन हेला।
जो जीतै ता साहेब रीझै कटि जाई जमु जेला।
ततु तरिवार बन्दूक नैन भरि लिये सील का सेल्हा।
जोरि बटोरि चढ़े बहुतै रन भागे कूर पछेला।
होय निरसंक धंसा जन मीता रहिगा आपु अकेला॥

रे बाबा या है अकथ कहानी बिन देखे को मानी।
कोटिन रवि-ससि छवि पर वारों संतन की रजधानी।
चारि वेदु की माड़ि जगत मां ब्रह्मा किया बखानी।
बिस्नु-महेश अपन पै भाखै हम न परम गति जानी।
सोई संत जाते अन्तर नाहीं जोति मां जोति मिलानी।
काच बिकार नेह की सारी सतगुर की पहिचानी।
दीन भये ते जीति गये जगु छूटी चतुर सयानी।
अब मीता जमु फंद न आवै कुसल भई रे प्रानी॥

कूरा कपटा दासु ता तुम्हरा कहावऊ। गाढ़ परै जो मोंहि ता केहि पुकारऊ।
तुम हो परमु सुजान तो का समुझांवऊ। हँसी दास की देखि तुरति उठि धावऊ।
अवगुन गनौ ना मोरि परनु प्रतिपालऊ। दीनबन्धु दीनानाथु ता बिरद कहावऊ।
सिंघसुता का मारि जंबुक बचि जावई। बड़ा अचम्भो मोहि मीत कहाँ जावई॥

दसरथु जाया ऐसा बेटा आया नार लपेटा।
नासा नैन कपोल सीस कर कौसलिया जाकी माता।
पेट पीठ साहेब के नाहीं ना कपोल ना नासा।
वातौ ब्रह्म निराला सब ते लिखी सुने जनि लागा।
देखि कहै सो ज्ञानी कहिये अनदेखी कहै अन्धा।
रमा रमिता राम सकल काया में सो सतगुर मिलि देखा।
बिना विवेकु सकल जगु बूड़ा बिसरा सिरजनहारा।
कहि मीता सोइ दास कहावै जिन्है मिला करतारा॥

हरि सों भली बनी है भाई कामु गरीबी आई।
दीनबन्धु है नामु धनी का दीन होय सो पाई।
जैसे तिली फूल के खंभरे बास सहज ही पाई।
ऐसे दास बासिगे हरि मां भिन्न किया ना जाई।
जैसे पारस लोहा परसे कंचन की गति पाई।
लोहा ताको कहै न कोई समुझि देखि नल जाई।
ऐसे दास राम का मिलिकै जाति-वरन कुछ नाहीं।
कहि मीता सोइ काया ऊँची प्रेम भक्ति जिन पाई॥

हक नाहक पहिचानो लोई तब सतगुर की दाया होई।
सतगुर हरि का देइ मिलाई अधमन के निकटै ना जाई।
पर तिरिया सो लिप्त न होई परधन कबहुँ चुरा ना लेई।
जीव जंत्र पर दाया होई दीन भये नल तरिहै तेई।
किये पापु रामै कस पाई बोइ बबूर दाख कस खाई।
पापी का जमु हाथु लगाई नरक बासु जुग जुग भोगवाई।
कथनी बदनी कामु न आई नाचबु गाउबु जगत रिझाई।
तीरथ भटकै पसुआ जाई सुज्जन घर बैठे हरि पाई।
काम दहन इन्द्री डिढ़ होई माया नारि जानिहै छोई।
सो जन कबहुँ जुदा ना होई कुंभ नीर ज्यों सिन्धु समोई।
परम पुरुख तो आदि गोसाईं तिनते भयो निरंजन राई।
फिर माया जग दीप बिचाई ब्रह्मा बिस्नू सिउ उपजाई।
फिर भये देव असुर मुनि लोई फांसे जीव कालु दुख देई।
उलटि मिलै जो मूलै जाई सो या फंदा जाय छड़ाई।
बड़ा अभागी डारै ध्याई डारौ-पातौ कालुइ खाई।
जन मीता या खबरि सुनाई जोहि जस रुचै करै तस सोई॥

दूजा नहीं राम रे मूरुख छाड़े मूल अभागा।
एकु राम का सकल पसारा सो संतन मां ठाढ़ा।
रामचन्द्र त्रेता मां राजा कोसलिया जाकी माता।
दसरथ पिता सकल जगु जानै रामु न काहु के ताता।
कोटि सूर ससि छवि पर वारों राम देखि मन रांचा।
काया एकु सूर छवि नाहीं ब्रह्म भेद है बांका।
कहे सुने ते काहे भूला लिखी देखि ना माना।
कहि मीता बिन दीखे कहिहै तिनका नरक निदाना॥

काम दहन तरनुपवा कीन्हा जोग जुगति गुरु मारगु लीन्हा।
पांच पचीसो का बसि कीन्हा चरनकवल मां मन भया लीन्हा।
अगम पंथु नहि हँसी खिलौना चढ़ि बिरला तनधन किया छीना।
सीस देइ रन सोभा पवना गल्ले रिल्ले कामु न अवना।
कथा पुरान ह्वै आवागवना आवागवना कालु खिलौना।
सो हम छांड़ा बहुरि न अवना या उद्यिम मोहि का लै करना।
भूला जगत काह समझवना चुपकै रहना बादु न करना।
सुज्जन का मोहि पार उतरना मीता का या कारजु करना॥

इहइ रामु भरोसा बाढ़ा मेरा साहबु निकटै ठाढ़ा।
गाढ़ि परे प्रभु आवै काजा काह रिसाय करै जगु पाजा।
सेनि भगत का संसै नासा अबहूँ पालें अपना दासा।
ले हरि नामु सदा सुखदाता जगु कूरे के रंग न रांचा।
टोइ दीख जगु कोइ नहिं ताता अपने स्वारथु का सबु साथा।
प्रीति-बैरु जग की जनि माता भजन भंग परि जइहै दासा।
जौ लगि बात कहै पितु माता तौ लगि छूटै प्रेम बिलासा।
राम रसाइन जब मन माता मीता कामु क्रोध तब नासा॥

गगन मां नौमति बाजी, रे बाबा मदन जरै झरि लागी।
गंग जमन बिच हंसा माड़ै काम क्रोध मद त्यागी।
बांधै सुरति चलै आगे का निसवासरि वा जागी।
परम हंस सो किया मिलाना साहेब राखा राजी।
अनहद भरम, भरम है अजपा, भूले हैं भेखु धारी।
कालु चक्रु की लखि उजियारी जैहैं पूंजी हारी।
कहि मीता संतन का मारगु ना पावै भेखधारी।
नर ते करै नरायण सतगुर जिनकी मति है भारी॥

दूरि बे दूर लबार हरामी खूंनिया तुझै नहि डर आय दुनी जिन भेजिया।
सांचु कहे जरि जाय ठगै जगु लोभिया आपु नरक मां जाय दुनी परमोधिया।
थूक थूक धिरकालु थूक तेरी जाइया चीन्है ना नाहक हक्क पेट भरि खाइया।
मारु देई जमु आय उतरि जा मस्तियां कहि मीता सुनि लेउ पखंडी दोखिया ॥

लाजु सरम प्रभू केरि ता मेरा कुछु नहीं होनी होई चरन मां लागि रही।
सिंघ सुता की बांह ता जंबुक कस गही मोहि हवै उसवास ढील काहे भई।
मारा असुर पछारि पहिलादै दुख दई मैं तो सेवा चोर गई ताते भई।
मैं दुख रही समाय जगत हांसी भई मीता दास कहइ खबरि ताकी ना लई ॥

गये रे गये सठु मूढ़ राम सो दूसरि ठानी हरि दासन के बैरु नरक तेरी महिमानी।
सूकर अजगर स्वान जलमु तेरा येहि खानी हरि संतै नहि बीच लगै तोरी आगि सयानी।
अलख लखाये संत तौ सुख की होइहै खानी बोइ बबुर के बीज दाख कैसे खइहो प्रानी।
मीता कही विचारि साखि गीतौ की बानी हरि दासन की महिमा हरि ही आपु बखानी ॥

छांड़ि राम की आस अनत कहँ जावऊं ध्रग जीवन है मोरि आन जो ध्यावऊं।
कविरा नामा लाजु मीरा की राखिया गाढ़े आवै काम जगत सुख साथिया।
राजा रंकै टोय सकल मैं देखिया सबुइ बिलाना जाय अमर पद पेखिया।
दाता और न कोय रामु एकु देखिया सोइ पद मीता ध्याय जलम धनि लेखिया ॥

ज्ञान बानु नहि लगा अभागा निसि दिन सोवै कबहु न जागा।
जागो भाई हम गोहिराया हरि की भक्ति बिन नरक बसाया।
जीव जंत्र सबु नरकै जांई ताते तुमका खबरि सुनाई।
बड़े पुन्नि नल देही पाई या मां तरबु बहुरि फिर नाहीं।
तरब उड़ैसा कासी नाहीं तरबु द्वारिका मथुरा नाहीं।
हम तहकीक किया है बनाई तरना संतन की सरनाई।
सो संता बिरले संसारा जौन उतारै भै जल पारा।
सो गिरही उन भेखु न धारा भेखु भरम है भीख दुआरा ॥
ग्रह मां रहै ग्रहू ते न्यारा ज्यों पुरइन दल जल ते न्यारा।
करम न लागै संत विचारा तिनका ना चीन्है संसारा।
किरखी करै तजै भिख द्वारा ऐसे संतन का निस्तारा।
पाखंडी पूजै संसारा संत संगति का हंसै गंवारा।
फिकिर न व्यापै संतन काही जर जूडी उनका ना आई।
छाड़त देहि न गाफिल होई हंसि कै चलै राम जन सोई।
काया बिरध न उनकी होई तिनकै बार लाल रहै देही।
राम मिले ते ई फल होई कहि मीता सो जुदा न होई ॥

झलक झलकै कोटि रवि ससि सुरज चन्दा तहँ नहीं।
देखि छवि मैं भई बावरि जगत हांसी तब भई।
जेहि व्यापी सोई जानै कहन की गति कुछु नहीं।
अगम सीढ़ी पांउँ दीन्हा सीस दै तह चढ़ि गई।
पांच सखिया संघु लीन्ही निरतु कै तहँ मिलि गई।
कुंभ का जलु नाय सागर सुमति लै बाढ़ी भई।
मिटा आवा-जान सखिऔ कालु फांसी कटि गई।
कहै मीता बाद तजु नल बिना करनी सुखु नहीं॥

साधौ मन मतंग सोइ जीता जब जिअतै मरना चीता।
जौहर भला छिनक कै डारै या नित ही नित जूझा।
या मैदान येऊ ना ठहरे बिस्नु महेसो ब्रह्मा।
सब ते बीर संत है बांके जहाँ नहीं कुछु शंका।
कथनी बदनी करै मसखरा भेदु जानि नहिं जाता।
भक्ति पदारथु हाथे आवै तब ही है कुसलाता।
बाद विवाद सकल जगु भूला करनी मां कोई राता।
कहि मीता केहि केहि समुझाऊँ बहा सकल जगु जाता॥

रहौ मैं रामु की सरना काहु जगु करना।
सिंघु सुता का का डरवावै जंबुक का छौना।
भै सागर में बूड़ि जात ता पाय गया तरना।
धनि सतगुर जिन पार लगाया अजर अमर करना।
आये सरन बहुत प्रतिपाले अजामील सधना।
जन कबीर का छोरि जंजीरन राखा बरत धना।
समरथ सरन नहीं डर लागै मन निहचै परना।
कहि मीता उन बांह धरी है राज्य भया अपना॥

मैं तौ साहब सांचा जानता ज्यों मात भरोसे बालका।
सुख का साथी है सब आलम हरि दुख मां प्रतिपालता।
जो जेहि चाहै सो तेहि ध्यावै हमसे नहि कुछु तालका।
हमरी प्रीति परम पूरुख सो जिन रचिया सब खालका।
ब्रह्मा विस्नु महेश रचे हैं रचिया सुर रिखि जौने।
मूल छाड़ि जे डारन ध्यावैं बड़े अभागे तौने।
असतुति निन्दा करै मसखरा हरिजन सांचु बखाने।
कहि मीता हम भये पारखी जगु अन्धा ना जानै॥

माया मोहनी है सांची कर लीन्हें है फांसी।
मीठ दिखाय जहर दै मारै जो याके रंग रांची।
फांसे विस्नु महेशो ब्रह्मा जगु फांसा बहु भांती।
बाचे संत रामु की सरनै छुअै न दिनु औ राती।
कयऊ भेख कै लोभ दिखावै जानि न काहुइ जाती।
पहिले मीठ करू है पाछू करी नरक का बासी।
सतगुर मंत्र हाथु जब आवै तब खंभरे ना व्यापी।
पुरइन पत्र नीर नहिं लागै यो मीता ग्रहबासी॥

मन लगि गयो रमिता रामु वारों कोटिन भानु हरि हीरा
औ कांच, सबै नल का रामचन्द का कान्ह।
सांचा साहेब गहु अभिनाषी छांड़ो नल का ध्यान।
मूल विसारि डारु कस थांभै कहु कैसा तोरा ज्ञान।
भेटति तपनि जाय सब तनकी लगै न जमु का बानु।
जे जमु तीनिऊ देवा डाहे बाचे संत सुजान।
बड़ा अभागा समुझति नाहीं भूले न संघु भुलान।
कहि मीता पाहन ना बेधै सार हमारे बानु॥

हीरा चोट सहै घन केरी पाथर टिकै न करु बहुतेरी,
कुन्दन ठहरै कसे कसौटी पीतरि ठहरै न कसौ घनेरी।
बाजु चोट गलरी ना ठहरै सिंघ चोट ना छेगरी,
सांचु कहे झूठा ना ठहरै बादु करै बहुतेरी।
सार चोट सिंघौ ना ठहरै रन मां कूर न ठहरी,
साबुन परे कुसुम ना ठहरै रंग मजीठ मति मोरी।
सतगुरु चोट सहै सोई सिख जीत जाय जगु सो री,
कहि मीता सठु छांडु मसखरी सुज्जन की गति औरी॥

अब तू काहे का हाटि लगाई नरक परी चतुराई, सतगुर पूंजी तुम्हरे नाहीं का भये जगु पुदिकाई।
जो तुम खाओ पुजाई कै-कै किरखी मनै न आई, एक दाना के लाखन देहौ महिखा करी लदाई।
जहर बोय तू चहै अमी फल कैसे हाथै आई, चित्रगुपित्र बड़े लेखधारी तिनते काह छपाई।
कहि मीता तुम सुनौ हरीवा छाड़ि देउ ठगिहाई, जो बीती सो बीत जान दे पाछू करो भलाई॥

हम बनियां दरबार के कोउ बानी ना बूझै, जा घटु भारी पापु है तेहि कैसे कै सूझै।
पांच पसेरी साधि कै मन कीन तराजू निरखि निरखि सौदा कीई बहुतै भै बाढ़ी।
सुरति निरति की गोनि कै, भरा नाम बिसाती पाचौं बैला लादि कै भये सतपुर बासी।
भाहू का मारा जगु मरा परा कालु की फांसी मीता भावन मिटाइया पाई सुख राशी॥

एक रामु का सकल पसारा सो घटु ही मां खोजु गंवारा,
सो नहिं आवै भग के द्वारा जिनका नाम हवै करतारा।
जिनके मांय बापु सुत सारा सो कैसे होई करतारा,
वा तो अलग सबहु ते न्यारा रूप-रेख नहिं नल अवतारा।
सेउ नाम नल सतगुर प्यारा जिनते जुदा नहीं करतारा,
तब उतरै तू भै जल पारा अउरे नल का तजि अतिवारा।
कहि मीता जिन तत्तु विचारा तिनका सूझा वारौ-पारा,
ग्यान भये आवागमन निवारा पोथी थोथी भरम पसारा॥

जो पहुँचा दरबार रे भाई गज सिक्का तिन अदल चलाई,
बिनु पहुँचे ई उपजति नांही गज सिक्का सब सब्दे आही।
काटि कूटि जो सब्दु बनाई सो नल निहचै नरकै जाई,
टकसारी सो कुछु न छपाई खोटा खरा तुरति लखि जाई।
साखि बिना संत ना होई बिना साखि ना मानेउँ लोई,
कुटी बांधि बहु बैठि रहाई माया मूसै भेखु बनाई।
राहजनी ठगु बहुतै करई तिनके संघु भगति ना पाई,
सुज्जन कारन मीत जनाई किरखी कै-कै हरिजन खाई॥

रे बाबा खोजो सिरजव हारा जाते जीव का होय उबारा,
पाहन पानी का जनि ध्यावो या तो भरम पसारा।
हिन्दू तिरथन बरतन भूला मुसलमान रहि रोरा,
मन मैदा कै केहु ना छाना जाते मिलता रामु रहीमा।
छूरी लै जिउ जबै करति हैं तू खूनी की बन्दा,
पाँड़े-भैंसा खड़े कटावो की उत्तम की गंदा।
मेहर-दया ते साहेब राजी सो काहे ना करता,
बादि किये हाथै न आवै कहि मीता का लरता॥

बानी अगमु हमारिहै तुम सुनौ मलूका ज्ञानहो सुई अग्र एकु घाटु है तहँ जन विरला ठहिराव हो।
बीचै मां नानक रहे रे गुरु सो चोरा कीन ताते सब धन ना मिला कुछु दास कबीरा दीन हो।
जन कमाल रैदास का रे कबीर सरबस दीन, पीपा सधना भारी भये सोइ धरमदास का कीन हो।
नामा मिला कबीर का रे भये ब्रह्म मा लीन जैसे का तैसा किया जिन सांचु सांचु सिरु दीन हो।
बीचै मां बहुतै रहे रे छोरु कबीरा लीन तहाँ की बातें मैं कहौं तोहि बोली परै न चीन्ह हो।
धनी हुकुम मोहिं ना कियारे ताते ढोलु न दीन, सम्वत सतरासैअसी आये एकु होई जगका जीत हो।
बिना हुकुम जिनपदु कियारे ते सब डारी काटि, पूरी अदल चलाइहै वासो छपी न पूरी घाटि हो।
लूटा ज्ञान कबीर का रे सोऊ लेय छड़ाय कहि बेनी अस होगा तूरि कथनी देई बहाय हो॥[1]

१—पद विवेक बेनी साहब कीन मलूक का समुझावा सम्वत् १७४६ वि०

दीनहो सरन सरन कै आयो तातेमोहि अपनायो, हौं दुरबल उइँ दाता सुनिकै या लालचि मनभायो।
ररिहा होइकै चहुँ दिसि डोला काहू ना अघवायो, हरि हेरै तब कुछु न खाली मनु माँ थी सो पायो।
अवगुन कहे न जाय किये जेइ रहत पापु छलुछायो, ते अवगुन सबुकरे हमारे गुलमा नाऊ धरायो।
उइँ स्वामी होय रक्षा करते जब मैं दासु कहायो अब मीता का भया भरोसा गरू पठंवा पायो ।।

रामु धूनी लायले जो सिरजन पालनहार सकल मनोरथ पूजई रे जमु ते लेंइ छड़ाइ।
कोटि सूर ससि वारिये रे ऐसी छवि करतार ते कबहूँ ना औतरै रे भूला काहे गँवार।
हरि इच्छा से सब भया रे होति न लागी बार चौदापुर मां तीन महतिया जमु तिन पर रखवार।
जो साहेब मारा चाहै रे इच्छा लेती मारि कौन काजु उइँ अवतरै रे मन मां करौ बिचारु।
काया रामचन्द कान्हा की रे एक सूर छबि नाहि, साहेब ऊपर वारिये रे कोटि सूर ससि जाय।
रमिता रामु बिसारि कै रे नलै बतावै रामु आपन बापु न जानई उइँ औरे का कहैं बापु।
जस गनिका का पूतवा रे केहि बतावै बापु जेहि चाहै तेहि भाखई रे चीन्है आपु न बापु।
सहियां होय मैं टेरऊँ रे जगु की लागि गोहारि जो सब्दा ना मानिहो तो होई जमु सो रारि ।।

चाहे सो गुदरै रे भाई को करि सोचु मरै रे, या माया दिन दुइ कै संघी मोहि या जानि परै रे।
सहजे होय चाहे ता जावै हरि नाहीं बिसरै रे, दिन-दिन बाढ़ै प्रीति रामु सो तब काहे बिगरै रे।
जैसे मीन नीर की आसा सरबत काहु करै रे, ऐसे दास राम रस-माता दूजा कौन धरै रे।
गुरुका सब्द रसाइन कीन्हा घट टकसार परै रे, अलख खजाना मीता पाया जुगजुग राज्य करै रे ।।

देखौ देखौ तरन की आशा कै जगु बूड़ि जाता दाबी दिये।
नदिया केरा पाहना रे लोग बतावैं देव गढ़ी ठठेरे मूर्ति रे तिनकी करति हैं सेउ।
रमिता रामु बिसारि कै रे नलै बतावै राम तिनकी नैया ना तरै उइँ करते खोटे काम।
सिरजनहार न चीन्हइ रे ते नल नरकै जायँ अपना बापु न जानई उइँ औरै बापु कहाय।
तरने की संसै नहीं रे जो सतगुरु मिल जाये भै ते पार उतारई उइँ जमु ते लेइँ छड़ाय।
जाघटु दया न दीनता रे नहिं नहिं हवै विवेकु, तिनका सतगुर ना मिलैं उइँ कैसेकै देखइँ अलेखु।
भल कै जगै पुकारिया सब्द न मानै कोई रे जो सब्दा पहिचानिहै कबीर सरीखा होई रे।
मीता पाखंडु तूरई रे हुकुम धनी या कीन सो जन उतरै पार का रे सतगुर की परतीत ।।

दोहा

संतन की हाँसी करै पाखंड पूजै जाय।
कहि मीता तेहि मानुख का नरकौ ठौरु न आय ।।

रे बावा मन जीते जगु जीता काह पढ़े भा गीता पाँचों चोरा डिढ़ कै बाँधै फेरि पचीसों मूसा।
बेदु पुरान करम की फांसी जो फंसा सो लूटा या परपंच देव मुनि भूले का तिनके रंग राचा।
ज्ञान खरग सो लिया अमरपुर जहाँ हवै गढ़बाँका भये अमर बिनसै नहि कबहूँ नहीं रही कुछु शंका।
ऐसा राज्य करै जन मीता जगुलागा बहुफीका धनि सतगुर जिन अस्त्र बँधायो निर्बल ते भया बूता ।।

सपने के सुख स्वादु का धावै नल भाई ध्यावै काहे ना तेहि का जुग जुग ठकुराई।
बाजीगर पेखना रचा जनि देखी भाई खोजनहारा खोजि लै तजि कै चतुराई।
बाजीगर सो काम है पेखन सो नाहीं सतगुर भेदी सेइले ते देंई मिलाई।
अबु जनि चूकै बावरे नल देही पाई कहि मीता परचै बिना जिउ जमु लै जाई।।

अगम पंथु का जो कोउ जाय सो या अतिरिज देखै आय।
बिलरी उँटवै धरि लै जाय उँटवा महलन नाचै आय।
तब पानी माँ आगि लगाय ससा भूनि सिंघ का खाय।
सुई द्वार हथिया कढ़ि जाय वा हथिया के हाथु न पाय।
बुझिहैं हरिजन जो या आय निगुरा का कुछु जानि न जाय।
करौ चतुराई छानो आय नाहित नरक पहुँचिहो जाय।
मीता पदु गावै चितु लाय गरभु बास का चालु छड़ाय।
सतगुर सेइ भरम सब जाय अनभै भये बूझि सब पाय।।

कुमिता दूरि करु नल भाई या पेलि नरक लै जाई, का कथे बदे बहुताई हरि साँचे संघ रहाई।
का पढ़िया मीरा बाई सो विद्या देउ बताई, सतगुर की सरनै आई तिन दीन्हे धनी मिलाई।
जाके पूरब केरि कमाई ते मिले झूंड का जाई बहुतै हैं काह बताई दुइ दीन्है चारि जनाई।
नरसीले सधन कसाई जिन जोति माँ जोति मिलाई जन मीता तिनका ध्याई पाखंड का दूरि बहाई।।

पिया आवन की चाह खंभरी बौरी बौरी भई रे,
पंथी पूछौं बाटि बहूरौं छिनु-छिनु अँसुवा आवै रे।
मदन दहै तन कासों कहिये छिनु-छिनु अँसुवा आवै रे,
हरद बरन भई या दुख ब्यापै को मोरी तपनि बुझावै रे।
लाजु गई जगु करै हँसाई अँचरा की सुधि नाहीं रे,
जा तन लागी सोई तन ब्यापै पूछे काह बताई रे।
जौहर होय घरी दुइ करिये या तौ घटतै नाहीं रे,
कहि मीता सोइ नारि सुलच्छनि जो या बरत निबाही रे।।

साधौ ऐसी भक्ति करै, बिरला कोई धरै, पाँचु मारि मनु डिढ़ कै राखै सीढ़ी सुरति करै।
जूझै जूझि मरै ना कोई गुरु के ज्ञान मरै या विधि मरै सो मंगल गावै सो भै-सिंधु तरै।
परम पुरुष ते होय न न्यारे परलै नहीं जरै, सोई अमर जो गरभु न आवै संसौ दूरि करै।
कहि मीता एकु तत्तु ज्ञान बिनु सब जगु बूड़ि मरै, पोथी थोथी माया फाँसी हमका जानि परै।।

सतगुर दीनदयाल दयानिधि आगरे, चलु सखि तिनके पास मिलै सुख सागरे।
और सबै मधु छाँड़ि जरै जगु झागरे, जुगन-जुगन गये सोय अबहु तू जागु रे।
नल तन बार न बार समुझ तू बावरे आवागवन निवारु नहीं जमु मारु रे।
कहि मीता भजु राम छुटै सब दागु रे, जुगन-जुगन बिश्राम येही रंगु पागु रे।।

दोहा

संत सभा तेई लखै जिनका धनी सहाय।
मीता पूरे पापु ते हरिजन चीन्ह न जाय॥

कहिगे संत सुजान अबहु तू मान रे, रामु तजे नहिं सुःख अभागी जागु रे।
रूप बना बहु सुन्दर छिनु मां जाय रे, दौलति औ सुत नारि अपन कोइ नाहिं रे।
मिटिगे रावन पांडु तुम्हैं का राज्य रे, सपने मां ना पागु रामु रंग राचु रे।
पदु पाया निरबान ता सतगुर सेइ रे, भा मीता निरसंक भरमु बहु जाइ रे॥

पंडित काया मां हरि देऊ और ना दूजा केऊ, पांच तत्व के सकल सरीरा को ब्राह्मण को नाऊ।
झूठा बादु करै पाखंडी जानै ना कुछु भेऊ, चारि वेदु कै ब्रह्मा भूला लखा न पिउ का ठाऊँ।
ना कोइ ऊँचा ना कोइ नीचा अन्धे धरते नांऊ, राम भजे ते सबते ऊँचे उनकी बलि बलि जाऊँ।
कहि मीता परतीत मानिले तोहि तहाँ लै जाऊँ, अमर लोक मां साहेब मेरा उनसो बाँह धराऊँ॥

ले हरि नाम भला सुख होई तन दुरमति तब जैइहैं खोई,
तन की तपनि नासि होय जइहैं नल तन पाइ बूझि चलु लोई।
सो तो नामु प्रगट नहिं दुनियां गुरू कृपा ते पावै कोई,
निरखि-निरखि नैनन ततु पावै तोंहि सुहागिन तोहि पीउ होई।
करम धरम ते जीव न छूटै चौरासी मां जौन परोई,
समुझि देखि सब संत पुकारैं मुक्त सोइ जो जीअतै होई।
तौ लगि मुक्ति कहाँ रे भाई जौ लगि आवन जावन होई,
कहि मीता जगु भरम भुलाना साँचु कहे उठि बैरी होई॥

दरसी, दास सोई चितु लाय कहे जानि ना जाय, नाहिन नैन कपोल नासा नाहिन कर नहिं पाय।
कोटि सूर ससि वारिये छबि बरनि कैसे जाय, नहिं बेटा काहू का वा परम पूरुख आय।
काया धारी जो ह्वै सो नल प्राणी आय, सो प्रभु कैसे हो सकै नल भूलि ना तू जाय।
परम पुरुख बिसारि कै नल सुख कहूँ ना आय, देहि धारी बिनसि जाता ताहि ना पतिआय।
अभिनाशी है नाँउ प्रभू का ताहि कालु न खाय, कान्हा रामचन्द दोउ खाये संत साखि बताय।
गरभु बासु न आवई जो आदि पुरुखु आय, ध्याइ ले तू ताहि का तन दुःख सब मिटि जाय।
संत सनीपी ताहि के हैं और जानति नाय, तीन देव सरि ना करै जाका मिला धनी आय।
कहै मीता सुनौ सुज्जन दुनी बूड़ी जाय खसम अपना छाँड़ि कै वा और के घर जाय॥

हरि बिनु करै कौन सहाय औरे अस न आय, जगत जोरु जनावई मोहिं राखिहैं रघुराय।
राखि लीन्हा दास कबिरा और जन बहुताय, मीरा का बिखु किया निरबिखु बिरध ये ही आय।
सांचे के उइँ ह्वै साथी झूठा देइँ बहाय, अन्तरगत की जानइ तासो करइ काह दुराय।
कहै मीता ह्वै एकै और दूजा नाय जानिहैं जिन दरस पाया कहे को पतिआय॥

बाबा हिन्दू मुसलमान दोऊ बूझौ कहाँ रामु रहिमाना,
खोज करी ता होउ हजूरी गल्लो काह भुलाना।
आतस-आवु-खाक़ से तन किया तहँवा आपु समाना,
गुरू पीर पूरे सो पावै मेहर दया जो साना।
मुसलमान तौ पढ़ै कुराना हिन्दू बेदु पुराना;
कोइ बकरी कोइ गाय पछारै या कैसा है ज्ञाना।
ख्वाहिद खुशी कौनि विधि होइहैं करता खून दिवाना,
कहि मीता एकु मेहर दया विनु मारु परी घमसाना ।।

कैसे नामु निज ले जाय तन रही दुरमति छाय, मूल छाड़ै डारु ध्यावै जलमु मिथ्या जाय।
पानी ते पैदा किया जिन ताहि कस बिसराय पतीबरता क्यों भई ते भेदु दे बतलाय।
तीन गुन मां जगत भूला ताहि ना पतिआय सेइ ले तू सतगुरु जे देइँ धनी मिलाय।
कहै मीता मानिले जमु डंडु ते बचि जाय, टरै दुःख अनेग भांतिन गरभ बासु न जाय।।

कैसे सरन हरि की जाय बिना पदु के ध्याय नाहिन दीन गरीब मनुआ करै कौन उपाय।
ग्यानु गुस्टी बहुतै करैं भइ बिखै ना तजि जाय, कथत कथनी जगत बूड़ा साँचु ना गहि जाय।
जीत पाँच पचीस चोरा अगम ता ठहराय, तौनि पदवी पावई जहँ कालु की गम नाहिं।
मीता का उपदेस सुज्जन लेउ दुखु सबु जाय, कामी-क्रोधी मानवा ताके निकट ना तू जाय।।

नजरि भरि हेरिये मेरे साँईं इस बंदे की ताँईं,
दुनी उपाधि करै बहुताई कल कबहूँ ना पाई।
मेरे गरभु गुमान तिहारो और आसरा नाहीं,
जो पिउ खबरि न लेइ नारि की वा काँहां तन जाई।
लगे गोहारि कबीर दास की निरबिखु भई मीरा बाई,
मुई गाय नामा की बोली हमका का फुरमाई।
अन्तर जानी सो का माँगों दुरती नहीं दुराई,
कहि मीता जगु हवै कसाई ताकी अरज सुनाई।।

का करिहै कोई भाई रामु की पाई है सरनाई, सिंघ सरन जंबुक का करिहैं हमैं बूझि या आई।
राम सुधारै ता ना बिगरै आगे ते चलि आई, भया भरोस बड़ा बल पाया राम बलन बल नाई।
भरी गुमान दुनी माया की हरिकी सुधि बिसराई जमु के मोगदर जब लागैंगे कामु कुछौ ना आई।
सपने के पकवान खाय कै स्वाद कहाँ ते पाई, कहि मीता सैंतुक हरि पाये छूटि गयी तन ताई।।

इतनी अरज सुनि लीजै प्यारे धनी दरस जेहि दीजै,
दौलत दुनी काजु ना आवै का लै कीजै कीजै।
देउ मिलाय दास अपने का जलमु सुफल कै लीजै,
हा हा करै पाँय परै मीता मन मतंग गहि दीजै।।

पंडित रामु मिलै कैसे पाई तोरी पोथी मोहि न सुहाई,
हता निकट सो दूरि बतावै दीन्हा जगु भरमाई।
राम मिलै ता पार उतारै पोथी काह कराई,
रामै मिले नामा रैदासा कौन जुगति वा भाई।
राम चरन की हमरे आसा पोथी देउ बहाई,
घर का भेदु न जानै भोंदू मिथ्या बादु वकाई।
लोक लाज जन मीता त्यागी संतन का सिरु नाई
फंदा टूटि गया जमु केरा मरिहैं मोरी बलाई ॥

मेहर दरबेसा भाई या तें अल्लौ पाई,
नेकी करौ बदी का त्यागौ मुरसिद या फुरमाई।
दोजक के सबु काम करति हैं भीस्त का आसा लाई,
तेरा कहा न होइहैं बन्दे करिहैं छानु खुदाई।
का भया बेदु-कुरान पढ़े ते जो तोहि बूझि न आई,
बकरी पाँच ह्वै घट भीतर ताहि जबै करु जाई।
होय खुशी पिउ चाल चलो सोइ आखिर मारु न खाई,
कहि मीता गहु दीन गरीबी ससुरे होय बड़ाई ॥

पिया बिनु जोवन जाति तिहारो जियरा जरति उबारो,
मान तजो पाती लिख भेजो पायन पर सिर डारो।
हमहीं सुहागिन हमहीं दूती हमहीं देइँ बिचारो,
हमहीं पिया का जाय मिलावैं हो रहिहै उजियारो।
का भये काजर सेन्दुर दीन्हे का भये काँच सिंगारो,
जौ लगि नारि पिया नहिं भेंटै तौ लगि मुख है कारो।
कहि मीता तू मानु सखी री करिहैं पिऊ पियारो,
तपन जाय तन दुख ना व्यापै अमर महल पगु ढारौ ॥

जागी दिनु औ राती जोगिन या मति औरी भाँती,
छारु न लावै केस न राखै जब पिउ मिलै संघाती।
लावै अतर गुलाब सुगन्धै तजै जाति ना पाँती,
भोग करै कुछु स्वाद न जानै प्रेम पियाले माती।
लोभ-मोह-आसा पर त्यागै जारै कालु बराती,
चौदा पुर माँ पाउँ न राखै सत्य लोक के बासी।
छल बल भेखु करै बहुताई संतन साँचु सुहाती,
कहि मीता गुरु दीपक दीन्हा सूझी अवघट घाटी ॥

कौन सकै रहि रहनी रे बावा कठिन संत की गहनी,
लोभ मोह आसा परे त्यागै छानै दूध औ पानी ।
पाँच मारि मन डिढ़कै राखै इन्द्र भरै ताको पानी,
या मति अगम अगाधि अगोचर शिव ब्रह्मा नहिं जानी ।
का भये तीरथ-बरत के कीन्हे काह भये बहु ज्ञानी,
बिना जुज्झि नहिं होय सूरमा गल्लन भक्ति न जानी ।
जूझे दास कबीरा-नामा भेंटे अन्तर जानी,
कहि मीता ऐसे हरि दासा का झगरे नल प्रानी ।।

दास गती का जानै मूर्ख अभागी चीन्है भागि सुभागी
पाखंडी की करै बड़ाई संतन की करै हाँसी ।
चोर चोर सो करै सगाई साहु साहु संघु लागी,
पापी का है नरक दुआरा ता पर मोंगरा लागी ।
सुज्जन है संतोख समाना रहै नामु लै लागी,
आनि स्वाद वाके मनहिं नहिं आवै सुमति सुहागिनि जागी ।
हाथी चालु चलै ज्यों अपनी कुत्ता भूकन लागी,
कहि मीता वाका काह नसाना ऐसी कै हम जानी ।।

मनुआ रीझा छवि प्यारे की को निरुआरई,
कुंभ नीर मिला ज्यों सागर को तारै को बोरई ।
जोति सो जोति मिली जब आली को जारै को बारई,
कहि मीता जो मरै ज्ञान ते को मारै फिर मारई ।।

रे साधो सै कै मूल गवाये हरि हीरा बिसराये,
जिन तन रचा ताहि ना खोजे पाहन पूजै धाये ।
सुभ असुभ दोउ करम कमाये ज्यों कपि मूठी बंधाये,
छाँड़ि न सकै आस गुन लागी साँटिन मारि नचाये ।
अबहूँ चेति अचेति मूढ़ तू धरु सतगुर के पाये,
भैसागर ते पार उतारै नल तन जाति गँवाये ।
कहि मीता हम सब्द सनेही भरम का कोट ढहाये,
अब न मरौं मोहिं मिली सजीवन रामु नामु जब ध्याये ।।

रामु रंग लगे जाय बौराई ताहि हँसे दुनियाई, ज्यों पलास काला रंग कीन्हे पाछू लाली आई ।
करनी रहनी धरै कोई पूरा जो पूरा गुरु पाई, जियत मरै सो मंगल गावै ताहि कालु न खाई ।
गल्लन रिल्लन मिलै न रामा चारि वेदु पढ़ि जाई, साँचा पीपा औ रैदासा ताहि लिया अपनाई ।
अभिअन्तर की साहेब जानै तासो काह छपाई, कहि मीता जिन तन मन दीन्हा तिनके संघु रहाई ।।

रे साधौ गुरु का सब्द हम धरिया ताते जियरा तरिया,
ज्ञान कुल्हारी लै बनु काटा टूटी कालु जंजिरिया ।
जौनी जाल सकल जगु बाँधा जलमु आइ जिन धरिया,
सो तो संत संगति माँ टूटै कौन काम की किरिया ।
बूड़ि जात सब कोऊ न मानै लीन्हे घर की तिरिया,
सुज्जन का उपदेस हमारा अबु तरने की बेरिया ।
कहि मीता सिरजन हारे सो अपनी अर्जी करिया,
मांगि लिया सोई सोइ पाया मनुआ धीरज परिया ।।

परम गति जानि ना काहुइ जाई भूली सब दुनियाई,
भूले ब्रह्मा शंकर जोगी बिस्नू थाह न पाई ।
सुर-मुनि नल कैसे कै जानै जे बीचै भे भाई,
शंकर तपिया तमोगुण फाँसे ब्रह्मा रजोगुण जाई ।
सतगुन बिस्नु लिये गुण फाँसा सब जगु फाँसा आई,
काल अवल तीनहुँ पर कीन्हा रहिगे संत बचाई ।
ब्रह्म अखण्ड धरै नहिं काया काया नगर रहाई,
कहि मीता खोजै सो पावै सोइ मिलि सोई हो जाई ।।

पाखंडी पाखंड रहै बासा दाम दिलम की जिनके आसा,
जो मानी इनका विस्वासा तिनका निजु कै जमु पर बासा ।
भेखु भरमु धरि जगु का फाँसा ई ना होइहैं हरि के दासा,
गिरही हो जो रहै उदासा सतगुर सब्द तहाँ परगासा ।
गिरही नामा औ रैदासा सधन कबीरा दासा,
गिरही पहुँचे साहब पासा कहु को भेखु भया हरि दासा ।
बिनु बिबेकु ना छूटै संसा कालु बली का बड़ा तरासा,
छाँड़ी नींद-भूख औ आसा मीता त्यागे बिखै तमासा ।।

दोहा

प्यारे न्यारा ना करौ न्यारा किया न होय । मीता ऐसे मिलि गया नोनु पानी ज्यों लोय ।।
अभिमानी पचि पचि मुये परे नरक माँ जाय । जन मीता हरि पाइँया संतन का सिर नाय ।।

गुनी आँबु लगावई स्वाद करति है कोय । बिन करनी की कथनी बकते भोंदू लोय ।।
कथनी बदनी जगु करै करनी बिरला कोय । कहि मीता करनी बिना मरे मसखरा रोय ।।

पंडित पोथी बहु कही गहा न नौका नाम । बूड़ि गये तर बोर का परा रहा धन धाम ।।
पढ़ना गुनना पोथिया ई बल्ले ब्यौहार । मीता का अनभै भया जाते उतरा पार ।।
कागा ना पहिचानई हंसन केरी बानी । मीता हंसै हंस मिल उपजै सुख की खानी ।।

का बादै चोर खुवारी हम दोउ दल की रखवारी,
जगु ठगियन हाट पसारी तिनु लूटे सबु बैपारी।
भेखन राह बिगारी है भेखु भक्ति ते न्यारी,
ई गुनागार सरकारी संत नहीं भेख धारी।
तुम समुझौ मूर्ख अनारी हम कहिया बात बिचारी,
जो कही न करी हमारी ताका निहचै नरक दुआरी।
जो आवागमन निवारी तासो कहिये जाति हमारी,
जो बोलत सब्द सँभारी तेहि मीता पार उतारी ॥

मन का भली भाँति भरमाया या टिसुना औ माया,
चौरासी माँ भाँवरि देता ना समुझै समुझाया।
संत संगति काहे ना करता जाते होय छुटाया,
अब की बेर मानु मत मेरा नल तन हाथै आया।
जुगन जुगन जमु कीन्ही जतना जहँ जहँ जलमु धराया,
अति निलज्ज तू चेतिस नाँहीं फिर दुख आगे आया।
सुज्जन का उपदेश बताया हम तो फंद छुड़ाया,
जन मीता सति लोक पहूँचा जहँ सिउ नाहिन पाया ॥

साधौ या तो भक्ति नहीं है भूली सकल मही है,
कंठी माला छापु तुम्हारी धोखा लागि मोही है।
ततु का तिलकु मुक्ति की माला संतन तौन कही है,
प्रेम की छापु किरखी की गुदरी कीन्हे बिरल कोई है।
पाखंड कै कै जगु ठगि खाया हरि का डर नाहीं है,
तेली केरे बरदा होइहो परिहै दुख तोंही है।
मूँदी तौ सो खोलि दिखाई राखी कानि नहीं है,
हुकुम भया तब मीत पुकारा आखिर बात यही है ॥

फकर फकर का करता जोगी सत्य शब्दु न धरता रे,
गुदरी सेली है मकरूला मोहिं समुझि सब परता रे।
पाँच जहूद करै कुफराना तिन्है काहे ना मरता रे,
टूका कारन भेखु बनाया नाहक लरता फिरता रे।
सेली सील ज्ञान की गुदरी अन्दर ध्यानु न राता रे,
सोई फकीरा या मत पावै काह सिखे दुइ बाता रे।
हवै फकीरा घर के भीतरि जहाँ पीर गुरु मिलता रे,
कहि मीता जगु भेखु भुलाना दाता दाता करता रे ॥

बानी बारामास की

जागि लेउ धना अबकी बारी, जोबन जलमु चलो जनि हारी ।
सेइ लेइ सखि पिया की प्यारी जाते तुमहूँ होउ दुलारी ।
हा हा कै हमहूँ भई प्यारी तन धन सीस किया जब वारी ।
सीस देइ नहिं बिखै बिकारी कथनी बदनी करै खुआरी ।
जब मन लागै अगम दुआरी सतिया जरै बिचारि बिचारी ।
सो सतिया सति लोक सिधारी अमर होइ छूटै संसारी ।
मिरतुक संघु जरै जे नारी आतम हत्या तिन सिर धारी ।
राम भक्ति कै ले नर नारी, राम बिना जिउ कौन उधारी ।
जग्गि दान तीरथु ना तारी दसहुँ दिसा जो सिर दै मारी ।
पोथी थोथी हवै तुम्हारी सार गांसि हम बनावावा री ।
बूढ़े पंडित सुन नो हारी सांचु कहे जरैं मुरुख अनारी ।
मीत सन्देस सुनावा भारी हुआँ की खबरि सुनौ बैपारी ।।

तू मानिले बचन हमारा ताते छाड़ौ जगु ब्यौहारा,
गहु नौका नामु अधारा जाते उतरौ भै जल पारा ।
है कठिन काल का जारा नहिं छोरि सकै संसारा,
हम सहियाँ करै पुकारा ना बूझै मूर्ख गवाँरा ।
है सुज्जन अंस हमारा तिन खातिर सब्द पसारा,
हम लै मिलवै करतारा जाते सदा रामु रखवारा ।
है मीता जगु ते न्यारा कोइ जानैगा जाननहारा,
जो निन्दै सब्द हमारा ता का निहचै नरक दुआरा ।।

प्रभू जी तुम दीनन के दाता मैं जाँचौ तुम्हरा दासा,
टिसना कुटिल निकट नहिं आवै रहौं तुम्हारी आसा ।
माया मोह सकल जमु फांसा मोहि बड़ा डर लागा,
ताही की फरियाद हमारी सुनिले हाल हेवाला ।
तुमसा और हवै ना कोई तुम्है मिलै कुसलाता,
तुमते बिमुख नरक ते परिहैं हमैं हवै बिस्वासा ।
अब मीता का देउ दिलासा करै अमरपुर बासा,
यहै चाकरी हवै हमारी और कुछौ ना बाता ।।

मियाँ मन कुफर करैं का धावै अल्लौ कैसे पावै, औरे का कुफरना बतावै आपु समुझि ना आवै ।
दीन गरीब मेहर औलिया मोमिन सील कहावै, पीर सोई पर पीरा जानै दिल दरवेसै आवै ।
बदी करन ता काफिर कहिये दोजक सोई जावै, करु औसाफ होइ पिउ राजी मुरसिद भेदु बतावै ।
पाक सोई जो पिउ पहिचानै लोभमोह बिसरावै, कहि मीता सोइ बन्दा कहिये जो या निहचै आवै ।।

मनु रे बसु पट्टनपुर देसा ना करु पाखंडु भेखा,
सतगुर सब्द थांमि कै चढ़ि चलु छांड़ौ जगु का लेखा।
होइ अनन्द सकल विधि मंगल कालु दुःख ना देखा,
अबके दाँऊ परा है पूरा जलम नहीं या नीका।
चौदापुर है काल पसारा जो बसिया सो लूटा,
टूटा बड़ा नफा कुछु नाहीं छांडो बासु तहाँ का।
बहुत सुना औ बहुत कथा कुछ रामु बिना सब धोखा,
नाम परताप मीत जगु जीता खोटे ते भया चोखा॥

ज्ञानी हो कौन गुनन का ज्ञाना तत्तु बात पहिचाना,
जौ लगि अनभै नहिं परगासा तौ लगि भरम भुलाना।
देउ असुर मुनि नल तन प्रानी खाये कालु निदाना,
ताकी कथा काह तू भाखै जैसे पन पकवाना।
बाजीगर या पेखन बनाया ता लखि सरै न कामा,
लखु बाजीगर बाजी जीतै तब पावै निज धामा।
बानी अगम अगोचर मेरी जानै नहीं नदाना,
कहि मीता हम भये सनीपी दुनिया कौने कामा॥

मियां जौ मन मक्का चितु लाये तन सोधे अलख लखाये,
पढ़ै कुरान-पुरान रैनि दिनु घट का भेदु न पाये।
बिना मेहर साहेबु नहि राजी बड़ेन बड़ेन गोहिराया,
गइया-बकरी मुर्गी मारै किन तुमका फुरमाया।
कैसा बन्दा, है तू खूनी करिहै न्याउ खुदाया,
यहाँ के फल वहाँ दुख दैहै आखिर जाय बुलाया।
पीर-औलिया होइ कै बैठे बहु बिधि भेखु बनाया,
कहि मीता अन्तर की जानै तिनसो कौन छपाया॥

ननद मोरी बैरिन सासुरी, सुनहु हमारी बातु री,
सपनेउ पिउ मोहिं नाहीं चाहैं नहीं ससुर वै बासु री।
कैसे कै तपनि जाय या तन की सुख याकौ ना बात री,
कौन गुनाह हवै मोहिं मांही जाते कंथ रिसाति री।
नहिन रूप गुन लच्छन याकौ अन्तर याही बात री,
कुमिता नारी जनमु कुधारिक ताते परिया बाटि री।
मीता सैन सुजान सखिन की रहति पिया के पासु री,
छिया छिया जाके होय ससुरवौ का तिनके औहाति री॥

बिना सीस का मिरग चरै फुलवाइयां, बिन काया की नारि त पुरुख रिझाइयां।
सासु ननद का खाय भइया का त्यागियां सकल कुटुम कै नासि सखिन मन भाइयां।
या पदु है निरबान बिरला कोई पाइयां सतगुर दाता देई सिख जसु गाइयां।
तजु सठु बादु बिवाद कथनी बहि जाइयां कहि मीता सोई दास बहुरि न आइयां ॥

कै ले दिलों विचारु मरम जो पावई कठिन ह्वै वैराग बिरल ठहरावई।
लिये मनोहर माल मूल जप लावई लिंग लगोंटा बांधि चोर ना पावई।
बसि कै पांचौं नारि पचीस नचावई ता रीझैं भगवान बहुरि ना आवई।
गावै मीता दास त भरम छड़ावई सुज्जन का उपदेस त राह बतावई ॥

हटकु हटकु कुमिता का घरै ना आवई, या है बिखु की बारि नरकु लै जावई।
धरु हिरदे मत सार पार जो जावई सतगुर केवट* खोजु परम पदु पावई।
पंडित कथै पुरान भगति ना पावई धोखे परा भुलाय जगत भरमावई।
अकथ कथा निज नाम बिरल कोई ध्यावई कहि मीता तिरदेव ताहि न पावई ॥

ते कैसे सुख पाइहै जाके अनग भतारा सत्य पुरुष का छाड़ि कै विनवै औतारा।
ज्यों विस्वा सुत जाइया वा काको बारा कौने का बापू कहै समझौ संसारा।
सुज्जन दोउ कुल तारियां दोऊ दल अतिबारा अपने पति सो रमि रही तिन का सुखु भारा।
जगत सराहे का भये पिउ तजिहै बेकारा कहि मीता ते धन्नि हैं जे ससुरे सारा ॥

करनी कै हरि पाइये कथनी सुनि मिलै न कोई रे।
लरै सो सूर कहावई वा तो गल्लन सूर न होई रे।
पर आतम औ आत्मा रे ई दुइ ऐकुइ होय।
सो जन संत कहावई जाके मन-इन्द्री बसि होई रे।
पंडित मुलना बहु पढ़ै रे मरम न पावै कोय।
अनभै उपजा भै गया तब धर का भेदी होई रे।
बिनु पढ़े बेदु पुरान के रे या विधि पंडित होय।
जन मीता ताकी अवरिया तुम बुरा न मानो कोई रे ॥

घर का पीतम छाड़ि कै ध्रग औरे ध्यावै, अपने रंग राची रहों दूजा नहिं भावै।
पतिव्रता की टेकु है सो कौन छड़ावै, विस्वा अनग भतारिया बहुतन लै आवै।
व्याहु भया दुलहनि भई दोउ कुलै जगावै, सो व्याही जगु ऐकु दुई उइ बहुत न आवै।
नाचै-कूदै भांड़िनी जगु का दिखलावै, दाम काम परपंचु करै कोऊ मरमु न पावै।
या जगु अन्धा देखि कै कुछु कहा न जावै, विस्वा का आदर करै पतिवरत लजावै।
या तो बानी अगम की कोउ जगै ना लावै, वस्तु अगोचर बूझि बिन कैसे कै पावै।
दाबी दीन्हे सब चला जमु हाट लगावै, हटके बहु दुख मानई तोहि को समुझावै।
मीता पारस परसिया सो काह दिखावै, जाननहारा जानिहै जेहि रामु जनावै ॥

हरि कीरत तोरे तन मांहीं बस करु माधौ अनतै नांहीं,
बास कहाँ कोउ समुझति नाहीं नाचबु गाऊबु किरतन नांही।
इन्द्री मन जाकी बसि होई सो जन तरै मिलै हरि जाही,
कथा पुरान कीर्तन नाहीं सुनि सुनि पसुआ अधिक भुलाई।
नेम-धरम ई कीर्तन नाहीं पाहन पूजा है ठगिहाई,
परपंचु करै माया की तांई कीर्तन सो जाते हरि ही पाई।
बूड़े जांय कहुँ थाह न पाई जहाँ थाह तहँ पैंठति नाहीं,
कहि मीता ताको का समुझाई जाके कुमति सदा रहै छाई॥

हरि किरपा बिनु भगति ना होई भरमु भुलाना है जगु लोई,
मिथ्या छापु-तिलक जप माला पाहन पूजे पाहन होई।
मन मतंग जब हाथै आवै औ पांचो इन्द्री बस होई,
सो संता चौथा पदु पावै हरि का मिले भिन्न ना होई।
संत भागवति यहै पुकारै जीव ब्रह्म जब ऐकुई होई,
या है सत्य और सब झूठी और करी सो नरकौ होई।
आवा जाही यहै नरक है रहित होय मुक्ते नल सोई,
कहि मीता गाये का होइहै गावै विस्वा भांडु घनोई॥

सतजुग सत्य त्रेता तपु संजम द्वापर पूजा चार सही,
नल देही पावै के काजे तीन जुगुन ई करम सही।
कल जुग आवति है अगिलइया नलो देही मां कुसल नहीं
हरी कीरति तेरे तन मांही बसि कर माधौ अनत नहीं।
आतम मिले आत्मा रामा येही करनी व्यास कही,
आवागमन मिटै तेहि जन का तब कीरतन होय सही।
दरस कीर्तन दरस परायन दरस भक्ति कुछु और नहीं,
नाचबु गाउबु पाहन पूजा छापा माला कबै कही।
अमी सुनाय जहर दे मारै तिन ठगियन सो काह कही,
माया कारन भेखु बनावै नरक परन की राह गही।
बूड़े आप खलक का लीन्हे अन्धा या जगु समुझि नहीं,
पंडित केरे रहै भरोसे तिनते जमपुर दूरि नहीं।
पाखंड पूजि हँसै संतन का हांसी औ दुख दोउ भई,
मरति बेरि जमु कांड़न लागी दैइया मैइया कहैं तहीं।
छल बल पाखंड तहाँ न छपिहै जमु दारुन जब आय गही,
कहि मीता तुम सुनौ रे जुगला अंधा काना सो तु नहीं॥

ऐसी चालु चलो मेरे मना जाते करिये गुरु बन्दना,
तन-मन-धनु तिनही पर वारा जेरे दिखावै हरि दरवारा।
सतगुर सो जो तन दुख हरई गरभ बाधु मां ना फिर परै,
कान फुकाये भूला संसार हरि दरसन बिनु होइ न पार।
कहै भागवत सो मतसार करनी बिनु सुनिबौ है खुआर,
सुनि कै जो करनी कै जाये तीनउ तिनके बन्दै पाये।
उलटि जीव जो ब्रह्म समाये जरा मरन तबही मिटि जाये,
सोइ परायन भक्ति बिचार सोई कीर्तन होय दीदार।
कंठी माला पाहन सेव कबै थाप कीन्ही सुखदेव,
कबै कहा की तिरथै जाओ कबै कहा कि कन्दै खाओ।
काना-अंधरा हिजरा लोय इनमां भक्ती कबहूँ ना होय,
सुकदेऊ कही समुझि न जाये अन्धे दुनिया ठगि ठगि खाये।
आतमदर्शी जो कोइ होय सही भागवति तिनकै होय,
तेई मिलाय देंइ करतारा तेई उतारै भै ते पारा।
भेखु भरमु बूड़ै का द्वारा गिरही पहुँचे है दरबारा;
जन मीता की करनी सारा बाजी जीत भये हुसियारा॥

समुझि नल रे ऐसा समौं बहुरि नहि रे,
नल देही नहिं बारं-बार करौ बिवेखु होउ हुसियार।
चौरासी कुंड नरक के जहां तेरा जीव परा है तहाँ
जोई निकरै सोई सुजान संत संगति कै तारै प्रान।
उलटि जीव जो ब्रह्म समाये सो कबहूँ ना आवै जाये,
नहिं तौ सदा नरकु मां बास प्रेम भक्ति बिनु नहिन उसास।
बस करु इन्द्री मनु कर हाथ तब पइहै अमरापुर बासु,
कहि मीता तजु गुन की आस ऐसे भे साहब के दास॥

साधौ मन लागा राम सो कौन काम घर बन सो,
पांच पचीसो बसि मां कीन्हा बैठे अपने घर सो।
मांगि न खांय करति हैं किरखी नहीं मोह माया सो,
सहज मिलै ता ढिग मां राखैं काया के करमन सो।
सकल सम्पदा फीकी लागै सतगुर की किरपा सो,
उमगा प्रेम मिला दरिया सो छूटि गया जिउ जमु सो।
जौ लगि ममिता घटु मां बसई तौ लगि झगरा जमु सो,
कहि मीता सुन साधो भाई भक्ति नहीं माला सो॥

जलमु जाति हरि भक्ति न पाई कौनु जुवाब देउगे भाई,
जमुराजा जब मोहमिल होइहै तब जैहौ का की सरनाई ।
धन दारा सुत मात पिता हितु अंत काल कोइ कामु न आई,
पांवर देखि काहे तू भूला रावन के दल ता बहुताई ।
फेरा देति फिरत चौरासी सो दुख तोंहि जानि न जाई,
अबहु समुझु देही नल पाई भजिले रामु परम सुखदाई ।
भेखु धरे ते भक्ति दूरि है पाखंड ते या पावति नाहीं,
कहि मीता गिरही हरि पाये बहुत मिले ते गने न जाई ।

अर्जुन फांसे क्रोध मां कान्हा फांसे काम । तहां ज्ञान कैसे रहै मीता है निहकाम ।।
रांमचन्द देही तजी तेइ मथुरा भे कान्ह । गरभ वास छूटा नहीं ई नहिं संत समान ।।

रामु बनिज फिर बनिजु न होई और बनिज सब पूंजी खोई,
तीरथ बरत करम की फांसी इनमाँ मुक्ति कबहुँ ना होई ।
दानु दिये नृग गिरगिट कीन्हे दानु लिये ते का गति होई,
दाबी देइ जात जगु बूड़ा भल कै कही न मानै कोई ।
गोरख भरथरी गोपीचन्दा जियत अमरपदु पावा लोई,
ध्रू-पहलाद तौन नहिं पाये सो पदु सतगुर सहजे देई ।
भक्ति बराबर और नहीं कुछु नर ते ये नारायण होई,
पानि पड़ोह मिला ज्यों सुरसरि कहि मीता सो सुरसरि होई ।।

भली दीनता सुनि हम पाई ताही ते गुरु कीन सहाई,
इन्द्री दई पापु तब नासे रामु मिले जमु तलब छड़ाई ।
छापा तिलकु बहुत दिन कीन्हे झूठ जानि के दिये बहाई,
सांचु गहे ते पाखंड चीन्हा अब पाखंड के निकट न जाई ।
पाखंड भेखु सकल जगु भूला बूड़ि जाति कहुँ थाह न पाई,
सांचु कहे ते बैरु करति है बूड़ि जान दे जानै बलाई ।
सुज्जन काजे देइ सन्देसा मूरुख सो कुछु मतलब नाहीं,
कहि मीता जो अंस हमारा सोई हमका मिलिहै आई ।।

छांड़ु छांड़ु साकठु चतुराई बूड़ि जात तोहि जानि न जाई,
पढ़बु गुनब या कामु न आई भक्ति बिना कोउ पार न जाई ।
पांच तत्व के सकल सरीरा तामे ऐकइ ब्रह्म समाई,
ना कोइ ऊँचा ना कोइ नीचा ऊँच भये जिन भक्ति डिढ़ाई ।
नेम धरम उइले व्यौहारा तीनिउ देवा राह चलाई,
जमु की फांसी तेऊ फँसे हैं तुमका कौन छड़ावन आई ।
सतगुर काटि देइ जमु फांसी जो कोइ उनकी सरनै जाई,
कहि मीता जे हरि के दासा तिनका आवागवनु न होई ।।

पंडित कोटिन बेदु झरि लागी अनभै उठिया जागी,
अगम अगोचर तहाँ की बानी जहाँ पवन नहिं पानी ।
सूर-चांद नहिं धरती मंडप ना चौरासी खानी,
चारि बेदु नहिं तीनिउ देवा रहै आपु निर्वानी ।
चौदा कोटि ज्ञान तेहि केरा तेरा गुपित रखाया,
एक कोटि जगु बूसी राखी ततु ना जगै जनाया ।
कहि मीता तब के है संघी अब जगु मां भये ज्ञानी,
जो चीन्ही तेहि धनी मिलावै कै देइ निरबानी ॥

अन्त काल कहँ जइहै पड़ैया जमु मारी तब को धरहरिया,
तीनिउ देवा जिन धरि डड़िया तुम्हरी बतियां ह्वैं कि तनियां ।
पांच तत्व ते सब तन करिया जीव ब्रह्म सबही मां भरिया,
सूद्र, ब्राह्मण तू केहि करिया भूले ब्रह्मा समुझि न परिया ।
संत सनीपी जग द्वीप आये इनते नहीं और बड़ कोइया,
जीव जंत्र सब नरकै जइयां संत पुकारि करति है सहियां ।
जो चीन्ही तेहि पार लगइयां ते नल जमु की त्रासु न पइयां,
तुरत मिलाय देइ रघुरइया कहै मीता सो संत कहइयां ॥

काहे मसखरा बादु बढ़ाई चीन्है न तत्व करै चतुराई,
मोगरा लीन्हे जब जमु आई तब करिहौ सठु दइया माई ।
जैसे सूकर स्वानु कीच लखि धावति है बहुतै सुख पाई,
निर्मल नीर तहाँ नहिं पैठै ऐसे लच्छन वाके भाई ।
भेदु अभेदु कहै सठु मूरुख कहु वाको कैसे समुझाई,
घूरे लोटे खर सुख पावै चन्दन वाके कौन लगाई ।
कँह हंसा कँह कागा के गुन वाकी सरिवरि कैसे पाई,
करीर कपूर जहां है ऐकै मीता काह बिवेकु बताई ॥

रे बावा चोरु साह हरि जानै का मुख खोलि बखाने,
मनुख होय ता बात न मानै हरि अन्तर की जानै ।
काहे का रगरा झगरा ठानै भजन भंग कित आनै,
न्याऊ करी जब साहेबु सांचा लागी आग सयानै ।
चित्र गुपित्र बड़े लेख धारी छिनु छिनु की लिखि आने,
छाड़ि बदाई करो भलाई यहै ज्ञान गुन आनै ।
जहाँ विवेखु तहाँ है साहेब क्षीर-नीर सोई छानै,
कहि मीता सोइ राम सनीपी हक नाहक पहिचानै ॥

लटका

बिरहनी भेदु बताये, हियरा जुड़ाये, मन मन होय उमाह,
सांकर खोरि मिले मोरे मितवा नैन सो नैन मिलाये ।
घर घर होय चबाव रैनि दिन प्रीति न दुरै दुराये,
लाजु गई डर छूटन लागा जब सेजरी पिउ आये ।।

गलिया आओ, पियारे छतिया लगाओ, ।
तेरे काज भई बदनामी, अब कस प्रीति छपाओ ।
लोग कुटुम परिवार तजो सब अपना मीत रिझाओ ।
चितै चितै मनु करौं निछावरि सेजरि नैन जुड़ाओं ।।

लागी मीत मितैया कैसे छड़ाऊं मन की केहि बताऊँ,
सास ननद मोरी काह करेगी लोक की लाजु बहाऊँ ।
सेजि सवारों पलक न लागै हँसि हँसि लेऊ बुलाई,
रैनि जगाइ भला सुख दीन्हा गा जोगिया बौराई ।।

मेरा यार गुमानी नगर में आया केहों भेदु न पाया,
बांकी चितवनि सुरति सलोनी कौनी धौ बिलमाया ।
खोरि साकरी चला जात था देखि-देखि सुख पाया,
लोक लाजु मीता नित छाड़ी अपना भला मनाया ।।

ग्रन्थ दूसर

सतगुर सहाय पद बोले सम्व्रत् १७६० वि० माँ०—सतगुर मिले सम्वत् १७८० माँ तब उमर रहै ३२ वर्ष की मीता की। वतन कुराया जलमु फतुहाबाद बकेउर बिन्दकी के बीच ॥ संत तो परमेसुर की देही हैं, उनके करम नहीं लागति है। रामचन्द, कन्हैया तीनिउ देवता इनके करम लागति हैं। देवता रिखी सब नरक परति हैं, नर संत परमेसुर एकुई आंय। अर का पंडित का भेखु बिनु जोहद जे खाति हैं ते परोहन होति हैं बैलु-भैंसा-गदहा-ऊंट, येहि मां मिथ्या नाहीं। कबीर-नानिक-दादू का ते ठगन भेखिन कहा कि उनके हम आहिन। उन भेखिन ठगैयन का लगै नहीं बैठै दीन। भेखी तो उनके गुनागार थे—संत गिरही होते हैं। सो मै कहा कि ई ठगु-भेखु मोरे सूने कहै ना कि मीता के आहिन। जे हम लिखे हैं ते सही और जे कहै कि हम मीताके आहिन ते झूठ लिखे संगति सही। जो परम पुरुख नारायण अभिनाशी का बिसराई आन देव का ध्याई सो सब अचल नरक मा परी ॥

कहरा

माख रे मारु जान नहिं पावै काम-क्रोध दूनौ दइया रे,
ई जमु मांही जमु इन मांही ये बड़े दुख दइया रे।
येई हरि जी सो अन्तर डारै येई नरकु लै जइया रे,
माया मोह के ई दोउ भइया सबै बराबरि हइया रे।
शिव ब्रह्मादिक इनही लूटे इनही बिस्नु कन्हैया रे,
रामचन्द्र सुर-नर-मुनि लूटे संत बचे गुरु बँहिया रे।
संतन की सरि कोऊ नांही राम दरस जिन पइया रे,
संतन सेइ पार भा मीता जमु की जालु छड़ैया रे ॥

एकु नऊवा-दुई बरिया जगु मां आपु फंसे जगु फांसा रे।
जमु की जालु परे सबु बंधुवा बाचे संत सुजाना रे।
पापु-पुन्नि की खेती करते हानि नफा उपजाना रे।
कबहुँक राजा होइकै बैठे कबहुँ होय खर-स्वाना रे।
उपजति विनसति बहु दुख पावै बूझै न मूर्ख नदाना रे।
ना हरि भजै न संतन चीन्है माया-मोह लपिट्याना रे।
को समुझावै बैरु करावै धरै ना सांचा ज्ञाना रे।
कहि मीता जो अंस हमारा सोई सब्द पहिचाना रे ॥

कथा कहे हरि हाथु न आवै पंडित पढ़ि बौराना रे ।
सो विद्या का बूझति नाहीं जाते गरभु छुटाना रे ।
सूद्र सोई जिन ब्रह्म न दरसा आदि पुरुख ना जाना रे ।
सो ब्राह्मण जो आतम दरसी और सकल सुद्राना रे ।
पांच तत्व के सकल सरीरा जीव ब्रह्म तहँ आना रे ।
येहि मां कौन सूद्र को पांड़े करनी का सबु ज्ञाना रे ।
दुबे तिवारी पांड़े चौबे ब्राह्मण इनते न्यारा रे ।
कहि मीता ब्राह्मण दुइ एकुई चीन्है हरि का प्यारा रे ।।

हो मेरे मनुआ हरि जी की सरना सकल व्याधि दुख हरना रे ।
या संसार जानि रहु छोई माया-मोह न करना रे ।
ऐसे रहु दरपन ज्यों कामिनि बांह पकरि किन आना रे ।
पुरयनि पत्र नीर मां जैसे ऐसे संत सुजाना रे ।
शकर की मक्खी राबा लै उड़ि गई पंखु न साना रे ।
या संसार राबु की मक्खी फंसि मुई स्वादु न जाना रे ।
हाही हाही दइया दइया करइ निदान निस्तारा रे ।
या दुख देखि मीत भये न्यारे संत संगति मनु माना रे ।।

घरही मां हरि मिलै बावरे बनु का जाय गंवारा रे ।
संतन संघु प्रीति के कीन्हे तनु मनु धनु जिन वारा रे ।
संसो सोगु कबहुँ ना छूटै छूटै हरि दरबारा रे ।
जहँ संसो तहं मुक्ता नाहीं मुक्ता रामु पियारा रे ।
मूड़ मुड़ाय भेखु धरि बैठे ठगने का संसारा रे ।
हरि के दासा ग्रह मां उपजे किरखी कै निस्तारा रे ।
जाकी हरि जिउ करै सहाई दूनौ दल हुसियारा रे ।
रामु सनीपी ग्रही के भीतरि मीता किया बिचारा रे ।।

दोउ दल लीन्हे हरि का प्यारा जानैगा जाननहारा रे ।
राम सनीपी घरहि भा रे जानै न भेदु गंवारा रे ।
कहु को भेखु संत भा भोन्दू मानौ बचन हमारा रे ।
नाहित नरकु परे दुख पइहौ भेखु पूजि जगु ख्वारा रे ।
संत संगति है मुक्ति दुआरा जो सेवै सो पारा रे ।
छानु किया तब हमहूँ जाना जगु मां किया पुकारा रे ।
सत्य-सत्य है सब्द हमारा सुज्जन का निरुआरा रे ।
कहि मीता पापी नल भूले जिन पर जमु रखवारा रे ।।

भै दरियाउ नामु की किस्ती मुरसिद पार उतारा है।
माशूक लखि लखि वारा है कोई बिरला जाननहारा है।
गुदरी-सेली किस्ती-तूँबा या सबु भरम पसारा है।
भेखु धरि धरि आलम मूसा तिनते अल्लौ निनारा है।
पढ़ै कुरान कितेबु भागवति अमल न मन मां धारा है।
ज्यों गदहा पर चन्दन लादा का जानै वो बिचारा है।
जा तन इस्क लगै सोई जानै आशिक तन धनु वारा है।
कहि मीता दोउ दीन भुलाने कथि-वदि धनी बिसारा है॥

मगरूर पढ़ पढ़ि मारा है वा तौ मता निनारा है।
माटीदा महल खसम तहँ बैठा तिनका काहे बिसारा है।
कुरान पुरान मनै करता है क्यों जीवन को मारा है।
हिन्दू मुसलमान दोउ भूले को करिहै निरुआरा है।
दोजक नरक तिन्है का होता जिन जीवन को मारा है।
असल खुदाय जबै तोहि पुछिहै ताको कौन बिचारा है।
का भये तसबी-माला फेरें रामु रहीम पुकारा है।
कहि मीता जिन अदबु न माना ते बूड़िहैं मँझिधारा है॥

भजि लीन्हा अलख अपारा है है सब मां औ न्यारा है।
रूप रेख रंग नाहीं जाके सो हमरा करतारा है।
मूल छाड़ि जो डारन ध्यावै सो बिस्वा का बारा है।
जाकी जोति सकल जगु जगमग ताको काहे बिसारा है।
तरा चहै बूड़ेनि का ध्यावै ते बुड़िहैं मँझिधारा है।
सत्य पुरुष के दरसन पाये उतरि गये भै पारा है।
मूंदी ती सो खोलि दिखाई मानि लेउ अतिवारा है।
सांचि सांचि मीता गोहिरावैं बूझी अंस हमारा है॥

आगि लगी दहि भीतरि मच्छ चढ़े पहार अचिरिजु लखि मनु थकि गया भा गौने का चार,
दुलहनी मनुसै खावा, गाये मंगल चार ससुरे सुहागिल तब भई सासुइ न कीन पियार।
जेठ जेठनिया त्यागा धरा खसम का सार तासो निज भौंरी भई चलि भई राज दुआर।
बूझौ बूझौ पंडित भइया पढ़ि पढ़ि करौ बिचार कहि मीता बिन बूझे परिहे जमु के जार॥

जगु नेही बैरी भया हरिजी सो लागा नेहा जोगी होय मनु खोजता खोजति खोजति मिलिगे नाहा।
पांच पचीसो बसि भये करते बदराह ते अब घर सिरजन लागे हमरी हमराह।
अरे अरे बाट बटोही सुनिले एक चाह कालु नवावे सीस का हम भे पतिसाह।
दिल दिल्ली के तख्त मां बैठे सुख साह मीता तपनि तहवाँ गई भे सुख उदशाह॥

नल तन दुर्लभ देही या बार बार ना होई ।
ताते करिये राम सनेही जाते गरभ बास ना होई ।
उपजति बिनसति दुःख बड़ा है झूठी जगत सनेही ।
राजन जानि राज्य तजि दीन्ही समुझि परा जेहि जेही ।
गोरख भरथरी गोपी चन्दा सुल्तानी मति वोही ।
मूरुख हृदय न या मति आवै पापु भरी है देही ।
निभर भये सोवत ता मीता गुरु जगाय दिया मोही ।
कृपा कीई रामु-धन दीन्हा दुख न कबहूँ होई ।।

कहरा

मारु रे मारु जान नहिं पावैं दारुन है कुतवलवा रे ।
जिअत देइ दुख मरत देइ दुखु तिरबेनी बिच डेरवा रे ।
सतगुर का सिरु नाय प्रीति करु जिन दीन्हा हथियरवा रे ।
काम क्रोध औ लोभ मोह दल इनके संघु घनेरवा रे ।
तीन देउ रिखि देवा हारे जीते ह्वै अकेलवा रे ।
सतयुग त्रेता द्वापर के नल तिनका कौन कलेवा रे ।
चौहटि जूझि जीतिगे हरिजन ते कहिये मरदनवा रे ।
कहि मीता करनी का कहरा सांचे ते कै जाई रे ।।

हरि का ध्यान धरौ नलु ऐसे कुंजी कुरिल करति है जैसे ।
सब्द सुनौ मूलै लै लावो करम कटति है ऐसे ।
लगी दंवारि जरे करम कसमल कुन्दन करिये जैसे ।
जीव ब्रह्म याही विधि मिलिहै तरना कहिये ऐसे ।
ज्यों खटपदी उतरि कै चढ़ती चढ़ौ अकासै ऐसे ।
रवि शशि बीच सन्धि तहँ पैइठौ आवनु मिटिहै ऐसे ।
श्रोता-वकता ऐसे फांसे मरकट फांसा जैसे ।
हो मीता जोगी का चेला बाजी जीती ऐसे ।।

पंडित करु करनी मनु मानी तोरी विद्या भगति है आनी ।
या तौ पढ़ी पेटु उद्यिम का अवगति परी न जानी ।
बिनु हरि भक्ति जीव ना उबरी काहे मति बौरानी ।
सूद्र सोई जो हरि ना जानी ब्राह्मण सो जो ब्रह्म ज्ञानी ।
बरन बाँधि भै सागर जइहौ बात लेउ मोरि मानी ।
मछरी मांस अघोर नरकु है कहै पुरान बखानी ।
नीचे भये भगति ते ऊँचे बूड़ि गये अभिमानी ।
कहि मीता संतन की संगति भाग्य बड़े तिन जानी ।।

नाउ झांझरी नदिया गहिरी तापर उठै हिलोरा कैसे कै उतरों पार का भारी दुख मोरा।
वारि रहों ता आहि डसौ या लागा सोग मोहि रही केही पुकारों है कोई केवट लोग।
अरे अरे मूरुख पंडिता का पढ़ि भे बेदु भेदु ना जाने अगम का करै छाती छेद।
सतगुर केवट कर गही लागा अस जोग मीता उतरा पार का का हँसि करै लोग।।

राम रसु पिये न कोई छपै सो सांचु नांचु नाचै, माला-तिलक कपट की टाटी बधिक ठाठु ठाठै।
जहँ हरि भगति तहाँ नहिं पाखंड सो जन कौन लखै जगु भौंदूका का समुझइये समुझे भागि जगे।
कहि थाके कोऊ ना मानै दुरमति रंग राचै अपन काम सो करई भाई जगु सो काह बके।
कै कै बहुत बहुत चतुराई जमपुर जाइ बसे ताते मीता होय रहा न्यारा प्रेम प्रवाह धसे।।

राम कहि तरा चाहति भाई तोहि गा ठगिया बौराई राम मिलै खांड़े की धारा चढ़ै सो रामै पाई।
माला तिलक देखि मनमाना घरकी खबरि न पाई हीरा चली बिसाहनि बौरी कांचु पोति लै आई।
कागद केरी नाउ चढ़े है पाथर बोझि बनाई जब बुड़िहो तुम भै की धारा को लै पारै जाई।
ह्वै संत भै सागर केवट जा तिनकी सरनाई कहि मीता तब पार उतरिहै जमु की मारु न खाई।।

बचन संभारे बोलु कुमति का त्यागिये तब पावै सतसंघु ठिकाना लागिया।
या मत ह्वै पपील, मीन जब जागिया जोगु जुगुत की रीति मूल माँ पागिया।
सिन्धु एक गम्भीर तो पैरन लागिया उतरा पैले पार छहों दधि ताकिया।
आगे मीन न जाय विहंगम मांगिया सतगुर किया सपच्छ उड़ाना आइया।
पच्छु पच्छु जगु भूला कथनी बौराइया बहा भयानक धार कहा ना जाइया।
शंकर-ब्रह्मा बिस्नू ध्याइकै थकिया, तिन नहिं पाया पार कहों मैं साचियां।
जो मानै अतिवार करों तेहि पारियां जमु ते लेइ छड़ाय ध्यानु जो धारिया।
मीता कहै विचारि संत संघु भारियां चीन्हैं बिरला कोइ भागि जब जागियां।।

जाके हिये न बसै हरि हरवा ता काह लिये कर करवा।
काह भये तीरथ व्रत कीन्हे सन्ध्या तरपन अचरवा।
काह भये बाघम्बर ओढ़े अंग लगाई छरवा।
घर घर द्वार फिरै माया का ओढ़े कपटु गुदरवा।
काह भये सिर जटा रखाये घोटि मुड़ाये बरवा।
छापु-तिलकु औ कंठीमाला सब पाखंड व्यौहरवा।।

मनुआ ध्याइ ले हरि मेरे जाते करम कटैंगे तेरे, जिन करमन रिखि देवा डाड़े अबही चेतु सबेरे।
तीन लोक करमन का जारू, जीव परे सबु घेरे, ब्रह्माबिस्नु औ नारद शंकर दस अवतार घनेरे।
संतन का पदु है निरवानी कालु न आवै नेरे सो संघु करो तजो सब आशा तासो करिय निहोरे।
जगि दानु तीरथ ब्रत त्यागौ पाहन पूजा भरम रे,कहि मीता हरि का ब्रत धरिये जुगन-जुगन है सुःखरे।।

अबु ना मरौ अमरौती पाई गुरु से बैदु मिले रे भाई।
हरिरसु मूरि सजीवन पाई जरी-बूटी काहे का खाई।
तेंतिस-चोबिस तीनिउ मरई, मरै अठासी नल सब जाही।
बड़ी बड़ाई पूँजी खोई भूले भरमु भक्ति ना पाई।
भक्ति बिना सबु गोता खाई भक्ति भेदु केहु बिरले पाई।
मनु बसि कै इन्द्री जिति जाई कहि मीता सो संत कहाई।।

मनु कर जोगिया मनु सन्यासी मनु कर भक्त मनुइ बैरागी।
मन कर संत मनहि फकीरा करु मनही का कंथ गुरु-पीरा।
मन मतंग चढ़ि खाड़े धाओ मन हाथी लै सुई समाओ।
जो या मन का जानै भेऊ तिनकी सेउ करै तिरदेऊ।
माला-तिलक जटा औ राखू सूत जनेऊ या मत काँच।
मूरुखु भटके भेखु बनाई दुनिया ठगि ठगि खाई।
पाछे होय परोहन जाई इनका को सकिहै समुझाई।
कहि मीता जो मनहि समाना तिनके निकट ह्वै भगवाना।।

नैना रांझे नैना रांझे जहां जाय मनु लइया हो।
छा भेखु छानवै पाखंड ई सबु आंय ठगइया हो।
दरपन मिला न दरसन देखा अइसे जलमु गवइया हो।
रूप रवन का रामु कहति हैं तहां हते दुई दइया हो।
जेहि का आपु अपन पहु सूझै कहु केहि नांचु दिखइया हो।
अगहु गहे ते दुनिया नासी भै अब न ढिढोर पिटइया हो।
काको नवउँ काहि सिर नाँऊ अब मोरी नवति बलइया हो।
कहि मीता गुरु पूरे पाये बहुरि न या जगु अइया हो।।

नलु रे बादु विवादु बेकारा ताते करु संत संगति व्योहारा।
भली दीनता ह्वै गरीवी जाते उतरै पारा।
छापा-तिलक काठु की माला कपट सुमिरनी हाथा।
जैसे बधिक लिये हरी टाटी करति जियन पर घाता।
गाइ-बजाइ जगतु का रिझवै भारी भीर लगावै।
सत्य नामु की खवरि न पाई छलु-बलु कै कै खावै।
हरि ते बिमुख जगत कहै साधू अंधरा पूजन धावै।
कहि मीता दोउ नरकै जइहैं हांसी औ दुख आवै।।

मनुआ तू मेरी मेरी अरझि रह्यो हरि बिसराय बड़ा दुखु पइहै छेकी कालु जियो।
मात-पिता-नारी सुत बन्धौ कोउ ना साथु गयो काढ़ि खटोली बाहर डारैं भूखन छीनि लियो।
रोइ-पीट आगी लै जारैं सबु मिल दुःख कियो सुधि बिसरी फिर धंधा लागे को काको नात भयो।
हाथु झारि ज्यों चला जुआरी लाखन धन बढ़ियो कहि मीता का दादा लै गये मूरखु गाड़ि गयो ।।

साहेबु साथी सांचु का सांचै मन भावै झूठे के संघु ना चलै झूठी ना भावै।
लोभी-क्रोधी त्यागई निकटै नहि जावै बेइमान ईमान बिनु तेहि दूरि बहावै।
कपट कतरनी कांखु मां मुखु ज्ञानु सुनावै साहेब अन्तर की लखै तासो काह छपावै।
रामु कहे ते का भया चोरो गोहिरावै किरतनिया बहु गावई हरि कैसे पावै।
साहेव सो परचै चहै दिल सांचु बसावै दीन गरीबी मां रहै दुरमति नहिं लावै।
या बिधि संतन पावई ते हरि जाय मिलावै कालु चोट लागै नहीं तन तपनि बुझावै।
प्रेम प्रीति पागा रहै संसै नहिं लावै जगु सपना कै जानई कुलु कानि नसावै।
जन मीता का ब्यापी सोई गाइ सुनावै या जगु बहुरि न आवई जो सतगुर पावै।

नलु चेतु अबूझ संतन निन्दे होइहै भूत।
या विधि चले काह तोहि मीठ जहां थीर तहँ करता कीच।
लोभी क्रोधी त्यागै पीउ गल्लै मारि काह चले जीउ।
झारे रगरे कुछौ न होय जेहि पिउ चहै सुहागिन सोय।
हिसकन बातन कहिये कूर बिन जाने कहिवे मां धूरि।
निरखि परखि कै जे जन कहई संतन मांझि अटल ते रहई।
हरि ते बिमुख कथै बैराग चोरा धरा बिकाते माल।
कहि मीता सठ चेतु गंवार नाहित निहचै नरकु दुआर ।।

हरि रंग रंगु रे मूल मंत्र का तू गहु रे।
सतगुर साहेबु का संघु कीन्हा हरदम नामु जुगति सो लीन्हा।
चांद सुरज दोउ सैना जोरी अरध उरध मां मेला मेली।
इंड पिंगला सुखमुनि नारी इन्है मथे घर लागी आगी।
औटी भाटी चुअै अगारी प्रेम पियाला पिया पचारी।
माता हाथी लरै दुआरी जोती जगमग भै उजियारी।
जियरा जानु सुरति के पास हेला मारे चला अकास।
खुले कपाट गगन घहराये आवागमन का पैड़ नसाये।
मारगु विकट हँसी नहिं खेलु वादु-विवादु करै सठु लोग।
सठु का सठु समुझावै लोई संत संगति बिनु मुकति न होई।
मुक्ति भुक्ति का छुअै न हाथू रामु मिलाना सो मत सार।
कहि मीता हरि मिलै विवेकी भूला जगु बहु कथै अनेगी ।।

भूलौ जनि लोई अन्त काल दुख भारी होई।
कूर परौसी कूरी जोय ताते चले अपन पै खोय।
तीन पाँच का कुटना होय पतरी गांठति दिनु डारै खोय।
चालै चलनी ठपकै सूप छिलरा बसै ननद का पूत।
कालु सरूपी बांधे मौर गाइन का बिड़रावै दौरि।
या विधि चले लगै घर आगि कैसे कै मिलै बुझावन हार।
तूमा बूड़े सिरई तराये नैइया मिलै ता चढ़ि ना जाये।
केवटरा सो माड़ै रारि ताते आय परे जमु धार।
बूड़ेनि बूड़े लै दस बीस कालु कलयान करै आसीस।
टेढ़ी रहै स्वानु ज्यों पूँछ जतन किये नहिं होती सूध।
लच्छन सुनौ जगत के लोई या विधि चलै हँसै फिर मोंहीं।
कहि मीता कोइ परम सुजान संत संगति कै उतरै पार॥

साधौ दूरि है जाना करु पंथु सांचु ध्याना कहाँ ते आया कहाँ जायगा करौ मनु ज्ञाना।
शुभ अशुभ दोउ कर्म कीन्हे ताहि लपिट्याना जैसे सुअना लटकि पौंगी उड़न ना जाना।
माया मोह इन्द्रिन का स्वारथु रहत मनमाना कैसे चीन्है परम बोली बिखै रस साना।
जमु राजा जब घेरि बैठी होइ उनमाना मूल खोये जमा टूटी अन्त पछिताना।
देउ सुर मुनि असुर भूले काह नल ज्ञाना भाग्य पूरे मिले सतगुर पंथु पहिचाना।
दास मीता अगम पंथी किया घमसाना रामजी का माथु नाया तजा अभिमाना॥

साहेब सांचे नामु का दुनिया नहिं पावै या जगु करुई तूमरी को फोरि नसावै।
धन दारा सुत कारने सठु मूल गवाँवै साहेब सो परचै नहीं जमु हाथु बिकावै।
मन बिखयेनि का धावई मुख ग्यान सुनावै कुमति न कैसेउ छूटई हरि कैसे पावै।
भेखु वहुत पाखंडु किये छल-बलु कै खावै अन्धा का लोभी मिला सो जलम नसावै।
हरि अन्तर की जानई कैसे बनि आवै साहेब साथी सांचु का सांचा मनु भावै।
संतन माथा नावई सो नामै पावै सो नामु न ब्रह्मा पाइया जो ब्रह्म मिलावै।
कोटिन मां कोई संत है सो लखे न पावै तिनका मारगु विकट है कोई बिरला पावै।
कहि मीता जेहि हरि मिले सो बहुरि न आवै सोई मिल सोई भया सठु का समुझावै॥

सूरों के मैदान में फिरना नहिं भाई अगम पंथु का मारगु बांका सीस देइ औ जानि।
ताकौ रन बीच शंक ना राखै मारु परै घमसान रुंड लरै साहेब के आगे तौ मुजरा परमान।
सीस राखि कै जूझा चाहै ई कूरों के काम छाँड़ि मसखरे देउ मसखरी पाजी बेईमान।
कहि मीता सोइ बीर बहादुर जाको रीझै रामु बहुतै गंदा गल्लै मारै साहब दिल की जानु॥

अरे हवै पंथु अपार जोगी गति को जानई अन्दर धूनी ध्यान की भावै नहिं आनि।
पांस-पचीसो बाँधि कै मूलै लागै तार अनहद बीन बजावई मीता दसवें द्वार।
ब्रह्म अगनिं उदगारि कै रसु लीन्हा गारि प्रेम पियाला पीजिया जपु अजपा जापु।
चाँद-सुरज बिच अन्तरा करै हंसा केलि इडा-पिंगला झारि कै लै लागी जोरि।
बज्र सिला तब खुलई कीन्हा रावल भेदु जोगिन जोगी का मिली गुर गम का खेलु।
जग-मग जोति बिराजई जबु खुले कपाट निरबानी पदु पाइयां पहुँची पिया के पास।
पार ब्रह्म पूरुख भले जो मिलई कोय आवागमन मिटावई फिर आवनु ना होय।
सोल संतोष लिये रहै संसै नहिं पासा नींद भूख का खांड़ि कै जागी दिनु राता।
जाके लागी सोई जानी जेहि दरद पिराय आन दरद का जानई लागौ नाहीं घाय।
तीन देउ ना पाइया मत अगम अपार मुनि बपुरे का जानई भूला संसार।
पाखंड भेखु बनाय कै ठगिया संसार सतगुर सो ना करै ई जमु व्यौहार।
जन मीता सति लोक का भाखै मतसार ऊँचे चढ़ि कै टेरई मानौ अतिवार।।

अरे अरे रामु सनेहिया तुम करौ सांचु सो नेहु रे सांचु बिना सबु झूठ है तू रैन दिवसु मरु गाई रे।
करौ गरीबी बन्दगी रे संत संगति मनु लाय बेड़ा पार उतारिहैं तू भै जल बूड़ि न जाय रे।
पांच पचीसो बसी कै रे ब्रह्म अगनि उदगार प्रेम पियाला पीजिये वा तौ सांचा विचारि रे।
सुरति निरति दोऊ खंभवा रे रेसम लागी डोरि पिया अपने संघ झूलती मैं तो चलौं न झूठी खोरि रे।
जे बादैं ते झुठवा रे जे खोजैं ते सांचु जे जूझैं ते सूरिवां ई कूरन पारी बाटि रे।
सतगुर के परताप ते रे रामु मिलाना होय कहि मीता सोई जानिहै वा तो जेहि तन व्यापी होइ रे।।

कड़ेरा वाले अछे अछे तीर बनाउ रे।
कुमति टेढ़ाई बादि गांठ तजु सुमति कै घोरिया चढाउ रे।
धरनि की सरई सूक्रित की पइलै नामु की गांसी लाउ रे।
ब्रह्म अगनि अन्तर पर जारौं तिरगुन झौंका जेउ रे।
मन कुरंग विहंगम के पर अैसे साल सलाउ रे।
होइ अमोल मोलु बहु पावै हरि धन धरै लिआउ रे।
एकु चलाये कोटिन छूटेनि घटि ना कबहुँ जाई रे।
कालु कठिन तेहि सीस नवावै जो करनी कै जाई रे।
एकछत राज करो काया गढ़ दुतिया दूरि बहाई रे।
अमल होइ अकइस पुर तेरा आवागवन मिटाई रे।
तू सबु देखै तोहि न देखै चोट कहां ते खाये रे।
अचिरिज बड़ा कहा ना जाई सो मरदाना आई रे।
मानि ले बचन अचल हो मेरा सब्दा गहो डिढ़ाई रे।
नाहि त जमपुर बासा होइहै जो न सब्द गहि जाई रे।
कहि मीता परतीति मानि ले भला परा है दांउ रे।
अब के चूके ठौरु नहीं है समौ सुनो चितु लाई रे।।

भूला लोगु करै चतुराई कपट ज्ञान हिरदै मां बाढ़ा भक्ति ना हाथै आई।
संतन निंद मिलै पाखंडी पूँजी चले गंवाई चौरासी मां करै बसेरा कथनी कामु न आई।
गाइ बजाइ मनै मन रीझै हरी की रीझ न पाई बैठे बेगार करइ भोंदू जमु के मोगरा खाई।
कहि मीता संतन की संगति पहुँचे हरिपुर जाई कालु कठिन तिन सीस नवाया भाग्य बड़े मति पाई ।।

भाई रे भजौ चरन अभिरामा जाते मिटै गरभ का जाना।
धनु दारा सुत मातु पिता हितु अन्त न आवै कामा।
भजा कबीर भजा रैदासा भजिया नानिक नामा।
गुरु परताप भजा सब संतन सबन का एकुइ ज्ञाना।
पाँच पचीसो बांधि लै आवै सोई दास कहावै।
अंतर डोरि लगै साहेबु सों या विधि बन्दा ध्यावै।
ब्रह्म अगनि का करै पलीता कुमति का कोट ढहावै।
बिना सीस का मिरगा मारै कालु न निकटै आवै।
मिलै निसान बजाय रामु का बज्र सिला खुलि जावै।
परसे चरन बहुरि ना आवै रागु-दोखु मिटि जावै।
भागि बड़े ते सतगुर पावै गुरु बिन कौन मिलावै।
कहि मीता सुख सागर भेंटे तनकी तपनि बुझावै ।।

या विधि नामु जपो रे भाई जाते तुरत मिलै रघुराई।
माला फेरे का सचु पाये का जिभ्या रटि लाई।
छापा तिलक काह भये कीन्हे का गुदरी अंगु लाई।
तुम्वा बांधि कहाँ तन जइहौ नरक परै चतुराई।
छारु लगाय चले बाबा होय सिर मां केस रखाई।
बीज समोय देहि मां राखा भक्ति कहाँ तुम पाई।
करम बेपाई पराये काढ़े अपने करै छपाई।
संध्या तरपन कै गायत्री पंडित मरे भुलाई।
कानन मां मुद्रा गहि डारै अलख अलख गोहिराई।
सिंगी फूंकि बहुत मन माना अलख मिले ना भाई।
होय दरबेस चले वेदर्दी दरद मरमु ना पाई।
जीव मारि कै करै अहारा कबु साहेवु फुरमाई।
सांई औ शेख बहुत कहावै जंगल जलै हनाई।
किरिया कै रामै ना पावै पेटु भरै चितु लाई।
अल्ला राम करीम केशो एक नामु सब आही।
कहि मीता जगु पाखंड भूला मिला न सांचा सांई ।।

परा रहै जमु फांसी मां का कथै गंवारा, गुरु बिनु ज्ञान ना उपजै सठु चेतु अभागा।
सतगुर, सब्द अगम्म है कोइ बूझनहारा संसकार बिनु ना मिलै मानौ अतिवारा।
काम क्रोध भरती करै बिखई बैपारा मोह माया बाढ़ी रहै कैसे उतरै पारा।
सीस दिये बिन ना मिलै संतन बैपारा सांचु बिना ना रीझई या खेलु अपारा।
पाखंडु भेखु बनाय कै ठगिया संसारा सतगुर सो ना करै ई जमु ब्योहारा।
दीन गरीबी पाइये साहबु दरबारा सांचु गहै ता गुरु मिले तिन पार उतारा।
जोगु जुगति ते पाइये या सांचा द्वारा जोगिन होय पी का मिलौ जगु कौन हमारा।
जन मीता मति छाकिया छकि भये निनारा अब जमु बहुरि ना आवऊ पढ़िया चटसारा।।

है है धागा, धरन धरति मन लै लागी।
चारि खूंट ससि-सूर तानी धागा काता दिनु औ राती।
शिव नगरी गहि खैंचा माल सब्द अनहद भा झनकार।
निरखत धागा जिउ थहिराय, धरती क पानी अकासै जाये।
पियरी भई धना बहु दुख होइ कसक करेजवा भारी होइ।
रोइ धोइ कै भरा भंडार आंड़ी लागी बरहों मास।
या विधि सूत कातै जो कोई रामु सनीपी सहजे होई।
ई नहिं कूरे नल के काम पूरा पुरुख करै घमसान।
गुन तजि जो जन निरगुन होई जगु छोई कै जानै सोई।
जोगी जगु मां एकुइ दोय कहि मीता सो गिरही होय ।।

मैं गंदा का जानउँ तुम्हरी सेवकाई कपट माल पहिरे फिरौं बहु भेखु बनाई।
लोभ नदी बूड़त रहों बिखई बहुताई राम चरन कैसे पाइये मनु थिर न रहाई।
औगुन अपने जानउँ छाँड़े ना जाईं डिभु दूत घर मां रहैं हरि कहाँ समाई।
ग्यान गुस्टी बहुतै करौं नहिं जाति कुराई अन्तर जानी साहेबु कैसे रहति दुराई।
पाँच नारी परपंच करैं पंथु चला ना जाई पंथु चले बिनु नां मिलै झूठी चतुराई।
तुम किरपा तुम नाम ते इन्है बाँधि लै आई चरन कवल निजु पावई सोई दासु कहाई।
सब दासन का तुम मिले कुछु धोखा नाहीं सतगुर मोसो कहि गये बल भये गोसाईं।
जन मीता की बीनती सुनि लीजे साईं या जगु बहुरि न आवऊं जगु ह्वै कसाई।।

कठमलियनपर

साधौ भक्ति कहाँ ते आई छापा-तिलकु मिलै हरि कैसे कहु मोसो समुझाई।
कंठी माला जगु बौराना भक्ति हंसी कै पाई सांचु कहे निन्दा ठहरावै देखो पसु बुधि भाई।
पोथी बाँचि चले स्वामी होय कथि-वदि भये गोसाईं औरे का उपदेस बतावै आपु नरक मां जाई।
पानी पैइठ धोय काया का बकुला तारी लाई या विधि चलै हंसै हमहीं का आपु सांचु होय जाई।
कामी कुटिल निपट मन मैला बातें कहै बनाई साहेब तो अन्तर की जानैं तासो काह छपाई।
जमु का मोगरा जब सिर लागी बिसरिगई चतुराई बाँधे चले करमकी डोरी तब फिर काह बिसाई।
संतन निंद मिलै पाखंडिन पूँजी चले गवाँई दिना चारि सुखु जगु कै लीन्हा फिर मुसकिल हो जाई।
जन मीता की साँची बानी झूंठेन नहीं सुहाई गुरु परताप मिलै हरि हीरा संतन का सिर नाई।।

साधो छापु तिलकु गहु सांची छाड़ि देउ मति काची ।
तनु का तिलकु प्रेम की छापा साहेब होइहै राजी ।
ऐसा बाना बाँधि चलै जो सो मरदाना गाजी ।
कालु कठिन तेहि सीस नवावै कथै बदे का पाजी ।
माटी घोरि देंइँ बहु छापैं माला सो मन मानी ।
या बिधि चले कालु ना छड़िहैं साकठु करौ बिनानी ।
पाखंड कै कै जगु ठगु खाया कै गल्ले भे ज्ञानी ।
पाखंडु छाँडु चेतु सठु अबहूँ सेउ चरन सुख खानी ।
जिभ्या सांचु पेट मां झूठी हरि हैं अन्तर जानी ।
या ना होय जगत का ठगना साहेब करी बिनानी ।
आखिर कालू धरैगा फेंटी का पीछे पछितांनी ।
नरक परन का आगू होइहौ हमरी कही न मानी ।
सांची कहों मान मति मोरी मारु परैगी भारी ।
साहेब है संतन का साथी बोली बोलु बिचारी ।
मीता दास भरम गढ़ु तूरा करै न जगु की कानी ।
सत्ति नामु लै नगर पहूँचा गुरु चरनन चितु आनी ॥

जब लगा बिरह का बानु रे सतगुर सतगुर मैं करों भेखु दुआरे बहु जुरे मैं जानौं ई आइँ रे ।
सतगुर मिले आंखी भये प्यारे भेखु ठगैइया जाने रे जेते ठगु सब हवै इन मां हरिजन नाहीं रे ।
गिरहिन संघु हरि पाइया रे तिन मां बिरला कोय इनका ना पतियायो ई चलि भे पूँजी खोय रे ।
मीता कही बिचारि कै रे छाना बहुत बनाय इन संघु गिरही नासै भक्ति ग्रहस्ती जाय रे ॥

जेहि घर भक्ति नहीं रे भाई तेहि घर मानौ भूत बसाई ।
तिनका बिभौ बिरछ की छांही छिनु मां मिटिहै वार न लाई ।
का भये पाहन सेवा लाई न्हाई खोरि चन्दन है भाई ।
पढ़ि इसलोक गुमानै जाई या हौ चालु नरकु लै जाई ।
तेहि पर मांस मछरिया खाई ताकी करिये कौन बड़ाई ।
जारों तोरि यहै कुलनाई तोहू सूद्र औ तोरा भाई ।
हरि के दासा ब्राह्मण आंही जिनकी हरि जिउ कीन बड़ाई ।
कहि मीता झूठा गरभाई ते ब्राह्मण का जानति नाहीं ॥

निरगुन नाम नरायण निरखो रे भाई, कपट सुमिरनी डारि दे छाड़ो चतुराई ।
हेला मारि अकास का मन राखु दिढ़ाई पाँच पचीसों बसि करो तब अदल चलाई ।
भक्ति न हाँसी खेलु है केहु बिरले पाई ध्रू-प्रहलाद-नारद मुनि ललके तिनके हाथु न आई ।
गोरख भरथरी गोपी चन्दा सूलतानी सो पाई कहि मीता सतगुर की सेवा भागि बड़े घर आई ॥

रे दरिया पार उतरना भारी समुझौ मूर्ख अनारी ।
का भये छाप तिलक के कीन्हे का सेली गरे डारी ।
कंठी माला जगु बौराना ठगियन हाट पसारी ।
भाव भक्ति हिरदै नहिं आई जलमु जुआ चले हारी ।
साँचु कहे निन्दा ठहरावै निन्दा नरकु दुआरी ।
कागद नइया जगु चढ़ि बूड़ा ताते दीन पुकारी ।
कहि मीता ते संत कहावै पाखंड देइ उघारी ।
निन्दक नरक परे दुख पावै हम तौ हैं दरबारी ॥

है बड़ा भरोसा तुम्हरा तुम साँचे हो करतारा ।
तुम राखो ता कौन मारिहै मन मां यहै विचारा ।
जहँ जहँ गाढ़ि परी संतन का तहँ तहँ तुरति उठि दौरा ।
सिंधु सरन जंवकु का करिहै आइ गया अतिवारा ।
संत का द्रोही अचल नरक मां तुमहीं करौ पुकारा ।
सो जसु गावै दासु तुम्हारा जिनके तुमहि अधारा ।
कूरे कपटे दास कहाये को करिहै निरुआरा ।
समरथ बल मीता गाजति है ज्यों तारा त्यों तारा ॥

जगन्नाथपर

उतरेनि भैजल पार सतगुर केवट सेइयां, तहाँ नहीं जमु की जार अैसे नगर बसाइयां ।
जे रे गये ते ना बहुरे है अैसा वा देस, प्रेमै ते हुआँ पहुँचै सोई आखिन देख ।
अन्धे चले उडैसै गाँठी गथु बाँधि खायन-पीयन फिरि चले, लै सुखवा भातु ।
चन्दन की मूरति गढ़ी राखी मठु पास सो पसुआ दियाखन चले माया के दिवास ।
जगन्नाथ सतगुर हवै हो तिनका दास तुरत मिलावै रामु का देइँ मवासे बासु ।
भौंदू तीरथ का चले भौंदू लागै पांय सति तीरथ संतन तना ताही ना पतिआय ।
पानी अनहायन खुसी भे लागे पाहन पांय नरक सरग ना लखि परा सठु गे बौराय ।
भैसागर के जीव हैं इन नाहीं को पाये मीता अंस हमार है तेहि देइँ बताय ॥

जोगी जुगति करी सो जोगी भै सिन्धु तरी ।
तौन न पाखंड भेखु धरी, घरहि मां अपना जोगु करी ।
पर घर खाई मधुकरी खांडु तिन ठगियन छाड़े घर बार ।
जटा रखाय लगावै छारू आगे चढ़िहैं ऊपर भार ।
खर भैंसा करिहै करतार ऊँट बैलु कै, ऊपर फिर दे है मारु ।
तेहि का बाबा करौ बिचारु कैसे कै होइहैं निरुआर ।
जोगी के धोखे पुजै गंवार ई जोगिया, नहिं आय खुआर ।
कहि मीता भला संसार सांच झठ को समुझनहार ॥

समुझो मूर्ख नदान बरन बीस-दस कोई नहीं ऐकुइ ब्रह्म समान संत भागवत सो कही।
जिन रचिया ते एक कही दूजा कहै नदान हरि पुर तिनकी दर नहीं सत सत संत सुजान।
परम पुरुख पतिसाह है हरिजन ह्वै उजीर औरे की गरना नहीं बूझै मति का धीर।
न्याउ हता दरबार का सो दिया सुनाय कहि मीता ना मानि है सो नरकै का जाय॥

बाबा सो जोगी जगु मांही जाके दुरमति दुरासा नाहीं।
गुरु का मंतु कान मां मुद्रा प्रेम भभूति लगाई।
पांच पचीस केस गहि राखे सेली सील पुहाई।
फहम की फहरि जुगति का आसन सहजे घूनी लाई।
करम भरम के बस्तर त्यागै अनहद बीन बजाई।
लिंग लगोटा डिढ़ कै बांधै चोरु न मूसै पाई।
माया मोह की फाँसी काटै माया तजि ग्रह रहई।
तजि अभिमान भजै मन माला संसै दूरि बहाई।
जीव ब्रह्म का जाय मिलावै जमु की चोटु न खाई।
जियत मुक्त होय सो जोगी आवा-गवन मिटाई।
फूटि जाय ब्रह्मांड छिनकु मां बारामासे ध्याई।
अलख पुरुख के दरसन पावै तबहीं होय गुसाई।
पाखंडु भेखु बहुतक कीन्हे पेटु भरा चित लाई।
अंत काल कस पूरी परिहै जब जमु मोगरा लाई।
कहि मीता जोगी का मारगु भाग्य बड़े ते पाई।
मन का रंगइ लाल होय बैठे वोढ़ना रंगै बलाई॥

हरि हंसि मिलिये दिल सांचु सो नहि तौ मारु परी घमसान रे।
छापा माला का करै रे काह सुमिरनी हाथु या तो पांखडु भेखु है कुछ कहो अगम की बातु रे।
गुदरी पहरी अंग मां रे तूमा लीन्हे हाथु इन्हे पाय कहवां चले तुम काहे का पारी वाटि रे।
तत्तु तिलक संतन दिया रे मन माला गहि लीन प्रेम छाप गुप्तै दिया वा तौ पांच पचीसो जीत रे।
किरखी की गुदरी रे तुम्मा छुअै न हाथु गुरु बतियां पूरे परी तब बहुरि न आवै हाटि रे।
सतगुर भेखै ना धरै रे कान फूंकि ना देइ सांचु सांचु बहिया धरै उइतौ तुरत परम पदु देइ रे।
साकठु बोली का करै रे हम साहेब के लोग मन चाहे ता मानि ले ना तो नरक करेगा भोगु रे।
जन मीता सांची कहै रे भूले हैं जगु लोय सांचेन की निन्दा करें झूठे के संघ होई रे॥

हरि जी सो नेहरा लगा हमारा, घट उजियारी होय रही मिटिया अंधियारा।
सतगुर परचै कीन कराई होइगा अतिवारा पांच पचीसो बसि भये भेंटा करतारा।
उनके संघु मरबु ना कवहुँ उतरे भै पारा करम भरम सबु छांड़िया जब तत्तु विचारा।

बाबा सो वैरागी पूरा जाकै क्रोध न रहै हजूरा, सीतल बचन काह भये बोलै जो अन्तर है कूरा।
बांधौ पांच पचीसौ चोरा अरध उरध करै डेरा, सुरति निरति लै तिलकु सवांरै मुक्ति माल मन हीरा।
प्रेम की छाप किरखी कै गुदरी सेली सील विचारा अगम पंथु का मारग ताके उतरै भैंजल पारा।
राम चरण सो जुरै सगाई छूटि जाय जमु द्वारा सांचा हो सो साहेब पावै कथि बदि मरै गवांरा।
धनि गिरही जो सतगुर पावै हरि के रहै हजूरा, छहों भेखु ते साहेब न्यारा हता निकट भया दूरा।
भक्ति चहै गुरु गिरही ढूंढ़ै कोटिन मां कोई पूरा, जाति-पांति का भेदु न राखै तिन्है मिलै गुरु पूरा।
कौरा ग्रहण जाति संघु करई आंहू का मारि निकारै काह भये सब के संघ खाये अनहक जलमु बेगारै।
कूरा सवै मांगि कै खाई छल-बल कै दिनु टारै कहि मीता सतगुर का चेला साचुइँ सांचु पुकारै ॥

हमरे अभिनाशी का ध्याना आनि देउ की बातु न पूछै का काहू सो कामा।
पानी ते कर चरन रचे हैं नैन नासिका काना तेहि कैसे बिसराइया, जिन रचिया चौदा धामा।
सो गनिका का पूत है जो कोई ध्यावै आनि, बापु न आपन जानई जमु करि है घमसान।
तैंतिस तीनिउ रामचन्द कान्हा परे दुख के धाम संतन की सरि कोऊ नाहीं जुगन जुगन विश्राम।
आतम दरसी तेई कृष्ण हैं या बचन परमान कान्हा क्रोधी नल बपुरा है बिखै भरा ता काम।
सुनिहै संत तेई सच मानों का जानै बिनु ज्ञातु कहि मीता हम भरम गिराया अनभै भा गुर ज्ञान ॥

जोगी परम सुजान नगरी मां गाइले रमिता राम।
अनहद सिंगी अनवन राम चितवति हंसि हंसि करति निहाल।
अलख पुरुख सो निस-दिन दीठि, है मस्कीनी सांची प्रीति।
छारु न लावै न राखै केस गेरुआ तुम्मा धरै न भेखु।
जोग जुगती जब जोगिया पाई सहज सुन्नि मां रहा समाई।
आवागवन कबहु ना होई ततु दरसी अंग सीतल सोई।
प्रेम भक्ति रहै अंग लाए पिअै अमीरसु तबु छकि जाये।
कहि मीता मेरा गुरु सोय जो या मारगु पहुँचा होय ॥

पंडितन पर

सांचा ब्रह्म कौनि विधि पावै सो पंडित जो भेदु बतावै।
पात डार भरमै भरमावै मूल मते का मरमु न पावै।
सतजुग त्रेता कास सुनावै, गुन अवगुन सबके बतलावै।
अपने गुन का मरमु न पावै बिनु निरगुन सब बूड़ा जावै।
बिन सतगुर को या मत पावै जाति बरन झूठा गोहिरावै।
ब्रह्मा भूला बरन बतावै धनि सतगुर जो भरम छड़ावै।
सांची सुनि झूठा जरि जावै सांचा सुनिकै बहु सुख पावै।
पंडित भेदै ना पतियावै कहि मीता जो सतगुर पावै ॥

समुझो मूर्ख नदान बरन बीस-दस कोई नहीं ऐकुइ ब्रह्म समान संत भागवत सो कही।
जिन रचिया ते एक कही दूजा कहै नदान हरि पुर तिनकी दर नहीं सत सत संत सुजान।
परम पुरुख पतिसाह है हरिजन ह्वैं उजीर औरे की गरना नहीं बूझै मति का धीर।
न्याउ हुता दरबार का सो दिया सुनाय कहि मीता ना मानि है सो नरकै का जाय॥

बाबा सो जोगी जगु मांही जाके दुरमति दुरासा नाहीं।
गुरु का मंतु कान मां मुद्रा प्रेम भभूति लगाई।
पांच पचीस केस गहि राखे सेली सील पुहाई।
फहम की फहरि जुगति का आसन सहजे धूनी लाई।
करम भरम के बस्तर त्यागै अनहद बीन बजाई।
लिंग लगोटा डिढ़ कै बांधै चोरु न मूसै पाई।
माया मोह की फाँसी काटै माया तजि ग्रृह रहई।
तजि अभिमान भजै मन माला संसै दूरि बहाई।
जीव ब्रह्म का जाय मिलावै जमु की चोटु न खाई।
जियत मुक्त होय सो जोगी आवा-गवन मिटाई।
फूटि जाय ब्रह्मांड छिनकु मां बारामासे ध्याई।
अलख पुरुख के दरसन पावै तबहीं होय गुसाई।
पाखंडु भेखु बहुतक कीन्हे पेटु भरा चित लाई।
अंत काल कस पूरी परिहै जब जमु मोगरा लाई।
कहि मीता जोगी का मारगु भाग्य बड़े ते पाई।
मन का रंगइ लाल होय बैठे वोढ़ना रंगै बलाई॥

हरि हंसि मिलिये दिल सांचु सो नहि तौ मारु परी घमसान रे।
छापा माला का करै रे काह सुमिरनी हाथु या तो पांखडु भेखु है कुछ कहो अगम की बातु रे।
गुदरी पहरी अंग मां रे तूमा लीन्हे हाथु इन्हे पाय कहवां चले तुम काहे का पारी वाटि रे।
तत्तु तिलक संतन दिया रे मन माला गहि लीन प्रेम छाप गुप्तै दिया वा तौ पांच पचीसो जीत रे।
किरखी की गुदरी रे तुम्मा छुअै न हाथु गुरु बतियां पूरे परी तब बहुरि न आवै हाटि रे।
सतगुर भेखै ना धरै रे कान फूंकि ना देइ सांचु सांचु बहिया धरै उड़तौ तुरत परम पदु देइ रे।
साकठु बोली का करै रे हम साहेब के लोग मन चाहे ता मानि ले ना तो नरक करेगा भोगु रे।
जन मीता सांची कहै रे भूले हैं जगु लोय सांचेन की निन्दा करें झूठे के संघ होई रे॥

हरि जी सो नेहरा लगा हमारा, घट उजियारी होय रही मिटिया अंधियारा।
सतगुर परचै कीन कराई होइगा अतिवारा पांच पचीसो बसि भये भेंटा करतारा।
उनके संघु मरबु ना कबहुँ उतरे भै पारा करम भरम सबु छांड़िया जब तत्तु विचारा।
सोई मिल सोई भया आवागवन निवारा मीता मिला गरीब होय आंबु जगु मारा॥

बाबा सो वैरागी पूरा जाके क्रोध न रहै हजूरा, सीतल बचन काह भयै बोलै जो अन्तर है कूरा।
वांधौ पांच पचीसौ चोरा अरध उरध करै डेरा, सुरति निरति लै तिलकु सवांरै मुक्ति माल मन हीरा।
प्रेम की छाप किरखी कै गुदरी सेली सील विचारा अगम पंथु का मारग ताके उतरै भैजल पारा।
राम चरण सो जुरै सगाई छूटि जाय जमु द्वारा सांचा हो सो साहेब पावै कथि बदि मरै गवांरा।
धनि गिरही जो सतगुर पावै हरि के रहै हजूरा, छहों भेखु ते साहेब न्यारा हता निकट भया दूरा।
भक्ति चहै गुरु गिरही ढूंढ़ै कोटिन मां कोई पूरा, जाति-पांति का भेदु न राखै तिन्है मिलै गुरु पूरा।
कौरा ग्रहण जाति संघु करई आंहू का मारि निकारै काह भये सब के संघ खाये अनहक जलमु बेगारै।
कूरा सवै मांगि कै खाई छल-बल कै दिनु टारै कहि मीता सतगुर का चेला साचुइँ सांचु पुकारै॥

हमरे अभिनाशी का ध्याना आनि देंउ की बातु न पूछै का काहू सो कामा।
पानी ते कर चरन रचे हैं नैन नासिका काना तेहि कैसे बिसराइया, जिन रचिया चौदा धामा।
सो गनिका का पूत है जो कोई ध्यावै आनि, बापु न आपन जानई जमु करि है घमसान।
तेंतिस तीनिउ रामचन्द कान्हा परे दुख के धाम संतन की सरि कोऊ नाहीं जुगन जुगन विश्राम।
आतम दरसी तेई कृष्ण हैं या बचन परमान कान्हा क्रोधी नल बपुरा है बिखै भरा ता काम।
सुनिहै संत तेई सच मानों का जानै बिनु ज्ञानु कहि मीता हम भरम गिराया अनभै भा गुर ज्ञान॥

जोगी परम सुजान नगरी मां गाइले रमिता राम।
अनहद सिंगी अनवन राम चितवति हंसि हंसि करति निहाल।
अलख पुरुख सो निस-दिन दीठि, है मस्कीनी सांची प्रीति।
छारु न लावै न राखै केस गेरुआ तुम्मा धरै न भेखु।
जोग जुगती जब जोगिया पाई सहज सुन्नि मां रहा समाई।
आवागवन कबहुँ ना होई ततु दरसी अंग सीतल सोई।
प्रेम भक्ति रहै अंग लाए पिऐ अमीरसु तबु छकि जाये।
कहि मीता मेरा गुरु सोय जो या मारगु पहुँचा होय॥

पंडितन पर

सांचा ब्रह्म कौनि विधि पावै सो पंडित जो भेदु बतावै।
पात डार भरमै भरमावै मूल मते का मरमु न पावै।
सतजुग त्रेता कास सुनावै, गुन अवगुन सबके बतलावै।
अपने गुन का मरमु न पावै बिनु निरगुन सब बूड़ा जावै।
बिन सतगुर को या मत पावै जाति बरन झूठा गोहिरावै।
ब्रह्मा भूला बरन बतावै धनि सतगुर जो भरम छड़ावै।
सांची सुनि झूठा जरि जावै सांचा सुनिकै बहु सुख पावै।
पंडित भेखै ना पतिआवै कहि मीता जो सतगुर पावै॥

कोउ बीर लरै मैदान रे काया गढ़ मांडा रहै का कूरों ढिग बैठना का झूठे हथियार रे।
सरमुख जूझै सूरमा रे बिनसिर लरै ते पूर रुंड मुंड की को कहै कोई जानैगा गरुआ बीर रे।
राम नाम रन खंभवा रे तेहि तर भारत होय दाम बनिजया भागिया कोई लाज भरा सिर देई रे।
साहेब सो सरमुख भया रे मिट गई दुन्द उपाय, भागि बड़ाई सरिवां वा तो कस न परम पदु पाई रे।
पांच मारि कै जे मरै रे तेका अगै डेरांय ताज-बाज के लरकन का का बका दिखावै आंखि रे।
आखिर मरना होयगा रे सो मरना धिरकाल कहि मीता मरना हक है वा तौ साहेब के दरबार रे ॥

पंडित या विधि बेदु कहाई है ब्रह्म सकल घटु मांही।
बेदु पुरान दोऊ हैं सांचे बूझि न तुमका जाई।
जो बूझौ तो जीव न मारो रहो दया लपिट्याई।
कपट राह निभेदिन ही चलाई बादु करै बहुताई।
चौका देई आचवन कीन्हा सुचि कीन्ही बहुताई।
मुर्दा चुरै रसोई भीतरि य। देखो उजिराई।
या विधि चलै ते बम्हन कहावै केहि का कहन कसाई।
जियत जीव पटकि कै मारैं जनऊ केरि दुहाई।
पोथी सुनै ज्ञान के काजे ज्ञान गहा ना जाई।
ज्ञान विवेकु करै निजु दाया विद्या का फल पाई।
करम चंडाल जाति सब झूठी समुझि देखु मन मांहीं।
ऐकई ब्रह्म करम भा सूद्रा बूझौ बेदु कढ़ाई।
ब्राह्मण होब हंसी नहिं खेलवा जेहि हरि दीन बड़ाई।
वा बाम्हन के धोखे धोखे तुम दुनिया ठगि खाई।
जीव ब्रह्म का जाय मिलावै सोई ब्राम्हण कहलाई।
कहि मीता जगु जाति भुलाना ताते जलम नसाई ॥

पंडित कैसा होय कसाई जियत बुकरिया का गहि मारा नालति है कुल नाई।
असुद्ध करम कै सूद्र कहावै तुम बम्हनी कहँ पाई धोखा कै कै खाउ कचौरी जीव नरक मां जाई।
अंधरन के घर तुम्हरी पूजा डिठियारे धिरकाई डोमु-चमार सोई तुम बौरे ब्राह्मण ब्रह्म मिलाई।
कहि मीता साहेबु की आज्ञा जगु का दीन जनाई ना मानी तिनका दुख भारी जानी हमरी बलाई ॥

साधौ काहे सुधि बिसराई है बहुत बड़ी कठिनाई।
खांडु कचौरी घर घर खाते या को भार चलाई।
ऐकु दाना के सत्तर परिहैं गदहा करी लदाई।
महिखा उटवा बैला होइहौ मानुखि देहि गंवाई।
छापा तिलक हवै ठगु विद्या अन्धरेन जानि बजाई।
सगरे भेखु हवैं हरि गुनहीं मूंदी खोलि सुनाई।
हुकम भया साहेब रामु का दीन्हा ढोलु बजाई।
कहि मीता मित्थ्या कै जानी तिन्है कालु धरि खाई ॥

का झगरे नारी बिनु पहुँचे तोहि का है गारी।
गाये बजाये भक्ति न होई मनु जीतै सो हरि का होई।
घूँघुर बाँधे नाचे का जो नहिं सतगुर दीन्ही राह।
कंठी माल भेखु जगु लोय ते अन्धरेन के अगुआ होय।
नासा अग्र चितवै कोय अनहद सुनि कुछु यहौ न होय।
सुन्नि मंडिल का करते खोज ठगि गया ठगिया धरिकै भेखु।
उरध मुख पवन चढ़ावै जोई सो अजगर फिर निहचै होई।
उलटा पवन चढ़ावै जोई बाजीगर का बन्दर होई।
धोती नेती जे सठु करई कुत्ता होयकै ते अवतरई।
विद्या पढ़ि पसुआ बौराये सतगुर की सरनै ना जाये।
ब्राह्मण सो जो ब्रह्म मिलाये नाहित सगरे सूद्रा आये।
बैरागी जो पावै राम मूड़ मुड़ाय भये सठ भांडु।
सोइ फ़कीर जाके फ़िकिर न होई दरसन आदि पुरुखु के होई।
गुदरी सेली ठगु व्यौहारा खाइ-पिये का आय विचारा।
बिनु सतगुर बूड़े जगु लोई जलम अकारथ विधि विधि होई।
कहि मीता गहु तत्त विचारा गल्लन रिल्लन होइहौ ख्वारा ॥

मन पर

मनुआ है हरि भक्ति भली जो तू सकै करी जलम जलम कै संकट काटै तीनिउ ताप हरी।
हरदम है सब काया भीतरि तेहि चढ़ि मिलौ हरी सोई मिलि सोई होइ जइहौ तब जमु काह करी।
कहै भागवत संत पुकारै हमहूँ समुझि परी कथनी तजु करनी धरु पोढ़े सतगुर सेउ करी।
पवन चढ़ाये अजगर होइहौ भारी देहि धरी कहि मीता बिन निरगुन जाने दुनिया नरक परी ॥

कुफर गढ़ आपना जब तूरा अलमस्त भया मन मेरा।
काम-क्रोध आसा औ टिसुना जुज्झि किया बहुतेरा।
ज्ञान की खरग सील की बरछी लै लगाम हरदम का घोरा।
तेहि चढ़ि जोर किया सिरु दै कै मोजरा सहि भा मोरा।
हरि की खुसी मुसकिल भाई बिरलेन बाँधा बेरा।
जौ लगि ममिता मेरि मेरि करती तौ लगि हरि नहिं तेरा।
मान मता करु संतन सेवा जमु ते करै निबेरा।
कहि मीता जब जानि परी तब ऊँचे चढ़ि कै टेरा ॥

ताते भजिये साँचा नामु रे जाते बहुरि न आइये सब्द डोरि सहजे चढ़ै मन अगम अटारी जाई रे।
रबि-ससि दूनौ साधि कै रे चित चंचल करु थीर पाँचो नारी जीत ले तब मिलै काया का बीर रे।
खोजी मारगु पावई रे रहनी करै सहाय बादी का जमु द्वार है ताको सतगुर ना पतिआय रे।
आवागमन मिटाइया रे मीत परम पदु पाय ताके आगे काह है सठु हमका देउ बताय रे ॥

पंडित मानै मता हमारा तेहि भै ते करै निनारा।
कथा सुनाय तरबु बतलावै झूठा कहन तुम्हारा।
बिनु हरि दरस तरै ना कोई सुनौ जगु बचन हमारा।
पंडित आपुहि परा नरक मां तुम्है करी को पारा।
शुकदेव वचन व्यास मुख भाखै बूझति नहीं गंवारा।
इन्द्री मन जब हाथै आवै तब उतरै भै पारा।
कामी-क्रोधी चोर जुआरी पंडित जरवारा ।
दाम लेइ औ मुक्ति बतावै भूला है संसारा।
जुगन जुगन जिन सुमिता पाई तेहि रीझा करतारा।
संत मिलाय आपना कीन्हा ई हरि के व्यौहारा।
संत सनीपी सांचु बतावै पंडित काह विचारा।
स्रोता-वकता दोनों बूड़े गरभ बास भे द्वारा।
गलिन गलिन पंडित गोहिरावै सुनौ पुरान हमारा।
चोर-जुआरी बिखई धावा तरना होय हमारा।
जे बोरैं ते साढ़ी पावै तारन वाला मारा।
तौलि तार सबु जगु का देखा मीता किया विचारा ॥

मन पर जोग ध्यान

खेलु एक तू खेल अमोल भरम छांड़ि हस्ती का पेल।
मन हस्ती मारगु है झीन चलत चालु गुन त्यागउ तीन।
त्रिकुटी के तर सुई दुआर तहँ का पैठति हो होसियार।
पैठि जाय ता उतरै पार नाहित फिर फिर है अवतार।
बेदु पुरान करम की फाँसी या तौ है सबु दुख की रासी।
फाँसे सुर मुनि तीनिउ देव नल बपुरे का गनै न केउ।
साँच कहों काहुइ जानि न जाई झूठे का सब जगु पतियाई।
कहि मीता हमरा जो होई ताकी गति मति जुरै न कोई ॥

करु सत संघु सेउ सतगुर का निरखि जपो निजु नाम रे।
सुरति-निरति सब सोवत जागै ब्रह्म अगनि गुन जारु रे।
जैसे मकरी उतरि चढ़ति है फिर पहुँचै गहि तार रे।
ऐसी चालु चलै जो मनुआ जगु ते होइ निनार रे।
सो जन होय रामु का प्यारा आवागवनु निवारि रे।
कथे वदे का मूरुखु होइहै या तो अगमु बिचारु रे।
कहि मीता संतन की महिमा जानेगा जाननहार रे।
कामी-क्रोधी कथि कथि हारे ते बूड़े मझिधार रे ॥

ऐसा ध्यानु धरै जो कोई जाते आवागवनु न होई धरनि बंद मूल लै बाँधै सुरति-निरति डिढ़ होई।
रैनि दिना लागै इकतारा बुंद मां सिंधु समोई होय निरसंक चढ़ै अमरापुर अमी पिये नल सोई।
तेहि जोगी का तीनिउ बन्दै का जानै नल लोई कुंभ का नीर मिलै ज्यों सागर कैसे न्यारा होई।
ब्रह्म मिलै तब बम्हन कहावै जाती जान्यो सोई चारों बरन मीत कहै सूद्रा झूठ बड़ाई खोई ।।

बड़ा सोई जेहि हरि जिव थापै अटल बड़ाई सोई झूठ बड़ाई नलु कै थापी जुगन जुगन दुख होई।
या जगु अन्धा मरमु न जानै बादु करै बहुताई नरक सरग को कुछु सुधि नाहीं हमै तुल्लि को होई।
गाइ वधै ते कहो कसाई बकरी बधि चिक होई सोई करम तुमहूँ तो कीन्हौ समुझौ अन्धरेउ लोई।
तुम्है खवाइ तरा चाहति है उनकी मति गै खोई जन मीता सांची गोहिरावै मानी विरला कोई ।।

करम नल देही पाई सो काहे तू हलुक धरी।
अब ना तरिहै फिर कब तरिहै जब खर-स्वानु देहि धरी।
चतुराई घर चौमच मांची थिर नाहीं मन पाव धरी।
हम खाइबे संत तिबिलसै हमैं माया ते काह परी।
तिनका जलमु अविरथा होइगै काहे का नल देहि धरी।
कालु अवादा निकटै आवा मरति व्यवस्था आइ परी।
हाथु झारि जस चला जुआरी जीती बाजी हारी।
कहि मीता मलमल का जामा टेढ़ी पगिया रही परी ।।

मेरा मनु बौराया जोगिया मोहि घर अंगना न सुहाई री।
कानन मुद्रा ना हते री माथे हते न केस राखि लगाये ना हते वाकी चितवनि माँ कुछु भेदु री।
तन सुबरन मुख लालरी री नैनन सुरमा दीन्ह जगर मगर नैना करै वातौ मोहि परा ना चीन्ह री।
आपइ लगन धराइया रे मोंहि अधीन कै लीन सो मीता कैसे जियै जाको जगुआ टोन्हा लीन री ।।

इस्क खुम्हारी जेहि लगै वा तो जानति है नल सोई रे।
विखै वानु तेहि ना लगै जिन नैन मसूका दीख रे।
हिन्दू के है प्रेम इस्क का तुरको के जानति बिरला कोय रे।
बिन जाने कहि का भया वा तौ जो न फकीरा होय रे।
पाहन पूजै हिन्दुवा रे पूजै तुरुक मसीद।
ताको काहे विसारिया जो सबही का पीउ रे।
दूनौ भूले वाटवा रे सांचु कहे का होय।
कहि मीता सोइ मानिहै जाके मेहर दया घटु होय रे ।।

पानन मांड़ौ छाय तौ हरि बैठावउँ हो गाँऊँ मंगलचार ता विधि ही मनाऊँ हो।
चाँद सुरज करौं दियना तेइ मेरी आँखी हो जलम सुफल कै लेउँ आरती साजी हो।
तीरथ-बरत ना कीन कीई सखि सेवा हो बरु मिले दीनदयाल देवन के देवा हो।
तन धन वारे कीन कराई हाँसी हो मीता मिले बजाय कटी जमु फाँसी हो ।।

पंडित या विधि भक्ति न होई न्हाइ खोरि पाहन का पूजै भौंदुअन की मति खोई।
सन्ध्या होम देखा है टोई छापु तिलक का होई खानु पियन का पाखंडु कीन्हा या तो भक्ति न होई।
अवधू या विधि जोगु न होई केस रखाइ छारु गहि लाई पूजै जगु के लोई।
मियाजी सो दरवेस कहाई जाके अल्लौ हाथै आई जीव जभै उइ नाहीं करते भीखु माँगि ना खाँई।
जंगम जाति फिरति है भूले भगति न हाथै आई डिंभु किये ते जगत बड़ाई खाबु मिलै बहुताई।
छा भेखु छानवै पाखंड ई सबु ठगिया आँही इनके संघु भक्ति ना पइहौ कुलौ नासि हो जाई।
भेखु संघु हम भल कै कीन्हा संत जानि कै भाई संत मिले तब ई ठगु लागे तौन दीन गोहिराई।
कह मीता हम समुझि पुकारा मानी सो भला होई ना मानी सो अचल नरक माँ परे परे दुख होई॥

भरोसा भारी हवै हमारे रामु हवै रखिवारे तेही बलु बैइठे गाजति हौं का करै दुष्ट बिचारे।
केतेउ संकट परै दासु का तहँ तहँ जाय उबारे तेही ते परतीत आइगै अबु ना टरिहै टारे।
गुरु की कृपा संत की संगति या मति भई हमारे हता कुबुद्धि कहाँ लौ कहिये तारन वाले तारे।
कूटि करै तेहि कूटि करै दे परिहै नरकु दुआरे कहि मीता जे प्रीति लगइहैं ते हैं अंसु हमारे॥

हरि की भक्ति करौ दिनु-राती सुमिर सुमिर मोरे रंग पागी।
सो जानै जेहि तन व्यापी कथे वदे ना जानि परी।
सीस के सट्टे जो कोइ चाहै सतगुर सेये मिलै हरी।
लोभी सीस देइ नहिं जानै कपट कतरनी काँख धरी।
भक्ति नहीं है हाँसी खेलवा तीनिउ देवा आसु करी।
ध्रू प्रहलाद नारद मुनि सेसो तिनहू ते या दूरि परी।
कहि मीता संतन की संगति सहजे पाई प्रेम झरी।
गोरख भरथरी गोपी चन्दा सो सुलतानी हाथु करी॥

तरना तरना सबु कहै तारन लखै न कोय।
जाको तारन लखि परै ताका आवागवन न होय।
तरे कबीरा-नानिका रे नामा औ रैदास।
बहुत हवै कहँ लौ गनौं सबु घरही माँ हरि दास रे।
भेखु नरकु सब जाति है रे छल-बल कै कै खाँय।
छल-बल ते हरि दूरि है हम मूंदी दीन्ह गोहिराय रे।
चौका देय नारियर फोरैं ई सबु ठगिया आये।
हरिजन राह बतावई हरि ही का देइ मिलाय रे।
दिया कबीरा श्राप है रे सबै भूत ई होंय।
जगुआ-भगुआ ते भये परतीत करेउ ना लोई रे।
करै ठगइया करै रे नानिक का गुनागार।
नानिक केरा श्राप है इन्है हनि मारी करतार रे।
तेही की नारी धरै रे तेही के घर खाँय।
धरम नासि कै डारई जो इनके धरिहै पाँय रे।
सब जगु अन्धा देखिया रे ठगियन का पतियाँय।
कहि मीता जगु सूकरा खटिकै का पतिआई रे॥

पढ़ पढ़ गीता घटु ही मांहीं जाते जरा मरन फिर नाहीं ।
मनु बसि करु पाँचों का मारि गुरु किरपा पावै करतार ।
विद्या पढ़ि नहिं छूटै विकार श्रोता-वकता दोनों खुआर ।
करता मिले परायन होई बिन करता तारै ना कोई ।
नरक-सरग परमेसुर कीन सो करमन की बसि कै दीन ।
कथा सुने नहिं करम नसाये ठगि ठगि दाम पंडिता खाये ।
माया लै लादै सिर भार खर-महिखा-बैला औतार ।
खाइं पड़ांइन पहिरै हार पंडित भोगवै नरक दुआर ।
ब्रह्म मिलै सो ब्राह्मण आय चारिउ बरन सूद्रै आय ।
बिना ज्ञान या जानि न जाय मूरुखु नाहक का गरभाय ।
मछरी खाँय करै बेकार सब खोटेन के है सरदार ।
करमन का ना करै विचार का को कहिये डोमु चमार ।
तिन संघु करै तरन की आस देखो भोंदुन का विस्वास ।
सांचु कहे ते उठै रिसाय सरगु-नरकु का डर नहिं आय ।
निन्दा किये परै मुख छार हम तो कीन्हा सत्ति विचार ।
दूध-पानी छानै जो कोय कहि मीता सो हंसा होय ॥

सतगुर की परचै का कबीरहन पर

सतगुर तिनका नाउ जे हरी मिलावई जमु ते लेइ छंड़ाइ ता जिउ मुकतावई ।
तिनकी सरनै जाय तौ मन न डोलावई जो जो आज्ञा करै सो हुकुम बजावई ।
समुझि करेउ गुरु सौदा चूकि न जावई जगु माँ ठगिया बहुत जलमु ठगि जावई ।
बाँधौ भै ठगु खानि जगत भरमावई धजा नारियर पान ता लै बौरावई ।
नारिन व्यापै काम इन्है ढिग आवई गाइ सब्द दुइ चारि भोगु छिपि जावई ।
परे काम बसि सबै भक्ति गोहिरावई या चरित्र सो लखै रामु जो पावई ।
जाति-पाँति के गये भेखु माँ आवई भोगवै नारि पराइ पराय धनु खावई ।
चीन्हो ठगु औ साहु मीत गोहिरावई कासो कहों सन्देस बूड़ि सब जावई ॥

निरगुन नामु गहो मन मेरे जाते गरभु वासु ना फेरे ।
जीभ रटौ ना माला फेरो निरखि निरखि ततु करो निबेरो ।
भेखु संघु तुम तजौ सवेरा ई तौ हैं सब जमु का घेरा ।
पर घर खाय कथै बहुतेरा भेदु न जानै संतन केरा ।
पर नारी लै भोगै चोरा जिभ्या निभ्या का बड़ जोरा ।
जा घर इनके होते डेरा तेहि घर भुतवा करै बसेरा ।
साँचा सब्दा मीता केरा जो चीन्है सो हरि जिउ केरा ।
ना चीन्हइ तेहि नरक बसेरा हुकुम करति है साहेबु मेरा ॥

पंडित भोखन पर

छाँड़ु सकल चतुराई राम जन रामैं माँ मिल जाई।
बिना मिले नहिं संत कहावै बिना खसम नहिं दुलहिन।
रटि रटि डिम्भी कहँ तन जइहौ जमु ते कौन छड़ाई।
बिन समरथ की बाँह उबारे जीव नरक माँ जाई।
जग्गि दान तीरथ तपु विद्या जगु माँ आय बड़ाई।
सबु भोंदू येही माँ अरझे रामु भक्ति बिसराई।
पंडित भेखु नरक की सौदा तिनका जगु पतिआई।
तारन वाले कोउ ना चीन्हे मीत चले गोहिराई॥

राम जन रामु सो माता और अमल काचा जगु माँ रहै जगहु ते न्यारा खेलु है साँचा।
भाँग-पोस्ता पियै भोन्दू भरम माँ राचा खाति खाते नाँचु उठिगा नरक भा बासा।
सांचु त्यागै झूठ थामै दामु की आसा भक्ति इनते दूरि भागै मानु विस्वासा।
दास मीता छानु कीन्हा छानि कै लिखा मानिहै सो झूड़ हमरा वहे है साखा॥

जागै सो जेहि गुरू जगावै सोइ गुरू जो अलख लखावै।
गरभु बास सो काहे का आवै जमु की फाँसी दूरि बहावै।
सब जगु परिया भरमु पसारा समुझावउ ता लरै गंवारा।
जागै जुआरी जागै चोरा जागै रोगी दुख के तीरा।
जागै सुज्जन रामु का प्यारा आपु तरै औरे का तारा।
अनहद अजपा भरमु पसारा धोती-नेती करै लबारा।
ऊरध मुख पवन करै अहारा अजगर का तिनका औतारा।
रेचक-कुंभक भरमु पसारा चितवै सुन्नि मंडिल अँधियारा।
कहि मीता भेखन व्योहारा सत संगति का मता निनारा॥

मंगल

घर पाये अभिनासी कटी जमु फाँसी हो काशी करिहों काह नरक के बासी हो।
चौदापुर जमु फाँसी ता कौन निकासी हो चरन कवल बिचु संधि निरखु सुख रासी हो।
मूरुख चलै उड़ीसै आवै हाँसी हो चन्दन केरि पुतरिया देखिन आखिन हो।
ना हुआँ रामु-रहीम धोखु कै राखिन हो भेदी मीता दास ता हरि जी के साथी हो॥

मोरे साहेब दीन दयाल सरनै हो परा जो मेरे औगुन गनौं तो हों चेरा।
जो मेरे अवगुन गनौ सधना तेरा अजामील गनिका तरी समरथ मेरा।
नामु पापु का जारई गुन हरि केरा सो जसु निगमन गाइया संतो तेरा।
मीता का परचै भई बलु है तेरा ररिहा परा दुआर माँ कुछु लै टेरा॥

मन मिला धोखा गया उतरा भै पारा।
औंकार ते भिन्न है वा नामु अपारा।
माला लिया न कर जपा ना भेखु सवाँरा ।
निरखि निरखि तहँ पहुँचिया जहँ है करतारा।
उइ हमरे हम उनके कौ करै निनारा ।
कुंभ नीर सागर मिला अैसा मत सारा।
धामु पाँव दै अगम चढ़े सुन मुरुखु गंवारा।
कंठी माला बाँधि कै ठगिया संसारा।
धावा फिरै मसखरा राजन के द्वारा।
जैसे कुत्ता कौर का सब नगर ढिढोरा।
औगुन की गठरी लिये बूड़ै मझिधारा ।
तरने की बातें कहै अैसा अन्धेरा।
पर नारी पर धन का खोजै कथै बदै बहुतेरा।
परम पुरुख का डरु ना मानै ई देखौ ब्यौहारा।
जहँ देखा तहँ छल बल देखा हरिका सबन बिसारा।
कहि मीता बिरले संसारा आपु तरै औरे का तारा ॥

मनु रे काहे काम बिगारै जुगन जुगन तोहि मारै।
दया धरै नहिं हरिपदु ध्यावै बिखयन का पगु धारै।
तेरे लिये जहाँ तहाँ धाऊँ गरभु बास तोहि डारै।
बिनती करौं नाथ सो केहि बिधि तेरे दुःखु बिचारै।
चलति चलति बहु थाकि गया हो काहे जरे पर जारै।
करु सत संघु भटकि ना मरऊँ अबकी पार उतारै।
हा हा करों मानिले बिनती मोर बचन ना टारै।
कहि मीता तोरै हो रहिये सब दुख दंद बिगारै ॥

पद मुसलमानी भाखा में सोई अल्ला सोई राम

मनु लगा नामु अल्लाह का या ते और सलाह का तनुधन वारि मता या ठाना वलु पाया तब बाँह का।
कोऊ पढ़ै विद्या होय सयाना मैं बौराना राहका मनु खूनी तन भेखु बनाया डर नाहीं दरगाह का।
जो तू चाहै उइ नहिं चाहें तेरे चाहे का होयेगा साहेब है औसाफ का साथी न्याउ तफाउस होयेगा।
छाड़ि गरूरी देउ रे बौरे तेरा किया ना होयेगा कहिमीता तब मारु परेगी जब कोई लेखा लेयेगा ॥

मनुआ गलतान भयो पहुँचे हरि जी के तीर नैना भये चकोर री आली चितवति भोरु भयो।
पलग न लागै हियरा कम्पै लागो नेह नयो मानौ पिये बारुनी डोलो पर बस प्राण भयो।
चाहे सो हँसी करै कोई मेरी ऐसाहि जोगु भयो पिया अपने की मर्जी जानौ जगु को काह लयो।
जो कुछु किया सो आँखिन देखा सुक्रित बीज बयो अब मीता काहेका झंक्के अरि उर सोगु गयो ॥

पद जे पीता फेरति हैं तिनका नालति दीन

दिल तौ है दरियाव सुनौ नल भोंदू बौरे सो काया ते दूरि ह्वै पुर पट्टन डेरे।
आँते फेरे का भये विष्टा मुख तेरे मुँह माँ कोयला सा लगा ई गुन है तेरे।
छाती भीतरि कुछु नहीं भटके बहुतेरे अन्धे का अन्धा मिला कहै दिल है नेरे।
आसिक का मुख लाल है दुख गे बहुतेरे तीन तापु ना व्यापई जन साहेब केरे।
जर जूड़ी संसै नहीं नहिं झोला अँधेरे जामा छोड़ति हँसि चले दिल महरम जेरे।
दिल तौ हाँसी खेलु नहीं का छाती हेरे या तो पीता माँस का का होइहै फेरे।
सूने घर ज्यों पाहुना ज्यों छूँछि पछोरे बिना जीव ज्यों मानवाँ ठगु चेतु सबेरे।
बहा जाति संसार है कुछु होय न टेरे मीता मारगु ना चलै झूठे मघु केरे॥

धूता रे धूता ऐ मन धूता भेखु धरी धरि होय रहै कुत्ता।
पेट भरै का बहु मजबूता जानै न रामु खाय का सूता।
बादु करै का बाढ़ा बूता छाड़े फिरै माई धी पूता।
पाखंड कै कै जगु का लूटा आखिर लगिहै मुह माँ जूता।
तिनका पूजै दुनी बहूता इनका कहइ ह्वै ई मुक्ता।
या अचिरिज हम आखिन देखा नरकु जाइ ना रहई हटका।
ठगु का ठगु मिला प्रेम बहूता संतन देखि परा ज्यों टूटा।
मूँदी ती सो परगट कीता न्याउ ग्यानि कै कहि चले मीता॥

बिरला पाँउ धरै कोई अगम पंथु है दूरि का भये सुन्नि मंडिल के ताके या नाहीं है मूरि।
का भये तीर तीर के टोये दरिया भरा गंभीर ताहू ते अमरापुर आगे चौदा नांघे बीर।
बहुतै चले हते खोजन का कै थाके तदबीर बूसी खाँय बतावै मैदा बिन पूरे गुर पीर।
हीरा-हंस सिंघु औ फनि मनि ई नाहीं है ढेर कहि मीता एकुइ दुइ दासा बहुतै पूंजी वोर॥

निज गति कहौं तो को पतिआई जगु का जानि न जाई।
तब हम हते तबै कोउ नाता साहेबु की सेवकाई।
झूंड हमारा सब जाहिर भा हम सब एकुइ आहीं।
आय परे हमहू दुख पाया अब जइबे घर मांही।
आदि जोति औ देव निरञ्जन पार ब्रह्म एकु आही।
ई तौ डारु मूल अभिनाशी तीनिउ साखा आँही।
और सकल जगु देव-पत्र मुनि दस चौबीस ऐसे आंही।
गुन न्यारे ऊँचे नीचे हैं और भेदु कुछु नाहीं।
परम पुरुख तो ह्वै निनारा जिनकी सब है छाँही।
है सब माँ बिन गुरु नहिं पावै मिलु सतगुर की बाँही।
सोवै अभागा जागै सुभागा जागे देइ बताई।
कह मीता सबु से नहि दावा बुरा न मानेउ भाई॥

मेरा कैसे कै मिलना होय पिया सो कुमति भरी ।
साँचु गहा ना साँचे चीन्हा झूठे झूठे प्रीति जुरी ।
कपट कतरनी कर मां लीन्ही मूसी दुनिया भेखु धरी ।
जबै अदल पर बैठी हाकिम पूछै कौनु जुवाब करी ।
आये ते कहि करब बन्दगी उन बतियन की सुधि बिसरी ।
मनुआ फैलु झैलु माँ परिगा पाछू बटिया गई परी ।
खुसी करै तिनकै गति न्यारी तजै अदब्रु ना आधु घरी ।
कहि मीता ताके संघु डोलै पार किया हँसि बाँह धरी ॥

मंगल

आयल हरि जीउ अगना सकल दुख जैला हो आहो बाढ़ा प्रेम अखण्ड सखिन सिर नइला हो ।
बाँधे पाँच पचीस तो मारग पइला हो आहो सिर दै चढ़ै अकास जियत मरि जइला हो ।
पंथु न हाँसी खेलु सुनौ घर घइला हो गा ठगिया तोहि मारि पान दै चौका हो ।
धजा नारियर पान कामु नहिं अैला हो संत मिलावै रामु मीत सचु कहिला हो ॥

पदु

ढीली कमनिया रे फिरति विहाल कौने जोर निसाना मारै काह बजाये गाल ।
सोई पूत सिपाही केरा करीं करै कमान पाँच जहद तखत तर लागै जो मारै सो लाल ।
हकु माँगे का सब ते आगे नेकु न आवै लाजु पापी पेट भरै के काजे खोवे दीन ईमान ।
कूरे बहुत पूर दुइ एकुइ जानै कौन हवाल जो जानै सो हरी का मीता जौन लरै मैदान ॥

मारा निसाना रे करीं कमान भा मोजरा परमान पाँच जहूद जेरि कै राखै जीत लिया मैदान ।
सीस के सट्टे इस्क बावरे या नहि हाँसी खेल मरद सोई करनी कै बैइठै कथनी कौन सुआद ।
पेट भरै का धावा फिरता ठगिया हवै कमाल दुनिया में बुजुरुग होय बैठा लिये खड़ा जमु जाल ।
खाइ लेउ घिउ मैदा पानै आखिर बुरा हेवाल कहि मीता तब जानि परेगी जब खैंचेगा खालु ॥

मेरा मन न सहै बिखै बाद रामु सो लगन लगी ।
सासु ननद सो नाता छूटा मिली तिनकुवा तोरि ।
चाहे सो हँसी करै कोइ मेरी अबु तौ ऐसी आइ बनी ।
कौन कामु जगु लज्जा आवै सो कीन्हा जो संत गनी ।
रसु हरि भगति जगत सुखु छोई सतगुर भेंटे जानि परी ।
संस्कार आगे का जागा ताते अब घर कुसल परी ।
सील सन्तोख सहज ही पाया कुमिता जरि बरि छारु करी ।
मीता जीता अबु ना हारे हारि मानि कै मिले हरी ॥

ओ मियाँ दरद वंद दरवेसा जिन हक साबित कै देखा ।
रहै गरीब जुलुम नहिं करता उनका न्यारा लेखा ।
मूसै आपु मुसलमां सोई ईमान दोस्त तिन कीन्हा ।
घर के चोर मूसै ना पावैं भेदु पीर जब दीन्हा ।
तू खूनी की है दरबेसा मो जिय होय अन्देसा ।
मुर्गी बकरी गाइ जपै की किन सन्देस तोहि भेजा ।
आखिर हक हक्क करेगा तब सौदा है तेरा ।
कहि मीता ह्याँ कै ले जोरा ह्वाँ दुख ह्वै घनेरा ।।

छाके नैना भे मतवाले पिया सुधारस तनु धनु वारे ।
या संसार जानि के छोई करम धरम ते होय रहे न्यारे ।
किरपा कै हरि अपना कीन्हा सकल बेकार खोय तन डारे ।
जो कुछु चाहा सोइ सोइ दीन्हा निरधन के धन रामु हमारे ।
हय हाथी रथु दौलति दुनिया संघु न जाय बहुत पचि हारे ।
हाय हाय कै जलमु गँवाये अंत कालु दुख उपजा भारे ।
दुइ माँ कहौ कौन बौराना अबहूँ चेतो नीच सबेरे ।
कहि मीता माया परपंचिनि ताके काजे जलमु बेगारे ।।

काहे जलमु पदारथु हारे हरि न भजे माया रखवारे ।
कहत हते हम बड़े सपूता खाट परे देखौ गोड़ पसारे ।
लड्डू पान जलेबी खाते अँढे अँढे फिरै जुझारे ।
ऊँचे महल उठाय खुसी भे ई टरिहै अब केहि के टारे ।
जब जमु काँड़ै घर के रोवैं खटिया काढ़ी धरी दुआरे ।
ना जानौ धौ कँह लै राखैं कबहुँ न बैठे आय पसारे ।
सुख थोरा दुख ह्वै घनेरा अपने हाँथन कामु विगारे ।
मीता रामु सेइ सुख पाया जमु दारुन के झगरा फारे ।।

काहे ना दियना बारेउ रे छूटति अँधियार कथनी कथि अन्धे भये घर धुन्धोकार ।
ऊपर उजला का भये मन मलिन बिकार बकुला तौ मीनै भछै देखै संसार ।
हरि अन्तर की जानई सठु सुनौ लबार तिनते काह छपाइहौ तुम ते हुसियार ।
छापु तिलक गरे माल री थापै भेखमार मीता कहै बिचारि कै इन रोपा जार ।।

रामु भक्ति मनु लागेउ रे सपना संसार माया सुखु संसार के या जमु का जारु ।
तन कागदु की पूतरी बिनसति नहिं बार ताके भीतरि मूरि है सठु खोजु गँवार ।
पोथी थोथी का हुनै का कंठी डारि भक्ति रामु की भिन्न है भूला संसार ।
निन्दकु नरकै जाति हैं मैं देउँ विचार कहि मीता जो जानिहै सो उतरी पार ।।

माता हाथी प्रेम का पहुँचा दरबार आंगुसि लाई ज्ञान की चलि खाँडे धार।
काहू का लै बूड़ई काहू करै पार जैसे का तैसा हवै कोइ जाननहार।
मारगु बाँका अगम का नहिं गमि संसार सुर मुनि तीनिउँ थाकिया मानौ अतिवार।
संतन की सरि कोइ नहीं बहिया करतार मीता ध्यावै ताहि का तनु धनु किया वारि॥

अबु काहे मनुआ डर जाकै नामु अधारा बइहाँ पाया रामु सा गुरु के अतिवारा।
काहे का घर छाड़ई माता पितु दारा इनही माँ हरि पाइयाँ भै उतरा पारा।
बिनु किरपा रघुनाथ की भे दूनौ खुंआरा घर छूटा हरि ना मिले भा नरकु दुआरा।
जैसे का तैसा हवै साहेब करतारा मीता वारे हक्क की साँचा दरबारा॥

दरद न जानै बेदरदी रे कामी क्रोधी लोभी रे।
दाम लेइ औ बातन लावै मन की गाँठि न खोली रे।
रोगी आपु वैद होय बैठा चढ़ि चढ़ि आवै डोली रे।
कोउ ना नीक होय मोरे भाई समझौ हमरी बोली रे।
नरकी आपु गुरू होय बैठा बहु दुनिया परमोधी रे।
आपु न बूझै अउर बुझावै समझौ हमरी बोली रे।
पारिख कहँ कोउ ना बूझै भे सबहिं के बैरी रे।
मीता देखा जगु का बूड़त तब परदा या खोली रे॥

खुसी करै सो दाना रे ऐ बौरे कथनी वादु विकारा रे।
बिनसिर दिये गनै को तोंही हँसी नहीं दरबारा रे।
पढ़ि पढ़ि फाजिल बहुते देखे विद्या का विस्थारा रे।
दूलम है पीतम के प्यारे जिनकी मोहि दरकारा रे।
होय गरीब अजीज हो डोलै सेवै संत सुजाना रे।
जिनते निकट हवै करतारा पावै उनकी बाँही रे।
खूनी गुनही दावा राखै पहुँचौं पिया के पासा रे।
कहि मीता हुआँ धुन्धु नहीं है तेरा झूठ विचारा रे॥

रामु भगति जब मनु माँ लागै जगु के स्वादु सपन तब लागै।
रहै सनीप देखि कै छाकै सो काहेका गुन का थापै।
रसु कसि लिये खोइ केति लागै राम पाइ सो गुन का त्यागै।
टूटे पत्र डार ना लागै निरगुनिया का गुन ना लागै।
गुनिया का गुन नीका लागै निरगुन सुनिकै झकने लागै।
स्वानु कीच ज्यों तनु मनु राखै निरमल नीर मनै ना लागै।
कागु कपूर काजु केहि लागै बिस्टा देखि खुसी होय ताकै।
जो जैसा तैसा तेहि लागै मीत सुभाय कोऊ ना त्यागै॥

रे बौरे काहे का बन बन डोलै, मनु गाँठि काहे ना खोले ।
बनु लोखरी औ रीछु सियारा तेऊ न तोसों बोलै ।
बन तन बड़ा तहाँ है मूरी समुझि देखि को बोलै ।
सब का साहेबु है घटु भीतरि जानैगा जो मिलै ।
मठु माँ पाहनु मूरति देखी तीरथ पानी झेलै ।
कहो तौ साहब कहाँ तू देखा जनि भूलेन संघु भूलै ।
लोभी गुरू लालची चेला दोउ नरक माँ हेलै ।
कह मीता गुरु रामु मिलावै काटि देइ जमु जालै ॥

चलु चलु नैहर ते छाड़ि है भ्रम भारी, कालु जालु तिहुँ लोक पसारा धरि धरि डरिहै मारी ।
ससुरे राजु सुराज परम सुख पहिरी सारी मरन न कबहूँ होय पिया सो होय पियारी ।
आई गाई माई छाँड़ौ छाँड़ौ सकल चिन्हारी नाहित आवति मौगरा लीन्हे पीछे करिहैं रारी ।
बुंदक सुःखु स्वाद के काजे बिसरति है ससुरारी जहँ के गये बहुरि नहि अवना मीतै परी बिचारी ॥

रे बजर परै तोरी बम्हनाई बकरी मछरी जब खाई ।
औरे का कस कहै कसाई तू तौ है वाही का भाई ।
बरन सुनाय जगतु सबु मूसा अन्धरे का सूझैं नाही ।
तू खावा सो डोमरा खावा तोहि ते घाटि काहे आही ।
पहिर जनेऊ चन्दन दीन्हा नकुवा दाबा सुचि काही ।
यहै बिसाति हवै बम्हनइया दमरी माँही सबु आही ।
बेदु पढ़ै कुछु भेदु न जानै उद्यिम काजे पढ़ि जाई ।
बेदु पढ़े कोउ मुक्ति न पावै करम फाँसि वेदो आही ।
फाँसे विस्नु महेसो ब्रह्मा असुर देउ मुनि जगु आही ।
चौबिस दस जमु सगरे लूटे बाचे संतु रामु वाही ।
जानै काह बिखै मदु प्रानी संत बरोबर कोइ नाहीं ।
जिनते जुदा नहीं अभिनासी सोई मिल सोई हो जाई ।
संत के निन्दे निहचै नरकी पाछे की सुधि तोहि नहीं ।
काँटा बोवो राह अपन माँ हमका जोखिम कुछौ नहीं ।
ब्राह्मण सो जो ब्रह्मै मिलिया सो ब्राह्मण संतै आंही ।
बिना भक्ति सगरे हैं सूद्रा कहि मीता पदु सति आही ॥

चकहा सतगुर की मति ठानी राह भली निरबानी चकहा ते हंसा होय बैठा छाना दूध औ पानी ।
बेदु पुरान छोड़ कै जानै पाई रसु की खानी पियत अमर भये अनभै उपजा ताकी अकथ कहानी ।
भूले पंडित भूले भेखी भूले सुर मुनि प्रानी तीन देउ मारगु ते भूले सो गति हंसन जानी ।
साँची कहौं ता कोउ नहि मानै झूठी या संसारी जन मीता तिनसों ना बोलै जाघटु कुमिता रानी ॥

निर्मल नामु अल्लाह का मन भजिले प्यारे कलमा तब सही जब खुलैं केवारे।
अदबु आदि तब कहँ रहा जब्र जीव पछारे खून करै तसबी जपै परा फैल पसारे।
हक राजी है हक्क का हक काहे बिसारे नाहक ते दोजक मिलै चलु चालु सँभारे।
पढ़े गुने पिउ राजी नाहीं पढ़े साँझि सबेरे मीता कहै विचारि कै सुनु सब्द हमारे॥

तेरा किया न होयगा सुनु मानुख बौरे हक राजी है हक्क का तजु फैलु घनेरे।
जोरे करै जे दुनी में ते लिखिहैं तेरे आखिर लेखा होयगा अबु चेतु सबेरे।
दाह उठाये जो फिरै सो बूझौ कोरे साहब सबु माँ मिल रहा सो मारा तू रे।
यतने पर मिलना चहै गुन जानै तेरे मीता मिला गरीब होय कोइ जीउ न तोरे॥

हरि अँगना ते फिर गये घूंघुट ना टारे कौन पराछित पापु ते तू उन्है बिसारे।
भै तारैं भरम काटई ऐसे हितकारे उनसा दाता कोई नाहीं सब माँगनहारे।
उन छाँड़े नल सुखु कहाँ दुखु सागर डारे औसर चूके ना भजे मानुख तनु हारे।
हरि का व्रत अबहूँ गहो होइहैं रखवारे मीता केर सन्देस है सुनु हमरे प्यारे॥

हक नाहक कहि का भये हक ना पहिचाने नाहक करते तनु गया खूनी बौराने।
कथनी कै कै का भये करनी ना साने बहुतेन के घर घालिया दोजक नजिकाने।
दोजक भिस्ती संतन तजी जिन हक पहिचाने जीव जंत्र ना मारइ अलमस्त देवाने।
पिया का मिलना कठिन है सुनिले नादाने कहि मीता औसाफ बिन नल सबै भुलाने॥

साधौ भाई आवौ हरि जी की सरना सकल व्याधि दुख हरना।
सतगुर सेइ मिलौ तिनही का जिनकी सबु है रचना।
पाँच पचीस करै बसि अपनी चलै अगम का तरना।
सहज सहज चढ़ौ गढ़ ऊपर जहँ पानी नहिं पवना।
धूप न छाँह दिवसि नहिं रजनी नहीं भानु नहिं चन्दा।
परम जोति तहँ है परगासा ताहि मिलै सो बन्दा।
सुर मुनि ताका पार न पाये और नन्द का नन्दा।
तीन देउ दसरथ सुत थाके या मारगु बहु बंका।
कलियुग भये संत मरदाना जिनके नाहीं शंका।
अवघटु घादु नजिर सबु आये कीन्हे गढ़ तूरा बहु बँका।
गोरख भरथरी गोपी चन्दा मुसलमान बहु सरना।
दास कबीरा नामा पीपा मारगु साँचा धरना।
कहँ लौं कहों और बहुतेरे तिनकी मेरे सरना।
बिमुख हवै जो या मारगु ते तिन्है काह लै करना।
कुंभ का नीर मिला ज्यों सागर तिन्है भिन्न को करना।
मीता आवागवन निवारा रामु भक्ति सुख सरना॥

मन करु कपरा तन दरियाउ रवि ससि घाटी मैलु छड़ाँऊ ।
आगि लाइ पानी का धाऊँ माड़ी न रहै तब कल पाऊँ ।
सुक्रित साबुन घसि घसि लाओ जुगन जुगन कै मैलु छड़ाओ ।
अस धोवै ताको धोबिया नांऊ कहि मीता ताकी मैं बलि जाऊँ ।।

नारी धोबिया धोवइ न जानै कंदैली झलिथा तहँ मन मानैं ।
मानसरोवर तहाँ न जाये साबुन खोटा रेहु न आये ।
अधिक मैलु तेहि देइ लगाये जो वहिका रोटी लै जाये ।
कहि मीता जगु स्वानु रीती निर्मल तजै कीच सों प्रीति ।।

छापा तिलकु पहिर गरे माला कहौ कामु का करना ।
औघट घाटु कौनि विधि चढ़िहौ जो संतन की धारा ।
पूछौ संघु साथु अपने माँ औ पूछौ कनफुकवा ।
हम रामै कैसे कै मिलिये नाहित जमु का फँदवा ।
दमरी की कंठी बाँधि गरे माँ मूसि लीन्ह सबु घरवा ।
मुक्ति का भेदु कुछौ ना जानैं गुरू नहीं या ठगवा ।
दगा होति नल जलमु जाति है ताते हो हुसियरवा ।
सतगुर सेउ कटै जमु फाँसी त्यागौ ठगु का घरवा ।
एकु ठगु लागै राह बाट मां कपरा ले औ दमवा ।
कनफुकवा ठगु हरि मारगु का करिहै जलमु खुअरवा ।
अपना परे ह्वैं चौरासी औरे बाँह कस धरवा ।
कहै तुम्हैं भै-सागर तरिबे आपु बुड़ै मँझधरवा ।
चेति अभागी तोहि पुदकावै टोरु गरे का हरवा ।
नहितौ आवति है जम धारा सतगुर बिनु जमु मरवा ।
एकु साहु ठगिया बहुतेरे कौन करै बैपरवा ।
कहि मीता जाके हरि की दाया सोई पार उतरवा ।।

ना जा रे कनफुकवा की हाटि कान फूँकि या पारी बाटि ।
सेइ ले हरिजन संत सुजान जिनके संघु तरै तोरे प्राण ।
रामु भक्ति संतन के पास कनफुंकवा चौरासी बास ।
संत उतारै भै जल पार कनफुंकवा बोरैं मँझधार ।
कनफुकवा दामन का यार का जानै वा वारौ पार ।
ताते भाई हो हुसियार येहि तजि सेवौ संत दुआर ।
सोइ पंडित सोइ भेखु बेकार इनका पूजे होय खुआर ।
जन मीता भाखै मतसार संत संगति कै उतरा पार ।।

प्रथमै जब हम भयेनि उदासा सेये भेखु जानि हरि दासा ।
बहुत दिना बैठे तिन पासा उनकै सो माया की आसा ।
जो जैसा सो सोइ बतावै हमरे मन कुछु एकु न आवै ।
पाछिल अँकुरा आइ जनावा वही भागि ते सतगुर पावा ।
तब ठगियन का दूरि बहावा चोरु साहु जब नजरी आया ।
सुज्जन के हित तब गोहिराया ई बौरै जिउ जो संघु आवा ।
तब उन सब जगु माँ गोहिरावा निन्दा करै ज्ञानु नहि पाया ।
गुन अपना तब ऐसे छपावा जगु के जीवन मरमु न पावा ।
बहुत दिनन माँ जगै जनावा तब जगु हमरे निकटै आवा ।
तत्तु ज्ञानु तब उन्है सुनाया झूठ साँचु उनहूँ लखि पावा ।
जबु ठगियन का डिम्भु गिरावा धाये फिरै राजा गोहिरावा ।
तब हम राजा का समुझावा ई ठगु हरि का गिरही पावा ।
सत्य सत्य राजा मनु आवा भे कायल तब पार न पावा ।
किसान धोख ज्यों खेतु बनावा ऐसे सब मिल भेखु बनावा ।
जनउर धोखा देखि डेरावा अन्धरेन भेखिन का सिर नावा ।
संत संगति कै मनु न डिगावा कहि मीता हम हरि का पावा ॥

दरदु मरमु जानै रे महरम दिल दरबेस, छाका रहै मसूका ऊपर का दुनिया का देस ।
छार न लावै केस न राखै किया हिरस का नेसु चोर हते तेहि साही दीन्ही सादी धरै न भेखु ।
मेहर नजरि कुछु बादि न जानै सीलवंत सन्तोख आलम माँ एकुइ दुइ ऐसे भेखु हवै सब धोखु ।
खून करै दरवेस कहावै दुनिया माँ है पेस कहि मीता तहँ का करेगा जहाँ तफाउस होत ॥

सतगुर हो मोरी लगे गोहारी बार बार तिनकी बलिहारी ।
नरक परत जमु घेरति आये तुरतै तहँ ते लिया उबारी ।
लोग कुटुम कोउ काम न आवति जबु जमु माड़त रारी ।
सतगुर हितवा नामु बड़े हितुवा रखु तिनका मन हारी ।
कहों सन्देस सुनौ नर नारी सुज्जन लेइ बिचारी ।
अउर उपाय नहीं तरने का कबहुँ न होइहैं हारी ।
जो कुछु करौ सो करु सतगुर सो हमका परी बिचारी ।
मीता जीति चला रे भाई अरध उरध टकसारी ॥

साहु एकु ठगु लाख कौन पहिचानै रे, या जगु अन्धा देखि बहुत डर लागै रे ।
सेली की कै फाँसि सुमिरनी तानै रैं पथिक न बाचे एक ताहि सबु मानै रे ।
जहँ नहि आय बिवेकु साँचु का जानै रे जगु झूठेन की खानि हंस सो त्यागै रे ।
जीव नरक सबु जाँय कहौउ को मानै रे बोरन वाले लोग खांड घिउ खानै रे ।
हमका लब्दा लेइ बैरु सब ठानै रे भैते लेउ उबार जौन पहिचानै रे ।
जेहि का जहाँ है जाय सोई सो ठानै रे मीता होय रहा चुप्प बलइया जानै रे ॥

दीन दयाल सदा सुख दायक और दूसरो को येहि लायक।
दास घावरो होन न पावै टारै बिघुन संत जस गायक।
कुमिता त्यागि सुमति चितु धरिकै सेउ चरन जे जगु के नायक।
विमुखन सेइ भटकि मरि जइहै कामु न होइहैं तू मन भायक।
जे जे सरन रामु की आये सुनि ले तू मन होय डिढ़ायक।
सैनि कबीर धना रैदासा जन नामा के मन के भायक।
कहँ लौ कहौं रामु के दासा गने न जाय सरन जे आयक।
सोइ सुमिर मीता सुख पाया पंडित भूले जगु भरमायक ॥

बसी भये नर हमरे बोरी जानैंगे जाननहारे रे।
प्राण पती सो प्राण मिलाये करिहैं कौनु निनारे रे।
हाँसी करै नगर के लोगवा गारी दै दै हारे रे।
आन गरज नाहीं काहू सो जेहि चाहै तेहि प्यारा रे।
जाकी हरि जिउ करै सहाई सदा रहै रखिवारा रे।
ताको बारु न बाँकै कबहूँ समरथ पार उतारा रे।
पलक लगै नहिं प्रीति टरै नहिं प्रेमी प्रेम बिचारा रे।
जहाँ प्रेम तहँ हरि जिउ हाजिर मीता कहै पुकारा रे ॥

हो मेरे मनुआ तू बैरागी माया मोह की टूरो टाटी।
काम-क्रोध हैं बड़े खुआरा ई मारौ ता जीत तुम्हारी।
पछिली हारि उमचि सबु आवै गुरु के सब्द सो जो मनु लावै।
हरि हीरा घटु ही माँ पावै जाको सुर मुनि अन्त न पावै।
मेरि मेरि कै ना जलमु गँवावै अंत काल कोइ कामु न आवै।
अबकी बेरि निबाहो यारी हरि जी के चरन गहौ ततकारी।
मानुख तन तरने की बारी ना चूकौ मति लेउ हमारी।
जन मीता या कहै बिचारी जनि हारै होय जीति जुआरी ॥

मनुआ हरि भजु भागि सुभागी भली घाति तोरि लागी।
जनि चूकै पीछे पछितइहौ प्रेम प्रीति लै पागी।
हय हाथी नीसान नगारे ई सगरे दे त्यागी।
ई तौ छूटि छिनक माँ जइहैं जबु जमु मोगरा लागी।
रामु बचावै वही घरी मैं और साथु को लागी।
ऐसा हितू बिसारि नहीं सुख ना सोवै लै जागी।
अपनी मोक्ष मुक्ति के कारण राजन त्यागी राजी।
कहि मीता हरि सैंतुक पाये जगत सपन सा लागी ॥

सपना सा होयगा रे भाई जीव निकरि जब जाई महल गिराइ देय अन्दर के खबरि न काहू पाई।
हय हाथी तम्बू बहुतेरे संघु कुछौ ना जाई लसगर चला जाय घर अपने कोऊ ना ठहराई।
नाहक कै कै माया जोरी चलि भये दीन गँवाई दोजख माँ छोटे होय बइठे अबु कहँ गई बड़ाई।
बुंदक सुःख दुःख सागर सा देखो आय कमाई कहि मीता जे बड़े सयाने तिनकी खबरि सुनाई ।।

कुमिता है अँधियारी बारी तहाँ कौन करै उजियारी।
छाय रही सगरे घर माँहीं नरकिन की रखुवारी।
चार पूत घर चौमच करते एकु एकु अधिकारी।
काम क्रोध मद लोभ मोह बहु इन सबु बात बिगारी।
पापी राजा इन्है बढ़ावै इन्द्रिन का हितकारी।
अंत काल बहु टूटा परिहै दुख होइहैं बहु भारी।
जैसे जर माँ अन्न न भावै येहि नहिं भक्ति पियारी।
मीता तिनका कैसे धोवै जो घटु मलिन बिकारी ।।

नल घटु भीतरि रामु न जाना कस बन फिरति भुलाना।
काम क्रोध मद लोभु न छूटा ना छूटा अभिमाना।
टिसुना दिन दिन होति सवाई दुविधा माँझ समाना।
पाँउ पुजाये पूजि न जाने तुम्हरा खेलु नसाना।
हारि चला जैसे जुवाँ जुआँरी हाथु मींज पछिताना।
ऐसे हरि बिन नल तन हारा सोऊ फिर पछिताना।
काम क्रोध का नासु करै जो सो है संत सुजाना।
कहि मीता सो घरु नहिं छाड़ै चरन कँवल लपिट्याना ।।

जोगिया जोगु मरमु ना जाना जटा राखि गरभाना, रागु द्वेष माँ रहै समाना किया नरकका ठाना।
कुल नासी सन्यास न जानै जानै संत सुजाना कामु क्रोध मद लोभै नासै गीता तौनु बखाना।
सो काहे घर-वारै छाँड़ै जिन सतगुर पहिचाना अलख लखा आवागवन निवारा दूनौ दल माँ साना।
एकुइ दुइ सगरे जगु माँहीं जिन पूरा मत ठाना कहि मीता ऐसे जोगी का भाग्यवान पहिचाना ।।

भरम की भीति को ढहाय मैदान कर खोजि रहिमान है तोही माँहीं।
पीर के कदम धरु मानु का दूरि करु भला सुख होई धरे पीर बाँहीं।
पाँच पचीस का जेर नाँहीं किया कथनी कैमुआ परा भरम माँहीं।
इन्है ले जीत गहु रीति सतनामु की अलख का लखै सब दुःख जाँही।
अलख पहिचानि ले और सबु छाँड़ि दे सोइ है धनी वा देह नाहीं।
कोटि कोटि सूर कोटि कोटि चन्दा कोटि कोटि कान्हा ता वारि जाहीं।
गुरू औ पीर बिनु अलख पावै नहीं अलखु जेहि मिले सो गुरु आही।
कहत है मीत परतीत ले मानि तू खसम का मिले बिनु कुसल नाहीं ।।

मनु लागा मौलादी सेजरियाँ वारि वारि लखि आँखिनियाँ ।
सूखि टटेरा तनु भया मेरा जरी इस्क की आगिनियाँ ।
जा तन लागी सोइ तन जानै का जानैं बिनु लागनियाँ ।
का भये रोय रोइ कै दीन्है लखा मासूक न आखिनयां ।
पढ़े गुने ते इस्क न आवै इस्क भेदु है मारनियाँ ।
गुदरी-सेली किस्ती तूमा धरे फिरै भिख मांगनियाँ ।
राजा मीर दुआरे आये खुसी भये भिखमांगनया ।
कहि मीता जहँ मौला हाजिर कोचि करी तहाँ दुनियाँ ॥

ता दिनारी प्रेम की कोई खेलै संत सुजान बिनु सिर रन माँ मांडिया बिन लोय करै मैदान ।
चांद सुरज के बीच होय मन हस्ती सुई समान चढ़ते-चढ़ते तहां गये जहँ नाहीं जमु का बान ।
सुर मुनि बीचै अरझिया रे नांघि सकैं ना कोय नांघे सो जुग जुग जियै वाको मारि सकै ना कोय ।
मारग बांका अगम का रे बेदु न जानै भेदु महरा संधु महरा भये जन मीता पाया सोधि ॥

मन काहे ते तू बौराये सतगुर सेये हरि पाये तीरथ कहौ कौन तुम देखा पाहन पानी लखि आये ।
पूरन ब्रह्म हता घटु भीतरि सुरमुनि हाथै ना आये सो संतन माँ सहजे देखा जमु फन्दा फिर ना आये ।
सांचु कहौं ता कोऊ न मानै पाखंड पूजन का धाये संतन निन्दै नरक परन का समुझै ना तै समुझाये ।
या संसार बिखै रसमाता कलि मलि साना बौराये मीता पार उतरिगा भाई अमी पिया बिखु ढरकाये ॥

नलु काहे रामै ना ध्याये कबहुँ न चेते बिखु खाये ।
मेरि मेरि करते जलमु गँवाये अंत कालु जमु फन्दा आये ।
तू जो कहावै बड़ा सयाना जमु मोगरा काहे खाये ।
चतुर चिकनियां करो बिचारा कोऊ कामै ना आये ।
प्रान निकरतै घर ते काढ़ा नकरी का सब उठि धाये ।
तब कहँ साथु चली तेरे दौलति केहि कारण तू मन लाये ।
लम्बे लम्बे दामन कंठी मोतियन पहिर-पहिर जगु दिखलाये ।
कहि मीता अब कह गई सोभा छिया भक्ति बिन थुकवाये ॥

भली कीइ हरि हरी बचाये जमु फांसी तेहि भजि ना आये ।
नाहित जमु बहुतै दुख देता सरन सरन ते ता सुख पाये ।
बारि बारि तेरी भली चाकरी ऐसे नजरि कोऊ ना आये ।
भै सागर ते पार उतारा अमर लोक का पहुँचाये ।
हम दुखिया निरबल कुल हीने छिया छिया जगु हो आये ।
तुम संभारि नीके कै लीन्हा पर हँस मेटा बल पाये ।
ना कुछ भक्त न हता विवेकी पापु लिये सरनै आये ।
तुम दयाल दीनन के साथी मीता मँगता जसु गाये ॥

भजु मनु हरी जी का नामु लोभ का छाड़ि कै काम क्रोध दोऊ मारु मिलै बैरागि का।
गुदरी सेली त्यागु छाप औ माल का या तौ पाखंड भेखु धरो मतु सांच का।
ब्रह्म अगिन उदगार त चढ़ै पहार का बज्र सिला का खोलु पहुँचिहै धामु का।
तहँ है पुरुखु पुरान मिलै निहकाम का सकल मनोरथ छाँड़ि भरोसा रामु का।
धनदारा ना छांड़ु छांड़ु अभिमान का ज्यों पुरयन का पत्र करै अस काम का।
रागु-द्वेष के बीच मिला को रामु का वैरागी मनु जीत मिलै भगवान का।
पीपा औ रैदास बलख सुल्तान का गुरु दीन्हा बैरागु मिले तब रामु का।
मीता कहै विचारि ता मता सुजान का मूरुखु का नहिं काम बचन परमान का।

रामु भजे जब गुर मति पाई तेइ सतगुर जे देइ मिलाई।
नौका नामु चढ़ा गढ़ जाई हा हा कै कै अदल चलाई।
पांच चोर लागै पथु मांहीं मारति चलै गनै कुछु नाहीं।
करै पचीसो सेवा आही राज्य भया चौथा पदु माँहीं।
सो भगता भै जारु न आई सोई मिलि सोई होय जाई।
कंठी माला ठगन चलाई भक्ति न जानै यहै बताई।
भूला जगु तेहि का समुझाई सांचु कहे ते उठै रिसाई।
आहि डसे मिश्री करुआई कहि मीता ऐसे जगु आही॥

पीर मेरे दरुआ पिआई है ताते मैं बौराई है।
उतरति नहीं उतारे कबहीं ऐसा अमलु चढ़ाई है।
पोस्ता-भांग अफीम न चाहौं मोंहि मासूक दुहाई है।
जो छाका ताकी गति न्यारी कपट अमल बिसराई है।
पगिया बांधी जामा पहिरा चदरा कमर लगाई है।
भेखु धरै काहे की खातिर पिया सो जुरिय सगाई है।
भेखु ते दूरि इस्क की बातें मीता सांचु सुनाई है।
भेखु धरै टूका मांगै का आसिक येहि विधि नाहीं है॥

खेलाति

राम नामु मन लगा हमारा तेहि चढ़ि उतरे भै के पारा।
सतगुर सेइ मिले करतारा हम भूले की या संसारा।
तीरथु भटकैं मूर्ख गँवारा ते का जानै वारो पारा।
हरि हिरदै ना कीन बिचारा पाहन पूजि मरा संसारा।
कंद मूल खनि करै फरहारा त्यागि अन्न जगु डिम्भु पसारा।
राम भक्ति का तजै लबारा ताते जीव परै जमु धारा।
जन मीता कह तत्तु बिचारा जो बूझी सो होय हमारा।
तिनका जमु ते करै निनारा देइ अमर पद कर निरुआरा॥

मन मतवाला भया काहे ते बतलाइ दे।
तनु करु भाटी मदन लकरिया ब्रह्म की आँचु लगाइ दे।
प्रेम का पोत नेम नित ही नित प्याले बिना पिलाइ दे।
त्रिकुटी के तर लाउँ उनमुनी पीतम निरखु छकाइ दे।
ज्यों खटपदी उतरि के चढ़ती ऐसे अमल चढ़ाइ दे।
हस्ती काढ़ि सुई के नाके आवागमन मिटाइ दे।
नेम-धर्म किरिया तपु संजम ई सब चूल्हे लाइ दे।
कहि मीता ऐकसु होय बैठो बादु-बिवादु बहाइ दे॥

दुरमति आउ ना तू मेरे कानु कटइहौं तेरे, मैं तो बेटा मरदाने का जिन पांचों गढ़ तूरे।
गल्ले मारि बहुत उठि धाये बीता तनु नहिं हेरे बिनु बल दिये गुरू पूरे के भूले फिरै भगेरे।
सुमिता रानी घरमां आई तोहि तनका है हेरे जेहि का पाय सकल सुख उपजे सुत चारिउ भे मेरे।
चारि पूत कुमिता के मारे लोग कुटुम बहुतेरे कहि मीता तब भये सिपाही चोरु न आवै नियरे॥

बौरी घर पीतम आये री नैना निरखि सिराये री।
बारा बरख रही मधु जोहति बड़े जतन ते पाये री।
काजर सेन्दुर चुरिया बंगलिया ई सबु दूरि बहाये री।
ताते उनकी मन की जानी भये सकल मन भाये री।
पांय पै लौटि रही बाँदी होय आनन्द मंगल गाये री।
कहि मीता हँसि काह करै कोइ हरि जी की सरनै आये री॥

सहज सुन्नि समानि मनुवा उनमुनी लागी रहै जोगु जुगति बिचारि बैठा भाग्य ते या पदु लहै।
गुरन माथ नवाय पूरे सेउ मां डिढ़ जब रहै अमरपुर बकसीस दीन्हा सबै पद नीचे रहै।
तहां उठै अनहद नाद अनगन जोति जगमग होय रही देखि छाका खेलु साँचा गुनन ते न्यारा रहै।
तहँ रजनी दिवसि संझा सदा तो एकरसु रहै गुँग मिश्री खाय मीता स्वादु को कैसे कहै॥

मन मतवलवा पियति छकाई रे दारू पिये बलाई रे।
मोहुआ नामु जुगति की भाटी ब्रह्म की अगनि चुवाई रे।
सांचा अमल हाथु जब आया कपट अमल बिसराई रे।
दीन्ह पिलाय प्रेम का प्याला बातिन जाहिर नाहीं रे।
गुदरी सेली किस्ती तूमा आसिक धरना नाहीं रे।
आसिक सैदा को पहिचानै हक ते न्यारा नाहीं रे।
हिन्दू मुसलमान दोउ भटके फिर फिर गोता खाई रे।
कहि मीता वा दरद की दारू गुरू-पीर सो पाई रे॥

बिना संत संत रामै ना पावै नल कोई, तू काहे का भूला रटि खोजि ले सोई।
रटि रटि भूले गवांरा जानैं नहिं वारो पारा सतगुर की सेवा करु नौका उइ देई।
उतरै भै के पारा चौथे पद मिलै रामा-रामु है दुहेला सुख हेला कै लेई।
कामक्रोध बिच आंड़ा इनते को जाये पारा मारै कोई बीर जाकी करनी डिढ़ होई।
जानै का नल लवार संतन का सब्दा सार सब्द पहिचानै सो संत सा होई।
भेखु ते मता न्यारा कहै नल बारमबारा रामु का पियारा तो गिरही मां होई।
कबिरा धरमदास रैदासा हैं सोई कहौ भेखु कौन मिला काहे मति खोई।
मीता कीन बिचारा सांचा है मता हमारा चीन्है तेही करैं पारा हमारा जो होई॥

मंगल

चलौ बहू घर अपने जहां है खसम तुम्हारा आवागमन मिटावउ छूटिल जमु जाला।
पांच पचीसों त्रासे मन का करु विस्वास डोलिया फँदावो प्रेम की या विधि पहुँचो पास।
नैहर है दुख भारी ताते करौं पुकार रोइ रोइ सब जगु मुआ सुर मुनि दस अवतार।
कहि मीता या मंगल सुनिले नंद हमारि हम तौ हैं परदेसिनी ह्यां हैं दिन चारि॥

गुरु पाये बेनीराम तो मंगल गावऊँ कबिरा नानिक कोटि तिन्है समुझावऊँ।
खोटी काढ़ौ तौलि त राह बतावऊँ उइँ हैं ज्ञानी लोग जीति तिन्है आवऊँ।
साकठु देखि डेराइ त हा हा खावऊँ सुज्जन का गुरु होउँ त पार लगावऊँ।
साहेब का सिर नाय गरभ ना आवऊँ कहि मीता हरि दास तिन्हे समुझावऊँ।'

बसंत

अब बसन्त भई तनु मा आय काहे का मनुआ अनते जाय।
चरन कँवल चित रहा समाय सतगुर मारग दिया बताय।
पांत पति का दिया चलाय कारा मुख कै जगु मां रहाय।
तबु पीतम मिले सेजरिया आय सो सुख हम तन कहा न जाय।
कोटिन बीना मुरलि बजाय निरतत पिउ सब ही का आय।
कोटि सूर ससि वारौं ताहि छवि निरखत भई बौरी बनाय।
कुंभ नीर ज्यों सिन्धु मिलि जाय सो कैसे निरुआरा जाय।
कहि मीता अबु आवनु न होय हरि का मिलै सो हरि का होय॥

घर के पुरुख सो ना मिलि जाये आनि देव तोरे को उइँ आयँ।
आदि नाथु हैं तोही मांहि विस्वा होय कस अनतै जाय।
मिरग पास कस्तूरी आय सूंघे अलग घास का जाय।
जैसे बालक गोदी आय गलिन गलिन वा ढूढ़ै जाय।
कुअना तजि चढ़ि बिरछै जाय चहै पानी का कैसे पाय।
तीरथ-बरत नहीं हरि पाय पाखंड मां तन पाखंड जाय।
असनान करै अयोध्या जाय कहत फिरै आये तीर्थं नहाय।
भेड़िया धसनि परा जगु आय कहि मीता कुछु कहा न जाय॥

धनि धनि भाग्य खेलै जे होरी पांच सखी मिल मति भई भोरी ।
उमगा प्रेम कुमति गई ऐरी हरी सो चितै चितै सुख भारी ।
बाग अनूप तहाँ रचि होरी चित्त विचित्र तुम जहां ऐरी ।
लेइ बीर धाऊँ भरि झोरी झका झकि लगा दिया मुख मारी ।
लाजु छाड़ि पीछे फिर हेरी बलु बाढ़ा तब परी ठगौरी ।
मैं उन माहीं की मैं उनमा री कुंभ का नीर सागर मिलिगा री ।
कहि मीता या निरगुन होरी खेलनहार आवै जगु ना री ।
या नहिं नर नारी की होरी बिस्नु-महेश खोजि थाके री ।।

औरे सों होरी न करौं मोंहि पिउ प्यारे सो काजु री ।
औरे सों परदा करौं घुंघट तजि पिउ पै जाउँ री ।
अजर अमर पिउ ना मरै जो मिलै सो अमरा होयरी ।
भाग्य बड़े ते पावई कुछु हँसी खेलु ना होय री ।
धन्नि बाम्हन जिन सिखायो भौंरी दै भावन लीन्ह री ।
कलहु कल्पना मिटि गई सुख राज्य अमोलिक दीन्ह री ।
प्राण निछावरि जब किये तब पिउ पकरी हँसि बांह री ।
जन मीता जगु जीतिया होरी ऐसी खेली आजु री ।।

सांचा रामु नामु भजु भाई छांड़ि देउ चतुराई या माया पर पंचनि काजे मानुखि जलमु नसाई ।
आगि लगै तोरी जाति बड़ाई आगि लगै पंडिताई तनु की तपनि बुझइहैं तबही चरन कँवल चितु लाई ।
हो हुसियार बदाई छाड़ों रहौ गरीबी पाई सुमति विचारि पार होय जइहौ नाहित कालु सताई ।
राम भजे मीता फल पाया सोई दीन्ह गोहिराई अमर लोक पट्टा लिखि पाया संतन की सरनाई ।।

चलना है रहना नहीं है दिन दुइ चारि निवास रे ।
माया मोह जनि भूलई या थिर नाहीं संसार रे ।
चलति चलति बहु थाकिया रे मनु नहीं आया हाँथु ।
बहा भयानक धार मां गहि को राखै बिनु नाथु रे ।
चलना चलना भांति है रे समुझि देखि नल लोय ।
एकै चलि कै अटल भये एक चलत चलति मुये रोइ रे ।
चलि गये सहस अठासिया रे चले तैतिसो कोटि ।
ठौर ठिकाना ना लगा ताते भे आहू ते खोटि रे ।
जमु दारुन बैरी बड़ा रे ताते हो हुसियार ।
तैतीस तीन अठासिया उन सब घटु डारे विदारि रे ।
जिन जिन सतगुर ध्याइया रे तिनका कालु डेराय ।
करौ गरीबी दीनता जाते दीन बन्धु मिलि जांय रे ।
जारु परा तिहुँ लोक मां रे कतहूँ नहीं निकास ।
चौथे चरना ध्याइ के कोई निकरि गये हरि दास रे ।
प्रेम बानु हिरदै लगा रे अबु जगु कुछ न सुहाये ।
मीता मन महरा भये गया दरिया बूंद समाइ रे ।।

चलौ सुजन वा देसवा जहँ कालु करै ना दाउँरे तीन लोकु जमु जार है हियां तुम्हरा नहीं निवाहु रे।
तहां कबीरा दास गे रे नामा औ रैदास संत मवासी देसु है तहां कालु न पूँछै बात रे।
संत संत सबु एकु हैं रे आगू पाछू केर कह लगि सबै गनावउँ बहु रामु पियारे लोग रे।
जगु एकुइ दुइ होति हैं रे झूंड न उनके होय झूंड़न पाखंडु भेखु हैं तिन्है करिहै कालु कलेउ रे।
या जगु अन्धा पचि मुआ रे फिर फिर गोता खाय ताते तू करु दीनता जो जीति जगत ते जाइ रे।
विपदि सम्पदा एकु कैरे अपने मनु मां जानि संगति करौ विवेखी की हरि दासन का पहिचानु रे।
या विधि उतरबु पारु है रे जो करि जानै लोय कालु कमीना का करै जो हरि चरनन चित होय रे।
अमर लोक मजिलिस हवै रे मीता करै पुकार सहज ताहि मिलाइहौं जो बूझै सब्द हमार रे ॥

उपजा ब्रह्म ज्ञानु रे भाई ताते भै की भीति ढहाई।
सूझा अगम निगमु जहँ नाहीं सत्य नामु नौका लै लाई।
पांच पचीसौं बांधि मँगाई मन जीते जगु जीता जाई।
पढ़बु गुनब पाखँड चतुराई छांड़ो ना सेवो रघुराई।
नल तन बार-बार ना होई अबकी बेरि समुझि नल लोई।
संतन सेइ परम सुख होई नाहित कालु सदा दुख देई।
अमी पिया बिखु बेलि बहाई अमर भये जमु निकट न आई।
जन मीता सांची गोहिराई बूड़ति के ही खबरि सुनाई ॥

पंडित जमु जुवाब है देना का हँसि भाखै बैना अवध उड़ैसा मथुरा काशी सबई कालु चबैना।
रामचन्द औ कान्हा डाड़े जिनके थी बड़ी सैना ताते हो हुसियार रे भाई कालु सेल्ह है पैना।
सतगुर बांह धरै तब वाचै नाहित पचि पचि मरना तुम कैसे कै बचिहौ पंडित कहौ आपनी धैना।
नदी एक बेकरारहै बाढ़ी केहिबिधि पार उतरना केवट करिया नाउँ नहीं हुआं या नहि हँसी खिलौना।
न्हाइ-खोरि याँही मरि रहि हौ का चन्दन घसि देना पाहनु पूजि पाहनुइ होइहौ नाहक भरमु भुलैना।
ना कोइ ऊँचा ना कोइ नीचा झूठा गरभ करै ना एक ब्रह्म ते सकल सरीरा इनमां दूजा कोइ ना।
पंडित ज्ञान तवा ज्यों कारा मुख छबि देखि परै ना निरमल ज्ञान जगत ते न्यारा सत्य सब्द जैसे ऐना।
माखन पाइ छाछु ढ़रकाई पहुँचे पद निरबाना बूड़त हते जगत की संगति मीता समुझि भगाना ॥

रमिता रामु हमारे ध्याना जिन सिरजा तिनही का माना।
रामचन्द औ कहिये कान्हा ई तौ हैं मानुख तन प्राना।
ओंमररंकार सेस बखाना आदि ये ही केहु बिरलेन जाना।
मूल छाँड़ि जो डारन लागा तिनका जमपुर होय पयाना।
संत सुजान सांचु मत ठाना ब्रह्म मिले पदु है निरवाना।
सो साकठु जिन रामु न जाना रामु बिना है नरक निदाना।
कंठी माल बनावै बाना भक्ति भाव खेड़वा कै जाना।
कहि मीता देखो जगु बौराना हीरा कांचु एकु कै जाना ॥

साधौ या जगु भरम भुलाना ताते तत्तु ध्यान ना जाना।
जहां ते आये तहां बिसरिगा आनि देव मत ठाना।
पार ब्रह्म तो मूल बिरछ है तिनका मरमु न जाना।
तिरदेवा साखा हैं तिनकी तहाँ अन्ध लपिट्याना।
दस औ चौबिस बीचै उपजे बीचै मां मिटि जाना।
वा तौ पुरुष हवै अभिनाशी जिनते जगु उपजाना।
औंकार सोई सबु जपता बेदो सोई बखाना।
अन्धे मुरुख तौ समझति नाहीं तिनका कौन गियाना।
नौका नामु मिलै मनु खोजे सो जन होय सुजाना।
भै सागर का नांघि जाय तब का करै कालु कमीना।
कंठी माला गरे डारि कै भोंदू कहते बाना।
ताना बाना कुछौ न जाना आखिर नरकु समाना।
पाखंडी पाखंडी जुरि कै तीरथ करई मेला।
मेला खेला कुछौ न जानै तिलकु छापु बौराना।
सतगुर बिना सब्द ना बूझै का रंका का राना।
कहि मीता केहि केहि समुझइये दीन्हा आनि डिगाना॥

नलु भूल्यो रे हंस कागु ना चीन्हेउ रे।
जो चिन्हेउ हंसन कै बानी दीपक ज्ञान परति तब जानी।
रैनि दिना लागो एक तारा चक्र वेधि छा गुन का डार।
दसवाँ खोले पद निरवान तहां बिराजै सिरजनहार।

कागा-वका पाखंड संसारा भेखु संघु को उतरा पारा।
झूंड़न हंस न होय गँवारा का गनता दस बीस हजारा।
हंसा सात समुद के पारा कागा झुंड भरा संसारा।
कहि मीता है हंस निनारा तिनकी बानी बिरल कोई जाना॥

धरनि धरत मन का धरा गगन घहराये पाँच पचीसों संघु लिये अगमपुर जाये।
तहाँ बाँकुरी चालु है पगु ना ठहराये राई बीसो बसि होय तब सहज समाये।
किये गरीबी बन्दगी सतगुर मिलि जाये तिनते मारगु पाइये तन तपनि नसाये।
भेखु मरमु पावै नहीं येहि जनि पतिआये ई दरबारी चोरु हैं पदु मीता गाये॥

साधौ हरि मिलिये कहु कैसे जलमु जाति है धोखे सोई गुरु जो देई मिलाई नाहित ठगिया जैसे।
माला तिलक जगत बौराया बधिक टाटी कै जैसे उन्है देखि इन्है न भूलौ ई वकुला हैं जैसे।
जैसे देखि इन्दोरन का फल भीतरि बिखु है जैसे अइसे मन का भेखु मैलु है हरिजन हीरा जैसे।
चोरा तो रातिन कै मूसै ई मूसति है दिनसै कहि मीता जो इन संघु बैठी सो तरिहै ना कैसे॥

पदु सखी भये

लगी लगन ना जाइ छड़ाई अकथु कथा री माई, चितवत मोहिं लिया सुख सागर लाजो गई पराई।
सासु ननद छिनहूँ छिन त्रासै खोरि कढ़न ना पाई मानौ चोरु सेंधि मां पाया यों जमु लोग हँसाई।
जो ना देखौं प्रान पियारा कैसे प्राण रहाई जैसे मीन नीर ते बिछुरति तलफि तलफि मरि जाई।
सखी बिरोग सोइ तन जानै जा तन रहा समाई कहि मीता वैदा पचि हारे दरदु मरमु ना पाई ॥

जगत की लाजु गाजि परि जाई या विधि क आ चलाई।
आँगन आये प्राण पियारे मैं सखि रही लजाई।
त्यागौं जगतु करौं मन भाया घूँघुट देउं चलाई।
अब की बेरि मिलौं पीतम का तन की तपनि बुझाई।
जोबन जाति छिनौ छिन बीता कौनु काजु या आई।
या हैं भेंटि करै ले अपनी औरि करौ कुछु नाहीं।
जोइ काँछों सोइ नाचु नाचिहौं और नाचिहौं नाहीं।
कहि मीता सखि धीर बिरहनी झुंड मिली देखु जाई ॥

मनु हाथु करै है कोई ध्यानी ध्यान धरै।
खंजन मीन ते चंचल लोई थिर कै राखै बिरला कोई।
अगम पंथु खाड़े की धारा मनु चढ़ि चलना पैइले पारा।
पाँच पचीसो कै घमसाना तबु मनु ठहरै खाँड़े धारा।
फिर मकरी का करै बिचारा सुनि ले साधू ध्यान हमारा।
उतरै तार चढ़ै फिर तार एकचित भये मिलै परिवार।
हम गोपिता मत गुपित हमार लखै न पावै जड़ संसार।
मिटिगा आवागमन हमार कहि मीता ले सुरति सँभारि ॥

है नाम भला और काजु सबु लटपटा।
अरध नामु है नौका सार जपै सो उतरै पैले पार।
सो तो सतगुर की चटसार देति सुजन का करै न वार।
पाखंडी का नरकु दुआर इनका ना मिलिहै मतसार।
जीभ कहे जो तरै गँवार काहे का बूड़ै या संसार।
पीपा तरे तरे रैदास तरे कबीरा नामु अधार।
नामु का भेदु बिरल कोइ जाना नामु सोई जो मिलै करतारा।
तेहि चढ़ि मीता उतरे पारा बूड़े भोंदुआ बिना बिचारा ॥

भजु मन जाते परचै होई बेदु पढ़े का होई तजु अभिमान मान करु दूरी दूजा बरन न कोई।
जमु का मोगरा है बहु भारी अंत काल सिर देई जैसे धोबिया कपरा कूटै बड़े बड़े गे रोई।
कामी क्रोधी अन्धरे बहिरे जलमु चले जन खोई मानुखि देहि बहुत है दूलम बार बार ना होई।
चामु का रूप बिनसि सब जइहैं जीव निनारा होई तिरया दामु दिलम सेंतीं संघु न लागी कोई।
माया काजे दहुँ दिसि धावै छल बल कै बहुताई ब्याहु काज मां सोभा कीन्हीं जीव नरक मां जाई।
मूरुख छांडु मोह माया का त्यागौ जगत बड़ाई दीन गरीबी है निरुआरा जो सतगुर मिल जाई।
भक्ति बराबरि और नहीं कुछु समुझि परा रे भाई कोई कबीरा पीपा नामा जोति मां जोति मिलाई।
जग्गि दानु तपु कै कै मरिगे खबरि न घर की पाई कहि मीता जगु बूड़ि बड़ाई केहिका लै समुझाई ॥

साधौ अजर नामु है सोई जाके चितवति परचै होई, माला जिभ्या का वा नाही वा कुछु औरे लोई।
जप तैं नासि होइ कुमिता का सकल व्याधि छै होई प्रेम प्रीति हिरदै मां बाढ़ी सो जन निर्मल होई।
इंद्री दई दँवारि लगाई जिव की बन्दि छड़ाई, भा उजियार तिमुर तब नासा खबरि अगम की पाई।
पांचौं नारी जो जित राखै रवि ससि सम कै दोई सहजे सहजे नगर पहूँचे आवागमन न होई।
सोई भगत सोइ संत कहावै सोइ निजु ब्राह्मण होई चौरासी के फंद न आवै नलु जीतै जगु सोई।
छहौ भेखु ते या मत न्यारा सतगुर ना पतियाई बिरले गिरही का उइँ रीझैं तिनका देइँ जनाई।
पर स्वारथ का संत पुकारै तजैं जगत जैसे छोई जगत बड़ाई संत न चाहैं या ते काहू सरोई।
फेरि सुमिरनी जगत रिझावें हरि की रीझ न होई कहि मीता जगु पाखंड भूला सांचु धरै ना कोई ॥

साधौ काया नारी ब्रह्म पुरुख है नारि पुरुख केहि जानौ।
पाहन के दूनौ पिल कीन्हे भाउ भिन्न कै मानौ।
भग ही जाया भग ही खाया पचि पचि मुये सयाने।
जो छूटै या भग द्वारे ते ते हमरे मन माने।
समुझि परे दूनौ हैं एकुइ जानै नहीं अज्ञाने।
कहिये काहू कहे को जानै जगु भै भरमु भुलाने।
नर नारी कुछु आगे ना था ब्रह्मै ते उपजाने।
सोई मूल गहो रे भाई मीता तेही बखाने ॥

साधौ हरि का भजै न पाई है दुरमति तन छाई ऊपर पांचौं भूत लगति हैं कैसे कै ठहराई।
करौ पुकार गुरू के आगे दुरमति देउ बहाई पांचौ बांधि कुआं मां डारौ सतगुर केरि दुहाई।
तबु को वाटि घाटु मां लागै जब अकछत होइ जाई सहजे आवै सहजे जावै रहब चरन चितु लाई।
भाव भक्ति खेड़वा नहि भाई ना मिलिहैं चतुराई कहि मीता सिरु देइ मिलै या बहुत हवै कठिनाई ॥

साधौ परम तत्तु पहिचानो बूसी काहू बखानो, का कंठी का माला छापा या तौ भरमु भुलानो।
सांची कहे जगत दुख मानै झूंठी सो मनु मानो दाबी देइ बूड़े भै सागर देखो भलो सयानो।
दस अवतार ईश्वरी माया करता कै जनि जानो वा तौ है अभिनासी साहेबु तिनका क्यों न बखानो।
सतजुग त्रेता द्वापर के नल मरमु न काहू जानो कलियुग मां गुरु परगट कीन्ही मीता सोई बखानो ॥

साधौ संत चालु है न्यारी का जानै बिखै बिकारी, माला तिलकु कौनि बिधि तरिहै भूली है संसारी ।
गुदरी तूमा सेली लीन्हेइ या कांटन की बारी इनमां परा सोइ गया फँसि कै दै दै बूड़े तारी ।
सुनिले संत सखिन की बातें चलै त्रिवेकु बिचारी धरै न भेखु भेदु है जिनके भेखु संत कै गारी ।
पांचौ इन्द्री बसि कै राखै सो कहिये बैरागी कहि मीता तब नगर पहूँचै छूटि जाय जमु द्वारी ।।

भाई रे चरन कंवल चितु लागा ताते खोइ गई जगु लाजा ।
भरम भगाना कालु ते छूटे सरे सकल बिधि काजा ।
का गाये का नाचे होइहैं काह बजाये बाजा ।
ई तो पेटु तमासा कीन्हा भेखु कपट का साजा ।
बिनु सतगुर कोइ रामु न पावै का रंका का राजा ।
सतगुर भेखै ना पतिआता कौनि भक्ति की आसा ।
मालपुआ औ खांय मिठाई यहै बना है काजा ।
कहि मीता जगु सोइ गया सबु जो जागा सो जागा ।।

भली गरीबी दीनता जो रहै दिलौ बिच छाईहो, हरिका तुरत मिलावई तब कालु न घालै घाउ हो ।
पूरबु केरे पुरबिया रे और कुछौ ना मांगु गरदु मरदु जो होय रहै तौ तरति न लागै वारु हो ।
सतगुर चीन्है आपना हो ताकी करै सहाय कालु अंस का ना छुऐ उइँ बड़े बिबेकी आंय हो ।
सत्गुर की पइयां परौं हो बार-बार बलि जाऊं बन्दी छोरि मीतकी वातौ जस गावति घर जाउं हो ।।

अब करिये कौन बिचार हो भै सागर भारी हवै ना करिया ना नाव रे कैसे जइये पैले पार हो ।
नइया कैले नामु की हो मन करिया करु हाथु सतगुर केवट साथु जब उइं जानै अवघट घाट हो ।
तरने की संसै का हो जो समर्थु की आस करैं सनीपी रामु का जैसे दरिया बुंद समाति हो ।
सिक्ख गुरु का भेदु है हो खोजी करै बिचार बादी का जमु द्वार है जन मीता करै पुकार हो ।।

जेठवा को ठहरै रे भाई बहुति हवै कठिनाई सावन ताल तलइया बाढ़ी बाहर की जलुताई ।
मानसरोवर सूखति नाहीं सूखै तालु तलाई सो सागर जो सदा रहै जल टूटि न तनकौ जाई ।
ई तो अगमु पंथु की बातें ई हैं जगु की नाहीं जो बूझी सो नातु हमारा जगु अनतै लै लाई ।
कहि मीता गुरु पूरे पाये ताते कुसल भई सहजे सहज अमरपुर पहुँचे भेदु बखाना सोई ।।

सुनु साधू भाई सांचु बिना पछितायेगा जबु जमु मोगरा खायेगा ।
अंत काल को संघी होइहैं तलफि तलफि मर जायेगा ।
नारि पुरुख का मुंह नहिं देखा को गौने ले जायेगा ।
का भये पिया पिया रटि लाये जो नहिं ब्याहा जायेगा ।
बिना सनीपी भगत न कहिये कनफुंकवा बौरायेगा ।
धोती लीन अँगोछा लीन्हा ऊपर झगरा लायेगा ।
कंठी माला गरे मां डारी छापा तिलक बतायेगा ।
कहि मीता जमु कैसे छांड़ी का की सरन समायेगा ।।

जोगी जागा रे, जागि जागि रंग लागा रे, जो जागै सतगुर के भेदू तिनकी सेऊ करै त्रिदेऊ।
जागै रोगी जागै चोर जागै बिखइ कामिनी ओर जागे भोंदू बहुत लबार बिनु सतगुर बूड़े मँझिधार।
सिंघ सूर का या मैदान निस दिन लरै धनीके कामु बरखै सार होय घमसानु तहँ कूरे का नांही काम।
अनहद सुनै चढ़ावै पौन चितवै सुन्नि भरमु है तौनु वातौ मारगु औरे आन मीता न्यारी हमरी सान ।।

जोगी जुगति नहीं भै धारा कैसे निबही ।
करिया नहीं नहीं गुन नाव गांव नहीं जहँ पगु चलि जाऊँ ।
जटा राखि का का है काम वा तौ मारगु औरे आन ।
दिना चारि करु जगु विश्राम करी कलेवा कालु निदान ।
भूलि रहे इन्द्रिन के स्वादु खट्टे मिट्टे कै ज्यौनार ।
पर घर खाये सिर का भारु होइहउ बैलु लादी संसार ।
निन्दै करै ते मूर्ख गंवार सत्ति सत्ति है सब्द हमार ।
कहि मीता जोगी कौन बिचार छल कै खायेउ लीन्हेउ भार ।।

नल जलमु सो तू ना खोवे अपान ।
जोगु जुगति ते पद निरबान नागिन भयो तुम कौने काम ।
पर घर करति फिरै ज्यौनार किरखी छांड़े नरक निदान ।
खर महिखा बैला का ज्ञान लादति भार निकरिहैं प्राण ।
जटा राखि मानौ भूत समान झुंड बांधि चले तीर्थ अन्हान ।
ई का जानै निर्मल ज्ञान हँसि हँसि खाते धान्य बिरान ।
मूँदी ती सो परगट कीन जगु भूले का आँखी दीन ।
कहि मीता जो सहज समान तिनका मिलिहै आतमु राम ।।

बहु कठिने मिलै गोपाला जहँ सत्य सब्द मनु माना ।
जब सतगुर होय जमाना तब खिजि मिति पावै दाना ।
तब का करै कालु कमीना जबु आपुहि रामु रिझाना ।
जब पदु पाया निरबाना तब काह करै लै ज्ञाना ।
है कठिन कालु का जारा साधौ ना छुटिहौ कंठी माला ।
तब अंत होइ मुख काला है झूठा तेरा बाना ।
सब पाखंड जगु लपिट्याना जैसे भेड़ि धसन गुन ज्ञाना ।
कहै मीता करै का दाना भूले हैं मुरुख नदाना ।।

लै लागी नामु हमारी हँसि काह करी संसारी जे संतनके निन्दा कारी तिनका निजु नरक दुआरी।
जमु का बंधनु है भारी गुरु छोरि दिया हितकारी तिनकी जइये बलिहारी जिन बूड़ति नाउँ उबारी।
है भक्ति भेखु ते न्यारी ई पाखंड के अधिकारी हम कहिये बातु बिचारी ई मालु पुआ हितकारी।
मीता मति जिनकी भारी ते होते नहिं भेखु धारी संत गनै या गारी ना बूझै मूर्ख अनारी ।।

कैसे बूझै सब्द गंवारा बिनि अंकुर घटु अंधियारा।
बहु कथनी कथै जुझारा रहै रामु तिन्ही ते न्यारा।
है नौका नामु निनारा गुरू देइं त उतरै पारा।
चाहै रामु कहि कहि पारा बिनु रीझे नरक दुआरा।
है सांचे का हरियारा करु रामु भक्ति है सारा।
तब कटिहै जमुका आरा जाका राम रतन रखिवारा।
जन मीता किया बिचारा तन मन संतन पर वारा।
तब कपटु माल गहि डारा जब ततु का तिलक संभारा॥

सुमिरो नल रे नौका नामु तारन भै रे।
लोगु कुटुम कोई अंत न साथी तिनका ना तू रहु बिस्वास।
काल जाल का करु निरुआर तजौ बिखै कुमिता का डारु।
अबकी बारी करौ बिचारु चौरासी का आवन निवारु।
जोग जग्गि तपु विधि के दानु इनते ना मिलिहैं भगवान।
गुन की डोरि बंधा संसार छूटे संत रामु पहिचानु।
मीता सत्य चरन के जाने ते भई तिमुर कै नास।
जस कीन्हा तस भे फल आये करनी जोग हते हम नाह॥

पद उपदेस

साधौ भली सरन रघुराई पाहन पूजे का पाई उइ तौ अभैदान का देते पाहन मां अगिहाई।
पाहन पूजे पाहन हुइहौ ज्ञानु न उपजी भाई बिना ज्ञानु कुछु सूझि न परिहै अंधरेन हाटि लगाई।
या संसार कटइया बारी चलते संत बचाई सांचु कहे ते भागन लागे झूठ कहा ना जाई।
मूंदी मढ़ी उघारि दीन है खोटी खरी बताई कहि मीता नइये संतन का सकल व्याधि टरि जाई॥

तिन पर बज्र परै रे भाई जा घटु दाया नाहीं नाहक जीव पकरि कै मारै कैसा होय कसाई।
न्हाइ खोरि चन्दन दै बइठी ज्यों बकु ध्यान लगाई मछरी निगलत बिलम न कीन्हा देखो या उजिराई।
वारौं असुर बीस दस इन पर और असुर कहं पाई तापर फाटि परै कुलुनाई पांड़े की गरुआई।
मीता करै पुकार दहूँ दिसि न्याउ करी रघुराई ताते समुझि चेति नल बौरे जीउ नरकु मां जाई॥

संगति करौ विबेकु की पाया भला दाउं मानुखि देह दूलभ है हरि चरना ध्याउ।
भेखु बहुत पाखंड किये ताहि भूलि ना जाय जिन संघु रामै पाइये तिनका गहु जाय।
काया माया थिर नहीं जमु कतहूँ न जाय जियरा का घेरे रहै जिउ जहाँ जहँ जाय।
अब के छोरु छड़ाय दे दुःख बड़ा टरि जाय मीता बाचा नामु लै तब भै कुसलाय॥

पदु बारा बानी

जब सेल्ह धमाका सहिये तबु संतन माँझे लहिये या बहुत हवै कठिनाई का होइहैं पवन चढ़ाई ।
वा सीस देइ मति पाई जब रीझै गुरू गुसांई या बहुत हवै कठिनाई का नैन सुन्नि भे लाई ।
जब वज्र सिला खुलि जाई तब अमरलोक पदुपाई या बहुत हवै कठिनाई अनहद सुनि काह सराई ।
जब आवागमन मिटाई तब तन की तपनि बुझाई या बहुत हवै कठिनाई का जिभ्या भये बढ़ाई ।
जह रहनि गहनि डिढ़ होई सो भक्ति पदारथु लेई या बहुत हवै कठिनाई भूले हैं लखि उजराई ।
कह मीता समुझाई या मारगु हंसी न होई या बहुत हवै कठिनाई हियाँ कूरा ना ठहराई ।।

पदु उपदेस

गुनन मां न परु रे नल भाई या माया फांसि बनाई कालुके हाथु अन्त या सौदा जीव मरै तलफाई ।
पापु पुन्नि दोनों पिल कीन्हे दररि गई दुनियाई सतगुर सेउ कटै तब फाँसी हरि चरनन लै लाई ।
पहिले पंडित आपु फंसे फिर फांसी दुनियाई भै सागर मां फेरा करते बूड़े ताल बजाई ।
जो छूटै की बातें चालैं तिनका उठै रिसाई कहि मीता इ नरक सनेही सन्तन ना पतिआई ।।

पदु तमाचा साठे पर

धोबिया धोवइ न जानै, ऐंचि ऐंचि का तानै, ना, साबुन ना पानी निर्मल हरिया छू बखानै ।
पाटा काह पछारै छिनुछिनु का लैंड़ी मां सानै बस्तर उजला होय न कबहूँ रारि किसनवा ठानै ।
मोटी रोटी पइकै मांगै डर कबहूँ ना मानै कैसे कुसल परी या गौना जबहि तुरक धरि मांगे ।
तोरे मेरे कौन धुवावै को मैला मां सानै कहि मीता जो पहुंचा होइहै सो सब्दा पहिचानै ।।

पदु उपासना

हठि है रामु निदान तिनका ध्याइये पाई परचै आन न भावै का दुनिया दिखलाइये ।
टूटी हती नफा बड़ि पाई जमु ते छोर छड़ाइयै भै सागर की हटिया छूटी अमरापुरी बसाइया ।
अभिनासी देवन के देवा सतगुर भेदु बताइया इन सिवाय को तारनवाला भूला जगु बौराइया ।
बूड़े जांय थाह ना पावै अन्धा अन्ध मिलाइयां कहि मीता देखो चतुराई अमी तजै बिखु खाइयां ।।

पदु सीख रास

बहु अबके मिली भली जोरी ।
देउ अभै पद भूजौं राज छाड़ि देउ सब भै का काज ।
अभिनासी बर लेउ विहाय घर वर अमर तोहू होय जाय ।
माया खाय भइया का त्यागी अपने पिया की सेवा लागी ।
ननदी केरे निकट न जाऊ हवै चवाइन रह्यो बचाय ।
हम तुम रहिबे एकै ठांये तुम्है बताये सोई सोई दांये ।
कहि मीता ई कौन सुभाय खुसी होय सो देइ बताय ।
ई नहिं सासु ननद व्यौहार या तौ मारगु औरै आन ।।

ऐसा धनी हमारा तहँ लगे बजूरा, नहीं दिसा नहिं नहिं द्वार है अगम पंथु वा न्यारा।
बैकुंठपुरी ना उइँ नहीं सब भूली है दुनियाई ज्यों मिरगा तिसुना का धाई वा नीर तहाँ कस पाई।
सुख सागर तजै गवारा छिलरा का करै विचारा जिनके घटु है अंधियारा तहँ काह करै उजियारा।
जिन करता ना पहिचाना तिनका है नरकु निदाना जन मीता सब्द बखाना की साहेबुसो पहिचाना ॥

पदु रस जोग

तुम आओ पीतम सेजरी जगाओ रैनि-दिना चरनन चितु लाऊँ जो आयसु कै पाऊँ।
मैं निपच्छ कोइ पँच्छी नाही केहि दुख रोइ सुनाऊं और अलंभ नहीं है मेरे हैं ई पाऊं सो पाऊं।
हों वांदी मगदी नहिं जानौं ते गुन माफ कराऊं अपनी ओर चितैकै बकसो बारि बारि बलि जाऊं।
हंसे नगरके लोग कसाई खोरि कढ़न ना पाऊं होय निरसंक मिलौं कहि मीता कुलकी कानि बहाऊं ॥

मनुआ करति हों बिनती, धर ध्यान अन्तर तू छाड़ि दुंद उपाय तनकी घरी है नीकी।
चरन अनभै रामु का है कालु भै नाही होय निर्मल सेउ तेही कहा समुझाई।
सेनि नामा दास कबीरा सेइया ताही जीत बाजी गये जमु ते गुरू की बांही।
और बहुत अनेग जीते करौं का गनती मीत के परतीत बाढ़ी सांचि या प्रीती ॥

घर का जबु परपंचु मिट जाई गुरू ज्ञान ध्यान तबु पाई।
हरदम नामु जपो रे भाई किरतन काम न आई।
आदि नामु घट ही के भीतरि निरखि पार हो जाई।
या संसार जीभ रटि भूला तिनका ना पतिआई।
पांच पठान कैद करु अपनी तबु मारगु ठहराई।
जो सिर देइ सोई है सूरा गल्लन भक्ति न होई।
अब जनि होय सेमर का सुअना का पीछे पछिताई।
कहि मीता गहु सिरजनहारा होय सबै कुसलाई ॥

भक्ति का भेदु विरल कोई पाई सुनिले साधौ भाई, कंठी माला जगु बौराना तिनका का समुझाई।
काजल-सेन्दुर दै कै बैठी व्याहु भया है नाहीं हँसती सखी सुजान मनै मन कैसी दुलहन आई।
रहै सनीप होय सो भगता आवागमन मिटाई कालु कठिन की जेल छड़ाई जगु ते जीता जाई।
भोंदू चले जाति जमु द्वारे छापा तिलक बनाई कहि मीता है भक्ति निनारा बेडियन के संघु नाहीं ॥

आजु हरी किरपा कै घर आये करिबे आनन्द बधाये।
जहँ जहँ प्रीति तहाँ तहँ ठाढ़े करै दास मन भाये।
बलि बलि जाऊं वारनै जइहौ और नहीं एहि लायक।
ब्रह्मा-विस्नु अनेक रचे जिन अस करता के पायक।
सिरजनहारा सबते न्यारा गरभ बास नहिं आये।
दस अवतार तिन्है की माया जिन खोजा तिन पाये।
तीनिउ देउ पार ना पावै संतन सहजे पाये।
कहि मीता संतन की महिमा शुकदेउ गीता गाये ॥

भेखि न ऊपर

साधौ सुन वानी व्यौहारा तुम नाहक सोंगु सँवारा ।
हरिजन किरखी कै कै खाते जिन्है मिला करतारा ।
भेखु पाखंड छलै बल बूड़ा खाते धान्न बिराना ।
मन दस भार बैलु होय लै हौ चूके मुरुख गंवारा ।
करनी और करै तू गावै सब्द न जाय बिचारा ।
जैसे चोरा पर घर मूसै भाउ रहा वाते न्यारा ।
मूँदी मढ़ी उघारी मीता मानि लेउ अतिवारा ।
छहौ भेखु दरबारी चोरा संतन सबै पुकारा ।।

पदु कबीरहन ऊपर

साधौ जमु धारा जमु लै जाई पर कथनी कामु न आई ।
भक्ति हवै खांडे की धारा जो ठहरी सो पाई ।
पंथु पंथु का साकठु करता पंथु न खेड़वा आही ।
अगमु पंथु संतों का चलना तीनिउ की गमि नांही ।
सतगुर का मत भेखु न पावै भेखु करै ठगिहाई ।
धजा नारियर नहीं चलाये हरि का देइ मिलाई ।
अन्धे का ठगु मूसन लागा चौका पान कराई ।
कहि मीता जो अंस हमारा सो ना निकटै जाई ।।

गुरु के सब्दु पर जो मनु लावै धू-पहलाद तिन्है नहि पावै ।
पदवी तीन मनै नहिं लावै जब चौथा पद हाथै आवै ।
मूल तार गहु चितु न डोलावै पांचौ बांधि पचीस नसावै ।
अटल होय जगु बहुरि न आवै सोइ जोगी सोइ दास कहावै ।
परलै मांहि जबै परि जावै धू-पहलाद बिनसि तब जावै ।
सोई अटल जो तब ठहरावै भूला जगत मरमु ना पावै ।
बार बार मीता समुझावै सतगुरु सेउ दगा नहिं खावै ।
जनि आसा वैकुंठ लगावै छिन्ने पुन्ने फिर भैं आवै ।।

पदवी अटल संत का ज्ञाना बिनसै मंडपु ससि औ भाना ।
ले सति नामु होइ मनमाना किरतन नामु जगत बौराना ।
सोर करै पढ़े बेदु पुराना मानौ नटुआ देइ डिगाना ।
होई मुतनह नरक निदाना चाहै दामु जौन लगै प्राणा ।
दुज छत्री बनिया जुरि आना करम फांसि का मता डिढ़ाना ।
हंसि कै बांधे मरमु न जाना काल गाल के भये चबेना ।
विस्वा अगम तरत जहां प्राना देखौ बूड़े जाति सयाना ।
जन मीता का करै बखाना भैंसी पदमनि मेढुक दाना ।।

बदी खाना अब जनि जाये बन्नी खाना सुनिले मूरुख घर जाना।
कंठी माला मन माने परिहै पैड़ यही बाने।
अरध नामु का ना जाने—पाखंड भेखु रहे साने।
खांय मिठाई औ पाने जमु कांड़ी जैसे धाने।
कथनी कथते बिनु ग्याने इनका पूजै नादाने।
जागे ते हम पहिचाने परदा खोली मरदाने।
पांच पचीस कैद आने बिन खाडे किया घमसाने।
चरन कँवल हिरदै आने मीता हमरे ई बाने॥

ले मन हीरा मोलु सतगुर साहु का तन मन धनु कै वारि लगावै वार का।
करौ दीनता दाम दलाल का सौदा अलख अमोल लगो येहि काम का।
काम-क्रोध्र-मद लोभु तजौ बिखु बारि का जेहि बंधा संसार विसारा रामु का।
कहि मीता सत भाव ह्वै निस्तार का चतुराई है खोटि मिलावै रामु का॥

जियरा साकठु देखि डेराई भजन भंग परि जाइ होई अनन्द संत की संगति सकल व्याधि टरिजाई।
व्याधा कालु सदा रहै साकठु हरि चरचा न सुहाई तिनके संघु कबहु ना बैठो राखौ रामु बचाई।
बिखै विकार सुनै हितु चितु दै मानौ नौ निधि पाई तिनकी नरकपुरी है बासा कुमिता लीन्हैं जाई।
दुनिया है बेदरद कसाई इनका का समुझाई मीता बनिजा नामु धनी का नफा भली घर आई॥

हरी की भक्ति करौ रे भाई और अथी अस नाहीं पदवी अटल मरै नहिं कबहु दीन गरीबी पाई।
गुरु का सब्द रसाइन पूरा जो राखै ठहराई अनभै की टकसार परति है अकइस पर पतिसाही।
माया संघु गाई ना जइहै तू का रहा लोभाई या तो दिना चारि की संघी ना येहिका पतियाई।
अंतकाल का है दुख भारी जब जमु घेरी आई बाचि जाय एकु सत्तिनामु ते मीता भली भलाई॥

संतो का तोरा बांका है सोई रंक सोई राजा है।
पाखंडी का भरमु ना राखै सांचा ढिगु बैठारति हैं।
ऊपर दीन गरीब रहति हैं भीतरि जोरु जनावति हैं।
मानौ सिंघु सैलु ते उतरा नजरि ना कोई लेवति हैं।
कलहु ना करैं रकत ना काढ़ैं ग्यानु तेगु ते मारति हैं।
कटुक सहै तेहि पार उतारै बहुरि न भरम जल आवति हैं।
जन मीता तिनही का बंदा और दुनी नहिं चाहति हैं।
पीतम मिला धनी सा जिनका कौन रही उसवासा हैं॥

गुरु का सब्द पावै सोई जाके सांचु दिल मां होई सांचु बिना सबु बूड़ी दुनिया अन्तै मरिहै रोई।
छाडु बन्दे बदी दिल ते पाक या तन होई दीन का है आपु साथी दीन बिरला कोई।
बेदीन जी का जबै करता कुफर कैसा होई दीन का मत मेहर दाया बन्दगी ढिढ़ होई।
खूनी-खराबी गजब के तर न्याउ आखिर होई कहै मीता समुझि चलना दुनी है दिनु दोई॥

पदु उपदेस

ता का संसा मुक्ति होय की का संसा जो संतनु संघु है बासा ।
उनकी सरन रहै लै लाये जमु का झगरा देहैं छड़ाये ।
आनि देव मैं जानौं नाहिं सतगुर साहेबु अन्तर नाहिं ।
ऐसा दाता और न आय इनकी आस सदा सुखदाय ।
कोउ प्रागै कोउ काशी जाये कोई उड़ैसै सब संघु खाये ।
हम सेये सतगुर के पाये अभिनासी जे देइ मिलाये ।
मन मेरा चला अजुध्या जाये हुआं करता का खोजनि आये ।
हुआं का चला दुवारिका जाये सोई अजुध्या सोइ हुआं आये ।
दसों दिसा नल धावा जाये करता का कहुँ खोजु न आये ।
संत संगति सहजे मिल जाये तिनका मूरख देखि लजाये ।
मीता तिनका कौन सुभाये रहनि उनमुनी लखे न जाये ।
सखी सखी के लखै सुभाय औरे नल की गम्मि न आय ।।

नल चेतु अचेत भक्ति बिना सठु होइहै प्रेत ।
बीता जलमु बिखै के हेतु कालु गही जैसे रवि का केतु ।
मूठिक अन्न दुखिन का देतु पर घर मूसै काटे खेतु ।
मुक्ति भुक्ति का करै विचार केहिका होइहै नरकु दुआर ।
कपरा उजरा खाते पान माते रहैं को हमैं समान ।
बिनसि जाति ना लागी बार कहँ गई काया कहँ गये प्रान ।
सूकर भला भला खर स्वानु मनु मैला नहिं कौने काम ।
जन मीता या कीन बिनान इनके संघु भजन की हानि ।।

तमाचा पाखंड़ पर

दीनता भागि बड़े ते होई धन्नि धन्नि घटु सोई काह भये सबु का सिर नाये भीतरि भरी भँगोई ।
सुनि सुनि नवैं बहुत सठु लागे सांचु बिना का होई जैसे मोर मिऊ दै बोलै बिखहर लीले लोई ।
ऊपर पाखंड भेखु बनाया हरि ते काह छपोई काल जंजाल जालु गरे डारी जगु ठगियन कै लोई ।
सांचे सुज्जनका गुरु मिलिया तहाँ न दुबिधा होई कहिमीता संतन ततु लीन्हा साकठु लीन्हा छोई ।।

पदु संत की रहनि

रामु का भगत जगत ते न्यारा उतरि गया भै पारा पापु पुन्नि दोनों परे त्यागे जीवन नामु अधारा ।
जैसे रंकु देखि धनु राजी ऐसे उनके रामा होय खुसाल छिनौ छिन निरखै तेहि निन्दै संसारा ।
सतगुर सेये होय सनीपी छूटि जाय जमु द्वारा कंठी माला गरे न डारै ई पाखंडु व्यौहारा ।
मीन नीर केहि पियति न देखी रहती है मझिधारा ऐसे ज्ञान-ध्यान कहै मीता ज्यौं नारी व्यौहारा ।।

भजन कै कौन तरा मोरे भाई कहिअति है समुझाई तरे कबीरा औ रैदासा सतगुर की सेवकाई।
कहँ लौं कहौं अनेग तरे हैं का गनि देउँ बताई भजन करै का मारगु न्यारा दुनिया मरमु न पाई।
अरध उरध मां आसन माड़ा पाँचों पकरि मंगाई खुली केवारी पच्छिम सहजे रवि शशि कुंजी लाई।
तहँ नहिं माला तहँ नहिं कंठी डारै गले बलाई ततु का तिलक मुक्ति की माला जन मीता पहिराई।।

रहनी रहु रीझै रामु गुसाई ताते होय सबै कुसलाई।
नाहित कालु जालु गरे डारी हुआँ कथनी काजु न आई।
छल छूद्र कै तरा चहति हौ नरकै केहि पठाई।
साँचा साहेबु अन्तरजानी तिनते काह छपाई।
जैसे ससा मूँदि कै आँखी रहता हवै छपाई।
आये वधिक 'मारि गहि लीन्हा ऐसी तुम चतुराई।
आपु न बूझै और बुझावै करनी कीई न जाई।
कहि मीता ई जैसे नटुआ चौहट सोर कराई।।

छकाय गया रे मोहि मतवलवा छकाय गया रे।
या मतवलवा की दरुवा पर चाखति छूटे सकल जंजाल।
हरी हरी बेचौं मैं कुंजरिन मेथी पलकी खड़ी दुकान।
स्वावा चूका बहुत बिकाये हमरी दुकान तौनु न आये।
लेरे कुंजरवा दरुवा आय तुम्हरी माय मनुस का खाय।
रहै धींग तन नहीं डेराय फिर फिर धरै सासु के पांय।
कहि मीता है पदु निर्वाना जो या बूझै सोई सुजाना।
कहु ज्ञानी या कौनु गियाना सखी की सैन सखी कोइ जाना।।

बनिजु किया राम नामु का मोलु मनुई दिया रे।
कामु-क्रोध दिया पसंधा टारि छूटी कुल की तबहीं गारि।
पाँच पचीसों बैलु लदाये हरदम हाँके बनिया जाय।
नाम भार गया जीव विकाय जी का गहकी आपुइ आय।
पाई नफा भया सन्तोष जलमु जलमु की उपजी टूटि।
आगे जाउ नफा नहिं टूटी अलख मिले ते भै गया छूटी।
मैं उनमां की उइ मो माही जान परति इतनी अव आये।
कहि मीता कुछ अचिरिज आय अबु ना धरिवे धरती पाय।।

पदु अरज साहेब सतगुर से

ताते करिये कौनु बिचारा मेरे सतगुर प्रान अधारा मोहि भै ते करौ निनारा कठिन कालु कुल्हारा।
नित करता ध्यानु तुम्हारा नहिं अनत हवै निस्तारा तुम दीनन के रखवारा भले खेय लगाये पारा।
नहिं दानी अस दरबारा जे मिलावै सिरजनहारा तन मन धन करिये वारा जाते जुगनजुगन निस्तारा।
जन मीता करै पुकारा एकु सुनिले सुखुन हमारा अब बूड़तिहों मझिधारा मैं हौं गुनागार तुम्हारा।।

साधौ या विधि नामु संभारो जाते कालु जाल निरुआरो।
काह भये रसनाके टेरे वा तौ नामु निनारो।
उजला सो जो मनु का धोवै होय रहै रामु पियारो।
देखत का बकु ऊपर उजला मीनै का भछि डारो।
सधकठु चेति भेखु धरि भूला या पाखंडु का द्वारो।
सतगुर का मत भेखु न पावै सतगुर तारन हारो।
छानु किया निन्दा नहिं कीन्हीं निन्दक का मुंह कारो।
कहि मीता या सत्ति सब्द है भरम की भीटि उदारो ॥

करु करनी का कथै गँवारा बिन करनी कथनी है खुआरा।
जैसे गल्ल करै मतवारा मारु खाय भे दामु खुआरा।
अरध नामु का मता निनारा बिरला पावै गुरु का प्यारा।
मनु बसु करै पाँच का मारा अगम पंथु का तिन पगु धारा।
तहाँ खाइ ना पवरि पगारा सात समुद के है वा पारा।
काया नगर बड़ा विस्थारा तहाँ बिराजै सिरजनहारा।
कहि मीता जो होय हमारा तिन्है मिलावै निजु करतारा।
अपना आवागमन निवारा अबु तौ मिले करै को न्यारा ॥

पदु प्रेम उपदेस

अब मैं करिहों देहि बिदेही आखिर होइहै खेही चरन कवल माँ जीवनि मेरी औरे जानौ नांही।
मैं चरनन माँ चरन मोहि माँ जानि परै नहीं मोही अनभै कथा भई रे भाई का बतलाऊं तोही।
इया बिचारी दुरमति टारी भली बनी है येही कुंभ का नीर सिंधु माँ मिलिगा भिन्न कहाँ ते होई।
कीने दायजु आतम बेही पदु लो परम सनेही मीता आवागवन मिटावै सोई दास विदेही ॥

पदु संतन की पटौटी

आई सुधि मोही आई हंसा सतगुर दीन बताई त्रिकुटी माहै जमु का अमला आगे है कुसलाई।
त्रिकुटी माँ उजियारी दरसै सो लखि भूलि न जाई वातौ मारगु हवै सिलसिला पाउँ नहीं ठहराई।
निपटै झीन चालु है बाँकी अनभै कथा सुनाई पाचौं नारी जो जित राखै सहजे सहजे जाई।
बुंद माँ सिंधु समाय जाय तब जमुका फंद छड़ाई कहिमीता वा घरकी करनी हंस बिरल कोई पाई ॥

पदु कुमिता के ऊपर

को कागा का समुझाई को मन माँ मैलु लगाई हंसा निकट न जाई वा तौ मानसरोवर धाई।
हंसा नांघि समुदका जाई तहँ कागाकी गम्मि नांही जब कागा गोता खाई तब हंस उड़ा मुसकाई।
हंसा मुक्ताहारी होई वाकी चालु लखै ना कोई बकु ऊपर उजला होई मीन गटकवै सोई।
जन मीता बात जनाई पदु संत देहै समुझाई है औरे की गम नाहीं तुम समुझौ साधौ भाई ॥

निजु कै मरना होयगा यहाँ रहै न कोई का माया माँ रमि रहा जमु वहु दुख देई।
भजिले हरदम नाम का पूछै नहिं कोई सरन मवासी आदि की आखिर सुख होई।
धन दारा सुत ना रहै ना रहिहै देही अटल रहैं इक हरिजना दूजा नहिं कोई।
कैले आसा रामु की मित्था सब कोई मीतादास बिचारिया दुनिया दिनु दोई॥

तबुका करिहै चतुराई जबु कालु आय धरिखाई जैसे चूहा लेई बिलाई वाका थुकरि कतरिकै खाई।
तबु रहनी गई भगाई जब भीख मांग कै खाई जो किरखी ना कै खाई तेहि नरक होय बहुताई।
का भूला भेखु बनाई या भक्ति नहीं रे भाई या है पूरी ठगिहाई गुरु भेखै ना पतियाई।
जन मीता कहै समुझाई जनि डारौ जलमु नसाई तजि भेखु करौ सेवकाई सतगुर की सरनै जाई॥

हरिया छुअ मैं गहिहौ अपने धोबिया के संघु धोइहौं।
इक टकवा कै दरुआ मगैइहौ पिअत पियति छकि जइहौं।
रेहू दै कै माड़ी छड़इहौं आँच देइ उदगइहौं।
साबुन देइ भली विधि मींज्यौं अपना मन उजरइहौं।
रात पहर घाटु है चलिहौ पाँचौं न्यौति बुलइहौं।
ननदुली मरै डाह की मारी तिनका नहीं बुलइहौं।
मनुसै मारि पतीव्रत लैहौं यहै धुवाई पइहौं।
मीता धोबिन मैं मतवाली किसना निकट न जइहौं॥

उपदेस सुजन का

सोई जानै रे जोगु जुगति जो जागै रे।
ब्रह्म अगिन अन्तर पर लागी गाउँ परौसी वसकित छाड़ी।
त्रिकुटी मध्ये जो उजियारा सुन्नि पसार भरमु कै जान।
तहँ हंसा जमु रोकै प्राण छूटै का है आगू ध्यान।
सुरति निरति ते गहु एक तार पाचौं नारि एक घर आन।
सहजे सहजे करौ पयान पूरे गुरु का करै बयान।
जब ही बुंदे सिंध समान तब ही मिटिहै आवा जान।
कहि मीता या पदु निर्वान हंसा करेऊ बचन परमान॥

खोजु दिल माहीं मिलै हरी गुरू की बाहीं तीरथ-नीर पखान-मूरति तहाँ कुछु नाहीं।
बोलता सो कौन है या समुझि मनु माहीं लिये मजलिस बैठा सोई आदि जो आही।
बोलता नहिं आय साहेबु झनक या आही कोटि भानु छबि वारि डारौं देखि ले ताही।
बिना सतगुर भरम मरना होय थिर नाहीं कहै मीता का करै नल बूझि है नाही॥

कैसे जइहौ रे जो न जिहाजै पइहौ रे ।
आगे नहीं जिहाजो जाये डोगुवाँ कैसे तहँ ठहराये ।
आगे लेउ विहंगम ज्ञान उड़ि चलु सात समुद के पार ।
मानसरोवर हंस मिलान और पखेरू तहँ नहिं जानु ।
बिनु लेझुरी ज्यों पनियै जाये ठाढ़ी जगत करै पछिताये ।
का भये नैनन अकटक लाये सूने घर जैसे पाहुन जाये ।
अन्धा अन्धे का समुझाये दिस्टिवंत का ना पतियाये ।
कहि मीता जगु बूड़ा जाये सांचु तजै झूठे लपिट्याये ।।

पदु भेखिन ऊपर

नहिं नहिं संतन पंथु चलाया ठगियन दुनिया का भरमाया ।
भेखु धरी धरि ठगि ठगि खाया चले नरक का अपने पाँया ।
दास कबीरा नानिक नामा दादू नहीं चलाया ।
रीझे ते किय आपु बरोबर तिन नहिं भेखु बनाया ।
जाति-पाँति ते छूटि गये तबु भूखे मूड़ मुड़ाये ।
साखी-पदु बहुते सिख लीन्हें पंथी नाउं धराये ।
संतन का बदनामु करति है झूठन झगर लगाया ।
कहि मीता ई हरि के चोरा जानी जिन गुरु पाया ।।

बाबा या वैरागु कठिन हैगा जब पांचौं का मारैगा ।
करै पचीसो सेवा ठाढ़े तब हरि के मनु मानैगा ।
कोटि कोटि पगु तीरथु तिनके सो तीरथ ना जावेगा ।
तूमा गुदरी सेली टोपी तिनका दूरि बहावैगा ।
संतन का मत बहुत गरू है पाखंडी ना पावैगा ।
भक्ति भेखु ते रहै निनारी सांचुइ सांचु पुकारैगा ।
बाँह पकरि सतगुर पदु दीन्हा बहुरि न भ्रम जल आऊँगा ।
कहि मीता मेरा सांचा साहेब तिनही का सिर नाऊँगा ।।

करु संत संगति व्यौहारा जाते उतरै भै जल पारा ।
जनि नल तन जुअना हारा गहु नौका नामु अधारा ।
तीनिउ पुर कालु पसारा ताका कठिन हवै बहु जारा ।
अब के कै ले निरुआरा ऐसा जलम न बारमबारा ।
सुर नर मुनी करैं पुकारा जबु लागै बज्र कुल्हारा ।
है अंत काल दुख भारा ताते हो अब ही होसियारा ।
जनि गाफिल रहै गँवारा है झूठा जगु व्यौहारा ।
ले निजु कै मता हमारा कहि मीता बारमबारा ।।

जगु का जारों या व्यौहारा मोहि लागै अतिरिज भारा ।
सतजुग त्रेता और असुर ते कलजुग द्विज संसारा ।
माँस मछिरिया मुँह माँ डारै लै बूड़ै परिवारा ।
तेहि पर फाटि परै कुलु नाई मोहि जनि छुऐ चमारा ।
जो डोमरा सो तोहि विचारा सूद साद केहि करता ।
यांकै साथु खाओ सब मिलि कै छूटि जाय सब झगरा ।
जो समुझै सो होइ रामु का जिन दाया का पकरा ।
कहि मीता एक संत संगति ते जो निवरा सो निवरा ॥

साधौ सीस दिया ना जाई ता गुरमति कैसे पाई ।
जो गुरु मता हाथु ना आई ता हरि का कैसे ध्याई ।
तबु निज ध्यानु कहाई जब मिलिहै रामु गुसांई ।
जो मिलै न रामु गोसांई ता कैसे दासु कहाई ।
का होइहै गुन गरुआई सिख कथा कवित बहुताई ।
बहियां बिनु कौनु छड़ाई जब झोटी धरि जमु घिसलाई ।
जगु है तूमी करुआई का खम्हरे होय मिठाई ।
जन मीता चले बचाई ना बिमुखन का मुँह लाई ॥

मंगल

गुरु का सब्द जब लागइ तब कुछु न सोहाय देहों की सुधि ना रहै जब मन फिर जाये ।
चोर साहु हो जाति है घर बनिजै आई नगरी उलटि बसावइ सब करै सहाई ।
लहरी उठइ ज्ञान की मोतियन झरि लाई जोगी पैठा गगन माँ सुख कहा न जाई ।
तलब छड़ावै कालु की पिउ भेटै जाय मीता मंगल गावईं पूरा पदु पाय ॥

और भरमु माँ ना परै गहु नौका सुक्रित नामुरे आदि पुरुष पहिचानिहै दिया सतगुर भेदु बताय रे ।
भरम उड़ैसा कासिया रे भरमु अजुध्या-प्राग बाहर है सो भरम है तू भीतरि के रंग राचु रे ।
जग्गि दान तपु भरमु है बिद्या वेदु पुरान माला छापा भरमु है भरम जटा औ छारु रे ।
अजपा अनहद भरमु है रे भरमुइ पवन चढ़ाय सुन्नि मंडिल सोउ भरमहै बहु आसन भरमुइ आय रे ।
गौमुख थेली भरमु है रे भीतरि माला डारि पाहन मूरति कुटी की सबु भरम की है माड़ि रे ।
पुरखिन पूजै भरम का रे तहाँ नहीं कोउ देव बकरी का गर काटते वा केहि तन कहै कि लेउ रे ।
नरक परै कुटुमा चला रे हंसी हसि डरिया खाँये ऐसा तो हिन्दू करै वा तो मुसलमान को आय रे ।
भरम पसारा तीन का रे बहा सकल जगु जाय मीता या दुख देखि कै तब रोये दिलौं बिच जाय रे ॥

सिरु दै हीरा लीन ता मोल अमोल का हीरा दिल दरियाउ तराना पार का।
पाथर हीरा ना होय या तो दामु का नैन निरखि कै लीन चला निजु धाम का।
किया अलख धन हाथु भये गुरु साह का सुफल भये सबु कामु मिला जब राम का।
अरझा जगु जमु जाल विखै के काम का विहसे मीता दास जागे भागि का॥

गुरू बाँह धरी नाहित जमु करता विथरी अब तो नइया पार परी राम चरन भजु कुसल परी।
बहुत भजनकै गये तरी आनिदेव ते काह सरी सिरजनहारा जेहि विसरी तिनका सूकर स्वानु करी।
अभिमानी की पैड़ परी का पूछै सठु भली घरी काम-क्रोध मां रहै भरी संतन देखत हंसी करी।
मारै बोकरी खाँय डरी और कसइयाका करौ विमुखनका हम देखि डरी मीता कुमिता दूरि करी॥

पदु परचै

कंचन काई ना लगे ना सार भये घुन खाय हो।
चरन कवल जो चित लगै तो का जमु करै रिसाय हो।
राना जहर घुराइयां हो दीन्हा मीरा हाथु।
अचै गई बिखु ना चढ़ा संतन की रक्षा रामु हो।
जन कबीर की छोरिया हो दरिया बीच जंजीर।
नामा की गइया जिई है ऐसी जन की पीर हो।
कहि मीता मन चेति ले हो सब विधि कारज होय।
आगे पीछे वे फिरै जो बन्दा सांचा होय हो॥

भरमि भरमि जल्म पदारथु खोये विखयन संघु रहा मन मोहे।
रामु विसारि कौन सुख सोये सीस धुनी धुनि आलम रोये।
हरनाकुस का पेटु फराये कहते रामु खरग लै धाये।
त्रेता रावण गरभु नवाये दस सिर छिन्न भुम्मि माँ नाये।
कालु कंस का तुरतै आये झोटी धरि मारे विलम न लाये।
जिन जस किया तिन्है तस पाये मारे असुर नामु बिसराये।
नांउ काहू का मारे माया या माया सबु जगत नचाया।
कहि मीता भजिले रघुराया अबकी बेर समौ भल पाया॥

साधौ संतन माँ अभिनाशी ताते चेति सबेरे जासी तन सोधे ते हाथै आवै मिले कटै जमु फाँसी।
नहीं दुआरिका नहीं उड़ैसै ना मथुरा ना कासी प्राग-अजुध्या तहँवा नाही भरमि भरमि मरि जासी।
जैसे मृग टिसना के देखत फिर फिर आवै जासी प्राण गये पानी ना पाये भई तुम्हौ गति ऐसी।
कहि मीता है भली गरीबी भये अमरपुर बासी सतगुर की सेवा के कीन्हे पाई सुखु की रासी॥

भला भया रे माया मोह टूटि गया रे।

टूटी सुमिरनी टूटी माला कंठी टोरि जपा सति नाम।

ततु का तिलक मुक्ति की माला सतगुर साहेब दिया इनाम।

या बाना का मता अपार पहिर जुहारे राजाराम।

फूंस फाँस का नाहीं काम बाँका संतों का मैदान।

उनके झुंड मिलै जो जाय जमु का अमला देइ छड़ाय।

काया जरि बरि होइहै क्षार ताहू का नहिं मानु गुमान।

कहि मीता सोई है जान निसि दिनु लरै धनी के ध्यानु॥

सोई पदु गाओ जाते बहुरि ना आवो।

अनहद बीन निरति करु मूल जलमु जलमु के मिटिहै सूल।

परलै परे बिनसि ना जाये और उद्यिम मोरी करै बलाये।

मन मारा जागा बैरागु अलख लखा जब खोजा आपु।

लागी उनमुनी छूटै नाये मानौ रन का जीते जाय।

जरा जाय जगु अपनी आँचु चीन्है नहीं झूठ औ सांचु।

अन्धा अन्धे का समुझाये दिस्टीवंत का ना पति आये।

दाबी दिये नरक का जाये कहि मीता को हटकै आये॥

पंडित लै बूड़ी पंडिताई बरन न काजे आई।

जग्गि दान और जुज्झि सुनावे राजन की चतुराई।

भैं सागर की खबरि न पाई गहिर ह्वै बहुताई।

तीनिउ बूड़े चौथे बूड़ति है चारिउ जुग्ग अथाही।

सतगुर सुरति निरति की पांजी पैले पार है थाही।

तनु करु नइया मनु करु करिया पांचो डांड लगाई।

मानि लेउ अतिवार हमारा सहज पार होय जाई।

अबके चूके ठौरु नहीं है जीव रसातल जाई।

सोई पुनीत सोई है पंडित राम भक्ति जिन पाई।

सोई ब्राह्मण जो ब्रह्मै जानै गरभ बासु ना आई।

कहि मीता सोई सूद्र सरीरा जहाँ कुमति बहुताई।

नाहक भूला जगत बड़ाई तौलि न काहुइ पाई॥

हरि सो प्रीति सांची लाई तबु दुरमति दूरि बहाई जब भै की भींत ढहाई तब भूला जगत रिसाई।

जहां है पांचौ की राई तेहि जमु ते कौन छड़ाई जिन पांचौ बांधि मगाई तेहि कालु न पूछै भाई।

मन चरनन रहा समाई अब धन्धा कुछु न सुहाई या प्रेम भगति कठिनाई तहां कंठी काजु न आई।

या भेखु भरमु रे भाई या मारगु कबहु न पाई सतगुर है गिरही माही जन मीत चले गोहिराई॥

पदु भरम टोरु

भरम गढ़ तूरि हम डारा लै ज्ञान का खांड़ा भरमु छापा तिलक कंठी भरमु जप माला।
भरम जटा भभूत सेली भरम तपु दाना भरमु जग्गी अचार किरिया भरमु ब्रत ठाना।
भरमु तीरथ भरम विद्या भरमु गुन ज्ञाना भरमु राग अलाप चारी बाजते बाजा।
भरमि सुनि सुन जरै सतिया पहिर के बाना मुक्ति कासो पावई लै जरी मुरदाना।
भरम पवन चढ़ाये उलटा मुनिन मन माना भरमु खोजे सुन्नि काया भरमु की ठाना।
भरम अजपा सुनै अनहद भरमु ना जाना भरमु पाहन कुटी मूरति पूजै नादाना।
मिले सतगुर भया अनभै सांचु मत ठाना भेटा पीतम मिटा आवनु भया मन माना।
कहै मीता सुनौ सुज्जन इहां नहीं रहना हद बेहद त्यागु दूनौ निकरि मरदाना ॥

मारगु

मनुआ रामु का जब ध्याई तब ममिता निकट न आई।
जब सतगुर संधि बताई तब सहज समाधि लगाई।
तब खोली वज्र केवारी भई कोटि भानु उजियारी।
जब जोति माँ जोति मिलाई तब कौन हमारे आई।
भई अमर लोक ठकुराई वा बिनसि न कबहूं जाई।
धू लोको तो टरि जाई हम बड़ी मवासी पाई।
या कठिन काम है भाई हिंया कूरा ना ठहराई।
जिन भक्ति पदारथु पाई ताकी मीता बलि बलि जाई ॥

पदु दुजन पर

पूजैका आतम राम जाकी कला कोटि शसि भाना का पाहन पूजै नादाना या कौनी कला ते माना।
पाहन पीतरिकी या मूरति नल ही ते उपजाना जिनका रचा सकल है आलम तिनका ना पहिचाना।
रामभक्ति बिनु पार न होइहो होई नरकमां जाना साकठ चेति सेउ हरि चरना छाड़िदेउ अभिमाना।
एक बरन के चारि बतावै झूठा परपंच ठाना कहि मीता हम हरि के चाकर सांचुई सांचु बखाना ॥

मंगल

कै लिया अगम विचारु तीन्ऊ गुन त्यागियां काम-क्रोध का मारि रामु रंग लागिया।
कठिन हवै वैराग ता भेखु ना पाइया बुन्दै समुद समोय ता दास कहाइया।
सतगुर दिया बताय ता भैदै पाइयां छूटी जमु की जाल ता आवन मिटाइयां।
जीवन जलमु बनाय ता मंगल गाइयां मीता भा निरसंस चरन चितु भाइयां ॥

मेहरि नजरि दिल आनु ता गाफिल ना फिरै भजिले सांचा नामु बुराई ना करै।
साई का औसाफ समुझि तोहि ना परै कै ले खुशी खुदाय सकल व्याधा हरै।
आखिर वहु दुख होय जोर जब जमु करै अल्ला देइ बचाय सांचु जो तू धरै।
मीता परी विचारि ता सोई पुकारई तारन वाला आदि और को तारई ॥

ले निज मता हमारा साधौ जलम दुहेला ज्ञान कुल्हारी काटु करम बनु मूलै करौ मिलाना।
जागै ब्रह्म नामु लै लागै खुलिहैं बजर केवारा बेदु-कितेबु तिन्है नहिं पावै मिलिहै सिरजनहारा।
जैसी करनी तैसी भरनी चढ़ु ज्यों मकरी तारा हुआं की रीति हवै भाई ऐसी आवागवन निवारा।
जमु का अमला नेरे न आवै कहिये बारमबारा जन मीता का भरम भगाना सतगुर की चटसारा॥

रे मूरुख भूला फिरै गवारा जानै ना तत्त विचारा।
रामचन्द औ नन्द कन्हैया ई नाहीं करतारा।
सिरजन हार सकल घटु व्यापक धरति नहीं अवतारा।
कोटि भान ताकी छबि पर वारौं जीवन प्राण अधारा।
मच्छ-कच्छ-वाराह-वावनो बहुत रचे कर तारा।
मूल विसारि डारु सठु ध्यावै करिहै कौनु उद्धारा।
मीता दास पट्टा लिख पाया रीझा सिरजन हारा।
अमर लोकु जागीर हमारी ऐसा धनी हमारा॥

गाइ ले मंगल चार छाड़ि चतुराइयां भजिले दीन दयाल सदा सुख दाइयां।
धन दारा सुत नारि कामु ना आइयां जमु का जोरा जोरु चेति तू भाइया।
कोऊ ना बचावनहार बिना रघुराइया सरना सोई संभारि मवासे जाइया।
मीता सोई सनीप अनत है नाहिया सतगुर देइ मिलाय रहनी ते पाइयां॥

पदु परचै

प्रभू दीन के हित दौरि आवै पलक ढिगते ना टरै पैज जनकी करै पूरी काह जगु तिनका का करै।
जहर दोन्हा घोरि मीरै पियाय राना कसि लिया हती कंचन बाचि उबरी खलन के मुख टरि परा।
दुजन जन सो टेकु बांधी पाहन गंगा मिच दिया काढ़ि लाई अजई माया दासु की बोली दिया।
पाहन कैसे आवै दुज का सांचु तो घटु ना हता सांचे का हरि सांचु कीन्हा झूठे का झूठा किया।
नामा का धरि कैद कीन्हा बादशाह गाढ़े धरा हता सांचा पैजु राखी समुझि मजिलिसी का परा।
भेखिन मिलकै कीन्ह चुगली कबीरका गोगा किया पतिसाहसो फरियादि कीन्ही तबउन जनका धरा।
हुलाया हाथी मारना चाहा रामु तो रक्षा किया सिंघु रूप दिखाइयां हरी पांऊ आगे ना परा।
जंजीर बांधि बुराया गंगा वारु जन का ना झरा कहि दास मीता सेइ समरथ कौन का पानी मरा॥

जाके रूप नहीं कुछु रेखा सो छवि नजरी आई रे।
हती अलख गुरु मोहि लखाई तन की तपनि बुझाई रे।
काया रूप लवाई रेखा सो साहब के नाही रे।
कयऊ कोटि ससि-भानु वारने सो संतन मन भाई रे।
काया काया एकु हवै सबु गुन छोटे बहुताई रे।
गुनन सुने ते काह भुलाना मूरति एक बसाई रे।
कहि मीता वा कंचन काया जेहि जेहि सुध जाई रे।
नहि तौ आय रकत औ मांसा जारो झूठ बड़ाई रे॥

मन मिला रे हमार कैसे कै नइया डगमगै आगि लगी नइया बची गुन जरिगे भार।
पांचों नइया बोरते सो खेवन लागि उन पायक सेवा करैं जब जागी भागि।
जोरे बहेतू मां परै ता बहि ना जाये जैसी रे चलाऊँ तैसी चलई राखौं ठहराय।
गहिरे उलटों समुझि कै धीरज धरि पाय नइया बूड़ै ता तरौं या निरगुन आय।
गरुई मत का केवटा लै पारै जाय सुमति सोहागिल तहाँ बसी गई कुमति भगाय।
पैले पार एक पीपरि रे मनु देखि लुभाय सुरति पदमनी बसि कीई तनु गा बिसराय।
पहिले दुख फिर सुख भया को लेई बटाय प्रेम बिरोगी ना मिले जो देई बताय।
नाउ नहीं नदिया नहीं या गुरमति आय कहि मीता पदु बूझिहै सो ज्ञानी आय॥

पदु सारग बानी

मनु रे बार बार समुझाऊँ तेरा मरम ना पाऊँ।
चंचल चपल हाथु ना आवै केहि विधि हरि का ध्याऊँ।
या संसार कांटु की वारी सो करु बहुरि न आऊँ।
मानुख तन तब गनौ पदारथ जो इतना कै पाऊँ।
करु सति संघु सेउ सतगुर का बिखै विकार छड़ाऊँ।
मूल गहो डारन का छाड़ो चरन कवल चित लाऊ।
सहजे सहज चढ़ो गढ़ ऊपर अभय निसान बजाऊँ।
कहि मीता सिरजनहारे सो अपनी अरजि सुनाऊँ॥

तौं मैं धोई लै आऊँ मन का तब पाऊँ हरि धन का।
सतगुर धोबिया खोजि मिलोंगा कूंड़ा करिहों तन का।
ब्रह्म अगनि अन्तर पर जारों दै साबुन सुक्रित का।
मूल घाटु बिन पानी धोऊँ मैलु कटै जलमन का।
लेउँ धुवाई सुमति मजूरी तब होऊँ वा घर का।
निरमल कै धनिया का सौपों देउँ चुनौती जमु का।
ताल तलैया पाउँ न बोरों मीता है सतिपुर का।
रामु रमइया ह्वै किसाना मैं चेरा ताही का॥

मन भजिले रमिता राम का पाहन सो काम भै सागर पाहन ना तारै तारन वाले राम।
तीरथ बरत करै ना सपने ना जग्गी ना दानु जो तू चाहै कालु ते छूटा सब्द हमारा मानु।
नृग गिरगिट बलिगये रसातल किये बड़ेबड़े दान दास कबीरा पार उतरिगा भजिभजि सांचा नामु।
और विचारु सपन मायाका भक्ति अटल परमान कहिमीता तू अबजनि चूकै जलमु ह्वै महिमान॥

पदु ध्यान उपदेस

एक पदु गाऔ जाते बहुरि नहिं आऔ ।
मूल कवल मां कीन्हा बासा मन मथि किया तौन परगासा ।
गंग जमन बिच सुरसरि धारा न्हाय चले जहाँ बैठे आपु ।
त्रकुटी मध्ये जमु का बासा छाड़ा सोंऊ भैइ कुसलाता ।
गाये बजाये भक्ति जो होई भांडु गुनी सब भगतैं होई ।
भक्ति हवै खाड़े की धारा माला गुदरी नहीं उबारा ।
का मूरुखु का समझाऊँ बूझै हंस तिन्है ध्याऊ ।
बाहर होय ता बतलाऊ मीता अन्दर रंग लाऊ ॥

पदु भेखपर

नल मूल धरो अमर लोक का सूल करो ।
तुम्हरा हियां नहिं हवै उबारू चौदा लोक परा जमु जारू ।
का करै कंठी का करै माला गुदरी तुम्मा कौने कामा ।
सतगुर का मत अगम अपारा भूले भोदुआ फिरै गँवारा ।
उतते आवै इतते जायें मेला घर घर माँगे खाये ।
मूड़ मुड़ाये भांडु होय जांये तीरथ मां कोऊ तरई नाय ।
भक्ती भय की पारै बाट झूठो तारी लावै हाट ।
मीता चीन्है अवघट घाटु अब ना चलै भरमु की बाट ॥

अवधू सब घटु आपु समाना छाड़ो जगु के ज्ञाना को नारी को पुरुष कहावै करिये तौनि बयाना ।
काया नारी ब्रह्म पुरुष है ऐसे सब उपजाना पाँच तत्व ते रचे सरीरा का नारी का नारा ।
इक पाहन के दुइ पिल कीन्हे भिन्नै भिन्न बनाये दूनौ एक भाँति जो बनते पीस कहाँ ते जाये ।
सिस्टी रचै का नारि पुरुष किया भिन्नै भिन्न बनाये एक माटी के दोनों भांड़े भीतरि एकुई नाये ।
नारी छिन्न होय सुत जाये पुरुखु भोगे नारी एक ते एक छिन्न भे दूनौ माया के विस्थारी ।
आदि पुरुषका दोऊ विसारा भूले मोह मायारी कालु की मारु तरे दोऊ आये सकै कौन निरुआरी ।
सतगुर सेये होय उवारा का नर का नारी राह बताय दई वाचै की छूटि जाय जमु द्वारी ।
कहि मीता हम सब्द सनेही का नारी का नारा जो कोई होय हमारा जगु मां तिन्है करै भै पारा ॥

पदु ध्यान का

आये सतगुर साह पूंजी मोहि दै चले दिनु दिन बाढ़ी होय भागि पूरे जगे ।
मूल दुआरे बइठ छिमा ढिढ़ कै धरै लिंग लगोटा बाँधि अगमपुर का चलै ।
लागी सुखमुनी डोरि फन्दा काटे सबै सुरति निरति का साधि पिया का रिल मिले ।
जन मीता मन पाये ता सुख सागर भरे आवागवन मिटाया सति संगति करे ॥

पद्ध उपदेश

कोई जन भजै बिरला राम जहाँ सत्य है परमान सीस उतारि धरै गुरु आगे पावै नौका नामु।
सुरति निरति लै खेइया सोइ खेइ लावै पार भजबु अैसा कहै वन्दे साधु सुरसरी धार।
परम सुख है भक्ति माँ नल अटल जुगन जुगान अबहू तबहू पाइयां सचु मिला अनभै धाम।
कहे जिभ्या काह भये हरि रटे आठौ जाम, माला फेरति फेरु लागा रहा न्यारा नामु।
कहा कूही जगत भूला सरा ना कुछु काम संत संगति करति नांही कौन लावै पार।
सुअना पढावति रीझिया, गुरु दिया सांचा नामु जपत गनिका पार उतरी मिटा आवा जान।
अधम नाहीं तरे कोऊ पूरब के बरदान मिले सतगुर काढ़ि लीन्हा झूंड़ आपन जानि।
कहै मीता मानि ले सचु पाइहै विश्राम ना मानि है ता जानि है है कालु निगा मान॥

पार ब्रह्म केसे कै पावै सोइ कहो तुम ध्याना रे।
खोजि मिलै सो संत सुजाना सोइ अलमस्त दिवाना रे।
गरभ वास तिन ही प्रति पाला अंत आये सोई कामा रे।
खसमै छाड़ि औरे ध्यावै तिनका नही ठिकाना रे।
सिकता पेरि तेल का चाहै या मुर्खो का ज्ञाना रे।
पानी मथे तत्तु ना पइहौ गुरु बिनु मिलै न ज्ञाना रे।
नल तन पाय अविरथा खोये सोइ सोय ना जागा रे।
कहि मीता सोई जग जागा राम चरन जो पागा रे॥

जलम जाति जैसे वोरा रे तोरा मोरा कहाँ रहेगा।
तोरा मोरा छाड़ि अवहु तू भजिले साहेवु मोरा रे।
काह भये हय-हाथी बाँधे दौलति दाम घनेरा रे।
अंत काल कोइ साथु न चलिहै ताते चेतु सवेरा रे।
बहु कुटुम्ब बहु नाती पूता या माया का घेरा रे।
जब धरि काल त्रासिहै तोहीं कोऊ न आई नियरा रे।
हरि करु मीत कालु का करि है सुख पइहै बहुतेरा रे।
कहि मीता नल जलमु दुलम है चूके दुख बहुतेरा रे॥

अंखियां लागत लागत लागी प्रेम-प्रीति रस पागी।
पाया भेदु सखी सुज्जन का खोलु घुघुट पट नाची।
छबि तरंग पी लगी खुम्हारी मजलिस टरति न टारी।
जैसे बूंद परा सागर मां ताको कौन निवारी।
मीन तो होति जलौ ते न्यारी ये नहि होती न्यारी।
अचिरिज के गुन काह बखानौ गुंगा का गुर भारी।
लगी लगन सोई पै जानै बैदा टोवै नारी।
कहि मीता या प्रेम विरोगिन का जानै संसारी॥

गुरु का सब्द सत्ति विचार सब भरमु का तजिड़ार सेवो संगति तत्तु भेदी तरत नाहीं वार।
साधु सुक्रित मारु पांचौ लागि ले एक तार बेधि रवि-ससी पार पहुंचै छूटिहै जम जार।
बार बार पुकारिया है भक्ति भेदु निनार भेखु धरि-धरि जगतु भूला चले जुअना हारि।
कहै मीता सुनौ साधौ कालु करिहै रारि कौन पाराकर्म करिहौ नरकु दैहै डारि।।

मंगल

सतगुर भेद बताये ता अलख लखाये हो मोरे मन भया अनन्द तो मंगल गाये हो।
कुमति गई तजि अगना सुमति घर आइल हो जागा पूरन भाग ता संसै छडाये हो।
सुर मुनि गंध्रप-जग्गी पार ना पावै हो सो संतन की सेऊ सहज ही पावै हो।
अब घर लगै सुहावन आये भावन हो वारे करिहों प्रान मीत भये पावन हो।।

ना मैं जाउँ उड़ैसै ना मैं कासी हो भटकै मोरि बलाय मिले अभिनाशी हो।
टूटी जमु की फांसी भइन जब दासी हो सेये सतगुर साह अमर पुर बासी हो।
तीन लोक भैधार तहां ते बाचिन हो बूड़ि जाय संसार होय दुख हांसी हो।
हटका रहै न कोय मीत कहै बानी हो झूठे जगु पतिआये सांचु को मानी हो।।

हरि का खोजिये दिल माही हैं आपु तुसही माही, सेउ सतगुर भेदु पावै होय सबु कुसलाई।
बिना खोजे सबै झूठी भरमु जपु-तपु माहे जग्गी-दानु ना कालु छाड़ै करम फाँसी आये।
पापु-पुन्नि दोउ चलै चक्की दररि तिस मां जाये गहो कीली नामु सांचा निकरि साबित जाये।
कहै मीता ढ़ोलिया हम ढोलु दीन्है जाय अबके गये ना बहूरैगे चरन परसै जाये।।

गुरु गहु धोविया तू जाय, तन मैलु सब कटि जाये, जीव वस्तर करम मैले ऊजरे कै लाउ।
लाउ साबुन सरस सुक्रित ब्रह्म आंचि दिखाये, मूल पाटा ठोकि धोबी पवन जल फैलाय।
अकिल पटुली सुमति मोंगरा चित्त खैंचि लगाऊ घरी कै कै बाँधु अवतू मैलु देखि भगाये।
ताल पोखर करम भैजल तहां तू जनि जाय कहै मीता धोबिया सोई धोई जो अस जाय।।

गुरू सब्द पावै सोय जाका ग्यान निर्मल होय दीन होय अभिमान त्यागै सीस तुरतै देय।
कथे कथनी का भये मनु रहा विखयन मोहि कुमति वांवी नागु गुंजै भक्ति कैसे होय।
दुई तरवारी म्यानु मां एकु नाहिं देखै कोय भक्ति कुमति ना ऐकु रहई समुझि ले नल लोय।
मीता दुविधा दूरि कै चित रहा चरनन भोहें लोहरा-बढ़ई का लखै चले पूँजी खोये।।

गौरी

मैंतू छाड़ि दे नल वौरे परी रहूगी न्यौरे, ससरे के लोगवन का चीन्हौ छिनु छिनु पाँऊ परौ रे।
ससुरे की सीतल है बानी ताकी चालु चलो रे स्वामी सेऊ पतीब्रत पावै भली कहावै तौरे।
बिना खसम दुलहिन कैसे होइ हो तौनि हकीकत कहु रे छिया छिगूरी ससुरे होइहै नैहर आगि लगै रे।
कांजर सेन्दुर दै कै बैठी देखो आन हिवो रे कहि मीता एकु दुलहिनी आई व्याहु भया नांही रे।।

हो सांचे सांई चरन सरन कै लीजिये।
काम क्रोध ते करौ निनारा सुमिता मोहि का दीजिये।
हय-हाथी दुनियां की सोभा बलु पसुवन का दीजिये।
जन का दीन गरीबा चाही जाते नामैं लीजिये।
बहुतै तारे बहुत उबारे अबु मेरी सुधि लीजिये।
कामी कुटिल देखि जनि छांड़ेऊ येहितीं अरज सुनि लीजिये।
हक लौ कहों निपटु मैं मैला जलमु जलमु जे कीजिये।
लेखा किये कौनि विधि छूटौं कौनि उपति ऐसी कीजिये।
बंदी छोरि नाउ सुनि आये बूझि परै सो कीजिये।
ऐसा और कौन है दानी जाकी आसा कीजिये।
अबु ना भरमि मरौं चौरासी जस इतना कै लीजिये।
मीता दास दुआरे टेरै हंसि कै बहिया दीजिये॥

मनुआ सींचु अमृत बारी जाकी आस करै तिपुरारी।
दे पांचों कुंअना डारी तबु भली होय उदकारी।
कुंअना भीर हवै बहु भारी लेझुरी धरौ संभारी।
ध्यान कियारी भरु विवेकु कै, तीन गुनन दे ढ़ारी।
पुर करु प्रेम पानी का भरि ले खैंचौ सुरति संभारी।
चाँद सुरज के बीच नवायऊ फल लागी बिनु बारी।
सो फल चाखि मरै नहिं कबहू निरगुन कहा बिचारी।
जन मीता का संसै नासा लागी प्रेम खुआरी॥

भजिले रामु गरभ ना आवै अजर अमर होय जाई रे।
ऐकुई रामु दूसरा नाही सब घटु रहा समाई रे।
करु सत संघु खोजि जो पावै मारगु देइ बताई रे।
बिना भेदु रामै ना पइहै का भये माल फिराई रे।
भूला जगत मरमु ना जानै साँची कहे रिसाई रे।
झूठी कहे बहुत सुख मानै तिनका को समुझाई रे।
दाबी देइ नरक मां कूदै हटकै मोरि बलाई रे।
मीता खोजै अंस आपना तिनका देइ जनाई रे॥

भेखु पाखंड पर

दुलहनी ब्याहु भया है नाहीं गौने का के आई, नाहक काजर सेन्दुर दीन्हा घिन काहे ना आई।
कुंआरी कन्या तीतुर जाया पेढुकी धोवन आई-छेरी बरा पकावन लागी-महिखी पारमु लै आई।
तीन-पाँच मिलि जीवन लागे भली जेवनार बनाई छिया छिया धोबिया गोहिरावै बकुला करै बधाई।
पिया के पास गई जो होइ है सो या भेदु बताई कहि मीता या सैन सखी की कुंवारी मरमु न पाई॥

मनु होइले महरा नामु जाते जलमु धरै ना आन।
पलक न लागै सुरति न डोलै लागौ आठो जाम।
सहज की सिढ़िया पाउँ धरु चढ़ि चलु पहुचति लगै ना वार।
त्रिकुटी तरे संधि तहां नै चल जैसे नवति कमान।
तहां एकु पुरुख बैठा है मौनी बिनु काया निहकाम।
सोई ले भेंटि होइ सोउ तोहूं जिनका सकल पसार।
मारु तूर कुछु उनके नाहीं ई तो नल के काम।
कहि मीता उइ पालन हारे का जानै संसार॥

कोई जन करै ज्ञान का तोरा जिन मारे पाँचो चोरा।
करैं पचीसों सेवा तिनकी सोई संत है पूरा।
हंस कागु की बानी विचारै छपै न पूरा कूरा।
पाखंडी का भरमु न राखैं तीरथ करैं न फेरा।
रहनि उनमुनी ज्यों मतवाला जगुते रहै निनारा।
लोग कुटुम सबही मां खंभरा तिनका अगम विचारा।
अमर लोक जागीर संत की अमल टरै नहि टारा।
कहि मीता उइ देखि सकै नहि छल-बल का व्यौहारा॥

पांड़े कौने दीन बड़ाई जनि तू भरमु भुलाई।
काह भये राजन के थापे या सपने की छांही।
जे ब्राह्मण का हरि जिउ थापा सो ब्राह्मण तुम नाहीं।
वा ब्राह्मण रैदास कबीरा-पीपा मीरा बाई।
तुम सा दानौ और कौन है नाउ धरा कुल नाई।
मारि बोकरिया खाउ सगौती कैसा होय कसाई।
चित्र गुपित्र करी जब लेखा पूछे जुवाबु न आई।
सूकर स्वानु छिनक मां करिहै होइहो मीत चले गोहिराई॥

नल काह कथै बहु ज्ञाना अैसे ना मिलिहैं भगवाना।
तेरा बकुला सा ध्याना मीन निगलति हम जाना।
जिन दया सांचु ना जाना ताका होइहै जम पुर जाना।
घटु घटु है आपु समाना तासो करिये कौन छपाना।
बहु बूड़े नल अभिमाना ताते गरद मरद होय रहना।
है माटी मां मिल जाना तजि बिखै भजौ भगवाना।
तन धन का कौन गुमाना या करते मुरुख नदाना।
कहि मीता दीन भये दाना तिन परमु तत्तु पहिचाना॥

पिया सो विमुख भई रही आनि लै सोय कोतवलवा धरि लै चला अब धौ कस होय।
पियाका मरमु ना पाइयां री काजर दिये का होय अनेग भतारी मांगनी तासो पतियाबरतु ना होय।
चोलिया पहिरे लील की री गरे पोत झमकाये कांचु की चुरिया पहिर कै कस ऐंढ़ी ऐंढ़ी जाये।
कहि मीता ब्याही नहीं है दुलहिनी देखो आये एक अचम्भो मैं सुना बिनु कहे रहा ना जाय ॥

सतगुर की सरना गये ना करिहों फेरा कुंजी पाई अगम की अन्दर भये डेरा।
स्वामी का सेवक मिला ऐसा मत मेरा कुंभ नीर सागर मिला को करै निवेरा।
अब जमु जोरा का करै समझावो मेरा ज्यों दरपन की कामनी का लूटै चोरा।
मीता का संसै गया जबु साहेब हेरा कासी फांसी जीव की ना जायो नेरा ॥

अब रंगु लागा रामु सनेहा छार होय किन देहा।
जी किन जाये मनौ धनु वारौं जाइ न हरि जी का नेहा।
तजौं लाजु जरि जाइ बड़ाई मोरे मन आई येहा।
बार बार गुरु की बलिहारी जिन किया देह विदेहा।
कोइ पाहन कोइ पीतरि पूजै कोइ तीरथ कै मोहा।
जो जहँ फंसा तहैं तहँ बूड़ा मोरे मन होय सन्देहा।
पूरन ब्रह्म कोऊ ना खोजै निकरै सूई बेहा।
कहि मीता जगु भरम भुलाना लीन्हे क्रोधी तेहा ॥

माया पर उपदेस

हम तो रहन रामु की सेवा तुम कस कीन ठगहाई री।
तू माया चितवति मारति है तोसों कौन मिताई री।
रकत माँस तेरे तन भीतरि इल्लति भरी बहुताई री।
कहु तू कौन ठांउ की लोनी जो हम तन बोलियाई री।
तेरे मारे ते मरि जइहैं जिन्है मिले हरि नाहीं री।
हम तौ सतगुर का मत पाया बारु न बाँका जाई री।
भोगि करै औ लातन मारै हम तौ जगु के नाही री।
पार ब्रह्म सो चितै चितै जन मीता लहरि न आई री ॥

नल रे चलने लागे साथी छुटिहै बेटा नाती।
दंत गये नैना भये धुरमिल सरवन ना सुनि जासी।
केस सेत भये मनु रहा कारा कुमिता अधिकी बाढ़ी।
टिसुना हरवल धावन लागी ब्याहन को मोरा नाती।
मेरी मेरी करति कालु चढ़ि आये लागे भले बराती।
नाती पूत निकट ना आवैं खानु लागि जैसे भाती।
कहै मीता माया रहे भूले दाया ना कै जाती।
अबु पुरिखा का कौन उबारै रौवै पूता नाती ॥

हमका गुरू मिले वैदु गोसाईं रोगु गये तन ताई छापा माला गुदरी तूमा पहिरि दुनी भरमाई।
मुक्ति पदारथु कैसे पइहौ रागु-द्वेषु गे नाही सतगुर मिले मिलै हरि हीरा तुमका ना पतिआई।
भेखु भक्ति का मारगु रोकै करै न कोई पाई इनते भिन्न होय औ खोजे तिनके हाथै आई।
बिना सांचु औ दीनदया बिनु रामै ना नलु पाई कहिमीता पिछले अंकुरा ते सबै काजु सधि जाई।।

मनु रे छाड़ि देउ चतुराई करु दीन दया सिर नाई।
गरद-मरद होय जगु बिच रहना या काया थिर नाहीं।
दीन भये ते सो पदु पावै ब्रह्मा पावा नाहीं।
बूड़ि गये सगरे अभिमानी बूड़े थाह न पाई।
गोरख भरथरी गोपी चन्दा सो पदु पावा भाई।
दास कबीरा औ सुलतानी सधना जाति कसाई।
कहि मीता गनती का कीजे पहुचे हैं बहुताई।
सोई संत-भक्त सोइ दासा जो ढूंढ़ै मिलि जाई।।

देखा सो दरियाव अजब तरंग है घटै बढ़ै ना बावरे मेरे संघु है।
न्हाय खोरि सीतल भये मिट गई मोरिउ तोरि है।
मनुआ तो निर्मल भया नहिन खोरि है।
लोन नीर मां ज्यों मिलौं जाय कौन निवेरि है।।

कब कबीर राखे जटा कब छारु लगाई कब पीपा कपरे रंगे छांड़ौ चतुराई।
कंठी माला कब गही जन सधन कसाई रैदास न छापु दिवाइया छांड़ौ चतुराई।
कब कमाल विद्या पढ़ी मीरा जग्गि कराई कब गनिका तीरथ किये छांड़ौ चतुराई।
दान धना जाट कब किया औ सेनी नाई कब दादू मौनी भये छांड़ौ चतुराई।
संतन का मत सांचु है हरि देइ मिलाई कहि मीता जगु पाखंडी देते भरमाई।।

जोग ध्यान जुगती

परेवा प्रणव संत का मारग बतलावै दुतिया दुविधा छाड़ि दे दुरमति सब बहि जावै।
तृतिया त्रिगुन गांठी दै धरनि बंद लावै चौथे मूल विचारि कै चितु डुलन न पावै।
पांचै पांचौ मारि कै तब जोगु डिढ़ावै छठहे चक्र छा वेधि कै सहजे धूनी लावै।
सतमी सुक्रित राखु तौन ढरकै ना पावै अठमी आठौ जाम तार भंडार भरावै।
नौमी निर्गुन नामु नजरि तोरी तब आवै दसमी दसवाँ द्वार खोलु तब घाटी पावै।
एकादस इकचित्त मकरी ज्यों तार चढ़ावै द्वादसि दोऊ वेधि सूर-ससि सिन्धु समावै।
त्यारसि तिरगुन छांड़ि तबै चौथा पदु पावै चौदसि चौमचि मेटि बहुरि फिर जगै न आवै।
पूनो पूरन कामु भे तेहि को समझावै जन मीता निरभै भये पंडित भरमावै।।

मूरुख भूला फिरै गंवारा जानै नहिं तत्तु विचारा।
भेखु बनाय निफर होय सोये जगि खाया संसारा।
या संसार अन्धा कैसे सूझै भेखु पूजि पूजि मारा।
संतन की हांसी करत हैं करिहै कौनु उद्धारा।
जहाँ नफा तहां पगु ना धरई घटी का करै विचारा।
पूंजी टूटी भली नल देही, ठेलि नरक मां डारा।
मीता करै पुकार दहू दिसि जानैगा जाननहारा।
चोरै के सब चाकर पहरू बूझै न सब्द हमारा॥

साधो ध्यान धनी का लागा तब मैं ममिता भरम भागा।
नींद भूख दोऊ खंडित कीन्हे रैनि-दिना जोगी जागा।
ब्रह्म अगिनि अंतर पर जारी लिंग लँगोटा बांधा।
काम-क्रोध का जोरु मिटाया तीनिउ गुन का त्यागा।
द्वादसी उलटि मंदिल मां डारा उलटति भये निमाना।
सुरति निरति का बेड़ा बाँधा ब्रह्म मां जीव समाना।
रवि-ससि वेधि चढ़ा गढ़ ऊपर बाजे अभै निसाना।
कहि मीता संतन सिर नाये पाया पदु निर्वाना॥

सो जोगी जो मनु गहि लावै केस न राखै क्षार न लावै।
ममिता मारि मंदिल मां लावै सो या नगरी उलटि वसावै।
होय निरसंक संका ना लावै बरति अगनि मां करम जरावै।
तार डोरि तब हाथै आवै अलख पुरुख का सहजे पावै।
गरभ बासु सो काहे का आवै कुंभ का नीर सिंधु मिलि जावै।
बड़े भागि ते या मत पावै विसनु-महेस तिन्है ना पावै।
सो जोगी तन तपनि बुझावै रजो तमोगुन निकट न आवैं।
सतोगुन काल चोटु ना खावै चलत हंस कुछु दुख ना पावै।
सो जोगी गिरही मां पावै भरमि भरमि टूका ना खावै।
सुमिता तपै कुमति ना लावै सो जोगी जग जीत कहावै।
उरध मुख जे पवन चढावै विखहर जलमु तौन फिर पावै।
कोउ कोउ उलटा पवन चढ़ावै अनहद सुनि सुनि भरम भुलावै।
बहुतै अजपा सो मन लावै बहुत सुन्नि मां दिस्टि लगावै।
बिनु सतगुर दीपक ना पावै भूले भोंदू को समुझावै।
कहि मीता मन मनै मिलावै, तिनका मता भेखु ना पावै।
हम सहिया होय जगै सुनावै ना मानी सो गोता खावै॥

अैसा और न दाता देखा जैसा दाता सतगुर साहेबु तुरत परम पदु देता।
जग्गि दान, तीरथ तपु देखा तरत न कोई देखा दीन भये तेई तेइ तरिया या में नहीं अन्देसा।
भेखु धरी धरि सगरे बूड़े निडर भये सजु मूसा पंडित कथा वांचि कै बूड़े सुनिले आय सन्देसा।
नृग गिरगिट-बलि गये रसातल-दुर्वासा तपु देखा, चक्र की ज्वाल तिहूपुर भागा भक्ति बिना या लेखा।
संत पुकारि गये सब सहियां गुरु परताप सोइ देखा बूड़े ते हमहू मझि धारा गुरु राखा गहि केसा।
कहि मीता अतिवार मानिले बसो हमारे देसा अमला देइ छड़ाय जमु केरा सुज्जन का उपदेसा॥

देखु बाजीगर पेखनु बनाया।
माया परदा देइ तहाँ फिर आपु छपाया।
पेखन लखि भूला सवुई काहू मरम ना पाया।
माया जगु भरमाइया गुन डोरि बंधाया बाजीगर न्यारा रहा जिनकी है माया।
माया बिस्नू-महेस हैं देखौ सो माया।
बाजीगर तो अलख है खोजा तिन पाया।
खांई कीन्ही मोह की कोई नांघि न जाई।
सब पर अमला कालु का सबही धरि धरि खाई।
काया की जाती भई, सोई फोर लगाया।
तहाँ तहाँ जिव संचरा पहरू भइ माया।
नौ लखि जल के जीव दस पंच्छी परमाना।
ग्यारहलाख कृमिकीट, तीस अस्थावर विस्तारा।
बीस लाख पशु प्राण चारि मानुख तन प्राणी।
औरी जाती लाख, मानुख चार खानी।
ऐकु ऐकु का माग्ई तेहि का होय नियाय।
दावा घाई ना मिटै अरझा सूत बनाउ।
पापु-पुन्नि चक्की चिई दररि मरा संसार।
आवा जाही मा परा कैसे होय उबारु।
मानुखि भये ता का भये मूल छाड़ि गहि डारु।
जब थी बारी तरन की तबु बूड़े मझिधार।
सहिया संत पुकारई बिरला करै विचारि।
पेखन देखन छाड़ि दे बाजीगरै सभारि।
जहां का विछुरा तहां समाना भेटा सिरजन हार।
मीता आवनु निवारिया छूटा भरम पसार॥

धरु मनुआ वैरागु भेखु का ना धरै गुदरो तूमा वांधि भरमि तू ना मरै।
भेखु कपट की खानि संत जन ना करै सतगुर गिरही मांझि गिरहु का ना तजै।
पाँच पचीसो वांधि अलख तब लखि परै बहुरि न आवै हाटि कालु मुख ना परै।
ब्रह्मा विस्नु-महेस कालु मुख सबु परे कहि मीता हरि दास सब्द लै ऊबरे॥

ऐसा ज्ञान विचारो भाई जाते मिलौ ब्रह्म का जाई।
का भये पोथी बांचि सुनाई बिनु हरि भक्ति कालु धरि खाई।
गरभ बास हुआ जमु की राई जमु की चोट देव-मुनि खाई।
नलु बपुरे की काह चलाई, वाचे संत नामु लै लाई।
हमें मिलै ता देंइ बचाई अन्धा हमका ना पतिआई।
दुनी वूड़ि कीन्हें चतुराई पाखंड पूजैं टेकु न जाई।
सतगुर मिले परम गति पाई जन मीता तिनकी बलि जाई।
नासा तिमुर गई तन ताई अवघट घाटी नजरी आई ॥

करिले सांची मतवारी, जाते उतरै नाहिं खुम्हारी।
दे पोस्ता-भांग डारी या तो होई बहुत खुआरी।
ले ब्रह्म अगिनि उदगारी जन गोरख सोई विचारी।
सुल्तानी वलख बुखारी, छाकी विसरी दुनिया दारी।
जब पच्छिम खुली किवारी तब करम फांसी निरुआरी।
है भक्ती भेखु ते न्यारी कोई गिरही भें दरबारी।
जाकी रामु करै रखवारी ताकी हंसी करै संसारी।
है परचै यहै हमारी अब मीता की है बारी ॥

पंडित पढ़ि कीन्हा विस्थारा जाना ना तत्तु विचारा।
करम की फांसी गरे मां डारी होय रहा भरम पसारा।
मरकट मूठी बांधि फंसा ज्यों छाड़ि न सकै गंवारा।
जो छाड़ै ता जाय डार पर को है पकरन हारा।
सिद्ध-साध औ या संसारा कीने सोइ विचारा।
गरभु बास मां आवै जावै कालु भया रखवारा।
चढ़ी अकास आत्मा सुन्दर जाय मिली परिवारा।
मीता आवागवनु निवारा छाड़े जगु व्यौहारा ॥

हमतौ अनभै तत्तु विचारा छाड़े जगु व्यौहारा अरध नामु लै नगर पहूँचे भेटा सिरजन हारा।
ब्रह्मा जाका पारु न पावा जिन या बेदु पसारा, सो साहेब संतन मा रहता सुकदेव सोई पुकारा।
साचे का झूठा कै मानै तिनका नरक दुआरा हरिजन सोई देखि कै भाखै सुनि सिख कथै गंवारा।
चौदापुर जमु जारु पसारा को करई निरुआरा मीता छूटा संत संगति मां अनते नहीं उबारा ॥

अबके करौ हरी सो हेतु होऊ मन सचेत गुरू मरम बताइया सिर दै लीजे खेत।
सेस का गहि बाधिया मद मस्त हस्ती लेत पांच कुंअना डारिया पचीस घालि समेत।
धरनि बरखै गगन भीजे नगर काया देस प्रेम का परवाह बाढ़ा भई सुमिता पेस।
दास मीता मते माता गये उर के सोगु छापा माला तिलक कंठी भूले हैं जगु लोग ॥

साधौ नामु हवै वा न्यारा जाके जपे मिलै करतारा।
पाँच पचीस कैद कै राखी हरदम भरा भंडारा।
जीभ रटौ ना माला फेरो ना हम तिलकु संवारा।
सहजे सहज चढ़े गढ़ ऊपर उतरे भै जल पारा।
हम अनभै अनभै पद पावा छूटे जगु व्यौहारा।
या संसार जीभ रटि भूला जानै न तत्तु विचारा।
कान फुकाये काह तू पाये नाहक माला डारा।
कहि मीता कैसे दुलिहिनी हुइहो ब्याहु ना भया तुम्हारा।।

मनु लागा सति नामु सो भावै नहिं आनि, निस दिन नींद न आवई भावै, विसरा धन धाम।
रागु द्वेष दोनो गये गये मलिन विकार आसा टिसुना खांड़िया भेटा निजु सार।
सार मिले सारुई भये घुन का करै कालु अैसे नामै ध्याइया काटी जमु जाल।
सदके बेनी रामु के जिन किया निहाल जन मीता जसु गावई पाये निजु धाम।।

जाका हरि किरपा करै ताका मत आन झूठ मनै ना आवई सांचे सो साथु।
छाका रहै दिदार मां भावै नहिं आन, बुंदै सिन्धु समाइया को काढ़न हार।।
छिनु ऐकु अनमन होय रहै छिनु होय खुसाल रोगु ऐकै दूजा नहीं कुछु करै विचार।
रहनि उनमुनी अलखु है कोई लखै सुजान मीता सहजे पाइयां पदु है निरवान।।

कासी-उड़ैसा-अवध-मथुरा-द्वारिका के लोग रे, कालु भोगिया सबै पाये बिना जुगती जोगु रे।
का भये जटा रखाई या रे किये प्रेतकस भेखु रे, परे रिल्लन भरम भूले ठगा सगरा देसु रे।
जोगु जुगता गिरही माही धरते नांही भेखु रे निर्वान पदवी हाथु तिनके अगम उनका लोक रे।
सुभ असुभ दोऊ करम फांसी हाथु अपने देत रे दास मीता भये सहियां मानि न कोऊ लेति रे।।

विछुरत नैनन ते कैसे जिये बोरी, मीन नीर विनु यों गति भै री।
सुरति पदमनी वसि की प्यारे एई देखि मनु राजी वेरी।
लोक लाजु माया सुत बंधो अचाह भयो चित चाह न मेरी।
कहि मीता या लगन कठिन है का भये रटे पिया निसु दिनु री।।

येही ते हम कीन चाकरी लखी औसाफिन कोई रे।
अधमन बांधि नरक मां डारै सांचे लई उवारी रे।
सीस उतारि धरै चरनन तर तब जाये मुजरा होई रे।
लोभी सीस देइ ना जानै कथि वदि मरिहै रोई रे।
अजामील गनिका औ सधना ई संस्कारी लोई रे।
ई नहिं अधम अधम जो कहता निरखि कहै जन सोई रे।
साहेब के अन्धेर नहीं है जाते अधम तरोई रे।
निरखि परखि मीता पद कीन्हा जानै सुज्जन कोई रे।।

गुन छाड़े विधि ब्यौहार रे हरि चरनन मनुआ लगा।
कांचु तजा हीरा लिया मोहि तब ते कुछु ना सोहाति रे।
त्रिकुटी तरे का ध्यावई रे इहां नहीं तोर उवारु।
कालु चक्र उजियारी माँ लखि भूले बहुत नदान रे।
प्रथमै सीस उतारई रे पाछे पावै नामु।
पाँच पचीसो वाधि कै वा तो मदन जारै दिन राति रे।
बाका मारगु अगम का रे ज्यो खाड़े की धार।
डोरी डोरी जो चढै सो पहुँच जाय निदान रे।
चढ़े चढ़ाऊ गिर परै रे कथनी कथै अपार।
तिनका का समुझाइये जाके घटु नहिं आय विचारु रे।
बानी समुझि विचारिया रे खाली भरा भंडार।
अन्धे का अंधा मिला तब कौन लगावै पारु रे।
हारी जीती का बहु मरै रे सब्दु ना जाये विचारा।
ते कवहू ना पाइहै गुरु पूरे का मत सार रे।
रवि-ससि कोटिन वारिये रे वा छबि नहीं समान।
सो मीता नैनन बसी जब पच्छिम खुले कँवार रे॥

भजन बिनु कौन तरा रे भाई सो भजन संत सो पाई सो संता ढूंडन हैं नाहीं एकई दुइ दुनियाई।
कबै भभीखन कबै अहिलिया कबै गिद्ध गति पाई कबै सुदामा तरी सेवली झूठि कहै दुनियाई।
कबै विदुर औ तरी द्रोपदी गज कैसे गति पाई सबै ह्वै चौरासी के जिउ अन्धरन समुझि न जाई।
धू पहलाद नहीं भे संता मोरध्वजु रे भाई नारद मुनी परपंच माँ भूले मूंदी खोलि सुनाई।
रामचन्द नहिं तरे कन्हइया बुद्धौ ना गति पाई सिव ब्रह्मादिक की गति नाहीं तरिया सधन कसाई।
ब्रह्म सनीपी गोरख भे हैं सो गति भरथरी पाई गोपी चन्दा दास कबीरा पीपा मीरा बाई।
धरमदास रैदासा नामा जन कमाल मति पाई दादू बेहना पोजा जुलाहा जन मुरारी गति पाई।
सेनि धना औ दास मलूका हरीदास गति पाई जन बेनी द्वारिका भगीरथ सोई गति नानिक पाई।
महिमी प्रागिनी दास सुझारी त्रिलोचन गति पाई जन वाजिद औ अहमद चौधी दरगा हाथै आई।
दास छबीले बंभन यारा सोई गति इनहू पाई नरसीले ध्रमदास मुराई मोसिम भागू पाई।
रूपन बलन और साहहुसैनी लालदास मति पाई सादीशेख औ मलकमोहम्मद सोई गति इनहू पाई।
संत मता है अगम अपारा कोटिन मां कोइ पाई कहि मीता बिन दीन गरीबी हाथु न कबहू आई॥

खोटी है काया भरा नरक मांस बहुताया विखै विकार तोहि माँ उपजै ता में मोहि नचाया।
तेरे उमड़े मनुआ उमड़ा रामु नामु बिसराया जो मन गहता रामु नामु का कंचन होतिउ काया।
तू तो एक दिना मिटि जइहै जहाँ की तहां समाया जीउ विचारा फिर फिर लूटा काल के जाल बँधाया।
कहि मीता सुनि लीजो साधो दुहू भाँति समुझाया जो भावै सो सौदा कै ले किया सो आगे आया॥

सुनिले अगम अगोचर बानी या संतन का रइसा रे।
पहिले तोरा करै पाँच पर बाँधि पचीसौं चोरा रे।
दुतिया दुविधा नासि कुमति दल भा हरदम का घोरा रे।
(त्रितिया) वास की पीठ पलान धरा तब लै लगाम बिन जोरा रे।
चौथे पकरि मवासी मानस कालै दीन जराई रे।
अमर लोक भये अवल हमारा फेरी गुरू दुहाई रे।
पंचये पाखंड भरमु न राखै मानुस पावति भये भाई रे।
हलुका त्यागै गरुआ राखैं छानु करै बहुताई रे।
ज्यों उमराव फौज लै धावै सुने मवासो चोरा रे।
यों हरिदास कुफर का टारै हवै हुकुम हरि केरा रे।
साखी सब्द काह भये जोरे कहु माया के चेरा रे।
बिन करनी सोभा ना पइहै मूड़ मारु बहुतेरा रे।
सोभा सो जो साहेब रीझै नाहित नरक बसेरा रे।
मीता ज्ञानु कराह चढ़ाये जरै पखंडी लोगा रे॥

दिनरी

ता दिनरी दिलइ विचारौ साधौ जिउ का करौ उवार।
ता पइठ पताल सेस गहि बाँधौ यही हवै मत सार।
ता कामु क्रोध दोऊ दानौ मारौ परिहै अगम बिचारि।
ता पाचों का परपंच मिटायो लीन्हेउ ततु तरवारि।
ता या रन जीते जमु डर छूटै उतरै भै जल पार।
ता निरगुन बाटी जो मन राची कबहु ना होइहै हारि।
ता सतगुर सरना है दुख हरना पावै सुख की वारि।
ता याही करनी मीता धरनी सोई चला पुकारि॥

ता दिनरी दोनों दल बिच खेली बाँधि तत्तु तरिवार।
ता प्रथमै माया का बन काटै सतगुर सब्द विचारि।
ता जेहि माया सुर नर मुनि फांसे सका न कोउ निरुआरि।
ता तीनिउ, तीनिउ गुन मां बाँधे डोरी करता हाथु।
ता छूटे संत नामु लै हरि का कामु क्रोध दल मारि।
ता ना डहकावै औरे ध्यावै सुनि ले बानी हमारि।
ता करता ध्यावै बहु सुखु पावै जसु ते लेइ उवारि।
ता ध्यावा दास कबीरा नामा, सारै मिलि सार।
ता मीना गावै पदहि समावै आवागवनु नेवारि॥

गहो सरना होउ गरीब भजो चरना ।
रामु दया अनभै पद दानु आन देउ सो का सरै कामु ।
रामचन्द कान्हा तीनिउ देउ, ई नहि करता सुनि निजु लेउ ।
औंकार है कौने ठाऊँ सोई खोजो अब के दाऊँ ।
ध्रू पहलाद नारद औ सेस वा पदु परा न इनका देखि ।
प्रहलाद प्रतिज्ञा पूरी कीन्ह असुर मारि इन्द्रासन दीन ।
पिता ते ध्रू गे बनै रिसाय माया एकु लोक दिया जाय ।
परलै माहि बिनसि सब जाये पदवी अटल कबीरा पाये ।
नामा अटल अटल रैदास पीपा मीरा एकै साधु ।
कहाँ लगि कहौं बहुत हरि दास जे रहते अभिनासी पास ।
छानु किये जन मीता जाये आगे हरिजन देहै बताय ।
संत सिवाय और को आये जो साहब का देइ मिलाय ।।

संत के अंग का बरनन—बनी मंगल

भक्ति जौनु घटु होय ना छपै छपाइयाँ ब्रह्म अखण्डित मेटि बहुरि नहिं आइयाँ ।
तिनके अंग ब्यौहार सुनौ चितु लाइयाँ सुज्जन का उपदेस तो भेदु बताइयाँ ।
सील छिमा सन्तोष दया बहुताइयाँ करै सब्द का छानु पलक ना पराइयाँ ।
हुइ रहैं दीन गरीब आहूँ तहाँ नाहियाँ पाँच पचीसो बाँधि देहि बिसराइयाँ ।
सुइ सुमेर समाये पार का जाइयाँ करनी सो मन लाय ता बादु बहाइयाँ ।
पदम पत्र के बीच पुरुष बैठाइयाँ सुरति निरति लै लाय ता तपनि बुझाइयाँ ।
कटा काल का जारु गुरु सरनाइयाँ तोरा जिनका ज्ञान सबहु समुझाइयां ।
गावैं मीता दास मंगल मोरे भाइया पाया पदु निर्वान साचु घटु आइयाँ ।।

दोहा

संत संत सबु ऐकु हैं मीता कहै विचारि । वारि मिले जलु ऐकु भा कोटिन आई धार ।।
वारी का बारि मिलै नाउ मिले का होय । आनि झूड़ का ना मिलै कहि मीता नल दोय ।।
याकै नरकै जाति है ऐकु रामु मिलि जाय । ताते मीता दोय हैं जगु का समुझि न जाय ।।

उपदेस काया

धनि धनि भई काया तेरी नगरी भला सचु पाया ।
खोटी हती भई अब चोखी रामनामु जब ध्याया ।
तब खोटी जब बिखु की माती अबु कंचन भई काया ।
सतगुर पारसु हाथै आया जिन धनु अलख लखाया ।
तेतिस-तीन-अठासी तोहि मां पूरन ब्रह्म समाया ।
अकइस लोक समुद पहाड़ा खोजन हार जनाया ।
जुगन जुगन हम तोहि का पाया जानि न कुछौ पराया ।
कहै मीता अब काजे आई आवा गवन मिटाया ।।

भक्ति विवेकु

भक्ति विवेखै भाखऊँ बुझिहै संत सुजान, साकठु भेदु न जानिहै करिहै बादु विवादु।
ध्रू-पहलाद परितीति ते स्वारथु कै दिया कामु-भक्ति न हाथै आइयां बिनु सतगुर के ज्ञानु।
नामा के हित मन्दिर फेरा गइया दिई जिआय, रैदास का पाहनु बोलि दीन्हा यहौ भगति ना आय।
नामा औ रैदास का सतगुर मिले कबीर भक्ति भेदु तब पाइयां पहुँचे हरि जी के तीर।
मिले कबीर जी रामु का सतगुर केरी बांह बंधे जंजीरन छोरिया साहेबु अरमेज माँहि।
रैदास कबीरा दोऊ जने किया हंसव्वा जाय, रामानन्द सो कहति भे सिखु करो मोहि आय।
रामानन्द भै बूड़ता औरे का गुरु होय ताते उन हांसी करी मरमु न जाना कोय।
जो उद्यिम तुम ना करौ माँगि खाउ क्यों न भीख, नालसि करी कबीर जी नाहक करौऊ सिखी।
रामु सनीपी तुम नहीं देते कौन उपदेस ध्रग-ध्रग रामानन्द है कहति कबीरा चेतु।
पीपा का परमोधिया रामानन्द बौराये-कंठी बांधी काठु की तीर्थ दिया भरमाय।
संतन के पगु धूरि की कोटि तीर्थ नहिं जोरि-हरिजन तीरथ ना करैं रहते साहेबु ओर।
पीपा कूदा सिंधु माँ माया मिल गई आय रची मायावी द्वारिका पीपा के हित आय।
माया पीपा सो कहा तुम बाहर का जाउ, बड़ी विलम तुमका भई यहाँ नहिं आइ रहाऊ।
पीपा माया सो कहा तुम्है छांड़ि कहां जाऊँ ऐसी मिलौ सनीप होय छाड़ि बिछुरि मरि जाऊँ।
माया पीपा सो कहा या है भरम पसार तोरे कारन मैं रचा गरू हवै सिर भारु।
माया पीपा सो कहा जाउ कबीरा पास साहेबु सांचे उई हवैं हमतो उनकी दास।
पीपा काशी का चलो, नगर पहूँचा आये-पायन परा कबीर के रामानन्द पछिताय।
किरपा करी कबीर जी किया बरोबर आय जाय मिलाया रामु का मेटी तन की तापु।
रामानन्द कोधित भये पीपा तन रिस आये बहु तीरथु कै आइयां लगेउ न हमरे पांय।
तब पीपा या भाखई रामानन्द सुनु आये पांयन परौ कबीर के छाड़ि देउ गुरु आये।
रामानन्द बहु कोपिया थांभि न तनकौ जाय सिष्य हमारे दोऊ हो कौनी तरह बताये।
पीपा फिर जुड़वावई रामानन्द का जाये सतगुर साह कबीर है तुम्हैं न जानी जाये।
नगर द्वारिका हम गये माया दिया बताय सेवो जाय कबीर का देहैं रामु मिलाये।
रामानन्द कहा कबीर सो पीपा काह कीन तुम्हरी अस्तुति करति है हमका डारेसि नींद।
कहा कबीर रामानन्द सो पीपा का बड़ा भाग्य-धनी दरस उनका भये गये तेही माँ पागि।
रामानन्द कहा कबीर सो सो करनी का आये जाते रामै पाइयां सो विधि देउ बताय।
कहा कबीर रामानन्द सो सिष्य घने तुम कीन, नांउ बडाई पचि मुये भक्ति करै कोई दीन।
चींटी होय कै पाइया तुंम तो भयो पहारु, खाओ कचौरी पापरे या जगु का व्योहार।
तब चाह उड़ी पतसाह के रामानन्द गुरु पीर-हमहु भेदु करेंगे कैसे हैं वे पीर।
पतिसाह दरस का आइयां रामानन्द फिर बैठि, सिर काटा तब पलक पतिसाह कालु की डीठि।
कहा कबीर रामानन्द सो सो मूरखु ना कीन, मीचु रही सो लै गई दुःख घनेरा दीन।
मीता इतना भाखई आगे का व्योहार हम उइ संची आदि के कबीरा औ रैदास॥

तीन छंद का पद

मनु होइ रहु दीन गुरु गरीबी पाइये, जमु बाधा ते नासई जानै पर पीर।
चौदा पुर जमु सीर है बिरवा हैं तीन, सुर-मुनि नर खेती भये सबु खाये बीन।
भेदी भेदु बताइयां सो लेहौ चीन्ह जोगु जुगुति ते बाचिया भये हरी लै लीन।
हय-हाथी रथु माँ चढ़े बहु जोरा कीन दिना चारि जोरा रहा भये अंत आधीन।
मय-ममिता का मारि कै गुन त्यागो तीन पाँचो नारी वसि करो मिले काया बीर।
सो तो गहिरे दह परा का खोजै तीर खोजति भोंदू पचि मुये गुरू परे ना चीन्ह।
गरुऐ का गरुआ मिला तिन मारगु दीन सहजे पइठा जायकै मानिक लिये बीन।
मीता परखै परखिया सब नजरी कीन आवा गवन मिटाइया गुरु जस कै लीन॥

साधौ ज्ञान कुल्हारी पाई।
समुझि समुझि बन काटन लागा तब फूली फुलवाई।
जब फलु लागा फूल सुखाना अगम पंथु पदु माही।
साखा पत्र कुछौ नहि तहवां अतिरिजि कहा न जाई।
ज्ञानी ध्यानी सबु मिलि बूझौ या कैसी फुलवाई।
जो बूझै सो अंस हमारा अनबूझे जमु खाई।
या फलु पाय मरै नहि कबहूँ अटल होय ठकुराई।
कहि मीता कथनी का होइहै जो ना करनी कै जाई॥

ऐकु रामु नामु जिन जाना सो साहेबु के मन माना तू निसि दिन पढ़ै पुराना कस भेटे ना भगवाना।
वा संतन माँझि समाना पावै ना चतुर सयाना-वाका दीन बन्धु है बाना सांचेन सो होय मिलाना।
सुई अग्रहै जाना तहां मारे पाँच पठाना, कोई बीर लरै मैदाना जिन मन मतंग गहि आना।
मीता गुरु ज्ञान समाना तब पीछे किया बखाना, कविचतुरा फिरै भुलाना ताका कबहुँ न होय ठिकाना॥

अंत बड़ा दुख होई भजन बिनु, समुझि देखि नल लोई।
रैनि दिना जमु घेरे रहति है दूसरि गरभु बसोई।
ले निजु नामु सेइ सतगुर का सुन्नि माँ सुरति समोई।
पच्छिम दिसा की केंवरी खोले ब्रह्म माँ जीव समोई।
भाग्य बड़े ते या मत पावै आवागवन न होई।
कथनी वदनी दोऊ बेकारा करनी अस्थिर होई।
का भये पोथी-थोथी बाँचे अधिकी भरम परोई।
कहि मीता सुनु गुरु की बानी आदि अन्त सुधि होई॥

गुरु सेइ मिली रजधानी मेरी तन की तपनि बुझानी।
को सेवै पाहन पानी जाकी जोति माँ जोति समानी।
जब दीन गरीबी आनी तब रीझे अन्तर जानी।
जब उठी अगम की बानी तब परगट भे ब्रह्म ग्यानी।
हैं एक बरन सब प्राणी दूई झूठा करै वखानी।
ऐकु मक्खी कीन सयानी ताके वंस माँ आगि लगानी।
है आहूँ नरक निसानी ताकी कालु करी मेहमानी।
जब धरिकै मोंगरा तानी तब करी वड़ाई हानी।
सोई जाति भली है बानी जिन पाँचों मूठी आनी।
ताका भरै पचीसों पानी कोई भाग्य बड़े मत आनी।
जगु बूड़ि जाति बिनु पानी कहि सांचु बैरु को आनी।
ले सुज्जन मन मत जानी है गरभ बासु कल कानी।
जहाँ ह्वै सुमिता सी रानी सो संतन के मन मानी।
सो उतरी भैजल प्रानी ताकी आस करै शिव ग्यानी।
झूठा झूठे का मानी तेहि असुर अंग कै जानी।
जन मीता कीन बिनानी गई कुमति कुटिल हर जानी॥

रे भाई हरिजन हरि रंग राचा जगु से रहै उदासा।
अरध उरध मां माड़ा माड़ै सहज सुन्नि करै पाका।
लरिकै पाँच तहाँ लै राखै निकरि न कोऊ जाता।
मनै जिवाइ मगन होय बइठै लिये पचीसों साथा।
जैसे सुरति बरत पर बाँधे नटनी करै तमासा।
लोग हँसै वाकी सुरति न डोलै ऐसे हरि के दासा।
जगु सों बात कहै बहुताई सुरति रामु के पासा।
कहि मीता जब होय सनीपी तब मन कहुं ना जाता॥

हम हरि के हरि ह्वै हमारे तू का रटै दई के मारे।
रटि रटि डिम्भी पचि पचि हारे बिन सतगुर ना मिलै पियारे।
जौ लगि काम क्रोध घर भारे तौ लगि परिहौ नरक दुआरे।
नींद भूख जमु के रखिवारे पाँच मारु चलु हरि दरबारे।
काह भये बहु स्वांगु संवारे साँचु बरत कबहूँ नहिं धारे।
ज्यों विस्वा बहु किये सिंगारा पती वरत वाके दामु पियारा।
जरी पिया हित दुख गे भारे जमु दारुन के झगरा फारे।
कहि मीता तब भये दुलारे ले सबि नामु दोऊ कुल तारे॥

रे बावा दुर्लभ संत विदेसी ढूंडन पाखंड देखी जागै भाग्य संत सो चीन्है नरकी पाखंड पूजी।
बिना विवेखु बूड़ि दुनियाई का कहि करै संदेसी धक्का चारि अधिक कै दीजे सुज्जन आपन लेखी।
अवध उड़ैसा साहेब नाहीं नहीं द्वारिका कासी मथुरा माया परपँच कीन्हे संतन मां अभिनासी।
मीता मन महरा होय फिरिया अगम पंथु होय पहुँची ताते निसा भई रे भाई पोथी थोथी छूछी ॥

सठु बाँधे खोटे दाम मोलावा लाल का पाजी पापी मसखरा तू होइहै हाल बेहाल का।
का विद्या पढ़ि पाइहै रे काह बजाये गाल कामी क्रोधी ना तरै है तिनका नरक दुआर।
पढ़ै पारसी अर्बी रे औ इसलोक अघाये याते साहेबु ना मिलै वा करनी औरे आय रे।
बातन महिमा का करै अकह कही ना जाये साखी मा सबु कहि गये सो सुज्जन सो न छपाय रे।
धनी खुसी जासो हवै रे अन्तर तिनसो नाहे उनसो कुछु न छपावई जो अंस हमारा आय रे।
गुनागार सरकार कारे हुआँ की पूछै बात तो सो हों कहै ज्यों बिखु बुवै अमृत आस।
दुनिया पाखंड पूजई रे संतन देखि लजाये तरा चाहे भै सिंध ते रे पाथर नाउ चढ़ाये।
पेंची पाँची हिकमती रे बाँधे जमु पुर जाँय साँचे का साहेब मिला रे मीता दीन जनाय ॥

तीरथ बरत बिना गुरु धावै जो गुरु मिलै ता भरम छड़ावै।
कोटिन तीरथु जाके चरना धोवैं ते संता तीरथ ना जावैं।
सतगुर सो जो रामु मिलावै रामु मिले ते परम पदु पावै।
सो जन आवागवन मिटावै परलै परे बिनसि ना जावै।
महा परलै मां कोउ ना रहावै ब्रह्मा बिस्नु शिवो मिटि जावै।
रवि ससि सिन्ध धरनि मिटि जावै लोमस परबत कहाँ रहावै।
कहि मीता सोई संत कहावै जो परलय मां बिनसि न जावै।
संत महातम हरि ही गावै संत मता विरला कोई पावै ॥

कहु पंडित हरि केहि विधि पाई नरक परी तुम्हरी चतुराई।
बिनु हरि मिले मुक्ति है नाहीं बिनु मुक्ती कथनी बहि जाई।
गीता सत्य वेदि लिखी सोई वांचे पंडित बूझि न होई।
जब सतगुर की दाया होई ज्ञानु उदै तब घटु ही होई।
चारि वेदु पढ़ि मुक्ति न होई या धोखे नल देही खोई।
पाँचों इन्द्री जबु बसि होई मन का सोधु तबै कुछु होई।
काया मां हरि देउ रहाई उत्तिम मध्यिम कोई नाहीं।
दीन भये ते हरि का पाई कहि मीता तजु मान बड़ाई ॥

देखौ देखौ आई नकट देइ रानी वकुला जाय खुरवानी मैढुक बैठे ताल बजावै ऊँट करै रगवानी।
छेरी के डर भेड़हा काँपै का कहौं अकथु किहानी कुत्ता भूँकै सिंघु ऊपरे या बूझै सो ज्ञानी।
कुआरी कन्या तीतुर जाया पिढुकी धोवन आनी छेरी बरा पकावनि लागी महिखी भरती पानी।
बकुला बैठे पान चाबता चील्ह लीन्हे पिकदानी कहि मीता या पदु निर्वानी पहुँचा करी विनानी ॥

ले हरि नामु मिटै जगु अवना सो वा नामु जुगति ते पवना ।
जीभु रटे हरि मिटै न अवना नौका नामु विकट है धरना ।
रसना कहे न माला जपना हरदम डोरि लगी पिउ जहँना ।
रटि रटि डिम्भी पाखंड करना माला तिलक कोऊ ना तरना ।
पर स्वारथ का सत्य पुकरना अस्तुति निन्दा के गुग करना ।
पाहन चढ़ि चाहै जगु तरना सांचु कहे झूठा जरि मरना ।
सुज्जन सो है सौदा करना मूरुखु देखि भली चुप रहना ।
हम तौ हैं भै पार उतरना कहि मीता निर्मल है तौना ।।

मात पिता सुत कामु न अवना भजु हरि नामु सकल सुख करना ।
माया मोह जीउ पचि मरना समुझि देखि जगु कालु खिलौना ।
समुझा भरथरी राज्य न करना हरि हित तजा नारि धन भवना ।
चारि वेद पढ़ि हरि ना पवना सतगुर मिले मिटा आवागवना ।
सोइ सुल्तानी केरा ध्याना परम पुरुख का किया लिलौना ।
सीस दिये बिनु होय न तरना का पढ़े पडित का पढ़े मुलना ।
रूपन वलन सांचु व्रत धरना सतगुर सेवा पार उतरना ।
कहि मीता मूरुख सो डरना सुज्जन है संतन का छौना ।।

हरिजन हरि ते होंय न न्यारे सुनि ले तत्तु विचारा किरखी करैं भेखु नहिं धारैं खड़े रहैं दरबारा ।
जल तरंग जलु ही मां मिलिया कौन करै तेहि न्यारा मन मतंग जब हाथै आया ताहीके व्यौहारा ।
पाँच पचासों डिढ़ कै बाँधे जिन बाँधा संसारा कथनी वदनी दोऊ बेकारा करनी दुःख विदारा ।
सहिया भये पुकार करति हैं बूझै ना संसारा कहि मीता सुज्जन के काजे जो है अंस हमारा ।।

दोहा

प्रीति रामु सो राखिये चलिये चालु विचारि । रामु मिले दुख बीसरै छूटै जमु की रारि ।।

राम दया भई भई ठकुराई सो पद मिला बिनसि ना जाई ।
धनि सतगुर जिनकी सेवा ते हता बिकार सो दूरि बहाई ।
हरद जरद तन भया टटेरा तब इन्द्री अपनी बसि आई ।
जीव ब्रह्म तन सोधे मिलिया अदवुधि लीला कहि ना जाई ।
तीनिउ देव दुखी येही बिनु सुखिया ते जिन या मति पाई ।
जुगन जुगन की मिटी कल्पना या विधि तन की तपनि नसाई ।
करम-भरमु मां बूड़ि जाति जगु सांची बातन ना पतिआई ।
बोरन वाले खांय कचौरी कहि मीता हम गारी पाई ।

का काहू से कामु जो पै मारगु लगा लगि गया हरि जी सो नेह भाग्य पूरा जगा।
नरकै तेई जाँय जिन्हौ दिल है दगा साहेब साथी साँचु तिन्ह के संघु लगा।
माला तिलक बनाय कपटु का फंद रचा नाचबु गावबु लोभु रामु सो ना रचा।
मोहि चरनन की आस दिया सतगुर मता मीता उतरा पार काहू जो जगु हंसा॥

ऐसी चालु चलौ रे भाई जाते जिउ नरकै ना जाई।
गरभु बासु तौ नरकुइ आही छूटै सो मुक्त कहाई।
बसि कै इन्द्री मनु गहि जाई मनु बसि किये परम पदु पाई।
सो पदु पाइ गरभ ना आई धनि सतगुर जिन राह बताई।
करम भरम तजु ई दुख दाई पापु पुन्नि कै जिउ फंसि जाई।
नौका नामु धरौ चितु लाई जमु दारुन तब निकट न आई।
जो ब्यापी सो मीता गाई रागु द्वेष दिये दूरि बहाई।
सेवा कै कै हा हा खाई हारी मान भेटे सुखदाई॥

ऐ साधौ अनेग तीरथ संत के चरना कोटिन गंगा औ काशी।
तिनकी सरि के तीनिउ नांही जिन्हे मिले अभिनाशी।
पिउ पछहे उजीर सनीपी कालु करै कोतवाली।
तीन महतिया जगत किसाना सुर मुनि नर सब प्रानी।
गोरख भरथरी गोपी चन्दा औ कहिये सुल्तानी।
पीपा औ रैदास कबीरा इनकी अकथ कहानी।
थोरे कहूै बहुत भे संता सतगुर मिलि गति जानी।
साकठु मानु विचारि कही हम पहुँचा होय सो जानी।
ते काहे का तीरथ जावैं अन्धे परे न जानी।
सुर मुनि तीनिउ जिनका ध्यावै तीरथ मां है पानी।
जौ लग संत बाँह ना पकरै तौ लगि नरक निसानी।
दानी मुक्ति भुक्ति के हरिजन लै न सकै अभिमानी।
मुक्ति भुक्ति का तीनिउ ध्यावा देवा सब मुनि प्राणी।
सो है मुक्ति संत के हाथा और सबै जमु खानी।
मेरे चाह संत संगति की जिन संघु भक्ति डिढ़ानी।
सोई मिल सोई भये मीता भेटे अन्तर जानी॥

संत कहैं सो मानिले ई तारन वाले और सकल जगु बूड़िहै परिहै जमु जाले।
संतन के संघु हरि रहै सनि सब्द बखाने तीनिउ सुर मुनि भूलिया तिनकी ना मानै।
बूड़ेन के संघु जो चलै जइहैं बर घालै करु संतन की सेवकी छूटै जमु जालै।
जब मीता अन्धा रहै चलता जगु चालै अन्धकार गुरु काटिया भये औरे हवाले॥

हरि रंग रंगु, रंग सति सोई गेरुआ बस्तर कामु न होई ।
घूरे लोटि राखू लपिटियाई गदहा हरिजन ना होय जाई ।
बारु रीछ के हैं बहुताई सो रिछवा ना दासु कहाई ।
काठु की माल गरे पहिराई माटी का तिलक भक्ति कैसे पाई ।
भेखु बनाय जगत ठगि खाई सठु अन्धा तिनका पतिआई ।
तिनसो बोलै मोरि बलाई जिनके कुमति सदा रहै छाई ।
मच्छ कच्छ बहु तीरथु रहाई जो उइ तरैं तोहूँ तरि जाई ।
कहि मीता जगु की चतुराई नल तन पूंजी जाति गँवाई ।।

रंगु रंगु मन कपरे ना रंगई, पाखंड भेखु कामु ना सरई ।
बसु करू पाँचों मनु बसि होई मन बस किये कालु बसि होई ।
दास कबीरा औ रैदासा किरखी कै कै सबहूँ खाई ।
हरि का मिले भिन्न नहिं कबहूँ तिनकी महिमा हरि ही गाई ।
ध्रु-पहलाद नारद मुनि सेसो, सो गति नांही तिनहू पाई ।
जो गति सेनी नाऊ पाई सो गति तीनिउ देव न पाई ।
गोरख-भरथरी गोपी चन्दा इनकी गति सन्तन माँ लोई ।
कहि मीता है भक्ति पदारथ करनी औरि कांचु सेमर छोई ।।

या तन माटी मां मिलि जाई, का मगरूरी करता भाई ।
काया माया थिर न रहाई भजु भजु रामु सदा सुखदाई ।
आँहू बाँधि नरक लै जाई दीन गरीबी पारु लगाई ।
सधना कौन कुलीनी पाई हरि का मिले बहुरि ना आई ।
नल देही देखो जाति गँवाई अैसा समौं बहुरि नहिं आई ।
तजु संसार जानि या छोई दिन दुइ का सुख फिर दुख होई ।
काहे का भरथरी राजु तजोई समुझि देखु नल इतनो लोई ।
कहि मीता तब मनु थिर जासो हरि जिऊ सो भेटा होई ।।

अवगति लीला साहेबु केरी जानै जे भये चेरी ।
तन धन वारि सीस भुंइ धरिया बाढ़ी प्रीति घनेरी ।
सतगुर संधि हाथु कै दीन्हा लगी अगमपुर डोरी ।
ऊंचे चढ़ि कै दीख तमासा अबु ना करिबे फेरी ।
सील सन्तोष छिमा औ दाया हारी बाजी फेरी ।
जीती सुमति कुमति गई मारी कटी कालु की बेरी ।
हारी मानि कै हरि जिउ भेटा छूटी मेरी मेरी ।
पाछिल सेवक जानि उबारा अरजी मीता केरी ।।

काम क्रोध जमु दूत नरक लै जाइहै, हो कै दीन गरीब रामु जी को ध्याइये।
धरम राय के द्वार जुआब ना आइहै चलु चलु चालु संभारि बड़ाई पाइये।
चितुगुपित रखवार करनी लिख जाइहैं जोरे भक्ति कै जाय कीरति जाइये।
मीता कहै विचारि समुझि सुख पाइहै समौ न बारम्बार संगति मनु लाइये।।

मनु मथि तन बिसराया रे साधौ।
जाको निगम पार ना पावै सो तो सहजे पाया।
चाँद सुरज की कीई मथनिया जुगति का दूध जमाया।
तीन गुनन की कीई कढ़निया या विधि मनै छकाया।
छाँछ पिये अब मोरि बलइया या अन्धेन मनु भाया।
सोई जिये जिन तत्तु विचारा मरिहै जिन बिसराया।
साखी सब्दी करै काटि कै तिनका नरकु बसाया।
कहि मीता सोई पदु कहिये जिन जियते पदु पाया।।

बाबा तुरक सोई जाकी तुरी अवस्था तन सुधि विसरावै हो।
मुसलमान सोइ पाँचों मूसै ताहि भिस्त ना भावै हो।
अकसे एक गइया बियानी ताको दूध जमावै हो।
सुरति निरति की करै मथनिया तबु अल्लौ का पावै हो।
ममिता मुर्गी का गहि मारै जिव जंत्र न सतावै हो।
मेहरि नजर सबहु पर राखै सो दरबेस कहावै हो।
कहर नजर पर कैहर परैगा जबु आखिर दिनु आवै हो।
कहि मीता जब लेखा होइहै तब जुवाब ना आवै हो।।

कहरा

कोई पुरान पढ़ि बकरी मारै कोई कुरान पढ़ि गाई रे।
आगि लगी दोउ जरे जाति हैं सकिहै कौन बुझाई रे।
साँचु कहे ते मारन धावै तिनसो काह बिसाई रे।
दोजक केरी चालु चलति हैं भिस्ती की आसा लाई रे।
लकरी हरी नहिं टोरी मौहम्मद कब गइया मरवाई रे।
गुरू पीर की चालु न जानै ज्ञानु करै बहुताई रे।
या दुनिया का देखि तमासा मीता उठे डेराई रे।
दुही बीच ते निकरि भगाना संत संगति चितु लाई रे।।

सोरठा

रे साधौ देखि भया मनु पूरा बाजैं अनहद तूरा।
कोटिन भानु ताकी छवि पर वारौं जाके भये हजूरा।
रामचन्द-कान्ह ह्वैं नल देही, नहिं कुछु मतलब मेरा।
हमतौ पिउ अपना पहिचाना अबु ना करिवे फेरा।
बहुतेन के संघु विस्वा सोई बालक जाया कूरा।
कहु वा बापु कौन को कहिहै अैसे सठु मन केरा।
जिन तन रचा सोई पति तेरा कस ना वाको सुमिरा।
कहि मीता गुरु करै हजूरी तब मोजरा है तेरा ।।

पापन ते जगु गा बौराई पाहन पूजै खसी मराई।
खसी मां बोलै आतम राई तिनका मारि सेव का की लाई।
भरी देंहि मल-मूत्र मांही, मल-मूत्र ते देहि बनाई।
भरी बेकार सकल तन माही ऊपर के धोये मैलु न जाई।
पंडित अगुआ हैं जगु माहीं सबु जगु लिये नरक का जाँई।
तरने केरी आसा लाई अैसे बूड़े थाह न पाई।
साँचु कहे ते ना पतिआई झूठे से वै प्रीति लगाई।
जहाँ कुमति तेहि का समुझाई अन्धेका का दिया दिखाई।
न्हाई खोरि जगु डिम्भु दिखाई जहाँ डिम्भु सो रामु न पाई।
रामु निकट उइ दूरिउ नाहीं पापन ते कुछु सूझति नाहीं।
अन्तर जानी ते न छपाई नल पाखंडु तू करू बहुताई।
आखिर न्याउ करी रघुराई तब भूली तुम्हरी चतुराई।
ता दिन तुम्हरी कुछु न बिसाई जा दिन कालु मोंगरवा लाई।
तब कहँ रहिहै जगत बड़ाई मलिन जुइन जिउ जाइ बसाई।
मीता दास कहै गोहिराई चलो संभारि दुक्ख ना खाई।
दिया सन्देस मानि जो जाई दूरि देस की खबरि सुनाई ।।

साधौ भाई केतक वेदी वेदु पढ़ति हैं केतिक तीरथु जावैं।
केतेक डंडी डंड धरति हैं पसु बुधि तऊ न जावै।
केतेक भेखी भेखु धरति हैं, केतेक तपु लौ लावैं।
केतक पाहन सेवा करते केतेक माल फिरावैं।
सब पाखंडु भक्ति है साँची सतगुर सेये पावै।
रामु मिले ते ज्ञान उदय भा बहुरि न भ्रमजल आवै।
केतेक जोगिया मुद्रा लावै जोगु न हाथै आवै।
कहि मीता सोइ जोगी जुगता जोति मां जोति मिलावै ।।

भक्ति कीई तेई हरि मन भाये हैं करम भरम तिन दूरि बहाये हैं।
तीरथ बरत नहीं हरि पावै तन सोधे गुरु अलखु लखाये हैं।
दीन भये ता सो अन्तर नाहीं दीनबन्धु दीनानाथ येही ते कहाये हैं।
गोरख भरथरी गोपी चन्दा जोति मां जोति मिलाये हैं।
सेनि धना रैदास कबीरा चौथे पदु पहुँचाये हैं।
सो पद तीनिउ देव न पाया जो जगु बड़े कहाये हैं।
पदवी अटल संत भगतन की जिन जाना ते गाइ सुनाये हैं।
धू पहलाद बिनसि ई जइहैं जा दिनु आगि लागी चौवाहे हैं।
समुझि अचेत संत सरि कोई नाहीं व्यास भागवति येही बताये हैं।
महा परलै मां सब मिटि जइहैं रहिहैं संत धनी अपनाये हैं।
धन्नि धन्नि सधना औ नामा जो साँचे मघु लागे हैं।
कहि मीता हम संतन ध्यावौ तन धन तिनका वारे हैं।।

री ग्वालिन हम तौ अलख लखा कोटिन कान्ह वारिये तापर जो मेरे नैन बसा।
प्रानन के पति ताहि प्राण दिये, जमु का जारु कटा पापु पुन्न का कागदु फाटा दे पिया बाँह हंसा।
रामचन्द देहि छूटि भये कान्हा तिनहूँ का कालु डसा बोद्ध सरूप तपस्या करता बिसनू लोक पैइठा।
शिव-ब्रह्मादिक विस्नू देउ मुनि सब जमु जारु फंसा कहि मीता हैं संत मवासी तहाँ मन जाय बसा।।

तुम सुनियो संकर जोगी हम हवै राम रसु भोगी, जब मारे पाँच पठाना तब पाया पदु निर्वाना।
कस लाई मुद्रा तारी कस भे हो पवन अहारी या किरिया हवै बिकारी अजगर कुच्छा जिवधारी।
का रेचक कुंभक होई सब भूले मुनि नल लोई आगे की राह नसाई सब बूड़ि जाति दुनियाई।
धरि भेखु होंई सबु खुआरी तिनका पूजै संसारी, उनके मन मलिन विकारी छलबलु कै जलमु गुदारी।
सुर तैतिस-तीन-अठासी सब परे कालु की फाँसी, का संसकृत पढ़े कासी सठु ना चीन्हे अभिनासी।
है प्रेम भगति कठिनाई, सो सतगुर सेये पाई परम जोति मां जोति मिलाई तहाँ तीनिउकी गमि नाहीं।
है सतिपुर राज्य हमारी भई परम पुरुख सो प्यारी जो मिलिहै अतिवारी तेहि देवे पार उतारी।
मन महरा हाथै आया तब ग्यान का ढोलु बजाया, सुज्जन हित मीत जनाया मुरुखु स दूर भगाया।।

दोहा

कहि मीता हरि दास की महिमा सुनियो लोय। परम भागवत गावई इन सरि और न कोय।।

बूझौ भाई पंडित या पदु ज्ञानी मच्छ चढ़ा बिन पानी।
लागी आगि सकल बन जरिया पाती आंचु न लागी।
मक्खी एकु तीन गुन काढ़े भई कुरमा कै हानी।
ससा भुन्नि सिंघ का खाया दुनहुन किथरा पानी।
उजरि महल मां पाद्दा (बादशाह) बाहेर देखी या रजधानी।
बुंद मां सिंधु समाय गया तब चहु दिसि हो गया पानी।
या तो अगम पंथु कै बानी बूझै सो ब्रह्म ज्ञानी।
कहि मीता जो या ना बूझै ता कौ दुख औ हानी।।

दिन दुइ काहे का हुरमुद लाई जीव नरक मां जाई।
तू जगु बड़ा बड़े जमु मोंगरा भल सौदा मन भाई।
जैसे धान कांड़िये काँड़ी अैसे तोंहि हिलराई।
तौनि चोदु बरन का करिहै कहु को आइ बचाई।
ई दम छत्री ई दम ब्राह्मण दुइ कै करौ बड़ाई।
और जीव कहंवा ते आये दुई रामु भे भाई।
गढ़े कुम्हार माटी के भांड़े ऐकुइ वस्तु भराई।
कहि मीता ते सबु भूले हैं जिन दुइ कै बतलाई ॥

रे साधौ मान बड़ी दुखदाई ले पेलि नरकु लै जाई।
मान मारिकै हरि जिउ भेटा तुमहू का खबरि सुनाई।
लोक लाजु परे त्याग दीन होये सन्तन का सिरु नाई।
गुरु के ज्ञान जियति ही मरिया अबु न मरबु मोरे भाई।
कटि गई कालु जंजीर भजन कै बड़ी मवासी पाई।
भक्ति बराबर और नहि कुछु जो व्यापी सो गाई।
वेदु पुरान भागवति पढ़ि कै बहुत मुई दुनियाई।
बिनु करनी हरि हाथु न आवै कहि मीता समुझाई ॥

रे साधौ अपना पति पहिचानो बहु दिन रहा भुलानो।
पती बरत सतगुर कै दीना ताही सो मन मानो।
लोगु कुटुम सब हँसो करति हैं जगु कहई बौरानो।
प्राण नाथ मेरे प्राण उबारे सब दुख दंद भगानो।
कुसल परी चौरासी छूटी छूटि गया अभिमाना।
माया देखि काहे नल भूला आगि लगी तोरे टांड़ा।
जवै जीव चौरासी परिहै तब कहँ जाय सयाना।
कहि मीता एकु राम राम भजु जाते उबरै प्राना ॥

भल कै जगु का दीन जनाई जानि न काहुइ जाई।
जाति-पांति का उघटन लागै सब्द न माना जाई।
जाति पाँति चरनन माँ मिलिगै भेटा है रघुराई।
अपनी कहौ कहाँ तन जइहौ लै धन औ कुलनाई।
दारुण कालु जुइन जिउ पाहनी तुम्हरी कुछु न बिसाई।
सूकर स्वानु छिनक मां करिहै अबहूँ चेतौ जाई।
सोवति जगाय कही दुइ बातें दुख ना मानौ भाई।
पर स्वारथु का मीता रूरा सठ सो कुछु न विसाई ॥

मियाँ जी कैले कुछौ भलाई जाते पिऊ खुसी हो जाई ।
तोहि सुहागिनी पिऊ की होवे तेरी फिर ठकुराई ।
बदी किये ते दोजक होइहै गल्जे काजु न आई ।
आखिर अल्ला न्याउ छानि है पूछे जुआब न आई ।
ज्यों अपना त्यों बकरी जाया हँसि हँसि खालु कढ़ाई ।
जबै जीव वा दावा करिहै तब मुसकिल होय जाई ।
चलत मोहम्मद जीव ना गोंदा अपनी चालु मशूकी पाई ।
कहि मीता तू क्यों बौराना जबै करब जिउ किन फुरमाई ।।

उत्तिम जलमु दगा दिये जाई छाड़ो जगत बड़ाई मान किये जिव नरकै जइहै रामु भजे ठकुराई ।
लगो गोहारि प्राण अपने की संतन का सिरु नाई भै सागर ते पार उतारै उइ केवट जगु माही ।
धन दारा सुत कुछु थिर नांही नांही थिर कुलुनाई रामु भजे तेइ रामुइ होइगे केतिक जगत बड़ाई ।
ना कोई ऊँचा ना कोई नीचा जनि तू भरम भुलाई कहि मीता परतीति मानिलें होय सबै कुसलाई ।।

लख चौरासी व्यापक सोई रामु कहो जेहि लोई, जीव संत का जब मारै तू जो करिहै सो वोई ।
ताको मारि केहि तू ध्यावै माला फेरे का होई जैसे नल तोहि का कोई मारै पांय परे राजी होई ।
पेलि नरक चली सब दुनिया हटक न मानै कोई छत्री सो जो जिव प्रतिपालै दुखी जीव ना होई ।
ब्रह्मण सो जो ब्रह्मै मिलिया आवागवन न होई कह मीता सोइ पंडित ज्ञानी बिनु पढ़े पंडित होई ।।

हरि हरि काह कहे भा पांड़े रहौ विषै मां साने बिना गुनाह खसी का मारा जमुपुर होइहो भांड़े ।
न्हाइ खोर चन्दन दै बैठा पढ़ते बेदु पुराने घर मां नारि संगाती रांधै देखो इनके खाने ।
जे ब्राह्मण ते मांस न खाते तुम शुद्रा हो पांड़े ब्राह्मण सो जो ब्रह्मै मिलिया जाति-पाति ना तिनके ।
आगि लगी तोरे टांड़े पांड़े दया धरम ना जाने कहि मीता तुमका जो पूजी ताहू का नरकै जाने ।।

अन्धे काहे न खोजै करता इसनू विसनू का रटता ।
करता मूल सकल जगु रचिया सोइ ह्वै फिर हरता ।
ज्यौं बाजीगर रचा पेखना अैसे तीनिऊ देवता ।
हाड़ चामु की बहुत पूतरी कोटिन देव-परेता ।
कइयउ कोटि ब्रह्मा विस्नू शिउ पार ना पावा तेहिका ।
करता एकु दूसरा नाहीं संतन सेये मिलता ।
जब चाहै तब हाटि लगावै, चाहै तबै उजरता ।
कहि मीता करता अभिनाशी वाको नाश न होता ।।

दोहा

पंडिताई कवि चातुरी सरी न ऐकौ काम । बिना भक्ति भगवान की तन धन कौने काम ।।

काह जगत के बैरू किये भा काह जगत की हाँसी । मीता मिलिया रामु का टूटी जमु की फाँसी ।।

ना सपने मनु लाऊ तो अपना ना कोई भजिले हरि जी का नामु जिवन होवै सही।
हय हाथी रथु जोरि गरूरी मन भई हरि हीरा बिसराइ काँचु सौदा किई।
कोटिन माया जोरि साथु सो ना गई लोगु कुटुम परिवार दगा सबुते भई।
बालापन गया खेलि काम जुआनी गई केस भये सिर सेत चेति तौ ना गई।
दंत दिस्टि तनु छिन्नु अवरदा घटि गई सैनन बातें होय दई अब का भई।
बाढ़ी जमु सो रारि तोनु भारू भई बुन्दक सुख के काज दुःख सागरमयी।
सोवै या संसार संत जन जागई मीत अभै पद पाये वार का जांचई॥

अलखु लखा तन तपनि बुझानी जाकी गति ब्रह्मा नहिं जानी।
कै परतीति बचन सतगुर के चौथे पद पाई रजधानी।
कुंभ नीर ज्यों सागर मिलिया अैसे जोती जोति समानी।
अबु को काढ़ि सकै बौरे नल या मति हमरे मनै डिढ़ानी।
विद्या पढ़ि दोऊ दीन भुलाने हरि गती केहु न जानी।
कोइ पाहन कोइ मुर्दा पूजैं बड़े कहावैं ज्ञानी।
एक कहे ते बीस सुनावैं दुनिया बड़ी सयानी।
कहि मीता खोजा तिन पाया छूँछ गये अभिमानी॥

सिरजनहारे की खबरि न पाई पंडित भूले पढ़ि बहुताई।
सतगुर सेऐ मिले सुखदाई पोथी थोथी कामु न आई।
माया काजे विद्या बेची येहि काजे विद्या आई।
लोभी बकै दाम के काजे ज्यों बकु मीनै ध्यान लगाई।
तनु धनु वारि सीस भुइं धरिया प्रेम भक्ती तबु हाथै आई।
मनु बसि करै पाँच का जीतै सो भक्ता जगु जीत कहाई।
बिनु करनी सबु जगत भुलाना कथनी सुनि सुनि गे बौराई।
जन मीता भै सागर उतरा जस कीन्हा तस आगे आई॥

जोगी जागि कै भंया सांचा मत पाया जब पाका।
छारु न लावै केस न राखै ना वा रंगई लत्ता।
आतम मिले आतमा रामौ छूटि गया जमु धक्का।
जगु हटिया अबु बहुरि न आवै अलख नैन भरि ताका।
अन्दर जोगु जगै सो जानै का जानै जगु अंधा।
ग्रह मा रहै सबै रंग खेलै नहीं करम मा बंधा।
ऊपर भेखु धरै सोई नल जो करनी का कच्चा।
मीता जोगी जुग जुग जिया जाका मन हो राँचा॥

चलु मन वाही देस का जहाँ घामु ना छाँही, नहि संसै नहि सोग है कालौ डर नाहीं।
करु सतगुर की सेवकी तजि आंहू मांहू सकल दुख तब जाइहै उनकी सरनाई।
गुरू मिलावै रामु का तन तपनि बुझाई आवागवन निवारई सो गुरू कहाई।
कान फुकाये का भये का तिलकु दिवाई, कंठी माला भरम है या ठगन चलाई।
अनेग भेखु सब भरमु है काहुइ जानि न जाई, जानैंगे उई मानवा जिन गुरमति पाई।
भेखु पूजि संतन हँसै ते नरकै जाई संतन केरा द्रोहिया कतहूँ कल नाँही।
पढ़ु दस गाये का भये का झांझ बजाई गावैं विस्वा ढाढ़िया का दासु कहाई।
भक्ती भेद खेड़वा नहीं जन सुजान कोइ पाई मीता दुरमति दूरि भई घर सुमिता आई॥

मन बेकरारिया रे हरि भक्ति न हासी खेल जो चाहै सिर धरै भुंई तन मन धन का वारि।
पैठि पताल धरनि बंद दैकै मूलै करै विचारु ब्रह्म अगनि उदगारि कै जीआ का करिये निरुआर।
आगू चल पाछू ना ताकै मय ममिता का मारि तत्तु तरिवार ज्ञानु कर लैकै पाँचौ चौरा मारू।
बहुतै साँवत बलु कै हारे बिरले न बांधी धीर मीता गुरू परताप ते नैनन भेटे रघुबीर॥

चलु मन पइले पार का आवै नहि वार-वार बड़ा दुख कालु का छिनु छिनु है मारु।
करु सुक्रति की नाऊरी मन करिया लाय पाँचो का डांड़ा करो धीरज धरि पाय।
सुरति निरति ते साधि कै लै गहिरे जाय नइआ उलटै भै तरै लीजे मंगल गाय।
तहां एकु नदी अनूप है हों लेउ नहाय मंजन कै पिय पै चलौ सुख लूटौ जाय।
अमर लोक अमरावती तहाँ जमु डर नाहि गरभु बासु आवै नहीं सब डर मिटि जाय।
ब्रह्मा बिस्नू महेस से ठाढ़े पछितांय वाटि भुलाने राह में कोऊ देइ बताय।
भागि बड़े सतगुर मिलै जे मारगु देई बड़े बड़े पावै नही दीनन का देई।
कहि मीता नलु मानिले या तत्तु विचारि आगि लगी चतुराइयाँ जिउ जरति उबारि॥

तन मन लागा वा ही सो बेदरदी सुनि वो अन ना भावै नींद न आवै ठगी मासूक वो।
वारे प्राण लखी छबि नैनन ऐसे अमली हो अरध उरध बिच भाटी औटी पिया पियाला तौ।
घायल का दुख घायल जानै और जानिहै को का भये बातें कहे दरद की घाउ न लागा जो।
मीता इस्क मरै ते गाढ़ा ठहरै बिन सिर सो हरसि हिरस बहुत कै थाके या नहिं हाँसी लौ॥

पंडित पढ़ि पुरान का कीन्हा जो आतम रामु ना चीन्हा।
भरमा आपु औरे भरमावै भरमि भरमि दामै लीन्हा।
जुगन जुगन का अरझा बिरझा अरझाये पर अरझा।
बाँधी करम भरम की टाटी सत्य सब्द ना बूझा।
बूड़े जांय तरै की आसा पंडित के विस्वासा।
समुझाये ते समुझति नांही होई जमपुर बासा।
बोरन वाले हितू कहावै तारन वाले बैरी।
कहि मीता देखो या दुनिया जाति नरक का दौरी॥

भजन बिन नल देही कस खोई हरी सा हितू न कोई ।
तिनका छाड़ि चहू दिसि धावै अन्त काल कस होई ।
जब जमु धार चढ़ी तेरे पर तब भारी दुख होई ।
तबै सुख सबै अकारथ होइहैं समुझि परै ना लोई ।
जीभु रटै औ माला फेरै या विधि भजन न होई ।
भजन सोई जो होय सनीपी आवागवन न होई ।
नौका नामु देइ गुरु पूरे निरखि निरखि जिउ ब्रह्म मिलोई ।
कहि मीता सोइ संत सुजाना या करनी कुछु हंसी न होई ।।

बंगला

भाग्य के सुभागी हो, चरन चितु लागिला, सुमिता का संघु करिला कुमिता का दूरि करला ।
मीन ज्यों जल बिन ऐसे हम रामु बिन, बिछरति कैसे जियला, पवन निकरि जैला ।
रंक ज्यों अन्न-धन, ऐसे हमरे प्रन रमिता रमाइबे गइबे मंगल गीत ।
जगु का चलन जारों रामा पै प्राण वारों, मीत मितइया हरि तन करिला ।।

रामु की दया हमैं चहिला, बन्धु जगत रिसैला हमरा का करिला ।
कबीरा का साथी भैला नमवा की टेकि रखिला मीरवा का विषवा अंचै गइला ।
बिरथा का पाली ऐला, जसवा भगत गइला, धनि धनि हरि होय रहिला ।
मितवा सरन अइला सकल कलेस गइला पनवा निछावरि करिला ।।

सरन तुम्हारी अइला अरजी फिर कासो कहिला, गुनवा अवगुनवा सब माफ करिला ।
जगत सब बैरी भइला जनते प्यारे रामु आस चरन केरि हमें रहिला ।
जन का सहाई करिला जसवा जगत भैला ऐसे धनीवा की बलि जइवा ।
मितवा की बारी अइला तेहि का अब काह कहिला, अरजी सुनाई चाहौ सोई करिला ।।

मुसलमानों का समझौता

मियां जी सो दरवेस कहावै जो जिउ पर चोट न लावै, अबहि करो निसाफ सबेरा जाते मौतु बनावै ।
का को कहिये जाति कसाई है कोऊ समुझावै, जीव जबै कै किया अहारा कौन कसाइ कहावै ।
जाके मेहर सोई निज पीरा पर पीरा का धावै अपनी चलति जीव प्रतिपालै लोभ दिलै ना लावै ।
अच्छा कपरा मोल मँगावै चोलना ढील सिआवै छल-बल काजे सेली डारै दुनिया ठगि ठगि खावै ।
हवै खुदाई हक पर राजी नाहक कै ना पावै अपना काहे गोदि कै लीन्हा बकरी काहे सतावै ।
जैसा दरद आप को व्यापै ऐसा सबु को आवै, करै खुदाय तफाउस भारी तब को आय बचावै ।
कुफुर तोरु मक्का है निकटै भेदी भेदु बतावै हज हजूर रहै तब ठाढ़ी काहे का गोता खावै ।
कहि मीता कोई फकर फकीरा साहेबु सो मन लावै काया महजिद तहाँ है साहेबु दीन गरीबी पावै ।।

मियां जी मुसलमान सोई दीना जेहि पीर मिले परवीना ।
हिरस हैवान दूरि कै राखै कामु न करै कमीना ।
बकरी पाँच ह्वै घटु भीतरि ममता मुर्गी संघा ।
इनका मारो जीव उबारो घटहि मक्का मदीना ।
आई गइ गाई को मारो होई जोति परगासा ।
गइया दूध खान की मारै दोजक होइहै बासा ।
किया पिसाब जुइन जीव भीतरि तहँवा जिउ उपजाना ।
तिनका मारि मांस तुम पावा भल तुम्हरा मन माना ।
कपरा मां कुछु छिटकी परई ताको कहो नपाका ।
मुर्गी भल कीरा चुगि पाये कहौ भई यों पाका ।
कहते हैं मुर्दा नहिं खाना कै हलाल कै खाना ।
जीव देही ते बाहर होइगा तब तो भा मुरदाना ।
करौ विचारु डरो साहेब का छाड़ो गरभ गुमाना ।
बिना छानु आखिर दुख पइहौ मारु परी घमसाना ।
जाके मेहर सोई निज पीरा जो पर पीरा साना ।
कहि मीता सोई करम कसाई जिन परदरद न जाना ।।

मियां जी तब किताब को बाँचै जबु साहेबु सो मन राचै ।
बिसरै देहि जपै को तसवी प्रेम पियाले छाकै ।
कलमा काल गाजै घटु माही कुफर तोरि मघ लागै ।
किये दिदार मिटै तन ताई जानै जेहि का लागै ।
जीव जंत्र काहुइ ना दुखवै साहेब सबु घटु राजै ।
मेहर दया बिन पिऊ न पावै जगिवे होई सो जागै ।
ख्वाहिद खुसी कौन विधि होवै नारि हुकुम नहिं मानै ।
कहि मीता सोइ बन्दा मिलिहै हक नाहक पहिचानै ।।

मनु रे हरि सनेह ना कीन्हा तेरा काहे का जगु जियना ।
काह भये हय हाथी बांधे खोभ खजाना लीन्हा ।
बदी कीई औसाफ न कीन्हा हुआं जुवाबु है देना ।
तहां की फिकिर करौ रे भाई गाफिल नाहीं होना ।
अबहु समुझ भई सो बीती करु पिछली की तोबा ।
अदबु करौ साहेब सांचे का बकसि देईं भये दीना ।
आखिर कोई कामु न अइहै पइहै आपन कीन्हा ।
कहि मीता कुछु साथु न चलिहै जनि माया रंग भीना ।।

सुनु बन्दे तजु मान गुमाना तन खोजो हैं ई रहिमाना।
काह पढ़े भये बेदु कुराना जो अपना मन हाथु न आना।
मैं तू है जिनके मन ज्ञाना सो भूला कुछु मरमु न जाना।
दीन गरीबी रहै समाना तिनका पीर मिलै मन माना।
भूख मारि गहु पाँच पठाना तब करिये साहेब का ज्ञाना।
सांचा होय सांचु का जाना छाड़ि बदी रहु भिस्त समाना।
दोजक बदी, बदी कुफराना तिन अल्ला का नाहीं जाना।
नेकी किये भिस्त मां जाना नेक नजरि साहेब पहिचाना।
काह भये जगु बहुत रिझाना दाम मिले औ मिले देवना।
आखिर मारु परी घमसाना कामु न आये दामु देवना।
जौ लगि अन्दर नहीं समाना तौ लगि ह्वै कपट का ज्ञाना।
इनका नाहीं होय मिलाना जहाँ कपट हाहा होइ निदाना।
का हिन्दू का मुसलमाना साहेब सव घटु ह्वै समाना।
परगट कै जे करै मिलाना सो दरबेस पिऊ जेहि जाना।
मीता सब सो करै मिलाना जो जैसा तैसा कै जाना।
धरु अकीन अकिल लपिट्याना तिनसो रहइ बहुत मनमाना॥

गहु मन चरन सरन संभारी होइ आनन्द सकल मंगल छूटिहै जमु रारी।
धन दारा सुत मात बन्धो संघु है दिन चारि अंत न कोई काम आवै जगत कटवा बारि।
कवल बिगसै मूल सोधे जीत पाँचों नारि राम या विधि पाइहै नल करम कागद फारि।
ध्रक जीबन है भगति बिनु नल इन्द्र का है गारी कहै मीता तेइ ऊँचे का नल का नारी॥

भाईं रे रामु कहै जगु सारा सब बूड़ि जाति मझधारा नौका नामु देइ गुरु पूरे जपे मिले करतारा।
औंकार याहो है किरतम औ चौबिस अवतारा तीन देउ जाको पार न पावैं ऐसा सिरजनहारा।
जिन आंखिन नारायण देखे सो मत ह्वै निनारा चामु दृष्टी सगरा जगु देखै जानैगा जाननहारा।
मीता जाके आंखी होइहै सो मानी अतिवारा अन्ध मूर्ख सो काह कहे भा सब्द न लखै गँवारा॥

साधौ भजन भरौसा भारी करता की बात निनारी।
बिनु सतगुर उइ हाथु न आवै पढ़ि पढ़ि मरै अनारी।
तीरथु बरतु नहिं कोई तरई भूली दुनिया सारी।
करम हिंडोले झूलि मरे सब संतन भली बिचारी।
तीन देउ चौबिस औतारा रिखि देवा संसारी।
हरि के दासा ह्वैं निनारे इनकी मति है भारी।
कहि मीता साधौ सुनि लीजै चौरासी है भारी।
कंठी माला पहिर न छुटिहौ गा ठगिया तोहि मारी॥

सतगुर धोवै मैलु घनेरा है सांचा धोबिया मेरा जुगन जुगन के दागु छुड़ाये तुम साहेबु मैं चेरा।
ब्रह्म अगनि अन्तर पर जारी जी का किया निवेरा भै सागर ते पार उतारा अबु ना करिबे फेरा।
तुम दाता में मांगनहारा दानु दीन बहुतेरा ऐसा दाता कोइ न देखा परसे छूटा मेरा तेरा।
कहिमीता सतगुर की महिमा जानैगा जाननहारा मूढ़ गँवार काह नल जानै जो करमन का मारा ।।

भैरों

जागु बहुरिया पहिरु रंग सारी अलख पुरुख की होइले पियारी।
जागति मारे पांचु खुआरी जागत जागत तपनि निवारी।
सहजि समाधि लगावो तारी कोटिन भानु ह्वां है उजियारी।
या दुख भला आगे दुख भारी जमु दारुन की चोट उबारी।
तजु कुल कानि झूठि संसारी अबके चूके विपति है भारी।
छा औ चारि कांदु की बारी तीन गुनन ते होइ रहु न्यारी।
जो तू खोलै अगम किवारी तुम्हरा आवागवनु निवारी ।।

अलख जगाउ जगाउ बहुरिया सब्दु सुनौ मूलै गहि डोरिया।
ब्रह्म अगनि अन्तर पर जरिया कसमौ कादु परौसी तरिया।
इंड पिंगला भरै कलरिया पियै पियाला सोई मतवरिया।
बिगसै कंवल होई उजियरिया अवघट घादु सूझि सब परिया।
मकर तार चढ़ु सुरति संभरिया जाते पिया की होउ पियरिया।
तहाँ नहिं बभनु तहाँ नहिं किरिया तहाँ नहिं बेदु नहीं गुन डोरिया।
तहां नहिं कालु विपति नहिं बेरिया सत्ति लोक सुख सागर भरिया।
तन सोधे सबु कारज सरिया कहि मीता सो कबहु न मरिया ।।

धनासिरी

हमरे रामु नामु की आसा त्यागे बिखै तमासा।
जौने नामु अजामिल तारा होय संतन का दासा।
हरिहरि जीभ कहेका होइहै जो पहुँचै नहिं पासा।
सांचु कहेते जगु दुख मानै झूठ जाति नहिं भाखा।
बिन करनी रहनी ना पावै सत्य लोक मां बासा।
अजामिल तौ आइ पूरबिया भै ते तबै निकासा।
धनि धनि सांचु राम जेहि रीझैं दीनबन्धु दीनानाथा।
जिनकी रीझ तौन पद पाया जहां न जमु की संसा।
तीन लोक हैं जमु की बारी बहु टूरै बहु खाता।
सुर मुनि देउ सकल जमु लूटा बाचे हरि के दासा।
करम करै करता नहिं चीन्है सै कै आपहु फांसा।
कहि मीता जगु डसा भुअंगम कैसे लेइ उसासा ।।

आजु प्रभु दीन्हा बड़ा दिलासा दीन भये मनु राखा जब चाहति ता बड़ी बड़ाई तब सपने ना ताका।
होय छोटा संतन का पाया अनभै पद परगासा बलि बलि जाऊँ संत संगति कै मेटी जमु की संसा।
नैनि समानि अलख सी सोभा रहौं रैनि दिन छाका भई जगीर अमरपुर मेरी का दुनियाकी आसा।
या जगु देखा कालु कलेवा चीन्है ना हरि दासा कहि मीता जो होय पुरबिया सो पहुंची हम पासा ॥

दया निधि उर के सोगु मिटाये मनबंछित फल पाये गये बेकार सकल या तनके तुमसे साहेबु पाये।
मैं बलहीन जाति का हीना सम्रथ सरनै आये हता अधमु अबु दास कहाया औगुन माफ कराये।
तुम दाता हम मांगनहारे तिरपित कै अघवाये बलिबलि जाउँ वार नै जैहौं भली विधि पार लगाये।
करनीकी ना करनी लायक चरन कवल मन लाये मीता सहजसहज ही पहुँचा अभै निसान बजाये ॥

ज्ञान के बान लगे उर भारे हम मरिये बिनु मारे चरन कवल सो प्रीति लगाई जमु के झगरा फारे।
रोइ रोइ निसु वासर बीता होइ रहे जगु से न्यारे दीनबन्धु करुना मय साहेब बूड़ति आय उबारे।
जो जस सुना सोई सोइ देखा अबु टरिहौं नहिं टारे ऐसा सरन छाड़ि कहँ जैहों परा रहोंगा द्वारे।
रोगी का दुख रोगी जानै वैदु झारि पचि हारे कहि मीता या मरमु कठिन है जानैगे जाननहारे ॥

सतगुर दाता हम भिखियारी सांची आस तुम्हारी निसु दिनु रहौं दुआरे ठाढ़ो दियो दिलासा भारी।
भयो भरोस बड़ा बलु पायो का करिहै संसारी सिंघु सरन जंबुकका करिहै हरि जन की रखवारी।
दास कबीरै नामै मीरै कौन सका इन्है मारो यह सुनि मनु मा निहचै आई अबु ना टरिहै टारी।
जन मीता का संसै नासा पच्छिम खुली केवारी मिला खजाना अलख अमोलिक या विधि भे वैपारी ॥

मालिन ले मन का समुझाई होइ सकल कुसलाई।
नेमु धर्म किरिया तपु संजम मन का मैलु न जाई।
बन बन काह फिरै तू डोलति कौनि अकिल तोहि आई।
माखन छाड़ि छाँछु का धावै आगि लगै चतुराई।
बेदु पढ़ी पढ़ि पंडित भूले जोगी जटा रखाई।
छापा तिलकु सकल जगु भूला जमु सो झगर बढ़ाई।
पाहनु पूजे मुक्ति न होइहै जीउ नरक मां जाई।
अन्तकाल जमु मोगरा मरिहै तबु को आड़े आई।
सिरजनहार निकट है तेरे दूरि हवै वा नांही।
करु सत संघु मिलै सो तोही बहुरि न आउबु होई।
जो वा दूरि होत को राखति गरभ बास अगिहाई।
तेहि बिसराय नहीं सुख भौंदू जलमु अकारथ जाई।
सुमिता पाल कुमति करु दूरी अंग की दुविधा खोई।
बिनु रहनी कारजु ना सरिहै या मति मुक्ती होई।
जन मीता ऊँचे चढ़ि टेरे बहिरा सुनै न कोई।
जो सुनिहै औ मारगु चलिहै सहज परम पदु होई ॥

सतगुर साहेबु मैं हों चेरा अबके करो निवेरा तनु धनु प्राण निछावरि करिहों तौ मोजरा है मेरा।
सीस उतारि धरो चरनन तत नेकु न करिहों झेरा लोककी लाजु मनै ना आनौ पाउँ परौं दै फेरा।
बूड़ति हौं चौरासी मांही बड़ी विपति है बेरा तुम बिनु कौन निकारै जन का नाउँ दयानिधि तेरा।
बिनती करौं अरजि है मेरी अबु ना करऊँ फेरा यहै रीझ होय मीता का करो अमरपुर डेरा ॥

बिलावली असवारी

चरन न छूटै राम के चाहे सो होई तेहि बल मनुआ ना डरै का करिहै कोई।
जन कबीर का का गया जलु दिया बोराई मीरा का बिखु ना चढ़ा ऐसे रघुराई।
नामा का गाढ़े धरा पतिसाह बुलाई गइया मुई जियाइँया जन पैजु रखाई।
या सुनि सरनै आइँया मन निहचै आई मीता सब कारजु सरे जम तलब छड़ाई ॥

सतगुर सेऐ पाइयाँ सांची सरनाई आगि लगै चतुराइयां जरि जाय बड़ाई।
सुरति निरति मारगु लगी कहुँ अनत न जाई अगम अगोचर तहँ गये जमु तलब छड़ाई।
ब्रह्म मिले ब्रह्मइ भये कुछु कहा न जाई कुंभ नीर सागर मिला को भिन्न कराई।
जीव ब्रह्म न्यारा हता तब जाति बताई भये अजाती रामु के को नांउ धराई।
बूड़े सबु अभिमानिया तिन थाह न पाई दीन भये ते सबु तरे चरनन चितु लाई।
समुझि देखि नल बावरे छाड़ो ममिताई सधना और कबीर की कैसी बनि आई।
दास सुझारी धोबिया काहँ हती कुलनाई सहज परम पदु पाइयां तहँ सिउ ना जाई।
तिमुर गया जब नैन का सबु समुझि पराई कहि मीता जहँ सांचु है सोई हरि पाई ॥

धनासिरी

हमरे और भरोसा नाही सुनिये नाथु गुसांई तुम्हरे बल कुछु डर ना लागै का जगु करै रिसाई।
चाहे या सिर जाय देहि ते देहि छारु हो जाई चरन कवल हिरदै ते न टारौं जिन मो तपनि बुझाई।
धनि सतगुर जिन तुम्हैं मिलाया बूड़ति लीन बचाई महिमा अगम अपार तुम्हारी दीन गरीबी पाई।
जीवन जलम सुफल कै माना मनमां निहचै आई कहि मीता तुम संत उबारन तुम सरना सुखदाई ॥

जोगिन नैन बलदि कहां लाई तब तो ढुरहरे हते तुम्हारे कौन अवल पी आई।
ना मैं बारुनि अचवनि कीन्हा ना मैं भांग चबाई रावल मिला प्रेम रस माता अधर कटोरी लाई।
तब ते छकी आनि ना भावै तुही तुही रटि लाई विरहु विथा कासो री कहिये अकथ कथा री माई।
जोगिन जोबन नये लै आई या अदभुद कहँ पाई मीता कहै सुनौ री आली सखियन सैनि बताई ॥

हमरे सिरजनहारु सनेही औरे जांचौ केही तेहि बिसराय निभर जे सोवैं ध्रिग ध्रिग तिनकी देही।
रामचन्द औ नन्द कन्हइया ई तौ मानुखि देही वा तौ ब्रह्म देहि नहिं धारै करता राम सनेही।
साकटु छाडु डार की बातें मूल गहे भल होई सरन गहे ते कालु न पूछै आनन्द मंगल होई।
सतगुर बिना तिन्है ना पावै मुक्ति कहांते होई कहि मीता गहु बेगि चरन हरि और न समृथ कोई ॥

राम राय संसो देउ छड़ाई बिनती तुम्है सुनाई।
चरन कवल चितु लगन न पावै अनत अनत लै जाई।
सिंघु सरन जंबुक जो ग्रासै अचिरिजु कहा न जाई।
नाथु साधु तुम सदा रहति हो दुख केहि जाय सुनाई।
गुन अवगुन अबु काह गनति हो मोल लेइ परखाई।
गांठी बांधि काह अब त्यागो हम अपंग कहँ जाई।
जैसे कागु जिहाज छाड़ि कै अनत कहां उड़ि जाई।
अनतै ठौरु नहीं मीता का अन्तर जानी सांई॥

आजु हरी भली घरी सुभ आये हँसि हँसि हियरा लाये।
चरन धोय चरनोदक लीन्हे नैन सो नैनु सिराये।
जरि बरि जाय लोक की लाजै करिहों मन का भाये।
जी का सांचु धरों पांवन तर या विधि पतिहि रिझाये।
छाकी पिये बारुनी मानौ भेदु न जाति बताये।
जा तन लगी सोई तन जानै का भये गाइ बजाये।
सुख सागर नागर के पाये तन के दुःख मिटाये।
कहि मीता बिरहनि का आनन्द ज्यों गूंगा गुर खाये॥

गुनन मां सबु जगु भूलि रह्यौ तत्तु ना काहू गह्यो।
गुन तजि जे निरगुन का ध्यावा सोइ सोइ पार भयो।
ध्यावा गोरख भरथरी कबीरा सतगुर सुरख भयो।
सो पदु ध्रू पहलाद न पाया इनका तौन दियो।
कहँ लग कहों संत की महिमा जाति न तौनि कहो।
शिव ब्रह्मादिक इन्है न पहुँचे साकठु मानि कहो।
रवि शशि बेधि मिले करता का आवागवन रह्यो।
जन मीता जमु चोट बचाई सांचा नाम लियो॥

कथनी बदनी का करै कुटनी के नाती ब्याहु भया ना सुख किया का भये बराती।
छापा तिलक बनाय कै हरि भक्ति न होई वा तौ खेलु अगम्मु है सुनु कागा गोती।
महिमा हरि के दासु की केहु बिरले पाई जिन पाई ते पार भे जगु बहुरि न आई।
माला डारे काठु की कैसे तरि जाई कहि मीता सुरभी तरै गरे मचवा नाई॥

राम दया औ दरस ते जमु तलब छड़ाई राम कहे ते का भया जगु भूला भाई।
राम कहते चोरों ह्वै कैसे तरि जाई रहनी ते हरि रीझहै सो सहजे पाई।
भये सनीपी राम के कुछु शंका नाहीं जुज्झ किया चौगान में पांचो धरि आई।
तब रीझे सबु बनि गई कुछु धोखा नाहीं जन मीता के मन बसे साहेबु रघुराई॥

ऐ मन मरना होगा जमु धरिहै आही ताते हरि भजि लीजिये जमु तलब छड़ाई।
अब के बारी तरन की जनि बूड़ौ जाई नौका कैले नाम का जो पारे जाई।
सतगुर मारगु कहि गये तोहि देहौं बताई मकरी उतरै फिर चढ़ै जो सहज समाई।
या विधि मीता मिलि गये को भिन्न कराये चरन कवल नैनन बसे तब दास कहाये ।।

हो ठगिया छापु तिलक झमकावै साँच बिना चौरासी बासा बूड़त थाह न पावै।
संतन नींद पखण्डी संघी पगु पगु काँटा बोवै साँचे साहेब का ना डरपै जमु सो झगर बढ़ावै।
नाहक जलमु गँवाइ चला सठु को मूरखु समझावै चौरासी मां करै मिलाना फिर फिर गोता खावै।
हरि की सरन मनै नां आनी माला फेरि दिखावै कहि मीता हरि अन्तरजानी तिनते काह छपावै ।।

बिखयन कीन्ही बहुत खुआरी भै भोगवै की प्यारी।
हरि की भगति करै ना पाऊँ अनत देइ लै डारी।
माया मोह इन्द्रिन के स्वारथ भूलि रही संसारी।
ज्यों मरकट मूठी के बाँधे सैकै आपु फंसा री।
सुर मुंनि रोय मुये ना बांचे संतन की गति न्यारी।
सतगुर बन्दी छोरु कहावै रीझे लेइ उबारी।
मन के गहे अमरपुर पावै बसि कै पाँचो नारी।
कहि मीता है भक्ति दुहेली पावा जन की बारी ।।

हरि की भक्ति करौं ता बन्दा नहिं तौ मैं हौं गंदा।
का भये नैन नासिका सुन्दर चीन्हे ना चरन अनन्दा।
धन दारा इन्द्रिन का स्वारथ या माया का फंदा।
जो बूड़ा सो बहुरि न उछरै परा रहै जमु फंदा।
पाँचो बाँधि पचीसो लूटै मनु छानै जैसे मैदा।
सो दरबार धनी का पावै का कवित्त किये छंदा।
बिना विवेकु भुलाना भोंदू कहि मीता जगु रिंदा।
और सबै सावन के जुगुनू संत सब्द ज्यों चन्दा ।।

तौ तू पावैगा मनु माना जो हरि चरना जाना सतगुर पंथु खांडा की रेखा ऐकादसि हो जाना।
का भये कंद सिघारन खाये झूठ बरत ना ठाना पांचो जीते होय अकादसि पदु पावै निरवाना।
का ग्यारसि का मावसि करिहै भूले मूरुख नदाना छाड़ि सनीप और कांह बचिहै कालुहवै निगमाना।
जन मीताका भरम भगाना गुरू सब्द पहिचाना कटिगे जलमुजलमु के संकट अब मनसो मनमाना ।।

मनु रे अच्छा रंगु लगाये जे खोजा ते पाये जहाँ निगम की गम्मी नहीं है तहां लै तू दिखलाये।
भूली दुनी और मुनि देवा अन्त ना काहू पाये सो तो संत सहज ही देते इन सरि कोइ ना बनाये।
अभिमानी अभिमानै बूड़े कामी काम गये लोभी माया मोह बूड़िगे हरि का ना रिझिऐ।
मीता भली गरीबी पाई बिन देने निवहाये पइयां लागों गुरू अपने को बन्दी ते छोरि लियाये ।।

नाहक कै कै जलमु गवाये अवसाफ मन ना आये ।
आखिर बांधि चला ज्यों चोरा दोजक जाय बसाये ।
गज तुरंग कोई साथु ना चलिया जेहि दौलति मन लाये ।
बदी खजाना भया साथ का बिखु के बैलु लदाये ।
तम्बू कनात भले भले डेरे नये निसान बनाये ।
यहाँ सोभा वहाँ मारु परति है का नौमति बजवाये ।
खुसी ना किया खुदाय असिल का ताते मूरि गवाये ।
कहि मीता टूटा है भारी का भये बांगु सुनाये ।।

प्यारे जोबन ह्वै दगा या ना रहै सदा ताते सावधान होय चलियो हरि का ध्यान भला ।
मरिगे पातसाहु बहु उमरा सुन्दर रूप बना मरिगे केतक राजा राना तौहूँ जाति चला ।
हय हाथी निसान नगारे जोरा किया घना आखिर रोज अकेले चलि भये ना कुछु साथु चला ।
मीता समुझि गरीबी टेकी अच्छा खेलु बना अबु ना मरौं पिउ अपना पाया कटिगा कालु फंदा ।।

भेरों

पाँच पचीस जकरि मनु आना ताते आवागवन मिटाना ।
काह पढ़े भये बेदु पुराना हरि की भक्ति बिनु काजु नसाना ।
तीरथु कोटि करौ खुरबाना कोटि कोटि जग्गी औ दाना ।
भूले मूरुखु कै अभिमाना चरन कवल मेरा चित्त डिढ़ाना ।
सतगुर की जइये खुरबाना जिन सेये पदु है निरबाना ।
छाड़ौ कपटु गहो तत ज्ञाना नाहित कालु करी घमसाना ।
कहि मीता सोई मरदाना जिनके निकट रहै भगवाना ।
पचि पचि बूड़े कथि कथि ग्याना पापु पुन्नि के बीच समाना ।।

संत की चालु जगत ते न्यारी कोई चीन्है संस्कारी लाखन कोटिन संत न होते ऐकुइ दुइ संसारी ।
छाके रहैं परम छबि ऊपर बिखै बेकार बिसारी और स्वाद कुछ मनहि न आवै बानी कहैं बिचारी ।
पलकु न लागै परम पदु पाये पारिख यहै हमारी अपने कुल की रीति न छाड़ै जे छाड़ै ते खुआरी ।
भेखु न धरै भरम ना राखै पाखंड देइ उघारी कहि मीता हंसों की रहनी बकै न जाय बिचारी ।।

धनासिरी

नलु रे भूला काह फिरै सांचु जो पकरै सिरजनहार बिसारि नहीं सुखु शिव शिव का करै ।
कोटिन विस्नू कोटि शिव ब्रह्मा रटिरटि ताहि मरे बिन सतगुर येऊ नहि पावैं ताहे तोरा का सरै ।
तनमा सार सोधि जो जानै मूल मंत्र पकरै रवि शसि वेधि मिलै चौथा पद जो अस ध्यान करै ।
परम जोति तेहि पद मां राजै मिलि कै नहीं मरै कहि मीता बाभनु है सोई झूठा झगर करै ।।

अैसा और दीन को पालै काटति है जमु जालै जन का दुख देखि उठि धावैं ठाढ़ रहति हैं हालै ।
पूरन विरध होय नहिं खंडित असुर न महिमा जानै संतन के हैं प्राण अधारा जो जानै सो मानै ।
सांची प्री तिरीति करताकी करौ निछावरि प्राणौ बलिबलि जाऊँ बारे होयजैहौं दासै किया निहालै ।
कहिय काह जीभ है येकै गुन काको बखानै कहि मीता जो पाछू सुनिया अब सोई है आगे ।।

सांचु बिना हरि हीरा न पाई कोटि करै चतुराई अन्तरजानी मन की जानै तिनते काह छपाई ।
पाखंड नाव भरी पापन ते को या पार लगाई छापा तिलक काह सठु करिहै जब जमु गरजत आई ।
लै चतुराई नरक पहूँचैं सुनि ले साधू भाई विखु का सींच अमी फल चाहै कैसे हाथै आई ।
कहि मीता का भूलि रहा है माया मोह बड़ाई या तो काया जरि बरि जैहै कै लै कुछौ भलाई ।।

रामु भजु करिहै अन्त सहाई दासन का उइ ऐसे पालैं ज्यों सुत पालैं माई
मां बापु की का कुदरत है जो अस करै सहाई बन विदेस मां जो सुत त्रासै मां कहाँ उठि धाई ।
पगु पगु परति दास हरि पालैं सदा करति हैं छांही जहँ देखों तहां उइ देखों और दूसरा नाहीं ।
कै परतीति प्रीति चरनन सों और मनै ना लेई कहि मीता सोई जगु जीता आवागवन मिटाई ।।

दया निधि छांह बहुत तुम दाया कै न सरन सुख पाया ।
दास कमाल सैनि औ नामा धना सैनि जस गाया ।
जिन्है उबारा तिन्है पुकारा या सुनि मोहूँ आया ।
बन्दी छोरि सरन कै लीजे अबु ना जाउँ सताया ।
सांचे मिले सांचु अपने ते हों तो झूठा आये ।
देउँ निछावरि सब संतन की अवगुन माफ कराये ।
जो गुनही के अवगुन ताको तौ नहिं ह्वै बचाये ।
अपने दरद दुख का मारा मीता रोइ सुनाये ।।

राम राय सांचा नामु तुम्हारा मैं झूठा नहीं विचारा रामचन्द औ कान्हा माया माया सबु संसारा ।
तुम्है छांड़ि जे औरे ध्यावै तिनका नहीं उबारा जैसे नारि खसम का छाड़ै करै औरे लगवारा ।
दाबी दै दै चले नरकु का को है हटकनहारा चेतु रे चेतु दुई के मारे ध्यावो सिरजनहारा ।
मीता करै पुकार दहूँ दिसि समर्थ है करतारा देइ अभै पद सरन गये ते जमु नहिं पूछनहारा ।।

नल रे देह गये को काको दुनी संघु दिनु दुइ को ।
माया मोह न देखि भूलौ भजिले साहबु सांचो ।
जैसे भरी सराय बहुत नल टिकत भये जहँ तहँ को ।
भोर भये उठि चले दहों दिसि साथी कौन डगर को ।
डगर गये रावन बलि नग से परत भये बहु टूटो ।
नफा भई रैदास कबीरै बन्धु भये हरि तिनको ।
आदि अन्त के हरि हैं साथी और साथ बीचै को ।
तेहि बिसराय मीत ध्रग जीवन मेरे ध्यान तिन्है को ।।

प्रभु को जस सुनि जांचन आयो संतन मोहि बतायो परा दुआरे अब ना टरिहौं लेहों मन का भायो।
दूसर और कौन मो जानक करिहै आइ सहायो अन्तर गतिकी तुम जानति हो करियै कौन छपायो।
जांचा नामा औ रैदासा तुरत अभै पदु पायो जन कबीर किया आपु बरोबर तब मन निहचै आयो।
जन मीता की यहै अरजि है रहौ चरनचित लायो काम क्रोध संसै नहिं व्यापै या बरदान सुनायो ॥

अरी अरी भूली राड़िया काया है कासी त्रिवेनी तोंही ढिग का फिरति उदासी।
भरमि भरमि पाहन पूजै जल फिरति हनासी अपना पिउ चीन्है नहीं जैसे विस्वादासी।
अष्ट कवल दल भीतर तहाँ है अभिनासी इन्द्री दै तिनका मिलै टूटै जमु फांसी।
अवध उड़ैसा कासिया मथुरा के बासी तेऊ भै का जाति हैं बिनु भगति खुलासी।
कोटि कोटि जग्गी करै विधि दानु करासी बिन सतगुर ना छूटिहौ चौरासी बासी।
कहि मीता सुनु बावरी का आवै जासी करु संतन की सेवकी पावै सुखरासी ॥

सपने सुखु के कारने क्यों धनी बिसारे धन दारा सुत मातवा नहिं कोऊ तुम्हारे।
जब जमु आइ सताइहै को करी उबारे काम क्रोध माता रहा मदमस्त गवारे।
कै ले साथी राम सा जो लावै पारा जमु की तलब छड़ाइहैं मानौ अतिबारा।
अब के बारी तरन की जुअना ना हारा मीता खड़े पुकारइ गुरू सब्द विचारा ॥

दिन का काहेक इतराता भली लगी है घाता नल तन पाइ भजौ हरि चरना होय सबै कुसलाता।
महा मोह पेखना जैसे सो कस देखि भुलाता अन्तकाल दुख भारी होइहै जमु करिहै जम जाता।
तब कोऊ धरिहर ना करिहै मातपिता सुतनाता गजतुरंग कोछ संघु न चलिहै जा माया तू राचा।
जैसे बोरे की है ढेरी वार न लगै विलाता कहि मीता ऐसे तू होइहै सपने मांहि भुलाता ॥

चतुर चले सब जमु के द्वारे परे नरक मां करै पुकारे।
करति रहै बैंकुंठ विचारा करनी आय नरक मां डारै।
सोइ बैकुंठ सोई संसारा उलटै पलटै फिरै गँवारा।
है खाइ की पंवरि पगारा कहु सधुआ हौं का ब्यौहारा।
कच्ची करनी का विस्थारा ताकी आस जगत सबु मारा।
सुनिहै कौन संदेस हमारा बिखु खाये घूमै संसारा।
चौदापुर जम जारु पसारा ताका को करिहै निरुआरा।
संतन का पदु हवै निनारा कहि मीता तहँ सिरजनहारा ॥

नाहक बिखयेनि सो मन लाये हरि हीरा बिसराये।
समुझि न परा काम की रिल्लन विरधापा मकु आये।
विरधापा टिसुना अति बाढ़ी सग सरबंधी आये।
खाभु अखाभु कुछौ ना चीन्है दाभ मिले सुख पाये।
ता पर सांचे होय कै बैठे औरै दोछु लगाये।
जमु का मोगदर आई पहुँचा मारि मारि बगदाये।
रूंधा कंठ सब्द ना निकरै सुत हित पूछन आये।
कहि मीता अब कौन उबारै मूरखु जलमु गवाये ॥

हरि सा हितू नहीं कोई प्यारा तजु झूठा संसारा दीन देखि कै जन का तारैं गाढ़े करैं उबारा।
मात पिता सुत नारी तेरे अपनी गौं के यारा भूले जानि परा ना तोही परा मोह के जारा।
जमु दारुन बैरी है तेरा ताते हो हुसियारा गहु हरि चरण कालु ते छूटै और न करै विचारा।
कहि मीता सेवा सतगुर की मिलति हवै करतारा अवध उड़ैसा कहुँ ना देखा धोखे सब जगु मारा।।

कथनी बदनी का करै कुटनी के नाती भक्ति पदारथु ना मिलै बिन संत संघाती।
पिछिला अकुरा जानि कै गुरु लावै छाती पाखंडी का ना मिलै खोजै दिनु राती।
साहेबु सो परचै नहीं कैसे होइहै दासी ब्याहु भया ना बावरी दुलहिनि रंग रांची।
मौरु हंस के सीस मां बकु होय बराती मीत अचम्भा मैं सुना पेढ़ की इतराती।।

प्रभु जी तुम साहेबु मैं चेरा लीजे मुजरा मेरा।
बांह पकरि दीनन का तारा अब हमरा है फेरा।
या जियरा अकुलाय उठति है पाया दुख बहुतेरा।
जहँ जहँ जलम धरा तहँ मारा दारुन जमु का जोरा।
मैं पापी अवगुन बहु कीन्है नामु न जपा तुम्हारा।
अब तौ लाज सरन की कीजे करौं न या जगु फेरा।
अजामील सधना गनिका का पार लगायो बेरा।
सोई आस हवै मीता की गाऊँ जस प्रभु तेरा।।

प्रभाति

दीन दयानिधि नाउ है जन हवै तुम्हारा तुम्है छाड़ि केहि ध्यावऊँ मेरे करतारा।
काहू के बल दाम का कोऊ परिवारा कोऊ जोरा जोर ते मेरे तुमहि अधारा।
पाँच चोरु घर मूँसई केही करौं पुकारा इन्हैं बाँधि जो पावऊँ जस कहौं तुम्हारा।
दुरमति दुविधा त्रासई मन रहै न सारा कैसे कै तुमका पाइये घर डिंभु विचारा।
अवगुन बहुतै करति हों कुछु वार न पारा ते अवगुन सबु करि कै भले पार उतारा।
जेहि तारो सोई तरै बलु नहिन हमारा बिन बल तुम्हरे दास हैं बलु हवै तुम्हारा।
जन मीता की बीनती है परा दुवारा सत संगति मोहि दीजिये येही परिवारा।।

प्रभू जी कै ना सरन सचु पायो अब गुन अवगुन काह गनति हो जस तुम्हरो सुनि आयो।
मैं अपराधी बड़ा पखंडी जलमु जलमु कै आयो लेखा किये बनै नहिं मेरी विरध की लाजु बचायो।
जैसी चाहौ करौ तुम तैसी रहति हवौं छल छायो मेरी ओर काह हेरति हो दीन दयानिधि गायो।
बिनती करौं कौन मुख लै कै कहतौ नाहीं आयो अब तौ मीता परा दुआरे तुम्हरो दास कहायो।।

ताको काह करै जमु जोरा जा घट नाम ह्वै प्रभु केरा।
दीन दयाल सांकरे साथी जन का दुःख निवेरा।
नामा केरी परचै राखी कबीर जंजीर ते छोरा।
मीरा का बिखु आप अचै गये जागत जस हरि केरा।
सांचे दिलन ते साहेबु सांचा तिनके निकट बसेरा।
उनके चलते आगे उठि धावै फिरत रहै चौफेरा।
जन मीता का बड़ा भरोसा और नहीं कोई मेरा।
जैसी चाहौ करो तुम तैसी विरध ह्वै या तेरा॥

पांच सब पर जोर किया साबित कोई ना गया दररि दररि वाके प्राण निकारे तहों घेरि लिया।
इन्हें मिले रामै ना पावे का भये रामु कहेआ इन्द्री दावै ब्रह्म का सोधै सोइ जन दास भया।
का भये जटा भभूति संवारे का भये दंत किया काह भये मृग छाला डारे नाहक जलमु गया।
का भये छापा तिलक संवारे गुदरी पहिर लिया छल बल करै खाइ के काजे उद्दिम येही किया।
साखी सब्दी सिख सिख लीन्हीं भेदु ना नेकु लिया इन धूतन का जमु समुझाई जिनका बड़ा हिया।
का भये प्रात किये असनाना चन्दन गारि दिया का भये बेदु पुरान बखाने मन ना सुद्ध भया।
या संसार हाटु पाखंडु की सांचु न काहु गहा सुरनर मुनि सब भरम भुलाना सौदा कुछू न किया।
जन मीता हरि हीरा लीन्हा सट्टे सीस दिया आवै हाटि बलाय हमारी टूटा दूरि किया॥

पाहन पीतरि पूजि कै सठु घंट बजावै सिरजनहार विसारि कै धौं केहि दुल्हरावै।
माया का परपंचु रचै छल-बल कै खावै कंठी बांधै सिख करै बहु भेखु बनावै।
आपु कालु के मुख परा सिखु कौन बचावै नरक परे दूनौं चले औ झुंड बुलावै।
सांचु कहे ते जरि मरै निन्दा ठहरावै जन मीता इनका डरै निकटै ना जावै॥

गहु चरना हरि दास के अनभै पदु पावै सपना या संसार है जनि देखि भुलावै।
मात पिता सुत बाँधव कोई काम न आवै जीव कालु धरि लै चला तब जुआब ना आवै।
न्हाई खोरि आंखी मिचै केहि ध्यान लगावै साहेबु सो परचै नहीं जमु हाथ बिकावै।
माला फेरै हाथु लै बिखियन धावै कहि मीता नल पाखंडी तेहि को समझावै॥

जो मनुआ डिढ़ होय रहै हरि के विस्वासा ताको बारु न बाकई हरि आपुहि साथा।
सैनि धना रैदास के सीझे सब काजा जो ध्यावै सो पावई का रंका राजा।
दोखु लगावै राम का तिनका मत काचा कपट कतरनी काखु मां कैसे रीझै सांचा।
मातै आन न भावइ चरनन चितु राचा अन्तरगत की जानई मोरा साहेब सांचा॥

औरे का सिख देति हैं अपना है साकठु को या न्याउ निवारिहै मोहि अचिरिज लागत।
भक्ति भाव जानै नहीं पूजति हैं पाथर अंधे का परमोधि कै ठगि खाते धाकर।
गुरमुख के निकटै रहै हरि छाड़ि न जाते तिली फूल ज्यों बासिया ऐसे मिल जाते।
तिलौ बास एकै भई गुन दूरि पराते कहि मीता ऐसे पगे तिनके मत सांचे॥

मन बिनवउँ तोहि आपने कहों अनत न जाई हरि चरनन लागा रहै तौ खता न खाई।
या माया परपंचनी तेहि ना पतियाई सुर मुनि नर फंसे परे को सकै छड़ाई।
हम दुखिया बहु दिन रहे तू खबरि न पाई करो सनेहा रामु सो तन तपनि बुझाई।
लै चलु तौने देसवा जहँ जगु ना होई जगु दीखे हियरा डरै हुंआ कालु न होई।
सतगुर बन्दी छोरु हैं तिनका मिलु जाई उइ तो रामु मिलाइहैं कुछु धोखा नाहीं।
हा हा कै मीता मिला जमु तलब छड़ाई आवागवन मिटाइया छांड़ी चतुराई ॥

उद्दिम भा गुरवाइया को हाटै जाई हँसि हँसि ठगि ठगि खाति हैं पाछे पछिताई।
भार बैलु होय लै चले बैठति लतुआई हाहै हाहै पूकिहै बुस खरी खवाई।
मंत्र सुनाजै कान मां गरे काठु बंधाई दूनौ बूड़े बापुरे हम खबरि सुनाई।
कहि मीता सठु मानिले उद्यम कै खाई बाभनु नामा दास है तू ठगु का भाई ॥

हरि जन हरि का गावै ध्यावै अनतै ना चितु लावै।
तीरथ बरत छोई से त्यागै जोति मां जोति मिलावै।
जग्गि दानु तप संजम त्यागैं अपने पतिहि रिझावै।
कहि मीता जगु भरम भुलाना अलखै कौन लखावै ॥

भजिले सांचे नामु का जगु बहुरि न आवै परलै मां बिनसै नहीं जमु तलब छड़ावै।
हम साही होय पीकई निजु खबरि सुनावै हमरा कहा न मानिहै तेहि नरकु पठावै।
माला फेरे का भया मनु हाथु न आवै मनु महरा हाथै करो हरि सहजे पावै।
पाहन बांधे का फिरै सठु बूड़ा जावै कहि मीता मिलु ब्रह्म का तब दास कहावै ॥

अब ना डरौं डर भागिया सुनि लीजे भाई या जगु बहुरि ना आवना सेये सुखदाई।
चौदा औ नौ सात मां है जमु की राई तहाँ का बासा छाड़िया जब गुरमति पाई।
बांधि बांधि जमु मारिया सुधि गै बिसराई छोरन वाले जो मिलै ता चीन्ह न आई।
या माया सुत कारने बहु आस बढ़ाई कहि मीता तन दुख घना आये अगिलाई ॥

कठिन पंथु है दास का जैसे खांड़े धारा डगमगाय ता गिर परे ठहरे भे पारा।
गृह ना छाड़ै आपना लीन्हे परिवारा अभिअन्तर न्यारा रहै ई जन व्यौहारा।
सेली तूमा गूदरी या भरमु पसारा पाखंड भेखु बनाय कै ठगिया संसारा।
अपने घर का छाड़ि कै पूछै पर द्वारा मानुख ते कुत्ता भये या भेखु विचारा।
अन्ध अन्ध परमोधिया जमु भा रखवारा संतन का चीन्है नहीं चले नरक दुआरा।
कहि मीता गुरु ज्ञान ते हम भरमु उघारा अरध नाम लै तहाँ गये जहाँ सिरजनहारा ॥

अरे भाई सतगुर बहियाँ पाइयाँ जिन दीन मिलाई अब जम्बुक की का चलै सिंघा सरनाई।
सिंघु सरन कैसे जानिया जो जम्बुक खाई तीन तापु जाकी मिटैं सो दास कहाई।
रजोगुन-तमोगुन-सतोगुन कोउ छांड़ति नाहीं जो छांड़ै ता भेटई साहेबु रघुराई।
जगु छाड़े बातें कहै मोहि को पतिआई मीता बानी अगमु की कोऊ बूझति नाहीं ॥

तुम साहेबु हम बांदिया हमरी सुधि लीजे या संसार बेकार है तहां जलमु न दीजै।
गुन अवगुन कुछु ना गनौ हम हा हा कीजै ऐसे सम्रथ पाइकै कासो बिनती कीजै।
तुम दाता हम मांगता अनतै नहीं सूझै परा दुआरे ना टरों चाहे सो कीजे।
मन अपंग गुन ना रहै जगु मां का कीजै जन मीता की बीनती सरनागत कीजे॥

तन का गुमान है भजु सांचा राम, तन बारू की भीति ज्यों बिनसति नहिं बार।
हय हाथी द्वारे खड़े जगु अमल डिढ़ान जेहि घट अवलु ना रामु का सोई प्रेत समान।
राम-रहीमा एकु है दूजा जनि जानु जो सब ही मां रमि रहा हम सो मत ठान।
तन सोधे सोइ पाइयां गुरू ग्यान मिलान जन मीता जगु जीतियां तब भरम भगान॥

साहेबु सम्रथ पाइयां गुरु भये दयाला अबु काहे मनुआ डरै कस भये दिवाना।
जीव जंत्र सबु पालइ संतन रखवारा सोई भरोसे सबु बनै छूटै जमु जाला।
या दुनिया दुविधा परी कैसे मिलै गोपाला कान्हा रामचन्द रटि मरी निज ब्रह्म न जाना।
संत पियारे राम के अन्तै ना खेली इन्है मिले ते भै तरे मीता सोई ठाना॥

भैरो विहगर

समुझि कै जागु रे मन मेरे सोये दुख बहुतेरे।
सोवति सोवति जमु धरि मारै चौरासी दै फेरे।
मेरी मेरी करति भया तनु वोरा घुरति ना लागै बेरा।
कहि मीता बिनती है तों सो हरि भजु मानु निहोरा॥

हम बनियां बनजी करैं कोई मरमु ना पावै रैनि दिना तौला करै साहै समुझावै।
रवि ससि तौ पलरा करै चितु डांड़ी लावै सति सेर पूरा करैं गुरू ग्यान डिढ़ावै।
लोभ हमारे नामु का माया बिसरावै चौदापुर का त्यागि कै अनभै पद ध्यावै।
नफा रामु धन पाइयां अबु बहुरि न आवै बूड़ा सब जगु जाति है मीता गोहिरावै॥

हम बनियां सति लोक के जगु का समुझावै कहा न कोऊ मानई सबु बूड़े जावै।
दरद हमारे जीव का जो हमका ध्यावै सो जन पार उतारई जमु जालु छड़ावै।
सो जमु तीनिउ देव का बहु नाचु नचावै सुर-मुनि नर की का चली संतन को पावै।
आदि पुरुख ते भिन्न नहिं जो दास कहावै कहि मीता संतन मिले पद अनभै पावै॥

साहेबु दासन की सुधि लेहीं जहां सांचु है नेही पीछे लीन्ही लेते फिर अवहु नहीं कुछु सन्देही।
झूठे केरे निकट न जाते अन्तर की लखि लेही केते पापी गावैं ध्यावैं गाये रीझ न होई।
चित्र गुपित बड़े लेखाधारी जैसे का तस देही छल-बल तहां कौनि विधि चलिहै सावधान सठु होही।
चतुर चतुर सब जांइ नरक का कही मानि तुम लेहू जन मीता निरसंक भयेहैं करि संतन सो नेहू॥

का ठगिया संसार का सठु तोहि ठगाये माल बिराना खाय कै सिर भार लदाये।
काहे किरखी छांड़ि कै तू भेखु बनाये मालपुआ औ पूरिया मनु देखि भुलाये।
डर न किया कुछु राम का अन्धेर मचाये खर महिखा बैला करी विसु होइहैं खाये।
बेइमान ईमान बिन जिन भेखु बनाये कहि मीता सुज्जन सुनौ हम समुझि बताये॥

नैनन लागी इस्क खुमारी मजिलिसि टरति न टारी।
सुक्रित लै कै भाटी बोजा ब्रह्म अगनि उदगारी।
रैनि-दिना मोरी पलक न लागै करा करौं रखवारी।
पिया पिआला मन भा थीरा पच्छिम खुली किवारी।
अलख लखा तन तपनि बुझानी आवागवन निवारी।
अब न मरौं मोरी मरै बलैया मिली सजीवनि प्यारी।
तन धन बारि मता या पाया हवै अगम बहु भारी।
सुख सागर उमड़ा को थामै भा मीता टकसारी॥

ढूंड़न संत ना पाइये सुन मूर्ख अनारी बहुतै हैं ते भेखु हैं ई पाखंड धारी।
उइ ऐकुइ दुइ होति हैं जहँ लौ संसारी हरिजन न्यारे ना रहैं उइँ सदा हजूरी।
धन्नि ग्रिही जहां ऊपजै हरि के व्रतधारी नामा-कबीरा-नानिका-सधना हितकारी।
कहि मीता तजु भेखु का ना तो होइ खुआरी सतगुर गिरही सेइ ले तोहि पार उतारी॥

का मुद्रा जोगी करै साहेबु गति न्यारी जिन देखा सो जानिहै रवि कोटिन बारी।
काह भये अनहद सुने लखि कै उजियारी या तो झांई कालु की जी की रखवारी।
उरध मुख पवन चढ़ाय कै जीवैं अधिकारी देहि छूटि अजगर भये इन पूँजी हारी।
रेचकु कुंभकु मुनि मता या भरमु पसारी कोटिन अजपा ध्यावई भूले भेखु धारी।
सुन्नि मडिल बहु खोजई अन्धे बैपारी बहुतेन का परमोधिया ठगिया संसारी।
धोती नेती बहु करै बहु आंत पखारी ज्यों बाजीगर पेखना जगु देखनहारी।
ब्रह्म अगनि उदगारि कै खोली पछिम केवारी जीव ब्रह्म मां मिल गया आवागवन निवारी।
सोई मिल सोई भया को काढ़नहारी कहि मीता अस एकु दुई जहँ लो संसारी॥

कुंभ नीर सागर मिला कैसे न्यारा होय ऐसे हरि हरिजन हरि मिली भिन्न करिहै कोय।
काहेक सो जिभ्या रटै काहे का माला फेरी या करनी हरि ना मिलैं गुरू गमि का खेलु।
माला फेरति बहु मरे घर लखा ना भेदु चौरासी का मानवा बूड़ै दै हेलु।
शंकर तपिया तपु किया ब्रह्मा किया बेदु बिस्नु दया उतपति कीई पिऊ गये ना खोजि।
बड़े भये ना पाइया सुनु भौंदुवा लोग दीन भये ते रलि मिले या अस जोग।
सुई अग्र वा द्वार है कैसे कढ़ै पहार होइ राई का बीसवां सोई उतरै पार।
पापु पुन्नि दोउ बाँधवा बाँधा संसार ज्यों मरकट की मूठिया पचि मरा गँवार।
मीता मंगल गावई किये सतगुर सेऊ आवागवन मिटाइया मिले संसै देऊ॥

तरना तरना जगु करै तरना ना जानै जियते तरना होति है सतगुर पहिचाने।
तरना मुये बतावई ते भये दिवाने मुये गरभु फिर वासु है सोई नरक नदाने।
धनी मिले तेहि अब मिले मिलियां ते जानैं ताही का तरना कहै हरि चरना जानै।
तीन चार छा फांसिया फंसि सबै भुलाने मुये मुक्ति जे कहति हैं तिनकी जनि मानै।
जो देखा सो फँसा है लखु अलख जहाँ रे सतगुर अलख मिलावई वोऊ अलखु समाने।
करु संगति तू तेहि की औरे जनि मानै नेम धरम तपु छाड़ि दे भला पिउ पहिचाने।
दानु देई गिरगिट भये नृग कै अभिमानै चरन सरन तकु रामु की औरी जनि ठानै।
भूले संघु न भूलई तन जाति बिहाने कहि मीता सुनु मानवा गुन मां जनि सानै।।

काह भये पद दुइ दस गाये जो नहिं हरि की सरनैं आये।
करनी कीई न गोबिंद पाये पर कथनी कै जलमु गवाये।
पापी बज्र पापु रहे छाये अवगुन करत नहिं डर पाये।
जमु ते करिहौ कौन छपाये डारी नरक न बचिहै गाये।
तरी सोई जिन सतगुर ध्याये रामु मिले जमु फंद छड़ाये।
काह भये सठु तेरे गाये गाइ गाइ जगु का भरमाये।
हरी बिमुख ते भगतु कहाये ई देखो जगु भगता आये।
तिनका होय काह समुझाये कहि मीता हम रहे बचाये।।

सो गावै जिन हरि गुरु पाये आपु तरे बहु पार लगाये।
ना गावै तौ का है गाये गाइ गाइ सुज्जन समुझाये।
गावै गुनी भाड़ु गुन पाये ते का हरि के दास कहाये।
एकु छकें देखा सो गाये ते गावन मेरे मन भाये।
गाइ गाइ सठु बहुत भुलाये पिउ के घर के भेदु न पाये।
माला तिलकु लै भगत कहाये तिनका जमु भले हाथु लगाये।
जन मीता सांची गोहिराये तिनका जमु निन्दक ठहराये।
सांचु कहे ते रामा पाये तिन राम आवागवन मिटाये।।

रामु का जोगी होय जस गाऊँ रामु का जोगी हो जस गाऊँ।
जतन किये ते पाऊँ गुरु के मते धनी का ध्याऊँ नैनन मांझ समाऊँ।
सेली सील मनुइ मृग छाला प्रेम भभूति लगाऊँ।
ब्रह्म अगनि मां कसमों जारा कुमिता दूरि बहाऊँ।
जटा न राखौं छार न लाऊँ चमड़ा नहीं डसाओ।
भीख मांगि मोरी खाय बलइया पाखंड भेखु बहाऊँ।
छा भेखु छानवै पाखंडु सुनियो मैं गोहिराऊँ।
कहि मीता गिरही हरिदासा गीता तौहि बताऊँ।।

जुरा सनेहा रामु सो जगु कौन हमारा ते निन्दा का ना डरै जिन तत्तु विचारा
लोक बड़ाई का चहै ते मूर्ख गंवारा डिम्भु लोभु ते उपजा बिसरा करतारा।
बिखै विकारन मा फंसा बहु ज्ञान पसारा पेटु औरि मुख औरि है तिनका मुख कारा।
सांचु कहैं हरि पाइयां सुनि लेऊ लवारा मीता उतरा पार का आवागवनु निवारा।।

धरनि मूल बन्द देई ध्यान का धारियो सुरति लगी सति लोक त छिनु न बिसारियो।
काढ़ि तार एक तार ता देहि विसारियो रवि ससि सम कै एक भेदु चढ़ि जाइयो।
कठिन ह्वै या काम बिरला ठहराइयो संतन मां जसु होय परम पद पाइयो।
सो जोगी निरवान जो मता डिढ़ाइयो भेखिन ते या दूरि मीत सचु गाइयो।।

सुनु हरि दासन के व्यौहारा काम क्रोध का करै विदारा।
लोभु नदी का पियें न नीरा रहते सदा धनी के तीरा।
छाप तिलक पाखंड ब्यौहारा तिनका पूजै मूर्ख गँवारा।
केस रखावा लावा छारा पूजनहार परै जमु द्वारा।
विद्या पढ़ि ना पाये रामा ई तौ सब दामन के कामा।
नारि खांय औ करै बेधामा सुक्रित करै न खाय हरामा।
गिरही पहुँचे हरि दरबारा गृह छाड़ै ते होइ खुआरा।
जन मीता कहै तत्त विचारा जहाँ लोभ तहँ नरकु दुआरा।।

तेरी किरिया बज्र परई साँची क्यों ना धरई बड़ी या किरया माँस मछरिया भक्षण तौनी करई।
ऊपर बका बहुत ऊजरा भीतरि मलिन करई ऐसी चंदन पूजा तेरी मन घिन नाहीं करई।
माया काजे परपंचु कीन्हे हरि का नाहीं डरई जमु करिहै तेरी महिमानी खर का जलमु धरई।
ह्वै बड़ाई दिना चारि की फिर तोहिं छिया करई कहि मीता संतन की महिमा अनभै राज्य करई।।

विद्या पढ़ि कै जग्गी दानु कै कासी जाय मरे तउ न जीव नरक ते निकरै मूरुख भटकि मरे।
भै सागर के हरि जन केवट ताकी सेउ करै ते तारैं दूसरि को बपुरा बिरले परिख परे।
ते गिरही मा भेखु न धरिहै पाखंडु भेखु धरै तिनके निकट न कबहूँ जइयो दोउ कुल नासि करै।
जगत बड़ाई कूकुर बिस्टा लोभी फूलि मरै कहि मीता जे हरि के प्यारे ते लै काह करै।।

मनु उजला करू नैन रंगो रंग ताहि का फीक न कबहूँ होय सुहागिन नाह का।
गेरुआ बस्तर बौरि रंगै तू काहे का मन मैला करै खून कहावै राम का।
हौं नाहीं अन्धेरि करै औसाफ का परैगी भारी मारु ता बेइमान का।
मीता कहै विचार सुनौ या काम का देहौ कौन जुवाब पूछी एकु दाम का।।

रामु ना काहू के दादा ना उई बेटा रे धरै नहीं अवतार अलग हो बैठा रे।
सुनु काफिर बेदीन अलख वा ऐसा रे नहीं रूप नहिं रेखु सोई हम देखा रे।
इच्छै ते सबु कीन्ह खलक रच ऐसा रे इच्छा ते करै नासि बली वो ऐसा रे।
कौन अटक औतार कहौ सठु भैसा रे माया का परपंच करै जगु रैसा रे।
मच्छ कच्छ बाराह बावना ऐसा रे, जैसा सबु संसार रामचन्द ऐसा रे।
चौबिस, दस का गनै भरमु तोहि पैठा रे या सबु होई नास सपन है जैसा रे।
अजर अमर बर खोजु होउ तोहों ऐसा रे मानि लेउ अवतार भला सुख देखा रे।
मीता किया विवेक कहा जो देखा रे चौथे पद अस्थान ध्रुओ नहिं देखा रे॥

बसी किये मेरे प्राण हरी प्रेम फांसी गरे निरखि परी।
मैं तौ चली हती ढूँढ़न को मैं भूली तन सुधि बिसरी।
जो जेहि चाहे सो तेहि चाहै दुहू ओर चाहे प्रीति जुरी।
एकु ओर चाहे नहिं होती सुनहु ननदिया बातु खरी।
जुगन जुगन आगे बनि आई पछिली किरपा हती धरी।
आनि देउ की आसु न राखौं ऐकुन रटना पार परी।
जेहि जस रूचै करै सो तैसी मोहु रूची सो मोहु करी।
मीता लगन लगी ना छूटै जानै सो जेहि जानि परी॥

चलु मन रोगी बैदा तांई होय निरोग मिटै तन ताई।
मरै नहीं अमरौती पाई सतगुर सेवा है सुखदाई।
तन पुरान सो नौ कै लेई जोवन धंसे न हरि का ध्याई।
भै ते निकरि सहज घर जाई दइया मइया सबु छुटि जाई।
अटल राज ध्रू ते अधिकाई ध्रू विनसी तू बिनसि न जाई।
महा परलै मां ध्रू कहँ जाई तीनिउ पुर जब आगि लगाई।
चौथा पदु तहँ आंचु न जाई मीता गाजा तेहि बलु भाई।
अन्धी दुनिया समुझै नाहीं कहे जाय हम ढोलु बजाई॥

पद निरगुन निरवान भागि ते पावई जोति मां जोति मिलाय बहुरि ना आवई।
का भये माला फेरि राम रटि लावई बिन सतगुर की सेउ रामु ना पावई।
छापा तिलक बनाय तो डिम्भु बढ़ावई रामु विमुख येइ लोग जे भरम बढ़ावई।
निराधार जब होय निरन्तर ध्यावई मीता मनहि बिलोय मनुइ हो जावई॥

गुरू ज्ञानी कोई एक विमुख कोटिन भरे छापा तिलक बनाय भरम मां सब परे।
आंखी मूंद माला फेरि रटै हरि हरि हरे रीझै ना हरि जिउ ताहि अभागी पचि मरे।
लिये पाप की मोट मुकति का मनु करै करता करै नियाउ होइ का हालु रे।
हंसा चलेउ विचारि रहेउ इनते परे मीता केर सन्देस रहेउ आनन्द भरे॥

आदि पुरुष घटु घटु अभिनाशी जा सुमिरे टूटै जमु ांसी ।
मानु सब्द पावै सुख राशी काह भये काशी हो बासी ।
तेतिस तीन बारहों रासी ध्रू-पहलाद परे जमु फांसी ।
नारद मुनि औ सहस अठासी ई दुखिया जाये दिनु रासी ।
गोरख भरथरी औ सुल्तानी कबिरा-सधना काटी फांसी ।
जोई हरि सो हरिपुर बासी कौन बरोवरि करई पाजी ।
कहि मीता हम हरि के साथी दुनिया की मति देखी कांची ।
पाखड़ पूजै नरकै जासी सांचु कहों तो करई हांसी ।।

बेसरि का मोती खूबा ताही सो मतलूबा मुख पर वारो कोटिन चन्दा इस्क लगा मजबूता ।
जरि जरि बरि बरि आसिक हो दलियानी जर ठाका ऐस नहीं अवसान रे बोरे बाटि पिये का दूवा ।
दुनिया बहुत दिवानी देखी मिला चाहैं महबूबा बदी करैं औ या मन राखैं देखो इनकी भूला ।
आसिक सो जो हुकुम बजावै करै न दनकौ चूका कहि मीता सोई मरदाना जो जूझै साबूता ।।

जब आये मेरे हरि के दासा तबहि मन फूला फूला ।
फिरै कहूं न समाता जगा भागि बैइठ उन पासा ।
कृपा कै खोई त्रिऊ तापा बिगसा कवल प्रेम परगासा ।
अलख लखा अस दीख तमासा सत्ति लोक मा पाया बासा ।
धनि शुभ घरी जबै मनु राचा धनि सनि संत सकल विधि दाता ।
भिक्षुक जगत येई है दाता इनके परसे जीव अघाता ।
वारौं प्राण होउ तन दासा जलमु सुफल भये जिनकी आसा ।
मीता करई प्रेम विलासा मनु उजला भये मैलु न खाता ।।

अब तू काहे ते बौराना हरदम धनी न जाना ।
तन जोवन अंजुरी का ज्यों जल छिनु छिनु जाति निधाना ।
हाथी घोरे महल नगारे दिन दुइ के मजमाना ।
आखिर कौन जुबाव देऊगे जब पूछी रहिमाना ।
गाफिल फिरै मोह का बांधा दामन सो मन माला ।
मेरि मेरि करत अवरदा खोई अबहू चेतु नदाना ।
रहैं सनीप दीन के साहेब, जिन खोजा तिन जाना ।
दुनिया सोवै मीता जागै कहा किन्हौ ना माना ।।

साधौ नगरी हमारी जोगी अैला, अन्तर जानी मन का माली अलख अलख गोहिरैला ।
सेली बटुआ केस न राखै मारगु एकु बतइला तेहि मारगु एकु हीरा पाया हीरा सो हीरा मिलइला ।
काह भये तन छारु लगाये या को भेदु बताये जा भरमा आपु औरे मभरमालैंगत खाति लजाये ना ।
सो रावल जो अलख मिलावै झूठा कान फरायेगा कहि मीता जोगी का मारगु भाग्य बड़े ते पाइला ।।

या तन का नल कौन भरोसा विनसि जाति वोरा सा देखा।
मेरी मेरी करते परिगा धोखा अन्त काल जमु लेई लेखा।
कै सतसंघु राम जिन पैंखा मिलत गये सबु गये अन्देसा।
ठगु खाय कै धरई भेखा हरि मारगु का न्यारा लेखा।
निज नरकी जे पूजै भेखा, इनके संघु लगति है धोका।
संतन सेई राम हम देखा औरे का दीन्हा उपदेसा।
या संसार बड़ा है धोखा, जाहिर कै कै किया विवेखा।
सुज्जन का हम दिया सन्देसा मीता पहुँचा पिउ के देसा॥

अैसा साहेवु धनी हमारा मरै नहीं करतारा, बाहं धरै ता पार उतारै जीवनि प्राण अधारा।
रोग दोख सब दूरि बहावै छूटै जमु का जारा तनकी तापु सबै मिट जावै करता जौन दिदारा।
अल्ला-राम-करीम-केशो सोई नाम करतारा अभिनाशी विसमिल्ला सोई है सबु मां औ न्यारा।
महजति सोई देहुर सोई, सोई हवै दरवारा मीता देखा तब मनु माना भरम भूलि संसारा॥

काह िस्थार बतावै भरमा आपु औरे भरमावै।
सो करनी जो साहेब पावै अनग ज्ञान घट सहजे आवै।
आंबु न खाय पेड़ गनि आवै ताकी जीभ स्वादु ना पावै।
का माया का र्थ बतावै यहि मां ल रामु ना पावै।
ज्यों बाजीगर पेखन बनावै देखन लोग तमासा आवै।
जौ बाजीगर देखन पावै ताहि पेखना मनै न आवै।
हरि का दास राह बतलावै माया का परपंच छड़ावै।
कथनी ताके मनै न आवै कहि मीता जो ब्रह्म मिलावै॥

आरती

करू आरति गुरु ज्ञान बिचारी का पाहन ढिग दियना बारी।
ब्रह्म अगनि अन्तर पर जारी उलटा कवल आत्मा तारी।
सुरति निरति लै खोलु केवारी पर आतम की होय पियारी।
पतिव्रत अैसा जो धारी सेवक साहेब होइ न न्यारी।
निसि दिनु आरति लागि खुभारी आरति करत कुमति गई मारी।
अैसी आरति हम मन धारी आवागवन चले निरुआरी।
कोटि भान जाकी छवि पर वारी सो साहेब के भये दिदारी।
भरम पसार परी संसारी कहि मीता पीतरि ना तारी॥

दोपकु बारि काह दिखलावै आरति भेद बिरल कोई पावै।
सुक्रित जोर ढुरै ना पावै जागु जागु आरति बनि आवै।
गगन मंदिल ते साहेब आवै बाह पकरि जन की ले जावै।
मकर तार चढ़ या विधि जावै कहि मीता सो बहुरि न आवै॥

आरति परम पुरुष की कीजे कुमति कुटिल का संघु न लीजे ।
तीनिउ देवा सुर मुनि ध्यावै खोजत खोज करै ता पार पावै ।
तिनका नल कैसे कै पावै मूल छाड़ि साखा का ध्यावै ।
मूल मंत्र सतगुर सो पावै बिन सतगुर सब बूड़ा जावै ।
आरति अरस परस पर भाई बिनु देखे केहि का मनु लाई ।
घट्ट का खोजु करौ रे भाई अभिनासी अनतै ना पाई ।
रवि-शशि सीधा किये एक ठाई सत्यलोक सो पहुंचा जाई ।
कहि मीता जो गाहनु ध्यावै सो पसुआ ततु ज्ञान न पावै ।।

अैसी आरति करू मन मेरे बहुरि न करऊ या जगु फेरे ।
काम क्रोध संसै का त्यागौ छाड़ि चतुराई कुमति निवारो ।
पाँच पचीस करैं कुटिलाई तिन्हैं जीत दीपकु ठहराई ।
तत का तेलु धरनि का दिया प्राग तुला लै साजा किया ।
चाँद सूर का कीन्हा थार ब्रह्म अगनि ते लीन्हा बारि ।
दीपक बरै जरै घर काल मिट गई करम भरम कै बानि ।
आरति साजि चली पिया पास पिया मुख निरखति मिट गई तापु ।
कोटिन बाजा बाजे बीन कहि मीता आरति मस्कीन ।।

करु आरति मंगल घट माही अैसा समौ बहुरि फिर नाही ।
रखत-बखत सस तुसही मांही अवध वौडैसै साहेब नाहीं ।
पाहन पूजै मूरूख जाकी, तिनका जलमु अकारथु जाही ।
खोलु कपाट मिलै हरि आही, मै का संसै कबहूँ नांही ।
सुर मुनि ब्रह्मा जानति नांहो जाहि मिले ते जमु नहिं खाही ।
कहि मीता कोइ जानित नाहीं बिन जाने कोउ मुक्ता नाहीं ।

अँसी आरति करु मनु सांची जोति अखंड बरै दिन राती ।
धरनि मूल लै सबद डिढ़ाई सब्द की चोट गगन घहराई ।
पच्छिम दिसि की खोलु केवारी आवागवन चले निरूारी ।
अष्ट कवल दल भा परगासा निरसंसै भा हरि का दासा ।
या बिधि होय सत्यपुर बासा सेवक साहेबु ऐकै पासा ।
जिअत मुक्ति मुक्तै सोइ भाई मुये मुक्ति ना कोऊ पाई ।
मुये जीव गरभ मा जाई गरभ बास सब नरकै आही ।
जन मीता ध्याए अभिनासी काल कूर की टूटी फाँसी ।

जांय बेकार सकल या तन की कै ले आरति आदि पुरूष की ।
मन चंचल जो थिर कै राखै दीपकु जोति तबै परगासै ।
पाँच मरि जो मन थिर होई करम भरम त्यागो नल लोई ।
हो सनीप ता दासु कहावै नैनन निरखि परम पदु पावै ।
है पर चन्च सकल जगु माही इनके संघु कुसल है नाहीं ।
कहि मीता नल देही पाई अबकी बार चूकि ना जाई ।।

रवि-ससि बीच आरती साजी मदन जरै जागे दिनु राती ।
अरध उरध भाटी उदगारी पिया अमीरस लागि खुम्हारी ।
सुरति देखि मनु भया अपंगा वारे करों कोटि रवि चन्दा ।
ढ़िग ही साहेब ढ़िग ही बन्दा ताते कटे काल के फंदा ।
सोई सुहागिन कहिये भाई कथे बदे गाये का होई ।
चाहै ताहि लेइ अपनाई मंगल आरति मीता गाई ।।

आरति करै रामु का प्यारा काम क्रोध ते रहे निनारा ।
अगम पंथु का तिन पगु धारा नभै ज्ञान किया उजियारा ।
ज्ञान खड़ग लै किया विचारा जागत पाँच चोर का मारा ।
या विधि जीका किया उवारा अबका करिहै कालु हमारा ।
पाहन पीतरि केहिका तारा पूजि पूजि बहु मरे गवारा ।
हरि विसराय कपट मन धारा तिनका सदा कालु रखवारा ।
नल तन पाय जुआ जनि हारा या ना पैहै बारै बारा ।
सेइ ले राम होय भै पारा कहि मीता तजि जगु व्यौहारा ।।

आरति करौ, होइ प्रण धारी राम बरत घरू जीव उवारी ।
मूल द्वारे लाओ तारी चांद सूर बिच दियना बारी ।
पांच पचीसों होय तुम्हारी तब मन होइहै हरि दरबारी ।
निसि-दिनु निरखु पिया का नारी का गुड़ियन का खेले कुआरी ।
बिना खसम को बहिया धारी जबै काल लै मोगंरा मारी ।
गतिन काजर डारा मिदारी या धोखे तोरी होति खुआरी ।
का भटकी तू फिरै गवारी खसम तजे भइ बहुत भतारी ।
सोइ सुहागिन पिउ की प्यारी जो संघ ते नहि होय निनारी ।।

निझर झरै आरती होई पिया अमीरस जगु तजि छोई ।
सहज सुन्नि मां सुरति समोई भेटा पुरुष आवन ना होई ।
सेवक साहेब भिन्न न होई ऐसी आरती पावै जन कोई ।
दीन गरीबी या मति आई धनि सतगुर जिन कीन सहाई ।
सतगुर बिना दरस ना होई, बिन सतगुर ना मुक्ता होई ।
पाहन पूजे पाहन होई वाकी गति मति चोरा खोई ।
वा चोरा का लखै न कोई जो रे लखै सो हरि का होई ।
जन मीता या आरति गाई सुज्जन के हित दीन जनाई ।।

है गुरु ग्यान भला रे भाई तनका सोधु तपनि मिटि जाई।
है नर नाउ नरायण होई या मत पावै बिरला कोई।
गाये बजाये सुने का होई का पाहन ढिग दियना देई।
भूले हैं सबु जगु के लोई त्यागै तत्तु खरीदै छोई।
सुज्जन जगु के निकट न जाई जगु की चालु नरक जिउ जाई।
अवघट घाटी गुरू लखाई नगरी अमर बसे हम जाई।
कुंभ का नीर सिंधु मिलि जाई तब को करी निवेरा आई।
कहि मीता ऐसा होइ जाई ताका आवागवन मिटाई॥

पहली आरति मूल दुआरा दूजे काम क्रोध दल मारा।
तिसरे जिउ का किया उवारा चौथे आवागवन निवारा।
पंचये परम पुरुष का प्यारा छटये छिमा संतोष विचारा।
सतयें सत सुक्रित का संभारा अठये कमल फूल उजियारा।
नवये नौमति बजै पहारा दसयें खोला दसवाँ दुआरा।
गेरहें एकादसी ब्रत धारा दुआदसी दूनौ कुलु तारा।
तेरसि तीनिउ गुन ते न्यारा, चौदसि सतिपुर राज्य हमारा।
पूनौ भागा भरम पसारा मीता छाका देखि दिदारा॥

आरति दीनदयाल तुम्हारी अब के खेवा पार उतारी।
चरन कवल हिरदै ना टारी ऐसी होय सहाय हमारी।
दीन करै सबु आस तुम्हारी तिनकी रहौ सदा रखवारी।
अब के ह्वै हमारी बारी औगुन गुन अब कुछु न विचारी।
जन कबीर की लगेऊ गुहारी मीरा का बिखु दिया उतारी।
नामा केरी पैजु संवारी सो जसु गावै नर औ नारी।
बिरध गये सब संत पुकारी ह्वै भरोसा मेरे भारी।
मीता देखा नैन पसारी प्रभु चाहै तेहि लेइ उबारी॥

आरती करों पिय होइ पियारी होइ सुहागिली तोहुँ भली री।
नींद भूख तजि जागौ नारी जमु की फाँसी चलौ निरुआरी।
अनभै अगिनि दिया ले बारी नैनन निरखु तबै तोहि तारी।
नल देही तरने की बारी अबके चूके बड़ी खुआरी।
चौरासी है बहुतै भारी बूड़ि गये फिर कौन उबारी।
ताते करौ अबहि हुसियारी कहिगे संत पुकारि पुकारी।
कहि मीता मति लेउ हमारी सुफल होय तब तेरी बारी।
या संसार कांट की बारी ताते चलौं सभाँरि सभाँरी॥

करु आरति अपने मुख माही हैं सतरामु घट ही माही ।
घटहि मा धरती घटहि अकासा घट का सोधि मिटै जम त्रासा ।
सतगुर सेउ सकल सुख दाता जे पहुचावै हरि के पासा ।
देंइ अमर पद तहाँ निवासा आनि देव की झूठी आसा ।
ब्रह्मा विस्नू ताहि शिव ध्यावै खोज करैं तेउ पार न पावैं ।
जसु गावै औ सीस नवावै सो संतन के संघु उठि धावै ।
सो पतिव्रता जो पिउ पावै सो विस्वा जो जहँ तहँ धावै ।
कहि मीता कस जलमु गवावै पाहन पीतरि काम न आवै ।।

पहिली आरति गुरु की धारी छिनु छिनु प्रीति लगी अधिकारी ।
मनसा बाचा यहै पियारी तब किरपा कै लिया उबारी ।
चोरा पाँचों करैं खुआरी दीन्हे अन्न लिया हम मागी ।
चढ़े अगम लिया दियना बारी जोति मा जोति मिली जित नारी ।
विकठ पंथु चढ़ना है भारी बिरलेन बीरल कीन हियारी ।
कोटिन भारत बिन तरवारी जो जीतै सोई दरबारी ।
ताको लागै भक्ति खुम्हारी मजलिस टरै न लौ भर टारी ।
कहि मीता भूली संसारी भक्ति हंसी कै गनै अनारी ।।

रेखता

धरनि को बाँधि कै सूर ससि वेधि कै खेलि चौगान मन बाँधि लावै ।
ग्यान का खरग कै सील का सेल्ह लै कालु को मारि चढ़ि गगन जावै ।
प्रेम की डोरी सो जोती सो जोति मिली अगम का पंथु कोई बीर पावै ।
दास मीता कहै जगत मां यों रहै पदम के पत्र नहिं नीर आवै ।।

जुगती का भेदु लै मूल मा माड़ि रहु मूल का मरम गुरु सेइ पावै ।
काम दल जीति कै कोध को मारि कै मदन का जारि झरि गगन लावै ।
सूर ससि वेधि कै अगम मा पैठि कै सीस का देइ तब भेदु पावै ।
भरम को मेटि कै अलख को भेंटि कै मीता सोइ संत जगु जीति आवै ।।

पैठि दरियाउ दरिया का भेदु लै चक्र छा बेधि मिलै सूरति थाही ।
पाँच को जीति कै सुरति को साधि कै अगम का भेदु तब हाथु आई ।
बाजा अनहद बजै ब्रह्म सो मन लगै ब्रह्म को भेटि गई तीन ताई ।
कालु का जारु कटि जाय भाई तबै करनी कै सार सबु भरम जाई ।
जोर सब्दी करैं नरक मां ते परैं पहुँच कै कहै सो सत्य होई ।
राम को छाड़ि कै दाम की चाह करै दिंभु का जोरि धग पूँजी लाई ।
दुनी अन्धी हवै देखि नाहीं परै चोर औ साहु नहिं चीन्ह जाई ।
छानि कै दूध औ पानी मीता रहा रामु की भक्ति तब हाथु आई ।।

कोई सूर रन खेत मां जीत संग्राम कै पाँच को मारि मनु हाथु लावै ।
जिघु को जकरि कै कुमति दल कैद कै जोगु की जुगति तब ध्यान लावै ।
कंबल का उलटि कै चक्र छा बेधि कै सुरति को साधि चढ़ि गगन जावै ।
ब्रह्म को भेटि कै कालु को मेटि कैं परम पद पाइ जगु नहीं आवै ।
करनी औ रहनी कोई सूर पूरा धरै सीस धरि देइ तब संत पावै ।
बादु-विवादु नर कूर भोंदू करैं सुज्जन जन सब्द का बूझि जावै ।
हद बेहद तब वारि डारी रहै जाय जो पार तेहि सांचु भावै ।
दास मीता मन मस्त प्याला पिया छाके दोउ नैन नहीं जगत भावै ।।

सूर के खेत कोई बीर माड़ा रहै खेत सिर देई ता लाज पावै ।
पैठि पाताल में शेष का बाधि कै खेलि मैदान कोइ जूझि लावै ।
सार के बानु परै धीर धीरा धरै धीर धरि जाय गढ़ु अमर पावै ।
राज औ पाट सुत नारि औ धाम सुखु धनी को भेटि सब विसरि जावै ।
गल्ल को मारि कोइ सूर होवे नहीं गुनी का आँव रसु कौन खावै ।
बाण का घाउ मन मस्त पूरा सहै घाउ को खाय नहिं घाव आवै ।
अगम का पंथु है खाड़े की धार ज्यों जाय जग जीति जस जगत गावै ।
दास मीता कहै परम पदु सोह है लोभ को त्यागु बिनु लोभ पावै ।।

धरनि को बाँधि कै मूल मां माड़ि कै मदन को औटि जब रैन जागा ।
नींद और भूख तहँ छिन्न खंडित भई पाँच पचीस का सहज बाँधा ।
हरा घोरा लिया जीन मुकता किया चित्त चाबुक किया प्रेम लगाम दै ऐड़ लाया ।
तत्तु खरग किया सीलका सेल्ह किया निरति कमान लै सुरतिके बानुसो क्रोध मारा ।
काल लरता हुआ जुज्झि पूरा किया काल का जारि घर अमर पाया ।
खोलि खिरकी दई कूर भागत हुये संत सूर कोई मनै आया ।
सुख पूरा भये दुख दूरि भये ब्रह्म को भेटि जगु नहीं आये ।
पहुँची मीता कहै सुनी झूठा कहै जीता मैदान मत गरु पाये ।।

रूप अनूप महबूब कारे देखि देखि बन्दे सुखु चैनु होई ।
दुनी के स्वाद की चाह नाहीं हवै चाह दीदार की रहै लोई ।
बेद की तेवु की गम्मी नाही हवै तहाँ आसिक की रहै धुई ।
नैन सो नैन मिलाय मासूक सो सकल बेकार की राह खोई ।
बूझि ते सूझि है सूझि ते बूझि है प्रेम परगास तब सहज होई ।
गल्ल को मारि आसिक होवै नहीं रीझ मासूक की विरल कोई ।
मीत की रीति पै सीस देना पड़ै सीस जो देइ सो अमर होई ।
आसिक की राह है खाड़े की धार ज्यों चला ना जाय ता हाँसि होई ।।

गुरु का दीन होय निपट अधीन होय जुगती का भेदु तब देइ भाई ।
मूल के मते सो पाँच के बंधे सो धरनी का पानी तब गगन जाई ।
बरखा रिमि झिमि होवै सुखु भारी होवे महल खबरि लै सुरति आई ।
दास मीता कहै सीस का भुइ धरै शीश का राखि नहि कूर पाई ।।

मलार

प्रेम नेम दोऊ वैरे पपिहा पीपी ।
जहाँ प्रेम तहँ नेमु न देखा या मत है कुछु औरे ।
भादों रैनि महा अधियारी सूझै ठौरु न ठौरे ।
दीपकु बिना चीज कैसे पावै कोटि उपाय करै रे ।
पिउ पिउ रैनि दिना सखि करती बिनि भोगये ना सुख रे ।
ओसन प्यास बुझै ना पपिहा काहे का भूला है रे ।
काजलु देति सबै घर नारी चितवन मां कुछु है रे ।
बिनु पिया कौन सिंगार बावरी मीता भाखै यों रे ।।

भादों रैन महा अधियारी दीपक जतन बतावै ।
बाभनु एकु आधी रैन जगावै ।
निसिवासर बिरहनी है व्याकुल पलक लगन ना पावै ।
बिजली चमकै मोरा बौले पीपी रटन लगावै ।
भई जरद ज्यों हरदी गांठ है वैद्यु मरमु ना पावै ।
पिया की लगन कठिन है री आली जेहि व्यापी सो पावै ।
कहि मीता मोतियन झरि लागी जब भावन्ता आवै ।
बिन पिय कौन सिंगार बावरी नाहक जलम गवावै ।।

नदी एक बाढ़ी अगम अपार माया मोह है कगार नाव ना चलै नीर नहीं भरिया बूड़ति है संसार ।
काम क्रोध घरियार तहाँ हैं वेदु हवै रखवार नांघि न सकै आनि ताही की तीन गुनन की धार ।
ब्रह्मा विस्नु महेश देव मुनि नल ताही व्यौहार काल जगाति लगै घाटु मां कैसे उतरै पार ।
नौका नामु दिया गुरु पूरे उतरति लगी न वार अब मीता भै बहुरि न आवै बाँह धरी करतार ।।

कबित्त

करता चतुराई कविताई राजन की बड़ाई धावति ज्यों स्वानु एकु कौरा के काज रे ।
पर धन पाये घर लै आये चलति इतराति रे पापन ना डेराये नेकु लाजहु ना आई रे ।
गुनी भाँड़ु औ कविताई ई तीनिउ हैं भाई मंगन की बड़ाई ज्यों बादर की छाँह रे ।
इन्हें पास ना बैठाई दूद दाम है बड़ाई काँच ना सभाई मीता नग कञ्चन के माँझि रे ।।

का पढ़े भा पुराना जो राम का ना जाना तू आदि का भुलाना को सकिहै समुझाय रे।
सुनु मूरुख नदाना का करत कुल नामा कुल एकुहि सबु आय रे।
नैन खोले ते जाना ब्रह्म येही समाना सो देखि मन माना अब छाड़ि झूठ अभिमानु रे।
जगु छोई कै जाना रस मीता मन माना गया हों पार अब आऊँ नहि वार रे।

पंडिताई की बड़ाई या झूठी है भाई है भक्ती कठिनाई केहु बिरलेन पाई रे।
करता चतुराई राजन की कविताई माया के काज फिर नरकहु को जाति है।
नरकहु का डर नहीं पापन रहे छाई जिभ्या के स्वादु जैसे कूकुर अघाति है।
ई झूठा है बिचारा सब डिम्भु का पसारा कहि मीता मत सारा या खोटी टकसारा है।।

जानै ना राम सो कौने नल काम विस्वा का बालक ज्यों जावा हराम है।
सुक्रित सो आय जो जोहद कै खाय फिरै दानन को धाय सो जीवन हराम है।
सो सुरति घिनाय ज्यों इदोरन फल आय ऊपर देखाय छलु भीतरि बनाया है।
जन मीता मति पाई, गुरु की है सहाई, हरि देखा है अघाई, सठु मानै नहि बात है ।।

सब्द का विचारि लिया पाँचों का मारि मन का संभारि मन आया तब हाथु है।
भई उजियारी, गई अंधियारी, झलकै जोति जहाँ परम अपार है।
सांचे संघु सांचा पाया, झूठे संघु डहकाया, पिया अमी जगु छोई सा साथु है।
मीता की मिताई सिरजनहारे सो लाई, है बहुत कठिनाई सो सतगुर सो पाई है ।।

चाहति है बड़ाई जहाँ कुमिता है छाई जब सुमिता घर आई तब हरी ही सो काम है।
जहाँ डिम्भु है भाई तहँ राम ना समाई है खोटी चतुराई सो नरक लै जात है।
पाँच तत्व के तन बनाये दूजा ना ओरे आये साहेब रहा समाये कहो धौं कुल कौन है।
ना चाहों कुलनाई ना बड़ाई या झूठी सी बात है।
कहै जन मीता जिन मनुआ का जीता सो मीत हमारा है ।।

बिनती दूनो कर जोरि करी गुरू सेइ कै सेवकु जाइ कहाये।
नाम को ध्याइ कै रामु को पाय कै कालु को जारि नहीं संत आये।
काठ को बाँधि कै भगत हुआ चहै भक्ति का भेदु कै खेलु पाये।
दास मीता कहै पाँच को जो दहै परम पदु पाय तेइ संत गाये ।।

माया के जंजाल परा नल का करै जोरु दिना दुइ रहिहै।
राम बिसारि पगा सुत नारि कालु की मारु बड़ा दुःख पइहै।
चेति अचेति हरि नामु को आद करु काहे का नाहक जलमु गवाइहै।
मीता कहै परतीति ले मानि संत के संघु भलो सुखु पाइहै ।।

बहुत मुये जगु जोरि कै दाम का अन्त काल कुछु काम न अइहै ।
कै अभिमान फिरै खर स्वानु ज्यों रामु बिसारि कहाँ तन जइहै ।
दीन गरीब निवाज ह्वै हरि आद करु ताहि भलो सुख पइहै ।
मीत कहैं परतीति ले मानि भजे सत नामु तोहू हरि होइहै ॥

आतम देव भली विधि सेव सेवति सेवति पारै जइहै ।
लोक के संघु गँवाइ चलो जनि पूंजी भली फिर हाथु न अइहै ।
गये रावण से जुरजोधन से बलि से नग से औ तोंहू न रहिहै ।
मीत कहैं परतीत ले मानि किये सत संघु भलो सुखु पइहै ॥

हंस कै खुशी है कूदि परा नल नरक की कूड़ि मा जोरु जनावै ।
भूलि गई सुधि न्याउ दरबार की दामु को पाय बड़ा सुख पावै ।
जोर है, कामनी मस्त मगरूर है, ताहि के स्वाद माँ फिरै धावा ।
राम सो प्रीति कै, काम दल जीति कै, मीत सोइ सुखी जौन नामु ध्यावै ॥

डिम्भु का बढ़ाय पापन मनु लाय रामै बिसराय नल चाहति सुखु कौनु रे ।
राजन का लेत भये माया के करति उपाय मन के मलीने जाँचन को जाति रे ।
धोबी कैसा कुत्ता थिर नाहीं घर घाट, लोभु ही लोभु मानुख तन जाति रे ।
कहत है मीता सठु मानि ले कहीता खोलि देउ नैन कुछु साथ हू न जाति रे ॥

भये हैं मवासी कटी जमु फासी बसत तेहि ठाऊ जहाँ सुखन की रासि रे ।
साहेबु अभिनासी हैं विपति विनासी हम ताही के साथी, अबु तीरथ को जाय रे ।
दुनिया दरासी ताके संघु हू न जासी, देखी काया काशी मनु आया जबु हाथु रे ।
कहती हौं सांची जगु करति है हांसी मीता का विवेकु कोई जानै हरि दास रे ॥

साहेबु न जाना सठु माया में भुलाना पीछे पछिताना जबु आई जमु धार रे ।
जब कंठु हूँ रुंधाना बहु लोग हू जुराना सबु भया है बिराना ना लागी कोउ साथु रे ।
करम जे कमाये सब नरक हू के भये चलत इतराति साथ कौन को जाय रे ।
कहति हौं विचारी है झूठी संसारी अब मीता की बारी उतरा हों पार रे ॥

भया है दिवाना तू मतलब न जाना का पढ़े है पुराना जो दामन मन माना है ।
जसु राजनका बखाना सिरजनहारे सो भगाना खोटा खरा न जाना किया नरकही का ठिकाना है ।
मारु परिहै घमसाना जीव फिरिहै भगाना कहाँ रहिहै छपाना जम भारी दुःख दीना है ।
धनि संत है सुजाना जो साहेब मन माना जगु छोई कै जाना मीत तेहि रंग साना है ॥

करता हों विश्राम, मैं पाया है राम, सबु झूठ धन धाम एकु राम नामु सांचु है।
रहता हों सनीप नहीं परति है बीच है निपट नजीक सो झूठे ते दूरि है।
सुख पाया बहुताई छबि नैनन मा छाई जगु छोई न सुहाई रसु लीन्हा जब गारि रे।
कहत है मीत मोहि रामु सो प्रीति उतरा हों पार नहिं आउ अब बार रे।।

ऐ मन मगरूर का करति है फतूर साहेबु की बन्दगी विसारे तू विखयन मनु लाया है।
औगुन अपाई तू दुरमति का भाई अब गरदनी बचाउ तू हा हा हरि ध्याउ रे।
जेइ जेइ सरन आये तेइ तेइ अपनाये तू समृथु का विसारि धौं करिहै अब काह रे।
कही मीत है विचारी मति लेउ जो हमारी अब तरने की बारी जनि चूकै या दाउँ रे।।

है साहेब हजूर तू जानै नहि कूर जो होता दूरि ता करता तनु कौनु रे।
करु सतगुर की सेउ जो पावै निजु भेव मिलै करता सा देव जिन रचिया सबु केउ रे।
गया मथुरा औ काशी देखी पाहन की राशी देखी पाहनु की राशी जलु बहता औ केउ रे।
कही मीता है विचारी तोही गरदनी जो पारी तोही गरदनी जो पारी जनि पइठै जमु द्वार रे।।

कोई जानैगा जाननहारे का।
दीन गरीबी रहै समाना दीपकु ज्ञानु डिढ़ाने का।
पांच पचीस नगर में चोरा बाँधैगा गुरु भारे का।
सुरति निरति का अजब तमासा सांचा मता बिचारे का।
या तन गरद मरद कै डारौ या फक्कर घर जारे का।
सीस देइ सो साहेबु भेटै नाहित है जमु द्वारे का।
भये उदास अगमपुर ताका छूटा गरभ गुमाने का।
सब्दु की चोट लगी बहु भारी कहु झगरे औ बादे का।
लाज सरम का करौ फजीहति खेलु बनै निरधारे का।
प्रेम पियाला चाखा चाहों का लै करौं बड़ाई का।
दरसन पाया अलख पुरिख का अब न रहा जगु कूरे का।
कहि मीता सोइ करै फकीरी जियत मरै गुरु पूरे का।।

अबु जगु बैरु करैगा का, हरि हाथु बिकाना बौरा सा।
मुरदे की लकरी करै कोइ भाई जहँ मरना तहँ डरना क्या।
फगर फकीरी पर सिरु दीना लाज सरम औ संसै का।
प्रेम पियाला चाखा चाहौं बिखु को बाँधि करौं लै का।
मत्तु भये तब भाखु न माना गुरु परताप भया जाका।
सहज सुन्नि माँ रहै समाना या पदु है निरबाने का।
जोरु किये जो हाथै आवै बड़े बड़े राव मिलै हरि का।
समुझि देखु मन मूरुख मनुआ साहेब मिला गरीबों का।
साहेब का घर बहुत विकट है कामी क्रोधी पावै का।
दीन गरीबी रहै समाना भेटै अलखु पियारे का।
मैं तू गरद मरद कै डारैं खेलैं खेलु अखाड़े का।
कहि मीता घर बाँका फकीरी जानैगा जाननहारे का।।

भरमु भुलाना ऐ मना हरि नामु न जाना बिखियन संघु माता रहा खोटे रंग साना।
अबु जियरा जमु बसि परा तू काह कमाना तेरे पहिरे डहकिया अबु चेति अयाना।
करु करनी हरि पावई, का कथनी भुलाना सधना मीरा भरथरी किया रामु मिलाना।
संतन की महिमा बड़ी कोइ लखै सुजाना कहि मीता ते धन्नि हैं जिन उनका जाना ॥

जब धनी सो ध्यानु लगाऊँगा तब मैं तू दूरि बहाऊँगा।
पाँच पचीस पंथु मां लागै तिनहू को बाँधि मगाऊँगा।
काह भयें रसना के टेरे माला मैं न फिराऊँगा।
सतगुर दया परम पदु पाया बैठे निसान बजाऊँगा।
कान फुकन्ता कामी क्रोधी तिनका ना नजिकाऊँगा
संत के चरन रेनु की आसा तिन्हें मिले सुख पाऊँगा।
भेड़िआ घसनि लोक को त्यागौं कहँ लगि केहि समझाऊँगा।
बेदु कितेब ते साहब न्यारा सोई करौं जेहि पाऊँगा।
कै उजियार तिमुर का नासौं निरखि परखि गोहिराऊँगा।
जो समुझै तेहि पार उतारौं बहुरि न भ्रम जल आऊँगा।
तौली दरबी मुखते काढ़ौ बिन तौली नहिं गाऊँगा।
कहि मीता परतीत प्रेम जहँ तिनही को रीझ रिझाऊँगा ॥

मुझे बबुली बोलै बोलु रे तेरी बे फेरी ना फिरौं।
जरे बरे जूझे बने वा तौ डगमगु करौं न जीउ रे।
अरध उरध सिर देऊगी रे धरती पाउँ न देउँ।
सुरति बाँधि गढ़ मा चढ़ौं वा तौ होनी होय सो होइ रे।
हरि हारे ते रीझई रे रीझे सरबस देइ।
पाँच पचीसौ बाँधि कै अभिअन्तर लाओ डोरि रे।
गढ़ पर बाजी बासुरी मेरा जियरा उठा अकुलाय।
विनु सिर भारत मैं करौं चलौं निसान बजाय रे।
जीभु स्वाद का जे मरै रे ते जगु बिखई जीउ।
जोगिन होय पिउ का मिलौं मैं तो तारौंगी अपनी जीउ रे।
सूरा सोई सराहिये रे जुझिन बौड़े हाथु।
हाथु घसै मुख पूजई जेहैं मते अगाधि रे।
मय ममिता का मारिया रे खाये सबै भतार।
सेन्दुर दै सुज्जन भई तब छूटे मलिन विकार रे।
राम राम नौका भला रे पाये पदु निरवान।
कहि मीता करनी करौ कथनी कै होइहो खुआर रे ॥

मनुआ हो हो बैरागी मेरी सुरति सत्यपुर लागी ।
बिन गुन माल फिरै घटु माही प्रेम छापु दइ सांची ।
ध्यावति दरस परस भये हरि सो टूटि गई जमु फाँसी ।
आउँ न जाउँ गरभु ना बासों भक्ति कीइ हम ताकी ।
छापा तिलकु काठु की माला भूले बहुत अभागी ।
गुदरी पहिरी तुम्मा लीन्हा बधिक ठाटी ज्यों टाटी ।
निन्दा असतुति नाहीं कीन्ही सांचु साँचु हम भाखी ।
गुरु परतापु भरमु गढ़ तूरा कहि मीता मति छाकी ॥

भजन करु तन की तपनि नसाई ।
मन माला हरदम का जपना पलक न लागै पाई ।
धरनि बंद मूल लै बाँधे पाँचौं पकरि मंगाई ।
चोर पचीसों जागति भागे प्रेम परतीति बसाई ।
कैसै कै घर मूसन पावै जो या अमल कमाई ।
औवटा मदन अमीरस साखा नजरि मोहल्ले आई ।
मकर तार एकु खेलु लगाया तेहि चढ़ि आवै जाई ।
या विधि चले मिलै पिउ प्यारा बहुरि न या जगु आई ।
आवै जाय सो गुरमुख नाही नाहक जलमु गंवाई ।
समुझि अचेत कालु है भारी फिरि फिरि मोंगरा लाई ।
लोभी माया मोह भुलाना अंत काजु ना आई ।
तजि अभिमान सरन का ताकौ होइ सबै कुसलाई ।
सतगुर दया परम सुख पावै दुःख न निकटै आई ।
जो चीन्ही सो पार उतरिहै जमु की मारु न खाई ।
कहि मीता है भक्ति आकठी जन बिरला ठहराई ।
ठहरे मरन होय ना कबहूँ जियत अमर पदु पाई ॥

दोहा

विद्या सबै अविद्या बिनु भेटे भगवान । मीता विद्या सो पढ़ी पाया पदु निर्वान ॥

जगु मां अंधरेन हाट लगाई डिठियारेन कोई ना जानै अतिरिज देखा भाई ।
संतन नींद पखंडै पूजै तरन की आसा लाई नरक परै के काम करति है देखो या चतुराई ।
साधू कहे बहुत सुखु मानै साधि कुछौ ना जाई पाँचौं के परपंच भुलाना रीझे भेखु बनाई ।
पाखंड कै दुनिया ठगि खाई आगू जानि न जाई कहि मीता भेखिन की संगति पैड़ परी रे भाई ॥

भाई रे धागा धरनि मूल लै बाँधा सतगुर नामै पाया रे।
पाँचों के परपंच मिटाये बाँधि पचीसो लाये रे।
निस दिन भरो भंडार सूत लै अरझा सूत कताया रे।
रुई कपास सूत नहिं धागा तत्तु का तार लगाया रे।
ब्रह्म अगनि अन्तरपुर जारी तब या मता डिढ़ाया रे।
चमरख अचल देइ नहिं डोलै सेन्दुर सुमति लगाया रे।
बारा मासे आंड़ी कीन्हा छिपिया का घर लाया रे।
आवागवन का पंथु रहाया भरम का कोट ढहाया रे।
धरम दास औ दास कबीरा दादू नानक नामा रे।
इन संतन नहिं पंथु चलाया ठगियन जगु भरमाया रे।
सतगुर साह ढुरै बिरलेन पर तिन नहिं भेखू बनाया रे।
जाति पाँति मा भये फजीहति तिन या झगरा लाया रे।
हम संतन के संत हमारे सांचु सांचु गोहिराया रे।
इन्है देखि भाई जनि भूलो इन नहिं मारगु पाया रे।
अनभै भये ते मीता जाना सतिपुर बाना बनाया रे।
नाहक बादै चोर खुआरी गिरही मारगु पाया रे॥

सोई जोगिया परम सुजान रे नगरी उलटि बसावई।
जगु सपना कै जानई वातौ काटी मोह की फाँसी रे।
पइठ पवालै बाँधइ रे मूलै करै विचार।
अरध उरध माड़ा रहै मति लागी दसवें द्वार रे।
मय ममिता का मारिया रे संसो देइ बहाई।
ऊँट फारि ईंधन करै वातौ चूल्है देइ जराई रे।
जिभ्या बरि जेवरी करै रे बाँधै शिव की टोरि।
प्रेम कुल्हारी टेइ कै बन काटै मोरिन तोर रे।
लै सुक्रित गारा करै रे नाम ईंट गहि देइ।
मन महरा राजा करै जन करै उठौनी कोई रे।
खेरी खेरा उजरइ रे सहर होय गुलजार।
राव हवै मिठ बोलना ताते उजरि बसै सब गाऊँ रे।
अलख पुरुख का ध्यावइ रे महलन जगुमगु होइ।
लै जोगिया जोगिन मिलै ता आवागवन न होई रे।
अलख मिले राजा भये रे परजा दुखी न होइ।
जाकी परजा दुखी रहै वातौ सो पाजी गज लोय रे।
तीन देउ ना पाइया रे या मत अगम अगाधि।
मुनि बपुरे का जानई वातौ भूला सकल जहान रे।
दीन भये पदु पाइयां रे है दीनन पर रीझ।
बड़े बड़ाई मारिया ऐसी परै बड़ाई मां धूरि रे।
सुज्जन होई सो जानिहै रे सठु सो काह बिसाय।
जो बानी पहिचानिहै सो अंस हमारा आय रे।
मैं परदेसी पाहुना रे मैं नहिं जगु का लोग।
कहि मीता तेहि तारिहों जाके लगी है प्रेम की चोटु रे॥

या नगरी मा पुरुखु हमारा कैसे कै मिलना होय तुम्हारा ।
बन बन डोलै बौरी नारी जहँ कुंअना तहँ भरति न पानी ।
भूली काम क्रोध के बीच पिया सो अन्तर परिगा नीच ।
निस दिन चकहा माड़ै रारि पाँच पचीस का करै विचारि ।
ब्रह्म अगनि ते लागी आगि मिटगै करम भरम कै बानि ।
भाग परौसी दूरि परान परसे पारस तपनि बुझानि ।
बज्र सिला का खोला जाये आवागवन का पैड़ नसाये ।
सो हंसा जमु चोट न खाये बाद विवाद के निकट न जाये ।
सुख सागर मा पाया सुख जनम धरै का मिटगा दुख ।
जौ लगि राज पात घर होई जमु की फांसी कटै नहिं लोई ।
जन मीता जगु भये उदासा किया मिलाना पी के पासा ॥

करु संत संगति व्यौहार रे जलमु बनै हरि पाइये धोखा देखि न भूलइ यातौ भला पराहै दाउँ रे
धन दारा सुत मातवा रे और सकल परिवार जब जमु मोंगरा मारिहै तब कोऊ न अइहै काम रे
राम नाम नौका भला रे उतरै भैजल पार, पार गये सुख पाइये तहाँ नहीं है जमु की मारु रे
जेरे गये वा देस का रे हरि हीरा तिन लीन छोटे भये ते पाइये वातो परै बड़ाई मा धूरि रे
ममिता घटु मा संबाई रे भक्ति कहाँ ते होय ते बनु केहरि ना रहै जहाँ मरकट सैना होइ रे।
सतगुर छोना सिंघु का रे कैसे कै आवै हाथु चेरा है करु जोरिये सिर धरिये उनके पास रे
छाड़ि सकल चतुराइयाँ रे गुर बिन पुआ न होय गुनी लगावै आम का कहु स्वादु करति है कोय रे
ज्ञान दीप हिरदै जगा रे सतगुर दीन्हा बारि मीता का परचै भई तब छूटे मलिन बिकार रे ।।

पंडित पंडिता मनु लाये घट का खोजु न पाये ।
संत संगति का मरमु न पाया मिथ्या जलमु गवाये ।
पाहन पूजे मुक्ति न होइहै किन भोंदुअन भरमाये ।
जौ लगि सतगुर दया न करिहैं तौ लगि नरक बसाये ।
गरभु बास मा कहौ कौन सुखु जहाँ तहाँ भरमाये ।
तहाँ तहाँ जमु कीन्हि जतना दुःख घनेरा पाये ।
जहाँ नरक तहाँ जीव बसति है करमन माँझि फसाये ।
निरगुन नाम खोजु नौका है तिनहो पार लगाये ।
आपु न बूझै औरै बुझावै कौनु ज्ञान तोहि आये ।
जैसे नटुआ भीर लगावै दामन का जसु गाये ।
मैरै जीउ करै नित अनरथु अर्थ कहाँ तू पाये ।
घट घट बासी है अभिनासी तिनका काहे सताये ।
अबहू चेतु समुझि नल बौरे दूजा बरन न आये ।
ऐकु बरन ते चारि बरन कै ब्रह्मा आपु भुलाये ।
परम पुरुष के हम हैं संघी साँच सांच गोहिराये ।
कहि मीता जो ना तू मनिहै कालु करी मन भाये ॥

जब भावन्ता घर आवैगा तब बिषै विकार छड़ावैगा।
होय निरमल कोइ हंस सरूपी जिअत अमर पदु पावैगा।
कागा कुटिल निकट नहिं लावै तिनका दूरि बहावैगा।
हंसा हंस मिले सुख पावै तिनते कुछ न छपावैगा।
लोक बेदु कुल की मरियादा भरम की हाट न लावैगा।
चोखा मालु बिकाना सतिपुर जगु हटिया ना आवैगा।
सील सन्तोख भरा घटु माही बादु विवादु न भावैगा।
साकठु कूर देखि कै भागै सुज्जन कंठ लगावैगा।
है मगरूर दीनता लीन्हे दीनबन्धु का ध्यावैगा।
माता रहै अमीरसु पीयै मगन भये सचु भावैगा।
जाय अकास नजरि सबु परई पारिख खरी लगावैगा।
खोटा खरा जानि सबु परई मन मन तौलु लगावैगा।
तिनकी किरपा होइ भाग्य ते सोइ मरमु कुछु पावैगा।
तीन लोकु की लिये सम्पदा ठगु सो ना डहकावैगा।
बिथरे कांट सकल जगु माही चलते चालु बचावैगा।
कहि मीता हंसों की बानी का कागा समुझावैगा॥

साधौ साधु कहे सुख माना साधि कुछौ ना जाना पाँच चोर मूसै घर भीतर माला पहिर बौराना।
पहिर मंजूसा सेली डारी गुदरी कीन तमासा नाक कटाय चले स्वामी होइ जगु के भा विस्वासा।
भक्ति भेखुते दूरि बसति है जानैगा कोई दाना इनके हाथु कबहु ना लागी भोंदुअन का ठगि खाना।
दीन इमान खोइ कै बैठे मीता कीन बखाना सरग नरक की कौन चलावै पेटै सो मनु माना॥

अरे अरे टारु कपट की टाटी।
कुमति कुबुद्धिन मारि निकारो सेउ चरन सुख राशी।
होइ अनन्द सकल विधि मंगल टूटि जाय जमु फाँसी।
नाहित जलमु धरति दुख पइहौ चौरासी जिउ बासी।
सतगुर हटिया बड़ी गुंजाइश जो संगति कै जासी।
खोलि केवारी अगम घर पहुचै तहाँ है बढ़ी मवासी।
का भूला है भरम पसारा जलम दगा दिये जासी।
ऐसा समौ बहुरि ना पइहौ चेति सबेरे जासी।
साखी सब्दी जो तू कहता गुरु बिनु बूझि न जासी।
चौथे पद सतगुर का बासा हुँआ गये समुझि परासी।
या नहिं हँसी मसखरी विद्या हरि किरपा ते होसी।
ब्रह्मा बिसनू महेश न पाई संत संगति मा होसी।
बड़े बड़े हुँआं जान ना पावै नन्हें होइकै जासी।
मानि लेउ अतिवार हमारा कटै देइ जमु फांसी।
रबि ससि पवन नहीं तहँ पानी तहँ के मीता बासी।
अवध उड़ैसा मथुरा कासी तहों कालु की फांसी॥

हाँ हाँ रे मनु चंचल बीर जुगन जुगन भरमावई पैंइयां लागौं तेहि की गहि लावै सोई।
बहुत मिले बहु भाँति के बहु कथई आय जेहि चाहौं सो ना मिलै ना मनु पतियाये।
खांड़े धारा पंथु है कैसे ठहराये ठहरै कोई जोगिया जब जोगु डिढ़ाये।
अगम पंथु बहु विकट है खेड़वा नहिं लोय सूरा सीस बिहूना ताको मिलना होय।
सुनौ न भाई साधवा ना सबते होय चारि खूंट पिरथी फिरौं ऐकुइ दुई होय।
जो या जुगुति न जानिहै ताकी मुक्ति न होय कौड़ी हीरा ना मिलै भूले जगु लोय।
तीरै धोवै धोबिया धोवति अलसाये बस्तर होय न ऊजले पीछे पछिताये।
जियत मरै गुरु ज्ञान ते ता मरन न आये कहि मीता जो दुख सहै पाछे सुख आये॥

हरि के दास उदास रहै जगु बिरलेन बोली चीन्ह परै।
धुर पूरब के जेहैं संघी तेइ तेइ संगति आनि करै।
अपना जानि चीन्ह कै गहते भै सागर ते पार करै।
का जानै जगु उनकी बानी करम मलीनेन ह्वै भरै।
संत संगति है बड़ी पदारथु भाग्य बड़े ते आय मिलै।
दसौं दिसा मूड़ दै मारै बिन सतगुर कोई नहीं तरै।
बिना बिबेखु भुलाना सब जगु घटी नफा नहिं चीन्ह परै।
जहाँ नफा तहँ पगु ना धरई घटी होय तहँ टूटि परै।
समुझावा ता समुझति नाहीं गुरु देई का बहुत मरै।
चेला भये मिलै हरि हीरा सो तो मनु मां नहीं परै।
कालु की चोट ह्वै बहु भारी कूर बेसरमी नहीं डरै।
जलमु जलमु मारेंगे बाँधे सुधि बिसरी सुख भूलि परै।
बादु करै कुछु मरमु न जानै अपनी आँचै जाइ जरै।
भक्त कहे ते बहु सुख मानै भै सागर में रहै परै।
कंठी माला छापु तिलक दै दरपन लखि गुमान भरै।
आधसेर पीतर कै पूजा कहि मीता लूटे अंधरे॥

अटके लोक लाज मरजादा हरि की सुधि कैसे कै आवै परा मोह का फंदा।
हीरा छाड़ि कांचु का धावै चूका बहुत अभागा हरि के चरन सकल मंगल हैं चीन्है भाग्य सुभागा।
नल तन पाइ अविरथा खोये सोय सोय नहिं जागा घेरि लिया जब जमुकी फौजन कोई गुहार न लागा।
नलतन छूटि भया खर स्वाना कौनरही कुसलाता सुन्दर रूप कुरूप भया तब कोइ नहिं पूछै बाता।
जा घटु भक्ती तेइ भये ऊँचे चालु चलै जे नीचे बूड़ि गये सगरे अभिमानी नौका हता नजीके।
गुन की डोरि सकल जगु बाँधेन छूटे संत सुजाना, ब्रह्मा विस्नु महेस फंसे हैं तुम्हरा कौन गियाना।
ऐकु ऐकु कै गनि गनि मारी बाँके हैं जमु दूता माया लिये मोह की फाँसी जाओ कहाँ तुम पूता।
सतगुर सकल व्याधि तन खोई जगुते भये उदासा मीता सहज परमपदु पाया तहाँ है बड़ी नेवासा॥

लागा रहु बीर सतगुर सेवै गरू गम्भीर।
जाते उतरै भौ जल पार बिन सतगुर नहिं होय उद्धार।
धन दारा सुत कुटुम पसारा, या तो है माया का जारा।
अंत काल नहिं कोई तुम्हारा जब अइला कलुआ की धारा।
भजु रामै मत लेउ हमारा जीत जाय नहिं होइ खुआरा।
समै भला कै ले निरुआरा अबके चूके दुख है सारा।
तजा भरथरी राज दुआरा मोक्ष मुक्ति का किया बिचारा।
कहि मीता मिथ्या संसारा या जाना तेई हुसियारा॥

मन रे देह गये को काको दुनी संघु दिन दुइ को।
माया मोह देखि ना भूलै तनु दीन्हो भजु ताको।
रावन सा राजा नहिं कोई मेटि दिया है ताको।
नृग गिरमिट बलि गये रसातल करतार बिना मत काचो।
गोरख भरथरी औ सुल्तानी धरा ह्वै मत साचो।
राम भजी भज रामै मिलगये भाग्य सराहौं ताको।
बही जात सगरी दुनियाई धरिये काको काको।
कहि मीता बूड़ै दै पापी कहति कहति मैं थाको॥

बूझौ बूझौ सधुआ बिन बूझे जमु का बंधुआ।
करम धरम है जमुका जार बिना भगति न उतरै पारा।
छापा तिलक काठु की माला या तो है सब भरम पसारा।
कौआ करते झूठ विचारा हंसन का मत ह्वै निनारा।
पेट काज या किया बेपारा चौरासी मा बूड़ै गँवारा।
ई कूरा पूजति है कूर जमु के द्वारे रहइ हजूर।
निन्दक का है नरक दुआर राम बन्दना उतरै पार।
कहि मीता हम किया विचार तब कीन्हा है जगत पुकार॥

भूले भूले सधुआ छल बल करते जलमु गया।
जात पाँत मां भये छिया हारि मानि कै भेखु लिया।
भजन न कीन्हा पाखंड कीन्हा नरक परै का डर न किया।
भैसा बैला तुमही होइहो मानि लेउ उपदेस दिया।
काह भये पद दस के गाये पर कथनी कहि दाम लिया।
भक्ती कीई तेइ जगु जीते कहु गन्दे तोहि काह भया।
संत भये ते ग्रह मा उपजे कहो भेखु मां कौन भया।
कहि मीता कबीर रैदासा किरखी कीन्हा थाप गया॥

जिन दुरमति दीन बहाई तिन राम सजीवनि पाई जहाँ कुमतिकी ठकुराई तेहि जमुते कौन छड़ाई।
सुनि कथा कवित चतुराई हरि भक्ति न हाथै आई खर चन्दन लादा जाई सोइ पंडित जानो भाई।
चोरा मोती लै जाई ता दामु भेदु कस पाई ऐसे पंडित रे भाई विद्या पढ़ि बहुत भुलाई।
जनमीता पारिख आई दिया झूठ सांचु गोहिराई बकु मीनका ध्यान लगाई पंडित माया धुनि लाई ॥

हरि सो लागि गया मनु मेरा ताते छूटा मेरा तेरा भक्ति नहीं है हँसी मसखरी होय संतन का चेरा।
जोहर भला जोगु है बाँका ठहरैगा कोई सूरा रामु भगति का सो मनु राखै तन धन वारै पूरा।
कंठी माला जगतु भुलाना समुझति नाहीं कूरा काल गालु मां गालु बजावै आपुइ कहै मैं पूरा।
हंसा ऐकु कागु बहुतेरे कौं का कै घेरा कहि मीता हंसों की बानी चीन्हैगा गुरु का चेरा ॥

लागा ध्यानु धनी का मनु मां मनु मां रही न संसा रे।
या संसै सबु जगु चुनि खाये सुर-मुनि तीनिउ देवा रे।
पाँच पचीस धरे गढ़ बाँका पइठे कोउ ना पावै रे।
सो बाँका जो इनका बाँधै बाँका सहर बसावइ रे।
भरम की भीते दीन गिराई दिया अमरपुर डंका रे।
भया अमलु रइयत भइ हाजिर या संतन का रैसा रे।
तहँ बैठा है साँचा साहेबु मोजरा सबु का लेता रे।
रीझे करते आपु बरोबर त्यागे नरकु बसेरा रे।
मीन तो होइ जलौ ते न्यारी ये न्यारे नहि होते रे।
सोइ ज्ञानी सोइ ध्यानी कहिये जो नल जलमु न धरता रे।
सतजुग द्वापर त्रेता के नल नाहक का सबु जूझे रे।
एकु एकु का हनि हनि मारै और असुर का होता रे।
सुरति निरति दुइ बानु लगाये तिन्ही मवासी तूरी रे।
चौथे पदु मां फिरी दुहाई अब ना कबहू छूटी रे।
कहै मीता माया परपंचिन परपंची जगु लोई रे।
दुनहुन ते दूरि है रहना तबहि भलाई होई रे ॥

कोऊ थिर नाँही रामु भजै ता धरै बाँही निकटै कालु आवै नाँही जुगन जुगन की है छाँही।
धनु दारा नहि संघु जाँही हरिधन छूटति है नाँही ले उपदेस भला आँही जो चूकै ता ढंगु नाँही।
गये लंकपती छिनु मांही कोरो पांडो पलमांही या जगु जैसे बोर बिलाये तिनकी संगति कुछु नाँही।
कहि मीता दासनका दास और मसलहती कुछ नाँही कुसलपरै संतनके साथा ऐसा समर्थ कोउ नाँही ॥

प्रभू जिउ जोगी जाँचन आये लैहै मन का भाये जटा राख नहि सेली मेरे अलख अलख लै लाये।
ना मृग त्वचा न सिंगी बटुआ ना भोरा थिउ खाये मैं तौ हौं किरपा का भूखा भेदु हता सो जनाये।
पाँच पठाना लगै पैड़ मां चलते बहुत खिझाये हटको नेकु निकरि जो आऊँ जसु गाऊँ धरि पाये।
औगुन गनौ ता ठौर नहीं है समर्थ सरनै आये अन्तर जानी सुनो गुसाईं मीता दरदु सुनाये ॥

मिरग एकु मारु रे मतवलवा वाके मांस न बरुआ।
माला तिलकु कामु ना अइहै जबु आई जमु धरवा।
जटा रखाये अधिक भुलाना बहुत लगाई छरवा।
लम्बे लम्बे पायन चले न बचिहौ जब आई जमु धरवा।
विद्या पढ़ि पंडित बौराना मन मां भा अहंकरवा।
चन्दन जनो काम न अइहै जब आई जमु धरवा।
दूध सिंघार खाय कहाँ जावै छाड़ा अन्न अह रवा।
चौरासी मां होइ तमासा जबु आई जमु धरवा।
सैली गुदरी पहिर भुलाना खाई गाइ बोकरवा।
दोजा दोजक मां होइहै महिमानी जब आई जमु धरवा।
जल साई होय जलु मा भूले मैढुक भये मछरवा।
दुनिया स्यावसि स्याबसि करई आइ परा जमु धरवा।
किये तपस्या रिखी-मुनि भूले क्रोध भया अधिकरवा।
झिकवा भये सिध मां पैरैं तेउ परे धम धरवा।
सबते मीत भले हरि दासा जहाँ कपट नहिं छलवा।
तिनही के चेरा हो रहिबे खसम मिला करतरवा॥

का बरन करै राम भक्ति करु जीव तरै बरन अठारह।
औ दस बीस एकुइ ह्वै और सब झूठा।
पाँच तत्त्व के सकल सरीरा तहाँ समाना एकुइ बीरा।
हिन्दू तुरक का एकुइ पीरा इनमें दूसरि कोहै कूरा।
या करनी का आय विचारा जहाँ कुमति सो सूद्र गंवारा।
जहँ जहँ सुमिता सो विप्र विचारा ब्राह्मण सो जो उतरै पारा।
अभिमानी बूड़े मझिधारा बोझ लिये सिर गहरी धारा।
भली दीनता लावै पारा जन मीता का यहै बिचारा॥

हरिजन मन मतवाल भये राचे रामु हिये जिभ्या अमी झरै जिन केरी चाखत मगन भये।
बिन मद काठी बिनु भाटी बास अकास भये मदिरा मांसै खाँय ते भोंदू नरक के ठाठु ठये।
जोगु जुगुति बिनु जलमु अबिरथा जोगी पार भये मिले अलख का अलखुई होइगें भरमो दूरि भये।
बिन सतगुर सबु जगत भुलाना सब अरझाय गये कहि मीता निरुआरै विरला जाके भाग्य भये॥

सिउ शक्ति का करता भोंदू आनौ रामु हिये जाके मिले गरभ नहिं अवना जमपुर नांघि गये।
मदिरा मांस नरक की भरती नरक के ठाठु ठये बड़े अभाग नेकु नहिं सूझै बाजी हारि गये।
संत संगति का भेदु न जानै जगु मां सिद्ध भये जमु करिहै तिनकी महिमानी मूरखु बूझि हिये।
ज्यों अंजुरी जल घटति छिनौ छिन ऐसे जलमु गये कहिमीता फिर का करिहै तू सूकर स्वान भये॥

ते बिरले संसार मां जे हरी मिलावै कान फुकाये का भये अधिकी भरमावै।
कंठी माला भरम है का तिलक बनावै या विधि कालु न छाड़ई झूठिन मनु लावै।
खोजो भोंदू हरि जना जो मारग पावै जाते गरभ न आवई उइ पार लगावै।
मीता भरम छड़ावइ भोंदू रिसवावै तत्तु ज्ञान बूझै नहीं चौरासी भावै।।

देखत नैन सेरइयाँ झकाझक लागिरी गुइयाँ वई मोहि चाहै मैं उन्है चाहों जगु सो काह कहइया।
कामु क्रोध दोउ दानौं मारे, मारे सबु दुख देइया निहचल राज्य भया कायागढ़ दुरमति दूरि भगइया।
भूले पंडित भूले भेखी तत्तु मरमु ना पइया बूसी मांही अरझि रहे कथनी बहुत करइया।
कहिमीता भै सागरके जिउ को इनका समुझइया जात ह्वै तेहि चला जाइदे जमुकी ह्वै रसोइया।।

आओ अभिनासी की सरना सकल व्याधि दुख हरना।
ई है मूल और सब साखा जुगन जुगन सुख सरना।
गोरख भरथरी औ सुल्तानी भे तिनही की सरना।
आपु बरोबर कीन्हा तिनका छाड़ि और तू गरना।
दस अवतार तिन्हौं की माया इन नहिं पाया तरना।
सतगुर केरी सरना आये तरे ध्यान ई करना।
कहि मीता भोंदुन की संगति चौरासी भ्रम मरना।
बूड़ि जाति सबु कहा न मानै हारी मानि चुप रहना।।

नाम निरन्तर ध्याइया मनु समुझि समुझि तहाँ लाया है।
माला फेरी ना रसना टेरी नैन सो नैन मिलाया है।
पाहन पूजी ना घन्ट बजाये ना तिरथन फिर आये हैं।
सतगुर की सरना गति आये जियत अमर पदु पाये हैं।
बन बन फिरते पसुआ होते समरथ मोहि बचाया है।
तिनके ऊपर तन मन वारों संसो सोग मिटाया है।
कहि मीता हंसों की बानी हंसै भेदै पाया है।
बका भेखु काह सो जानै पाखंड कै जगु खाया है।।

लगी लगी अलख सो डोरी तब देहों की सुधि बिसरी।
वाके नैनन लगी खुम्हारी ताकी चालु जगत ते न्यारी।
वा जोगी है टकसारी जिन लिया काम दल मारी।
वा भेखु न कबहू धारी गिरही मां दोऊ कुल तारी।
धरि चलिया भेखु भेखुधारी जाके खइबे की हुसियारी।
सतगुर के बिनु अतिवारी ई होइ परोहन भारी।
जन मीता कहैं बिचारी हरि दास न होंइ भिखारी।
मनु अपने देखि बिचारी नामा-सधना घर बारी।।

सोवत जलमु गयो रामु पद कबहुँ न मूल गह्यो कामु क्रोध माया मां माते नल तन खोय गयो।
जैसे अमल पिये फिर उतरै धन गये चेत भयो खों खों खों फिर करने लागे घर ते बोझ गयो।
नाती पूत पालै के काजे भ्रमि भ्रमि बैलु भयो ते सगरे दुदुकारन लागे खइबो छूटि गयो।
सेमर सुअना सेइ उड़ाना छिउले बैठि गयो कहि मीता पाछे पछिताना ऐसे जगत भयो॥

हरि भक्ति कठिन रे भाई या गल्लन हाथु न आई जब सतगुर करै सहाई तब नामु निरन्तर पाई।
तहाँ औंकार है नाहीं हुआं तीनिउकी गम नाहीं सो नारद व्यास न पाई ध्रू पहलादो हाथु न आई।
चौबिस औतार बड़ाई हरि भक्ति न हाथै आई भल छाप तिलक मन भाई सब पसुआ गे डहकाई।
जन मीता छानि कहाई हरि दासन के मन भाई मूरुख सो काह बिसाई सुज्जन लेवे अपिनाई॥

जे मतवाले नाम के ते भाँग न खावैं पिये अमी मन छकि रहा मद कहाँ समावै।
भेखु बनावै मसखरा दुनिया भरमावै हरि जन घर ना छाड़ई जोहदु कै पावैं।
असल नक़ल बिरला लखै ताकी सब बनि आवै पीर मिले पिउ पावई जमु तलब छड़ावै।
बिनु विवेखु नल आंधरा झूठिन मन लावै कहि मीता एकु सांचु बिनु आवै औ जावै॥

गुरु ग्यान ध्यान अलमस्त दिवाना बावरा है।
अकिल बड़ी दुनिया नहि पावै तिनका खेलु अपारा है।
दारु न खाते भांग न पीते खाते गम मन मारा है।
गुदरी सेली उइ ना धारैं फक्कर का मत न्यारा है।
गुरू पीर भेखै नहिं धारै जे पहुँचे दरबारा है।
राजा मीर भेदु ना जानै भेखु धरै गुनगारा है।
हीरा भेदु जौहरी जानै जानति नाहीं राजा है।
कहि मीता जो होय फ़क़ीरा फ़कर भेदु तिन छाना है॥

महाराज राजन के राजा तुमते काह छपाया है।
दुरमति दुविधा कपटु न छूटै ता पर दासु कहाया है।
गुदरी सेली किस्ती तूमा नाहक भेखु बनाया है।
भक्ति नहीं या है दगाबाजी जमु के हाथ बिकाया है।
गुनागार साहेबु संतन का सौदा आनि मनु भाया है।
येऊ वोउ नरक दोउ परिहैं ताते हम गोहिराया है।
छाड़ि मसखरे देउ मसखरी काहे का भरमु बढ़ाया है।
कहि मीता खर महिखा होइहो निकरि आइ जो खाया है॥

आये री आये पाहुना हरि के व्रतधारी वारि वारि पानी पिओं तिनकी बलिहारी।
जिन मिले भरमु भागिया तनु तपनि निवारी फूली फूली मैं फिरों सुख उपजा भारी।
उन मोरी लगन धराइयां हरि भई पियारी भावै जगु हांसी करै भावै दै गारी।
अउर बरत सो का धरै जिन या मति धारी मीता हियरे रामु है का डर संसारी॥

साधो अरझा सूत निबेरा ना मेरा ना तेरा अरझावन वाले तेहि जगु पूजैं दोछु कहै हरि केरा।
काम क्रोध की गठरी बाँधे तरने का मनु तेरा नरक बासु की सौदा कीन्ही माला पहिर घनेरा।
संत संगति हांसी करते पाखंडिन का पेरा तेहिका भेदु निकरिहै पाछे तब मोजरा है मेरा।
कहि मीता सठ गये मसखरी पैड़ परा है तेरा अधाधुन्ध मां जलमु गंवाया ना कबहू मन फेरा ॥

जगु मां अंधरेन हाट लगाई डिठियारेन का कोई ना जानै अतिरिज देखा भाई।
संतन नींद पखंडै पूजै तरने की आसा लाई नरक परै के काम करति है देखो या चतुराई।
साधू कहे बहुत सुखु मानै साधि कुछौ ना जाई पांचौं के परपंच भुलाना रीझे भेखु बनाई।
पाखंड कै दुनिया ठगि खाई आगू जानि न जाई कहि मीता भेखिन की संगति पैड़ परी रे भाई ॥

चलु मनु रे मैं तोहि रंगाऊँ पहिले पिछले दाग छड़ाऊँ।
तन मंजीठ सतगुर रंगरेजा हरि रंग रंगि लाल कराऊँ।
जेहि रंग रंगि गये गोरख भरथरी तेहि परिछै जाइ मिलाऊँ।
मानि लेउ मेरा अतिवारा अमर लोक का लै पहुँचाऊँ।
हम सांचे हमरा गुरु सांचा झूठे का मैं ना पतिआऊँ।
सांचा अपने गरे लगाऊँ जो ठहरै ता पार लगाऊँ।
करम पटुलिया ना मन लाओ झूलति झूलति हरिहै दाऊँ।
कहि मीता धरु सहज सुभाऊ सो करनी धरु बहुरि न आऊँ ॥

समरथ पार लगावै दरिया भरा गम्हीर गुरु केवट पांचौं कर डाँड़ा खेइ लगइहै तीर।
पंडित भेखी पाथर के नै जनि चढ़ि बूड़ै बीर संत संगति मां सहजे तरिहै है गिरही गुरु पीर।
चतुर चतुर जमु द्वारे पहुँचे लीन्हे बहुतै भीर सांचे सुज्जन हरि का मिलियां हता बिना तकसीर।
छल बल ते साहेबु है न्यारा उइ तो है बे पीर दरद बिना दरवेस न पावै कहि मीता धरु धीर ॥

भंवरा लोभाना बारी अगम की परमल बासै तौन की।
बिन सर नीर कवलु एकु फूला बिनु डांडी बिनु पत्र की।
शिव ब्रह्मादिक विस्नु आदि लौ जानै ना गति तौन की।
देउ असुर मुनि नल का जानै जानै सतगुर सेवकी।
आगे जाउँ तो मौनी बइठा निर्मल मूरति तौन की।
अनग सूर ससि छबि पर वारों लगन लगी मोहि तौन की।
अछै बिरछ एकु मच्छ चढ़ि गये लै गुन तौन बिहंग की।
मीता अतिरिज देखि थकित भये अब चालों मैं कौन की ॥

जो व्रतधारी नामु के तेहि और न भावै कांच बांधि सो का करै जो कञ्चन पावै।
तीरथ जपु तपु संजम कुछु कामु न आवैं वासन प्यास न जावई नल का समुझावै।
स्वाती बूंद के कारने पपीहा लै लावै सो बूंदा मोती भया सागर काह नावै।
राई ते लघु नामु है गुर किरपा पावै मीता जो ध्यावत बनै ता गरभु न आवै ॥

चौरासी का मानवा चौरासी मां लीन सब्द न बूझै संत का करमन मां लै लीन।
कंठी माला बाँधि कै कहते हम परवीन गावति नाचति तन गया कालै भये अधीन।
जिभ्या हरि हरि रटत हैं मनु है निपट मलीन नरक परै का मघु चलै जिभ्या बहुत अधीन।
इनके लगे न बैठिये कुमिता मां लै लीन सुज्जन करिये आपना ई मीता के चीन॥

भजु मेरे मनुआ हरी हरी या ते जियरा तरी तरी।
अबकी बेर समै भल पाया मानुख देही की ओसरी।
भक्ति पदारथु ऊँची पदवी याकी सरबर कोउ न करी।
शिव ब्रह्मादिक विसनू आदि लो ये ही काजे आसकरी।
ताको भेदु येऊ नहिं पावैं तू लै सतगुर सेउ करी।
खोजे भेदु मिले हरि पावै जाकी सतगुर बाँह धरी।
हा हा कै कै हारी मानी कै याते बाजी जीत परी।
मीतै जानि परी सो गाई अबु जमु हमरा काह करी॥

सतगुर मेरे परम पियारे रे जिन कीन्हा जगत निनारा रे।
पाहन पीतरि पूजै बलइया हरि बसै नैन हमारे रे।
पंडित भेखी ई सबु ठगिया अंधरेन के घर प्यारे रे।
निरमल नीर स्वानु नहिं चाहै कीच सो बड़ा पियारा रे।
करम कीच मूरुख तहँ लोटै को धोवै मन कारा रे।
धोवन हारे चीन्हति नाहीं मैलेन के संघु मारा रे।
कहि मीता हम बहुत पुकारा अंधाधुँध संसारा रे।
अंधा दरपन कैसे देखै बहिरा ना सुनै नगारा रे॥

लगन लगइया हरि पदु ध्याइया जमु की फांसी कटइया।
सेये संत सुजान प्रीति कै अपना मनु न डिगइया।
सेवकु आपन जानि पाछिला भै ते पार लगइया।
सोवति हता कामु की निद्रा आपहु आनि जगइया।
आवै लहरि डसी मानौ काली नैनन सुरति समोइया।
लोनु किरच घुरि जाय नीर मां कहु को भिन्न करइया।
ये ही ते परतीति भई जिय संसो सोग भगइया।
मीता आवागवन निवारा या विधि दास कहइया॥

पदु

ऐसा समो न बावरे जलमु पदारथु जाई माया के फन्दे परा को सकै छड़ाई।
भाग्यमान सोई हवै जाके रामु सहाई रामै राजी राखि कै रामै मिलि जाई।
तू चाहै हरि ना चहै का होइहै गाई रटि रटि डिम्भी बहु मरे फिर नरकै जाई।
सुज्जन का उपदेस है साँचु धरौ डिढ़ाई ये ही ते हरि पाइये मीता गोहिराई॥

लटका

चलु चलु री महल मां बलम छपान घूंघट टारि नैन भरि देखौ सीतल होइहै प्रान।
पांचौ के परपंच न भूलै इन औरे मत ठान तोसो पिया सो अन्तर करई इनका तजौ पयान।
हिल मिल लेउ सखिनके संघु तोहूँ होय सुजान मीत मितइया जोरि न तोरै तो हमरा गुरु ज्ञान।
भली बैस तरनुपवा कीरी जो सेजरी अगुआन औरि चालु कुछु काजु न अइहै सुनिले सखी सुजान ।।

जोगी जटा रखावै नाहक छारु लगावै रे।
घर काहे छाँड़ा घर घर खान पियन के काजे छाड़ै फिरै इमाना रे।
कपरा रंगि कै भै मगरूरी नाँउ धराया नाथा रे।
काल जंजाल जेल गरे डारी बिना भये हरि दासा रे।
जोगी सो जो जुगती जानै पार होय भै पारा रे।
ते जोगी भेखै नहिं धारैं नहीं तजैं घर वारा रे।
है कोऊ भोंदुन समुझावै घर घर होत खुवारा रे।
कहि मीता गोरख नहिं भेखी नहीं लगाई छारा रे ।।

रामु की भक्ति दुहेली भाई कोटिन मां कोइ पाई भेखी हाथु न आई का भये पदु दस गाई।
जो पाँचो बस होई, है ज्ञानी ध्यानी सोई छाड़ि सकल चतुराई हरि भक्ति हंसी कै पाई।
गुरु गरुवे सेये जाई जिन मारगु दिया बताई जो मारगु मां ठहराई सो भजि भजि दास कहाई।
जनमीता बहुत कहाई कोउ सुज्जनके मनु आई मूरुखसो काहू बिसाई जा का मनुआ करै ठगहाई ।।

तीरथ किये न जपु तपु दाना सहजे सहज मिले भगवाना।
तीरथ भ्रमि भ्रमि जलभ सिराना सिरजनहार परा जाना।
चौरासी के भे मेजबाना तापर करते बड़ा गुमाना।
पूंजी बोरि चले नादाना घोंटी रूधि निकारति प्राणा।
राह छाँड़ि कै भरम भुलाना कहते हैं हमही जाना।
तेहि त्यागति हैं संत सुजाना जिनके संघ तरति है प्राना।
मीता सेये संत सुजाना कुसल परी उइँ भे निगमाना।
तब ही ते हम कीन्ह बिनाना मूरुख हंसै हवै बिनु ज्ञाना ।।

डिंभी डिम्भ ते हरि दूरि सठु रहा कुमिता पूरि कपट कै कै जगत मूसा अन्त मुखु मां धूरि।
सांचे के प्रभु होति बन्धो वई सजीवनि मूरि मुक्ति तिनकी हवै चेरी जहँ उई भरपूर।
बैलु-महिखा होंय खर ते रामु ते भे दूरि तजे किरखी नाउ बोरी चतुर जगु गुर पीर।
विद्या पढ़े दोऊ घर की बहुत लीन्हे भीर कहै मीता कालु दारुन छाँड़ि भगिहै भीर ।।

पंडित पढ़ि पुरान का कीन्हा जो आतम राम न चीन्हा।
काल जंजाल जेल गरे डारी होइहैं बहुत अधीना।
चन्दन जनेउ देखि ना भूलै या तो है ठगिहाई।
मछरी मांस खांइ ना ब्राह्मण चींटो गोदति नाहीं।
ब्रह्म मिले सो ब्राह्मण होई दुबे तिवारी नाहीं।
भूला पसुआ मरमु न जानै झूठी लिये बड़ाई।
ब्राह्मण पर घर खाय न कबहूँ जेहि हरि दीन बड़ाई।
कहि मीता धोखे जगु भूला पूँजी चले गँवाई ॥

अबके गये न आउबु रे एक मत सुनु सांचु पोथी धरौ उठाइ कै जीउ नरकै जाति।
काहे न हरिजिउ ध्यायेउ रे जो जिउ तरि जाति अउर उपाय कुछौ नहीं या है घाति।
अभिमानी ते दूरि है दीनन के साथ हरि जिउ करुनासिधु हैं अस को है नाथ।
मीता मंगल सो करै जाकी निरमल बात हरि हीरा कै छाड़ि कै पाछे पछितातु ॥

सतजुग सति त्रेता तपु कीन्हा द्वापर पूजा चार सही।
करम फांसि मा सगरे फांसे भक्ति रामु की भिन्न रही।
अब कलियुग माँ भक्ति पसारा सतगुर तरिहैं बांह गही।
गरभ बास ते देइ छड़ाई जमु की फांसी कहाँ रही।
छल बल है नरकै की सौदा जो करिहै सो हियैं रही।
कै औसाफ चले जो जगु मां ताकी सतगुर बाँह गही।
मीता जानि परी सो गाई अब के सौदा पूरि भई।
हरि जिउ केरी सरनै आये दुनिया ते कुछु कामु नहीं ॥

सब्द मुसलमानी हिन्दुई

मियां जी दरद वंद दरवेसा क्या हिन्दू का सेखा।
पर गर छुरी चलावति नाहीं जगु अपना कै लेखा।
आना जीव पकरि पर बासा जबै किया कौने लेखा।
कहै कुरान सताओ न किस ही साहेब करिहै लेखा।
कौन जुवाबु देओगे पूँछे अदल बड़ा हवाँ देखा।
तोबा कै कै अबहूँ छाँड़ौ जो बीता सो बीता।
पढ़ि कुरान मुल्ला बौराना अमल करै ना जाना।
कहि मीता सोइ पंडित भूला पढ़ि पढ़ि मरा पुराना ॥

दोहा

का हिन्दू का मुसलमान बिना वन्दगी दोऊ खुआरा।
मेहर दया बिनु होय न पारा करै कसैपन गुन गारा ॥

मियां जी पढ़ि पढ़ि कस बौराये जोरे नहिं फ़ुरमाये हवै खुदाय हक़ का साथी हक़ काहे बिसराये।
कहै कुरान सताओ न किसही ऐसा तो फ़ुरमाये अपना भला अदब के माने दीनन दीनै पाये।
भूले संघु भूलै ना कबहूँ भला समौ देखु पाये होय निजाति खसम का मिलले तेरा ई बना बनाये।
एकु बापु के दूनौ बेटे दूजा नहीं समाये कहि मीता समुझै सो गरुआ हलुके हाथु न आये ।।

सखी एकु जोगी अचिरिज आये, अनभै कथा नितै नित चालै देखति मोहि बौराये।
जटा न मुद्रा गरे न सेली ना अंग छारु लगाये पाखंड भेखु कुछौ ना कीन्है रन जीते ज्यों आये।
रविशशि जोति धुआँ अस लागै जब वा ध्यानु लगाये हंसिहंसि गावैं बेनु बजावैं बड़े भागि ते पाये।
घर अंगना कैसे कै भावैं उन हँसि कंठ लगाये कहीमीता मोहि जोगिन कीन्हा जगुसो छोरु छड़ाये ।।

जोगी या विधि कै ले मेला, जाते कालु करै नहि झेला।
पांच पचीसो बाँधि लै आवै सो सतगुर का चेला।
प्रेम भभूती रहै अंग लाये तजै जगत का खेला।
अरध उरध मां आसन राखै या मत हवै दुहेला।
सांपिनि उलटि राखै शिव नगरी छहौं चक्र का वेधा।
ब्रह्म अगनि अन्तर पर जारै पियै अमी कोई अैसा।
मूल मते बिनु जोगु न सीझै अगम पंथु कैसे जैइला।
अलख पुरुख का कैसे मिलिहौ कैसा है तू चेला।
संतमता शंकर नहि पाया तू जानति है खेला।
ब्रह्मा-बिस्नू नारद मुनि भूले ना जाना या खेला।
गाउँ ना ठांउँ दिसा नहिं कीन्हा चला जाति किये हेला।
सहजे सहज अमरपुर पहुंचा कालु जरै जैसे तेला।
का करमनके खेलु परा है, फिर फिर अइला जइला।
ज्यों मिरगा टिसुना का धावै भरमि भरमि मरि जइला।
भे मरकट मूठी सै बांधा तिनसो का लई कहिला।
कहि मीता मारगु है बांका जानी कोई दुहेला ।।

बौरे लगै रामु सो नैना, गड़ै कटुक ना बैना।
हंस करै सगरा जगु भाई लगै आपनी धैना।
भूलि परा दुनिया दौलति माँ कालौ का तोहि डरना।
अन्त काल छाती चढ़ि बैठी ताते आवो सरना।
गोरख भरथरी गोपीचन्दा सुल्तानी धरपरना।
तजि अभिमान मिले साहेब का तेरी काह गरना।
कांचु त्यागि कै कंचन लीन्हा आखिर तन लै मरना।
बाजी जीति गये ते मीता भूले भोन्दू धनु माँ ।।

अचिरिज एकु सुनौ रे भाई घर अपने की बात ।
आगि लगी तब कुसलपरी घर जरा रक्त औ मांस ।
मछरी चढ़ी बिरछ के ऊपर ससा सिंघु भुनि खात ।
अजिया के घर भेड़हा जाया पंडित बूझौ बात ।
जो बूझी सो पार उतरिया अनबूझे नरकै जात ।
पढ़ि विद्या पंडित बौराना दमरी की सबु घात ।
जमु दारुन की सुधि विसराई तोहि ताके मड़रात ।
कहि मीता जगु कालु खिलौना चलै आपनी घाति ॥

साधौ काया नगरिया मेरा मनु माना, जोगिन होय कै ततु छाना ।
सिरजन हारा यहीं समाना मिल गये सतगुर तब पहिचाना ।
तिर्थन तिर्थन फिरै नदाना, जहँ साहेब तहां नहि जाना ।
मिरगा बन बन फिरति भुलाना बास अपन, पै अनतै ठाना ।
कोउ करै तीरथ कोउ करै दाना कालु जालु मां परै दिवाना ।
जौ निनुआरे सोई सुजाना हाय हाय कै तजउ न प्राणा ।
हित की कहे बैरु कै माना तिनका होइहै नरक निदाना ।
मीता पाया पदु निरवाना दीन भये ते तरि गये प्राना ॥

हरि चरनन मनु लाउ गये घर बहूरी चरन सरन सुख रासि चूकै न बावरी ।
जेहि घटु है हरि नामु कालु तहां का करी, भै भैसागर पार बहुत रच्छा करी ।
सैनि धना रैदास ता मीरा नागरी सधना दास कबीर सुनो या साखि री ।
मीता कहै विचारि भलो या बातरी बड़े वड़ाई बूड़े दीन होय बाच री ॥

आये हरि के दास जगा अबु भागि री, फूली फूली घर न समाऊं सुखन की रासि री ।
काटैं जमु के फंद करै जो आपुरी, सोवत लेइ जगाय धरै जो सांचुरी ।
तीन लोक को राज्य करै तब काहरी संत सगति सर नहीं इन्द्र मत काचुरी ।
तीन देउ तेहि ध्यावें होई जब दासरी गावै मीता दास परै जेहि जानि री ॥

पदु

अरे अरे काग लबार करै का बोलिया, हमैं धनी की आस तहाँ चितु जोरिया ।
चौदा ऊपर राज्य अटल लिखि पाइया, सतगुर, बहिया पाई ता बनी बनाइया ।
मनु आया सन्तोख टिसुना गई खांड़िया, किया अमीरसु पानु भई मतवालिया ।
सुनु मीता के भेदु, बिरला कोई जानिया जोगी का मतसार और विखु बादिया ॥

पंडित करु अैसी पंडिताई जाते आवागवन मिटाई, औरे का उपदेस बतावै आपु न तजै कुराई।
बेदु पुरान दोऊ हैं सांचे करम धरम डिढ़ताई, तुमतौ पढ़ौ चालु नहि चलऊ है कैसी पंडिताई।
हरि की भक्ति बेदु ते न्यारी शिव, ब्रह्मा नहि,पाई देउ-असुर-मुनि नलतन प्रानी तिनकी कौनि चलाई।
बादु बिवादु करैं ते झूठे बाँधे जमुपुर जाई, ग्यानु विवेखु करौ निजु दाया होइहैं रामु सहाई।
आंहू मारि दूरि कै डारौ, रहौ गरीबी पाई, ऐकुइ ब्रह्मु सकल घटु ब्यापै जारौ झूठि बड़ाई।
जो तुम बहुत ज्ञान के माते कहु मोसो समुझाई, गरभु बास कैसे कै छूटै सो विधि देउ बताई।
अबही सिखि होंइ हम ताके चरन गहैं लपिट्याई जो या बिधि के भेदु न चलिहै नरकु परी चतुराई।
मीता भया जगत ते न्यारा छांड़ि सकल चतुराई, अगम पंथु का मारगु लीन्हा जमु की तलब छड़ाई॥

हा हा की मोहि लै चलुरे जहां बसै मोरा पीउ तौ भेदी तोहि जानिया नहितौ ध्रगु तोरा जीउ रे।
कथनी बदनी का करै रे हमैं मिलै की आस जो ना मिलिहै पीउ का है तिनका नरकै बासु रे।
पंडित मुलना पढ़ि थके रे मरमु न पाया कोय जो पावै ताके दास हैं हमु देखा है जगु टोई रे।
दरदु मरमु दर्दी लखै वातौ जाका व्यापी होय रे कहि मीता हरि दास की मति पावै बिरला कोई रे॥

कहरा

तजु संसार हवै या छोई महरा के संघु लागेउ रे।
जो लाग्यौ ता निसि दिन जाग्यौ जागति जागति पइहौ रे।
महरा है राई का किनका छोटा कै जनि जान्यौ रे।
राई ते परबत होय जैहै ज्यौं बट बीजा जामै रे।
सिंघु एकु बटिया में लागै निवहै कोऊ न पावै रे।
सो निबहै जो सुमति लै मारै जब सुक्रित डिढ़ राखै रे।
इहां का उटवा उहाँ गहि लावै हथिया सुई निकारइ रे।
जो हथिया कढ़ि जाय सुई बिच पर आतम तब जागै रे।
आतम मिले आत्मा रामा गठि वंधनु तब छूटै रे।
पाटा उलटि देइ गवने का सो नैहर नहि आवै रे।
दरपन में काई ना लागै दोहों जून नित मांज्यौ रे।
मजिलिसि रहै नैन तर ठाढ़ी जबै उनमुनी लागै रे।
यहु मत अगम अगाधि बहुत है मुख बाहर जनि काढ़ेउ रे।
कसे कसौटी जो जन ठहरै तेहि अपना कै जानै रे।
संत की करनी सुज्जन उपदेसा सकल कलेसा नासै रे।
कहि मीता या निरमल करनी येहि ते ना कुछु आगे रे॥

हेला मारि चलो वहि देसवै जहाँ कालु डर नाहीं रे।
चौदा लोक कालु की बारी दूरि दूरि सबु खाई रे।
उपजति बिनसति बड़ा दुख होई समुझि परै तोहि नाहीं रे।
सो करु गरभवासु ना आवै होइ सबै कुसलाई रे।
नल तन बार बार ना होई नलहूका सुखु नाही रे।
कबहुँक राजा कबहुँक चींटा लख चौरासी जाई रे।
करु सतसंघु सेउ सतगुर का और न समर्थु कोई रे।
जे जे आये उनकी सरनै अटल भये ते लोई रे।
जन कबीर औ पीपा नामा रैदासा है सोई रे।
कहँ लग कहौं बहुत भे संता इन्है मिले धनि सोई रे।
बिनसै शिव विस्नू औ ब्रह्मा हरिजन विनसै नाही रे।
महा प्रलय संतन पर नाहीं और सबन पर होई रे।
पांचों मारि पचीसो लूटै तबु वा घर का होई रे।
मन चंचल निहचल कै राखै तब मरना ना होई रे।
कहि मीता तब भये उदासा रसु लीन्हा तजि छोई रे।
ताके पिये समुझि सब परिया पोथी सुन का होई रे॥

बाँधु पतालै मूलै डोरी निसि-दिन रह्यो विचारी रे।
अउटै मदन जरै करम कसमल भरिहै सूत भंडारा रे।
छुटहै निकरि परौसी चलिहै तब तुम रह्यौ संभारी रे।
कै डिढ़ाउ गाफिल ना होवो तबु आगे पगु धारेउ रे।
कोटि कोटि रवि चन्दा झलकै कोटिन उइ रहे तारा रे।
यहौ देखि जनि भूल्यौ बहुरिया येहु जमु जार पसारा रे।
रवि-ससि बेधि करौ बसि नारी तीनिउ दिसा बिसारेउ रे।
चौथे गये कालु ना पूछे आवागवन निवारेउ रे।
पदम पत्र बिच साहेब बैठा सो है पुरुख तुम्हारा रे।
अविचल राज्य करौ अब दुलहनी या मत देहौ न काहुइ रे।
बहुतै भूत-प्रेत ठगु अैहैं कइयउ भेख धारी रे।
तिनका ना पतियायो, कोटि जतन करैं ज्ञान खरग सो मारेउ रे।
सुज्जन दीन एकु दुइ अइहै सीतल बानी बोलइ रे।
तिनहू का मत हाल न दीन्ह्यौ कस्यौ बहुत डोलायो रे।
बहुत न होइ हरी के दासा एकुई-दुइ जगु होई रे।
कहि मीता तिनका उठि लीन्ह्यौ बादी दूरि बहायो रे॥

भाठी भरी नामु लै लागी ब्रह्म अगनि उदगारी रे ।
जोग जुगति का संजम कीन्हा पायी औघट घाटी रे ।
जारे मदन पापु सब जरिगे कुमति छाड़ि गइ ऊरा रे ।
सुमति सुहागिल मारगु लागी देखउ भागि हमारी रे ।
बाट-घाट कोउ रोकति नाहीं भये चोर सबु साहा रे ।
अगम पंथु का बेड़ा बांधा सतगुर कीन्ह सहाई रे ।
रवि ससि दूनो समकै राखे सुई सुमेर समाना रे ।
सुरति निरति मोरी भई पदमनी जाय मिली करतारा रे ।
शेष-महेश विस्नु तहँ नाहीं नाहीं जगु व्यौहारा रे ।
ब्रह्मा बेदु कितेबु नहीं है वहाँ है सिरजन हारा रे ।
तहाँ नहिं जोति रूप नहि रेखा है छवि अगम अपारा रे ।
कोटि भान जो होय एक घर तउ ना बहु अनुहारी रे ।
जोति हती सो परम जोति भइ मिट गइ आवाजानी रे ।
या मारगु की चालु कठिन है बिरलेनि परी विचारी रे ।
पदम पत्र पर आप विराजै बैठी मजलिस सारी रे ।
जन मीता लौलीन भये तहँ बारम बार निहारी रे ।।

अबकी बेर पैठ दह भीतरि करिहौं तोरि बड़ाई रे ।
जियत मछरिया काढ़ि लै आवै होई सब कुसलाई रे ।
पियत कटोरिया ना ढरकायी बहुरि ना हाथै आवै रे ।
या चाखा ते नगर पहूँचै जो बिधि देइ बनाई रे ।
अमर होइ मछरी ना मरई बहुरि ना जारै आई रे ।
पैठति बनै रतन भरि पावै जो गहिरे दह जाई रे ।
तीरै तीर बहुत पचि हारे मछरी हाथु न आई रे ।
जिनही पाई तिनहि छपाई बिरलेन दीन्ह जनाई रे ।
या मद पिये बहुरि ना उतरै सदा रहै मतवाली रे ।
या मद का शिव ब्रह्मा रूरे हाथु न लगी खुम्हारी रे ।
जीव जंत्र पर हाथु न डार्यो ना अंचयो भरि झारी रे ।
या तौ अगम पंथु कै करनी सहज अहज उदगारी रे ।
जो खोजै सो परचै पावै सो है साखि हमारी रे ।
निरुआरे सो झूंड हमारा तिनसो अन्तर नाहीं रे ।
कहि मीता या हरि का कहरा पहुंचा लेइ विचारी रे ।
बिनु पहुंचे का कालु दुआरा का भये माला डारी रे ।।

सूखा तालु मीन बलु पाया तुरतै चढ़ी आकासा रे ।
आगि लगी तव कुसल परी घर जरै रकत औ मांसा रे ।
देसवै देसवै मैं फिर आयेऊँ यहु ना दीख तमासा रे ।
दुलहिनि मारि मनुस का डारा दीन सुहाग विधाता रे ।
बड़ी करकसा जौहर ठानै सासु ननद धरि खाई रे ।
माइ खाय भइया का त्यागा अस दुलहन घर आई रे ।
काग उड़ावति अंचरा छुटिगा रहिगै मन समुझाई रे ।
रांध परौसी थर थर कांपै कोउ ना बोलै भाई रे ।
सिंघ एक तागा धरि बांधा ससा दीन्ह हुलकाई रे ।
तौने ससा सिंघ भुनि खाया फिरगै नगर दुहाई रे ।
नागु नाथु गलरी का डरपै कौन अचंम्भो आई रे ।
बाजु खाये चुपकी मारै बाजु के मसवा नाहीं रे ।
येहि ते खसमै भई पियारी सखियन के मन भाई रे ।
कुलवंतिन दूनो कुलतारे मैके-ससुरवै खाई रे ।
आगि लाय पानी का धावै मूंदी मढ़ी उघारी रे ।
कहि मीता यहु हरि का कहरा पहुंचा लेइ विचारी रे ।।

सावन मां एकु सागर बाढ़ा बिन जलु लहरी आवै रे ।
भीतर उठै अगिन की ज्वाला है कोई आय बुझावइ रे ।
उपजा मोती निरमल जोती तहाँ सींप है नाहीं रे ।
ससा भूनि सिंघु का खाया अतिरिज कहा ना जाई रे ।
हथिया पैठै सुई के नाके सहजे आवै जाई रे ।
ऊँट फारि धना ईंधन कीन्हा चूल्हे दीन जराई रे ।
मनुसै मारि खंड खंड कीन्हा तेलिन सरा चढ़ाई रे ।
ठाढ़ि कलरिया बकुला नचवै दूनौ गई उड़ाई रे ।
धोबिन चमरै ब्याहु रचा है मड़ऐ आगि लगाई रे ।
इन्है मारि कै भागि परौसिनि कीन्ही राज दुहाई रे ।
बिन रसना मंगल गावै बिन कर तालु बजाई रे ।
बिना पंख एकु पंखी उड़ि गया खबरि न कोऊ पाई रे ।
बिना सीस एकु मिरगा धावा दुलहिन तेहि धरि लाई रे ।
ताते अमर भई है दुलहन अब न मरै मोरे भाई रे ।
कहि मीता या हरि का कहरा महरम भेदा पाई रे ।
पोथी बाँचि काह नल कीन्ह्यौ वाकी खबरि न पाई रे ।।

चलु लोई महरा ढिग जैऐ दुख सुख जाय सुनइये रे।
गाउँ ठाउँ का भेदु लै अइयै उतर बसे दुख पइयै रे।

ठाढ़े बैठे सहना मारै कल कतहूँ ना पइया रे।
तीनिउ महतिया जेहि डर कम्पै हम बपुरी का करिये रे।

पूर्ब दिसा के चले जाति हैं पच्छिम दिसि अमरइया रे।
तहँ साहना का कुछु डर नाहीं ना दइया ना मइया रे।

बिच कलवरिया फूल उतारै भरि भरि देइ कटोरिया रे।
पिया कबीर पिया रैदासा पीपा मीराबाई रे।

जिन जिन चाखा ते मतवाले अमर भये तिन पीया रे।
सुर मुनि असुर खोजि पचि हारे हाथु न तिनके आई रे।

चक्की लै घनहरिया बैठी अजब चुनौती देई रे।
लहरी लाय दररि जगु डारै निबहै कोऊ न पावै रे।

जिनका सूझा तिन सबु बूझा तेई गये गोहिराई रे।
हित की कहे बैरु कै मानै तिनसे काह बिसाई रे।

चोर चुरावैं पनहा मारै नरक परोसी जाई रे।
कहि मीता यहु सब्द हमारा महरम भेदा पाई रे॥

पइले पार ते महरा आवै नैनन भरी खुम्हारी रे।
लाल पगरिया दांतन बिरिया चलो सखी तहँ जाई रे।

हिलि मिल लेउ समौ भल पाया देहैं पार उतारी रे।
तहँ के गये बहुरि नहिं अवना उहैं हवै ससुरारी रे।

कोउ कहै धोबिया कोउ कहै कुम्हरा कोऊ कहै टकसारी रे।
कोउ कहै चोरु हवै यहु ठगिया जिन जस परा बिचारी रे।

प्रेम पियाला महरा माता बखर बोलु ना सालै रे।
हँसि हँसि कहै तहाँ की बातें जानौ अनजाना रे।

तरुनी तरुनी लै चले देसवै बुढ़ियन लहरी लेई रे।
तेलिया की बिटिया बहु पोदकावै तिनका ना नगिचाई रे।

नाउ चढ़ाइ तराई माँगै कोऊ देति कोउ नाहीं रे।
मनका माँगा जिन केहू दीन्हा तिनका लीन्ह चढ़ाई रे।

कजरा सेन्दुरा चुरिया बंगलिया कै सिंगार बहु आई रे।
काटी नाक पटोरे पोंछी उनका जानि न जाई रे।

ई तौ अगम पंथु का कहरा बिरला भेदै पाई रे।
कहि मीता इह पदु का भेदी बहुरि न भौ जल आई रे॥

मनका महरा गावै कहरा कहरा हरि जिउ का आही रे।
तन के सोधे हरि जी का पावा आगे जुगति बताई रे।
पइठ पताल सेस का बांधै मूलै डोरी लाई रे।
पाँचो बाँधि पचीसो घेरै मच्छ बिरछ चढ़ि जाई रे।
मच्छ चढ़ति उपजिगा अनभै ज्ञान गठरिया पाई रे।
हो बिहंग चढ़ि गये गगन में जोति मां जोति मिलाई रे।
घुरिगा नोनु नीर मां जैसे सो को काढ़ि मंगाई रे।
या विधि मिलै सो संत कहावै सतगुर राह बताई रे।
सो सतगुर जो भैते तारै जियतै जाइ जनाई रे।
मुये मुक्ति की आस करति हैं ते नल नरकै जाई रे।
कान फुकाय छापु दै बइठे माला तिलक मनु लाई रे।
नल देही या धोखे बीती जमु की तलबै आई रे।
साँचु कहे ते बहु दुख मानै सठु सो काह बिसाई रे।
सुज्जन होय सो सब्द बिचारै सीस देइ घर आई रे।
पाखंड भेखु सकल जगु भूला मारगु गहा न जाई रे।
कह मीता कोऊ ना मानै जानै हमरी बलाई रे॥

बरनौ एक रामु का कहरा सतगुर का सिर नाई रे।
पाँच पचीस एक घर लाये सुरति निरति लै लाई रे।
मन मतंग का आंगुस लाया खोले बज्र केवारा रे।
रामु मिलाना सहजे कीन्हा तजु पाखंडु ब्यौहारा रे।
राम रसायनि रस मतवाला पीये आनि ना भावै रे।
तीन गुनन ते उइहैं न्यारे या मत अगम अपारा रे।
सतजुग त्रेता द्वापर में सबु गुन का रचा बजारा रे।
तीनि हाट बूड़ी सब पूंजी बिन निरगुन व्यौहारा रे।
माया मोह सरगुन कै नदिया बहि गया सबु संसारा रे।
बांचे संत नाम लै उबरे रीझा सिरजनहारा रे।
मान बड़ाई कालु दुआरा अभिमानी सबु जांई रे।
किये दीनता अमर भये तिन पद पाया निरबाना रे।
घर का अमी मनै ना आवै बिखु का दहों दिसि धावै रे।
बड़ा अभागी मरम न जानै इसनू विसनू गोहिरावै रे।
सहिया भये पुकारि करति हैं लोग करति हैं हाँसी रे।
मीता आवागवन निवारा कटी कालु की फाँसी रे॥

अपने कहरवा की मैं बलि जइहों जिन मोरी तपनि बुझाई रे।
नाचति आवै गावति आवै राखबु छतिया लाई रे।
कहु पंडित यहु कहाँ ते आवा कहु मोसो समुझाई रे।
जेहि यह भेदु समुझि ना परिहै सो जमु द्वारे जाई रे।
चारि कहरवा कहाँ ते आये जे हमका लै जाई रे।
बेद कितेबु तहाँ ई नाहीं अनभै उपजी गाई रे।
हमरे संघु की दूरि निकरि गइ हमहू पहुँची गाई रे।
निरखि परखि देखा जग बूड़त बिन सतगुर सरनाई रे।
पढ़ना छांड़ि लेउ हरि मारगु जारो झूठि बड़ाई रे।
जगत पूतरी काह बखानो करता का बिसराई रे।
छाड़ि रामु मोहि और न भावै ऐसी लगन लगाई रे।
गरभु बास ते अब भये न्यारे मीता बहुरि न आई रे॥

कहरा करम भरम का त्यागौ निरगुन नामै ध्याऊ रे।
जो ध्यावौ ता कालु न पूछै सहज परम पदु पावउ रे।
जौने कालु सकल जगु खावा बड़े बड़े नैकारा रे।
रामचन्द औ कान्हा खाये ब्रह्मा औ तिपुरारी रे।
इनकी थापु अब चालौं नाहीं मैं संतन मत पाई रे।
पीपा औ रैदास कबीरा बचे हरी सरनाई रे।
सब संतन कै लेउ बलैया दूजा अबु न सुहाई रे।
सिरजनहार चीन्ह अब पाया दुरमति गई भगाई रे।
धनि सुमिता जिन सतगुर चीन्हा नहि तो मरती आई रे।
ना बूझी सो नरकै जाई कालु गाल मां आई रे।
अन्धा जगु निन्दा कै जानै सांचु कहे जरि जाई रे।
कहि मीता या साँचा कहरा गुर गुख के मन आई रे॥

सुनु रे गोड़िया मता हमारा अनतै नहीं उबारा रे।
धरनि मूल लै डोरी पाई सो डोरी लै पारा रे।
बिन सतगुर सो हाथु न आवै का कथि भये अपारा रे।
दसवां खोलि परम पदु पावै गेरहे मां है बूड़ा रे।
कोऊ माला औ कंठी बाँधै कोऊ केस रखावै रे।
ई तौ हवै भरम की टाटी तत्तु कहाँ ते आवै रे।
कोइ पंडित पोथी का बाँचै जगु सुनने का धावै रे।
अपरमपार पुरुष पुरशोत्तम तिनका नहीं बतावै रे।
झूठा बनिज किया झूठे सो सांचु मनै ना आवै रे।
अबहू चेति अबूझ बावरे सहजे अलख लखावइ रे।
हम परदेसी परम धाम के तहाँ की खबरि सुनावै रे।
कहि मीता परतीति मानिहै तिनका कालु ना खावइ रे॥

अपने पिया की मैं मतवारी छकी रहौं दिनु राती रे।
पाँच सखिन मिलि भाटी औटी ब्रह्म अगनि उदगारी रे।
बंक नारि का सुख मुनि सींचै लीन्हा फूल उतारी रे।
सुरति पियाला भरि भरि पीया दुरमति गई भगाई रे।
महरा जिये मेहरि जिन कीन्ही मरतै गये जियाई रे।
बाँदी ते रानी गहि कीन्हा भया अमरपुर राजुइ रे।
आइ मुई सासु ननद मोरी पियत मुई बौराई रे।
मनुसै मारि काटि बलि दीन्हा खसम मिला तब आई रे।
अब ना मरौं मोरी मरै बलइया मरिहै यहु संसारा रे।
सुनौ नारि मोरि सखी सहेलीरेउ का कीन्हेउ झूठ सिंगारा रे।
हिलि मिल खोज सखिन संघ कहरा रोग दोख जरि जाई रे।
कहि मीता तजु मान मनी का पिउ का लेउ मनाई रे ।।

नैना रांजे नैना रांजे तहाँ जाई मनु लइया हो।
छहो भेखु छानवैं पाखंड ई सबु आय ठगइया हो।
दरपन मिला न दरसन देखा ऐसे जलमु गवइयां हो।
रूप रवण का रामु कहति हैं तहाँ हते दुइ बइया हो।
जेहि का आप अपनपै सूझै कहु काको नांचु दिखइया हो।
अगहु गहे ते दुतिया नासी भै अब ना ढिंढोर पिटइया हो।
केहि का नवउ काहु सिर नाऊँ अब मोरी नवै बलइया हो।
कहि मीता गुरु पूरे पाये बहुरि न ई जगु अइया हो ।।

पलक ना लगै रहै मुख लाली नैन रहै सुरमाये रे।
काया विरध होय नहिं तिनकी केस सेत होइ जाई रे।
काया भंग होय नहिं तिनकी ना झूला ना लूला रे।
ना उइ अंधरे ना उइ काने ना कोढ़ी ना रोगी रे।
ना तहँ संसै ना तहँ जूड़ी देहि तजत दुख ना होई रे।
हरि दरबारिन का यहै विचारा बिनु पहुँचे का नाहीं रे।
कहि मीता तिनका गज सिक्का साखी सब्द चलाये रे।
काटि कूटि जे सब्द बनावै ते नल नरक बसाई रे ।।

जोरा जोरु किया दुनिया में माया बड़ी सयानी रे।
मोहित कै नरकै लै जइहै हम येहि की गति जानी रे।
कुछु कुछु बातें हमहू कीन्ही राखा येहि का न्यारा रे।
संघु न सोये गरे ना बांधी भोगइ लातन मारा रे।
नागिन डसै ता मंत्र उतारै यहु डस उतरत नाहीं रे।
बड़े अभागी जहाँ हँसि बइठै भोंदुआ रहा लुभाई रे।
कहि मीता माया का कहरा हरि का सुमिरो प्राणी रे।
येहि मा फंसे बहुत दुख पइहो या है नरक निसानी रे ।।

मारु रे मारु जान नहिं पावै काम-क्रोध दूनौ दइया रे।
ई जमु माही जमु इन माहीं येइ बड़े दुख दइया रे।
येई हरि जी सो अन्तर डारै येई नरकु लै जइया रे।
माया मोह के ई दोउ भइया सबै बराबरि हइया रे।
सिउ ब्रह्मादिक इनही लूटे इनही विस्नु कन्हैया रे।
रामचन्द्र सुर नर मुनि लूटे संत बचे गुरु बहियाँ रे।
संतन की सरि कोऊ नाहीं राम दरस जिन पइया रे।
संतन सेइ पार भा मीता जमु की जालु छड़इया रे।।

एकु नउआ दुइ बरिया जगु मां आपु फँसे जगु फाँसा रे।
जमु की जालु परे सबु बंधुआ बाचे संत सुजाना रे।
पापु पुन्नि की खेती करते हानि नफा उपजाना रे।
कबहूँ का राजा होय कै बैठे कबहुँ होय खर स्वाना रे।
उपजत विनसति बहु दुख पावै बूझै न मूर्ख नदाना रे।
ना हरि भजै न संतन चीन्है माया मोह लपिट्याना रे।
को समुझावै बैरु करावै धरै न सांचा ज्ञाना रे।
कहि मीता जो अंस हमारा सोई सब्द पहिचाना रे।।

दोउ दल लीन्हे हरि का प्यारा जानैगा जाननहारा रे।
राम सनीपी गिरही भा रे जानै न भेदु गँवारा रे।
कहु को भेखु संत भा भौंदू मानौ बचन हमारा रे।
नहिं तौ नरक परे दुख पइहौ भेखु पूजि जग ख़्वारा रे।
संत संगति है मुक्ति दुआरा जो सेवै सो पारा रे।
छानु किया तब हमहू जाना जगु मां किया पुकारा रे।
सत्य सत्य है सब्द हमारा सुज्जन का निरुआरा रे।
कहि मीता पापी नल भूले जिन पर जमु रखवारा रे।।

घरहि मां हरि मिलै रे बौरे बन का जाय गँवारा रे।
संतन संघु प्रीति के कीन्हे तन मन धन जिन वारा रे।
संसो सोगु कबहुँ ना छूटै छूटै हरि दरबारा रे।
जहँ संसो तहँ मुक्ता नाहीं मुक्ता राम पियारा रे।
मूड़ मुड़ाय भेखु धरि बैठे ठगने का संसारा रे।
हरि के दासा ग्रह मां उपजे किरखी कै निस्तारा रे।
जाकी हरि जिउ करै सहाई दूनौ दल हुसियारा रे।
रामु सनीपी गिरही भीतर मीता किया विचारा रे।।

कपटु चालु हाथै ना आवै संतन की रजधानी रे।
कपटी च.लु नरक निजु होइहै तोंहि परै ना जानी रे।
कपरा ना रंगु किरखी कैले छलु बल कै ना आनौ रे।
खर महिखा होय लादे फिरिहौ किरखी केरे छाड़े रे।
जगु अन्धा छल बल का पूजै झूठ सांचु जमु चीन्है रे।
चोरै मारै साहु ना पूछै तुम्हरी बातें जानी रे।
गिरही मां कोई बिरला संता सो पाखंड न ठानी रे।
रामु का भक्त भीख ना मांगै बुड़िहै जो ना मानी रे।
गिरही सधन कबीरा नामा गिरही नरसीले बानी रे।
गिरही सेनि धना धरम बानी जिनकी भक्ति डिढ़ानी रे।
कहु को भेखु भया हरि दासा साकठु करौ बिनानी रे।
माया मूसै भक्ति न जानै करनी कथै बिरानी रे।
गुप्त बानी कहि गये कबीरा काहुइ परै न जानी रे।
भेखिन का पाखंड उघारा की गये धनी बताई रे।
कहि मीता हंसों की बानी हंस होइ सो पाई रे।
कागा कुटिल मरम ना जानै देई जगु भरमाई रे ॥

मंगल

गुरु मिले बेनीराम तो मंगल गावंउँ हो कबिरा नानिक कोटि तिन्हैं समुझावउँ हो।
खोटी काढ़ौं तौलि तौ राह बतावउँ हो उइ हैं ज्ञानी लोग जीति तिन्है आवउँ हो।
साकठ देखि डेराउँ तौ हा हा खांवउँ हो सुज्जन का गुरु होउँ तौ पार लगावउँ हो।
साहेब का सिर नाय गरभ ना आवउँ हो कहि मीता हरि दास तिन्है समुझावउँ हो ॥

सतगुर साहेब बिनती कौनि विधि करिये हो, सो विधि देउ बताय तो अरजी करिये हो।
खड़ी रह्यौ कर जोरि तौ माथु नवायेउ हो रह्यौ चरन चितु लाय तौ मनु ना डोलायो हो।
पूछे कहिये बात तौ नजरि बिचारेउ हो लखि लीन्ह्यो मतसार तहां चित लायेउ हो।
जिन मिले तपनि बुझाय सोइ गुरु पूरे हो रागु दोख जमु जालु कबहु ना व्यपै हो।
जाति-पांति सबु झूठ झूठ जगु मारगु हो रामु मिले जिन बांह तेई गुरु करिये हो।
कान सुनावैं मंत्र जीभ रटि लावैं हो ते भैसागर जीव बसैं जमु द्वारे हो।
ई गुरु जमु की फांसि नरक लै जावैं हो इनका ना पतिआयो ता जलमु बेगारै हो।
गुरु विवेकु यहु मंगल झूठा निन्दै हो सांचे लेई मानि मति सति भाखै हो ॥

ऐसी सुरति लगाऊँ टरै न टारे हो हरि सो जुरै सनेह पांच के मारे हो।
भला समौ भल दांउँ भली है बेरा हो उतरौ भै जल पार करो ना फेरा हो।
सतगुर बन्दी छोरि जीव मुक्तावै हो करै बरोबर आपु तौ रामु मिलावै हो।
जन मीता पदु पावा ता गाइ सुनावा हो जो रहनी धरि जाय होय मन भावा हो ॥

गुरु का सब्द मन धरिये तौ भै का तरिये हो, अहो सखी काम क्रोध का मारि तत्त मत करिये हो।
या जगु जमु ब्योहार यहाँ का करिबे हो यहां नहिं रहव हमार रहे दुख पइबे हो।
पांच तत्व गुन तीन फांसी जिउ आही हो, परा मोह की फांसी तौ कौन छड़ाई हो।
सतगुर का सिर नाय करबु मनु भाया हो अरध नामु लै मीत अमर पुर जाया हो ॥

सतगुर का सिरु नाया तौ मंगल गाइयां पाचों परपंच तौ बिखै बहाइयां।
मूल दुआरे पैठि चितै चित लाइयां सुक्रित सत्य विचारि सुमति लै लाइयां।
सरगुन केरि बहुरिया निरगुन मां लाइयां मन चंचल करु थीर बहुरि ना आइयां।
ले हमरा उपदेस तो सब्दु सुनाइयां मीता कही विचारि परम पदु पाइयां ॥

शिव अवराधि समाधि मूल गहि लाइयां अलख पुरुख का ध्यानु तौ मनै बसाइयां।
लागी सुख मुनि डोरि तो सुरति डिढ़ाइयां खुलि गई अगम के वारि तो पीतम पाइयां।
चढ़ि गई प्रेम खुमारि तो लाजु भगाइयां जियत मरै गुरु ग्यानु तो आवनु मिटाइयां।
चेतन हारे चेति मीत गोहिराइयां लीजे मंगल गाइ तो जलमु बनाइयां ॥

भई सगाई ब्याहु सखिन सिरु नाइयां बरु मिले दीन दयाल परम पदु पाइयां।
डह गई भै की भीति गुनन का छांड़िया बूसी कीन्ही दूरि तत्तु लौ लाइयां।
बाढ़ा प्रेम अखंड छके छबि छाइयां मनु चंचल किया थीर तो कहूँ ना डोलाइयां।
धनि सतगुर उपदेस कटा दुख दाइयां दासन का मीता दास तो बन्दी छोडाइयां ॥

सतगुर लगन धराई पांच उर आये हो, कंचन खम्भौ गाड़ि तौ माड़ो छाये हो।
मूल पटुलिया बैठि धरनी धर पायो हो हरदि प्रेम चित लाये दूबरि भई काया हो।
आवन लागि सन्देस मनै मन झुरवउ हो, कौन रूप पिया मोर नैन कब देखब हो।
नाद बिन्द गठु बन्धनु हमरा कीन्हो हो होन झकाझक लागि जिवर दोऊ बैठे हो।
सुरति निरति लौ लाय तो भांवरि परि गई हो बरखै मेघु अखंड तो अनहद बाजै हो।
लै चले डोलिया फंदाय सहजवै चढ़ि गयऊं हो कंकन गुन गे छूटि अवन ते रहि गयऊँ हो।
मिले पुरुख अभिनाशी काल गया नासी हो बिरल मिला कोइ जाय जहाँ मत सांची हो।
मीता मंगल गावा ता गाइ सुनावा हो जो गुरु सेवै जाय परमपदु पावै हो ॥

सतगुर सरनै जाय तौ मनु न डोलायो हो गुरु देवन के देउ भाग्य ते पावै हो।
तीन ताप गुरु नासैं भरम छड़ावै हो भैते लेइ उबारि तो रामु मिलावै हो।
पापु पुन्न के बीच दररि जगु मारा हो गहै न कीली नामु परा जमु द्वारे हो।
वज्र परै चतुराई हरी बिसारा हो बांधा मोह जंजीर सकल संसारा हो।
धन दारा सुत बन्धु नहीं कोइ अपना हो, एक राम है हितू तेहि न विसारउ हो।
कठिन हवै जमु धार करौ हुसियारी हो परै अचानक आय होय दुख भारी हो।
धरती रवि शशि पवन सिन्धु सवु खानी हो, बिनसै चौदा लोक देव मुनि प्राणी हो।
बिनसै बिस्नु महेश ब्रह्मा से ज्ञानी हो अटल हवै कोइ संत तो मीत बखानी हो ॥

सतगुर तिनका नाउँ जे हरी मिलावई जमु ते लेइ छँडाय तो जिव मुक्तावई।
तिनकी सरनै जाय तौ मनु न डिगावई जो जो आज्ञा करै सो हुकुम बजावई।
समुझि करेउ गुरु सौंदा ता चूकि न जावई जगु मां ठगिया बहुत जलमु ठगि जावई।
बांधों भइ ठगु खानि जगत भरमावई धजा नारियर पान ता लै बौरावई।
नारिन ब्यापै काम इन्है ढिगु आवई गाइ सब्द दुइ चार भोग छिपि जावई।
परे काम बसि सबै भक्ति गोहिरावई या चरित्र सो लखै रामु जो पावई।
जाति-पांति के गये भेख मां आवई, भोगवैं नारि पराई पराया धन खावई।
चीन्हौ ठगु औ साहु मीत गोहिरावई, कासों कहौं संदेस बूड़ि सबु जावई॥

पइयां लागौं गुरु की हो मैं बारमबार जिन जगु जरति उबारा हो भारी भै आंचु।
झूठ नात-सुत-बनिता हो कोऊ अन्त न साथु, जो साथी वेहि वेरिया हो सोई पिये साथु।
दे उपदेस उधारा हो कै पैलै पार, भूला ता जग मइहरा तब हुता अनाथु।
गगन मंदिल ते आये हो उइ दीना नाथु, बाह पकरि कै ले चले पूजी सबु आस।
सुनौ सखी सहेलरिऊ हो तहां करब बिलास जहां न रवि शशि पवन रे तहँ बिरला जात।
मन माने फलु पाये हो तब छूटी लाज अमी पिया बिखु त्यागा हो छाकी दिनु राति।
कलह कलपना ना रही रे मानौ अतिवार भे निरमल जगु भूला रे लागै नहि दागु।
जो या मंगलु गावै हो, फिर खोजै आप सोउ परमपदु पावै हो कहै मीता दास॥

गुरु दीन्हा सति नामु सीस गहि लीन्हा हो, उतरेउँ भै जल पार निरखि मन चीन्हा हो।
खोजों घर के मारग द्वारे ठाढ़ी हो उठै करेजवै पीर बिरह दुख भारी हो।
कै जोगिन का भेदु तो मारगु लागेउ हो, सुख मुनि लागी डोरि महल भयेउ दाखिल हो।
महल बने दस द्वार तो मोतियन झालरि हो, आनन्द उठै तरंग तो बहुत सुहावन हो।
पिया पिया रटि लागि आनि न भावै हो, नींदो गई उड़ाय पलक ना लागै हो।
ज़रद बरन भै देहियां तो दूबरि टाटरि हो, बरखै नैन अपार भीजै मोरी सारी हो।
कटवन का बनु जारि तो अवुंआ सेये हो, दखवन भरा भंडार तो पियै जगायेउ हो।
जहँ बसै नाह हमार अगम पुर जइया हो पदम पत्र के बीच मिले पिउ तहियां हो।
जीवन जलम सुफल भया हियरा जुड़ाना हो, मिलिन सखिन मां जाय परिन सुख सागर हो।
कि कबहुँ न जाउँ ससुरवै वासबु हो सेजरी मां करब विलास पुरुख के साथै हो।
हु मंगल परमारथु स्वारथु नाहीं हो भोगवै सखी सुजान सील की आगरि हो।
तगुर के परताप तो मीत सुहागिल हो, अजर अमर बर पाये मिले अभिनासी हो॥

गु लागा भरम भागा सुहेलरा बाजा हो आहो अनन्द उर ना समाय सुफल भये काजा हो।
मति गई बड़ी बैरिन सुमिता आई हो आहो गावैं मंगलचार सखी जुरि आईं हो।
छै बिरछ का बिरवा तौ अगनई लावा हो अहो परमल बास गम्हीर दहौ दिसि आवै हो।
हि तरे खेलै होरिलवा तो बरखै मोती हो आहो सो लखि भा मनु थीर परम वा जोती हो।
न नेम ब्रत संजम तीरथु कीन्हेउ हो अहो कहो सखि समुझाय तो ई फल पायो हो।
हँ तीरथ कुछु बरत किया नहि संजम हो अहो सेये गुरु जन लोग सत्ति जे छाये हो।
रा भली बड़ेन की सुनौ नर नारी हो अहो मित्था कबहुँ न होय तो समुझि बिचारेउ हो।
ता मंगल गावैं तौ गाइ सुनावै हो या निरगुन का भेदु विरल कोई पावै हो॥

जोरे मंगल मैं पऊतेऊँ ताँ मंगल गवंतिउं हो मंगल रूप अनूप सुने चित लवतिउँ हो।
गोदि लेइ ते धन्नि सुरति सुखु देखतिउँ हो कहु सखि कारन सोय विनती मैं करतिउँ हो।
अरि अरि बहू विजेखनि बहुत सुलच्छनि हो अहो सुनिले मता हमार बड़ेन सिर नवतिउँ हो।
चेरी होउँ तुम्हार चरन चितु लावउँ हो करौ मनोरथ पूर तौ नैन सिरवतिउँ हो।
पाँच सखिन के हाथु तो सरबसु दीजे हो, गौरी गनेस मनाय मनोरथु पूजे हो।
रामु दया मति उपजै कुमति सबु नासै हो अहो सांचु बरत धरि जाय सोई सुखु पावै हो।
चली नारि सिर नाय दोऊ कुल तारिनि हो अहो कोटि भानु छवि देखी मन बौराना हो।
पूरन तपु बड़ी भाग्य तो गुपित जनावा हो अहो सखियन केरि विलास तो मीता गावा हो॥

लहरि उठै मोरे अंगना सुमन बन फूला हो बिच बहै नदिया अनूप रतन जहाँ हीरा हो।
पिया मोरे बसै अगमपुर हम परदेसिनि हो बहनी संघु दिन चारि तौ आखिर छूटै हो।
आये चालनहार ससुरवै जइबे हो मां मरिहै मेरी रोय बहुरि ना अइबे हो।
होतिउ न मां मोरि बांझ ता काहेक झुरतिउ हो सोग साल हमें दीन्ह ता तुम दुख भोगवउँ हो।
राज्य करौ मोरी धेरिये ता सदा अहौती हो अभिनासी बरु पायो भागि की सांची हो।
सास ननद के बोलवन जनि अकुलायेउ हो दूनोउ कुल तारन सोय ता कलहु बचायेउ हो।
आउ बैठ पिउ पानी सील जनि छाडेउ हो हंस कुलन की रीति ता सदा विचारेउ हो।
कहि मीता या मंगल कोई सखि जानी हो परमारथु की राह तो स्वारथु नाहीं हो॥

सांचु न जाय विचारि कालु कैसे छाड़ै हो झूठा झूठै मनु लाय परे दुख पावै हो।
नल तन बीता जाय होति है हानी हो जैसे बार बिलाय ता कोउ न बिचारै हो।
सिरजन हारि बिसारि तो पाहन पूजैं हो राम विमुख तेइ लोगु जे पूजैं दूजा हो।
करै सुई का दानु निहाई मूसै हो खोजु करै बैकुंठ तहाँ जमु लूटै हो।
जमु ताके है घातु अचानक मारै हो जीव नरकु मां जाय बड़ाई जारै हो।
अबहू चेतु अचेत खोलु हिय नैना हों रामु निकट नहिं दूरि देखि ज्यों अैना हो।
संत संगति है पारसु जो मन लावउ हो मूल डोरि गहि जाय मिलै करतारा हो।
पहरू का काहे न देखु चोर हो मारै हो संत पखंडै बैरु तो मीत विचारै हो॥

माया विखम बयार तौ मनै डोलावइ हो कैसे करों हरि ध्यान ठहरन नहिं पावै हो।
सतगुर करै सहाय तो व्याधि छड़ावै हो कठिन ह्वै जमु मारू तो बेगि निवारै हो।
जस तुम्हरा सुनि आयल परा दुआरे हो ह्वै तुम्हारी आस दूजा नहिं जानौं हो।
कै ले मूल बिचारु धरनि धर वाँधौ हो मनु चंचलु करु थीर तौ अगम विचारौ हो।
खौलि ले कुंजी तार मकर चढ़ि जैसे हो होउ मवासी लोग अगम घर पैठउ हो।
तीन लोक जमु राज तो फिर फिर लूटै हो चौथे पूछै ना कोय परम सुख विलसै हो।
जो कुछु आज्ञा होइ सोइ सोइ करिये हो मन बाढ़ा विश्वास काजु सब सीझे हो।
सिख्य गुरू का भेदु बिरल कोइ बूझै हो मीत परम पदु होय सीस जो दीजे हो॥

देई देउ मनाये बहु तपु कीन्हे हो, नित उठि गंग अन्हाई आस ना पूजी हो।
अरी अरि सखी सुलच्छनि सोइ बतावउ हो होय मनोरथ पूर तो जलम बनावउ हो।
अरी अरी नारि विवेखिन दरद सुनावउ हो अहो देहौं सरबस तोहि तो मन न डोलावउ हो।
लोकु की लाजु निवारेउ जो गुरु पायउ हो अहो सखियन रह्यो अधीन तौ सबु बनि आवै हो।
तिन संघु सब सुख होय सकल दुख नासैं हो यहै चालु चलि जाय भागि जो जागैं हो।
पाँय परौं सिर नाय तो मनै डिढ़ायो हो मोरे जिये परमविरोग तो पुरुख मिलावउ हो।
मूल दुआरे पैठि केवारी खोल्यो हो आहो गठि बंधन कै नैन पिया हंसि बोल्यो हो।
यहै मिलन कै राह तौ मीता गावै हो आहो सोई कहिये तप जोगु परम पदु पावै हो॥

भौजल अगम अगाधि पार कैसे पावै हो नहि केवट नहि नाउ तौ कौन उबारै हो।
सतगुर केवट सेउ नामु करु नौका हो करु पाँचों का डांड़ पचीसों खेवा हो।
उतरि जाय भौपार सुरति गुन लावो हो यहँ नहि ह्वै उबार करम गुन त्यागौ हो।
चौदा पुर जमु बारि टोरै औ लावै हो उपजि बिनसि दुख होय ता कौन बचावै हो।
टूरे बिस्नु महेश ब्रह्मा से केत्ते हो सुर मुनि कूड़ी डारि भाँग ज्यों घोटै हो।
का करी हाथी फौज छिपी छिप लूटै हो एकु मरे एकु देखै तऊ ना सूझै हो।
जहँ संतन का बास तहाँ जमु नाहीं हो संत मवासी लोगु भागि ते पावै हो।
राम दया यहु मंगल मीता गावैं हो हमें मिलै जो कोय परमपद पावै हो॥

त्यागौ गरभु गुमान तजौ चतुराई हो छाड़ो मलिन बिकार मिलै रघुराई हो।
पाँच सखिन के बीचु तौ दलमसि जैहौ हो होइ न ठौर ठिकान भरमु बहु मरिहौ हो।
या माया बिखु वारि सपन सुखु जैसा हो दिना चारि का सुख अन्त दुख देखा हो।
या माया परपञ्चनी बहुत डोलावैं हो इन्है चीन्ह जो जाय ता मंगल गावै हो।
कहौ काह तोरा नात कहाँ तोरा बासा हो सुरति भई निगमान किये एक साथा हो।
लोभु लहरि की नदिया नींद कैसे आवै हो जारो नींद तुम्हारी कबहुँ न जागौ हो।
बार बार जमु मारा तो चेति गंवारा हो लाज गई घर घालि ता जलमु विगारा हो।
अरे अरे बाट बटोहिया समुझि विचारउ हो जाना है वड़ि दूरि ता पंथु संभारौ हो।
हम निरगुन कै गाहक गुन ना चाहत हो बिखु का छुअन न हाथु अमीरसु चाखन हो।
जिन निरगुन का गारा तिन गुन त्यागा हो उन रस लीन्हा गारि छोइ संसारा हो।
साँचे हरि जन लोग झूठ संसारा हो चीन्हे ना हरि के लोग परा जमु द्वारा हो।
जन मीता या गावै तत्तु बिचारा हो सतगुर के परताप भये भै पारा हो॥

रामुधनी धनी सोई आनन्द होई हो परलै परई कोटि न विनसै सोई हो।
दामु कामु दिन चारि अन्त दुख होई हो हरि धन धरौ संभारि दुःख ना होई हो।
मात पिता सुत नारि कुटुम का करिहै हो, जमु धारा जमु लै जाइ भरम बहु परिहौ हो।
माया का परपंच तौ जगतु नचायो हो सुज्जन रह्यो बचाय ता तुम न फँसायो हो।
करु संतन का संघु ता बिखै छड़ायो हो नलतन बार ना बार नामु चितु लायो हो।
आवागवन निवारेयो जो गुरु पायौ हो सतगुर सुखु की खानि तो दोउ बनावउ हो।
धोखे यहु जगु मरा सांचु ना भावै हो करै डारु की आस मूल विसरावै हो।
मीता दासन दास ता मंगल गावै हो रहा रामु लौ लाइ तौ मनु न डोलावैं हो॥

कस सखि अनमन धनमन सबै सुखु तू भरी कौन सूल तोहि ह्वै दुआरे तू खड़ी।
सौत सूल मोहि व्यापै ननद बहु दारुनि हो, कलह करै दिनु राति यहै दुख भारी हो।
छिनु एकु जाउँ सेजरिये तौ सासु बुलावै हो दरद ना जानै मोरि बिरह तन जारै हो।
सइयां मोरे ह्वै सुजनवा ता संघु विकारा हो सबै सुखु एकु दुखु रहौं मन मारे हो।
तजु डारों दुख संघ रहौंगी न्यारा हो पिउ राखों उर लाय कांह संसारा हो।
करिहों बहुत उपाय पिया के काजे हो जलमु अकारथु जाय जुआरी जानो हो।
धिग तिनके सुख नारि पिया जिन ढिगु नहीं ओसन प्यास ना जाय अनारी तू भई।
या मंगल परमारथु स्वारथु या नहीं कह मीता कोई संत विवेकी लखि लई॥

अरे अरे बीर बहेलिया मिरगु एकु मारेउ हो मोहि रे मांस की क्षुधा ता जिउ जनि मारेउ हो।
वाके रकत न माँसु नहीं खुर दंता हो नहीं कान नहिं सींग नाक नहिं मंथा हो।
अथी ह्वै मोरी कोखिया ननद दुख भारी हो सासु ह्वै दुख खानि तो को निरुआरै हो।
एक जरी मोहि लाउ मरब की जीउबु हो अहौ छिनु छिनु उठै क्षुधा तो क्षुधा बुझावउ हो।
ह्वै बहुत दुख भारी दूबरि मोरि देहियां हो अहो और न दूसरि आस राम रखवारे हो।
यहु संसै मोहि व्यापै सपन एकु देखा हो अहो यह तो कहा न जाय सखी तुम परखौ हो।
बालक एक सपन दिया तुम गृह अइहों हो टूटि जाइ जमु फाँसी परम सुखु पइहौ हो।
जब धरती मां पगु धरों तबै सचु पइहौ हो अहो बड़े बड़े कौतुक होय तो कुटुमु बुलइहौ हो।
पूरे दिनन बालक भये नैनन देखा हो अहो कौन पुन्नि इन कीनु जो ई फल पायेन हो।
ऐसी सुरति का डिठवा मूरति किन देखी हो छवि की उठै तरंग तो परम विवेखी हो।
कोटि सूर ससि वारों प्रानों वारों हो आहो बारे देखिय जाय तो सबहु पियारे हो।
कह मीता यहु गौपिता विरल विचारै हो या निरगुन की खानि तौ कौन उबारै हो॥

मंगल

अरि अरि सीता सुलक्षणी मैं तोंहि पूछौं हो केहि बिधि मिले वर राम कौन तपु कीन्हा हो।
धरनि हमारी मायल मन की सुक्रित हो राजा जनक घर बास तो विधि मोहि दीन्हा हो।
जनक धरा ब्रत पूर ता धनुष डिढ़ायो हो जो यहु तोरन जोग सो सीता व्याहै हो।
आये बड़े बड़े राव तौ हुमकि उठाई हो उठै न धनु की कोर मनै पछितावै हो।
आये जनक दुआर राम बड़े देवा हो धरि धनु लीन्ह उठाय तूरि मुस्काने हो।
आये राजा दसरथ साजि बरातै हो सुख लूटा मिथिलेस अंक भरि लाये हो।
कंचन खंभौ गाड़ि तो दीपक बारै हो पाँचन माड़ौ छाय तो मंदिल राचै हो।
जोड़ी जुगुल बिराजै सखी सुख गावैं हो नैनन पल न पराइ निरखि भई बावरि हो।
सब्द पढ़ै मन पूर तौ भांवरि परि गई हो बाढ़ा रूप अगम तो केहि सन भाखौं हो।
आये दसरथु व्याह बधू घर लाये हो सीता राम की जोड़ी निरखि सुख पावै हो।
करि कौसल्या आरती मोती लुटावै हों जो जन जैसा होय तो तैसा पावै हो।
जिन जिन देखे राम तेई जन जानै हो या नहि कहिवे जोगु कूर नहिं मानै हो।
नगर वजइया बजै परम सुख विलसै हो मंगन भे भरि पूर तौ फिर नहिं जांचै हो।
परजा दुखी न होय राउ सुख बिलसै हो रागु द्वेष जमु जाल कबहु ना व्यापै हो।
देवन घर आनन्द असुर घर संसै हो अपना अपना स्वारथु सबु कोई चाहै हो।
गुर गरुअे परताप ता मीता गावै हो घर मा मंगल होय जो मारगु पावै हो॥

गारी

प्रभूजी तुम्हरे भरोसे रहैं जन माते फिकिर कुछौना राखैं जी ।
प्रभूजी तुमही तारो तुमही पालो तुमही करो रखिवारी जी ।
प्रभूजी गोरख भरथरी गोपी चन्दा सुल्तानी बलख बुखारी जी ।
प्रभू जी पीपा औ रैदास कबीरा नामा, सधन, सुझारी जी ।
प्रभूजी जन कमाल औ नानक दासा, धरम दास हितकारी जी ।
प्रभू जी केवल कूवा मीरा दादू पोजा दास मुरारी जी ।
प्रभूजी हरीदास औ दास मलूका दरगा गनिका तारी जी ।
प्रभू जी जन बजीत औ अहमद चौधी महिमी भई तुम्हारी जी ।
प्रभू जी दास मनोहर बम्हन यारा सम्मन प्रागिन प्यारी जी ।
प्रभू जी सैनि धना भागीरथ ब्राह्मण कीन्ही भक्ति तुम्हारी जी ।
प्रभू जी कलयुग संत भये ते सांचे तीनि जुगन मति काची जी ।
प्रभू जी पार ब्रह्म अभिनाषी तुम हो तुम्हरी जगु है बारी जी ।
प्रभू जी तीन लोक तुम रचना कीन्ही, लछमी अरधंगि तुम्हारी जी ।
प्रभू जी तुम्हे मिले ते कालु न पूँछै, आवा गवन निवारी जी ।
प्रभू जी शिव ब्रह्मादिक सुरमुनि देवा येऊ सिस्टि तुम्हारी जी ।
प्रभू जी रामचन्द औ नन्द कन्हैया येऊ सिस्टि तुम्हारी जी ।
प्रभू जी नलतन प्राणी बहुजगु मांही येऊ सिस्टि तुम्हारी जी ।
प्रभू जी सन्तन का सब ते बड़ा कीन्हा धनि धनि रीझ तुम्हारी जी ।
प्रभू जी बड़ी बड़ाई सब जगु मारा खोजी ना सरन तुम्हारी जी ।
प्रभू जी या सुनि सरन तुम्हारी आये मीतै लेउ उवारी जी ।।

सुनु मिलन चली पिया प्यारी, तब कुल की कानि निवारी री ।
जब सखियन भेदु बताये, तब नैन सो नैन लगाये री ।
जबु जोबन रूप संभारा, तब बिखै बिकार बिसारी री ।
जब हरि हिरदै की जानी नब अकटक अखियां तानी री ।
गलियन भीर भई भारी कैसे होउँ श्याम हितकारी री ।
कैसे लाज सरम का खोऊँ कैसे कै हरि मुख जोहूँ री ।
जगु हंसी करै अब कोई मैं हरि हित लज्जा खोई री ।
जब प्रीति दुहू दिस लागी तब भूले बहुत अभागी री !
जब होइगै मनकी भाई, तब कैसे कै दुरै दुराई री ।
जब सेजरी सोइ पियारी, तब सखियन बात बिचारी री ।
भूले हैं जगु के लोई, वातो मरमु ना पावै कोई री ।
जन मीता गारी गाई जाकी अमर लोक ठकुराई री ।।

जासो प्रेम प्रीति हित कीजे, ताको गारी काहू कै दीजे हो ।
एकु बम्हन सनेहिया आये, तिन घर के भेदु बताये हो ।
सुनु समधिन देवरै यारी वातौ नौआ बात बिगारी हो ।
वातो सेजरी सोवइ पियारी, छैला गरे बाहीं डारी हो ।
तुम देखौ ला मुख जाई, तोरी माही कौनु रंग लाई हो ।
उइ तो भले बरतिया आये, कोउ समधिन के मन भाये हो ।
देउँ मनी दस भगनि तुम्हारी, वातो लेति वाटै हमारी हो ।
जन मीता गारी जाई जिन जोति मा जोति मिलाई हो ।।

मेरी समधिन परम पियारी री काहे लागी नैनु खुम्हारी री ।
किन रसिया तोहि जगाई जाते पलकौ नहीं लगाई री ।
कहाँ दंत कपोल लगाये, काहे नैनन काजल ढुराये री ।
तेरी चालु जगत ते न्यारी कै भुगई तुम सी नारी री ।
एक वाम्हन आवै जाई, चितु लै गै, आये, प्रीति लगाई री ।
मेरी अंगिया के बंदु छोरे तेहि जाय दोऊ कर जोरे री ।
उन छतिया तपति बुझाई रीझै सुख सुमिता पाई री ।
जो गारी का भेदु बताई सोई गोरख मीत कहाई री ।।

जैसे व्यंजन लगै अलोने, अैसे तन बिनु रामु दुहेला री ।
दीपक बिनु घर अंधियारा अैसे तनु बिनु रामु पियारा री ।
जैसे बिनु पानी का मोती, अैसे तनु लागै बिनु जोती री ।
जैसे बास बिना का फूला, अैसे भक्ति बिना तन सूना री ।
जैसे जलु बिनु ताल बिहूना, अैसे राम बिना तन सूना री ।
धनि सोइ रामै ध्यावै सोई मीता भाग्य कहावा री ।।

घर हरिजन हितुआ आये, तब भये सकल मन भाये री ।
शुभ घरी की लगन धराई भइ पूरी प्रेम सगाई री ।
धरती धरि खंभ गड़ाये तब जोतिन तेलु चढ़ाये री ।
हरदी हाथु जब लाये, तब मूलै मड़वा छाये री ।
जब सुरति निरति लै लाई, तब भांवरि सात फिराई री ।
दुलहिन का मन भया हीरा दांतन रचि रहा बीरा री ।
पहिरे सोरहो सिंगारा तब मिला पुरुख करतारा री ।
जो अैसी तरा मन लाई सो मीत परम पदु पाई री ।।

धनि धनि गुरु माधौ जी के चरणा सकल व्याधि दुख हरना ।
या माया दिन दुइ कै पाहुनि सदा नहीं थिर घरमा ।
भै ते तारै जीव उबारै अजर अमर जन करना ।
सहजे देति बारि ना लावै अमर लोक सुख सरना ।
जहँ जहँ प्रेम तहाँ तहँ ठाड़े कर सायक ते करना ।
सोइ सुभागी तुमका ध्यावै छाड़ि विषै धरि परना ।
संत समाधि कै गाइ सुनाऊँ जिनकी तुम्हरे गरना ।
तुम ना चाहौ तेहि नहिं चाहों तिन्है काह लै करना ।
गोरख भरथरी गोपी चन्दा सुल्तानी धरि परना ।
सैनि कबीर धना रैदासा धरम दास गहि सरना ।
नामा पीपा सधन कसाई जन कमाल धर परना ।
बाल गोबिन्द गुरु कबीर के मीरा रानो सरना ।
जगदेऊ दादू नानक पोजा धरा चतुरभुज परना ।
अहमद चौधी धरम मुराऊ जन वाजिद भये सरना ।
दासु सुझारी बेनी प्रागिनि महिमी धरिया परना ।
किशोर खत्री द्वारिका हरिया जन भागीरथ सरना ।
जन अधार औ दास मलूका कान्हा धरिया परिया ।
दरगा लाल दास औ धरनी भागू नाऊ सरना ।
इन पर किरपा भई तुम्हारी कलियुग संत सुजाना ।
और बहुत हम गाये नाहीं कहं लगि करौं बखाना ।
इनकी सरिवर काहू नहिं कीन्ही भगतन का बड़ा ठाना ।
सुर मुनि नाहक फिरै गरभाना भूले तुम्है न जाना ।
सतिजुग सत्य बोलि तन बीता त्रेता तपु मनु माना ।
द्वापर पूजा कै बौराना जग्गि दानु किया ठाना ।
दीन दयाल गरीबन ते हित महाराज हम जाना ।
ताते देउ गरीबी हमका दूरि करौ अभिमाना ।
हरना कुश रावण गरभाना छिन मां जाति न जाना ।
जैसे वोर पानी का घुरिगा दिन दस नहीं खटाना ।
अभिमानी तुमका नहिं पावै कै सो होय सयाना ।
जेहि चाहो तेहि देउ गरीबी संतन कीन्ह बखाना ।
तुम हो सतगुर तुम अभिनासी तुमही आनन्द करना ।
औगुन मीता के न विचारो भया तुम्हारी सरना ॥

जोरा जोरु जनाये या माया परपञ्चिनियां, दुई रूप बनाये एकु कंचन एकु कामिनियाँ।
एकु जावै खावै, एकु संसै दै मारनिया कोउ बचन न पावै घर बन माया लागनियां।
ताको कैसी करिये सुज्जन कहो बिचारनिया, चलु सतगुर सरना करिये जाइ पुकारनियां।
समरथ सुनि आये तुम दाता हम मांगनियां हमें माया फांसे जुगन जुगन जमु डांडनिया।
हम बहु दुख पाये तुम दुख द्वन्द निवारनियां संतन जसु गाये सतगुर बंदी छोरनियां।
एकु मत सुनि लीजे कै देऊ दूनौ चेरनियां, देऊ अस्त्र बधाई काम क्रोध दल मारनियां।
कालौ सिर नाई जिन लूटे त्रिदेवनियां, पदु देऊ मवासी जुगन जुगन निस्तारनिया।
मीता मति पाई सतगुर ऊपर वारनियां, मिले रामु सहाई छूटि गई जगु धारनियां।।

फगुन

या रूप सलौनी मुखहू न बोलै।
काहे बेसील भये तेरे नैना घुंघुट काहे न खोलै।
मंद हँसनि बेंदी अति राजै काजर अधिक सुहाई।
ढारै चम्पकली तिलरी मुखचन्द की जोति छपाई।
सबै सिंगार भले तेरे सुन्दरि कँह लौं करों बड़ाई।
सारी सरस कसब का लहंगा मोतियन की झरि लाई।
भली ह्वै तेरी मीत मितइया भाग्य बड़े बनि आई।
चितै चितै घायल कै डारा सेवा काजे आई।।

अलबेली नागर कहंवा ते आई।
जागी रैनि उनीदे नैना प्रीति न दुरति दुराई।
तिरछी चितवनि पलक न लागै अंसुअन की झरि लाई।
पीतम सों मुख ही नहिं बोलै सेज चलो मन भाई।
लेति उसास घरी घर यारी या गति कौन बताई।
लागि गई सोई पै जानै कौन कहै समुझाई।।

खेलै एक सुन्दर नागरि सुखु रासी है धौं कहाँ की बासी।
नैन अमीर भये मानौं वाके जोबन जोरु जनासी।
सील भरी नैना मतवारे बोलति आवै हाँसी।
चन्द की जोति छपै मुख ऊपर और लगै जस दासी।
कबहुँ निकट बोलावै सुन्दरि भाग्य सुफल हो जासी।
जो कबहूँ हँसि कै मुख बोले लूटि लेउँ सुख रासी।
करिये मीत मितइया ऐसी तजि गँवारि पसु भैंसी।।

तेरी चालु अनोखी सुन्दरि को जानै चितै चितै पीतम बसि कीन्हा गावति नीकी तानै।
पाउँ परै प्यारे के प्यारी नेहु छिनों छिन मानै लागि गई तब लाजु कहाँ है बिनु लागे को जानै।
बिरहिनि बिरहु सुजन कोइ जानै और मनै नहिं आनै सेज परी अंगिया बंदु टूटे काहू की ना मानै।
जुरि गई मीत मितइया जासो यहै भाग्यसो ठानै नारि गँवारि नहीं हितु जानै तासो काह बखानै॥

जागे नैना प्यारी छपते न छपाये कज्जल नैन रहै मुख लाली रूप अनूप चढ़ाये।
पीतम रंग विरोग बावरी छिनुछिनु अंसुआ आये, नैनसो नैन लगे जब नागर आँचल देति चलाये।
पलक न लागै एक टक लागी सेज पिया जब आये हँसि मुस्काये नैन भरि तानै कौनी भेदु बताये।
मीत मितइया भली सखी री हियरा आइ जुड़ाये ननद निगोड़ी ठाढ़े रोवै सेवा कै पिउ पाये॥

प्यारी पीतम के संघु खेलो फगुआ और सबै सुख फीके लागै हाथु दुये दतिया।
नैनु सो नैन मिले सुखु उपजै जब जागी रतियां जैसे गूँगा के गुर खाये कौन कहै बतियां।
रंग भरी सखिया सचु पाये जिन भोगे रसिया काहे का जोबन जाति गँवाया आवो सेज पिया।
समै गये पाछे पछितइहो सुज्जन भेदु दिया मीत मितइया कैले बावरि छूटि जाय कुच्छा॥

मानिन छाड़ु मान का, पलंगा पर आव जोबन गये बहुरि पछितइहौ लावो प्रीति पिया।
सेज भली प्यारे पीतम की हियरा आनि जुड़ावै ऐसा समौ बहुरि ना पइहौ सीतल होय हिया।
रजनी जाति छिनों छिन प्यारी आनो बात जिया लोक लाजु तजि कूदि परेला मैं तोहि भेदु दिया।
खेलो फागु जिये या जोरी प्रेम का बीज बोया मीत मितइया तासो कीजै जो लै कै निबहावा॥

सुज्जन नारि चालु मतवाली केसर रंग किया घूमि घूमि पिचकाभरि तानै देखौ आन हिया।
संघ सखी गांठी ना फूटै पीतम संघु लिया खेलति फागु देखि गति न्यारी बसि भया मोर जिया।
लोक लाजु तजु खेलु बनाया बहुत उपाय किया जोबन जरा सबै बनि आई हाहा हाहा भया।
भली मिताई भागिवान सो जिन भोगे रसिया अब के खेलि बहुरि नहिं खेलैं ऐसा खेलु भया॥

हँसि नागरि गगरी कुंअना भरी चालु चलै अंचरा न संभारै जोबन गरभ भरी।
नोखे नैन अनोखी चितवन धनि धनि आजु घरी लोकु लाज का कौन संभारै लागी प्रेम झरी।
ससि ना जुरै ऐसी रूप आगरी देखे जानि परी मूरख के मन ही नहिं आवै भेदी भेदु धरी।
गौने ते मौनी हो आई कौने रंग भरी मीत मितइया कुंआरिन छाड़ी कौने खेलु परी॥

तेरे नैना प्यारी काहे रतनारे का है बात विचारे जागे सेज छपै न छपाये सब नारी ते न्यारे।
मुख लाली छिनु पलक न लागै खेलै फागु पियारी मानौ मत्त चलै जस हाथी जोति जगी मुख नारी।
भागि सुभाग जहाँ अस नारी दीजै कौनि बिधि गारी लागी प्रीति दुरै न दुराई देखी कामकी बारी।
मीत मितइया छुटै न कैसेउ भूली हवै गँवारी अपन खेलु सो खेलि री बौरी चाहै सो दे गारी॥

रसमाती नागरि गौने होय आई नैन अमर भये मानो वाके जोबन जोर जनाई।
पलक ना लागै हँसि हँसि बोलै दंत बतीसी भाई अंगिया के बंद टूटि गये जब पीतम छाती लाई।
सखी सहेली बिन गौने की दुख सुख पूछन आई कौन कहै सेजरी की बातें बौरी सी बौराई।
देखि अचम्भौ सब मिल चितवैं या कैसा रंगलाई मीतमितइया क्वारिन छाड़ी हाथु मींज पछिताई ।।

बिरहनी दुख भारी खबरि न पाई फागुन के दिन आवन लागे खेलब के संघु जाई।
गलिन गलिन झांकै तन सुखवै बौरी सी बौराई कामु दहै मुखहू न बोलै छूटी लोक बड़ाई।
छबि तरंग जाकी बरनि न जाई चन्दकी जोति छपाई इन्द्रकी नारि लगै बाँदीसी या गति औरे लाई।
आये पीतम मति भई भारी मीत मितइया लाई भाग्यमान तेही का जानौ जो या फागु बुझाई ।।

सखी मानु निहोर पीतम मिलु आई, ऐसी सुरति पाय ना खोवै जलमु सुफल करु आई।
छाड़ो मानु पुरुष सुखदाई भली घरी या आई, छाती खोलि मिलौ तुम प्यारी होइहै बड़ी बड़ाई।
गरभु गुमान गवांरि करति हैं सुज्जन तोहि बनाई, चितै चितै तेरे मुख ऊपर प्यारी बलि बलि जाई।
मीत मितइया ऐसी कीजे जो पारै लै जाई, करो दुताई बहुत हिताई लाजु ह्वै दुखुदाई ।।

सुनि लेउ सखी री नैना मतवारे, पीतम संघु रैनि के जागे येही ते रतनारे।
परी ठगौरी तेरे ऊपर पलक परै नहिं प्यारे, मानौ आय कनक की पुतरी चरचन हार बिचारे।
लाजु छाड़ि खेली सखियन मां भेंटे परम पियारे, भाग्य आपना पूरा कीन्हा खेली आइ सबेरे।
मीत मितइया कैसे छूटै जिनके मत है भारे, सुज्जन खेलि चले नगरी मां मूरुख पचि पचि हारे ।।

प्यारी प्यारे नैना तेरे मोहि लागै, बारे भानु करौं छबि ऊपर ज्योती जगु मगु जागै।
मदन दहै पलक न लागै सोइ बिरहिनी जो जागै, मन भावन के पाँव पै लोटूं अउर मनै नहिं लागै।
रसमाती नागरि गौने की रैनि दिना या जागै, मानौ मोहनी डारि चली है नैन बानु उर लागै।
मींत मितइया कै न सकै कोइ, देखि अचम्भौ लागै, भाग्य बड़े जाके घर आई धन्नि धन्नि जो पागै ।।

या नोखी नागरि कैसा रंग लाई।
नैन लखे रतनारे जाके मानौ चन्द छपाई।
चालु चलै जैसे मतवाली कौन अमल पी आई।
भाग्य बड़े जासों हँसि हेरै तेरे रूप दुहाई।
चितै चितै मन बसि कै लीन्हा, घरु अंगना न सुहाई।
छाती सो छाती लगाय चली जब प्रेम की आगि लगाई।
प्रीति की रीति मीत कोइ जानै, जिन या लगन लगाई।
तापु बुझाय गई हियरा की, का करै लोक बड़ाई ।।

मदन की जरी देखी एक नारी, चितवति जोति समंकै वाकी, चालु चलै मतवारी।
मानौ सुभट खेत ते उठि चला, लीन्हा घाऊ संभारी, छिन्न भई तबु जोरन छूटा पहरे रेसम सारी।
नयी अनोखी या हम देखी जाकी गति है न्यारी, खेलि फागु पीतम संघु आई सखियन मांझ पियारी।
सुज्जन नारि मुखौ ना बोलै, पूछति फिरै गंवारी जासो लागी मीत मितइया ताही का हितकारी ॥

बिनती सुनि लीजे प्यारी चितु लाई।
देउ दिखाई नैनु जुड़ाई होइ मेरे मन भाई।
पहिरि सिंगार चली सनमुख होय, तन की तपनि बुझाई।
प्रेम छकी तब काह करै जगु दीन्हा लाजु बहाई।
घरी भली सुघरी अब आई रासि सुखन की पाई।
आठौं सिद्धि नवों निधि वारौं इन्द्र की नारि लजाई।
सुफल भई अब मीत मितइया सोग गये बहुताई।
गूंगा का गुर कौन बखानै गूंगा सैनि बताई ॥

धमारि बसन्त

आये बसन्त घर आये नाह, सुखु उमड़ा सो कहि ना जाय।
पाँच सखी धरि लेइ जाय, तिनसो हा हा कराय।
जिन नचाये तीनिउ देऊ सुर मुनि जाकी करते सेऊ।
संत संगति सरि कोई नाहें, जीते हरिजन सहज सुभाय।
घर अंगना तब कुछ न सुहाय, जो बसन्त अस खेलै जाय।
सिरजान हारा संघु रहाय बैकुंठ निछावरि तिनकी आय।
संत संगति के ये फलु आय, पसुआ भूले भेखु बनाय।
भाग्यवान सोइ मीता आय मनु छाना तेही रहि आय ॥

धमारि

निरखि निरखि होरी रची, सखि खेलत सिरजनहार।
हो हो हू होरही रंग बरखत केसरि सार।
सखी सुलच्छनि देखि ले, फिर बहुरि न अैसा दाँउ री।
जाको सुर मुनि ध्यान करति हैं ध्यान आवते नाहीं री।
सोइ सहजे पाइया तेरा भाग्य जगा अब आई री।
हवै भली जो मिलि चलै ता तेरा भला सुहाग री।
भेद बताऊँ ताते तेरे मन परै ता आउ री।
मीत मितइया के भये ता फीके लगैं धनु धाम री ॥

बसन्त

अरि अरि सखियो खेलउ आये, रितु बसन्त घर मोहन सहाये ।
मोहन बाँधी प्रीति लगाये पांच सखिन का संघे लाये ।
ब्रह्मा जिनका पार न पाये, तन सोधे ते परगट आये ।
आये बंदी छोरु दयाल तारे जन भै कीन्हे पार ।
सुरति निरति लै मत किया जाय, अलख लखा कुछु कहि ना जाये ।
सतगुर जाकी करै सहाय सो अमरौती पहुँची जाय ।
बाजी जीती कुसल पराये अब आवै की हाहा खाय ।
जन मीता का लिया बचाय जमु का हमरी रोग डेराय ।।

तुम कहौ सखि निजु बातु री, कौन बानु तोरे लगा ।
घर अंगना ना भावई, गइ तनकी सुधि बिसराई री ।
सूखि टटेरा तू भई री हरद बरन भइ देहि ।
रैनि दिना पल ना लगै तू कासो लायो नेहु री ।
जोगिया एकु अनूप ता री ठगि गया नैन लगाय ।
वाकी मारी मैं मरों बिनु देखे रहा न जाय री ।
बिरहिनि अनबोली भइ री, थकित भये मुख बैनु ।
मीता काह बतावई कोइ जानैगी बिरली सैन री ।।

तू काहे का माड़ति रारि री पीतम प्यारे मन हरा ।
खोरि सांकरी मैं गइ वासो चितवत तन गया भोहि री ।
लोक लाजु कैसे रहै जाको मनु लागा वहि वोर री ।
ननदी हटकी ना रहों मेरे काह करै हँसि कोई री ।
तजेउँ लाज अंग लावऊँ निरसंक भये सुखु होय री ।
तब लागी अब ना छुटै गया बुंद मां सिंधु समोई री ।
बरहै मासे आवई कोई खेलै सखी सुजान री ।
मीत मितइया भे सही, ताको घर घर होति चबाव री ।।

हम बनिया गये बाजी जीति, बानी पलट गइ गुन गये छूटि ।
पाँच पचीसो कीन्हा हाथु अब न करौं बिखयन सो साथु ।
सीस उतारि धरा तिथि जाये तब सोरही का खेला जाय ।
पूरा परिगा आया दांउ हरि धनु पाया ढोलु बजाय ।
तेई हारे जे रामु न ध्याये जमु सो जिअना खेला जाये ।
माया देखि वई भुलाये, अन्त काल वे नरकै जाये ।
मीतै चरन कवल की आस जैसे चत्रिक स्वाती प्यास ।
झूठे तेइ कहावै दास, जे नहिं हैं पीतम के पास ।।

धमारि भुरमुटा

सुखु उपजै दुख जाये, पिया संघु खेले होरी, गेरि ले केसरि रंग बनै होहो होरी।
लीला फागुन मास सखिन की मति भइ भोरी लै लै दौरै रंग प्रेम की परी ठगौरो।
पीतम छैलु छबीले हँसि कै बाहें जोरी, नैंनन काजल दैंइ लाजु नहि काहू केरी।
गावै अनुवनु रागु अचम्भा होय रहा मोरी, मीता गये लखि वारि जिये या जुग जुग जोरी ॥

हरि रंगरंगु सखि मैलु धुवाये, जाते अबु हँसी न होईं हो।
जनमु धरति बहु खाई मारु, कालु बली डारति बिदारि हो।
माया मोह फाँसो है आये, सुख सपना दुख बहुतै आये।
बार बार कहिये समुझाय हरि सरन दुख नसि जाई हो।
पतिया बरत तजि अनतै जाये, तिनका सुख कबहुँ न आये हो।
मूल छाड़ि डारन लै लाये तिनते कौन अभागा आय।
तीनिऊ देवै ना पतिआय कहि मीता पिउ अउरे आय हो ॥

तोहि नारी गारी को देय, ललन रस मतवाली तू फिरै।
बेसरि मोती बहु बने, तेरी बेंदुली लाजै भान।
पचमनिया बाजू बंद, कानन मां ढारसु ढ़ार।
नौ गिरही कँकन बने दस अंगुली हीरा लाल।
हा हा मोरे लालन, कोठी गाँठी बहुबनी लहँगा सारी झालरि दार।
जेहरि तेहरि अति बनी बिछुवा पकरा पांव।
भली बनी या कामिनी गइ कामो काल लजाये।
तिनका लै फगुआ करौं तनु मीता तपनि बुझाये ॥

हाँ हाँ मोरे लालन, कौन सखी बाजी रची मन मोहन सो जाये।
धूम धा नगरी मची बाजा अनहद बीन।
कोउ गावै कोउ नाचई कोउ तालु तमाचे देइ।
हां हां मेरे लालन, काया नगर सुहावना सोइ जानै जेहि रंगु लाभि।
पीपा नामा नानिक तहाँ खेलै दास कबीर।
पाँच पचीसो संघु लिये, कोऊ निकरि ना जाये।
भीर लिये तहवाँ गये जहाँ बैठे राजा 'राम'।
फगुआ पाया प्रेम ते जब जागा भाग्य सुभाग।
सतगुर दाया सब बनै अरस परस हरि दीन।
फगुआ सखी सुजान का, का जानै गोलि गंवार।
जन मीता या गावई संतन माथु नवाये ॥

बाजी लै चली हरि जी सो लागी प्रीति, काम क्रोध की गरदन मारी, चली सखिन की रीति।
रतन जटित का पिचक्का रे, सेसरि केरी कीच, पीतम के अंग गेरि दे, दोउ नैनन के बीच।
परम सुहागिलि सुन्दरी रे पहुँची जाय सनीप, पकरन पाया प्रेम ते अन्तर जानी जगदीस।
मीता खेला धमारि का अबु बहुरि न भरिहै कीच, दरिया मां दरिया मिला कैसे कै परिहै बीचु॥

अरी रंगु लागा कुछु न सुहाई री, फागुन देखै मैं गई।
इत प्यारी उत भावंतो छबि देखे मनु ललचाई री।
नैन सौ नैन लगावइ री हँसि हँसि फिर मुसकाये।
करी निछावरि मन प्रान का या अचिरिज कहा न जाई री।
चितवति भई हौं चकोर ज्यों री मन अनते नहिं जाय।
लोक बेद कुल कानि तजी हम, नगर तमासे जाई री।
नन्द न जानों बावरी ना गोपी ना कान्ह,।
या तो सुहागिलि पीउ की जेहि मीता भये निहाल री॥

घर ही होरी खैलि ले तेरे पीतम तेरे पास री।
बाहेर बिस्वा भांडनी जाके पिउ की नांही कानि री।
सात खंड नौ द्वीप के हो चौदापुर के राव।
मजिलिसि सूधा देखिया जब सतगुर पकरी बांह री।
कोटि सूर ससि वारिये छबि, तिनके ऊपर जाई री।
भाग्य बड़े ते देखिये, जाको पार न पावति बेदु री।
सुज्जन हो सो जानिहै री या मत अगम अपार।
मीता तनु धनु वारई, लखि सोभा अगम अपार री॥

होनी थी सो हो रही अब बरजे का होय री।
मैं बंदी ती आदि की ताते पाये दीन दयाल री।
लोक लाज का का करौं री, काह सकल परिवारि।
सिउ का खोजे ना मिले सोई आगे देखों ठाढ़ री।
भाग्य बिना पावै नहीं री समुझि देखि नर नारि।
लोंक बड़ाई का भये जो पिउ की नाहीं प्यारी री।
सखिअन मिल सखिया भई री, नहीं रही सुख थाह।
मीता हरि सो जो बनै ता का जगु कीन्हे हाँसी री॥

फगुआ आइया हिलि मिलि खेलो फाग ।
काम क्रोध मद लोभु त्यागि कै कुमति गुलाल उड़ाउ ।
पाँचौ तो परपंच करै री, ताकी चोट बचाउ ।
जाते पीतम पतिआये तू कैले सोई दांउ ।
अबराई लखि पीउ कीरी मोहि सखि जगु न सुहाय ।
लखत बनै कहि ना बनै या अकथ देखु कुछु आय ।
तन धन वारों प्रान का री, मन भावन गुंगाउ ।
कहि मीता तू मानि ले फिर नहिं नहिं अैसा दांउ री ।।

फागु

कोई खेलै संत बसन्त पाँचो का धारै, लिये प्रेम का पिचकारे, काम क्रोध भरि मारै ।
मूल दुआरे माड़िया रे खोले पछिम केवार ब्रह्म झकाझकि हो रही लखी शोभा अगम अपार ।
जो या खेलै प्रीति सो छूटि जाति जमु जाल, भै सागर ते उतरै सोई भेटै सिरजनहार ।
येहु फगुआ बड़ी भाग्य का री का जानै संसार सुर मुनि पार नपाइयां तहँ मीता खिजिमतगार ।।

अलबेली नागर कहवां ते आई, ।
जागे सेज उनींदे नैना प्रीति न दुरति दुराई ।
मंद हसनि बेसरि अति राजै, बेंदियां अधिक सुहाई ।
ढारै चंपकली दुलरी, मुख चंद की जोति छपाई ।
कज्जल रेख नारि किन दीन्हा, कहु तिनकी सुघराई ।
कंकन गाँठि गढ़ी किन कोछी जेहरि ते बनि आई ।
भली सुख तेरी मीत मितैइया भाग्य बड़े ते पाई ।
चितै चितै घायल कै डारा अब नहिं आनि सुहाई ।।

धमारि

कौन बान तोको लागा प्यारी कस पियरी अंग री ।
पिया बियोग पियरी भई मोहि नाहिन दूजा रोगु री ।
रैनि दिना पल ना लगै पिया पिया प्यारे धुनि लागि री ।
अन भोजन ना भावइ मेरे उठति बिरहु की आगि री ।
कहिबे की गति कुछु नहीं जेहि व्यापी जानी सोई री ।
कागु उड़ावति मैं मरौं पिउ मुये अइहै काजु री ।
बिरवै सखी सुजान सो, वाके ढुरि ढुरि आवै आँसु री ।
देइ असीस मीत चलु तोरे पिउ आवै घर आजु री ।।

खेलाती मुसलमानी मा

काहे न लाये रे ईस्क का माल जदुरा है जंजाल मैं आशिक अल्ला माशूका देखति भये निहाल ।
बातिन इस्क भेदु का कहिये होई दिल मा सालु ताकी चोटु हवै बहु भारी जानै जिनके लागु ।
सुरति निरति की तानैं गाऊँ कै नैनन की तालु खुसी होय ता बलि बलि जाऊँ करौं गरे का माल ।
मीता मीत मिले सुख पाये मिल कै पीर कमाल हता कांचु कंचन कै डारा अब पहिरा है लाल ।।

खेलति

मियां मनु जदुर न लइया रे, या तो बुरी बलइया रे ।
आखिर होइ तफाउस भारी तब को करी सहइया रे ।
हो आशिक अल्ला प्यारे का तपनि दूरि हो जइया रे ।
तू अल्ला का अल्ला तेरा बिछुरि न कदही जइया रे ।
जहँ जहँ प्रेम तहाँ तहँ हाजिर, पाखंड ते ना पइया रे ।
अंतरजानी मन का माली तिनते काहू छपइया रे ।
बातिन इस्क करै सो जानै नाहक भेखु बनइया रे ।
कहि मीता है इश्क निनारा बिरलेउ हाथै अइया रे ।।

दिल जानी मेरा यार तिन्है बताय दे, जो चाहे सो कराय ले ।
मैं आशिक ताही को देखों और धन्धा सब जाइ दे ।
कोइ पूजै पाहन कोइ पूजै गौर तीरथ मक्के जाइ रे ।
जौन अल्ला दुनिया माँ भेजा तिनकी खबरि न आय रे ।
खसमै चपरी धीगै मैदा, दोनों परछै लाइ ले ।
दुइ मां एकु कौन है खोटी अपने मन मां चाहिले ।
जौ लगि दिल औसाफ़ न आवै, तौ लगि गोता खाइ रे ।
तहकीक किया हम मन का माली मीता भटकि न जाइ रे ।।

दुनिया न रहैगी, भजिले हरदम नामु कोइ फेरै माला कोइ फेरै तसबी बांका इस्क का माल ।
झूठ कहै ता पिउ ना पावै सांचु कहे बदनाम खुसी चहों अपने साहेब की का काहू सो काम ।
बहा जाय ता बही जाय दे जो घटु है सैतान दाना मेरा मैं दाने का तिनही सो गुरु ग्यान ।
धक्का खाये बाना बनाये अब करता विश्राम मीता जीति चला रे भाई वारे तन धन प्रान ।।

अरी मोसो लगन लगाइ गयो, या जोगिया का छोहरा ।
बांकी चितवन गरभ गहीलर मधुरी सी बीन बजाय गयो ।
रैनि दिना मोरि पलक न लागै नींदो भूख छड़ाय गयो ।
पियरी भई तन डोलन लागी अंसुअन की झरि लाइ गयो ।
सासु ननद बहु बैदु बुलावैं नारी देखि भगाइ गयो ।
जंत्र मंत्र जोगिया ना जानै बिरहिनि मीत जगाय गयो ।।

नैना की मारी मैं तौ फिरों दिवानी रे।
काहे का सासु ननद मोहि त्रासै हटकी रहों ना थारी रे।
घर अंगना मोहि नेकु न भावै जोगिया की बसि डारी रे।
अैसा अजब अजायब जोगी, वाकी गति मति न्यारी रे।
मीता इस्क लगी सो जानी का जानै मुरख अनारी रे ॥

मेरे यार नैनन मारा है, नाहक नारी बैदा टोवै रोग हमारा न्यारा है।
पूरा घाउ लगा दिल मांही अचरा नहीं संभारा है।
फिरौं दिवानी भवन न भावै नाउति बरिया झारा है।
इस्क की चोट लगी सोइ जानै मीता दुख कहि हारा है ॥

देखा है रूप अनूप सतगुर जाने ते।
बहुत दिना बिखयन मां बीते बिना प्रेम के साने ते।
मैं भूला ता लोक बड़ाई चूका ता बिनु ज्ञाने ते।
हरि की दया सकल भ्रम भागा बाचि गया जमु डांड़े ते।
भली दीनता जिन सुख दीन्हा, सांचु सांचु घटु आने ते।
पइयां लागौं गुरु अपने की जिन जा छोरा बन्दीखाने ते।
सत्ति पुरुष सो जुरा सनेहा पाँचो इन्द्री मारे ते।
जन मीता निरसंक भये अब, चरन कँवल मन माने ते ॥

मुझै दीख दाब तेरे नैनों का पलक लगै नहि इस्कों का।
प्रगटे जहाँ कमाल कमाई तिनसो हमसे कहना क्या।
प्रेम पियाला जिन भरि चाखा भाँग पियाला तिनको क्या।
कहि मीता का सेली गुदरी जो न मिला माना मनु का ॥

अरी लागे री नैना, रैनि दिना नहि चैना पियरी भई तन डोलन लागा थकित भये मुख बैना।
लाजु गई औ धन्धा छूटा दूजी नाहीं धैना, जैसे मीन लगी बंसी मां उलझि उलझि जिव देना।
या तो कहन सुनन की नाहीं सखी सखी की सैना ना उत बैदु दूरि रहे होई, बिनु व्यापे जानै ना।
सासु डहै औ ननद सतावै देइ सबइ उलथैना, मीता हंसै नगर के लोगवा बिरहिनि माखु करै ना ॥

खेलाती रासा जोग

मोरे मितवा यारी लागी रे, जब लागी तब पागी रे।
निसि दिनु रहौं पलक तरे ठाढ़े करौं जिया जिया दीनी रे।
बिछुरति होय मीन ज्यों बिनु जलु, बिन देखे रहति बिहाली रे।
कौन मंत्र जोगिया पढ़ि डारा नाउति कहो विचारी रे।
सूखि टटेरा या तन कीन्हा, पलकन पंथु निहारी रे।
हरद जरद भइ बैदा नारी, हमरी गति है न्यारी रे।
बिरहनि रहै मीत दुख भारी, सासु ननद लावै गारी रे।
खोरि न होय खोरि बतलावै कैसे बसी संसारी रे ॥

मतवालिया सोइ सांचिया जिन पिया पियाला प्रेम है।
गई सुध बुध देहि बिसरी छकै दोनों नैन है।
इस्क की है चोट भारी दारू गाँजा फैल है।
जिन्है लागा इस्क प्यारा इस्क भीतरि ऐनु है।
तिनकी हक़ीक़त का लखै कोई, दुनी पाखंड भेखु है।
वे फिरैं घायल घाउ बाँका कहन की नहिं तोर है।
सेली व गुदरी हाथु किस्ती मिला या धरि कौनु है।
कहै मीता सांचु है तहँ साँईं हाल हजूर है॥

आसिक लोगों का मरना है, मरना ता का डरना है।
सीस देइ कै मिलौ मसूका हंसि हंसि म हे ला करता है
मेहर दया का कफन पहिरे, घायल सा वा फिरता है।
जा तन इस्क लगी सो जानै समुझाये का होता है।
सांइ दरवेस छका अलमस्त, नाहक दारू पीता है।
या तो इस्क फेलु का नाहीं फेली से बा डरता है।
कहि मीता सोइ करम कसाई जीव जबै जो करता है।
अजब तमासा है दुनिया का समुझि काम नहिं करता है॥

दिल जानी मेरे यार तुस पर वारियां।
सुरति अनूप बसी मेरे नैनन देखि देखि गलतातियां
लगन लगी तनकी सुधि भूली मारी इस्क कटारिया।
आवै लहरि डसी मानो कारे, दरदु मरमु को जानिया।
ओटी भाटी चुअै अगारी, तुमहु छकउ मोहु छाकिया।
जीवन जलम सुफल कै मानौ जब छाती बिच लागिया।
अरज गरज दरसन प्यारे की सोई दानु दीजे दानिया।
बाँह पकरि मीता जनि छाड़ौ सहर भई बदनामिया॥

खेलाति उपदेस

जाना दूरि है रे, मानिले वचनु हमार जनि करु जमु सो रार।
चौरासी की धार भयानक सूझै बार न पार।
चौदापुर लौ है गहराई बूडैंगा बिनु आब।
माया मोह करै तोहि गाफिल ताते हो हुसियार।
सुत बन्धौ कोउ कामु न आवै, जब डारै जम जाल।
सगरे सु:ख बिसरि तब जइहै होई दु:ख निदान।
गहु हरि नामु पार जो उतरै यहै हवै मत सार।
मीता उबरा सतगुर सेये अनत नहीं निरुआर॥

सहज मतवारी हमको लागियां, अब पीतम संघु जागिया ।
अरध उरध बिच भाटी औटी प्रेम पियाला छाकिया ।
धरनी बरषै अम्मर भीजै रैनि दिना झरि लाय ।
किये ममूका सो गलबाँही नजरि न कोई आये ।
का भये पोस्ता भाँग के खाये इस्क मरमु ना पाये ।
का भये गुदरी सेली किस्ती बहु बिधि भेखु बनाये
भरमा आपु औरे भरमावै अंधा अंध मिलाये ।
कहि मीता घर बाँका फ़कीरी अैन मेहर ते पाये ।।

का जानै दरद हमारा रे दिवानी दुनिया ।
हम तौ गइन बिरह की गलियन जादू सा पढ़ि डारा ।
को एक रूप अनूप सखी री नैन बानु मोहि मारा ।
तब ते भई निमानी डोलों का करै बैदु बिचारा ।
घाउ होय तो जाइ दिखाऊँ या तो दरदु निनारा ।
मरना होय मर जाऊँ एक दिन है नित मरन हमारा ।
कहि मीता या रोगु कठिन है, झारि मरा संसारा ।
पंडित पोथी बाँधु गिरहु देखु देऊँगी मोहन माला ।।

कल नाहीं मेरे यार, भई हौं दिवानियां ।
निसि दिन रहौं नैन के आगे, बार बार खुरबानियां ।
ब्याकुल रहौं जबै नहिं देखौं, दरद मरमु तोहि जानियां ।
तुझै सिवाय और नहिं चाहौं मेरी जीवन तुझ ताइयां ।
बाँह धरी अब पार लगावे तुम समरथ हो साँइयां ।
चूकि परे ते छाँड़ि न दीजे हम तौ चूकि भराइयां ।
लोक कुटुम परिवार तजा सब, तेरी सरन में आइयां ।
अब मीता के कौन भरोसा कहिये जान सुजानिया ।।

है साँचा मेरा यार पार लगाइयां ।
बूड़ा जात हता दुनिया में सोवति आनि जगाइयां ।
प्रीति की रीति और को जानै जाननवाले साँइयां ।
बांह पकरि कै छाड़ि न देते ताही सो मन लाइयां ।
आलम चलै घाति अपनी सिर ना बेटा ना भाइयां ।
करै मसूका हमरे मनकी बारे बारे जाइयां ।
एकु मासूक आसिक बहुतेरे सीस दिया ना जाइयां ।
कहि मीता आसिक है सोई बिनु सिर जौन फिराइयां ।।

इस्क का मता निनारा, रे कोई जानन हारा।
पिया पियाला भा मतवाला उतरति नहीं उतारा रे।
जे अलमस्त दरद के मारे तिनका अउर हेवाला रे।
दारू भाँग काहे का खाता भूला फिरै गँवारा रे।
गुदरी सेली किस्ती तेरी सबु है भरमु पसारा रे।
जा कारन तू भेखु बनाया, तासो नहीं दिदारा रे।
घाउ न लगा दरद ना जाना का भये आह पुकारा रे।
नकल असल का कोउ ना चीन्है मीता करै बिचारा रे॥

लागी सुरति हमारी रे, टरती ना टारी।
हँसि हँसि घायल किया मसूका चितवति गांसी मारी रे।
निस दिन जागत लखि सुखु पावति, लोक लाज तजि डारी।
इस्क खुम्हारी हवै निनारी, सुनिले दुनिया दारी रे।
सिर किन जाय देह किन छूटै, का करिहै संसारी।
अबु तो आनि मनै ना आवै यार यार तुस पर वारी रे।
आगू पाछू बिसरि गया सबु चाहों चाह तिहारी।
लगन लगाइ, मीत ना छाड़ौ हवै भरोसा भारी रे॥

सुनिले भेखु धारी, अैसी चालु हमारी रे।
भेखु न धरै अलख के खोजी फूंस फाँस दिया डारी रे।
निसि दिन जागत मूलै ध्यावति, जरी काम की बारी।
मन मतंग का उलटि लगाया पाँचो चोरा मारी रे।
आगू जाउँ त माया नाहीं इंगला पिंगला नाहीं।
भेंटा अलख नैन भे सीतल, मिटिगै आवा जाई रे।
बेद कितेबु पार ना पावै, तीनिउ की गम्म नाहीं।
कहि मीता सतगुर की सेवा जो पाई सो पाई रे॥

इस्क लगाइयां मानौ खाई काले नागु।
घर घूमौ पल ना परै मुझै लहरि परी कुछु जानि।
चितवति चितवति चित्तु गड़ा री लागि रहा येहि बानु।
जो प्यारे छिनु ना लखौं तन दाह उठै बिनु आगि।
काली खाई गाफिला रे माहि हवै सुधि आदि।
बैदा रोगु बिचारि ले या कैसी है धों व्याधि।
रोगी रोगै जानई रे जाको रोगु पिराय।
कहि मीता का जानई जाको दिल ना दरदियाइ॥

अल्लो प्यारा अल्लो प्यारा चाहों दरस तुम्हारा ।
दौलति दुनिया ह्वै छिनक की तन मन करिहौं वारा।
सकल रोसनी है जगु जाकी दीनों का रखिवारा ।
सोइ पियाला पिया अधर मां भया प्रेम मतवारा ।
छाके दुविधा गई निगोड़ी कुफुर टूटि गया सारा ।
लखि महबूब गई तन ताई बूड़ति मोंहि उबारा ।
मैं बंदी कुछु कै न सकति हों भया भरोसा भारा ।
मीता की अर्जी है इत्ती दीजे सदा दीदारा ।।

यार सलोना मिला जवो तपन हरन सुख देन तेरे खातिर हरद जरद भइ काहे ना सुधि लेन।
बिन बिन कलियाँ सेज बिछाऊँ नैनन करौं बिलौना तेरी डगर कबै की ठाढ़ी भई डगर का ढेला ।
अबु तौ नहीं रहा बस मेरा काहे ना हँसि बोला औरी सखियन हिलिमिल बइठैं मैं बन्दी का कीन्हा ।
जैसे मच्छी जल बिनु तलफै तुस बिन मोहि यों होना मीता की अर्जी है इत्ती हेरि नजरि एकु कोना ।।

तहकीक किया मासूका दिलदा महरम मेरा ।
जैसा हो तैसा वाही का माफ किया जिन चूका ।
मक्का कासी मन फिर आया जब पायेंन ता बूता ।
अबु मनु थका तनु ही भया मक्का, मिटगै सगरी भूला ।
हजरत सोइ हज जाके हाजिर राजी रहै मासूका ।
बिन कर ताल बजे बहु बाजे देखा नाचु अनूपा ।
वारे जाय मीत मुरसिद की जिन कीन्हा या सूता ।
पाखंड भेखु इस्क ना पावै है माहे का धूता ।।

दरद कासो कहिये बिन महरम मेरे बीर, आवै लहरि छहरि गइ तन मां है कोइ लावै मूरि ।
नाउत बैदु बहुत पचि हारे केहि न लखी या पीर पंडित भेखी मरमु न जानै कैसे धरिये धीर ।
झारु फूँकि नाउत बतलावै बैदा नारी सीर पंडित भेखु देव बतलावै सब दामन की सीर ।
चुपकै रही टोइ सब देखा हरी न काहू पीर कहि मीता महरम जगु मांही बिरले कोई बीर ।।

खेलाति पदु

मन प्रेम का बिरवा लगाइयां अजब बनै फुलवाइयां ।
खुशी होय दुख सुख दोउ बिसरै देखति नैन सिराइयां ।
गुदरी सेली किरती तेरी या सबु है ठगुहाइयां ।
छाई झोपरी फूल लगाये भोंदुअन का भरमाइयां ।
इस्क का भेदु भेखी ना जानै बातिन रखा छपाइयां ।
जा तन लागी सोइ तन जानै ज्यों गूंगा गुर खाइयां ।
हक मौला नाहक है दुनिया तिन संघु दीन गवांइया ।
मीता कहै पुकारि रे बौरे पूछे जुवाब न आइयां ।

नगर मां हो रही आनन्द बधाइया पांच तत्व का या तनु पुतरा नख सिख बलमु समाइया।
जा तन लगी सोई तन जानै आन दरद को पाइया मन मतवाल भया हरि चरना करते लोगं हंसाइया।
मदिरा घरही बैठि बिकावै गोरस गलिन फिराइया पाखंडी पूजै संसारा दासन का दुख देइया।
हरि जैसे का तैसा भाई उनते काहू छपाइया कहि मीता दासन का तारै असुरन नरक डेराइया ॥

खेलाति

हंसि नागरि गगरी कुंअना भरी चालु चलै अंचरा न संभारै ऐसी बनी परी।
बेंदी सोहै लिलाट चन्द ज्यों, बेसरि अधिक बनी चम्पकली बाजूबंद जेहरि कोछी ठीक गढ़ी।
तालु देति सखियन संघु बोलै कँहु तन दृष्टि तनी नैन बन्दूक लिये कर डोलै पंथी मारि चली।
गौने ते मौनी हो आई गरभ गुमान भरी मीत मितइया जासो कीजे जासो रीझ परी ॥

मानिनि छाड़ु मान का, पलंगा पर आओ।
जोबन जात कौन गहि राखै काहे मन तरसाओ।
सेजि भली पीतम प्यारे की हियरा आनि जुड़ावै।
ऐसा समौ बहुरि ना पइहौ मानु निहोरा आवै।
रजनी जाति छिनौ छिनु बीती मोतियन मांग भरावै।
सोरहो सिंगार पहिर चली मानिनि सेजि भला सुख पावै।
सखी सुजान जानै रस बतियां कर पीतम मन भाये।
मीत मितइया कै ना टोरै रहि जइहै पछिताये ॥

प्यारी आवन कीन्हा बतियां कहि ऐनी, चितवति मोहि सैलु ज्यों मारै नैन कोर तेरी पैनी।
बेसरि मोती उये नखत ज्यों जोति भानु तेरी बेंदी अंगियाके बंदु खोलन दीजे सेजि चलौ सुख देनी।
घूंघुट के पट खुलति तिहारे दामिनि की छबि छीनी ऐसा रूप पाय कर दीनै जागै का दिन रैनी।
सिंधु सील बिनती सुन लीजे तपनि हरनि दिल जानी पार चलौ मितवा के संघै भोगि करौ रजधानी ॥

———

दोहावली ★

अपने घर में भूसी नाही, पर घर दूध वियारी।
कहि मीता परमेसुर छांड़े, मांगि खांय भेखु धारी ॥

जीव ब्रह्म का जब मिलै, सो जोगी है सार।
जाको शंकर खोजि थकित भे, नाही पाये पार ॥

जोगी के नैनन बसै, अलख पुरुष जगदीश।
ब्रह्म-शंकर जाको ध्यावै, आंखिन परा न दीख ॥

दाता दानी दोउ धरि खाये, कालु बड़ा है भोगी।
कहि मीता जिन आतम दरसा, बाचे तेई जोगी ॥

जटा राखि छारु गहि लाई, डसा बैइठ मृग छाला।
जिभ्या निभ्या दोऊ चरावैं, बहुतिन का घर बाला ॥

तीन लोक की राज्य, सन्तजन ना चहैं।
पाई सुख की राशि, मीत कासो कहै ॥

जोर नहीं संतन के ऊपर, जुगन काल नौ गृह का।
हम रंग राचे हरिमद माते, काह गनै काहू का ॥

हमरे कारन सबु भया, हमही सब कुछ आंही।
हमते बिमुख, नरक सबु परिहै, कहि दीन्हा जगु मांही ॥

जाके हिये न बसै हरिहरवा, ता काह लिये कर करवा।
काह भये तीरथ व्रत कीन्हे, सन्ध्या तरपन आचरवा ॥

काह भये बाघम्बर ओढ़े, अंग लगाये छरवा।
घर घर द्वार फिरै माया का, ओढ़े कपट गुदरवा ॥

काह भये सिर जटा रखाये, घोटि मुड़ाये बरवा।
छापु तिलकु औ कंठी माला, सबु पाखंड़ ब्यौहरवा ॥

कहि मीता संतन की सेवा, उतरि जाय भै परवा ॥

झन्ना पन्ना ठगु भये, मीता जानै भेदु।
बिनु करनी की कथनी, करै करेजे छेदु ॥

बहुत जलम जुअना में हारे, अबकी बाजी पाई।
कहि मीता सतगुर पर वारों, जिन या सीख सिखाई ॥

रामु न काहू के दादा बापू, ना काहू के बेटा।
हैं सबही मों सबते न्यारा, बिरले काहू भेंटा ॥

★ संत मीता साहब के कुछ अन्य दोहे जो बाद में प्राप्त हुए हैं।

कबीर, नानक, सूर, तुलसी, भरम की भीति उठाई ।
कहि मीता या देउ गिराई, तारौं जिउ बहुताई ।।

जो बूझी सो सत्य कै मानी, अनबूझे जमु खाई ।
पर स्वारथ का कम्मर बांधा, अैसी अदल चलाई ।।

साखी सब्दी बिना तौलु की, सुज्जन का दुख देई ।
कहि मीता जी का निनु आरबु, केहु बिरले मत पाई ।।

ब्राह्मण छत्री वैश्य-सूद्र औ मुसलमान ।
घर ही माँ हरि पाइया, सबु भेखु भुलान ।।

अवधू सो जोगी जो हरि दरबारी ।
मदन जारि कै लावै तारी, खोलै पछिम किवाँरी ।।

प्रेम-प्रेम सबु कहति हैं प्रेम ह्वै बहु भारी ।
पीतम मिलै त प्रेम कहावै सो कहिये टकसारी ।।

मूरुख प्रेम प्रेम का करई ।
पिउ का मिलै त प्रेम कहावै, नाहित झकि झकि मरई ।।

कहाँ कपट कहँ चोखी सोदा, सुनिले साधू भाई ।
जो जैसा तैसा कै बिकिहै, यहै बात ठहराई ।।

हम केवट भैंसिध के, खिजिमित दीन्ही रामु ।
मीता सुज्जन तारई, मूरुख सो नहिं कामु ।।

कागा बका सबु भेखु है, सुज्जन लीन्हेउ मानि ।
हंसा घर ही मां रहैं, हरि सो भई पहिचानि ।।

जाति-पांति सबु झूठ है, है जीव ब्रह्म औ देहि ।
कहि मीता सठु जाति भुलाना, उत्तिम रामु सनेहि ।।

मीत परे दरियाव में, पूछै काह लबार ।
मन मंजन कै हरि मिले, खड़े रहैं दरबार ।।

मीता दरिया गहिर है, बिरले उतरे पार ।
वार पार की सुधि नहीं, ते हैं मूर्ख गवांर ।।

मूरुख माया जोरि कै, गलिन गलिन इतराय ।
आये जमु धरि लै चले, सके न गाल बजाय ।।

मीता खोटे दामु लै, वस्तु न मिलै बजार ।
दुरमति लीन्हे मानवा, कैसे उतरै पार ।।

कोटिन तीरथ संत के चरना, संत भागवत गावा ।
पाहन पानी पूजन धावा, भोंदुअन मरमु न पावा ।।

तीरथ गये मैलु धोवन का, और मनै दस लागा ।
कहि मीता पाखंड ना त्यागा, रामु भगति का त्यागा ।।

आगे गंगा पीछे गंगा, काशी प्राग कहावा ।
कहि मीता तुम सुनौ रे भोंदुवो, को तुमका भरमावा ॥

गंगा जमुना दोउ बहि आई, नाम धरा तिरवेणी ।
आगे गये त काशी कहते, भोंदुन की मति हीनी ॥

देही हमारी छूटिहै, जबै अवादा होय ।
जी अम्मर होय रहै, कहि मीता सुन लोय ॥

सूत्र तोंहि तोरा भाई है, और शूद्र को आय ।
मांस मछिरिया खाति हैं बादी ब्रह्म कहाय ॥

जीव जवै नाहक करता है मेहर दिलै ना आई ।
सही बाकी कैसे परिहै, पूछे जुबाब न आई ॥

सरजिव अजया का गर काटा, निर्जिव पाथर पूजा ।
कहि मीता सठु को समुझावै, कहै मोही को दूजा ॥

ब्राह्मण मांसु न भक्षई, ब्राह्मण वधै न जीव ।
मांस खांय ते सूद्र हैं, मदिरा कहे न पीव ॥

पोथी पढ़ि थोथा भये, गांसी लगी न हाथ ।
मित्था जलमु गँवाइया, बिनु संतन के साथ ॥

मुसलमान कवुरन का मानै, हिन्दू पाहन पूजा ।
तिनका खोजु करते नाही, जिन दुनिया में भेजा ॥

विद्या सबै अविद्या, निरखु नाम निजु सार ।
जिन जिन नामैं निरखिया, मीत भये ते पार ॥

मछरी खाय वरन सबु वोरे, आंहू रहिगै तेरी ।
कहि मीता दाबी दै बूड़ौ, करौ नरक मां फेरी ॥

विद्या पढ़ि-पढ़ि पंडित भूले, राम भक्ति रही न्यारी ।
बूड़े आप बहुत परमोधे, मीत अचम्भौ भारी ॥

विद्या पढ़ै भीख के काजे, रामु भगति ना होही ।
पसुआ सबु भूले फिरै, हरि भजि हरि का हो ही ॥

दोहा मीता दास का, सब विद्या का मोलु ।
सतगुर मिले कुंजी मिलै, प्रेम किवारी खोलु ॥

नाचवु गावबु प्रेम नहीं है, प्रेम है रामु दिदारा ।
कहि मीता ठगियन जगु मूसा तिनही का अतिबारा ॥

जस अपजस दोनों बुरे, भली रामु की सरना ।
जगत बड़ाई भोंदू चाहें, संतन के नहिं गरना ॥

बेदु कितेवु पढ़ै का पसुआ, करु संतन की सेवा ।
साहेब मिलै संत की संगत, सबु देवन के देवा ॥

मीता जोगी धोबिया, मैले डारै धोय।
मन धोवै मन का रंगै, जोगी कहिये सोय ।।

कहि मीता गुरु ते करयो, जे हरि देइ मिलाई।
कन फूकवा ते भाग्यो, कंठी दे ठगि जाई ।।

राम राम सबु करै, जानै विरला भेदु।
मोहि मिलै ता तरै, का पढ़ि करिहै बेदु ।।

कुरान कितेबु पढ़े का होइहै, जो ना अमल कमाये।
असल खुदाय हवै सब ही माँ, पूरे पीर लखाये ।।

धाम धाम का करता साकठु, वा मीता का घरु है।
परम पुरुख का हम हैं ब्याही, बिन काया का बर है ।।

पिया का मिलना कठिन है, विद्या दोउ रुजगार।
पंडित मुलना पढ़ि थके, मीता उतरे पार ।।

मन मारा तन जारा, तब सीझा वैराग।
मीता जोगु हंसी नहीं, जानै जिनके लागु ।।

भक्ति दुहेली रामु की, हंसी गनों मत कोय।
भक्ति भेखु ते दूरि है, होई गिरही कोय ।।

मीता चले बिदेश का, बाँह धरी गुरु पूरे।
जाय मिलाया रामु का, कालु न आवै नियरे ।।

सुमिता के नियरे बसै, मीत सजीवनि मूरि।
कुमिता ते बहु दूरि है, मुख माँ परिहै धूरि ।।

इसलोक पढ़ि कहँ जायगा, साहेब की गति औरी।
एक बरन है एक जाति सबु, को ब्राह्मणु को कोरी ।।

ब्रह्म मिलै सो ब्राह्मण कहावै, जनौ पहिर ना होई।
मीता तीन देउ चौविस औतारा, येऊ सूद्रै होई ।।

संतन की सरि कोई नहीं, सठु मानु मति मेरी।
नाहित कलुआ करी कलेवा, छूटी आंहू तेरी ।।

छा भेखु पंडित तेहि भीतर, नरक की साज सजाई।
तिनका मिल कैसे कै तरिहै, मीत कहा निजु सोई ।।

सेवा कै मेवा लई, गुरु मिले दीन दयाल।
मीता घर घर खाये पांय पुजाये, होइहै बुरा हवाल ।।

पापु पुन्नि दोउ दूरि करु, ले निहचै हरि नामु।
राम भक्ति सबते बड़ी, सरे सकल विधि काम ।।

छापा तिलक काठु की माला, पहिरेफिरै हरामी ।
पर घर खाय नारि पराई भोगें, ई तो आंय हरामी ॥

जो भेखिन का पूजिहै, निश्चै नरकै जाय ।
पंडित गनिये भेखु मां, सुज्जन ना पतियाय ॥

गिरही हरि के दास है, किरखी कै कै खांय ।
इन्द्री जीत मन बसि करैं, ते अमरा पुर जांय ॥

छापा तिलक काठु की माला, संतन के घरु नाहीं ।
भेखु धरे ते सबु ठगिया हैं, छल बल कै कै खाई ॥

काम क्रोध ते रहित हैं, जे पहुँचे दरबार ।
कहि मीता गुरु ऐसे हवै, जे करै भै पार ॥

कनफुकवा ठगु बहु फिरै, टका पराधनि लेय ।
तिनका ना पतियायो, सत गुरु लीन्हेउ टोय ॥

अधा धुंध जहां देखिये, तहां न करिये बास ।
कहि मीता पछिताइहै, छिनु छिनु है उसवासु ॥

नाचै गावै भांडु पतुरिया, प्रेम हवै वा न्यारा ।
कहि मीता ते प्रेमी कहिये, जिनका भया दिदारा ॥

छापु तिलक बिखयन की टाटी, ठगियन कीन पसारा ।
भक्ति भाव इन्द्रिन के जीते, मीता कीन विचारा ॥

छापा तिलकु काम ना जीतै, ठगियन कीन पसारा ।
खांय कचौरी करै बिखैरस, अन्धेन के छर भारा ॥

हीरा फूटे ना जुरै, करिये कोटि उपाय ।
मन फूटे मन ना जुरै, मीत कहा समुझाय ॥

मीता जीता जगत में हारि चला संसार ।
राम कृपा ते सबु बना, रामु बिमुख मुख छार ॥

सतगुर का सिर नाइया, तन धन वारे कीन ।
जीत चला संसार ते, जलम सुफल कै लीन ॥

पीतम हसि बांह धरी, धरा फकीरा नाऊ ।
तबते जगु गीला करै, मीता नांही ठांऊ ॥

पीतम सो भला चाहिये, जगत भलाई काह ।
जरत बरत मीता रहयो, नांही मेटी दाह ॥

मीता प्रेम नगर की डगर की खिरकी सुचार ।
चढ़ै सो ममता मारि कै, जीत जाय संसार ॥

कामी क्रोधी लालची, कथनी कथै अपार ।
बूड़ै का मारगु चलै, करै तरन की आस ॥

हिन्दू की हिन्दुआई छाड़ी, तुरकन की तुरकाई ।
दूनौ घर माँ अंधा धुंध है, भा संतन सरनाई ।।

विद्या पढ़ि जगु मूसिया, धन के किये उपाय ।
कहि मीता राम बिसारि कै जमुपुर पहुचे जाय ।।

त्रिवेनी मां मज्जन कीन्हा, भोजन मथुरा माहीं ।
कासी कसमा जन मीता सोये, देइ उसीसे बाँही ।।

गाँव देस चाहते नहीं, नहीं जगत की आसा ।
मीता जाति पपीहरा, स्वाती बुंद की आसा ।।

एक दिना सब जायँगे, राजा रंक अमीर ।
मीता हम रहि जायेंगे, जिनका नाऊ फकीर ।।

सज्जन का उपदेस

संत ते आहीं जे परम पुरुष का मिले हैं, आवागवन ते रहित हैं; ते जेहि का कृपा करैं तेहि का परम पुरुष का मिलाय देंई; आवागवन ते रहित कै देंई । ते पुरषन कै संसो नहीं होति; उनके जर-जूड़ी नहीं अउती; उनका दुख पाई कै मरन नहीं होत; उनके बारु पकते हैं काया विरध नहीं होती; उनकी आंखिन की जोति मध्यम नहीं होती; उनकी आंखिन की पलक नहीं लगती; उनके बायगोला नहीं होत; उनका छर्यी रोग नहीं होत; उई कुष्ठी नहीं होते; उनका सांक नहीं आवै; उई काने नहीं होते; उई अन्धरे नहीं होते । उई कंठी माला काठु की नहीं पहिनते (पहिरते); उई माटी घोरि कै छापु तिलक नहीं करते; उई जगु के बरत हैं ते नहीं करते; (उई जगु के बरत हैं ते नहीं करते) उई तीरथ नहीं जाते; अजुध्या-प्राग-काशी-वोडैसा-मथुरा द्वारिका नहीं जाते, उनके चरनन का ध्यान, सब तीरथ करते हैं; उई कथा सुनै नहीं जाते, उई भेखु (भेष) नहीं धरते; उई पाथर पीतर कै मूरति नहीं पूजते । उई गिरही होति हैं; उनके साखा-पात होति हैं पहुची पदवी के निर्वान । जेहि मां इतने अंग होंय तिनके पद-साखी सत्य हैं, जेहि मां ई अंग ना होंय औ साखी सव्दी करते होंय ता जानेऊ की ई नरक के जीव आंय । संतन का इतना होति है—खाजु-दाद-फुरिया-आंखी उठती है, पेटु झरता है, इसलेखमा होत है, फिरहलवद होत है ।' संत वोई आंय, जे परम पुरुष का मिलाय देईं जेहि का कृपा करैं । सो परम पुरुष कै छबी अैसी होति है कि कोटिन सूरज चन्द्रमा वा छवि का नहिं पावैं; अैसी छवी दिखाई देईं ते संत आहीं, और जे किरया बनावते हैं सो संत ना होंय ।। उरध मुख पवन चढ़ावति हैं ते अजगर होति हैं । रेचक कुंभक कै जे उलटा पवन चढावति हैं ते बाजीगर के बन्दर होते हैं । जे काढ़ि कै आंते धोते हैं ते कुत्ता होते हैं । जे पट्टी लीलते हैं ते कुत्ता होते हैं, जे धोती नेति (बेती) करते हैं ते कुत्ता होते हैं । जे जल सेनी होते हैं ते मछली होते हैं; जे पचग्नी साधते हैं ते पहिले जलम चकोर का फिर भैंसा होते हैं । जो मुर्दा का लै कै नारि जरति है सो पहिला जलमु चकोरी का होति है फिर विसखोपरनी होती हैं । जे धरती मा माटी लेते हैं अजगर होते हैं; जे छापु दिवावते हैं, तातु कै, औ कहते हैं कि हम श्री वैष्णो आहीन ते दुमुही सांप होति हैं । जो गया में ब्रह्म जूनि कहावति है; तेहि के भीतरि पैइठति हैं तेऊ अजगर होते हैं । जो जगु उत्तम कै धरति है तेहि कै खबरि सुनाई है; जोनु सब मध्यम कहति है तेहि कै बात नहीं चाली । यह बात मां मनुष्य देही पावै जो मांस मछरी ना खाय; काहू जीव का दुख ना देई, आपन विगान अंस पहिचानें, दाया धरम दीनता लीन्हे रहै, ता फिर आदमी देहि पावै । जो भक्ती करै ता परम पुरुष का मिलै, आवागवन ते रहित होय संतन के संघु मां; सो बड़े भागी काम होय । सो भक्ती शिव-ब्रह्मा-विषनु नहीं पाई; नारद नहिं पाई, ध्रू-पहलाद नहीं पाई; सो भक्ती भरथरी-गोरख-गोपीचन्द-सुलतानी बलख के-कबीर जुलाहा-सधन कसाई-रैदास चमार-पीपा-नामा-धरमदास बनिया-सेनी नाऊ-धना-मीरा-नरसीले माहतो-पोजा जुलाहा-दादू बेहना-बेनी कायथु-बरुई छतुरवा के-सुझारी धोवी तेंदुली के-शेख सादी-मलक मोहम्मद-समन चुरिहार-धरम मुराई-मोसिम-बेग मुगुल-भागू नाऊ-वाजिद पठान-साह हुसैनी-रहीम-कमाल-जमाल-चौधीराम-मुरारीदास दरगा-गनिका-अजामिल-महिमी कुंजरिन-भागीरथु ब्राह्मण-मलख हरिदास-द्वारिका हलवाई-नानक-सुथरा-चन्द किशोर खत्री-रंका बंका-बंभनुयारा-खेम्मन-हरीदास-कान्हा दास कड़ा का साह, मन्सूर-

लाल दास दिल्ली के, इन भक्ती पाई संसार में जे छोटे कहावति हैं। और संत बहुत भे हैं ते नहीं लिखे; जो लिखे हैं सो सत्य हैं, जो असत्य कै जानी सो नरक ते कबहु ना निकसी ।। परम पुरुष का मिलाय सोई भक्ती आय और सबु पाखंड आय। रामचन्द कन्हैया का जे कहैं कि नारायण आंय ते नरकु ते कबहुँ ना निकसिहैं; आवागवन नरकुई आय; छूटी तब सतगुर का ध्याये ते परम पुरुष का मिलाई देहैं ।।

"हुकुम परम पुरुष का"

जिनका कीन गीता आय ते कृष्ण संत आंहीं; संतन का जाना तेई अंकूर आहीं; संतन का जाना तेई विदुर आंहीं; संतन का जाना तेई सेवली आहीं; संतन का जाना तेई गोपी आंहीं। गीता के करने वाले संत कृष्ण आंही। तिनके ना काम ना क्रोध निरविकार हैं। परम पुरुष हैं निरविकार। संत तो हैं ते जे परम पुरुष के समीपी में हैं, सनीपी भे हैं, भेदी भे हैं। शिव अपने मन कहते हैं कि परम पुरुष का नहीं पावा—ब्रह्मा कहति हैं कि परम पुरुष का नहीं पावा; विशुन कहते हैं कि हम परम पुरुष का नहीं पावा; तेही विष्नु कै उपासना दशरथ कीन्ह या मांगेनि के मोरे तुम्ही अवतार लेऊ, ते विशनु एक कला होय दशरथ के अवतरे, राम चन्द नाऊ परा, तिन देह छाड़ी मथुरा में कृष्ण होय अवतरे, ते राजा भे, काम की बसी परे रहे, अर्जुन पांडवा किरिया की वसी मा रहे; विशुन तो परम पुरुष का वार पार नहीं पावा, कन्हैया कैसे पावा। जिनका कीन गीता आय ते मथुरा के कृष्ण ना होंय; जिन पूछा है पांडो अरजुन ना होई- ना मथुरा के विदुर आंही जे गीता में लिखे हैं, ना मथुरा के अंकूर आंही, ना सेवली गोपी आंही जे गीता में लिखे हैं। जिनका कीन गीता आय ते संत कृष्ण आंही। संतन का जाना तेई अर्जुन आंही; संतन का जाना तेई अंकूर आंही; संतन का जाना तेई गोपी आंही, संतन का जाना तेई विदुर आंही, सेवली आंही जे गीता मां लिखे हैं। या मथुरा के लोगन का काम ना होई। गीता जो मथुरा के कान्ह कै जानी सो तरी ना।

पाठान्तर

पृ०/पंक्ति	मूल पाठ	प्रतिलिपित प्रतियों में पाठ
१५/३२	काया माटी ढ़ेर	काया मोटी ढ़ेर
२३/८	कथनी कथे ओज	कथनी कथै अनेग
२६/२६	जोति मा जोति समाय	जोति मा जोति मिलाय
३७/३०	नाउनया निरधिनया	नाऊनया निरधनया
३८/२	निकरैका नहिं ठांउ	निकरैका नहिं ढ़ांउ
३६/७	जानै बिरला कोय	जानै विरहनी कोय
४०/२५	भेड़ही पलटी पांय	भेड़ही लपटी पांय
४०/२५	महरम हो सो जानी	हमरा हो सो जानी
४१/३	करिये न्यारी	सुमिता करिये प्यारी
४१/१७	कुंआरी जानि न जाय	कायर जानि न जाय
४२/५	नैना देयं निवोर	नैन निवारा देंई
७/२५	कथनी कत्थै ओज	कथनी कत्थै आगे
४६/१	तब थाही पाय	तब थाही बताय
४७/२४	कहा शुक सोई	कहा सुख सोई
५०/१३	बिना बुलाये जगु आये	तब निवलै जगु आये
५५/३०	ग़नी मो मारि	गली मो मारि
६२/३१	तुम बिछुरब दूजे ननदी साथ दुइ दुख कहाँ समाइये	
७०/८	तौ तौ बिसमिल्ला मिलिया	तब तो बिस मा मिला मिलाय
७३/२५	माया तू काहे का लावै लाई	माया तू काहे का लौ लाई
८०/१२	कुछ चारा नाहीं	कुछ चोरा नाहीं
८२/२०	निरत (नृत्य)	निरत
८७/३६	मीता मति पाई	मीता पदु पाई
६०/१४	चरै	धरै
१२२/४	भाग्य बड़े मति पाई	भक्ति बड़ी मति पाई
१२४/२८	झूठा गरभाई	झूठा ग्रह भाई
१५२/१६	दीन्हा आनि डिगाना	जिन्है नहीं डिढ़ ग्याना
१५१/१५	पिया अभी विखु वेलि	या माया विखु वेलि
२२४/१६	पूनो भागा भरम पसारा	पूनो भागि भयेन भै पारा

शब्द-कोष

अकचित : एक चित्त
अंकुरा : अंकुर, संस्कारी
अगिलाई : महाप्रलय, प्रलयाग्नि
अतीम : यतीम, अनाथ
अदल : विनय, शिष्टाचार
अनखन : अंखन, माथे में लगाने वाली बिन्दी
अनग : अनेक
अभियन्तर : अभ्यन्तर, भीतर
अमल : करनी, नशा
अमला : सब तरह के अहलकार, नौकर-चाकर
अरध : अधः (नीचे)
अरब : अरबों
अरस : आकाश, शून्य
अवधू : अवधूत
अवरदा : आयु
अवरिया : औलिया, और ही
अत्र : अस्त्र
आसिक : आशिक, प्रेमी
इंड : इड़ा
इंदोरन : इन्द्रायण (एक प्रकार का फल)
इललति : इल्लत, परेशानी
इस्लोक : श्लोक (संस्कृत)
उपरैता : उपरोहित
उमचि : चौंककर
उदारो : नष्ट करो
उरध : ऊर्ध्व, ऊँचे
कढ़िनिया : मट्ठा भाने की रस्सी
कंथ : कंत (पति)
कररि : वन तुलसी
कलुआ : काल
कसबु : धंधा, अर्जन
कसमल : कश्मल, भला

कसमस : कलमष
कितेब : किताब
कुञी : कुंजा, चक्रवाक की प्रिया (चक्रवाकी)
कुंजन : दुर्जन, (दम्भी)
कुफुर : कुफ्र, इन्कार करना
कुराई : कुराह (कुमिता), कुराईं नामक ग्राम
कुरिल : कुर्री, टिटहरी
कोट : दुर्ग, कोटवा नामक स्थान
खटपदी : षट्पदवाली मकड़ी, भ्रमरी, षटचक्र,
खसम=पति, शून्यावस्था
खसी : बधिया बकरा
खाजी : खाद्य, ग्रास
ख्वाहिद : चाहने वाला, इच्छुक
खुरसट : बुधवार, एक चिड़िया
खेडवा : खेल, खेलवाड़, खेडा
खूंट : दिशा
गंडकसुत : गंडकी नदी
गढमाण्डव : गढ़ में जूझना (माण्डव गढ़)
गंध्रप : गन्धर्व
गरना : गणना
गलतान : गलताँ, लोटता, लोटने वाला
गल्लै : गल्ल (पंजाबी) हल्ला, शोर
गाफिल : गफलत करने वाला
गारि : घिसना
गांसी : तीर आदि का फल, हथियार की नोंक
गीला : गिला (फा०) शिकायत, उलाहना
गुड़िया : पतंग
गुमानी : गुमान करने वाला, प्रियतम,
गुमानी मिश्र नाम के एक कवि
गुस्टि=गोष्ठी
ग्रेह : गेह, घर
गोहनवा : साथ

गौ : स्वार्थ
घाबरो : घबड़ना
घैलन : मिट्टी के घड़े
चक मुन्दर : चक्षुमीलनी, आँख बन्द करके देखनेवाली
चाटक : इन्द्रजाल, तमाशा
चारा : उपाय
चिई : जांत चलने की एक विशेष ध्वनि
चुरुअक : चुल्लू भर
छरीदार : द्वारपाल
जखीरा : भंडार, संग्रह
जमा : सम्पत्ति, ब्याज
जर : ज्वर, बुखार
जासी : जाय
जुइन : योनि
जेरि : जेर (नीचे)
झिकवा : मछली
झेरा : झगड़ा झंझट
झैलु : झाल, झुंड, जल का समूह
झोटी : झोटा, बाल
झोल : राख
टकसाल : सिक्कों की ढलाई का स्थान खरा, प्रामाणिक
टटु : तट
टटेरवा : सूखा डंठल, टटेर (डटेर)
टाटी : टटिया, छोटा टट्टर
टिषुना : तृष्णा
टूटा : नुकसान, हानि
टेकी : आश्रय
डरपा : भय
डहारिनी : डाह रखने वाली
डिगाना : डिग्गी पीटना
डिम्भु : दम्भ
ढाढ़िया : मारवाड़ की एक मुस्लिम यायावर जाति जो उत्सवों में गायन वादन का कार्य करती है।
ढुरहरे : धौलहर, धवल
ढेबुआ : ढेबुक, ताँबे का एक सिक्का
तखरी : तराजू
तगीरा ; तकाजा करने वाला
तफाउस : तफतीस, तहकीकात
तरुनुपुवा : तरुणाई
ताईं : तत्र, वहाँ
तिमुर : तिमिर, अन्धकार
तुरी : घोड़ा, सवार
तेहा : क्रोध
तोरा : निचोड़, सार
दवारी : दावानल, दावाग्नि
दरब : द्रव्य
दह : नदी का वह भाग जहाँ पानी बहुत गहरा हो।
दिनरी : एक प्रकार का लोकगीत, लोक शैली में गाया जाने वाला आंचलिक राग, देवारी
दीदार : दर्शन
दुहेला : कठिन
दूलम : दुर्लभ
दोजक : नर्क
धनिया : पत्नी, धनी (गुरु), प्रियतम
ध्रक : धिक्कार
धरमराय : धर्मराज, यमराज
धुरमिल : धूमिल
नल : नर, मनुष्य
नार : नाला (नवजात शिशु का नाल)
निगर : निगरां, निगरानी करने वाला
निभर : निश्चिन्त
निरमा : निर्मल
नेहरा : स्नेह
पइले : प्राप्त किया
पट्टन : शहर, पटना का एक नाम
पठंगा : पुष्टांग, समर्थ
पपील : पिपीलिका
पमारा : पहाड़
परचै : परिचय, साक्षात्कार

पराधी : पारधि, बहेलिया
परेता : प्रेत
पवरी : पौरी
पशुवा : पशु,
पानन : प्राण
पारसी : फ़ारसी
पाँवर : परिवार
पिल : जांत का एक हिस्सा
पीर : धर्म गुरु, पीड़ा
पुरातिम : पुरातन
फजीहति : दुर्दशा, फजीहत
फहम : अक्ल
फहुरी : फहराना
फाफस : निःसार,
बंगलिया : चूड़ी के बीच में पहना जाने वाला आभूषण
बद : बुरा
बदर : बदलना, स्थान परिवर्तन, निष्कासन
बरत : रस्सी,जिस पर चढ़ कर नट खेलकरता है।
बाँदी : सखी या चेरी
बिगूचन : उलझन, कठिनाई
बिलोना : कपास का बीज
बिसहना : खरीदना
बिसाईंध : मांस मछली की दुर्गन्ध
बिहूना : बिना
बीज : वीर्य
बीन : वेणु नामक राजा
बेरा : बेड़ा, समय
बोरे : बूरा, शक्कर
भण्डार : ढेर, कोठार, वह स्थान जहाँ घर का अन्नादि रखा जाय
भारत : महाभारत
भावन्ता : भगवंता, भगवन्तराय
भिस्त : वहिश्त, स्वर्ग
भीट : मिट्टी का ऊँचा टीला
भीस्त : भिश्ती, मसक से पानी ढोने वाला
मच्छ : मत्स्य, बड़ी मछली
मधु : मार्ग
मरदाने : मरदाना, वीर, गुरुनानक का एक शिष्य
मवासी : छोटा गढ़
मसूका : माशूका, प्रेयसी
मसलहती : हितकर, सलाह देने वाला
महतिया : चौधरी
माटीदा : माटी का
मिरतुक : मृतक
मुए : मरे, मृत
मुजरा : बड़ों द्वारा अभिवादन स्वीकार किया जाना
मुरषिद : मुरशिद, धर्मगुरु
मुहम्मद : मुहम्मद साहब
मेहरदया : दिव्य दया, सहज कृपा
मौला : मालिक, परमेश्वर, बादशाह
रईसा : रायसा (युद्ध) रास
रगवानी : अगवानी
रब : रब्ब, खुदा
रण खम्भवा : रणखम्भ
ररिया : रिरियाने वाला
रांझे : रंजित
राब : गुड़ का शीरा
रार : झगड़ा
रावल : राजा, सरदार
रिया : रहा
रिल्लै : रिल्ल, रिलना, घुसना, पैठना
रुजुक : रिजक (रोजी)
रूरा : अच्छा या उत्तम
रेहू : कपड़ा धोने वाली एक प्रकार की क्षारीय मिट्टी
लब्दा : लबेदा, मोटा और छोटा डंडा
लसगर : लश्कर
लाहा : लाभ
लेझुरी : रस्सी
लोई : लोय, लोग
वारा : पुत्र

विरोग : वियोग
विस्थार : विस्तार
वोसरी : बारी (अवसर)
सगरी : सम्पूर्ण (सब)
सगोती : एक ही गोत्र के
सट्टा : सट्टा, इकरारनामा
सदके : बलिहारी
सरमुख : सन्मुख
सरवंगी : सर्वांग
सबेरे : जल्दी
सलिता : सरिता
साईंध : सुगन्ध वाला
साकठ : शाक्त, व्यंग से दम्भियों की ओर संकेत है।
सायर : सिंधु
सिगुरा : सगुरा, गुरुमुख
सिरई : शिला
सिलसिल : सिलसिला, फिसलन
सुख : सार, महासुख
सुखमुनि : सुषुम्ना
सुज्जन : सन्त जन, साधुजन
सुतिये : सोना
सुसुम : सुषुम्ना
हकीकत : सच्चाई
हते : था
हरवल : हरबर, शीघ्र
हाहा : खुलकर हंसने की आवाज, अनुनय, विनय
हिरस : लोभ, तृष्णा
हुरमुद : हुरमत, इज्जत, आबरू, बड़ाई, प्रतिष्ठा
हेला : आक्रमण, धावा
हैगा : होयेगा

———

शुद्धि-पत्र

पृ०/पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१/७	मे	भे
१३	तजे	तजै
१३	पूरो	पूरे
२०	कहो	कहौ कहौं
२/१२	न	ना
१६	भोंटा	भेंटा
४/१	छापु	रजु छापु
२५	रहैं	—
५/३४	परसिये	पसारिये
३६	पीर	पूर
६/१०	मन	मत
७/२	ना रुकमिनी	ना उन रुकमिनी
१२	जहाँ राखि ना	जटा राखि नहि
८/२६	धीका	धी का
६/२५	बूढ़ि	बूड़ि
३२	द्वादस कवल	द्वादस दल कवल
११/१७	नहीं	नहिं
२८	कर	करैं
३६	परै	परे
१२/६	बीस	बसि
११	हरि	हीर
१२/२६	ब्रह्म	ब्रह्मा
१२/३३	मीना	मीता
३४	करे	करैं
१३/६	नरका	नरकु
२३	मूले	भूले
१४/५	पढ़े	पढ़ै
२३	कीका	कौं कौ
३३	कबीर जी बूझा	कबीर जी की बूझा
१६/१०	अव	अत
१५	सुनि सुन	सुनि सुनि
२७	घोरै	घोरे
१८/१६	कहो	कहौं
१६/२	सच्चा	चच्चा
८	घारे	घोरे
	तोर	तोरे
२०/११	तो सतगुर	तो मीता सतगुर
२१/१६	मति	मीत
२२	मैठुक	मैंढुक
२२/३३	डिढ़ि होइ जाय	डिढ़ि जाय
२३/८	अनेग	ओज
२५/१६	कीन्ह	कीन्हा

पृ०/पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२५/२१	कहि	कहँ
२३	भल	भला
२४	बारिये	वारिये
२८/२०	देखु	दोखु
२३	आहं	आंहू
२६/४	कोई	किई
८	मन	मत
२०	उधारक	उधारन
३६	जिम्है	जिम्है
३०/८	राम राम	रमा राम
२५	दोहा मुल मानी में	—
३१/२१	तू है स्वान	तू स्वान
३२/२	पाये	पाया
२२	नही मीत	नही है मीत
३३/१४	कसैयन	कसैपन
३८/१६	बसै	—
३५	बरिहौं	वरिहौं
३६/६	बारौं	वारौं
१४	बोली	बेलि
२२	बारे	वारे
४०/८	चलु	चालु
३४	छाड़नि छाड़िये	छाड़ति छाड़ति छाड़िये
४१/६	हुइहों	हुइ हो (भई हो)
१५	सुन्न	सूनी
१७	जोबन अरि	जोबन ढुरे अरि
३०	सुनि कहै	सुनि सुनि कहै
४५/१	गुरु का	गुर
१०	दिया दिया	दिया
१४	बधुंवा	बंधुआ
१७	का	—
२१	पंथु का	पंथु पंथु का
४५/२८	बिश्वासी	बिश्वा सो
४८/२५	करौ	करै
४६/६	चेटक	चटेका
१५	मया	माया
१६	सिंधु सुता	सिन्धु सुता
५१/१२	करै	केरे
२८	रेसोई	हारा रे सोई
३२	बास दस	बीस दस
५२/२४	करै	के रे
	हंसा	मीता हंसा
५३/३	लिखि है	लिखी है
१८	अधिकार	अंधियार
२३	पावै	दरसै

पृ०/पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
३१	बोलैं बोलै	वौले
५४/२	बोले	बेलि
५५/२४	है	रहैं
५६/१	करी	कीर
१३	भौरे	भोंरा
१६	मेरे	प्यारे
२१	तित	तितै
२२	नित नित	नित
२५	थिनु	घिनु
	याहु	ब्याहु
५७/१३	उनते	इनते
५८/११	बोली	वोली
३२	कीति	जीति
६०/२७	तन	तिन
६५/१०	पचरंग	पच रंग रंग
६६/२३	कारी	का री
६७/२	आये ना	आयन
४	नाही	नहि
२७	जो	जौ
६८/२६	सौ	सी
६९/१३	संसति	संतति
७०/३०	बहु	वहु

पृ०/पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
७१/१८	बनिज	बनिजा
७२/१३	सतगर	सतगुर
७६/२७	कहो	कहौं
७७/७	सेवा की	सेवकी
७९/९	भक्ति विना	भाग्य बिना
८०/२२	पारन	पार न
३१	बाबरे	बावरे
८२/२०	निरति	नृत्य
३०	अइ हैं	आइ हैं
८३/३१	कासो का कंवल	का काया कंवल
८५/१	कर	करै
८६/४	गुन ज्ञान	गुण ज्ञान
८७/२१	गुन	गनु
८८/२६	तिला	तिलक
२७	को	के
९०/९	सतगुर करो	सतगुर की करो
९२/११	चढ़ि	चढ़ी
९३/३१	तिनकै	तिरकै
९५/१५	भूले न	भूलेन
३२	आंहू	आंहू
९६/१९	रोश	रोजा
२२	पाड़े भैंसा	पाडा भैंसा (पड़वा-भैंसा)

पृ०/पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि	पृ०/पंक्ति	अशुद्धि	अशुद्धि
९७/३	सब करे	सब कीर	११९/१६	झारे	झगरे
२६	ढौर	डौरु	१२१/२	पांस पचीसों	पांच पचीसो
९८/२	भाई	भुलाई	२	मीता	मति
९९/१९	बरसी दास	दरसा दास	२	पिया'के पास	पिया पास
२४	तन	कन	१२२/२९	वहुत कहावै	बहुत से कहावै
१०३/२१	रैदासा सधन	रैदासा गिरहा सधन	१२३/३०	बांचि	बांधि
३१	बल्ले	वल्ले (उरले आवागमन के)	१२४/२३	है	दै
१०४/३	भेखु भक्ति	भक्ति भेखु	१२६/४	नरकै का जाय	नरकै जाय
७	तासो	सो	१२६/२५	गुदरी रे	गुदरी करै रे
२९	ध्यान न राता	ध्यान राता	१२७/१४	मानों	मानें
१०५/१०	बनावावा री	बनावारी (वनायारी)	१६	राम	रागु
२३	जमु	जगु	१२८/४	सरिवां	सूरिमाँ
१११/८	निरबानी	बर बानी	३१	बजाई	न जाई
२४	करीर	ककर	१२९/१	तोहि का	तोहिका
२७	कित आनै	की तानै	४	अगुआ	गुरुआ
११५/२६	सासुइ न	सासुइन	१२९/१२	सठ	ठगु
११७/२	मोहि	भोंहि	१३०/२७	सब	तब
११८/१	मरौ	मरौं	१३१/१२	बिलसै हमें माया ते काह परी	विलसिहै माया माया टेक परी
१५	जहां	तहां	३२	कौन	प्रान
२०	दुनिया	दुतिया	१३४/३१	टेरा	टरा
११९/४	बढ़ियो	बेढ़ियो	१३५/१	मनु मिला	नामु मिला
१०	हरि जाय मिलावै	हरि मिलावै	१४५/३०	कैमुआ	कै मुआ